जॉन रीड

दस दिन जब दुनिया हिल उठी

जॉन रीड

जॉन रीड

दस दिन जब दुनिया हिल उठी

प्रगति प्रकाशन
मास्को

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड
५ ई, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-११००५५

विषय-सूची

व्ला० इ० लेनिन
और
ना० को० क्रूप्स्काया
की
भूमिकायें

रूसी संस्करण की भूमिका

'दस दिन जब दुनिया हिल उठी'—जॉन रीड ने अपनी अद्भुत पुस्तक को यही नाम दिया। उसमें अक्तूबर क्रान्ति के शुरू के दिनों का एक आश्चर्यजनक रूप से सजीव तथा शक्तिशाली वर्णन है। वह घटनाओं का इतिवृत्त मात्र नहीं है, न ही वह दस्तावेज़ों का संग्रह है, वह जीवन के कुछ ऐसे दृश्यों का विवरण है, जो इतने लाक्षणिक हैं कि क्रान्ति में भाग लेने वाला कोई भी आदमी उनसे मिलते-जुलते दृश्यों की, जिन्हें उसने अपनी आँखों देखा हो, याद किये बिना नहीं रह सकता। ज़िन्दगी की इन तसवीरों में जन साधारण की भावनाओं का आश्चर्यजनक रूप से सच्चा प्रतिबिम्ब है, उन भावनाओं का प्रतिबिम्ब है, जिनके द्वारा क्रान्ति की प्रत्येक गतिविधि निर्धारित हुई।

[illegible] आपको इस बात पर अचरज हो सकता है कि एक विदेशी, एक अमरीकी, जो इस देश की भाषा मे या तौर-तरीक़ों से वाक़िफ़ न था, ऐसी किताब कैसे लिख सका। आपको शायद लगे कि उसने बहुत [illegible] होंगी और बहुत सी बुनियादी बातें उसकी नज़र से नहीं आई होंगी।

[illegible] के बारे में दूसरे ही अन्दाज़ से लिखते हैं। [illegible] गवाह हैं, उन्हें समझ ही नहीं [illegible], जो सदा उपलक्षक नहीं [illegible] निकाल डालते हैं।

निस्संदेह इने गिने विदेशियों ने ही क्रान्ति को अपनी आंखों देखा था। जॉन रीड अगर ऐसी किताब लिख सके, तो इसका कारण यह है कि वह तटस्थ अथवा उदासीन द्रष्टा न थे, वह स्वयं एक जोशीले क्रान्तिकारी थे, कम्युनिस्ट थे, जिन्होंने घटनाओं के अर्थ को, महान् संघर्ष के अर्थ को समझा। इस समझ ने ही उन्हें वह तीक्ष्ण दृष्टि दी, जिसके बिना ऐसी पुस्तक कभी भी लिखी नहीं जा सकती थी।

रूसी लोग क्रान्ति के बारे में और भी दूसरे ढंग से लिखते हैं: वे या तो उसका समग्र मूल्यांकन करते हैं, या उन घटनाओं का वर्णन करते हैं, जिनमें उन्होंने भाग लिया था। रीड की पुस्तक एक सचमुच लोकप्रिय जनव्यापी क्रान्ति का व्यापक चित्र प्रस्तुत करती है और इसलिए वह युवाजनों के लिए, भावी पीढ़ियों के लिए, उन लोगों के लिए विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण होगी, जिनके नज़दीक अक्तूबर क्रान्ति विगत इतिहास की बात होगी। रीड की पुस्तक एक प्रकार की वीर-गाथा है।

जॉन रीड ने अपने जीवन को पूरी तरह रूसी क्रान्ति के साथ सम्बद्ध किया। सोवियत रूस उनके लिए प्रिय और नज़दीकी बन गया। वह रूस में टाइफ़स की बीमारी से मरे, और उन्हें लाल चौक में, क्रेमलिन की दीवार के साये में दफ़नाया गया। जो आदमी क्रान्ति के शहीदों की वीर-मृत्यु का वर्णन उतनी अच्छी तरह करे, जितनी अच्छी तरह जॉन रीड ने किया, वह इस महान् सम्मान के सर्वथा योग्य है।

नादेज्दा क्रूप्स्काया

जॉन रीड

दस दिन जब दुनिया हिल उठी

प्रस्तावना

यह पुस्तक, जैसा मैंने देखा, इतिहास का – जब उसकी चाल बहुत तेज हो गयी हो – एक छोटा सा क़तरा है। वह उस नवम्बर * क्रान्ति का एक तफ़सीलवार बयान होने के अलावा और कुछ होने का दावा नहीं करती, जब मजदूरों और सैनिकों का नेतृत्व करते हुए, बोल्शेविकों ने रूस में राज्यसत्ता पर क़ब्ज़ा कर लिया और उसे सोवियतों के हाथों में सौंप दिया।

पुस्तक के अधिकांश भाग में स्वभावतः "लाल पेत्रोग्राद" की चर्चा है, जो राजधानी तो था ही, विद्रोह का केन्द्र भी था। लेकिन पाठकों को अवश्य ही यह समझना चाहिए कि पेत्रोग्राद में जो कुछ हुआ, क़रीब क़रीब हूबहू वही न्यूनाधिक तीव्रता के साथ और समय के भिन्न भिन्न अन्तरालों से पूरे रूस में हुआ।

इस पुस्तक में, जो जिन पुस्तकों को मैं लिख रहा हूं उनमें पहली है, मैं अपने को [illegible] उन घटनाओं के इतिवृत्त तक सीमित रखूंगा, जिनको मैंने खुद देखा और अनुभव किया है और जिनकी विश्वसनीय प्रमाणों द्वारा पुष्टि होती है। इस इतिवृत्त से पहले दो अध्यायों में नवम्बर क्रान्ति की पृष्ठभूमि तथा उसके कारणों का संक्षिप्त वर्णन दिया गया है। मैं जानता हूं कि ये दो अध्याय पढ़ने में कठिन होंगे, लेकिन बाद के अध्यायों को समझने के लिए ये ज़रूरी हैं।

* अक्तूबर (पुराने पंचांग के अनुसार) – सं०

पाठक के मन में बहुत से सवाल उठ सकते हैं। बोल्शेविज़्म क्या चीज़ है? बोल्शेविकों ने किस प्रकार की शासन-व्यवस्था स्थापित की? अगर नवम्बर क्रान्ति से पहले बोल्शेविकों ने संविधान सभा का समर्थन किया, तो बाद में उन्होंने उसे शस्त्र-बल से भंग क्यों किया? और अगर बोल्शेविज़्म का ख़तरा प्रत्यक्ष होने तक पूंजीपति वर्ग ने संविधान सभा का विरोध किया, तो बाद में उसने उसका समर्थन क्यों किया?

यहां पर इन सवालों के और ऐसे बहुत से सवालों के जवाब नहीं दिये जा सकते। 'कोर्नीलोव-काण्ड से ब्रेस्त-लितोव्स्क की सन्धि तक'* नामक हमारी दूसरी पुस्तक में जर्मनी के साथ शान्ति-सन्धि तक क्रान्ति का प्रक्रम निरूपित है। इस पुस्तक में क्रान्तिकारी संगठनों की उत्पत्ति तथा कार्य, जन भावना के विकास, संविधान सभा के विघटन, सोवियत राज्य की बनावट और ब्रेस्त-लितोव्स्क की सन्धि वार्ता के प्रक्रम तथा परिणाम की व्याख्या की जा रही है...

बोल्शेविकों के उत्कर्ष पर विचार करते समय यह समझना ज़रूरी है कि रूसी आर्थिक ज़िन्दगी तथा रूसी सेना ७ नवम्बर, १९१७ को विसंगठित नहीं हुईं, बल्कि महीनों पहले एक ऐसी प्रक्रिया के तर्कसंगत फलस्वरूप विसंगठित हुईं, जो १९१५ में ही शुरू हो चुकी थी। ज़ार के दरबार में जिन भ्रष्ट प्रतिक्रियावादियों का बोलबाला था, उन्होंने जानबूझ कर रूस को तहस-नहस करने का बीड़ा उठाया, ताकि जर्मनी के साथ अलग से शान्ति-सन्धि की जा सके। मोर्चे पर हथियारों की कमी, जिसके फलस्वरूप १९१५ की गर्मियों में बुरी तरह पीछे हटना पड़ा, सेना में और बड़े बड़े शहरों में खाद्य की कमी, १९१६ में औद्योगिक उत्पादन तथा परिवहन का ठप हो जाना – हम जानते हैं कि ये सब कार्रवाइयां एक प्रबल अन्तर्ध्वंस-अभियान का अंग थीं, जिसे मार्च** क्रान्ति ने ऐसे वक़्त रोक दिया था, जब ज़रा सी भी देर घातक सिद्ध होती।

नयी हुकूमत के पहले चन्द महीनों में, बावजूद उस अव्यवस्था के,

* «From Kornilov to Brest-Litovsk» – **जॉ० री०**
यह पुस्तक पूरी नहीं हो पाई। – **सं०**

** फ़रवरी (पुराने पंचांग के अनुसार) – **सं०**

जो एक महान् क्रान्ति में उत्पन्न होती है, जिसमें संसार के सबसे ज़्यादा सताये हुए १६ करोड़ लोगों ने यकायक आज़ादी हासिल कर ली, आन्तरिक परिस्थिति तथा सेना की जुझारू शक्ति, दोनों में ही वास्तविक सुधार हुआ।

लेकिन यह "मौज" थोड़े अरसे तक ही रही। सम्पत्ति-सम्पन्न वर्ग केवल राजनीतिक क्रान्ति चाहते थे, जो राज्य-सत्ता ज़ार से छीनकर उनके हाथों में सौंप दे। वे चाहते थे कि रूस में फ़्रांस या संयुक्त राज्य अमरीका की तरह वैधानिक जनतन्त्र स्थापित हो, या इंगलैण्ड की तरह वैधानिक राजतन्त्र हो। दूसरी ओर आम जनता सच्चा औद्योगिक तथा कृषक जनवाद चाहती थी।

विलियम इंगलिश वालिंग* ने अपनी पुस्तक 'रूस का सन्देश' («Russia's Message») में, जो १९०५ की क्रान्ति का एक विवरण है, रूसी मजदूरों की सामाजिक अवस्था का सुन्दर चित्रण किया है, जो बाद में प्रायः सर्वसम्मति से बोल्शेविज्म का समर्थन करने वाले थे। वह लिखते हैं:

> वे (मेहनतकश लोग) समझते थे कि यह सम्भव है कि स्वतन्त्र सरकार के तहत भी, अगर उस सरकार पर दूसरे सामाजिक वर्गों का कब्ज़ा हो गया, वे भूखों मरते रह सकते हैं...
>
> रूसी मजदूर क्रान्तिकारी है, परन्तु वह हिंसावृत्ति नहीं रखता। वह कट्टर मताग्रही नहीं है और न ही वह बुद्धिहीन है। वह बैरिकेडों की लड़ाई के लिए तैयार है, परन्तु उसने इस लड़ाई का अध्ययन किया है, और संसार के मजदूरों में अकेले उसी ने इस लड़ाई के बारे में अपनी जानकारी अपने तजरबे से हासिल की है। वह अपने उत्पीड़क पूंजीपति वर्ग के साथ तब तक लड़ने के लिए इच्छुक और तत्पर है, जब तक कि इस लड़ाई का फ़ैसला न हो ले। लेकिन वह दूसरे वर्गों के अस्तित्व की अवहेलना नहीं करता। वह उनसे केवल यह आग्रह करता है कि इस उग्र संघर्ष में, जो नज़दीक आता जा रहा है, वे इस ओर आयें या दूसरी ओर जायें...

* **विलियम इंगलिश वालिंग** (१८७७-१९३६) – अमरीकी अर्थशास्त्री और समाजशास्त्री, मजदूर आन्दोलन और समाजवाद के बारे में कई कृतियों के लेखक। 'रूस का सन्देश' नामक पुस्तक, जिसके कुछ उद्धरण जॉन रीड ने यहां दिये हैं, १९०८ में अमरीका में प्रकाशित की गयी थी। – सं०

वे (मज़दूर) सभी यह मानते थे कि हमारी (अमरीकी) राजनीतिक संस्थायें उनकी अपनी संस्थाओं से बेहतर हैं, लेकिन वे इसके लिए बहुत व्यग्र नहीं थे कि वे एक ज़ालिम को हटाकर उसकी जगह दूसरा ज़ालिम (अर्थात् पूंजीपति वर्ग) लायें...

रूस के मज़दूरों ने मास्को, रीगा और ओदेस्सा में सैकड़ों की तादाद में गोलियां खाईं और फांसी पर चढ़ाये गये, रूस के हर जेल में हज़ारों की तादाद में क़ैद हुए, रेगिस्तानों और उत्तर ध्रुवीय प्रदेशों में निर्वासित हुए – इसलिए नहीं कि वे यह क़ीमत चुका कर गोल्डफ़ील्ड्स और क्रीप्ल-क्रीक के मज़दूरों के संदिग्ध विशेषाधिकारों को प्राप्त करें...

और इस प्रकार रूस में बाह्य युद्ध के बीच राजनीतिक क्रान्ति का सामाजिक क्रान्ति में विकास हुआ, जिसकी परिणति बोल्शेविज़्म की विजय में हुई।

अमरीका में सोवियत सरकार विरोधी रूसी सूचना ब्यूरो के निर्देशक श्री ए० जी० सैक अपनी पुस्तक 'रूसी जनवाद का जन्म' में कहते हैं:

बोल्शेविकों ने अपना मंत्रिमण्डल गठित किया, जिसमें निकोलाई लेनिन प्रधान मन्त्री तथा लेव त्रोत्स्की परराष्ट्र मन्त्री थे। मार्च क्रान्ति के प्रायः तत्काल बाद ही यह स्पष्ट हो गया कि उनका सत्तारूढ़ होना अनिवार्य है। क्रान्ति के पश्चात् बोल्शेविकों का इतिहास उनके सतत उत्कर्ष का इतिहास है...

विदेशी लोग और विशेषतः अमरीकी लोग रूसी मज़दूरों की "अनभिज्ञता" को महत्त्व देते हैं। यह सच है कि उनके पास वह राजनीतिक अनुभव नहीं था, जो पश्चिम के लोगों के पास था, परन्तु वे स्वैच्छिक संगठनों के काम में ख़ूब माहिर थे। १६१७ में रूस में उपभोक्ता सहकारी समितियों के १२० लाख से अधिक सदस्य थे, और सोवियतें स्वयं रूसी मज़दूरों की संगठन प्रतिभा का अद्भुत उदाहरण हैं। इसके अतिरिक्त जितनी अच्छी तरह वे समाजवादी सिद्धान्त में और उसके व्यावहारिक

प्रयोग में दीक्षित हैं, उतनी अच्छी तरह सम्भवतः संसार में और कोई लोग नहीं हैं।

उनकी विशेषताओं का वर्णन करते हुए, विलियम इंगलिश वालिंग कहता है:

रूस के मेहनतकश लोग अधिकांशतः पढ़-लिख सकते हैं। अनेक वर्षों से देश में ऐसी अशान्ति रही है कि उन्हें यह सुविधा प्राप्त हो सकी कि केवल उन्हीं के बीच से निकलने वाले समझदार व्यक्तियों ने ही नहीं, बल्कि समान रूप से क्रान्तिकारी शिक्षित वर्ग के एक बड़े भाग ने भी उनका नेतृत्व किया, जो रूस के राजनीतिक तथा सामाजिक पुनरुद्धार के अपने विचारों को लेकर मेहनतकश जनता की ओर आया है...

बहुत से लेखक सोवियत सत्ता के प्रति अपने बैर भाव की सफ़ाई देते हुए यह कहते हैं कि रूसी क्रान्ति का अन्तिम चरण और कुछ नहीं बोल्शेविकों के वहशियाना हमलों के ख़िलाफ़ "भद्र" जनों का संघर्ष था। लेकिन मिल्की वर्गों ने ही, जब उन्होंने यह समझ लिया कि क्रान्तिकारी जन संगठनों की शक्ति कितनी बढ़ गयी है, उन्हें नष्ट कर देने और क्रान्ति को रोक देने का बीड़ा उठाया। इस गरज़ से मिल्की वर्गों ने अन्ततः निराशा से उन्मत्त होकर दुःसाहसिक उपायों का सहारा लिया। केरेन्स्की मंत्रिमण्डल तथा सोवियतों को छिन्न-भिन्न करने के उद्देश्य से परिवहन को विशृंखलित किया गया और आन्तरिक उपद्रव भड़काये गये। कारख़ाना समितियों को कुचलने की गरज़ से कारख़ाने बन्द कर दिये गये और ईंधन तथा कच्चा माल दूसरी जगहों को भेज दिये गये। मोर्चे पर सैनिक समितियों को तोड़ने के लिए मृत्युदण्ड का फिर से विधान किया गया और सैनिक पराजय को अनदेखा कर दिया गया।

ये सारी बातें बोल्शेविज़्म की आग के लिए बहुत अच्छा ईंधन थीं। बोल्शेविकों ने उसका जवाब वर्ग-युद्ध का प्रचार करके और सोवियतों की सर्वोपरिता का दावा करके दिया।

इन दोनों छोरों के बीच, दूसरे गुटों के साथ साथ जो उनका पूरी लगन से या अन्यमनस्क भाव से समर्थन करते थे, तथाकथित "नरम" समाजवादी – मेन्शेविक और समाजवादी-क्रान्तिकारी थे और कई और छोटी छोटी पार्टियां थीं। मिल्की वर्गों ने इन दलों पर भी हमला किया,

लेकिन उनके अपने सिद्धान्तों ने उनकी प्रतिरोध-शक्ति को क्षीण कर दिया था।

मोटे तौर पर मेन्शेविकों और समाजवादी-क्रान्तिकारियों का विश्वास था कि रूस आर्थिक दृष्टि से सामाजिक क्रान्ति के लिए तैयार न था, और वहां **राजनीतिक** क्रान्ति ही सम्भव हो सकती थी। उनकी व्याख्या के अनुसार रूसी जन-साधारण इतने शिक्षित न थे कि वे सत्ता को अपने हाथ में ले सकते, ऐसा करने की कोशिश से अनिवार्यतः जो प्रतिक्रिया होगी, उसका इस्तेमाल कर कोई बेरहम अवसरवादी पुरानी व्यवस्था को फिर से क़ायम कर सकता था। और इसका नतीजा यह हुआ कि जब "नरम" समाजवादियों को बाध्य होकर सत्ता अपने हाथों में लेनी पड़ी, वे उस सत्ता का इस्तेमाल करते घबराते थे।

उनका विश्वास था कि रूस को राजनीतिक तथा आर्थिक विकास की उन मंज़िलों से गुज़रना पड़ेगा, जिनसे पश्चिमी यूरोप परिचित हो चुका था, और तब बाक़ी दुनिया के साथ आख़िरकार वहां भी पूर्ण समाजवाद आविर्भूत होगा। फलतः वे मिल्की वर्गों के साथ स्वभावतः इस बात से सहमत थे कि रूस को सबसे पहले संसदीय राज्य बनना चाहिये, यद्यपि पश्चिमी जनवादी देशों की तुलना में उसे अधिक परिमार्जित होना चाहिए। इसलिए उन्होंने इस बात का आग्रह किया कि सरकार के अन्दर मिल्की वर्गों से सहयोग होना चाहिए।

इससे आगे एक और क़दम उठाना और उनकी हिमायत करना आसान था। "नरम" समाजवादियों को पूंजीपति वर्ग की ज़रूरत थी, लेकिन पूंजीपति वर्ग को "नरम" समाजवादियों की ज़रूरत न थी। इसका नतीजा यह हुआ कि समाजवादी मंत्री मजबूर होकर अपने समूचे कार्यक्रम से क़दम ब क़दम पीछे हटते गए, जबकि मिल्की वर्ग अधिकाधिक दुराग्रही होते गये।

और अन्त में जब बोल्शेविकों ने सारे खोखले समझौतों को औंधा कर दिया, मेन्शेविकों और समाजवादी-क्रान्तिकारियों ने अपने को मिल्की वर्गों की ओर लड़ते हुए पाया ... आज संसार के प्रायः हर देश में ऐसा ही व्यापार देखा जा सकता है।

मुझे ऐसा लगता है कि विध्वंसकारी शक्ति होने के बजाय बोल्शेविकों की पार्टी ही रूस में अकेली ऐसी पार्टी थी, जिसके पास एक रचनात्मक कार्यक्रम था और उसे देश में लागू करने की शक्ति थी। अगर

[illegible] उस समय सत्तारूढ़ न हुए होते, तो मुझे इस बात में सन्देह नहीं है कि दिसम्बर में शाही जर्मनी की सेनायें पेत्रोग्राद और मास्को में होतीं और रूस की गर्दन पर फिर कोई ज़ार सवार होता...

आज सोवियत सत्ता के पूरे एक बरस बाद भी यह कहना फ़ैशन में दाखिल है कि बोल्शेविक विद्रोह एक "जोखिम" का काम था। इसमें सन्देह नहीं कि वह एक जोखिम का काम ही था, और अभी तक मानवता ने जितने ऐसे कामों का उपक्रम किया है, उनमें यह विद्रोह एक अत्यन्त अद्भुत कार्य था, जिसने मेहनतकश जन-समुदायों की लहर पर उठकर इतिहास में प्रबल वेग से प्रवेश किया और जिसने सब कुछ उन समुदायों की सीधी सादी मगर इन्सानी बड़ी ख्वाहिशों के दांव पर लगा दिया। वह मशीनरी, जिसके द्वारा बड़ी बड़ी जमींदारियों की भूमि किसानों के बीच बांटी जा सकती थी, पहले से कायम की जा चुकी थी। उद्योग पर मज़दूरों का नियन्त्रण स्थापित करने के लिए कारखाना समितियां और ट्रेड यूनियनें भी थीं। हर गांव, कसबे और शहर में, हर हलके और प्रान्त में स्थानीय प्रशासन के कार्यभार को संभालने के लिए तैयार मज़दूरों, सैनिकों और किसानों के प्रतिनिधियों की सोवियतें मौजूद थीं।

बोल्शेविज्म के बारे में कोई कुछ भी सोचे, लेकिन इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि रूसी क्रान्ति मानव-इतिहास की एक महान घटना है और बोल्शेविकों का उदय एक विश्वव्यापी महत्त्व की घटना है। जिस प्रकार इतिहासकार पेरिस कम्यून की दास्तान की छोटी से छोटी तफ़सील के लिए दस्तावेज़ों की छानबीन करते हैं, उसी प्रकार वे यह भी जानना चाहेंगे कि नवम्बर १९१७ में पेत्रोग्राद में क्या घटनायें घटी थीं, कौन-सी भावना जनता को अनुप्राणित कर रही थी और उनके नेता क्या कहते और करते थे, और वे देखने-सुनने में कैसे थे। मैंने इसी ख्याल से इस पुस्तक की रचना की है।

संघर्ष में मेरी हमदर्दी किसी ओर न हो, ऐसी बात नहीं है। लेकिन इन शानदार दिनों की कहानी कहते समय मैंने घटनाओं को एक ईमानदार रिपोर्टर की नज़र से देखने की कोशिश की है, जिसकी दिलचस्पी इस बात में है कि सच बात क़लमबन्द की जाये।

जॉ० री०

न्यूयार्क, १ जनवरी, १९१९

टिप्पणियां तथा व्याख्यायें *

साधारण पाठक को रूसी संगठनों – राजनीतिक दलों, समितियों और केन्द्रीय समितियों, सोवियतों, दूमाओं तथा यूनियनों – की बहुलता से बेहद उलझन होगी। इसीलिए मैं यहां संक्षेप में कुछ परिभाषायें और व्याख्यायें दे रहा हूं।

राजनीतिक पार्टियां

संविधान सभा के चुनावों में राजधानी पेत्रोग्राद में १७ पार्टी-टिकटों पर और कुछ प्रान्तीय नगरों में ४० तक टिकटों पर खड़े हुए थे; परन्तु राजनीतिक पार्टियों के गठन तथा उनके उद्देश्यों का जो सारांश नीचे दिया जा रहा है, वह उन्हीं दलों तथा गुटों तक सीमित है, जिनका ज़िक्र इस पुस्तक में किया गया है। यहां उनके कार्यक्रम के मूलतत्व तथा उनके जन-आधार के सामान्य चरित्र पर ही ध्यान दिया जा सकता है...

---

* जॉन रीड द्वारा लिखित 'टिप्पणियां तथा व्याख्यायें' कुछ छोटी-मोटी गलतियों के बावजूद पाठक के लिए दिलचस्प होंगी। इनसे यह पता होता है कि लेखक ने रूस में अक्तूबर क्रान्ति से पहले के राजनीतिक [illegible] का कितना अच्छा अध्ययन किया था, और यह भी कि जॉन रीड किस पक्ष के हमदर्द और किस पक्ष के विरोधी थे और उन्होंने संघर्षरत पार्टियों और गुटों का किस प्रकार मूल्यांकन किया। – सं०

१. **राजतन्त्रवादी** – रंग रंग के राजतन्त्रवादी, जैसे **अक्तूबरवादी**, आदि। ये गुट किसी ज़माने में शक्तिशाली थे, लेकिन अब उनका खुला अस्तित्व समाप्त हो चुका था। वे या तो चोरी-छिपे काम करते थे, या उनके सदस्य कैडेटों में शामिल हो गये थे, क्योंकि कैडेटों ने धीरे धीरे करके उनके राजनीतिक कार्यक्रम को अपना लिया था। इस पुस्तक में उन गुटों के जिन प्रतिनिधियों का उल्लेख हुआ है, वे हैं रोद्ज़्यान्को और शुलगीन।

२. **कैडेट**। उनकी पार्टी "संवैधानिक जनवादियों" की पार्टी के रूसी प्रथमाक्षरों के आधार पर उन्हें **कैडेट** कहते हैं। इस पार्टी का आधिकारिक नाम "जन-स्वातन्त्र्य पार्टी" है। ज़ार के तहत यह पार्टी, जो मिल्की वर्गों के उदारतावादियों को लेकर गठित हुई थी, **राजनीतिक** सुधारों की विशाल पार्टी थी, जो मोटे तौर पर अमरीका की प्रोग्रेसिव पार्टी के अनुरूप थी। जब मार्च १९१७ में क्रान्ति भड़की, **कैडेटों** ने पहली अस्थायी सरकार बनायी। अप्रैल में **कैडेट**-मंत्रिमण्डल उलट दिया गया, क्योंकि उसने यह घोषणा की कि वह ज़ार की सरकार के साम्राज्यवादी उद्देश्यों समेत मित्र-राष्ट्रों के साम्राज्यवादी उद्देश्यों का समर्थन करता है। क्रान्ति जैसे जैसे अधिकाधिक **सामाजिक आर्थिक** क्रान्ति का रूप लेती गयी, **कैडेट** वैसे वैसे अधिकाधिक अनुदार होते गये। **कैडेटों** के जिन प्रतिनिधियों का इस पुस्तक में उल्लेख हुआ है, वे हैं: मिल्युकोव, विनावेर, शात्स्की।

३. "**सार्वजनिक व्यक्तियों का दल**"। जब कोर्नीलोव-प्रतिक्रान्ति के साथ अपने सम्बन्धों के कारण कैडेट बदनाम हो गये, मास्को में "**सार्वजनिक व्यक्तियों के दल**" की स्थापना की गयी। अन्तिम केरेन्स्की मन्त्रिमण्डल में इस **दल** के प्रतिनिधियों को पोर्टफ़ोलियो दिये गये। बावजूद इस बात के कि दल के बौद्धिक नेता रोद्ज़्यान्को और शुलगीन जैसे लोग थे, उसने अपने को ग़ैरजानिबदार घोषित किया। इस दल के सदस्य अपेक्षाकृत अधिक "आधुनिक" बैंकर, व्यापारी और कारख़ानेदार थे, जो यह समझने की तमीज़ रखते थे कि सोवियतों का मुक़ाबला उनके अपने हथियार – आर्थिक संगठन – से ही किया जा सकता है। इस दल के प्रतिनिधि: लिआनोज़ोव, कोनोवालोव।

३. **जन-समाजवादी** अथवा **त्रुदोविक दल** (श्रम दल)। संख्या की दृष्टि से यह एक छोटी पार्टी थी, जिसके सदस्य फूंक फूंक कर क़दम रखने वाले बुद्धिजीवी, सहकारी समितियों के नेता और रूढ़िवादी किसान थे। ये लोग समाजवादी होने का दम भरते थे, परन्तु वास्तव में वे निम्न-पूंजीवादी वर्ग – क्लर्कों, दूकानदारों वग़ैरह – के हितों की हिमायत करते थे। वे प्रत्यक्ष "वंशानुक्रम" से चौथी राजकीय दूमा के **त्रुदोविक दल** की, जिसके अधिकांश सदस्य किसानों के प्रतिनिधि थे, समझौतापरस्त परम्परा के उत्तराधिकारी थे। जब मार्च १६१७ की क्रान्ति भड़की, केरेन्स्की राजकीय दूमा में **त्रुदोविक दल** के नेता थे। **जन-समाजवादी** पार्टी एक राष्ट्रीयतावादी पार्टी थी। इस पुस्तक में उल्लिखित उनके प्रतिनिधि हैं: पेशेख़ोनोव, चाइकोव्स्की।

४. **रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर पार्टी।** शुरू में मार्क्सीय समाजवादी। १६०३ में होने वाली पार्टी कांग्रेस में पार्टी में कार्यनीति के प्रश्न को लेकर फूट पड़ गयी और वह दो गुटों में बंट गयी – बहुमत (बोल्शिन्स्त्वो) और अल्पमत (मेन्शिन्स्त्वो), जिसके कारण उनका नाम "बोल्शेविक" और "मेन्शेविक" – अर्थात् "बहुमत के सदस्य" और "अल्पमत के सदस्य" – पड़ा। इन दोनों पक्षों ने दो अलग अलग पार्टियों का रूप धारण किया – दोनों अपने को "रूसी सामाजिक जनवादी मज़दूर पार्टी" कहते रहे और दोनों मार्क्सीय होने का दावा करते रहे। वास्तव में १६०५ की क्रान्ति के समय से बोल्शेविक अल्पमत में थे, लेकिन सितम्बर १६१७ में उनका फिर से बहुमत स्थापित हुआ।

(क) **मेन्शेविक।** इस पार्टी में सभी रंगों के समाजवादी शामिल थे, जिनका विश्वास था कि समाज स्वाभाविक क्रमिक विकास द्वारा ही समाजवाद की ओर बढ़ सकता है, और मज़दूर वर्ग को सबसे पहले राजनीतिक सत्ता पर अधिकार करना होगा। यह पार्टी राष्ट्रीयतावादी पार्टी भी थी। यह समाजवादी बुद्धिजीवियों की पार्टी थी, जिसका अर्थ है: शिक्षा के सभी साधन मिल्की वर्गों के हाथ में होने के कारण बुद्धिजीवियों की सहज प्रवृत्ति यही होती थी कि वे अपने प्रशिक्षण से प्रभावित हों और मिल्की वर्गों का ही पक्ष ग्रहण करें। इस पुस्तक में उल्लिखित उनके प्रतिनिधि हैं: दान, लीबेर, त्सेरेतेली।

(ख) **मेन्शेविक-अन्तर्राष्ट्रीयतावादी। मेन्शेविक पार्टी** का गरम पक्ष, अन्तर्राष्ट्रीयतावादी तथा मिल्की वर्गों के साथ किसी भी प्रकार के संश्रय के विरोधी। फिर भी वे अनुदार मेन्शेविकों के साथ अपना नाता तोड़ने के लिए राज़ी न थे। उन्होंने मज़दूर वर्ग के अधिनायकत्व का विरोध किया, जिसका बोल्शेविक समर्थन करते थे। त्रोत्स्की बहुत दिनों तक इस दल के सदस्य बने रहे। उसके नेताओं में उल्लेखनीय हैं मार्तोव, मर्तीनोव।

(ग) **बोल्शेविक।** अब ये, "नरम" अथवा "संसदीय" समाजवाद की उस परम्परा से अपने पूर्ण विच्छेद को महत्त्व देने के उद्देश्य से अपने को **कम्युनिस्ट पार्टी** कहते हैं, जो सभी देशों के मेन्शेविकों और तथाकथित "बहुसंख्यक समाजवादियों" पर छायी हुई है। **बोल्शेविकों** का प्रस्ताव था कि सर्वहारा फ़ौरन विद्रोह करे और शासन-सूत्र अपने हाथ में ले ले, ताकि उद्योग, भूमि, प्राकृतिक साधन तथा वित्तीय संस्थाओं पर बलपूर्वक अधिकार करके समाजवाद को जल्दी लाया जा सके। यह पार्टी मुख्यतः औद्योगिक मज़दूरों की, लेकिन साथ ही ग़रीब किसानों के एक बड़े भाग की भी इच्छाओं को व्यक्त करती है। "बोल्शेविक" शब्द "पराकाष्ठावादी" का पर्याय **नहीं** है। पराकाष्ठावादी अलग एक दल थे (देखिये अनुच्छेद ५ख)।

(घ) **संयुक्त सामाजिक-जनवादी अन्तर्राष्ट्रीयतावादी**, जिन्हें उनके अपने प्रभावशाली मुखपत्र 'नोवाया जीज़्न' (नया जीवन) के नाम पर **नोवाया जीज़्न** दल भी कहते थे। यह बुद्धिजीवियों का एक छोटा सा दल था। मक्सिम गोर्की के निजी अनुयायियों को छोड़ दें, तो मज़दूर वर्ग के अन्दर इनके बस मुट्ठी भर समर्थक ही थे। ये लोग बुद्धिजीवी थे, इनका कार्यक्रम लगभग वही था, जो **मेन्शेविक-अन्तर्राष्ट्रीयतावादियों** का था। फ़र्क सिर्फ यह था कि **नोवाया जीज़्न** दल ने दो बड़े गुटों में से किसी का भी पल्ला पकड़ने से इनकार किया। बोल्शेविक कार्यनीति का विरोध करते हुए भी दल के प्रतिनिधि सोवियत सरकार में बने रहे। इस पुस्तक में उल्लिखित अन्य प्रतिनिधि : आवीलोव, क्रामारोव।

(ङ) **येदीन्स्त्वो (एकता)।** एक बहुत छोटा सा, समाप्तप्राय दल, जिसके लगभग सारे सदस्य पिछली शताब्दी के नौवें दशक में रूसी सामाजिक-

जनवादी आन्दोलन के मार्गदर्शक और उसके सबसे बड़े सिद्धान्तकार प्लेख़ानोव के अपने अनुयायी थे। प्लेख़ानोव अब बूढ़े हो चुके थे और घोर राष्ट्रवादी थे, यहां तक कि वह मेन्शेविकों तक के लिए बहुत अधिक अनुदार थे। बोल्शेविकों द्वारा सरकार का तख़्ता उलट दिये जाने के बाद **येदीन्स्त्वो** का लोप हो गया।

५. **समाजवादी-क्रान्तिकारियों की पार्टी**, जिन्हें उनकी पार्टी रूसी प्रथमाक्षरों के आधार पर **एसेर** कहते थे। शुरू शुरू में किसानों की क्रान्तिकारी पार्टी, "जुझारू संगठनों" की – आतंकवादियों की – पार्टी। मार्च क्रान्ति के पश्चात् उसमें ऐसे कितने ही लोग शामिल हो गये, जो कभी समाजवादी नहीं थे। उस समय यह पार्टी केवल भूमि के निजी स्वामित्व के उन्मूलन के पक्ष में थी और वह भी मालिकों को किसी न किसी शक्ल में मुआवज़ा देकर ही। अन्ततोगत्वा किसानों की उत्तरोत्तर बढ़ती हुई क्रान्तिकारी भावना से मजबूर होकर **एसेरों** ने अपने कार्यक्रम से "मुआवज़े" की धारा को निकाल दिया, और उसी के फलस्वरूप १९१७ की शरद ऋतु में पार्टी के अधिक तरुण तथा ओजस्वी बुद्धिजीवियों ने मुख्य पार्टी से अलग हो कर एक नयी पार्टी, **वामपंथी समाजवादी-क्रान्तिकारी पार्टी** की स्थापना की। एसेरों ने, जिन्हें बाद में हमेशा गरम दली लोग "**दक्षिणपंथी समाजवादी-क्रान्तिकारी**" कहा करते थे, मेन्शेविकों के राजनीतिक दृष्टिकोण को ग्रहण किया और उनके साथ मिल कर काम किया। अन्ततः वे अपेक्षाकृत धनी किसानों, बुद्धिजीवियों और दूर-दराज़ के देहाती इलाक़ों की राजनीतिक रूप से अशिक्षित आबादियों का प्रतिनिधित्व करने लगे। फिर भी उनके बीच मेन्शेविकों की अपेक्षा राजनीतिक तथा आर्थिक विचारों का अधिक अन्तर दिखाई देता था। इन पृष्ठों में उनके जिन नेताओं का ज़िक्र आया है, वे हैं: अव्क्सेन्त्येव, गोत्स, केरेन्स्की, चेर्नोव, "बाबुश्का"* ब्रेश्कोव्स्काया।

(क) **वामपंथी समाजवादी-क्रान्तिकारी।** सिद्धान्ततः मज़दूर वर्ग के अधिनायकत्व के कार्यक्रम को स्वीकार करते हुए भी वे शुरू शुरू में बोल्शेविकों की कड़ी कार्यनीति का अनुसरण करने के लिए अनिच्छुक थे।

---

* दादी। – **सं०**

फिर भी **वामपंथी समाजवादी-क्रान्तिकारी** सोवियत सरकार में बने रहे, बोल्शेविकों के साथ उन्होंने मन्त्रि-पदों, विशेष रूप से कृषि-मन्त्रित्व को संभाला। वे मन्त्रिमण्डल से कई बार निकले, लेकिन फिर हमेशा लौट आये। किसान अधिकाधिक संख्या में (दक्षिणपंथी) **एसेरों** की पांतों से निकल कर **वामपंथी समाजवादी-क्रान्तिकारी पार्टी** में शामिल होते, और इस प्रकार यह पार्टी एक विशाल किसान पार्टी बन गयी, जो सोवियत सत्ता का समर्थन करती थी और इस पक्ष में थी कि बड़ी बड़ी ज़मींदारियां बिना मुआवज़ा ज़ब्त कर ली जायें और फिर किसान ख़ुद इस बात का फ़ैसला करें कि इन ज़मींदारियों का क्या किया जाये। उनके नेताओं में उल्लेखनीय हैं: स्पिरिदोनोवा, करेलिन, कम्कोव, कोलेगायेव।

(ख) **पराकाष्ठावादी**। १६०५ की क्रान्ति में **समाजवादी-क्रान्तिकारी पार्टी** से अलग हो जानेवाली एक शाखा, जिसने उस समय एक शक्तिशाली किसान आन्दोलन का प्रतिनिधित्व किया और मांग की कि अधिकतम समाजवादी कार्यक्रम अविलम्ब लागू किया जाये। अब किसान अराजकतावादियों का एक नगण्य दल।

संसदीय पद्धति

रूस में सभायें और सम्मेलन उतने हमारे नहीं, जितने यूरोपीय नमूने पर संगठित किये जाते हैं। आम तौर से पहला काम अधिकारियों और **सभापतिमण्डल** का निर्वाचन होता है।

सभापतिमण्डल सभापतित्व करनेवाली वह समिति है, जिसमें सभा में प्रतिनिधित्व प्राप्त करने वाले सभी दलों और राजनीतिक गुटों के उन की संख्यानुसार प्रतिनिधि होते हैं। **सभापतिमण्डल** कार्यवाही का क्रम निर्धारित करता है, और मण्डल के सदस्य अध्यक्ष के निर्देश पर, बारी बारी से सभापति का आसन ग्रहण कर सकते हैं।

प्रत्येक प्रश्न (**वोप्रोस**) का पहले सामान्य निरूपण किया जाता है और फिर उस पर बहस होती है। बहस के अन्त में भिन्न-भिन्न दल अपने प्रस्ताव पेश करते हैं, और हर प्रस्ताव पर अलग से मतदान लिया जाता है। कार्यवाही का क्रम शुरू के ही आधे घंटे में छिन्न-भिन्न हो सकता है

और अक्सर होता भी है। "[illegible]" की तजवीज़ लेकर, जिसे भीड़ सदा स्वागत ही प्रस्तुत कर सकती है, सभा में कोई भी व्यक्ति उठकर किसी भी विषय पर कुछ भी कह सकता है। भीड़ सभा पर पूरी तरह हावी होती है, और अध्यक्ष-मण्डल का बस यही काम होता है कि वह एक छोटी सी घंटी बजा कर व्यवस्था रखे और वक्ताओं को बोलने की स्वीकृति दे। सभा का असल वास्तविक कार्य विभिन्न दलों और राजनीतिक गुटों की अलग-अलग बैठकों में होता है। ये दल और गुट, जिनका प्रतिनिधित्व उनके नेता करते हैं, आम सभा में एकमत से ही मतदान करते हैं। इसका नतीजा यह होता है कि जब भी कोई नयी, महत्त्वपूर्ण बात सामने आती है या वोट लेना होता है, सभा स्थगित कर दी जाती है, ताकि विभिन्न दल और राजनीतिक गुट अपनी अन्तरंग बैठकें कर सकें।

सभा में उपस्थित भीड़ बेहद शोरगुल करती है, वक्ताओं की तारीफ़ में तालियाँ बजाती है या फिर सवालों की झड़ी लगा कर उनके लिए बोलना मुश्किल कर देती है। **सभापतिमण्डल** की सारी योजनायें एक ओर धरी रह जाती हैं। बीच बीच में प्रथानुसार ये आवाज़ें लगाई जाती हैं: "**प्रोसिम**! कृपया, आगे कहिये!", "**प्राविल्नो**!" या "**एतो वेर्नो**! सच है! ठीक है!", "**दोवोल्नो**! बस करो!", "**दोलोई**! मुर्दाबाद!", "**पोज़ोर**! शर्म!" और "**तीशे**! चुप रहो! इतना शोर न करो!"

जन-संगठन

१. **सोवियत।** **सोवियत** शब्द का अर्थ है परिषद्। ज़ार के तहत राजकीय परिषद् को **गोसुदार्स्त्वेन्नी सोवियत** कहते थे। परन्तु क्रान्ति के समय से "**सोवियत**" शब्द से एक विशेष प्रकार के संसद का बोध होने लगा, जो मज़दूर वर्ग के उत्पादन-सम्बन्धी संगठनों के सदस्यों द्वारा चुना जाता है, अर्थात् मज़दूरों या सैनिकों या किसानों के प्रतिनिधियों की **सोवियत**। इसलिए मैंने इस शब्द का उपयोग इन्हीं निकायों तक सीमित रखा है और इनके अतिरिक्त अगर कहीं यह शब्द आया है, तो मैंने उसके लिए "परिषद्" शब्द का इस्तेमाल किया है।

रूस के हर गांव, क़स्बे और शहर में चुनी जाने वाली स्थानीय **सोवियतों** के – और बड़े बड़े शहरों में वार्ड (**रइओन्नी**) **सोवियतों** के भी – अतिरिक्त **ओब्लास्त्नोई या गुबेर्नस्की** (हलक़े या प्रान्त की) **सोवियतों** का और राजधानी में अखिल रूसी **सोवियतों** की केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति का भी अस्तित्व है, जिसे उसके रूसी प्रथमाक्षरों के आधार पर **त्से-ई-काह** कहते हैं (देखिये, निम्नलिखित अनुच्छेद 'केन्द्रीय समितियां')।

मार्च क्रान्ति के थोड़े दिनों ही बाद प्रायः सभी जगह मज़दूरों के और सैनिकों के प्रतिनिधियों की **सोवियतें** एक में मिल गयीं। फिर भी विशेष मामलों में, जिनका उनके अपने विशेष हितों से सम्बन्ध होता था, मज़दूरों और सैनिकों की शाखाओं की अलग सभायें होती रहीं। किसानों के प्रतिनिधियों की **सोवियतें** शेष दोनों **सोवियतों** के साथ तभी मिलीं, जब बोल्शेविकों ने सरकार का तख़्ता उलट दिया। उनकी **सोवियतों** का भी गठन उसी प्रकार हुआ था, जिस प्रकार मज़दूरों और सैनिकों की **सोवियतों** का और उसी प्रकार किसानों की अखिल रूसी **सोवियतों** की कार्यकारिणी समिति भी राजधानी में स्थापित की गयी थी।

२. **ट्रेड-यूनियनें**। यद्यपि रूसी ट्रेड-यूनियनों का रूप अधिकांशतः औद्योगिक था, उन्हें फिर भी ट्रेड-यूनियन ही कहा जाता था। बोल्शेविक क्रान्ति के समय इन ट्रेड-यूनियनों की सदस्य संख्या तीस-चालीस लाख रही होगी। ये ट्रेड-यूनियनें एक अखिल रूसी निकाय के रूप में भी संगठित थीं – अमरीकी फ़ेडरेशन आफ़ लेबर का एक प्रकार का रूसी संस्करण, जिसकी अपनी, राजधानी में स्थापित, केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति थी।

३. **कारखाना समितियां**। ये स्वतःस्फूर्त संस्थायें थीं, जिन्हें मज़दूरों ने उद्योग पर अपना नियन्त्रण स्थापित करने की कोशिश के दौरान कारखानों के अन्दर क्रान्ति के बाद की उस परिस्थिति का फ़ायदा उठा कर स्थापित किया, जिसमें प्रशासन-व्यवस्था ठप हो गयी थी। इन समितियों का काम यह था कि क्रान्तिकारी संघर्ष के ज़रिए कारखानों पर क़ब्ज़ा कर लें और उन्हें चलायें। **कारखाना समितियों** का भी अपना अखिल रूसी संगठन था, जिसकी केन्द्रीय समिति पेत्रोग्राद में स्थापित थी। यह समिति ट्रेड-यूनियनों के साथ सहयोग करती थी।

४. **दूमायें।** **दूमा** शब्द का मोटे तौर पर अर्थ है "विचारक निकाय"। पुरानी शाही दूमा, जो क्रान्ति के बाद एक जनवादी रूप ग्रहण कर छः महीनों तक चलती रही, सितम्बर १९१७ में स्वभावतः काल का ग्रास बनी। इस पुस्तक में जिस नगर दूमा का उल्लेख है, वह पुनःसंगठित म्युनिसिपल परिषद् थी, जिसे अकसर "म्युनिसिपल स्वशासन निकाय" कहते थे। वह प्रत्यक्ष तथा गुप्त मतदान द्वारा निर्वाचित हुई थी, और अगर वह बोल्शेविक क्रान्ति के दौरान जन-समुदायों को क़ाबू में नहीं रख सकी, तो उसका एकमात्र कारण यह था कि **आर्थिक** सूत्र से बंधे समूहों पर आधारित संगठनों की बढ़ती हुई शक्ति के सामने विशुद्ध **राजनीतिक** प्रतिनिधित्व के प्रभाव में सामान्यतः गिरावट आ गयी थी।

५. **ज़ेम्सत्वो।** इन्हें मोटे तौर पर "ज़िला-परिषद्" कहा जा सकता है। ज़ारशाही के तहत भूस्वामी वर्गों के बुद्धिजीवी उदारतावादियों द्वारा विकसित और अधिकांशतः उन्हीं के द्वारा नियन्त्रित अर्द्ध-राजनीतिक, अर्द्ध-सामाजिक निकाय, जिनके हाथ में अत्यन्त न्यून शासन-सत्ता थी। किसानों के बीच शिक्षा और सामाजिक सेवा का काम ही उनका सबसे महत्त्वपूर्ण काम था। लड़ाई के दौरान **ज़ेम्सत्वोओं** ने धीरे धीरे रूसी सेना के लिए खाने-कपड़े का पूरा इन्तज़ाम अपने हाथ में ले लिया, और इसके अलावा वे विदेशों से माल की ख़रीद भी करने लगे और मोर्चे पर सिपाहियों के बीच बहुत कुछ उस क़िस्म का काम करने लगे, जैसा अमरीकी ईसाई युवक संघ करता था। मार्च क्रान्ति के बाद **ज़ेम्सत्वोओं** को जनवादी रूप दिया गया, ताकि वे देहाती इलाक़ों में स्थानीय शासन के अंग बनाये जा सकें। परन्तु **नगर दूमाओं** की ही तरह वे **सोवियतों** के सामने नहीं ठहर सके।

६. **सहकारी समितियां।** ये मज़दूरों और किसानों की उपभोक्ता सहकारी समितियां थीं, जिनके रूस में क्रान्ति से पहले कई लाख सदस्य थे। क्रान्तिकारी समाजवादी दलों ने उदारपंथियों और "नरम" समाजवादियों द्वारा संस्थापित सहकारिता-आन्दोलन का समर्थन नहीं किया, क्योंकि वह उत्पादन तथा वितरण के साधनों को मज़दूरों के हाथों में पूर्णतः अन्तरित करने का एक अनुकल्प मात्र था। मार्च क्रान्ति के पश्चात् सहकारी समितियों का बड़ी तेज़ी से प्रसार हुआ, उन पर जन-समाजवादी, मेन्शेविक और

समाजवादी-क्रान्तिकारी हावी हो गये, और बोल्शेविक क्रान्ति के सम्पन्न होने तक उन्होंने एक अनुदार राजनीतिक शक्ति की भूमिका अदा की। फिर भी जब वाणिज्य तथा परिवहन का पुराना ढांचा चरमरा कर टूट गया, **सहकारी समितियों** ने ही रूस का पेट भरा।

७. **सैनिक समितियां**। मोर्चों पर सैनिकों ने पुरानी अमलदारी के अफ़सरों के प्रतिक्रियावादी प्रभाव का मुक़ाबला करने के लिए **सैनिक समितियों** को स्थापित किया था। हर कम्पनी, रेजीमेन्ट, ब्रिगेड, डिवीज़न और कोर की अपनी समिति, और उन तमाम समितियों के ऊपर **सेना की सैनिक समिति** निर्वाचित थी। (पेत्रोग्राद स्थित) **केन्द्रीय सैनिक समिति** सेना के जनरल स्टाफ़ के साथ सहयोग करती थी। क्रान्ति के फलस्वरूप सेना की प्रशासन-व्यवस्था के टूट जाने से **सैनिक समितियों** के कन्धों पर क्वार्टरमास्टर विभाग का अधिकांश काम आ पड़ा, और कहीं कहीं तो सैनिक कमान की ज़िम्मेदारी भी उन्हीं के ऊपर आ पड़ी।

८. **नौसैनिक समितियां**। नौसेना में सैनिक समितियों के अनुरूप संगठन।

केन्द्रीय समितियां

१९१७ के वसन्त और गर्मियों में पेत्रोग्राद में तरह तरह के संगठनों के अखिल रूसी सम्मेलन आयोजित किये गये। मज़दूरों, सैनिकों और किसानों के प्रतिनिधियों की सोवियतों, ट्रेड-यूनियनों, कारख़ाना समितियों, सैनिक तथा नौसैनिक समितियों (सैनिक और नौसैनिक सेवाओं की प्रत्येक शाखा के अतिरिक्त), सहकारी समितियों, जातियों इत्यादि की राष्ट्रीय कांग्रेसें हुईं। ऐसे हर सम्मेलन ने शासन-केन्द्र में अपने विशेष हितों की हिफ़ाज़त के लिए केन्द्रीय समिति या केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति निर्वाचित की। अस्थायी सरकार जैसे जैसे कमज़ोर होती गयी, इन केन्द्रीय समितियों को बाध्य होकर अधिकाधिक प्रशासकीय अधिकार अपने हाथ में लेने पड़े।

इस पुस्तक में उल्लिखित सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण केन्द्रीय समितियां ये हैं:

यूनियनों की यूनियन। १९०५ की क्रान्ति के दौरान प्रोफ़ेसर मिल्यु-कोव तथा दूसरे उदारपंथियों ने डाक्टरों, वकीलों आदि उदार पेशों के लोगों

की यूनियनें स्थापित कीं, जिन्हें एक केन्द्रीय संगठन, **यूनियनों की यूनियन** के तहत एकजुट किया गया। १९०५ में इस संगठन ने क्रान्तिकारी जनवाद का साथ दिया, लेकिन १९१७ में उसने बोल्शेविक विद्रोह का विरोध किया और सोवियत सत्ता के ख़िलाफ़ हड़ताल करने वाले सरकारी कर्मचारियों को एकजुट किया।

त्से-ई-काह। मज़दूरों और सैनिकों के प्रतिनिधियों की सोवियतों की अखिल रूसी केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति, जिसे इस नाम के रूसी प्रथमाक्षरों के आधार पर **त्से-ई-काह** कहा जाता था।

त्सेन्त्रोफ़्लोत। "नौसेना-केन्द्र" – केन्द्रीय नौसैनिक समिति।

विक्जेल। रेल मज़दूर यूनियन की अखिल रूसी केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति, जिसे उसके नाम के प्रथमाक्षरों को लेकर **विक्जेल** कहा गया।

अन्य संगठन

लाल गार्ड। रूसी कारख़ानों के हथियारबंद मज़दूर। सबसे पहले १९०५ की क्रान्ति में **लाल गार्ड** टुकड़ियों की स्थापना की गयी और मार्च १९१७ में, जब नगर में शान्ति और व्यवस्था क़ायम रखने के लिए सैनिक शक्ति की आवश्यकता पड़ी, वे दोबारा उठ खड़ी हुईं। उस समय ये **लाल गार्ड** हथियारबंद थे और उन्हें निहत्था करने की अस्थायी सरकार की तमाम कोशिशें बेकार गयीं। क्रान्ति के दौरान जब भी कोई बड़ा संकट उत्पन्न हुआ, ये **लाल गार्ड** सड़कों पर निकले – वे प्रशिक्षित न थे, न ही उनमें अनुशासन था, परन्तु उनके अन्दर क्रान्तिकारी उत्साह भरा हुआ था।

सफ़ेद गार्ड। पूंजीवादी स्वयंसेवक, जो क्रान्ति की आख़िरी मंज़िलों में निजी स्वामित्व को बोल्शेविकों द्वारा उन्मूलित होने से बचाने के लिए सामने आये। उनमें से बहुतेरे यूनिवर्सिटी के छात्र थे।

तेकीन्त्सी। सेना की तथाकथित "बर्बर डिवीज़न", जो मध्य एशिया के मुसलमान कबायलियों को लेकर बनायी गयी थी और व्यक्तिगत रूप से जनरल कोर्नीलोव के प्रति निष्ठा और भक्ति रखती थी। **तेकीन्त्सी** अपनी अन्ध आज्ञानुवर्तिता के लिए और युद्ध में अपनी पाशविक क्रूरता के लिए विख्यात थे।

"**शहीदी टुकड़ियां**" या "**हरावल टुकड़ियां**"। औरतों की बटालियन सारी दुनिया में **शहीदी टुकड़ी** के नाम से जानी जाती थी, लेकिन मर्दों की भी कितनी ही **शहीदी टुकड़ियां** थीं। १९१७ की गर्मियों में केरेन्स्की ने "वीरत्वपूर्ण" उदाहरण द्वारा सेना का अनुशासन और जुझारू उत्साह प्रबल करने के लिए इन टुकड़ियों की स्थापना की थी। **शहीदी टुकड़ियों** के सिपाही मुख्यतः उग्र राष्ट्रवादी युवक, अधिकांशतः सम्पत्तिसम्पन्न वर्गों की संतान होते थे।

अफ़सरों की यूनियन। सेना के प्रतिक्रियावादी अफ़सरों का एक संगठन, जिसे सैनिक समितियों की बढ़ती हुई शक्ति का राजनीतिक दृष्टि से मुक़ाबला करने के लिए स्थापित किया गया था।

सेंट जार्जी शूरवीर। सेंट जार्ज का पदक* रणक्षेत्र में जौहर दिखलाने के लिए दिया जाता था। इस पदक का पाने वाला अपने आप **सेंट जार्जी शूरवीरों** के इस संगठन का सदस्य हो जाता था, जिसमें सैन्यवाद के समर्थकों का ही बोलबाला था।

किसान संघ। १९०५ में **किसान संघ** किसानों का एक क्रान्तिकारी संगठन था, परन्तु १९१७ में वह अधिक समृद्ध किसानों की राजनीतिक अभिव्यक्ति बन गया, ताकि किसानों के प्रतिनिधियों की सोवियतों की बढ़ती हुई शक्ति और क्रान्तिकारी उद्देश्यों के ख़िलाफ़ संघर्ष किया जा सके।

काल-क्रम तथा वर्ण-विन्यास

मैंने इस पुस्तक में सर्वत्र पुराने रूसी पंचांग की जगह, जो तेरह दिन पीछे है, अपने पंचांग का इस्तेमाल किया है।

रूसी नामों तथा शब्दों के जो हिज्जे मैंने दिये हैं, उसमें मैंने लिप्यन्तरण के किन्हीं वैज्ञानिक नियमों का अनुसरण करने की कोशिश नहीं

---

* **सेंट जार्ज का पदक** १७६९ में स्थापित किया गया था। वह जनरलों और अफ़सरों को जौहर दिखलाने और अच्छी नौकरी सेवा के लिए दिया जाता था। – सं०

की है, मैंने वही हिज्जे देने की कोशिश की है, जिससे अंगरेज़ी बोलने वाला पाठक उनके उच्चारण के सरलतम तथा निकटतम रूप को उपलब्ध कर सके।

पुस्तक की सामग्री

इस पुस्तक की बहुत सी सामग्री मेरे अपने नोटों से ली गयी है। लेकिन इसके साथ ही मैंने कई सौ छांटे हुए रूसी अख़बारों की एक पंचमेल फाइल का भी सहारा लिया है, जिससे वर्णित काल के प्रायः प्रत्येक दिन का हवाला मिलता है। इनमें (पेत्रोग्राद से प्रकाशित) अंग्रेज़ी अख़बार «Russian Daily News» (रूसी दैनिक समाचार) तथा दो फ़्रांसीसी अख़बार – «Journal de Russie» (रूस की पत्रिका) तथा «Entente» (एन्टेन्ट) – की फाइलें उल्लेखनीय हैं। लेकिन इन सबसे कहीं अधिक मूल्यवान थी «Bullettin de la Presse» (प्रेस बुलेटिन), जिसे पेत्रोग्राद में फ़्रांसीसी सूचना ब्यूरो रोज़ाना शाया करता रहा है और जिसमें रूसी अख़बारों में प्रकाशित सभी महत्त्वपूर्ण घटनाओं, भाषणों तथा टिप्पणियों की रिपोर्टें दी जाती रही हैं। मेरे पास इस बुलेटिन की १९१७ के बसन्त से १९१८ की जनवरी के अन्त तक लगभग पूरी फाइल मौजूद है।

उपरोक्त सामग्री के अतिरिक्त मध्य सितम्बर १९१७ से लेकर जनवरी १९१८ के अन्त तक पेत्रोग्राद की दीवारों पर चिपकाई जाने वाली लगभग हर घोषणा, आज्ञप्ति तथा विज्ञप्ति मेरे पास मौजूद है। साथ ही सभी सरकारी आदेशों और आज्ञप्तियों के आधिकारिक प्रकाशन तथा बोल्शेविकों द्वारा सत्तारूढ़ होने के समय परराष्ट्र मन्त्रालय में पायी जाने वाली गुप्त सन्धियों तथा दूसरे दस्तावेज़ों के आधिकारिक सरकारी प्रकाशन भी मेरे पास मौजूद हैं।

व्ला० इ० लेनिन, १९१७

पहला अध्याय

पृष्ठभूमि

सितम्बर १९१७ के प्रायः अन्त में रूस आये हुए समाजशास्त्र के एक विदेशी प्रोफ़ेसर पेत्रोग्राद में मुझसे मिलने आये। व्यवसायियों तथा बुद्धिजीवियों ने उन्हें बताया था कि क्रांति की रफ़्तार धीमी पड़ रही है। प्रोफ़ेसर ने इसके बारे में एक लेख लिखा और फिर देश का दौरा किया। वह औद्योगिक नगरों में गये और किसान-समुदायों के बीच भी – उन्हें यह देखकर ताज्जुब हुआ कि वहां क्रांति की रफ़्तार तेज़ होती मालूम हो रही थी। मेहनत-मजूरी और खेती-बनिहारी करने वालों के बीच अक्सर इस क़िस्म की बातें सुनी जा सकती थीं: "ज़मीन जोतने वालों की, कारख़ाने मज़दूरों के!" अगर प्रोफ़ेसर साहब मोर्चे पर तशरीफ़ ले गये होते, तो उन्होंने देखा होता कि पूरी सेना के लबों पर एक ही बात है – शान्ति...

प्रोफ़ेसर को बड़ी उलझन हुई, लेकिन दरअसल उलझन की ज़रूरत नहीं थी; दोनों ही बातें सही थीं। अगर मिल्की वर्ग अधिक अनुदार होते जा रहे थे, तो जन-समुदाय अधिक उग्र।

सामान्यतः व्यवसायियों तथा बुद्धिजीवियों में यह भावना व्याप्त थी कि क्रान्ति बहुत काफ़ी दूर तक जा चुकी है, बहुत देर तक चल चुकी है और अब ठहराव आना चाहिए। केरेन्स्की की अस्थायी सरकार का समर्थन करने वाले मुख्य "नरम" समाजवादी दलों – **ओबोरोन्त्सी**[1] * मेन्शेविकों और समाजवादी-क्रांतिकारियों की भावना भी यही थी।

---

* पुस्तक में दिये गये सूचना-अंक पाठकों को जॉन रीड की टिप्पणियों की ओर संगत करते हैं। टिप्पणियों में लेखक ने प्रत्येक अध्याय के लिए अलग सिलसिलेवार अंक दिये हैं। – सं०

१४ अक्तूबर को "नरम" समाजवादियों के आधिकारिक मुखपत्र* ने लिखा :

क्रांति के नाटक के दो अंक हैं – पुरानी व्यवस्था का विध्वंस तथा नयी व्यवस्था की रचना। पहला अंक काफ़ी देर तक चल चुका है और अब वक़्त आ गया है कि दूसरा अंक खेला जाये और जितनी तेज़ी से हो सके खेला जाये। जैसा एक महान् क्रांतिकारी ने कहा है, "मित्रो, आइये, हम शीघ्रता करें और क्रांति को समाप्त करें। जो भी उसे बहुत देर तक चलायेगा, वह उसके फलों को नहीं बटोर पायेगा..."

परन्तु मज़दूर, सैनिक तथा किसान जन-समुदायों के मन से यह भावना जाती नहीं थी कि अभी "पहला अंक" पूरी तरह खेला नहीं गया है। मोर्चे पर सैनिक समितियों की उन अफ़सरों के साथ हमेशा टक्कर होती रहती थी, जो अपने सैनिकों के साथ इन्सानों की तरह बर्ताव करने के आदी नहीं हो सके थे। मोर्चे के पीछे किसानों द्वारा निर्वाचित भूमि समितियों के सदस्यों को भूमि के सम्बन्ध में सरकारी विनियमों को कार्यान्वित करने की कोशिश करने के लिए जेलों में बन्द किया जा रहा था और कारखानों में मज़दूर[2] काले चिट्ठों और तालाबन्दी के ख़िलाफ़ संघर्ष कर रहे थे। इतना ही नहीं, विदेश से लौटने वाले राजनीतिक प्रवासियों को "अवांछनीय" नागरिक कह कर देश से बाहर रखने की कोशिश की जा रही थी। कुछ मामलों में तो विदेशों से अपने गांवों में लौटने वाले आदमियों को, १९०५ में की जाने वाली उनकी क्रांतिकारी कार्रवाइयों के लिए गिरफ़्तार किया जा रहा था और उन पर मुक़द्दमा चलाया जा रहा था।

जनता में जो तरह तरह का असन्तोष व्याप्त था, उसके समाधान के लिए "नरम" समाजवादियों के पास बस एक ही नुस्ख़ा था : संविधान सभा के लिए, जो दिसम्बर में बुलाई जाने वाली थी, इन्तज़ार कीजिये। परन्तु जन-साधारण इतने से संतुष्ट होने वाले नहीं थे। संविधान सभा बहुत अच्छी चीज़ थी; परन्तु कुछ ऐसे निश्चित लक्ष्य थे, जिनके लिए रूसी

---

* यहां जॉन रीड ने 'केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति के समाचार' ('इज़्वेस्तिया') नाम के अख़बार का ज़िक्र किया है, जो उस समय मेन्शेविकों और समाजवादी-क्रांतिकारियों द्वारा चलाया जा रहा था। – सं०

क्रांति की गई थी और जिनके लिए क्रांतिकारी शहीद मार्स मैदान* की बिराद-गाना क़ब्र में अपनी हड्डियां गला रहे थे; ये लक्ष्य थे: शान्ति, भूमि तथा उद्योग पर मज़दूरों का नियन्त्रण। और संविधान सभा चाहे हो या न हो, इन लक्ष्यों को प्राप्त करना ही होगा। संविधान सभा को टाला गया है, बार बार टाला गया है और उसे शायद फिर टाला जायेगा तब तक, जब तक कि लोग पर्याप्त शान्त न हो जायें, उतने कि वे शायद अपनी मांगों में कमी करने को तैयार हो जायें! जो भी हो, क्रांति के आठ महीने गुज़र चुके थे, लेकिन इतने दिनों में किया क्या गया, यह नज़र नहीं आता था...

इस बीच सैनिकों ने बस सीधे सीधे सेना से पलायन कर शान्ति के प्रश्न को हल करना शुरू किया। किसान ज़मींदारों की छावनियों में आग लगा देते और बड़ी बड़ी ज़मींदारियों पर क़ब्ज़ा कर लेते। मज़दूर तोड़-फोड़ करते और हड़ताल करते। कहने की ज़रूरत नहीं कि कारख़ानेदारों, ज़मींदारों और फ़ौजी अफ़सरों ने स्वभावतः किसी भी जनवादी समझौते के ख़िलाफ़ अपना सारा असर डाला...

अस्थायी सरकार की डांवांडोल नीति कभी प्रभावशून्य सुधारों की ओर झुकती, तो कभी कठोर दमनकारी कार्रवाइयों की ओर। समाजवादी श्रम-मंत्री ने एक फ़रमान जारी करके मज़दूर समितियों को हुक्म दिया कि अब से वे काम के घंटों के बाद ही अपनी सभायें करें। मोर्चे पर सैनिकों के बीच विरोध-पक्षी राजनीतिक पार्टियों के आन्दोलनकर्त्ताओं को गिरफ़्तार किया जाता, गरम विचारों के अख़बारों को बन्द किया जाता और क्रांतिकारी प्रचारकों को मृत्यु-दंड तक दिया जाता। लाल गार्डों को निरस्त्र करने की कोशिशें की गईं। प्रान्तों में अमन व क़ानून की हिफ़ाज़त के लिए कज़्ज़ाकों को भेजा गया...

"नरम" समाजवादियों ने और मन्त्रिमण्डल में उनके नेताओं ने, जो मिलकी वर्गों के साथ सहयोग करना ज़रूरी समझते थे, इन कार्रवाइयों का समर्थन किया। लोगों ने बड़ी तेज़ी से उनका साथ छोड़ कर बोल्शेविकों

* **मार्स मैदान** – पेत्रोग्राद (आज लेनिनग्राद) का एक चौक। ज़ारशाही के विरुद्ध पूंजीवादी-जनवादी **मार्च** (फ़रवरी) क्रांति के शहीद ५ अप्रैल (२३ मार्च) को उसी चौक में दफ़नाये गये थे। – **सं०**

की तरफ़ रुख़ किया, जो इस हक़ में थे कि शान्ति क़ायम की जाये, किसानों को ज़मीन दी जाये, उद्योग पर मज़दूरों का नियन्त्रण हो तथा मज़दूर वर्ग की सरकार की स्थापना की जाये। सितम्बर १९१७ में परिस्थिति नाज़ुक हो गई। देश की अत्यन्त प्रबल भावना के विपरीत, केरेन्स्की और "नरम" समाजवादी मिल्की वर्गों के साथ मिल कर एक संयुक्त सरकार की स्थापना करने में सफल हुए। इसका परिणाम यह हुआ कि मेन्शेविक और समाजवादी-क्रांतिकारी जनता का विश्वास सदा के लिए खो बैठे।

आधा अक्तूबर गुज़रा होगा कि 'राबोची पूत' (मज़दूरों का मार्ग) में 'समाजवादी मन्त्री'[3] शीर्षक से एक लेख प्रकाशित हुआ, जिस में "नरम" समाजवादियों के ख़िलाफ़ जन-साधारण की भावना को व्यक्त किया गया था:

उनकी सेवाओं की फ़ेहरिस्त यह है—

त्सेरेतेली: जनरल पोलोव्त्सेव की सहायता से मज़दूरों को निरस्त्र किया, क्रांतिकारी सैनिकों पर अंकुश लगाया और सेना में मृत्यु-दंड के विधान का अनुमोदन किया।

स्कोबेलेव: शुरू में पूंजीपतियों के मुनाफ़ों पर सौ फ़ीसदी टैक्स लगाने का वादा किया और आख़िर में—आख़िर में मज़दूरों की कारख़ाना समितियों को भंग करने की कोशिश की।

अव्क्सेन्त्येव: भूमि समितियों के सदस्यों, सैकड़ों किसानों को जेलों में ठूंसा और मज़दूरों तथा सैनिकों के दर्जनों अख़बारों को बन्द किया।

चेर्नोव: उस "शाही" घोषणापत्र पर हस्ताक्षर किये, जिसके द्वारा फ़िनिश संसद को भंग करने का आदेश दिया गया था।

साविन्कोव: जनरल कोर्नीलोव के साथ खुले तौर पर सांठ-गांठ की। अगर देश के यह उद्धारक (कोर्नीलोव) पेत्रोग्राद पर क़ब्ज़ा न कर सके, तो ऐसे कारणों से, जिनपर साविन्कोव का बस नहीं था।

ज़ारूद्नी: अलेक्सिन्स्की और केरेन्स्की की मंज़ूरी से क्रांति के कितने ही बेहतरीन सपूतों को, सिपाहियों और मल्लाहों को पकड़ कर जेलों में डाल दिया।

निकीतिन : रेल मज़दूरों से एक बेहूदा पुलिसमैन की तरह पेश आया।

केरेन्स्की : इन हज़रत के बारे में ख़ामोश रहना ही बेहतर है। इनकी सेवाओं की सूची बेहद लम्बी है...

हेल्सिंगफ़ोर्स में होने वाली बाल्टिक बेड़े के प्रतिनिधियों की एक कांग्रेस में एक प्रस्ताव पास किया गया, जो निम्नलिखित पंक्तियों से शुरू हुआ :

हम मांग करते हैं कि नामधारी "समाजवादी" राजनीतिक प्रवंचक केरेन्स्की को, जो पूंजीपति वर्ग के हित में बड़ी बेशर्मी से राजनीतिक धौंसबाज़ी करके महान् क्रांति को और उसके साथ क्रांतिकारी जन-समुदायों को बदनाम और तबाह कर रहा है, अस्थायी सरकार की पांतों से फ़ौरन ही निकाला जाये...

बोल्शेविकों का उत्कर्ष इन सब घटनाओं का प्रत्यक्ष परिणाम था...

मार्च १९१७ से, जब मज़दूरों और सिपाहियों की गरजती हुई लहरें तव्रीचेस्की प्रासाद से टकराईं और उन्होंने निरुत्साही राजकीय दूमा को रूस में सर्वोच्च सत्ता अपने हाथ में ले लेने के लिए मजबूर किया, क्रान्ति की दिशा और प्रक्रम में प्रत्येक परिवर्तन जन-साधारण के, मज़दूरों, सिपाहियों और किसानों के ज़ोर और दबाव से ही घटित होता रहा है। उन्होंने मिल्युकोव मन्त्रिमण्डल को गिरा दिया ; यह उन्हीं की सोवियत थी, जिसने दुनिया के सामने शान्ति के लिए रूस की शर्तों को घोषित किया – "बिना संयोजनों के, बिना हरजानों के, सभी जातियों को आत्मनिर्णय के अधिकार के साथ शान्ति" ; जुलाई में फिर असंगठित सर्वहारा का स्वतःस्फूर्त विद्रोह हुआ, जिन्होंने एक बार फिर तव्रीचेस्की प्रासाद पर चढ़ाई की और मांग की कि सोवियतें रूस का शासन-सूत्र अपने हाथ में लें।

बोल्शेविकों ने, जो उस समय एक छोटा-मोटा राजनीतिक गुट*

---

* मार्च १९१७ की पूंजीवादी क्रांति के तुरंत बाद, अभी अभी क़ानूनी हुई बोल्शेविक पार्टी की सदस्य-संख्या अपेक्षाकृत कम थी। – सं०

ही थे, इस आन्दोलन की अगुआई की। विद्रोह की अनर्थपूर्ण असफलता के फलस्वरूप जनमत उनके ख़िलाफ़ हो गया और बिना नेताओं के मज़दूरों की भीड़ चुपचाप खिसककर अपनी विबोर्ग बस्ती में वापिस चली गयी, जिसका पेत्रोग्राद में वही स्थान है, जो **सेंट अंतुआन** * का पेरिस में है। इसके बाद बोल्शेविकों की वहशियाना धर-पकड़ शुरू हुई। त्रोत्स्की**, कामेनेव और श्रीमती कोल्लोन्ताइ*** समेत सैकड़ों बोल्शेविकों को गिरफ़्तार किया गया। लेनिन और ज़िनोव्येव **** क़ानून की गिरफ़्त से निकल कर फ़रार

---

* **सेंट अंतुआन** – पेरिस का एक उपनगर। यह उपनगर अपनी मज़दूर आबादी के उस जुझारूपन के लिए मशहूर था, जो उसने १८ वीं सदी के अंत तथा १९वीं सदी के क्रांतिकारी विद्रोहों में प्रदर्शित किया था। विबोर्ग बस्ती पेत्रोग्राद में मज़दूरों की एक बस्ती थी। – **सं०**

** **त्रोत्स्की (ब्रोन्स्तीन), ल० द०**, १८९७ से रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर पार्टी के एक सदस्य, मेन्शेविक। १९१७ की गर्मियों में वह बोल्शेविक पार्टी में शामिल हो गये। परंतु उन्होंने बोल्शेविक नीति को स्वीकार नहीं किया, और लेनिनवाद तथा पार्टी की नीति के ख़िलाफ़ उन्होंने प्रत्यक्ष तथा प्रच्छन्न, दोनों प्रकार से संघर्ष चलाया। उनकी इन सरगर्मियों के लिए उन्हें १९२७ में पार्टी से निकाल दिया गया। – **सं०**

*** **कोल्लोन्ताई, अ० म०** (१८७२-१९५२) – १९१५ से बोल्शेविक पार्टी की सदस्य। नवंबर क्रांति के पश्चात् जन-कल्याण के लिए जन-कमिसार।

१९२० में कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के महिला-विभाग की अध्यक्ष। १९२१-२२ में कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल के अंतर्राष्ट्रीय महिला-सक्रेटेरियट की मंत्री। १९२३ से एक मशहूर कूटनीतिज्ञ। – **सं०**

**** **ज़िनोव्येव (रादोमोस्ल्स्की), ग० ये०** – बोल्शेविज़्म से अनेक अवसरों पर विचलित हुए और अंततोगत्वा मार्क्सवाद-लेनिनवाद से अपना नाता ही तोड़ लिया। नवंबर १९१७ में उन्होंने और कामेनेव ने मेन्शेविक समाचारपत्र 'नोवाया जीज़्न' (नव-जीवन) में एक लेख प्रकाशित किया, जिसमें उन्होंने सशस्त्र विद्रोह के बारे में केंद्रीय समिति के निर्णय के प्रति विरोध प्रगट किया और इस प्रकार बोल्शेविक योजना का भेद खोल दिया। यह एक गद्दारी का काम था। बोल्शेविक पार्टी के सदस्यों के नाम अपने पत्र में लेनिन ने कहा कि यह काम हड़ताल-भेदकों का काम था और मांग की कि उन्हें पार्टी से बाहर निकाल दिया जाये। नवंबर क्रांति की विजय के बाद ज़िनोव्येव ने मेन्शेविकों, समाजवादी-क्रांतिकारियों तथा "जन-समाजवादियों" के प्रतिनिधियों के साथ एक संयुक्त सरकार बनाने के विचार का समर्थन किया। १९२७ में ज़िनोव्येव को लगातार पार्टी-विरोधी गुटपरस्त कार्रवाइयां करने के लिए पार्टी से निकाल दिया गया। – **सं०**

हो गये और छिप कर रहने लगे। बोल्शेविक अख़बारों को बन्द कर दिया गया। उकसावेबाज़ और प्रतिक्रियावादी चिल्लाने लगे कि बोल्शेविक जर्मनों के दलाल हैं, यहां तक कि सारी दुनिया में लोग इस बात में विश्वास करने लगे।

लेकिन अस्थायी सरकार ने देखा कि वह इन आरोपों को प्रमाणित करने में असमर्थ है। जर्मनों से मिलकर साज़िश रचने के बारे में जो दस्तावेज़ें बतौर सबूत के पेश की गईं*, उनके बारे में मालूम हुआ कि वे जाली दस्तावेज़ें थीं, और बोल्शेविकों पर बग़ैर मुक़द्दमा चलाये उन्हें एक एक करके बिला ज़मानत के या बरायनाम ज़मानत पर रिहा किया गया। अन्त में केवल छ: बोल्शेविक जेल में रह गये। गिरगिट की तरह रोज़ रंग बदलने वाली अस्थायी सरकार की नपुंसकता और डांवांडोल स्थिति एक ऐसा तर्क थी, जिसका खण्डन कोई नहीं कर सकता था। बोल्शेविकों ने फिर वही नारा उठाया, जो जन-साधारण को इतना अधिक प्रिय था – "समस्त सत्ता सोवियतों के हाथ में!"। यह नारा उठा कर वे अपना उल्लू सीधा नहीं कर रहे थे, क्योंकि उस समय सोवियतों के अन्दर उनके कट्टर दुश्मन "नरम" समाजवादियों का बहुमत था।

लेकिन इससे भी ज़्यादा ज़ोरदार काम यह था कि उन्होंने मज़दूरों, सिपाहियों और किसानों की सीधी-सादी, अपरिष्कृत इच्छाओं को लिया और उन्हीं के आधार पर अपने तात्कालिक कार्यक्रम की रचना की। और इस प्रकार जहां **ओबोरोन्त्सी** (प्रतिरक्षावादी) मेन्शेविकों और समाजवादी-क्रांतिकारियों ने अपने को पूंजीपति वर्ग के साथ समझौतों में फंसाया, वहीं बोल्शेविकों ने बड़ी तेज़ी के साथ रूसी जन-साधारण के मन को जीत लिया। जुलाई में उन्हें हिक़ारत की निगाह से देखा जाता था और उनका पीछा किया जा रहा था, लेकिन सितम्बर बीतते बीतते राजधानी के मज़दूर, बाल्टिक बेड़े के नाविक और सैनिक क़रीब क़रीब पूरी तरह उनकी ओर आ गये थे। सितम्बर** में बड़े बड़े शहरों में होनेवाले नगरपालिका-चुनाव[4]

---

* ये दस्तावेज़ें बदनाम "सीस्सन दस्तावेज़ों" का ही भाग थीं। – **जॉ० री०**

सीस्सन – प्रतिक्रियावादी अमरीकी पत्रकार। बोल्शेविक नेताओं को बदनाम करने के लिए उन्होंने जाली दस्तावेज़ों का एक संग्रह अमरीका में प्रकाशित किया। – **सं०**

** अगस्त (पुराने पंचांग के अनुसार)। पेत्रोग्राद में चुनाव २० अगस्त को हुए। – **सं०**

महत्त्वपूर्ण थे : चुने जाने वाले लोगों में केवल १८ प्रतिशत मेन्शेविक तथा समाजवादी-क्रांतिकारी थे, जबकि जून में वे ७० प्रतिशत थे ...

एक घटना ऐसी है, जिसने विदेशी पर्यवेक्षकों को उलझन में डाल दिया – वह यह कि सोवियतों की केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति, केन्द्रीय सैनिक तथा नौसैनिक समितियों * तथा कई ट्रेड-यूनियनों, विशेष रूप से डाक-तार मज़दूरों तथा रेल मज़दूरों की यूनियनों की केन्द्रीय समितियों ने बोल्शेविकों का अत्यन्त उग्र और हिंस्र भाव से विरोध किया। ये सभी केन्द्रीय समितियां बीच गर्मियों में या और भी पहले चुनी गई थीं, जब मेन्शेविकों और समाजवादी-क्रांतिकारियों के पीछे चलने वाले लोगों की संख्या बहुत बड़ी थी और इन समितियों ने नये चुनावों को टाल दिया था या न होने दिया था। इस प्रकार हम देखते हैं कि मज़दूरों और सैनिकों के प्रतिनिधियों की सोवियतों के संविधान के अनुसार अखिल रूसी कांग्रेस सितम्बर में बुलाई जानी चाहिए थी। लेकिन **त्से-ई-काह** ने इस बिना पर उसे बुलाने से इनकार किया कि संविधान सभा का अधिवेशन दो महीने बाद ही होनेवाला है और उन्होंने कुछ इस क़िस्म का इशारा किया कि उस समय सोवियतें अपने अधिकारों का समर्पण कर देंगी। इस बीच पूरे देश में स्थानीय सोवियतों के अन्दर, ट्रेड-यूनियनों की शाखाओं में और सैनिकों तथा नाविकों की पांतों में बोल्शेविकों की एक के बाद एक विजय हो रही थी। किसानों की सोवियतें अभी भी अनुदार बनी हुई थीं, क्योंकि उनींदे देहाती इलाक़ों में राजनीतिक चेतना धीरे धीरे ही विकसित हो रही थी और वहां जिस पार्टी ने किसानों के बीच एक पीढ़ी से आन्दोलन चलाया था, वह थी समाजवादी-क्रांतिकारी पार्टी ... लेकिन किसानों के अन्दर भी एक क्रांतिकारी पक्ष आकार ग्रहण कर रहा था। और यह चीज़ अक्तूबर में बिलकुल साफ़ हो गयी, जब समाजवादी-क्रांतिकारियों का वामपक्ष उनसे टूट कर अलग हो गया और उसने एक नये राजनीतिक दल, वाम-पंथी समाजवादी क्रांतिकारी पार्टी की स्थापना की।

इसके साथ ही इस बात के लक्षण सर्वत्र प्रगट हो रहे थे कि प्रतिक्रियावादी शक्तियों का आत्मविश्वास बढ़ता जा रहा था[5]। उदाहरण

---

* देखिये 'टिप्पणियां और व्याख्यायें'। – **जॉ० री०**

के लिए, जब पेत्रोग्राद के त्रोइत्स्की थियेटर में 'ज़ार के पापों का घड़ा' नामक एक प्रहसन खेला जा रहा था, राजतंत्रवादियों की एक टोली ने अभिनेताओं को "सम्राट का अपमान करने के लिए" जान से मार डालने की धमकी दी। कुछ अखबार एक "रूसी नेपोलियन" के लिए हसरत कर रहे थे। पूंजीवादी बुद्धिजीवियों के लिए मज़दूरों के प्रतिनिधियों (राबोचिख देपुतातोव) की सोवियतों के लिए **सोबाचिख देपुतातोव** – कुत्तों के प्रतिनिधियों की सोवियतें—कहना एक बिलकुल मामूली बात थी।

१५ अक्तूबर को मेरी बातचीत स्तेपान गेओर्गीयेविच लिआनोज़ोव नामक एक बहुत बड़े रूसी पूंजीपति से हुई, जिनके बारे में कहा जाता था कि वह "रूस के राक़फ़ेलर" हैं। राजनीति में वह कैडेट मतावलम्बी थे।

"क्रान्ति एक बीमारी है," उन्होंने कहा। "विदेशी शक्तियों को यहां कभी न कभी हस्तक्षेप करना ही होगा, उसी तरह जैसे डाक्टर बीमार बच्चे के मामले में हस्तक्षेप करते हैं, ताकि उसे अच्छा किया जा सके, और उसे चलना सिखाया जा सके। बेशक यह बात कमोबेश ग़ैरमुनासिब होगी, लेकिन राष्ट्रों को यह समझना होगा कि उनके अपने देशों में बोल्शेविज़्म का, 'सर्वहारा अधिनायकत्व' और 'विश्व सामाजिक क्रान्ति' जैसे संक्रामक विचारों का ख़तरा कितना बड़ा है ... एक संभावना यह है कि यह हस्तक्षेप शायद आवश्यक न हो। परिवहन में गड़बड़ी फैली हुई है, कारख़ाने बन्द हो रहे हैं और जर्मन आगे बढ़ते जा रहे हैं। हो सकता है कि भुखमरी और पराजय से रूसी जनता की अक़्ल ठिकाने आ जाये ..."

श्री लिआनोज़ोव ने ज़ोर देकर अपनी यह राय ज़ाहिर की कि चाहे कुछ भी हो व्यापारियों और कारख़ानेदारों के लिए मज़दूरों की कारख़ाना समितियों को क़ायम रहने देना या उद्योग के प्रबन्ध में मज़दूरों को किसी भी तरह हाथ बंटाने देना असम्भव होगा।

"जहां तक बोल्शेविकों का प्रश्न है, उनका निपटारा दो में से एक तरीक़े से होगा। सरकार पेत्रोग्राद खाली कर दे, मुहासिरे का एलान करे और फिर हलक़े का सैनिक कमांडर बिना किसी रस्मी क़ानूनी कार्रवाई के इन साहबान के साथ पेश आ सकता है ... **या अगर, उदाहरण**

के लिए, संविधान सभा कोई कल्पनावादी प्रवृत्ति प्रदर्शित करती है, तो उसे शस्त्र-बल से भंग किया जा सकता है ...''

जाड़ा आने वाला था – रूस का भयानक जाड़ा। मैंने व्यवसायियों को यह कहते सुना है: "जाड़ा हमेशा से रूस का सबसे अच्छा दोस्त रहा है। अब वह शायद हमें क्रान्ति से छुटकारा दिला देगा।" बर्फ़ीले मोर्चे पर आफ़त के मारे निरुत्साह सैनिक पहले ही की तरह फ़ाक़े कर रहे थे और मारे जा रहे थे। रेलों की व्यवस्था टूट रही थी, ख़ुराक की कमी हो रही थी और कारख़ाने बन्द हो रहे थे। निराशा की चरम सीमा पर पहुंच कर जन-साधारण चीख पड़े – पूंजीपति वर्ग ही जनता के जीवन को अन्तर्ध्वस्त कर रहा है, वही मोर्चे पर हार के लिए ज़िम्मेदार है। जनरल कोर्नीलोव ने जब सार्वजनिक रूप से कहा: "हमें रीगा देकर देश को उसके कर्त्तव्य के प्रति सचेत करने की क़ीमत अदा करनी पड़ेगी," उसके ठीक बाद ही यह नगर दुश्मन के हवाले कर दिया गया।

वर्ग-युद्ध इतना उग्र हो सकता है, अमरीकियों के लिए यह अविश्वसनीय है। लेकिन मैं ख़ुद उत्तरी मोर्चे पर ऐसे अफ़सरों से मिल चुका हूं, जो साफ़ साफ़ कहते थे कि वे सैनिक समितियों से सहयोग करने की अपेक्षा युद्ध में पराजय को अधिक श्रेयस्कर समझते हैं। कैडेट पार्टी की पेत्रोग्राद शाखा के मन्त्री ने मुझे बताया कि देश के आर्थिक जीवन को ठप करना क्रान्ति की साख मिटाने के आन्दोलन का ही एक भाग है। एक मित्र-राष्ट्र के कूटनीतिज्ञ ने, जिनका नाम प्रगट न करने के लिए मैं वचनबद्ध हूं, इस बात की स्वयं अपनी जानकारी के आधार पर पुष्टि की। मुझे मालूम है कि ख़ारकोव के नज़दीक की कई कोयले की खानों में उनके मालिकों ने आग लगवा दी और उनमें पानी भरवा दिया, मास्को की कुछ सूती मिलों के इंजीनियर जाते जाते मशीनों को चौपट कर गये, रेल अधिकारी रेल-इंजनों को तहस-नहस करते रंगे हाथों मज़दूरों द्वारा पकड़े गये ...

मिल्की वर्गों का एक बड़ा भाग क्रान्ति की अपेक्षा, अस्थायी सरकार की भी अपेक्षा जर्मनों की जीत को अधिक श्रेयस्कर समझता था, और ऐसा कहने में भी न झिझकता था। जिस रूसी परिवार के साथ मैं रहता था, उसमें खाने की मेज़ पर बातचीत का विषय प्रायः निरपवाद रूप

ग यह होता – जर्मन आयेंगे और अपने साथ "शान्ति और सुव्यवस्था" लायेंगे ... मैंने एक शाम मास्को के एक व्यापारी के घर बिताई। चाय के वक़्त हमने मेज़ के गिर्द बैठे ग्यारह आदमियों से पूछा, वे किसे बेहतर समझते हैं – "विल्हेल्म को या बोल्शेविकों को", ग्यारह में से दस ने विल्हेल्म को चुना ...

सट्टेबाज़ों ने आम गड़बड़ी और अव्यवस्था का फ़ायदा उठा कर दौलतें बटोरीं और उन्हें अपनी रंगरेलियों में या सरकारी अफ़सरों की मुट्ठियां गर्म करने में उड़ाया। अनाज और ईंधन को चोर गोदामों में जमा किया गया, या चोरी-छिपे देश से बाहर स्वीडन रवाना किया गया। उदाहरण के लिए, क्रांति के पहले चार महीनों में पेत्रोग्राद नगरपालिका के बड़े बड़े गोदामों से अनाज के रिज़र्व स्टाक दिन-दहाड़े लूटे गये, और यह लूट यहां तक बढ़ी कि दो साल के लिए पर्याप्त अनाज का स्टाक एक महीना के लिए भी नगरवासियों का पेट भरने के लिए काफ़ी नहीं रह गया ... अस्थायी सरकार के अन्तिम खाद्य-मन्त्री की सरकारी रिपोर्ट के अनुसार कहवा व्लादीवोस्तोक में फ़ी पौंड दो रूबल के थोक भाव से ख़रीदा गया और उसी के लिए पेत्रोग्राद में उपभोक्ता ने १३ रूबल दिये। बड़े शहरों की सभी दुकानों में टनों अनाज और कपड़ा भरा पड़ा था, लेकिन उन्हें दौलतमन्द लोग ही ख़रीद सकते थे।

मुफ़स्सल के एक शहर में मेरी वाक़िफ़ीयत एक व्यापारी के परिवार मे थी, जो अब सट्टेबाज़ या जैसा रूसी लोग कहते हैं, **मारोद्योर** (लुटेरा, नरपिशाच) हो गया था। उसके तीन लड़के रिश्वत देकर फ़ौजी नौकरियों मे निकल आये थे। एक अनाज की सट्टेबाज़ी करता था। दूसरा लेना नदी की खानों का उड़ाया हुआ सोना फ़िनलैंड के कुछ रहस्यमय ख़रीदारों के हाथ बेचता था। तीसरे का एक चाकलेट के कारख़ाने में इतना बड़ा हिस्सा था कि वह कारख़ाना उसी के नियन्त्रण में चलता था। वह अपना माल स्थानीय सहकारी समितियों को बेचता था – इस शर्त पर कि ये समितियां उसकी तमाम ज़रूरतों को पूरा करें, और इस प्रकार जब कि जन-साधारण अपने राशन-कार्डों पर आधा पाव काली डबल-रोटी पाते थे, उसके पास सफ़ेद डबल-रोटी, चीनी, चाय, मिस्री, मक्खन और केक के ढेर के ढेर थे ... फिर भी, जब मोर्चे पर सिपाही भूख, ठंड और थकावट से लाचार

हो कर लड़ न सकते, इस परिवार के लोग कितने ग़ुस्से में चीखते, "डरपोक! मुर्दादिल!" और "रूसी होने के लिए" कितनी "शर्मिन्दगी" ज़ाहिर करते... और जब आख़िरकार बोल्शेविकों ने चोर गोदामों में बहुत सा रसद-पानी जमा किया हुआ पाया और उसे ज़ब्त कर लिया, तो इन व्यापारियों की निगाह में वे कितने बड़े "लुटेरे" थे।

समाज की सतह पर सारी सड़ांध के नीचे पुराने ज़माने की तारीक ताक़तें, जो निकोलाई द्वितीय के पतन के समय से बदली न थीं, पोशीदा तौर पर और बड़ी सरगर्मी के साथ काम कर रही थीं। बदनाम **ओख़राना** (राजनीतिक पुलिस) के एजेन्ट अभी भी काम कर रहे थे ज़ार के लिए और ज़ार के ख़िलाफ़, केरेन्स्की के लिए और केरेन्स्की के ख़िलाफ़– जो भी उन्हें पैसा दे, वे उसके हाथों बिकने के लिए तैयार थे... अंधेरे में यमदूत सभाइयों जैसे तरह तरह के रूपोश संगठन प्रतिक्रिया को किसी न किसी रूप में पुनःस्थापित करने की कोशिश में लगे हुए थे।

भ्रष्टाचार तथा बीभत्स अर्धसत्यों के इस वातावरण में एक स्पष्ट स्वर दिन-प्रतिदिन गूंजता रहता था, वह था बोल्शेविकों की बराबर गहरी होती हुई आवाज़: "समस्त सत्ता सोवियतों के हाथ में! लाखों-करोड़ों आम मज़दूरों, सिपाहियों, किसानों के प्रत्यक्ष प्रतिनिधियों के हाथ में। हमें ज़मीन चाहिए, रोटी चाहिए। इस बेमतलब लड़ाई का ख़ात्मा होना चाहिए, गुप्त कूटनीति का, सट्टेबाज़ी का, ग़द्दारी का ख़ात्मा होना चाहिए... क्रांति ख़तरे में है, और उसके साथ सारे संसार में जनता का ध्येय ख़तरे में है!"

सर्वहारा और पूंजीपति वर्ग के बीच, सोवियतों और सरकार के बीच जो संघर्ष शुरू मार्च के दिनों में छिड़ गया था, अब उसकी परिणति होने को थी। एक ही छलांग में मध्य युग से निकल बीसवीं सदी में प्रवेश कर रूस ने चकित-विमूढ़ संसार के सामने क्रान्ति की दो प्रणालियों– एक राजनीतिक और दूसरी सामाजिक – को सांघातिक संघर्ष की अवस्था में प्रगट किया।

इन तमाम महीनों की भुखमरी के बाद और भ्रम टूटने के बाद रूसी क्रांति की प्राणशक्ति की यह कैसी अभिव्यक्ति थी! पूंजीपति वर्ग को अपने रूस को ज़्यादा अच्छी तरह जानना चाहिए था। जल्दी ही रूस में

क्रांति की "बीमारी" का सिलसिला पूरी तेज़ी पर आने वाला था ...

हमने इतनी तेज़ी के साथ अपने को नये, अधिक गतिशील जीवन के अनुरूप ढाल लिया था कि पीछे मुड़कर देखने से लगता था कि नवम्बर विद्रोह के पहले रूस एक दूसरे ही युग में था, बेहद रूढ़िपंथी था। हम उसी तरीक़े से बदल गये थे, जैसे रूसी राजनीति समूची की समूची वामपंथी दिशा में ढुलक पड़ी थी, यहां तक कि कैडेटों को "जनता के शत्रु" कहकर ग़ैरक़ानूनी करार दिया गया, केरेन्स्की "प्रतिक्रांतिकारी" बन गये, त्सेरेतेली, दान, लीबेर, गोत्स और अव्क्सेन्त्येव जैसे "मध्यमार्गी" समाजवादी नेता उनके अनुयायियों के लिए भी घोर प्रतिक्रियावादी बन गये और वीक्तोर चेर्नोव जैसे लोग, यहां तक कि मक्सिम गोर्की तक, दक्षिणपंथी हो गये ...

लगभग बीच दिसम्बर, १६१७ में कुछ समाजवादी-क्रांतिकारी नेताओं ने ब्रिटिश राजदूत सर जॉर्ज ब्यूकनन से एक निजी मुलाक़ात की और उनसे बड़ी आजिज़ी से कहा कि वह किसी से उनके आने का ज़िक्र न करें, क्योंकि वे "घोर दक्षिणपंथी" समझे जाते थे।

"ज़रा सोचिये," सर जॉर्ज ने कहा। "साल भर पहले मेरी सरकार ने मुझे हिदायत दी कि मैं यह देखते हुए कि मिल्युकोव कितना ख़तरनाक वामपंथी है उससे मुलाक़ात मंज़ूर न करूं!"

रूस में, ख़ासकर पेत्रोग्राद में, सितम्बर और अक्तूबर से बुरे महीने और नहीं हैं। फीका, उदास, धुंधला आसमान, लम्बी होती जाती रातें, लगातार सराबोर कर देने वाली बारिश। राह चलते पैरों के नीचे लबालब, गहरी फिसलन भरी कीचड़, जो पैरों से चिपकती और जिसकी छाप भारी भारी बूट हर जगह डालते। नगरपालिका प्रशासन के बिल्कुल ठप हो जाने की वजह से हालत और भी बुरी हो गई थी। फ़िनलैंड की खाड़ी से तेज़, चुभती हुई नम हवायें बह रही थीं और ठंडा कोहरा सड़कों में उमड़ा आ रहा था। रात में बचत के ख़्याल से और ज़ेप्लिनों के डर से भी सड़कों की बत्तियां बहुत कम जलाई जाती थीं – एक बत्ती यहां, तो एक वहां। लोगों के अपने घरों में बिजली छः बजे शाम से आधी रात तक जलती रहती, जब कि मोमबत्तियां फ़ी मोमबत्ती ४० सेंट के हिसाब से बिकतीं और मिट्टी के तेल का तो दर्शन भी दुर्लभ था। तीसरे पहर तीन बजे से

अपनी तुकबंदियां करते, लेकिन उनमें क्रांति का जिक्र भूले भी न होता, यथार्थवादी चित्रकार मध्ययुगीन रूसी इतिहास के दृश्यों को आंकते, कुछ भी आंकते, लेकिन वे क्रांति की तसवीर हरगिज़ न देते। प्रान्तों से युवा महिलायें फ़्रांसीसी भाषा और गायन सीखने के लिए राजधानी में आतीं और नौजवान, हसीन और ख़ुशमिज़ाज अफ़सर अपने सुनहली गोट वाले सुर्ख **बश्लीक** पहने और अपनी नक़्क़ाशी की हुई काकेशियाई तलवारें बांधे होटलों के प्रकोष्ठों में घूमते रहते। छोटे-मोटे अफ़सरों के घरों की महिलायें तीसरे पहर एक-दूसरे के साथ बैठ कर चाय पीतीं, हर महिला अपने दस्तानाबंद हाथ में अपने साथ अपनी सोने या चांदी की या रत्नजटित शर्करा मंजूषा और आधी डबल-रोटी लेकर चलती और वे यह मनातीं कि ज़ार वापिस आ जाये या जर्मन आ जायें, या कुछ ऐसा हो कि नौकरों की समस्या सुलझ जाये... एक दिन तीसरे पहर मेरे एक दोस्त की लड़की घर लौटी, तो वह आपे से बाहर हो रही थी, क्योंकि उसे ट्राम-गाड़ी की महिला कंडक्टर ने "कामरेड" कह कर पुकारा था!

उनके चारों ओर रूस की धरती प्रसव वेदना से छटपटा रही थी और एक नये संसार को जन्म दे रही थी। जिन नौकरों के साथ कुत्तों जैसा सलूक किया जाता था और जिनके सामने चन्द ठीकरे फेंक दिये जाते थे, वे अब ख़ुदमुख़्तार हो रहे थे। एक जोड़ी जूते की क़ीमत सौ रूबल से ज़्यादा थी और चूंकि मासिक तनख़ाह औसतन क़रीब ३५ रूबल थी, नौकर लाइनों में खड़े होकर एड़ियां रगड़ने या जूते घिसने से इनकार कर देते। इतना ही नहीं, नये रूस में हर मर्द और औरत को वोट देने का हक़ हासिल था; मज़दूरों के अख़बार निकल रहे थे, जो नयी और चौंका देने वाली बातें कहते थे। और फिर सोवियतें थीं और यूनियनें थीं। **इज़्वोज़चिकों** (गाड़ीवानों) की अपनी यूनियन थी; उनके प्रतिनिधि भी पेत्रोग्राद सोवियत में थे। होटल कर्मचारी और वेटर संगठित थे और वे बख़्शिश लेने से इनकार कर देते। रेस्तोरां की दीवालों पर वे नोटिसें चिपका देते, जिनमें लिखा होता: "यहां बख़्शिश नहीं ली जाती", या "अगर कोई आदमी वेटरी करके अपनी रोज़ी कमाता है, तो इसका मतलब यह नहीं है कि आप उसे बख़्शिश देकर उसकी तौहीन करें"।

मोर्चे पर सिपाही अफ़सरों के साथ अपनी लड़ाई लड़ रहे थे और अपनी समितियों द्वारा स्वशासन की शिक्षा ग्रहण कर रहे थे। कारख़ानों के अन्दर वे बेजोड़ रूसी संस्थायें – कारख़ाना समितियां* – पुरानी व्यवस्था में संघर्ष के दौरान अनुभव, शक्ति और अपने ऐतिहासिक मिशन की समझ अर्जित कर रही थीं। समूचा रूस पढ़ना-लिखना सीख रहा था, वह राजनीति, अर्थशास्त्र, इतिहास **पढ़े जा रहा था**, क्योंकि लोगों की **ज्ञान-पिपासा** जाग गयी थी ... हर बड़े शहर में, अधिकांश छोटे शहरों में भी, मोर्चे पर हर राजनीतिक गुट का अपना अख़बार निकलता था – कभी कभी तो एक नहीं, कई अख़बार निकलते थे। लाखों पैम्फ़लेट हज़ारों संगठनों द्वारा बांटे जा रहे थे, और सेनाओं में, गांवों में, कारख़ानों में, सड़कों-गलियों तक में उनकी जैसे झड़ी लगी हुई थी। शिक्षा की लालसा, जो इतने दिनों दबाई गई थी, क्रांति के साथ सहसा प्रज्वलित हो उठी और अत्यन्त प्रबल तथा उग्र रूप में प्रगट हुई। अकेले स्मोल्नी संस्थान से पहले छः महीनों में हर रोज़ टनों साहित्य गाड़ियों में भरकर, रेल-गाड़ियों में भर कर बाहर भेजा गया, और यह साहित्य देश के कोने कोने में फैल गया। जिस तरह गर्म तपता हुआ बालू पानी सोखता है और फिर भी अतृप्त रहता है, उसी तरह रूस यह सारी पठन-सामग्री चाट गया, और फिर भी उसकी प्यास नहीं बुझी। और यह सामग्री क़िस्सा-कहानी न थी, गढ़ा हुआ इतिहास नहीं थी, मिलावटी मज़हब नहीं थी और न ही वह सस्ता, दो कौड़ी का बिगाड़ने वाला कथा साहित्य थी। यह पठन-सामग्री थी – सामाजिक और आर्थिक सिद्धान्त, दर्शन, तोल्स्तोई, गोगोल और गोर्की की कृतियां ...

और फिर वह सारी बातचीत और बहस, जिसके सामने कार्लाइल का "फ़्रांसीसी वाक्-प्रवाह" महज़ एक पतली सी धारा था। थियेटरों, सर्कसों, स्कूलों, क्लबों, सोवियतों के सभा-कक्षों, यूनियनों के सदर दफ़्तरों, बारिकों में लेक्चर, वाद-विवाद, भाषण ... मोर्चे की खाइयों में, गांवों

---

* देखिये, 'टिप्पणियां और व्याख्यायें'। – **जॉ० री०**

३० मई (१२ जून) – ३ (१६) जून में होनेवाले कारख़ाना समितियों के पेत्रोग्राद सम्मेलन में भाग लेनेवालों के बहुमत ने (तीन चौथाई) बोल्शेविकों का साथ दिया। – **सं०**

के चौकों में, कारखानों में सभायें... वह कितना अद्भुत दृश्य होता, जब पुतीलोव्स्की ज़ावोद (पुतीलोव कारख़ाना) के ४०,००० मज़दूर सामाजिक-जनवादियों, समाजवादी-क्रांतिकारियों, अराजकतावादियों—जिस किसी को, जो कुछ भी कहना हो, उसे सुनने के लिए, जब तक वह बोलता जाये, तब तक सुनने के लिए निकल पड़ते। पेत्रोग्राद में, समूचे रूस में महीनों तक सड़क और गली का हर नुक्कड़ सार्वजनिक भाषण का एक मंच बना हुआ था। रेल-गाड़ियों में, ट्राम-गाड़ियों में, सभी जगहों में बहसें हमेशा अपने आप छिड़ जातीं...

और फिर अखिल रूसी सम्मेलन और कांग्रेसें, जिनमें दो प्रायद्वीपों के लोग इकट्ठे होते—सोवियतों के, सहकारी समितियों के, **ज़ेम्सत्वोओं***, जातियों, पादरियों, किसानों, राजनीतिक पार्टियों के सम्मेलन; जनवादी सम्मेलन, मास्को राजकीय सम्मेलन, रूसी जनतन्त्र की परिषद्... पेत्रोग्राद में हमेशा तीन-चार सम्मेलन एक साथ ही चलते रहते। हर सभा में भाषणकर्त्ताओं का वक़्त बांध देने की कोशिशें बेकार जातीं, हर आदमी इसके लिए आज़ाद था कि उसके मन में जो भी विचार हो, उसे वह बेधड़क ज़ाहिर करे।

हम रीगा के पीछे बारहवीं सेना के मोर्चे पर गये, जहां फटेहाल और नंगे पैर आदमी, जिनकी हड्डियां निकल आयी थीं, घोर निराशाजनक खाइयों की कीचड़ में घुल रहे थे। जब उन्होंने हमें देखा, वे उठ खड़े हुए—उनके चेहरे ठिठुरे हुए थे और उनके बदन की नीली जिल्द फटे हुए कपड़ों के बीच से झलक रही थी। उन्होंने बड़े चाव से पूछा, "क्या आप कुछ **पढ़ने के लिए** लाये हैं?"

परिवर्तन के कितने ही बाह्य लक्षण देखे जा सकते थे तो क्या; अलेक्सान्द्रीन्स्की थियेटर के सामने महान् येकातेरीना की मूर्ति अपने हाथ में एक छोटा सा लाल झंडा लिये थी, तो क्या; दूसरे झंडे, जिनका रंग कुछ उड़ा हुआ था, सभी सार्वजनिक भवनों के ऊपर फहरा रहे थे, शाही निशान और उक़ाब या तो फाड़ डाले गये थे, या उन पर कपड़ा डाल

---

* देखिये, 'टिप्पणियां और व्याख्यायें'। **—जॉ० री०**

दिया गया था, और डरावने **गोरोदोवोई** (नगर पुलिस) की जगह अब नर्मी से पेश आने वाली निहत्थी नागरिक मिलिशिया सड़कों पर गश्त लगा रही थी, तो भी क्या, इन सब के बावजूद गुज़रे ज़माने की बहुत सी अजीबोग़रीब अलामतें अभी मौजूद थीं।

उदाहरण के लिए, पीटर महान् का '**ताबेल ओ रान्गाख़**' – दरजा-वार तरतीब – जिस को उन्होंने सख़्ती के साथ रूस पर लागू किया था, अभी भी चल रही थी। स्कूली लड़कों समेत प्रायः सभी लोग अपनी मुक़र्रर वर्दियां पहनते थे, जिनके बटनों और कंधे की पट्टियों पर शाही निशान अंकित होते थे। तीसरे पहर क़रीब पांच बजे सड़कें ढलती उम्र के कुछ सहमे हुए वर्दीपोश साहबानों से भरी होतीं, जो मंत्रालयों या सरकारी संस्थानों की बड़ी बड़ी बारिकनुमा इमारतों में काम करने के बाद पोर्ट-फ़ोलियो लिए रास्ते भर शायद यह हिसाब लगाते घर जाते होते कि उनके ऊपर के कितने अफ़सरों की मृत्यु होने से वे तरक़्क़ी पा कर कालेजिएट असेसर या प्रिवी कौन्सिलर के आकांक्षित **चीन** (दर्जे) को प्राप्त कर सकेंगे, ताकि ख़ासी अच्छी पेंशन पर या शायद सेंट ऐन का पदक पाकर रिटायर होने की सम्भावना हो सके...

कहा जाता है कि जब क्रान्ति पूरे बाढ़ पर थी, तब एक दिन सीनेटेर सोकोलोव नागरिक लिबास पहने सीनेट की एक मीटिंग में भाग लेने के लिए आये, लेकिन उन्हें भीतर नहीं घुसने दिया गया, क्योंकि उन्होंने ज़ारशाही सेवा की नियत वर्दी नहीं पहन रखी थी!

एक पूरे राष्ट्र की हलचल और विघटन की इस पृष्ठभूमि में ही रूस की जागृत और उठ खड़ी हुई जनता का शानदार जुलूस निकला...

दूसरा अध्याय

उठता हुआ तूफ़ान

सितम्बर* में जनरल कोर्नीलोव ने अपने को रूस का सैनिक अधिनायक घोषित करने के लिए पेत्रोग्राद पर चढ़ाई की। सहसा उनके पीछे पूंजीपति वर्ग का फौलादी पंजा प्रगट हुआ, जिसकी यह जुर्रत हुई थी कि क्रान्ति को कुचलने की कोशिश करे। कुछ समाजवादी मन्त्री भी कोर्नीलोव-काण्ड में शामिल थे, केरेन्स्की तक पर शक किया जा रहा था[1]। साविन्कोव से जब उनकी पार्टी, समाजवादी-क्रान्तिकारी पार्टी, की केन्द्रीय समिति ने जवाब तलब किया, उन्होंने अपनी सफ़ाई देने से इनकार किया और उन्हें पार्टी से निकाल दिया गया। कोर्नीलोव सैनिक समितियों के हाथों बन्दी हुआ। उनके जनरलों को बर्ख़ास्त किया गया, मन्त्रियों को मुअत्तल करके काम से अलग कर दिया गया और फलतः मंत्रिमण्डल का पतन हो गया।

केरेन्स्की ने पूंजीपति वर्ग की पार्टी, कैडेटों को शामिल करते हुए एक नया मंत्रिमण्डल बनाने की कोशिश की। लेकिन उनकी पार्टी, समाजवादी-क्रान्तिकारी पार्टी ने उन्हें आदेश दिया कि वह कैडेटों को शामिल न करें। केरेन्स्की ने पार्टी का हुक्म मानने से इन्कार किया और समाजवादी-क्रान्तिकारियों के अपने हठ पर अड़े रहने की सूरत में मन्त्रिमण्डल से इस्तीफ़ा देने की धमकी दी। लेकिन जन-भावना इतनी प्रबल थी कि फ़िलहाल उनकी यह हिम्मत न पड़ी कि उसका विरोध करें, और हुआ यह कि केरेन्स्की की अध्यक्षता में पांच पुराने मन्त्रियों के एक अस्थायी निर्देशक-

---

* अगस्त (पुराने पंचांग के अनुसार) –सं०

मण्डल * ने तब तक के लिए सत्ता अपने हाथ में ले ली, जब तक कि इस प्रश्न का निपटारा न हो ले।

कोर्नीलोव-काण्ड के फलस्वरूप सभी समाजवादी दल, "नरम" तथा क्रान्तिकारी, दोनों ही आत्म-रक्षा की एक प्रबल, तीव्र प्रवृत्ति के वशीभूत हो एक दूसरे के समीप खिंच आये। अब दूसरा कोई कोर्नीलोव-काण्ड हरगिज़ होने नहीं दिया जा सकता। एक नयी सरकार बनाना ज़रूरी था, जो क्रान्ति का समर्थन करने वाले तत्वों के प्रति उत्तरदायी हो। और इसलिए **त्से-ई-काह** ने जन-संगठनों को आमन्त्रित किया कि वे पेत्रोग्राद में सितम्बर में बुलाये जाने वाले एक जनवादी सम्मेलन[2] के लिए अपने प्रतिनिधि भेजें।

तुरन्त ही **त्से-ई-काह** के अन्दर तीन गुट सामने आये। बोल्शेविकों ने मांग की कि सोवियतों की अखिल रूसी कांग्रेस बुलाई जाये और वह सत्ता अपने हाथ में ले। चेर्नोव के नेतृत्व में "मध्यमार्गी" समाजवादी-क्रान्तिकारियों ने, कमकोव तथा स्पिरिदोनोवा के नेतृत्व में वामपंथी समाजवादी-क्रान्तिकारियों के साथ मिलकर, मार्तोव के नेतृत्व में मेन्शेविक-अन्तर्राष्ट्रीयतावादियों ने और "मध्यमार्गी" मेन्शेविकों ** ने, जिनके प्रतिनिधि बोग्दानोव और स्कोबेलेव थे, मांग की कि एक विशुद्ध समाजवादी सरकार की स्थापना की जाये। दक्षिणपंथी मेन्शेविकों के नेता त्सेरेतेली, दान और लीबेर ने और अव्क्सेन्त्येव तथा गोत्स के पीछे चलनेवाले दक्षिणपंथी समाजवादी-क्रान्तिकारियों ने आग्रह किया कि नयी सरकार में मिल्की वर्गों के प्रतिनिधि ज़रूर होने चाहिये।

इसके बाद बोल्शेविकों को पेत्रोग्राद सोवियत में बहुमत प्राप्त करते देर नहीं लगी और मास्को, कीयेव, ओदेस्सा और दूसरे नगरों की सोवियतों ने पेत्रोग्राद सोवियत का अनुगमन किया।

मेन्शेविक और समाजवादी-क्रान्तिकारी, जिनके हाथ में **त्से-ई-काह** की बागडोर थी, घबरा उठे, और उन्होंने फ़ैसला किया कि उनके लिए आख़िरकार कोर्नीलोव से उतना ख़तरा न था, जितना लेनिन से था।

---

* अस्थायी निर्देशक-मंडल में निम्नलिखित व्यक्ति शामिल थे: केरेन्स्की, निकीतिन, तेरेश्चेन्को, वेर्खोव्स्की, तथा वेर्देरेव्स्की। – सं०

** देखिये, 'टिप्पणियां और व्याख्यायें'। – जॉ० री०

उन्होंने जनवादी सम्मेलन की प्रतिनिधित्व-योजना में संशोधन किया और सहकारी समितियों तथा दूसरे अनुदार संगठनों के प्रतिनिधियों को ज़्यादा बड़ी तादाद में शामिल किया। इस सभा ने भी, जिसमें कुछ ख़ास लोग चुन-चुन कर भरे गये थे, शुरू में **कैडेटों को छोड़कर संयुक्त सरकार** गठित करने के पक्ष में वोट दिया। केवल इसलिए कि केरेन्स्की ने इस्तीफ़ा देने की खुली धमकी दी, और "नरम" समाजवादियों ने घबरा कर चीख-पुकार मचाई कि "जनतन्त्र ख़तरे में है", सम्मेलन ने अल्प बहुमत से पूंजीपति वर्ग के साथ मिल कर संयुक्त सरकार गठित करने के पक्ष में निर्णय किया और वैधानिक अधिकारों से रहित एक प्रकार के सलाहकार संसद की स्थापना के लिए मंजूरी दी, जिसे 'रूसी जनतन्त्र की अस्थायी परिषद्' का नाम दिया गया। नये मन्त्रिमण्डल की बागडोर वस्तुतः मिल्की वर्गों के हाथ में थी और रूसी जनतन्त्र की परिषद् में उन्हें अपनी शक्ति को देखते हुए कहीं ज़्यादा सीटें मिली थीं।

हक़ीक़त यह थी कि अब **त्से-ई-काह** सोवियतों के आम सदस्यों की प्रतिनिधि-संस्था न रह गयी थी, और वह क़ानून का उल्लंघन कर सोवियतों की दूसरी अखिल रूसी कांग्रेस को, जो सितम्बर में होनेवाली थी, बुलाने से इनकार कर रही थी। उसका इस कांग्रेस को बुलाने का या उसे बुलाये दिये जाने का कोई इरादा न था। उसके आधिकारिक मुखपत्र 'इज़्वेस्तिया' (समाचार) ने कुछ इस प्रकार का संकेत करना शुरू कर दिया था कि सोवियतों का काम ख़त्म होने के क़रीब आ रहा है[3], और उन्हें जल्द ही भंग किया जा सकता है... नयी सरकार ने इसी समय "ग़ैरज़िम्मेदार संगठनों" अर्थात् सोवियतों के उन्मूलन को अपनी नीति का एक अंग घोषित किया।

उत्तर में बोल्शेविकों ने आह्वान दिया कि सोवियतों की अखिल रूसी कांग्रेस पेत्रोग्राद में २ नवम्बर को बुलाई जाये और वह रूस का शासन-सूत्र अपने हाथ में ले। साथ ही वे रूसी जनतन्त्र की परिषद् से अलग हो गये – उन्होंने कहा कि वे "जनता के साथ ग़द्दारी करने वाली सरकार" में कोई हिस्सा नहीं लेंगे[4]।

लेकिन बोल्शेविकों के बाहर निकल आने से ही अभागी परिषद् में शान्ति स्थापित नहीं हुई। मिल्की वर्ग अपने को प्रभुत्व की स्थिति में पाकर

उद्धत हो गये। कैडेटों ने एलान किया कि सरकार को क़ानूनन इस बात का कोई अधिकार नहीं है कि वह रूस को जनतन्त्र घोषित करे। उन्होंने मांग की कि सैनिकों और नाविकों की समितियों को नष्ट-भ्रष्ट कर देने के लिए सेना और नौसेना के अन्दर सख़्त कार्रवाई की जाये और सोवियतों की मलामत की। परिषद् के दूसरे पक्ष में मेन्शेविक-अन्तर्राष्ट्रीयतावादियों और वामपंथी समाजवादी-क्रान्तिकारियों ने अविलम्ब शान्ति, किसानों के हाथ में भूमि के अन्तरण तथा उद्योग पर मज़दूरों के नियन्त्रण का – वस्तुतः बोल्शेविकों के ही कार्यक्रम का – समर्थन किया।

मैंने कैडेटों के जवाब में मार्तोव का भाषण सुना था। वह बेहद बीमार थे, और सभा-मंच की मेज़ के ऊपर एक बेहद बीमार आदमी ही की तरह दोहरे झुके हुए और एक ऐसी भारी बैठी हुई आवाज़ में बोलते हुए कि उन्हें मुश्किल से ही सुना जा सकता था, उन्होंने दक्षिणपंथियों की बेंचों की ओर उंगली से इशारा करते हुए कहा :

"आप हमें पराजयवादी कहते हैं, लेकिन असली पराजयवादी वे हैं, जो शान्ति सम्पन्न करने के लिए ज़्यादा माक़ूल मौक़े की ताक में हैं, जो शान्ति को बाद के लिए टाल देने के लिए आग्रह करते हैं, उस वक़्त के लिए, जब रूसी सेना का कुछ भी बाक़ी नहीं रह जायेगा, जब रूस विभिन्न साम्राज्यवादी गुटों के बीच सौदेबाज़ी का विषय बन जायेगा ... आप रूसी जनता के ऊपर एक ऐसी नीति लादने की कोशिश कर रहे हैं, जो पूंजीपति वर्ग के स्वार्थों द्वारा निश्चित होती है। शान्ति का प्रश्न अविलम्ब उठाया जाना चाहिये ... और तब आप देखेंगे कि जिन लोगों को आप जर्मनों के दलाल कहते हैं, उनका काम, उन ज़िम्मरवाल्डियों* का काम अकारथ नहीं गया है, जिन्होंने सभी देशों में जनवादी जन-समुदायों की अन्तश्चेतना को जागृत करने के लिए ज़मीन तैयार की है ..."

मेन्शेविक तथा समाजवादी-क्रान्तिकारी इन दोनों दलों के बीच थाली के बैंगन की तरह लुढ़कते रहते थे ; जन-साधारण के बढ़ते हुए असन्तोष

---

* यूरोप के समाजवादियों का क्रान्तिकारी अन्तर्राष्ट्रीयतावादी पक्ष, जो ज़िम्मरवाल्डी इसलिए कहलाया कि उन्होंने १९१५ में ज़िम्मरवाल्ड, स्विट्ज़रलैण्ड, में हुए अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया था। – **जॉ० री०**

का दबाव उन्हें अनिवार्यतः वामपंथी दिशा में प्रेरित कर रहा था। परिषद् के सदस्य गहरे विरोध के कारण ऐसे दलों में बंटे हुए थे, जिनमें कभी सामंजस्य नहीं हो सकता था।

उस समय जब पेरिस में मित्र-राष्ट्र सम्मेलन बुलाये जाने की विज्ञप्ति ने विदेश नीति के उत्कट प्रश्न को सम्मुख उपस्थित कर दिया था, यही स्थिति थी ...

सिद्धान्ततः रूस की सभी समाजवादी पार्टियां जनवादी शर्तों पर यथाशीघ्र शान्ति सम्पन्न करने के पक्ष में थीं। मई १९१७ में ही पेत्रोग्राद सोवियत ने, जो उस समय मेन्शेविकों तथा समाजवादी-क्रान्तिकारियों के हाथ में थी, शान्ति के लिए रूस की प्रसिद्ध शर्तों की घोषणा की थी। इन शर्तों के अन्तर्गत यह मांग की गयी थी कि मित्र-राष्ट्र युद्ध-उद्देश्यों के बारे में बातचीत करने के लिए सम्मेलन बुलायें। अगस्त में इस सम्मेलन को बुलाने का वादा किया गया था, फिर उसे सितम्बर तक टाल दिया गया, फिर अक्तूबर तक, और अब उसके लिए १० नवम्बर की तारीख़ निश्चित की गयी थी*।

अस्थायी सरकार का सुझाव था कि रूस की ओर से इस सम्मेलन में दो प्रतिनिधि भाग लें – प्रतिक्रियावादी जनरल अलेक्सेयेव तथा परराष्ट्र-मन्त्री तेरेश्चेन्को। सोवियतों ने अपनी ओर से बोलने के लिए स्कोबेलेव को चुना और एक घोषणापत्र प्रस्तुत किया, जो **नक़ाज़**[5] – निर्देशपत्र – के नाम से प्रसिद्ध है। अस्थायी सरकार ने स्कोबेलेव के चुने जाने पर तथा उनके **नक़ाज़** पर आपत्ति प्रगट की। मित्र-राष्ट्रों के राजदूतों ने प्रतिवाद प्रगट किया, और अन्ततः बोनर लॉ** ने ब्रिटेन की पार्लामेंट में एक प्रश्न के उत्तर में रुखाई से कहा, "जहां तक मुझे मालूम है, पेरिस सम्मेलन युद्ध-उद्देश्यों के बारे में बिल्कुल विचार नहीं करेगा, वह केवल इस बात पर विचार करेगा कि युद्ध किन तरीक़ों से चलाया जाये ..."

---

* अस्थायी सरकार के पतन के कारण सम्मेलन बुलाया न जा सका। – **सं०**

** **एन्ड्रयू बोनर लॉ** (१८५८-१९२३) – ब्रिटिश लार्ड, कंज़रवेटिव पार्टी के नेता, १९१७ में – लायड जॉर्ज की संयुक्त सरकार में वित्त-मन्त्री, हाउस आफ़ कामन्स के नेता। – **सं०**

बोनर लॉ के इस वक्तव्य से रूस के अनुदार अख़बार फूले न समाये। बोल्शेविकों ने डपट कर कहा, "देख लो, मेन्शेविकों और समाजवादी-क्रांतिकारियों की समझौतापरस्त कार्यनीति ने उन्हें कहां पहुंचा दिया है!"

युद्ध के १००० मील के मोर्चे पर रूस की सेनाओं के लाखों-लाख आदमियों में ऐसी ज़बर्दस्त हलचल हुई, जैसे समुद्र में ज्वार आयी हो और जैसे लहरें उठती हैं, वैसे ही उनके सैकड़ों प्रतिनिधिमण्डल राजधानी में उमड़ पड़े और उन सबके लबों पर एक ही आवाज़ थी, "शान्ति! शान्ति!"

मैं नेवा नदी पार कर सर्कस मादर्न पहुंचा, जहां एक महती जन-सभा हो रही थी। ऐसी सभायें रात-ब-रात बढ़ती हुई तादाद में शहर भर में हो रही थीं। धुंधला, सरोसामान से खाली गोल सर्कस-घर, जिसमें एक पतले से तार से लटकी हुई पांच छोटी छोटी बत्तियां अपनी रोशनी बिखेर रही थीं, बिल्कुल ऊपर छत तक खचाखच भरा हुआ था। सिपाही, मल्लाह, मज़दूर, स्त्रियां – सभी इस तन्मय भाव से भाषण को सुन रहे थे, जैसे वही उनकी ज़िन्दगी का दारोमदार हो। एक सिपाही बोल रहा था, ५४८ वीं डिवीज़न का सिपाही – मालूम नहीं वह कौन-सी डिवीज़न थी और कहां थी।

"साथियो," सिपाही ने चिल्ला कर कहा, और उसके खिंचे हुए चेहरे में, उसकी निराशापूर्ण भावभंगी में एक सच्ची तड़प थी। "चोटी के लोग हमेशा हमसे कहते रहते हैं कि और भी क़ुर्बानी दो, और भी क़ुर्बानी दो, जबकि जिन लोगों के पास सब कुछ भरा पड़ा है, उन्हें कोरा छोड़ दिया जाता है, उन्हें ज़रा सा भी दिक़ नहीं किया जाता।

"हम जर्मनी से युद्ध की स्थिति में हैं। क्या हम जर्मन जनरलों को अपने सैनिक स्टाफ़ में काम करने को बुलायेंगे? लेकिन हम पूंजीपतियों के साथ भी युद्ध की स्थिति में हैं और फिर भी हम उन्हें अपनी सरकार में आने के लिए दावत देते हैं...

"रूस का सिपाही कहता है, 'आप मुझे दिखाइये, वह कौन-सी चीज़ है, जिसके लिए मैं लड़ रहा हूं; क्या वह कुस्तुनतुनिया है या यह आज़ाद रूस है? क्या वह जनवाद है या पूंजीवादी लूट-खसोट? अगर आप यह साबित कर सकें कि मैं मोर्चे पर क्रांति की हिफ़ाज़त कर रहा हूं,

तो मैं उठूंगा और लड़ूंगा और इस बात की क़तई ज़रूरत नहीं है कि मुझे मजबूर करने के लिए मृत्यु-दंड का विधान किया जाये।'

"जब ज़मीन किसानों की होगी और कारख़ाने मज़दूरों के होंगे, और सत्ता सोवियतों के हाथ में होगी, तब हम समझेंगे कि हां, हमारे पास कोई चीज़ है, जिसके लिए लड़ना है और हम उसके लिए लड़ेंगे!"

बारिकों में, कारख़ानों में, सड़कों-गलियों के नुक्कड़ों पर सिपाहियों के भाषणों का सिलसिला कभी ख़त्म होने को न आता। वे सभी बस एक चीज़ के लिए आवाज़ उठाते – लड़ाई ख़त्म होनी चाहिए और एलानिया कहते कि अगर सरकार शान्ति स्थापित करने की पुरज़ोर कोशिश नहीं करती, तो सिपाही खाइयों को छोड़कर घर लौट आयेंगे।

आठवीं सेना का एक प्रवक्ता:

"हम कमज़ोर हैं, हरेक कम्पनी में बस थोड़े से ही सिपाही रह गये हैं। यह बिल्कुल ज़रूरी है कि वे हमें रसद-पानी, जूते और कुमक पहुंचायें, नहीं तो बहुत जल्द सिर्फ़ खाली खाइयां ही रह जायेंगी। शान्ति चाहिए, नहीं तो रसद-पानी चाहिए... सरकार या तो लड़ाई को ख़त्म करे, या सेना की पूरी इमदाद करे..."

४६वीं साइबेरियाई तोपख़ाना डिवीज़न की ओर से:

"सेना के अफ़सर हमारी समितियों के साथ काम करने से इनकार करते हैं, वे हमें दुश्मन के हवाले करते हैं, हमारे आन्दोलनकर्त्ताओं को मौत की सज़ायें देते हैं, और प्रतिक्रांतिकारी सरकार उनका समर्थन करती है। हमने सोचा था कि क्रांति शान्ति लायेगी। लेकिन अब तो सरकार हमें ऐसी बातें करने को भी मना करती है, और साथ ही वह न तो हमें इतनी ख़ुराक देती है कि हम ज़िन्दा रह सकें और न इतना ग़ोला-बारूद कि हम लड़ सकें..."

यूरोप से अफ़वाहें आ रही थीं कि रूस को बलि चढ़ा कर शान्ति स्थापित की जायेगी[6]...

फ़्रांस में रूसी सैनिकों के साथ जो सलूक हो रहा था, उसकी ख़बर ने असंतोष को और भी भड़काया। वहां पहली ब्रिगेड ने अपने अफ़सरों को हटा कर उनकी जगह सैनिक समितियां स्थापित करने का प्रयत्न किया, जैसा उनके साथियों ने देश में किया था; ब्रिगेड ने सलोनिकी भेजे जाने

के हुक्म को मानने से इनकार किया और मांग की कि उसे वापिस रूस भेजा जाये। ब्रिगेड के सिपाहियों को घेर लिया गया, उनका रसद-पानी बन्द कर उन्हें भूखों मारा गया और फिर तोपों से उन पर गोले दग़वाये गये। कितने ही सिपाही मारे गये[7]...

२६ अक्तूबर को मैं मारिईन्स्की महल के संगमरमर से बने सुर्ख़ो-सफ़ेद दीवानख़ाने में गया, जहां जनतन्त्र की परिषद् की बैठक होती थी। मैं सरकार की विदेश नीति के बारे में तेरेश्चेन्को के उस बयान को सुनना चाहता था, जिसका शान्ति के लिए लालायित और लड़ाई से थका-मांदा पूरा देश बेइन्तिहा बेसब्री से इन्तज़ार कर रहा था।

एक लम्बा-तड़ंगा नौजवान आदमी, जिसके कपड़ों में शिकन तक न थी, जिसका चेहरा नरम और चिकना था और गाल की हड्डियां उभरी हुई थीं, मृदु, कोमल स्वर में सावधानी से तैयार किया हुआ अपना भाषण पढ़ रहा था[8], जिसमें कोई ठोस पक्की बात नहीं कही गई थी, जिसमें कुछ नहीं, बस वे ही पुरानी लचर, खोखली बातें थीं—मित्र-राष्ट्रों की सहायता से जर्मन सैन्यवाद को कुचल देने के बारे में, रूस के "राजकीय हितों" के बारे में और उस "उलझन और परेशानी" के बारे में, जो स्कोबेलेव के **नकाज़** से पैदा हुई थी। तेरेश्चेन्को के भाषण की टेक, जिससे उन्होंने अपनी बात ख़त्म की, यह थी :

"रूस एक महान् शक्ति है। और चाहे कुछ भी हो, रूस एक महान् शक्ति बना रहेगा। हम सबको उसकी रक्षा करनी होगी, हमें दिखाना होगा कि हम एक महान् आदर्श के रक्षक हैं और एक महान् देश की सन्तान हैं।"

इस भाषण से किसी को संतोष नहीं हुआ। प्रतिक्रियावादी चाहते थे कि एक "ज़ोरदार" साम्राज्यवादी नीति अपनाई जाये; जनवादी पार्टियां चाहती थी कि सरकार यह आश्वासन दे कि वह शान्ति के लिए पूरी ताक़त से कोशिश करेगी... मैं यहां बोल्शेविक पेत्रोग्राद सोवियत के मुखपत्र 'राबोची इ सोल्दात' (मज़दूर और सिपाही) के एक सम्पादकीय का अनुवाद कर रहा हूं :

ख़ाइयों में पड़े हुए सिपाहियों को सरकार का जवाब

हमारे सबसे मितभाषी मन्त्री श्री तेरेश्चेन्को ने खाइयों में पड़े हुए सिपाहियों को वास्तव में निम्नलिखित उत्तर दिया है:

१. हम मित्र-राष्ट्रों के साथ (उन देशों की जनता के साथ नहीं, वरन् उनकी सरकारों के साथ) घनिष्ठ रूप से एकताबद्ध हैं।

२. शीत-अभियान सम्भव है या नहीं, इस प्रश्न पर जनवादी बहस-मुबाहिसे से कोई फ़ायदा नहीं है। इस प्रश्न का निपटारा हमारे मित्र-राष्ट्रों की सरकारें करेंगी।

३. पहली जुलाई के हमले से फ़ायदा हुआ और वह एक ख़ुशगवार मामला था। (लेकिन उसका क्या नतीजा हुआ, इसके बारे में उन्होंने एक शब्द भी नहीं कहा।)

४. यह बात सच नहीं है कि हमारे मित्र-राष्ट्र हमारी परवाह नहीं करते। मन्त्री महोदय के हाथ में बड़ी महत्त्वपूर्ण घोषणायें हैं। (कथनी? लेकिन करनी? ब्रिटिश बेड़े के रवैये के बारे में आपका क्या कहना है[9]? और निर्वासित प्रतिक्रांतिकारी जनरल गुर्को के साथ ब्रिटिश सम्राट् की बातचीत के बारे में? मन्त्री महोदय ने इन सब बातों का कोई ज़िक्र नहीं किया।)

५. स्कोबेलेव को दिया गया **नकाज़** बुरा है, मित्र-राष्ट्र उसे पसन्द नहीं करते, न ही रूसी कूटनीतिज्ञ उसे पसन्द करते हैं। यह ज़रूरी है कि मित्र-राष्ट्र-सम्मेलन में हम सभी "एक स्वर में" बात करें।

क्या बस इतनी ही बात कही गई? हां, इतनी ही। समस्या का हल क्या है? हल यह है कि मित्र-राष्ट्रों पर और तेरेश्चेन्को पर भरोसा रखो। शान्ति कब आयेगी? जब मित्र-राष्ट्र उसकी इजाज़त दें।

यह है शान्ति के बारे में खाइयों में पड़े हुए सिपाहियों को सरकार का जवाब!

रूसी राजनीति की पृष्ठभूमि में अब एक भयानक शक्ति की धुंधली धुंधली आकृति प्रगट होने लगी। यह थी कज़्ज़ाकों की शक्ति। गोर्की के अख़बार 'नोवाया जीज़्न' (नव-जीवन) ने उनकी सरगर्मियों की ओर ध्यान दिलाया:

क्रांति के आरम्भ में कज़्ज़ाकों ने जनता पर गोली चलाने से इनकार किया। जब कोर्नीलोव ने पेत्रोग्राद पर चढ़ाई की, उन्होंने उसके पीछे चलने से इनकार किया। क्रांति के प्रति निष्क्रिय वफ़ादारी को तिलांजलि देकर कज़्ज़ाक अब उस पर सक्रिय राजनीतिक आघात कर रहे हैं। क्रांति की पृष्ठभूमि से निकल कर वे सहसा राजनीतिक मंच के पुरोभाग में आ गये हैं...

दोन प्रदेश के कज़्ज़ाकों के **अतामान** (सरदार) कलेदिन को अस्थायी सरकार ने बर्खास्त कर दिया था, क्योंकि कोर्नीलोव-कांड में उनका भी हाथ था। उन्होंने इस्तीफ़ा देने से साफ़ इनकार किया और अपने गिर्द तीन बड़ी बड़ी कज़्ज़ाक सेनाओं को जमा लिये नोवोचेर्कास्क नामक शहर में कुचक्र रचते हुए और आतंक की सृष्टि करते हुए पड़े रहे। उनकी ताक़त इतनी ज़बरदस्त थी कि सरकार को मजबूर होकर उनकी हुक्म-उदूली को नज़रअंदाज़ कर देना पड़ा। इतना ही नहीं, उसे मजबूर होकर कज़्ज़ाक सेनाओं के संघ की परिषद् को भी औपचारिक मान्यता देनी पड़ी और हाल में ही स्थापित सोवियतों की कज़्ज़ाक शाखा को ग़ैरक़ानूनी क़रार देना पड़ा।

अक्तूबर के शुरू में एक कज़्ज़ाक प्रतिनिधिमण्डल ने केरेन्स्की से मुलाक़ात की और बड़े उद्धत भाव से आग्रह किया कि कलेदिन पर लगाये अभियोग वापिस लिए जायें और मन्त्रिमण्डल के अध्यक्ष को इसके लिए भी फटकारा कि वह सोवियतों के सामने झुक गये थे। केरेन्स्की ने मान लिया कि वह कलेदिन को छेड़ेंगे नहीं और फिर कहा जाता है, उन्होंने कहा, "सोवियत नेताओं की दृष्टि में मैं अत्याचारी और स्वेच्छाचारी हूं... जहां तक अस्थायी सरकार का प्रश्न है, वह सोवियतों के ऊपर निर्भर नहीं है, इतना ही नहीं उसे इन सोवियतों के अस्तित्व तक के लिए खेद है।"

उसी समय एक दूसरा कज़्ज़ाक मिशन ब्रिटिश राजदूत से मिला और उसने यहां तक जुर्रत की कि वह उनसे "आज़ाद कज़्ज़ाक जनता" के प्रतिनिधियों की हैसियत से पेश आया।

दोन प्रदेश में बहुत कुछ कज़्ज़ाक जनतन्त्र जैसी चीज़ स्थापित की जा चुकी थी।
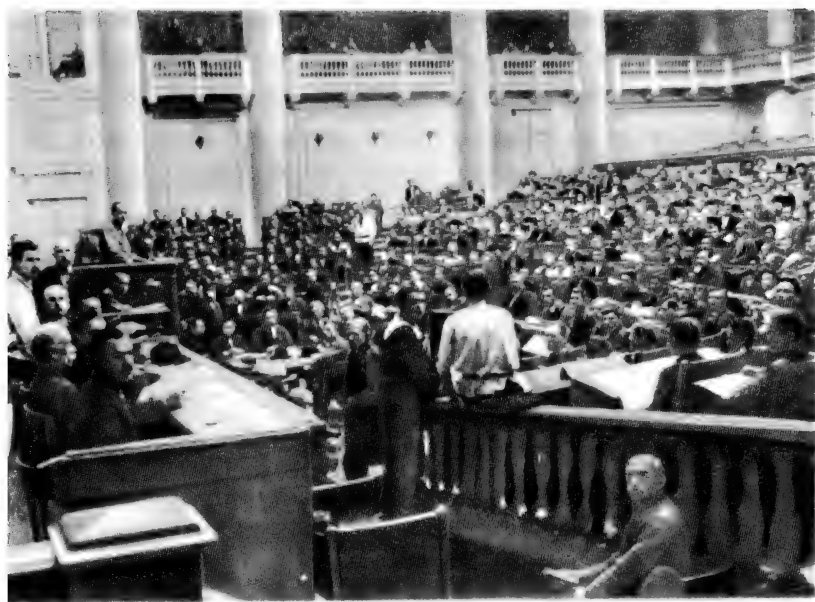
कारख़ाना समितियों का पेत्रोग्राद सम्मेलन,
१२–१६ जून, १६१७।

कुबान ने अपने को एक स्वतन्त्र कज़्ज़ाक राज्य घोषित कर दिया। रोस्तोव-आन-दोन और येकातेरीनोस्लाव की सोवियतें हथियारबन्द कज़्ज़ाकों द्वारा छिन्न-भिन्न कर दी गईं, ख़ारकोव में कोयला मज़दूर यूनियन के सदर दफ़्तर पर छापा मारा गया। कज़्ज़ाक-आन्दोलन अपने सभी प्रत्यक्ष रूपों में समाजवाद-विरोधी तथा सैन्यवादी था। कलेदिन, कोर्नीलोव, जनरल दूतोव, जनरल कराऊलोव तथा जनरल बारदिजी की तरह ही उसके नेता रईस और बड़े बड़े ज़मींदार थे। मास्को के शक्तिसम्पन्न व्यापारी और बैंकर इस आन्दोलन का समर्थन करते थे...

पुराना रूस बड़ी तेजी से टूट और बिखर रहा था। उक्रइना, फ़िनलैंड, पोलैंड और बेलोरूस में राष्ट्रवादी आंदोलन ज़ोर पकड़ रहा था और उसकी हिम्मत बढ़ती ही जाती थी। स्थानीय सरकारें, जिनकी बागडोर मिल्की वर्गों के हाथ में थी, स्वायत्त-शासन की मांग करती थीं और पेत्रोग्राद के

ग्रेनाडियर बारिकों में सिपाहियों की एक मीटिंग, अक्तूबर १९१७। बाल्टिक बेड़े का एक मल्लाह भाषण कर रहा है।

हुक्म को मानने से इनकार करती थीं। हेलसिंगफ़ोर्स में फ़िनलैंड की सीनेट ने अस्थायी सरकार को क़र्ज़ देने से इनकार किया, फ़िनलैंड को स्वायत्त राज्य घोषित किया और मांग की कि रूसी फ़ौजें हटाई जायें। कीयेव में स्थापित पूंजीवादी रादा ने उक्रइना की सीमाओं को यहां तक बढ़ाया कि पूर्व में उराल तक दक्षिणी रूस की सबसे उपजाऊ धरती सारी की सारी उक्रइना में शामिल हो गयी। साथ ही उसने एक राष्ट्रीय सेना का गठन करना भी शुरू किया। मुख्यमन्त्री विन्निचेन्को ने कुछ इस प्रकार का संकेत दिया कि वह जर्मनी के साथ पृथक् शान्ति-सन्धि सम्पन्न करेंगे – और अस्थायी सरकार लाचार यह सब देख रही थी। साइबेरिया और काकेशिया ने मांग की कि उनकी अलग संविधान सभायें बुलाई जायें। इन सभी प्रदेशों में अधिकारियों और मज़दूरों तथा सैनिकों के प्रतिनिधियों की स्थानीय सोवियतों के बीच कठोर संघर्ष का सूत्रपात हो रहा था...

गड़बड़ी दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही थी। लाखों सिपाही मोर्चे को छोड़कर भाग रहे थे, उनकी लहर पर लहर उठ रही थी – विशाल और दिशाहीन – और देश को आप्लावित कर रही थी। तम्बोव और त्वेर गुबेर्नियां के किसान ज़मीन के लिए इन्तज़ार करते आजिज़ आकर और सरकार की दमनकारी कार्रवाइयों से खीझकर ज़मींदारों की छावनियों को जला रहे थे और ख़ुद उन्हें मौत के घाट उतार रहे थे। ज़बरदस्त हड़तालों और तालाबंदियों ने मास्को और ओदेस्सा को, दोन प्रदेश की कोयले की खानों को जैसे झकझोर डाला था। परिवहन ठप हो गया था, सेना भूखों मर रही थी और बड़े बड़े शहरों में रोटी नदारद थी।

जनवादी तथा प्रतिक्रियावादी गुटों के बीच असमंजस में पड़ी हुई सरकार किंकर्त्तव्यविमूढ़ थी। अगर मजबूर होकर वह कुछ करती भी थी, तो हमेशा मिल्की वर्गों के हितों का ही समर्थन करती थी। किसानों के बीच शान्ति और सुव्यवस्था पुनःस्थापित करने के लिए, मज़दूरों की हड़-तालों को तोड़ने के लिए कज़्ज़ाकों को भेजा गया। ताशक़ंद में सरकारी अधिकारियों ने स्थानीय सोवियत का दमन किया। पेत्रोग्राद में आर्थिक परिषद्, जिसे देश के छिन्न-भिन्न आर्थिक जीवन का पुनर्निर्माण करने के लिए स्थापित किया गया था, पूंजी तथा श्रम की परस्पर-विरोधी शक्तियों के बीच फंसकर रह गई, उसमें गतिरोध उत्पन्न हो गया और उसे केरेन्स्की ने भंग कर दिया। पुरानी व्यवस्था के फ़ौजी लोग, जिन्हें कैडेटों का समर्थन प्राप्त था, मांग कर रहे थे कि सेना तथा नौसेना में फिर से अनुशासन स्थापित करने के लिए कड़ी कार्रवाई की जाये। श्रद्धास्पद नौमन्त्री एडमिरल वेर्देरेव्स्की तथा युद्धमन्त्री जनरल वेर्ख़ोव्स्की ने आग्रह किया कि सैनिक तथा नौसैनिक समितियों से सहयोग पर आधारित एक नया स्वैच्छिक जनवादी अनुशासन ही सेना तथा नौसेना को बचा सकता है, लेकिन उनकी आवाज़ नक्क़ारख़ाने में तूती की आवाज़ थी। उनकी सलाहों और सुझावों को उठाकर ताक़ पर रख दिया गया।

प्रतिक्रियावादी लोग जनता का ग़ुस्सा भड़काने पर तुले हुए दिखाई देते थे। कोर्नीलोव की पेशी होने वाली थी। पूंजीवादी अख़बार

अधिकाधिक खुले तौर पर उसकी हिमायत करते और उसके लिए कहते कि वह "एक महान् रूसी देशभक्त है"। बूर्त्सेव के अख़बार 'ओबश्चेये देलो'* (सामान्य ध्येय) ने नारा दिया कि कोर्नीलोव, कलेदिन और केरेन्स्की की तानाशाही क़ायम हो!

एक दिन जनतन्त्र की परिषद् की प्रेस गैलरी में बूर्त्सेव के साथ मेरी बातचीत हुई। एक नाटे क़द का आदमी, जिसकी कमर झुकी हुई थी, चेहरे पर झुर्रियां पड़ी हुई थीं, तंगनज़र आंखों पर मोटा चश्मा चढ़ा हुआ था, बाल बिखरे हुए थे और दाढ़ी खिचड़ी हो रही थी – यह थे बूर्त्सेव।

"मेरी बात को गिरह में बांध लो, मेरे नौजवान दोस्त!" उन्होंने कहा। "रूस को शक्ति-पुरुष की आवश्यकता है। हमें अब अपना ध्यान क्रांति की ओर से हटाकर जर्मनों में लगाना चाहिए। ये घपलेबाज़, ये काम बिगाड़ने वाले, जिनकी वजह से कोर्नीलोव की हार हुई। और इन घपलेबाज़ों के पीछे जर्मन दलालों का हाथ है। कोर्नीलोव को जीतना चाहिए था..."

घोर दक्षिणपक्ष में प्रायः प्रत्यक्ष राजतन्त्रवादियों के मुखपत्र—पुरिश्केविच का पत्र 'नरोद्नी त्रिबून' (जनता की आवाज़), 'नोवाया रूस' (नया रूस) और 'जिवोये स्लोवो' (प्राणवान् शब्द) – क्रांतिकारी जनवाद का सफ़ाया करने का खुल्लमखुल्ला समर्थन करते थे...

२३ अक्तूबर को रीगा की खाड़ी में जर्मन बेड़े के एक स्क्वाड्रन के साथ मुठभेड़ हुई। अस्थायी सरकार ने, इस बहाने से कि पेत्रोग्राद ख़तरे में है, राजधानी को ख़ाली करने की एक योजना बनाई, जिसके अनुसार सबसे पहले गोला-बारूद के बड़े बड़े कारख़ाने हटाये जा कर सारे रूस में फैला दिये जाने वाले थे और इसके बाद सरकार ख़ुद पेत्रोग्राद से हटकर मास्को चली जानेवाली थी। योजना निकलते ही बोल्शेविकों ने ज़ोर-शोर से कहना शुरू किया कि सरकार क्रांति को कमज़ोर करने की गरज़ से

---

* **बूर्त्सेव, व० ल०** – उदारतावादी पूंजीवादी प्रकाशक। उनका अख़बार 'ओबश्चेये देलो' (१९१७) बोल्शेविक-विरोधी प्रचार करता था। क्रान्ति के शीघ्र ही बाद बूर्त्सेव रूस छोड़कर पेरिस चले गये और उन्होंने वहां फिर से उपरोक्त अख़बार का प्रकाशन शुरू किया – इस बार उन्होंने राजतन्त्रवादी दृष्टिकोण ग्रहण किया। – सं०

लाल राजधानी को छोड़ रही है। रीगा को जर्मनों के हाथ बेच दिया गया है और अब पेत्रोग्राद को दुश्मन के हवाले किया जा रहा है!

पूंजीवादी अख़बारों की ख़ुशी का ठिकाना न था। कैडेटों के अख़बार 'रच' (वाणी) ने लिखा, "मास्को में, जहां अराजकतावादियों की छेड़छाड़ का डर न होगा, सरकार शान्त वातावरण में अपना काम कर सकेगी।" कैडेट पार्टी के दक्षिणपक्ष के नेता रोद्ज़्यान्को ने 'उत्रो रोस्सीई' (रूस का प्रभात) नामक अख़बार में लिखते हुए एलानिया कहा कि जर्मनों द्वारा पेत्रोग्राद पर क़ब्ज़ा एक बहुत बड़ी नेमत होगा, क्योंकि उससे सोवियतों का नाश होगा और क्रांतिकारी बाल्टिक बेड़े से भी नजात मिल जायेगी। उन्होंने लिखा:

"पेत्रोग्राद ख़तरे में है... मैं अपने आप से कहता हूं, 'ईश्वर पेत्रोग्राद की हिफ़ाज़त करे'। उन्हें डर है कि अगर पेत्रोग्राद हाथ से चला जाता है, तो केन्द्रीय क्रांतिकारी संगठन छिन्न-भिन्न हो जायेंगे। इसके जवाब में मैं कहता हूं कि अगर ये सारे संगठन छिन्न-भिन्न हो जायें, तो मुझे बड़ी ख़ुशी होगी, क्योंकि वे रूस को मुसीबत में ही डाल सकते हैं...

"जर्मन पेत्रोग्राद ले लेंगे, तो बाल्टिक बेड़ा भी नष्ट हो जायेगा... लेकिन इसमें अफ़सोस करने की कोई बात न होगी, क्योंकि अधिकांश जंगी जहाज़ पूरी तरह भ्रष्ट हो चुके हैं..."

प्रबल जन-विरोध की ऐसी आंधी उठी कि पेत्रोग्राद ख़ाली करने की योजना को रद्द करना पड़ा।

इस बीच सोवियतों की कांग्रेस रूस के राजनीतिक आकाश में इस तरह मंडरा रही थी, जैसे रौद्र मेघ, जिसमें असंख्य बिजलियां कौंध रही हों। सरकार ही नहीं, तमाम "नरम" समाजवादी भी इस कांग्रेस को बुलाने का विरोध कर रहे थे। केन्द्रीय सैनिक तथा नौसैनिक समितियां, अनेक ट्रेड-यूनियनों की केन्द्रीय समितियां, किसानों की सोवियतें और सबसे ज़्यादा **त्से-ई-काह** ख़ुद अपनी भरसक इस बात की कोशिश कर रही थीं कि कांग्रेस का अधिवेशन न होने पाये। पेत्रोग्राद सोवियत द्वारा स्थापित परन्तु अब **त्से-ई-काह** के नियन्त्रण में निकलने वाले अख़बार 'इज़्वेस्तिया' (समाचार) तथा 'गोलोस सोल्दाता' (सिपाही की आवाज़) कांग्रेस पर प्रचण्ड आक्रमण कर रहे थे और उसी तरह 'देलो नरोदा'

(लोक-ध्येय) तथा 'वोल्या नरोदा' (लोक-संकल्प) समेत समाजवादी-क्रान्तिकारी पार्टी प्रेस का पूरा तोपख़ाना उस पर अपने गोले दाग़ रहा था।

देश भर में नुमाइन्दे दौड़ाये गये, स्थानीय सोवियतों की बागडोर संभालने वाली समितियों को, सैनिक समितियों को तार द्वारा सन्देश भेजे गये कि वे कांग्रेस के लिए होने वाले चुनावों को रोक दें या टाल दें। कांग्रेस के ख़िलाफ़ सार्वजनिक सभाओं में गम्भीर प्रस्ताव पास किये गये, इस आशय की घोषणायें की गयीं कि जनवादी तबक़े इसके ख़िलाफ़ हैं कि कांग्रेस का अधिवेशन ऐसे समय हो, जब संविधान सभा की तिथि इतनी निकट आ गयी हो। युद्ध-मोर्चा, ज़ेम्सत्वो, किसान संघ, कज़्ज़ाक सेनाओं का संघ, अफ़सरों की यूनियन, सेंट जार्ज पदकधारी शूरवीर, शहीदी टुकड़ियां*– इन सब के प्रतिनिधि प्रतिवाद प्रगट कर रहे थे... रूसी जनतन्त्र की परिषद् ने एक स्वर से अस्वीकृति प्रगट की। मार्च क्रान्ति ने जो मशीनरी स्थापित की थी, वह पूरी की पूरी सोवियतों की कांग्रेस का रास्ता रोके खड़ी थी...

दूसरी ओर, सर्वहारा का – मज़दूरों, आम सिपाहियों और ग़रीब किसानों का – आकारहीन संकल्प था। बहुत सी स्थानीय सोवियतें अभी से बोल्शेविक हो गयी थीं; फिर औद्योगिक मज़दूरों के संगठन, **फ़ाब्री-चनो-ज़ावोद्स्कीये कोमितेति** – कारख़ाना समितियां – भी थीं और उनके अलावा सेना तथा जहाज़ी बेड़े के विद्रोही संगठन भी। कई स्थानों में नियमित रूप से सोवियत प्रतिनिधियों का चुनाव करने में बाधित होकर जनता ने अपनी "रम्प" मीटिंगें कीं और अपने बीच से एक आदमी को पेत्रोग्राद भेजे जाने के लिए चुना। दूसरे स्थानों में उन्होंने पुरानी बाधक समितियों को छिन्न-भिन्न कर डाला और नयी समितियों की स्थापना की। विद्रोह की ज्वार उठ रही थी और उसने, उन तमाम महीनों में भीतर ही भीतर सुलगती क्रान्ति की आग के ऊपर जो पपड़ी धीरे धीरे जम रही थी और सख़्त हो रही थी, उसको चटका दिया। एक स्वतःस्फूर्त जन-आन्दोलन ही सोवियतों की अखिल रूसी कांग्रेस को सम्भव बना सकता था...

---

* देखिये, 'टिप्पणियां और व्याख्यायें'। – जॉ० री०

बोल्शेविक आन्दोलनकर्ता दिन-ब-दिन बारिकों और कारख़ानों का चक्कर लगाते और "गृहयुद्ध की इस सरकार" को बुरी तरह फटकारते। एक दिन इतवार के रोज़ हम लोग एक भारी-भरकम भाप से चलने वाली ट्राम-गाड़ी में सवार होकर, जो लबालब कीचड़ के बीच से टनटन करती, शोर मचाती, कारख़ानों की सादी इमारतों और बड़े बड़े गिरजाघरों के बीच से गुज़र रही थी, श्लिसेलबुर्ग मार्ग पर स्थित सरकारी गोला-बारूद फ़ैक्टरी, **ओबूख़ोव्स्की ज़ावोद**, पहुंचे।

एक बहुत बड़ी आधी तैयार इमारत की नंगी ईंट की दीवारों के साये में सभा हुई। लाल कपड़े से सजाये मंच के गिर्द काले कपड़े पहने दस हज़ार औरत-मर्द जमा थे। लोग इमारती लकड़ियों और ईंटों की ढेरियों पर लदे हुए थे या स्याह गाटरों के ऊपर टंगे हुए थे, सब के सब उत्सुक और एकाग्र, आवाज़ में बिजली की कड़क। कभी कभी धूमिल, बोझिल आकाश में बादलों के बीच से सूरज अचानक निकल पड़ता और उसका रक्तिम प्रकाश-पुंज खिड़कियों के चौखटों से होकर उन हज़ारों सीधे-सादे चेहरों पर पड़ता, जो हमारी ओर उठे हुए थे।

नाज़ुक बदन के लुनाचार्स्की, जो देखने में कालेज के छात्र मालूम होते थे और जिनके कलाकार जैसे चेहरे से भावुकता टपकती थी, बता रहे थे कि क्यों यह ज़रूरी है कि सोवियतें सत्ता अपने हाथ में ले लें। क्रांति के उन दुश्मनों से क्रांति के बचाव की और किसी भी तरह ज़मानत नहीं की जा सकती है, जो जानबूझ कर देश को तबाह कर रहे हैं, सेना को तबाह कर रहे हैं और एक नये कोर्नीलोव-कांड के लिए अवसर उत्पन्न कर रहे हैं।

रूमानिया के मोर्चे से लौटा हुआ एक दुबला-पतला सिपाही, जो एक साथ ही करुण और प्रचंड दोनों था, बोल रहा था, "साथियो! मोर्चे पर हम भूखों मर रहे हैं, ठंड से अकड़ रहे हैं। हम बेवजह मारे जा रहे हैं। मैं अपने अमरीकी साथियों से कहता हूं, वे हमारी आवाज़ को अमरीका तक पहुंचायें और बतायें कि रूसी मरते दम तक क्रांति को हर्गिज़ तिलांजलि नहीं देंगे। हम अपनी पूरी ताक़त से अपने मोर्चे पर डटे रहेंगे, तब तक जब तक कि दुनिया के लोग उठ न जायें और हमारी मदद के लिए न आ जायें।

अमरीकी मज़दूरों से कहिए कि वे उठें और सामाजिक क्रांति के लिए संघर्ष करें!" ....

इसके बाद पेत्रोव्स्की बोलने के लिए खड़े हुए – दुबले-पतले, आहिस्ता लहजे में बोलने वाले और कभी न झुकने वाले।

"यह बातें बघारने का वक़्त नहीं है, काम का वक़्त है! आर्थिक परिस्थिति बहुत बुरी है, मगर हमें उसका आदी होना पड़ेगा। वे हमें भूख और ठंड से मारने की कोशिश कर रहे हैं। वे हमें भड़काने की कोशिश कर रहे हैं। लेकिन वे जान लें कि वे हद से बाहर भी जा सकते हैं – वे जान लें कि अगर वे सर्वहारा संगठनों पर चोट करने की जुर्रत करते हैं, तो हम उन्हें कूड़ा-कर्कट की तरह इस तरह साफ़ कर देंगे कि इस धरती पर उनका निशान तक न रह जायेगा।"

बोल्शेविक अख़बारों की तादाद बड़ी तेज़ी से बढ़ने लगी। 'राबोची पूत' (मज़दूरों का मार्ग) और 'सोल्दात' (सिपाही) नामक पार्टी के दो अख़बारों के अलावा 'देरेवेन्स्काया बेद्नोता' (गांव के ग़रीब) नाम से किसानों के लिए एक नया अख़बार निकला, जिसकी रोज़ाना पांच लाख प्रतियां छपती थीं और फिर १७ अक्तूबर को 'राबोची इ सोल्दात' (मज़दूर और सिपाही) निकला। उसके एक सम्पादकीय लेख में बोल्शेविक दृष्टिकोण को सारांश रूप में उपस्थित किया गया :

चौथे साल की मुहिम का मतलब होगा सेना का और देश का सर्वनाश... पेत्रोग्राद की सुरक्षा के लिए ख़तरा पैदा हो गया है... प्रतिक्रांतिकारी जनता की मुसीबतों को देख कर फूले नहीं समाते... निराशा से उत्तेजित होकर किसान खुली बग़ावत कर रहे हैं। ज़मींदार और सरकारी अधिकारी उनके ख़िलाफ़ ताज़ीरी मुहिम भेज कर उनका क़त्ले-आम कर रहे हैं। कारख़ाने बंद हो रहे हैं, मज़दूरों के लिए भूखों मरने का ख़तरा पैदा हो गया है... पूंजीपति वर्ग और उसके जनरल सेना में फिर से अन्ध-अनुशासन स्थापित करना चाहते हैं। पूंजीपति वर्ग के समर्थन से कोर्नीलोवपंथी संविधान सभा के अधिवेशन को छिन्न-भिन्न करने के लिए खुल्लमखुल्ला तैयारियां कर रहे हैं...

केरेन्स्की की सरकार जन-विरोधी सरकार है। वह देश को तबाह

कर डालेगी... यह अख़बार जनता की तरफ़ है, जनता के साथ है – ग़रीब वर्गों, मज़दूरों, सिपाहियों और किसानों के साथ है। जनता का निस्तार तभी हो सकता है, जब क्रांति को पूरा किया जाये... और इसके लिए ज़रूरी है कि पूर्ण राज्यसत्ता सोवियतों के हाथ में हो...

यह अख़बार मांग करता है:

समस्त सत्ता सोवियतों के हाथ में – राजधानी में और प्रान्तों में भी।

सभी मोर्चों पर अविलम्ब युद्ध-विराम। राष्ट्रों के बीच सच्ची शान्ति।

ज़मींदारियां बग़ैर मुआवज़े के किसानों को दी जायें।

औद्योगिक उत्पादन पर मज़दूरों का नियन्त्रण।

पूरी वफ़ादारी और ईमानदारी से चुनी हुई संविधान सभा।

इसी अख़बार से, उन्हीं बोल्शेविकों के मुखपत्र से, जिन्हें दुनिया जर्मनों के दलाल के रूप में इतनी अच्छी तरह जानती है, यहां एक उद्धरण देना दिलचस्प होगा:

जर्मन सम्राट, जिसके हाथ लाखों हताहतों के ख़ून से रंगे हुए हैं, अपनी सेना को पेत्रोग्राद पर चढ़ाई करने के लिए भेजना चाहता है। हम जर्मन मज़दूरों, सिपाहियों और किसानों से, जो उसी तरह शान्ति चाहते हैं जैसे हम, अपील करेंगे कि वे इस घृणित युद्ध के ख़िलाफ़ अपनी आवाज़ बुलन्द करें!

ऐसा आह्वान एक क्रांतिकारी सरकार ही दे सकती है, जो सचमुच रूस के मज़दूरों, सिपाहियों और किसानों की ओर से बोलने की हक़दार होगी, और जो कूटनीतिज्ञों की उपेक्षा कर सीधे सीधे जर्मन सेनाओं से अपील करेगी, जर्मन खाइयों को जर्मन भाषा में मुद्रित घोषणाओं से पाट देगी... इन घोषणाओं को हमारे हवाबाज़ पूरे जर्मनी में फैला देंगे...

जनतन्त्र की परिषद् में दोनों पक्षों के बीच की खाई दिन पर दिन चौड़ी होती जा रही थी।

वामपंथी समाजवादी-क्रान्तिकारियों की ओर से भाषण करते हुए

करेलिन ने कहा, "मिल्की वर्ग राज्य की क्रान्तिकारी मशीनरी का इस्तेमाल कर रूस को मित्र-राष्ट्रों के युद्धरथ के साथ जोत देना चाहते हैं! क्रान्तिकारी पार्टियां इस नीति के बिल्कुल ख़िलाफ़ हैं..."

जन-समाजवादी पार्टी के प्रतिनिधि बूढ़े निकोलाई चाइकोव्स्की ने अपने भाषण में किसानों को ज़मीन देने का विरोध किया और कैडेटों का पक्ष लिया। उन्होंने कहा:

"यह आवश्यक है कि सेना के अन्दर अविलम्ब कठोर अनुशासन स्थापित हो... लड़ाई शुरू होने के दिनों से ही मैं इस बात पर बराबर ज़ोर देता रहा हूं कि युद्ध-काल में सामाजिक तथा आर्थिक सुधारों में पड़ना एक जुर्म है। हम यही जुर्म कर रहे हैं—हालांकि मैं इन सुधारों का विरोधी नहीं हूं, क्योंकि मैं समाजवादी हूं।"

वामपंथियों की पांतों से आवाज़ें, "हमें आप पर यक़ीन नहीं है!" दक्षिणपंथियों की ज़ोरदार तालियां...

कैडेटों की ओर से अजेमोव ने कहा कि सेना को यह बताना ज़रूरी नहीं है कि वह किस चीज़ के लिए लड़ रही है, क्योंकि हर सैनिक को समझना चाहिये कि उसका पहला काम रूस की सरज़मीन से दुश्मन को खदेड़ बाहर करना है।

केरेन्स्की ख़ुद दो बार तशरीफ़ ले आये और उन्होंने राष्ट्रीय एकता के लिए पुरजोश अपील की। एक बार तो वह बोलते बोलते रो भी पड़े। लेकिन सभा ने उन्हें निरुत्साह भाव से सुना और उनके भाषण के बीच बीच में फ़बतियां भी कसी जाती रहीं।

त्से-ई-काह और पेत्रोग्राद सोवियत का हेडक्वार्टर, स्मोल्नी संस्थान मीलों दूर शहर के एक छोर पर विस्तीर्ण नेवा नदी के किनारे था। मैं वहां एक ठसाठस भरी ट्राम-गाड़ी में गया, जो कीचड़ से लथपथ सड़कों से, जिनमें पत्थर का खड़ंजा लगाया हुआ था, कांखती-कूंखती चींटी की चाल से चल रही थी। जहां ट्राम की लाइन ख़त्म होती थी, स्मोल्नी कानवेन्ट के सुन्दर धुएं के रंग के नीलाभ, मगर किनारों पर मद्धिम सुनहले गुम्बद आसमान को चूम रहे थे। एक हसीन इमारत थी यह। और उसके साथ ही दो सौ गज़ लम्बी और तीन मंज़िल ऊंची स्मोल्नी संस्थान की इमारत का विशाल बारिकनुमा मुखभाग था, जिसके

फाटक के ऊपर पत्थर में बड़ा बड़ा खुदा हुआ शाही राज्यचिह्न अभी भी जैसे धृष्ठता से मुंह चिढ़ा रहा था...

पुराने शासन काल में यहां रूसी अभिजात वर्गीय लड़कियों का एक प्रसिद्ध कानवेन्ट-स्कूल था, जिसकी संरक्षिका स्वयं ज़ारीना हुआ करती थीं। मज़दूरों और सिपाहियों के क्रान्तिकारी संगठनों ने उस पर क़ब्ज़ा कर लिया था। उसके अन्दर सौ से भी ज़्यादा कमरे थे, काफ़ूरी, सामान से खाली कमरे, और उनके दरवाज़ों पर अभी भी एनेमल-तख़्तियां लगी हुई थीं, जो आने-जाने वाले को बताती थीं कि अमुक कमरा "लड़कियों की कक्षा चार है" और अमुक "अध्यापिका-ब्यूरो" है, इत्यादि। लेकिन अब उनके ऊपर मोटे मोटे अक्षरों में लिखे साइनबोर्ड लटके थे, जिनसे नयी व्यवस्था की प्राणशक्ति का पता चलता था: "पेत्रोग्राद सोवियत की कार्यकारिणी समिति" और "**त्से-ई-काह**" और "विदेशी मामलों का ब्यूरो", "समाजवादी सैनिकों का संघ", "अखिल रूसी ट्रेड-यूनियनों की केन्द्रीय समिति", "कारख़ाना समितियां", "केन्द्रीय सैनिक समिति"; और राजनीतिक पार्टियों के केन्द्रीय दफ़्तर तथा अन्तरंग सभा कक्ष...

लंबे मेहराबदार बरामदों में, जिनमें बिजली की इक्की-दुक्की बत्तियां जलती होतीं, झुण्ड के झुण्ड दौड़ते-भागते सिपाहियों और मज़दूरों की शक्लें दिखाई देतीं, जिनमें से कुछ अख़बारों, और सभी तरह के मुद्रित प्रचार-साहित्य के बड़े बड़े बंडलों के बोझ से दोहरे हो रहे होते। लकड़ी के फ़र्श पर उनके भारी जूतों की गहरी आवाज़ बराबर गूंजा करती... सभी जगह पोस्टर लगाये गये थे: "साथियो! अपनी तन्दुरुस्ती की ख़ातिर सफ़ाई का ध्यान रखिये!" हर मंज़िल पर सीढ़ियां पार करते ही या सीढ़ियों की चौकी पर ही लम्बी लम्बी मेज़ें पड़ी होतीं, जिन पर विभिन्न राजनीतिक पार्टियों के पैम्फ़्लेट और प्रचार-साहित्य बिक्री के लिए लदा होता...

नीचे की मंज़िल पर नीची छत वाला लम्बा-चौड़ा खाने का कमरा अभी भी खाने का कमरा बना हुआ था। मैंने दो रूबल का एक कूपन ख़रीदा, जिससे मुझे खाना मिल सकता था और सैकड़ों और लोगों के साथ लाइन में खड़ा हो गया और उन लम्बी लम्बी मेज़ों के पास पहुंचने का इन्तज़ार करने लगा, जहां बीस-बाईस औरत-मर्द खाना परस रहे थे और भूरी डबल-रोटी के बड़े बड़े टुकड़ों के साथ बड़े बड़े देगों से बंदगोभी का

शोरबा, गोश्त के टुकड़े, ढेर का ढेर **काशा** (दलिया) उंडेल रहे थे। पांच कोपेक दीजिये और तामचीनी के एक प्याले में चाय भरवा लीजिये। उधर, टोकरी से एक मैली, चिकनी लकड़ी की चम्मच उठा लीजिये... लकड़ी की खाने की मेज़ों के साथ बेंचों पर भूखे मज़दूर ठसाठस भरे थे, जो खाना हड़प रहे थे, तरह तरह के मंसूबे बांध रहे थे और ज़ोर ज़ोर से – इधर बैठे लोग उधर के लोगों से – भद्दे मज़ाक़ कर रहे थे।

ऊपर की मंज़िल पर एक दूसरा खाने का कमरा था, जो **त्से-ई-काह** के लिए रिज़र्व था, गोकि हर कोई वहां जाता था। यहां खूब मक्खन लगी रोटी और चाय के जितने भी गिलास चाहिये मिल सकते थे।

दूसरी मंज़िल के दक्षिणी भाग में बड़ा हॉल था, जो संस्थान का नाच-घर हुआ करता था – एक ऊंची छत का काफ़ूरी कमरा, जिसके बीच मे बड़े बड़े खम्भों की दो कतारें गुज़रती थीं और जो उजले, चमकदार झाड़-फ़ानूसों से, जिनमें सैकड़ों सजावटी बिजली के बल्ब लगे थे, जगमग था। उसके एक सिरे पर एक मंच था। दोनों बाजू में शाखा-प्रशाखा युक्त दीपस्तम्भ थे और पीछे दीवार में एक सुनहरा चौखटा था, जिसमें से शाही शबीह काट कर निकाल दिया गया था। यहां उत्सव-समारोह के अवसरों पर फ़ौजी अफ़सरों और पादरियों की तड़क-भड़क वाली वर्दियां चमका करती थीं – यह थी रानियों-महारानियों की रंगभूमि ...

बाहर हॉल के ठीक दूसरी ओर, सोवियतों की कांग्रेस की क्रिडेन्शियल समिति का दफ़्तर था। मैं वहां खड़ा नये प्रतिनिधियों को आते हुए देखता रहा : हट्टे-कट्टे दढ़ियल सिपाही, काली जैकेट पहने मज़दूर और चन्द बड़े बड़े बालों वाले किसान। दफ़्तर में काम करने वाली लड़की, जो प्लेख़ानोव के "येदीन्स्त्वो" * दल की सदस्य थी, उन्हें देख कर हिकारत से मुंह बिचका रही थी। "ये लोग पहली **स्येज़्द** (कांग्रेस) के प्रतिनिधियों से बिल्कुल भिन्न हैं," उसने कहा। "देख लीजिए, कैसे उजड्ड, जाहिल लोग हैं ये ! गंवार जनता ..." उसकी बात सही थी ; रूस भीतर तल तक आलोड़ित हुआ था और जो नीचे था, वही अब ऊपर आ गया था। पुरानी **त्से-ई-काह** द्वारा नियुक्त क्रिडेन्शियल समिति एक प्रतिनिधि के बाद दूसरे प्रतिनिधि

* [illegible] – जॉ० री०

पर इस बिना पर एतराज़ कर रही थी कि उनका चुनाव ग़ैरक़ानूनी ढंग से हुआ है। बोल्शेविक पार्टी की केन्द्रीय समिति के सदस्य काराख़ान इस बात पर सिर्फ़ मुस्करा कर रह गये। "फ़िक्र न करो," उन्होंने कहा, "हम देखेंगे कि वक़्त आने पर आपको अपनी सीटें कैसे नहीं मिलतीं..."

'राबोची इ सोल्दात' ने लिखा:

नई अखिल रूसी कांग्रेस के प्रतिनिधियों का ध्यान इस ओर दिलाया जाता है कि संगठन समिति के कुछ सदस्य यह कह कर कि कांग्रेस नहीं होगी और बेहतर है कि उसके प्रतिनिधि पेत्रोग्राद छोड़कर चले जायें कांग्रेस को छिन्न-भिन्न करने की कोशिश कर रहे हैं... इन सब झूठी बातों की ओर ध्यान मत दीजिये... महान् दिवस आने वाले हैं...

यह साफ़ था कि २ नवम्बर तक इतने प्रतिनिधि इकट्ठे नहीं हो सकेंगे कि कोरम पूरा हो, इसलिए कांग्रेस का उद्घाटन ७ तारीख़ तक के लिए स्थगित कर दिया गया। लेकिन अब पूरा देश उत्तेजित हो उठा था, और मेन्शेविकों तथा समाजवादी-क्रांतिकारियों ने, यह समझते हुए कि उन्होंने हार खाई है, यकायक अपनी कार्यनीति बदल दी और घबरा कर अपने प्रान्तीय संगठनों को इस आशय के तार भेजने लगे कि वे यथासम्भव अधिक से अधिक संख्या में "नरम" समाजवादी प्रतिनिधियों को चुनें। इसके साथ ही किसानों की सोवियतों की कार्यकारिणी समिति ने आपातिक आह्वान दिया कि किसानों की कांग्रेस १३ दिसम्बर को बुलायी जाये, ताकि मज़दूर तथा सिपाही जो भी क़दम उठायें, उसकी काट की जा सके...

बोल्शेविक क्या क़दम उठाने वाले हैं? शहर में अफ़वाह गर्म थी कि एक सशस्त्र "प्रदर्शन" होने वाला है, कि मज़दूर और सिपाही "**विस्तुप्लेनिये**" – "विद्रोह" – करने वाले हैं। पूंजीवादी और प्रतिक्रिया-वादी अख़बारों ने भविष्यवाणी की कि विद्रोह होने वाला है और उन्होंने सरकार से आग्रह किया कि वह पेत्रोग्राद सोवियत को गिरफ़्तार कर ले या कम से कम कांग्रेस का अधिवेशन न होने दे। 'नोवाया रूस' जैसे कुख्यात अख़बारों ने तो बोल्शेविकों के क़त्ले-आम तक के लिए आवाज़ उठाई।

गोर्की के अख़बार 'नोवाया जीज़्न' ने बोल्शेविकों के साथ सहमति प्रगट करते हुए लिखा कि प्रतिक्रियावादी क्रांति को विनष्ट करने का प्रयत्न कर रहे हैं और आवश्यकता होने पर उनका शस्त्र-बल से प्रतिरोध करना होगा, लेकिन उसने यह भी लिखा कि सभी क्रांतिकारी जनवादी पार्टियों के लिए आवश्यक है कि वे अपना संयुक्त मोर्चा क़ायम करें :

जब तक कि जनवाद ने अपनी मुख्य शक्तियों को संगठित नहीं कर लिया है, जब तक कि उसके प्रभाव को शक्तिशाली विरोध का सामना करना पड़ रहा है, तब तक हमला शुरू करने में कोई फ़ायदा नहीं है। परन्तु यदि विरोधी तत्व बल-प्रयोग का आश्रय लेते हैं, तो क्रांतिकारी जनवाद को सत्ता हाथ में लेने के लिए लड़ाई में उतरना चाहिये, और ऐसी सूरत में जनता की व्यापकतम श्रेणियां उसका समर्थन करेंगी ...

गोर्की ने इस बात की ओर इशारा किया कि प्रतिक्रियावादी और सरकारी दोनों ही तरह के अख़बार बोल्शेविकों को हिंसा के लिए भड़का रहे हैं। फिर भी ऐसे समय में विद्रोह करने का अर्थ होगा एक नये कोर्नीलोव-कांड के लिए मार्ग प्रशस्त करना। गोर्की ने बोल्शेविकों से आग्रह किया कि वे इन अफ़वाहों का खण्डन करें। पोत्रेसोव ने मेन्शेविक अख़बार 'देन' (दिन) में एक नक़्शे के साथ एक सनसनीख़ेज़ रिपोर्ट छापी, जिसमें बोल्शेविक अभियान की गुप्त योजना का भण्डाफोड़ करने का दावा किया गया था।

जैसे किसी ने जादू की छड़ी घुमा दी हो, शहर की दीवारें पोस्टरों[10] से भर गईं, जिनमें "नरम" और अनुदार गुटों की केन्द्रीय समितियों तथा **त्से-ई-काह** की चेतावनी, अपीलें और घोषणायें थीं, हर तरह के "प्रदर्शन" की निंदा की गई थी और मज़दूरों तथा सैनिकों से अनुरोध किया गया था कि वे आन्दोलनकर्ताओं की बात पर कान न दें। उदाहरण के लिए, समाजवादी-क्रांतिकारी पार्टी की सैनिक शाखा का यह बयान पेश है :

शहर में फिर इस क़िस्म की अफ़वाहें फैल रही हैं कि **विस्तुप्लेनिये** का इरादा किया जा रहा है। ये अफ़वाहें कहां से पैदा हुई हैं ? वे कौनसे

संगठन हैं, जिन्होंने आन्दोलनकर्ताओं को विद्रोह का प्रचार करने का अधिकार दिया है? **त्से-ई-काह** के अन्दर बोल्शेविकों ने एक प्रश्न के उत्तर में कहा कि उनका ऐसे प्रचार से कोई सम्बन्ध नहीं है... लेकिन इन अफ़वाहों से ही एक बहुत बड़ा ख़तरा पैदा होता है। यह सहज ही संभव है कि कुछ गर्म जोशीले व्यक्ति मज़दूरों, सिपाहियों और किसानों के बहुमत की मनोदशा का ध्यान किये बिना मज़दूरों और सिपाहियों के एक भाग को सड़कों पर प्रदर्शन करने के लिये बुलायें और उन्हें विद्रोह के लिए भड़कायें...

इस नाज़ुक और संगीन दौर में, जिससे क्रांतिकारी रूस इस समय गुज़र रहा है, कोई भी विद्रोह बहुत आसानी से गृहयुद्ध में बदल सकता है और उसके फलस्वरूप सर्वहारा के सभी संगठन, जिनका इतने परिश्रम से निर्माण किया गया है, नष्ट-भ्रष्ट हो सकते हैं... प्रतिक्रांतिकारी षड्यन्त्रकारी यह योजना बना रहे हैं कि विद्रोह का फ़ायदा उठा कर क्रांति का नाश करें, मोर्चे को विल्हेल्म के लिए खुला अरक्षित छोड़ दें और संविधान सभा को छिन्न-भिन्न कर दें... आप सब अपनी अपनी जगहों पर मज़बूती से जमे रहें! आप हरगिज़ बाहर न निकलें!

२८ अक्तूबर को स्मोल्नी भवन के बरामदे में मेरी बातचीत कामेनेव से हुई – एक नाटे कद के दुबले-पतले आदमी, तीखी सुर्ख़ीमायल दाढ़ी और प्रबल अंग-भंगी। उन्हें इस बात का बिल्कुल यक़ीन नहीं था कि कांग्रेस के प्रतिनिधि काफ़ी तादाद में आयेंगे। उन्होंने कहा, "अगर कांग्रेस होती है, तो वह जनता की प्रबलतम भावना का प्रतिनिधित्व करेगी। अगर कांग्रेस में बोल्शेविकों का बहुमत होता है, जैसा कि मैं समझता हूं कि होगा, तो हम मांग करेंगे कि सत्ता सोवियतों के हवाले की जाये और अस्थायी सरकार इस्तीफ़ा दे..."

वोलोदार्स्की ने – लम्बे क़द का एक नौजवान, आंख पर चश्मा, चेहरा ज़र्द जैसे जिल्द का रोग़न उतर रहा हो – कुछ ज़्यादा पक्की बात कही: "लीबेरदान* और उनके जैसे दूसरे समझौतापरस्त कांग्रेस को

---

* लीबेर और दान।– सं०

भीतर से तोड़-फोड़ रहे हैं। अगर वे उसके अधिवेशन को रोकने में सफल हुए, तो, हम उस पर निर्भर नहीं रहेंगे – हम इतने यथार्थवादी ज़रूर हैं!"

मेरी नोटबुक में २६ अक्तूबर की तारीख़ में उस दिन के अख़बारों मे ली गई निम्नलिखित ख़बरें दर्ज हैं:

मोगिल्योव (सेना के जनरल स्टाफ़ का सदर दफ़्तर)। यहां वफ़ादार गार्ड रेजीमेंटों, "बर्बर डिवीज़न", कज़्ज़ाक टुकड़ियों और "शहीदी टुकड़ियों" का भारी जमावड़ा है।

पाव्लोव्स्क, त्सारस्कोये सेलो, पीटरहोफ़ के सैनिक अफ़सरों के स्कूलों के **युंकरों*** को सरकार ने हुक्म दिया है कि वे पेत्रोग्राद आने के लिए तैयार रहें। ओरानियेनबाउम के **युंकर** शहर में आ रहे हैं।

पेत्रोग्राद ग़ैरिसन की बख़्तरबन्द गाड़ियों की डिवीज़न का एक हिस्सा शिशिर प्रासाद की रक्षा के लिए तैनात कर दिया गया है।

त्रोत्स्की के दस्तख़त से एक हुक्म जारी किया गया है, जिसके मुताबिक सेस्त्रोरेत्सक के सरकारी आयुध कारख़ाने ने कई हज़ार बन्दूकें पेत्रोग्राद मज़दूरों के प्रतिनिधियों के हवाले की हैं।

निचली लितेइनी बस्ती की नगर मिलिशिया की एक सभा ने एक प्रस्ताव द्वारा मांग की है कि समस्त सत्ता सोवियतों के हाथ में सौंप दी जाए।

उन उत्तेजनापूर्ण दिनों में, जब हर शख़्स जानता था कि कुछ होने वाला है, लेकिन ठीक क्या होने वाला है, यह कोई नहीं कह सकता था, जो उलटी-पुलटी घटनायें हो रही थीं, यह उनकी एक बानगी भर है।

३० अक्तूबर की रात को स्मोल्नी में पेत्रोग्राद सोवियत की एक सभा हुई। त्रोत्स्की ने पूंजीवादी अख़बारों के इस दावे की कि सोवियत सशस्त्र विद्रोह का विचार कर रही है कठोर निन्दा करते हुए कहा कि

*युंकर – सैनिक स्कूलों के विद्यार्थी। इन स्कूलों में अभिजात-वर्गीय लड़कों को ज़ारशाही सेना के अफ़सरों के लिए तालीम दी जाती थी। – सं०

वह "सोवियतों की कांग्रेस की साख गिराने और उसे छिन्न-भिन्न करने के लिए प्रतिक्रियावादियों की एक कोशिश है..." उन्होंने ज़ोर देकर कहा, "पेत्रोग्राद सोवियत ने किसी **विस्तुप्लेनिये** के लिए आदेश नहीं दिया है। ज़रूरी होने पर हम ऐसा आदेश देंगे और पेत्रोग्राद की गैरिसन हमारा समर्थन करेगी... वे (सरकार) प्रतिक्रांति के लिए तैयारी कर रहे हैं और हम उसके जवाब में ऐसी चोट करेंगे, जो बेरहम और फ़ैसलाकुन होगी।"

यह सच है कि पेत्रोग्राद सोवियत ने प्रदर्शन के लिए आदेश नहीं दिया था, परन्तु बोल्शेविक पार्टी की केन्द्रीय समिति विद्रोह के प्रश्न पर विचार कर रही थी। २३ तारीख़ को पूरी रात समिति की बैठक होती रही। बैठक में पार्टी के सभी बुद्धिजीवी, सभी नेता तथा पेत्रोग्राद के मज़दूरों और वहां की गैरिसन के प्रतिनिधि मौजूद थे। बुद्धिजीवियों में केवल लेनिन और त्रोत्स्की ने विद्रोह का समर्थन किया। यहां तक कि फ़ौजी आदमियों ने भी उसका विरोध किया। वोट लिए जाने पर विद्रोह का पक्ष हार गया!

और फिर एक सीधा-सादा मज़दूर बोलने के लिए उठा। उसका चेहरा क्रोध से तमतमाया हुआ था। "मैं पेत्रोग्राद सर्वहारा की ओर से बोल रहा हूं," उसने सख़्त लहजे में कहा। "हम विद्रोह के पक्ष में हैं। आपकी जो मर्ज़ी हो आप करें, लेकिन मैं आपसे कहता हूं कि अगर आपने सोवियतों का नाश होने दिया, तो **हम हमेशा के लिए आपसे बाज़ आयेंगे!**" कुछ सिपाहियों ने भी इस मज़दूर का साथ दिया... इसके बाद फिर वोट लिये गये और विद्रोह का पलड़ा भारी निकला...*

---

* अक्तूबर, १९१७ में बोल्शेविक पार्टी की केंद्रीय समिति के ऐतिहासिक अधिवेशन में सशस्त्र विद्रोह के बारे में जो बहस हुई, यहां उसकी सही रिपोर्ट नहीं दी गई है। सशस्त्र विद्रोह संगठित करने का निर्णय २३ अक्तूबर, १९१७ को हुई केंद्रीय समिति की एक गुप्त बैठक में किया गया। इस बैठक में भाग लेने वाले सदस्य थे: लेनिन, बुबनोव, द्ज़ेर्जीन्स्की, ज़िनोव्येव, कामेनेव, कोल्लोन्ताई, लोमोव, स्वेर्दलोव, सोकोलनिकोव, स्तालिन, त्रोत्स्की और उरीत्स्की। ज़िनोव्येव तथा कामेनेव ने लेनिन द्वारा पेश किये गये प्रस्ताव का विरोध किया। छः दिन बाद, २९ अक्तूबर को, केंद्रीय समिति का एक विस्तारित अधिवेशन हुआ, जिसमें पेत्रोग्राद पार्टी समिति, सैनिक संगठन,

छद्मवेश में लेनिन का एक चित्र। यह चित्र जुलाई १९१७ की घटनाओं के बाद क्रान्ति की उनकी आख़िरी मुद्दत के दौरान लिया गया था, जब लेनिन क० प० इवानोव नामक एक मज़दूर के नाम जारी किये गये पहचान-पत्र का इस्तेमाल किया करते थे।

Ц. К. признает, что как международное положеніе русской революціи (восстаніе во флотѣ в Германіи, как крайнее проявленіе нарастанія всемірной социалистической революціи, затем угроза мира имперіалистов с цѣлью удушенія революціи в Россіи), — так и военное положеніе (несомнѣнное рѣшеніе русской буржуазіи и Керенского с К° сдать Питер нѣмцам), — так и пріобрѣтеніе большинства пролетарской партіей в Совѣтах, — все это в связи с крестьянским восстаніем и с поворотом народнаго

v со всей Европы

सशस्त्र विद्रोह के बारे में व्ला० इ० लेनिन द्वारा सूत्रबद्ध तथा २३ अक्तूबर, १९१७ को पार्टी की केन्द्रीय समिति की ऐतिहासिक बैठक द्वारा स्वीकृत प्रस्ताव का पहला पृष्ठ।

इसके बावजूद रियाज़ानोव, कामेनेव और ज़िनोव्येव के नेतृत्व में दक्षिणपंथी बोल्शेविक सशस्त्र विद्रोह के विरोध में आन्दोलन करते रहे। ३१ अक्तूबर* की सुबह 'राबोची पूत' में लेनिन के 'साथियों के नाम पत्र'[11] की पहली किस्त प्रकाशित हुई। अभी तक संसार में जितना भी राजनीतिक प्रचार देखा गया है, उसमें इससे ज़्यादा ढीठ रचना मुश्किल से ही मिलेगी। इस लेख में लेनिन ने कामेनेव और रियाज़ानोव की आपत्तियों को अपनी आलोचना का आधार बनाकर विद्रोह के समर्थन में अपने तर्क उपस्थित किये। उन्होंने लिखा :

"...या तो हम अपना नारा 'समस्त सत्ता सोवियतों के हाथ में हो' छोड़ दें, नहीं तो विद्रोह करें। इन दोनों के बीच और कोई रास्ता नहीं है..."

उसी दिन तीसरे पहर कैडेट नेता पावेल मिल्युकोव ने जनतन्त्र की परिषद् में एक तल्ख़, तेज़-तर्रार तक़रीर की[12], जिसमें उन्होंने स्कोबेलेव के **नकाज़** को जर्मन-पक्षीय कह कर बदनाम किया और कहा कि "क्रांतिकारी जनवाद" रूस को तबाह कर रहा है; उन्होंने तेरेश्चेन्को की खिल्ली उड़ाई और खुल्लमखुल्ला कहा कि वह रूसी कूटनीति से जर्मन कूटनीति को ज़्यादा पसन्द करते हैं... जितनी देर उनका भाषण चलता रहा, उतनी देर बराबर वामपंथी बेंचों से बेहद शोर उठता रहा...

उधर सरकार बोल्शेविक प्रचार की सफलता के महत्व की उपेक्षा

पेत्रोग्राद सोवियत, ट्रेड-यूनियनों, कारखाना समितियों, रेल मज़दूरों और पेत्रोग्राद इलाके की पार्टी समिति के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस बैठक में लेनिन ने केंद्रीय समिति के पिछले अधिवेशन में स्वीकृत प्रस्ताव को पढ़ा। अपने भाषण में लेनिन ने कहा कि रूस तथा यूरोप, दोनों ही की वस्तुनिष्ठ राजनीतिक परिस्थिति निर्णायक व निश्चयात्मक, ज़ोरदार से ज़ोरदार नीति की मांग करती है, जो सशस्त्र विद्रोह की ही नीति हो सकती है। लेनिन ने एक प्रस्ताव उपस्थित किया, जिसमें सशस्त्र विद्रोह के बारे में केंद्रीय समिति के फ़ैसले का स्वागत और समर्थन किया गया था। प्रस्ताव दो के खिलाफ़ १९ वोटों से स्वीकृत हुआ; चार व्यक्तियों ने मतदान में भाग नहीं लिया। ज़िनोव्येव और कामेनेव ने दोबारा केंद्रीय समिति के प्रस्ताव के ख़िलाफ़ वोट दिया। सं०

* यह तारीख गलत है। 'राबोची पूत' का यह अंक पहली नवंबर को निकला था।—सं०

नहीं कर सकती थी। २६ अक्तूबर को सरकार तथा जनतन्त्र की परिषद् के एक संयुक्त आयोग ने बड़ी उतावली में दो क़ानून बनाये, एक ज़मीन अस्थायी रूप से किसानों को देने के लिए और दूसरा शान्ति की एक ज़ोरदार विदेश नीति को अग्रसर करने के लिए। दूसरे दिन केरेन्स्की ने सेना में मृत्यु-दंड स्थगित कर दिया। उसी दिन तीसरे पहर एक नये आयोग, "जनतन्त्रीय शासन को सुदृढ़ बनाने तथा अराजकता और प्रतिक्रांति का मुक़ाबला करने के लिए आयोग" का पहला अधिवेशन बड़े धूमधाम से शुरू हुआ, लेकिन इतिहास में इस आयोग का और कोई चिह्न नहीं मिलता। दूसरे दिन सुबह दो संवाददाताओं के साथ मैंने केरेन्स्की से मुलाक़ात की[13] – पत्रकारों की उनके साथ यह आख़िरी मुलाक़ात थी।

हमारे साथ बातचीत करते हुए उन्होंने तल्ख़ लहजे में कहा, "रूसी जनता आर्थिक क्लान्ति से तथा मित्र-राष्ट्रों में अपना विश्वास टूट जाने से पीड़ित है! दुनिया सोचती है कि रूसी क्रांति चन्द रोज़ की मेहमान है। ग़लती न कीजिये। रूसी क्रांति अभी बस शुरू ही हो रही है..." उनके इन शब्दों में भविष्य का कितना अधिक पूर्वाभास था इसे शायद वह ख़ुद नहीं जानते थे।

३० अक्तूबर को रात भर पेत्रोग्राद सोवियत की एक पुरशोर तूफ़ानी बैठक हुई, जिसमें मैं मौजूद था। "नरम" समाजवादी बुद्धिजीवी, अफ़सर, सैनिक समितियों के सदस्य, **त्से-ई-काह** के सदस्य इस बैठक में दल-बल से मौजूद थे। उनके ख़िलाफ़ खड़े होकर बोलने वालों में थे – मज़दूर, किसान और मामूली सिपाही, सीधे-सादे और जोशीले।

एक किसान ने त्वेर में होनेवाले उपद्रवों का ज़िक्र करते हुए कहा कि उनका कारण भूमि समितियों के सदस्यों की गिरफ़्तारी है। "यह केरेन्स्की और कुछ नहीं **पोमेश्चिकों** (ज़मींदारों) की ढाल है," उसने चिल्ला कर कहा। "वे जानते हैं कि हम संविधान सभा में बहरसूरत ज़मीन अपने हाथ में ले लेंगे और इसलिए वे संविधान सभा को मिस्मार करने की कोशिश कर रहे हैं!"

बैठक में बोलते हुए पुतीलोव कारख़ाने के एक मशीन-कर्मचारी ने बताया कि विभाग सुपरिन्टेंडेन्ट एक एक करके विभागों को इस बहाने

ग बन्द कर रहे हैं कि कारख़ाने के पास न ईंधन है और न कच्चा माल। उसने कहा कि कारख़ाना समिति ने ईंधन और कच्चे माल की ढेर सारी छिपाई गई सप्लाई का पता लगाया है।

"यह एक उकसावा है," उसने कहा। "वे हमें भूखों मारना चाहते हैं या फिर हमें हिंसा के लिए उत्तेजित करना चाहते हैं!"

एक सैनिक ने उठकर कहना शुरू किया, "साथियो! मैं आपके लिए एक ऐसी जगह से अभिवादन-संदेश लाया हूं, जहां लोग अपनी क़ब्र खोदते हैं और उसे कहते हैं मोर्चे की खाई!"

और फिर एक लम्बे क़द का नौजवान सिपाही, जिसकी हड्डियां निकल आयी थीं और आंखें चमक रही थीं, बोलने के लिए उठा और उसका तालियों की गड़गड़ाहट से स्वागत किया गया। यह था चुद्नोव्स्की, जिसके बारे में ख़बर आई थी कि वह जुलाई की लड़ाई में मारा गया। अब वह गोया क़ब्र से उठकर आ गया था।

"आम सिपाही अब अपने अफ़सरों पर कोई भरोसा नहीं रखते। यहां तक कि सैनिक समितियों ने भी, जिन्होंने हमारी सोवियत का अधिवेशन बुलाने से इनकार किया, हमें धोखा दिया है... आम सिपाही चाहते हैं कि संविधान सभा का अधिवेशन ठीक उसी समय हो, जब उसे बुलाया गया है और जो लोग उसे टालने की जुर्रत करेंगे, उन्हें हम लानत भेजेंगे। और यह कोई अफ़लातूनी लानत न होगी, क्योंकि, याद रखिये, सेना के पास बन्दूकें भी हैं..."

पांचवीं सेना में संविधान सभा के लिए जो चुनाव-आन्दोलन बड़े ज़ोर-शोर से चल रहा था, उसका ज़िक्र करते हुए उसने कहा, "फ़ौजी अफ़सर, ख़ासकर मेन्शेविक और समाजवादी-क्रांतिकारी, जानबूझकर बोल्शेविकों को पंगु बनाने की कोशिश कर रहे हैं। हमारे अख़बारों के ख़ाइयों में बांटे जाने की इजाज़त नहीं दी जाती। हमारे भाषणकर्ताओं को गिरफ़्तार किया जाता है..."

"तुम रोटी की कमी की बात क्यों नहीं करते?" एक दूसरे सिपाही ने चीख़ कर कहा।

"इन्सान सिर्फ़ रोटी के सहारे नहीं जी सकता," चुद्नोव्स्की ने सख़्त लहजे में जवाब दिया।

उसके बाद एक अफ़सर ने भाषण दिया, जो वीतेब्स्क सोवियत का एक प्रतिनिधि तथा मेन्शेविक्-**ओबोरोनेत्स** (प्रतिरक्षावादी) था। "सवाल यह नहीं है कि सत्ता किसके हाथ में है," उसने कहा। "मुश्किल सरकार ने पैदा नहीं की है, लड़ाई ने की है... और इसके पहले कि कोई तबदीली हो यह ज़रूरी है कि लड़ाई जीती जाये..." इस बात पर सीटियां दी गईं और चिढ़ाने के लिए तालियां बजाई गईं। "ये बोल्शेविक आन्दोलनकर्ता कोरी लफ़्फ़ाज़ी करते हैं!" हंसी के ठहाकों से दीवारें तक हिल उठीं। "हमें चाहिये कि हम क्षण भर के लिए वर्ग-संघर्ष भूल जायें..." लेकिन उसका भाषण इसके आगे नहीं चल सका। किसी ने चीख़ कर कहा, "आप यही चाहते हैं!"

उन दिनों पेत्रोग्राद का नज़ारा कुछ अजीबोगरीब था। फ़ैक्टरियों में कारख़ाना समितियों के कक्षों में ढेर की ढेर बन्दूकें जमा थीं, संदेश-वाहक आते-जाते रहते थे और लाल गार्ड* क़वायद करते रहते थे... सभी बारिकों में रोज़ाना रात को मीटिंगें और पूरे दिन में गर्म, लम्बी, कभी न ख़त्म होने वाली बहसें चलती रहतीं। सड़कों पर शाम का झुटपुटा होते ही भीड़ बढ़ने लगती और जैसे एक जन-समुद्र की लहरें नेव्स्की मार्ग पर दोनों दिशाओं में धीरे धीरे शोर करती बढ़तीं, लोगों में अख़बारों के लिए छीना-झपटी होती... ठगी और बटमारी इस हद तक बढ़ गई थी कि गलियों से गुज़रना ख़तरनाक था... एक दिन तीसरे पहर सदोवाया मार्ग पर मैंने देखा कि कई सौ आदमियों की एक भीड़ ने एक सिपाही को मारते मारते बेदम कर डाला, जिसे चोरी करते हुए रंगे हाथों पकड़ा गया था। रोटी और दूध के लिए ठंड में घंटों लाइनों में इन्तज़ार करती हुई ठिठुरती औरतों के इर्द-गिर्द कुछ बहुत रहस्यमय प्रकार के व्यक्ति मंडराते और उनके कानों में फुसफुसा कर कहते कि यहूदियों ने अनाज का स्टाक दबा रखा है और ऐसे वक़्त जब कि लोग भूखों मर रहे हैं, सोवियत के सदस्य बड़े ठाठ-बाट से दिन गुज़ार रहे हैं...

स्मोल्नी में दरवाज़े पर और बाहरी फाटकों पर कड़ा पहरा था।

---

* देखिये, 'टिप्पणियां और व्याख्यायें।–**जॉ० री०**

बिना "पास" दिखाये कोई भी अन्दर नहीं जा सकता था। समितियों के कक्षों में न दिन में ख़ामोशी थी, न रात में – हर वक़्त एक हल्की सी गूंज उठती रहती। सैकड़ों सिपाही और मज़दूर फ़र्श पर ही सो जाते – जहां भी उन्हें जगह मिलती लेट रहते। ऊपर बड़े हॉल में पेत्रोग्राद सोवियत की पुरशोर बैठकों में एक हज़ार आदमी जमा थे...

जुए के अड्डे पूरी रात ज़ोर-शोर से चलते, उनमें शैम्पेन पानी की तरह बहती और बीस बीस हज़ार रूबल की बाज़ियां लगाई जातीं। शहर के बिचले भाग में रात के वक़्त क़ीमती फर और ज़ेवरों से लदी हुई वेश्यायें घूमती रहती थीं, कैफ़े और रेस्तोरां में उनकी ख़ासी भीड़ होती...

राजतन्त्रवादी कुचक्र, जर्मन जासूस, षड्यन्त्र रचने वाले, तस्कर व्यापारी...

बारिश में, कड़ी सर्दी में, मेघाच्छादित आकाश के नीचे यह विशाल स्पन्दनशील नगर तेज़ से तेज़तर रफ़्तार से भागा जा रहा था – लेकिन किधर?

तीसरा अध्याय

तूफ़ान फटने से पहले

जब एक कमज़ोर सरकार का साबिक़ा विद्रोही जनता से पड़ता है, एक घड़ी ऐसी आती है, जब अगर अधिकारी कोई क़दम उठाते हैं, तो उससे जन-साधारण का ग़ुस्सा भड़कता है और अगर नहीं उठाते, तो वे उनकी घृणा के पात्र बन जाते हैं...

पेत्रोग्राद छोड़ने का प्रस्ताव करते ही एक तूफ़ान खड़ा हो गया; लेकिन जब उसका खण्डन करते हुए केरेन्स्की ने यह सार्वजनिक वक्तव्य दिया कि सरकार ऐसा कोई इरादा नहीं रखती, लोगों ने थुड़ी-थुड़ी ही की।

क्रांति के दबाव के कारण जकड़ी हुई "अस्थायी" पूंजीपतियों की सरकार ('राबोची पूत' ने कड़क कर कहा) ये झूठे आश्वासन देकर छुटकारा पाना चाहती है कि उसका पेत्रोग्राद छोड़कर भाग जाने का कभी ख़्याल न था, न ही उसकी यह ख़्वाहिश थी कि राजधानी दुश्मनों के हवाले कर दी जाये...

ख़ार्कोव * में कोयला खानों के तीस हज़ार संगठित मज़दूरों ने विश्व के औद्योगिक मज़दूरों **(J.W.W.) के संविधान का यह आमुख अपनाया

---

* मालूम होता है यहां जॉन रीड का अभिप्राय दोनेत्स कोयला खदान प्रदेश से है। **— सं०**

** **विश्व के औद्योगिक मज़दूर** — रूस की क्रांतिकारी घटनाओं के प्रभाव से संयुक्त राज्य अमरीका में १९०५ में स्थापित एक क्रांतिकारी ट्रेड-यूनियन जन-संगठन। १९३१-४० के दशक में, जब यह पतित होकर एक संकीर्णतावादी संगठन बन गया था और जन-साधारण से अपने पुराने संबंधों को खो बैठा था, उसका अस्तित्व समाप्त हो गया। जब यह संगठन पूरे ज़ोर पर था, जॉन रीड उसके सक्रिय सदस्य थे। **— सं०**

"मज़दूर वर्ग और मालिक वर्ग के बीच कोई समानता नहीं हो सकती।" कज़्ज़ाकों ने इन मज़दूरों को तितर-बितर कर दिया, कुछ मज़दूर खानों के मालिकों द्वारा तालाबन्दी का एलान होने से अन्दर जाने नहीं दिये गये, बाक़ी मज़दूरों ने आम हड़ताल की घोषणा की। वाणिज्य तथा उद्योग-मन्त्री कोनोवालोव ने अपने नायब ओर्लोव को पूर्ण अधिकार देकर इस झगड़े का निपटारा करने के लिये नियुक्त किया। खान मज़दूर ओर्लोव को घृणा की दृष्टि से देखते थे, परन्तु **त्से-ई-काह** ने न केवल उसकी नियुक्ति का समर्थन किया, उसने यह मांग करने से भी इनकार किया कि कज़्ज़ाकों को दोन प्रदेश से वापिस बुला लिया जाये ...

इसके बाद कालूगा सोवियत को छिन्न-भिन्न कर दिया गया। बोल्शेविकों ने सोवियत में अपना बहुमत स्थापित करके कुछ राजनीतिक बंदियों को रिहा कर दिया था। केन्द्रीय सरकार के कमिसार की मंजूरी से नगर दूमा ने मीन्स्क से फ़ौज बुलाई और कालूगा सोवियत के सदर दफ़्तर पर गोलाबारी की गयी। बोल्शेविकों को झुकना पड़ा, लेकिन जब वे भवन से बाहर निकल रहे थे, कज़्ज़ाकों ने यह कहते उनके ऊपर हमला किया, "मास्को और पेत्रोग्राद समेत तमाम बोल्शेविक सोवियतों के साथ हम इसी तरह पेश आयेंगे!" इस घटना से समस्त रूस में दहशत के साथ गुस्से की एक लहर दौड़ गई ...

पेत्रोग्राद में उत्तरी प्रदेश की सोवियतों की प्रादेशिक कांग्रेस समाप्त हो रही थी। इस कांग्रेस में बोल्शेविक क्रिलेन्को ने सभापति का आसन ग्रहण किया था। कांग्रेस ने विशाल बहुमत से फ़ैसला किया कि सोवियतों की अखिल रूसी कांग्रेस को समस्त सत्ता अपने हाथ में ले लेनी चाहिये। अन्त में उसने जेलों में बन्द बोल्शेविकों को एक अभिवादन-संदेश भेजा, जिसमें उनसे कहा गया था कि वे ख़ुश हो जायें, क्योंकि उनकी आज़ादी की घड़ी आ पहुंची है। इसी वक़्त कारख़ाना समितियों के प्रथम अखिल रूसी सम्मेलन[1] ने सोवियतों के प्रबल समर्थन की घोषणा की और फिर यह अर्थपूर्ण विचार प्रगट किया:

ज़ारशाही से अपनी राजनीतिक स्वतन्त्रता प्राप्त कर लेने के बाद मज़दूर वर्ग चाहता है कि जनवादी व्यवस्था उसके उत्पादन सम्बन्धी

क्रियाकलाप के क्षेत्र में भी विजयी हो। उत्पादन में जनवादी व्यवस्था का सर्वश्रेष्ठ रूप औद्योगिक उत्पादन पर मज़दूरों का नियन्त्रण है, जिसका विचार प्रभुता-सम्पन्न वर्गों की अपराधपूर्ण नीति द्वारा उत्पन्न आर्थिक विघटन के वातावरण में स्वभावतः प्रगट हुआ ...

रेल मज़दूर यूनियन ने रेल परिवहन-मन्त्री लिवेरोव्स्की के इस्तीफ़े की मांग की।

त्से-ई-काह के नाम पर स्कोबेलेव ने आग्रह किया कि उनको दिया जाने वाला **नकाज़** मित्र-राष्ट्र-सम्मेलन में पेश किया जाये और उन्होंने तेरेश्चेन्को के पेरिस भेजे जाने के विरोध में औपचारिक रूप से अपना प्रतिवाद प्रगट किया। तेरेश्चेन्को ने इस्तीफ़ा देने की रज़ामन्दी ज़ाहिर की ...

सेना का पुनःसंगठन करने में असमर्थ जनरल वेर्ख़ोव्स्की मंत्रिमंडल की बैठकों में यदा-कदा ही आते ...

३ नवम्बर को बूर्त्सेव के पत्र 'ओबश्चेये देलो' ने बड़ी बड़ी सुर्ख़ियां देते हुए लिखा :

नागरिको! पितृभूमि को बचाइये!

मुझे अभी अभी मालूम हुआ है कि कल राष्ट्रीय प्रतिरक्षा आयोग की एक बैठक में युद्ध-मन्त्री जनरल वेर्ख़ोव्स्की ने, जो कोर्नीलोव के पतन के लिये उत्तरदायी प्रमुख व्यक्तियों में हैं, प्रस्ताव किया कि मित्र-राष्ट्रों से स्वतन्त्र रूप में एक पृथक शान्ति-सन्धि सम्पन्न की जाये।

यह रूस के प्रति विश्वासघात है!

तेरेश्चेन्को ने इज़हार किया कि अस्थायी सरकार ने वेर्ख़ोव्स्की के प्रस्ताव पर ग़ौर तक नहीं किया है।

"आप वहां होते, तो शायद सोचते कि हम किसी पागलख़ाने में हैं!" तेरेश्चेन्को ने कहा।

आयोग के सदस्य जनरल वेर्ख़ोव्स्की की बात को सुन कर हक्का-बक्का रह गये।

जनरल अलेक्सेयेव रो पड़े।

नहीं। यह निरा पागलपन नहीं है! यह और भी बुरी बात है। यह प्रत्यक्षतः रूस के प्रति विश्वासघात है!

वेर्ख़ोव्स्की ने जो कहा है, उसके लिए केरेन्स्की, तेरेश्चेन्को और नेक्रासोव फ़ौरन जवाबदेही करें।

नागरिको, उठिये!

रूस को बेचा जा रहा है!

उसे बचाइये!

वेर्ख़ोव्स्की ने वास्तव में यही कहा था कि मित्र-राष्ट्रों पर इसके लिए दबाव डाला जाये कि वे शान्ति का प्रस्ताव करें, क्योंकि रूसी सेना अब और लड़ने में असमर्थ है...

रूस में और विदेशों में भी इस समाचार से बड़ी खलबली मची। वेर्ख़ोव्स्की को "अस्वस्थ होने के कारण अनिश्चित काल के लिए छुट्टी" दी गयी, और उन्हें मन्त्रिमण्डल से निकलना पड़ा। 'ओबश्चेये देलो' को बन्द कर दिया गया...

४ नवम्बर, इतवार का दिन पेत्रोग्राद सोवियत दिवस घोषित किया गया था, और उस दिन ज़ाहिरा तौर पर संगठन तथा प्रेस के लिए पैसा उगाहने के लिए शहर भर में बड़ी बड़ी सभायें आयोजित की गयी थीं। परन्तु वास्तविक उद्देश्य अपनी शक्ति का प्रदर्शन करना था। यकायक ऐलान किया गया कि उसी दिन कज़्ज़ाक लोग **क्रेस्तनी ख़ोद** – सलीब का जुलूस – निकालेंगे। कहा गया कि यह जुलूस १८१२ की कलीसाई प्रतिमा के सम्मान में निकाला जायेगा, जिसके चमत्कार से नेपोलियन को मास्को छोड़ कर भागना पड़ा था। हवा में सनसनी थी। बारूद का ढेर जमा था और एक चिनगारी गृहयुद्ध की आग भड़का सकती थी। पेत्रोग्राद सोवियत ने 'कज़्ज़ाक भाइयों के नाम' एक घोषणापत्र निकाला, जिसमें कहा गया था:

आज कज़्ज़ाकों को हम मज़दूरों और सिपाहियों के ख़िलाफ़ भड़काया जा रहा है। जो लोग भाई को भाई से लड़ाने की यह योजना कार्यान्वित कर रहे हैं, वे हैं हमारे सामान्य शत्रु, हमारे उत्पीड़क, विशेषाधिकार-सम्पन्न वर्गों के लोग, फ़ौजी जनरल, बैंकर, ज़मींदार, भूतपूर्व अफ़सर,

ज़ार के भूतपूर्व नौकर... भ्रष्टाचारी और धनिक, रईस व उमरा, जागीरदार व जनरल और ख़ुद आपके कज़्ज़ाक जनरल हमसे नफ़रत करते हैं। वे किसी भी घड़ी पेत्रोग्राद सोवियत का नाश करने और क्रान्ति को कुचल देने के लिए तुले बैठे हैं...

४ नबम्बर को किसी ने एक कज़्ज़ाक धार्मिक जुलूस निकालने का आयोजन किया है। इस जुलूस में भाग लिया जाये या न लिया जाये, यह हर व्यक्ति के स्वतन्त्र विवेक का प्रश्न है। हम इस मामले में दस्तन्दाज़ी नहीं करते, न ही हम किसी को रोकते हैं... लेकिन कज़्ज़ाको! हम आपको आगाह करते हैं, आप ख़बरदार रहिये और ख़्याल रखिये कि कहीं ऐसा न होने पाये कि **क्रेस्तनी ख़ोद** के बहाने आपके कलेदिन जैसे नेता आपको मज़दूरों के ख़िलाफ़, सिपाहियों के ख़िलाफ़ भड़कायें...

जुलूस का ख़्याल यकायक छोड़ दिया गया...

बारिकों में और शहर की मज़दूर बस्तियों में बोल्शेविक नारा उठाते थे, "समस्त सत्ता सोवियतों के हाथ में!" और उधर काली यमदूती शक्तियां लोगों को भड़का रही थीं कि वे उठें और यहूदियों को, दूकानदारों को, समाजवादी नेताओं को मौत के घाट उतारें...

एक ओर राजतन्त्रवादी अख़बार ख़ूनी आतंक और दमन के लिए भड़का रहे थे, दूसरी ओर लेनिन की पुरज़ोर आवाज़ कड़क रही थी, "बग़ावत!.. अब हम एक लमहा भी ठहर नहीं सकते!"

पूंजीवादी अख़बार भी बेचैन थे[2]। 'बिर्जेवीये वेदोमोस्ती' (एक्सचेंज गज़ेट) ने लिखा कि बोल्शेविकों का प्रचार "समाज के सबसे प्राथमिक सिद्धान्तों – व्यक्तिगत सुरक्षा तथा निजी स्वामित्व की मान्यता" – पर प्रहार है।

लेकिन बोल्शेविकों के विरोध में "नरम" समाजवादी पत्रिकायें सबसे कट्टर निकलीं[3]। 'देलो नरोदा' ने लिखा, "बोल्शेविक क्रान्ति के सबसे ख़तरनाक दुश्मन हैं।" मेन्शेविक 'देन' ने लिखा, "सरकार को चाहिए कि अपने को बचाये और हमें भी।" प्लेख़ानोव के अख़बार 'येदीन्स्त्वो'

(एकता)[4] ने सरकार का ध्यान इस बात की ओर दिलाया कि पेत्रोग्राद के मज़दूरों के हाथ में हथियार दिये जा रहे हैं और मांग की कि बोल्शेविकों के ख़िलाफ़ सख़्त कार्रवाई की जाये।

सरकार दिन-ब-दिन ज़्यादा लाचार होती जा रही थी। नगरपालिका का प्रशासन तक चरमरा कर बैठ गया। सुबह अख़बारों के कालम घोर दुःसाहसपूर्ण डकैती और क़त्ल की ख़बरों से भरे होते। अपराधियों को छुट्टा घूमने के लिए छोड़ दिया गया था।

उधर हथियारबन्द मज़दूर रात में सड़कों पर गश्त लगाते, चोरों-लुटेरों से निपटते और जहां भी हथियार मिलते उन्हें ज़ब्त कर लेते।

१ नवम्बर को पेत्रोग्राद के सैनिक कमांडर कर्नल पोल्कोवनिकोव ने एक एलान जारी किया:

बावजूद इसके कि देश एक मुश्किल दौर से गुज़र रहा है, पेत्रोग्राद में चारों ओर अभी भी सशस्त्र प्रदर्शन और मारकाट के लिये ग़ैरज़िम्मेदार अपीलें जारी की जा रही हैं, और लूट-पाट तथा अव्यवस्था रोज़ाना बढ़ती जा रही हैं।

यह स्थिति नागरिकों के जीवन को छिन्न-भिन्न कर रही है तथा सरकार और नगरपालिका के संस्थानों के व्यवस्थित कार्य में बाधा पहुंचा रही है।

अपनी ज़िम्मेदारी का और देश के प्रति अपने कर्तव्य का पूरा ध्यान रखते हुए, मैं आदेश देता हूं:

१. गैरिसन के अधिकार-क्षेत्र में, विशेष निर्देशों के अनुसार, प्रत्येक सैनिक टुकड़ी सरकारी संस्थानों की सुरक्षा के लिए नगरपालिका को, कमिसारों को तथा मिलिशिया को पूरी मदद दे।

२. हलक़े के कमांडर तथा नगर मिलिशिया के प्रतिनिधियों के सहयोग से गश्ती दलों का संगठन किया जाये और अपराधियों तथा सेना से भागे सिपाहियों को गिरफ़्तार करने के लिए कार्रवाई की जाये।

३. जो भी लोग बारिकों में घुस कर सिपाहियों को सशस्त्र प्रदर्शन और मारकाट के लिए भड़काते हैं, उन्हें गिरफ़्तार करके नगर के द्वितीय कमाण्डर के सदर दफ़्तर के हवाले किया जाये।

४. कोई भी सशस्त्र प्रदर्शन या बलवा होते ही उसे समस्त उपलब्ध सैनिक शक्ति से तुरंत कुचल दिया जाये।

५. मकानों में नाजायज़ तलाशियां और नाजायज़ गिरफ़्तारियां रोकने में कमिसारों की मदद की जाये।

६. हर व्यक्ति अपने अधिकार-क्षेत्र में होने वाली प्रत्येक घटना की रिपोर्ट अविलम्ब पेत्रोग्राद सैनिक क्षेत्र के स्टाफ़ को दे।

मैं सभी सैनिक समितियों तथा संगठनों को आदेश देता हूं कि वे कमाण्डरों को, जिन कर्तव्यों की ज़िम्मेदारी उनके ऊपर डाली गई है, उन्हें पूरा करने में मदद पहुंचायें।

जनतन्त्र की परिषद् की एक बैठक में केरेन्स्की ने घोषणा की कि सरकार बोल्शेविक तैयारियों के बारे में अच्छी तरह जानती है और उसके पास किसी भी प्रदर्शन से निबट पाने के लिये पर्याप्त शक्ति है[5]। उन्होंने 'नोवाया रूस' और 'राबोची पूत' पर यह आरोप लगाया कि वे दोनों एक ही प्रकार की विध्वंसक कार्रवाई करने में लगे हुए हैं। "परन्तु," उन्होंने आगे कहा, "निर्बाध प्रेस-स्वातन्त्र्य के कारण सरकार इस स्थिति में नहीं है कि अख़बारों में छपने वाले झूठ का प्रतिकार कर सके..."* उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि इन दोनों अख़बारों में एक ही प्रकार के प्रचार के दो पहलू नज़र आते हैं, जिसका इच्छित लक्ष्य है प्रतिक्रांति को अग्रसर करना। यमदूती शक्तियां यही चाहती हैं और बेतरह चाहती हैं। उन्होंने आगे कहा:

"मेरा सर्वनाश निश्चित है और इस बात का बहुत अधिक महत्व नहीं है कि मेरे ऊपर क्या बीतती है। मैं यह कहने की जुर्रत करूंगा कि शहर की घटनाओं में जो कुछ रहस्यमय है, उसका कारण बोल्शेविकों के अविश्वसनीय उकसावे में निहित है!"

२ नवम्बर तक सोवियतों की कांग्रेस के केवल पन्द्रह प्रतिनिधि

---

* केरेन्स्की ने साफ़ बात नहीं कही। अस्थायी सरकार इससे पहले, जुलाई में ही, बोल्शेविक अख़बारों को बंद कर चुकी थी और अब फिर ऐसा करने का इरादा रखती थी। – **जॉ० री०**

पेत्रोग्राद पहुंचे थे। दूसरे दिन एक सौ मौजूद थे और उसके अगले दिन सुबह १७५, जिनमें १०३ बोल्शेविक थे... चार सौ प्रतिनिधियों से कोरम बनता था और कांग्रेस के शुरू होने में केवल तीन दिन बाक़ी रह गये थे...

मैं बहुत काफ़ी वक़्त स्मोल्नी में बिताता। अब अन्दर दाख़िल होना उतना आसान न था। बाहरी फाटकों पर संतरियों की दोहरी क़तार होती, अंदर के सदर दरवाज़े के सामने इन्तज़ार करने वाले लोगों की एक लम्बी लाइन दिखाई पड़ती, जिनमें चार चार एक साथ अन्दर जाने दिये जाते, जहां उनसे उनके नाम-धाम के साथ यह पूछा जाता कि वे किस काम से वहां आये हैं। उन्हें स्मोल्नी के लिये पास दिये जाते और पास-व्यवस्था हर दो-चार घंटे के बाद बदल दी जाती, क्योंकि जासूस [illegible] से भीतर घुसने की बराबर कोशिश कर रहे थे...

एक दिन जैसे ही मैं बाहर के फाटक पर पहुंचा, मैंने अपने ठीक पास त्रोत्स्की और उनकी पत्नी को देखा। उन्हें एक सिपाही ने रोक लिया। त्रोत्स्की ने अपनी जेबों को उलट डाला, लेकिन उन्हें अपना पास न मिला।

"कोई बात नहीं," अन्त में उन्होंने कहा। "आप मुझे जानते हैं, मेरा नाम त्रोत्स्की है।"

"आपके पास अपना पास नहीं है," सिपाही ने अड़ते हुए कहा। "आप अन्दर नहीं जा सकते। आपका नाम कुछ भी हो, मेरे लिये इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता।"

"लेकिन मैं पेत्रोग्राद सोवियत का अध्यक्ष हूं।"

"अच्छा," सिपाही ने जवाब दिया। "अगर आप इतने बड़े आदमी हैं, तो आपके पास कम से कम एक पुर्ज़ा तो होना चाहिये।"

त्रोत्स्की ने सब्र से काम लिया।

"मैं कमांडेंट से मिलना चाहता हूं," उन्होंने कहा। सिपाही हिचकिचाया और उसने बुदबुदा कर कहा कि वह हर सिरफिरे के लिए, जो वहां पहुंच जाये, कमांडेंट को तंग नहीं करना चाहता। आख़िरकार उसने एक दूसरे सिपाही को इशारा किया, जिसके हाथ में सारी टुकड़ी की कमान थी। त्रोत्स्की ने उसे सारी बात समझाई और फिर कहा, "मेरा नाम त्रोत्स्की है।"

"त्रोत्स्की?" इस दूसरे सिपाही ने माथा खुजलाते हुए कहा। फिर सोचते सोचते बोला, "मैंने यह नाम कहीं सुन रखा है। मेरा ख़्याल है ठीक है। आप अन्दर जा सकते हैं, कामरेड..."

अन्दर बरामदे में मेरी मुलाक़ात बोल्शेविक पार्टी की केन्द्रीय समिति

Военно-Революціон.
Комитетъ
при
ПЕТР. С. Р. и С. Д.

Комендантскій отдѣлъ.

16 ноября 1917 г.

№ 955

Смольный институтъ.

Исполнител. Комитетъ Петрогр. Сов. Раб. и Солд. Деп.
Воен. Революціонный Комитетъ

Пропускъ.

Дано. сіе Джону Риду
Корресп. амер. соц. прессы
срокомъ по 1 декабря
на право свободнаго входа въ Смольный Институтъ.

Комендантъ Ф. Дзержинскій

Дѣлопроизводитель

स्मोल्नी भवन में प्रवेश के लिए जॉन रीड को दिया गया पास

के सदस्य काराख़ान* से हुई, जिन्होंने मुझे समझाया कि नई सरकार कैसी होगी:

"एक लचकीला संगठन, जो सोवियतों के माध्यम से प्रगट होने वाली जनता की इच्छा के प्रति संवेदनशील होगा और जो स्थानीय शक्तियों को काम करने का पूरा मौक़ा देगा। इस समय ज़ार की सरकार की ही तरह अस्थायी सरकार भी स्थानीय जनवाद को रोकती है। नये समाज में पेशक़दमी नीचे से होगी... सरकार का ढांचा रूसी सामाजिक

---

* काराख़ान केन्द्रीय समिति के सदस्य नहीं थे। – सं०

जनवादी मज़दूर पार्टी के संविधान के अनुरूप होगा। नयी **त्से-ई-काह**, जो सोवियतों की अखिल रूसी कांग्रेस के जल्दी जल्दी होने वाले अधिवेशनों के प्रति उत्तरदायी होगी, हमारी संसद होगी। विभिन्न मंत्रालयों की अध्यक्षता मन्त्री नहीं करेंगे, **कोल्लेगिया** अथवा समितियां करेंगी, जो सीधे सीधे सोवियतों के प्रति उत्तरदायी होंगी..."

३० अक्तूबर को पहले से निश्चित समय पर मैं त्रोत्स्की से बात करने के लिये स्मोल्नी भवन के सबसे ऊपर के एक सादे असज्जित कमरे में दाखिल हुआ। त्रोत्स्की कमरे के बीचोंबीच एक मामूली कुर्सी पर बैठे थे ; सामने खाली मेज़ थी। मुझे उनसे बहुत से सवाल करने की ज़रूरत नहीं हुई। वह घण्टा भर से ज़्यादा लगातार तेज़ रफ़्तार से बोलते रहे। मैं यहां उनकी बात का सारांश उन्हीं के शब्दों में दे रहा हूं :

"अस्थायी सरकार की बिल्कुल ही कमर टूट गयी है। उसकी नकेल पूंजीपति वर्ग के हाथ में है, लेकिन खुल्लमखुल्ला नहीं ; उस पर **ओबोरोन्त्सी** (प्रतिरक्षावादी) पार्टियों के साथ मिथ्या संश्रय का पर्दा डाल दिया गया है। अब, क्रांति के दौरान आप देखते हैं कि किसान, जो वादा की गई ज़मीन का इन्तज़ार करते करते थक चुके हैं, बग़ावत कर रहे हैं ; और पूरे देश में, सभी मेहनतकश वर्गों के अन्दर, वैसी ही जागृति दिखायी देती है। पूंजीपति वर्ग गृहयुद्ध के द्वारा ही अपना यह प्रभुत्व क़ायम रख सकता है। पूंजीपति वर्ग एकमात्र कोर्नीलोव के तरीक़े से ही अपना नियन्त्रण क़ायम रख सकता है। परन्तु पूंजीपति वर्ग के पास शक्ति का अभाव है... सेना हमारे साथ है। समझौतापरस्त तथा शान्तिवादी, समाजवादी-क्रांतिकारी तथा मेन्शेविक लोग अपनी सारी साख खो बैठे हैं, क्योंकि किसानों और ज़मींदारों का संघर्ष, मज़दूरों और मालिकों का संघर्ष, सिपाहियों और अफ़सरों का संघर्ष आज जितना उग्र और कठोर हो गया है, उतना वह पहले कभी नहीं हुआ था। इस संघर्ष में सुलह समझौते की कोई गुंजाइश नहीं रह गई है। जन-साधारण का निश्चयात्मक रूप से उठाया हुआ क़दम ही, सर्वहारा अधिनायकत्व की विजय ही क्रांति सम्पन्न कर सकती है और जनता को उबार सकती है...

"सोवियतें जनता का सर्वश्रेष्ठ, अपने क्रांतिकारी अनुभव, अपने विचारों तथा उद्देश्यों की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ प्रतिनिधित्व करती हैं।

खाइयों में सैनिकों, कारख़ानों में मज़दूरों और खेतों में किसानों के ऊपर सीधे सीधे आधारित ये सोवियतें क्रान्ति की रीढ़ हैं।

"सोवियतों के बग़ैर एक प्रकार की सत्ता स्थापित करने का प्रयत्न किया गया है, और उससे सत्ता का अभाव ही उत्पन्न हुआ है। रूसी जनतन्त्र की परिषद् के गलियारों में तरह तरह के प्रतिक्रांतिकारी षड्यन्त्र रचे जा रहे हैं। कैडेट पार्टी उग्र प्रतिक्रांतिकारियों का प्रतिनिधित्व करती है। दूसरी ओर सोवियतें जनता के ध्येय का प्रतिनिधित्व करती हैं। इन दोनों ख़ेमों के बीच ऐसे कोई दल नहीं हैं, जिनकी कोई ख़ास अहमियत हो... यह «lutte finale» – निर्णयकारी संघर्ष है। पूंजीवादी प्रतिक्रांति अपनी समस्त शक्ति को बटोरती और संहत करती है और उस समय की प्रतीक्षा करती है, जब वह हमारे ऊपर आक्रमण कर सकेगी। हम मुंहतोड़ फ़ैसलाकुन जवाब देंगे। जो काम मार्च में मुश्किल से शुरू हुआ और जो कोर्नीलोव-काण्ड के समय आगे बढ़ा, उसे हम पूरा करेंगे..."

इसके बाद उन्होंने नयी सरकार की विदेश नीति की चर्चा की:

"हमारा पहला काम होगा सभी मोर्चों पर अविलम्ब युद्ध-विराम के लिए तथा एक जनवादी शान्ति-संधि की शर्तों पर विचार करने के हेतु विभिन्न जनों का एक सम्मेलन करने के लिये आह्वान देना। शान्ति के समझौते में जनवाद का कितना गहरा पुट होगा, यह इस बात पर निर्भर होगा कि यूरोप में हमारे इस आह्वान का कितना क्रांतिकारी प्रत्युत्तर दिया जायेगा। अगर हम यहां पर सोवियतों की सरकार स्थापित कर लेते हैं, तो वह यूरोप में शान्ति की तत्काल स्थापना का एक शक्तिशाली साधन होगी, क्योंकि यह सरकार सभी जनों से, उनकी सरकारों की उपेक्षा कर, सीधे उनसे अविलम्ब अपील करेगी, और उनके सामने युद्ध-विराम का प्रस्ताव रखेगी। शान्ति-सन्धि सम्पन्न करने की घड़ी में रूसी क्रान्ति का पूरा ज़ोर इस ओर पड़ेगा: 'संयोजन न हों, हरजाने न लिये जायें, जातियों को आत्म-निर्णय का अधिकार मिले' और **यूरोप का एक संघात्मक जनतन्त्र** स्थापित हो...

"मेरी दृष्टि में इस युद्ध के पश्चात् यूरोप का पुनर्जन्म होगा – कूटनीतिज्ञों के हाथों नहीं, सर्वहाराओं के हाथों। यूरोप का संघात्मक

जनतन्त्र – यूरोप के संयुक्त राज्य – यही होना चाहिये। राष्ट्रीय स्वायत्तता पर्याप्त नहीं रह गयी है। आर्थिक विकास का तक़ाज़ा है कि राष्ट्रीय सरहदें मिटा दी जायें। अगर यूरोप राष्ट्रीय समूहों में बंटा रहता है, तो साम्राज्यवाद फिर अपना धंधा शुरू कर देगा। एकमात्र यूरोप का संघात्मक जनतन्त्र ही संसार को शान्ति प्रदान कर सकता है।" कहते कहते त्रोत्स्की के चेहरे पर हंसी खेल गयी – वही उनकी स्निग्ध, ईषत् व्यंग्यात्मक हंसी। "लेकिन जब तक यूरोपीय जन-साधारण जद्दोजहद न करें, ये लक्ष्य पूरे नहीं किये जा सकते – इस समय ..."

जब हर आदमी इस इन्तज़ार में था कि बोल्शेविक यकायक एक दिन सुबह सड़कों पर निकल पड़ेंगे और सफ़ेदपोश लोगों पर दनादन गोलियां चलाना शुरू कर देंगे, वास्तविक विद्रोह अत्यन्त सहज भाव से शुरू हुआ और खुल्लमखुल्ला हुआ।

अस्थायी सरकार की योजना थी कि पेत्रोग्राद की गैरिसन को मोर्चे पर भेज दिया जाये।

इस गैरिसन में लगभग साठ हज़ार सिपाही थे, जिन्होंने क्रान्ति में प्रमुख भाग लिया था। मार्च के शानदार दिनों में उन्होंने ही हवा का रुख बदल दिया था, सैनिकों के प्रतिनिधियों की सोवियतों की स्थापना की थी और कोर्नीलोव को पेत्रोग्राद के द्वार से पीछे खदेड़ दिया।

उस समय इस गैरिसन का एक बड़ा भाग बोल्शेविक-पंथी था। जब अस्थायी सरकार ने राजधानी खाली कर देने की बात की, पेत्रोग्राद की गैरिसन ने ही उसे जवाब दिया: "यदि आपमें राजधानी की रक्षा करने की सामर्थ्य नहीं है, तो शान्ति सम्पन्न कीजिये और अगर आप शान्ति सम्पन्न नहीं कर सकते, तो हट जाइये और एक जन-सरकार के लिए रास्ता छोड़ दीजिये, जो दोनों काम कर सकती है ..."

यह बिल्कुल साफ़ था कि विद्रोह करने की कोई भी कोशिश हो, [illegible] [illegible] पेत्रोग्राद गैरिसन के रुख पर मुनहसर होगा। सरकार की चाल यह थी कि गैरिसन की रेजीमेंटों को हटा कर उनकी जगह "भरोसे लायक" [illegible] [illegible] [illegible] और "शहीदी टुकड़ियां" – लायी जायें। [illegible] [illegible] [illegible], "[illegible]" [illegible] और त्से-ई-काह ने

सरकार की इस योजना का समर्थन किया। मोर्चे पर और पेत्रोग्राद में इस बात पर ज़ोर देते हुए व्यापक प्रचार किया गया कि आठ महीनों से, जब खाइयों में थके-मांदे सिपाही फ़ाक़े कर रहे थे और जान से हाथ धो रहे थे, पेत्रोग्राद गैरिसन के उनके साथी राजधानी की बारिकों में आरामतलब ज़िन्दगी बसर कर रहे थे।

स्वभावत: इस आरोप में कुछ सच्चाई थी कि गैरिसन की रेजीमेंटें अपनी अपेक्षाकृत आराम की ज़िन्दगी को छोड़ कर शीत-अभियान की मुसीबत में नहीं पड़ना चाहती थीं। लेकिन पेत्रोग्राद छोड़ कर जाने से इनकार करने की वजह कुछ और थी। पेत्रोग्राद सोवियत को आशंका थी कि सरकार का इरादा बहुत नेक नहीं है, और मोर्चे से मामूली सिपाहियों द्वारा चुने सैकड़ों प्रतिनिधि आ आकर कह रहे थे, "यह ठीक है कि हमें कुमक की ज़रूरत है, लेकिन हमारे लिये यह जानना ज़्यादा ज़रूरी है कि पेत्रोग्राद सुरक्षित है, क्रान्ति सुरक्षित है... आप पिछाया संभालिये, साथियो, और हम मोर्चा संभालेंगे!"

२५ अक्तूबर को बन्द दरवाज़ों के भीतर पेत्रोग्राद सोवियत की कार्यकारिणी समिति की एक बैठक हुई, जिसमें पूरे सवाल का फ़ैसला करने के लिए एक विशेष सैनिक समिति स्थापित करने के बारे में विचार किया गया। अगले दिन पेत्रोग्राद सोवियत की सैनिक शाखा ने एक समिति का चुनाव किया, जिसने तुरंत पूंजीवादी अख़बारों के बहिष्कार की घोषणा की और सोवियतों की कांग्रेस का विरोध करने के लिए **त्से-ई-काह** को फटकारा। २९ तारीख़ को पेत्रोग्राद सोवियत के खुले अधिवेशन में त्रोत्स्की ने प्रस्ताव किया कि सोवियत सैनिक क्रान्तिकारी समिति की स्थापना को औपचारिक रूप से मंज़ूरी दे। उन्होंने कहा, "हमें अपना विशेष संगठन बनाना चाहिए, ताकि हम लड़ाई के मैदान में उतर सकें और आवश्यकता हो, तो मृत्यु को भी वरण कर सकें..." यह निश्चय किया गया कि सैनिक समितियों और जनरल स्टाफ़ से सलाह-मशविरा करने के लिए दो प्रतिनिधिमण्डल मोर्चे पर भेजे जायें – एक सोवियत की ओर से, दूसरा गैरिसन की ओर से।

प्स्कोव में उत्तरी मोर्चे के कमांडर जनरल चेरेमीसोव ने सोवियत प्रतिनिधियों से साफ़ दो टूक शब्दों में कहा कि उन्होंने पेत्रोग्राद गैरिसन

को मोर्चे की खाइयों में जाने का हुक्म दिया है और बस। गैरिसन के प्रतिनिधिमण्डल को पेत्रोग्राद से बाहर जाने की इजाज़त नहीं दी गयी ...

पेत्रोग्राद सोवियत की सैनिक शाखा के प्रतिनिधिमण्डल ने मांग की कि उसके एक प्रतिनिधि को पेत्रोग्राद क्षेत्र के सैनिक स्टाफ़ में शामिल किया जाये। जवाब – नहीं। पेत्रोग्राद सोवियत ने मांग की कि सैनिक शाखा के अनुमोदन के बिना कोई भी आदेश जारी न किया जाये। फिर इनकार। प्रतिनिधियों को टका सा जवाब दिया गया, "हम केवल **त्से-ई-काह** को मानते हैं। हम आपको नहीं मानते। अगर आप क़ानून का उल्लंघन करेंगे, तो हम आपको गिरफ़्तार कर लेंगे।"

३० तारीख़* को पेत्रोग्राद की सभी रेजीमेंटों के प्रतिनिधियों की एक सभा में यह प्रस्ताव पास किया गया: "**अब पेत्रोग्राद गैरिसन अस्थायी सरकार को अपनी सरकार नहीं मानती। हमारी सरकार पेत्रोग्राद सोवियत है। पेत्रोग्राद सोवियत सैनिक क्रान्तिकारी समिति की मारफ़त हमें जो हुक्म देगी, हम उसे ही मानेंगे।**" स्थानीय सैनिक टुकड़ियों को आदेश दिया गया कि वे पेत्रोग्राद सोवियत की सैनिक शाखा के निर्देशों की प्रतीक्षा करें।

दूसरे दिन **त्से-ई-काह** ने अपनी एक मीटिंग बुलाई, जिसमें भाग लेने वाले अधिकांशतः अफ़सर थे, और उसमें सैनिक स्टाफ़ से सहयोग करने के लिए एक विशेष समिति का गठन किया गया तथा शहर की सभी बस्तियों के लिए कमिसारों की नियुक्ति की गयी।

३ नवम्बर को स्मोल्नी में सैनिकों की एक महती सभा हुई। सभा ने फ़ैसला किया:

सैनिक क्रान्तिकारी समिति की स्थापना का अभिनन्दन करते हुए पेत्रोग्राद की गैरिसन क्रान्ति के हित में मोर्चे और पिछाये को और भी घनिष्ठ रूप से एकताबद्ध करने के लिए समिति जो भी क़दम उठाती है, उसका पूर्ण समर्थन करने का उसे आश्वासन देती है।

* यह सभा २१ अक्तूबर को हुई थी। सं०

इसके अतिरिक्त, गैरिसन यह भी घोषणा करती है कि क्रान्तिकारी सर्वहारा के साथ मिल कर वह पेत्रोग्राद में क्रान्तिकारी सुव्यवस्था को सुनिश्चित बनायेगी और उस पर आंच न आने देगी। कोर्नीलोवपंथियों या पूंजीवादियों की भड़कावे की हर कोशिश का **सख़्ती से मुक़ाबला किया जायेगा।**

अब अपनी शक्ति का अनुभव करती हुई सैनिक क्रांतिकारी समिति ने पेत्रोग्राद सैनिक स्टाफ़ को अन्तिम रूप से आदेश दिया कि वह समिति की अधीनता को स्वीकार करे। सभी प्रेसों को हुक्म दिया गया कि वे समिति की मंज़ूरी के बग़ैर किसी तरह की अपील या घोषणा न छापें। हथियारबन्द कमिसार क्रोनवेर्क के शस्त्रागार में पहुंचे और उन्होंने ढेर के ढेर हथियारों और गोला-बारूद को अपने क़ब्ज़े में ले लिया और उसी समय शस्त्रागार से कलेदिन के सदर मुक़ाम, नोवोचेर्कास्क के लिये दस हज़ार संगीनों का चालान रोक दिया...

सरकार को अब यकायक ख़तरे का एहसास हुआ, और उसने इस शर्त पर समिति के सदस्यों की निरापदता का आश्वासन देने का प्रस्ताव किया कि वह अपने को भंग करे। लेकिन यह प्रस्ताव बहुत देर से आया। ५ नवम्बर की आधी रात को स्वयं केरेन्स्की ने मालेव्स्की की मारफ़त पेत्रोग्राद सोवियत को सन्देश भेजा कि वह सोवियत के प्रतिनिधियों को पेत्रोग्राद सैनिक स्टाफ़ में शामिल करने के लिए तैयार हैं। सैनिक क्रान्तिकारी समिति ने इसे स्वीकार कर लिया। एक घंटा बाद कार्यवाहक युद्ध-मन्त्री जनरल मनिकोव्स्की ने केरेन्स्की के प्रस्ताव को रद्द कर दिया...

मंगलवार, ६ नवम्बर की सुबह एक पोस्टर का निकलना था कि शहर में सनसनी फैल गयी। पोस्टर "मज़दूरों तथा सैनिकों के प्रतिनिधियों की पेत्रोग्राद सोवियत के अधीन सैनिक क्रान्तिकारी समिति" की ओर से निकाला गया था।

पेत्रोग्राद की जनता के नाम

नागरिको !

प्रतिक्रान्ति ने अपना ज़हरीला फन उठाया है। कोर्नीलोवपंथी सोवियतों की अखिल रूसी कांग्रेस को कुचलने के लिए तथा संविधान सभा को छिन्न-भिन्न करने के लिए अपनी शक्तियों को जुटा रहे हैं। इसके साथ ही, फ़सादी और दंगाई लोग पेत्रोग्राद की जनता को उपद्रव और रक्तपात के लिए भड़काने की कोशिश कर सकते हैं। मज़दूरों तथा सैनिकों के प्रतिनिधियों की पेत्रोग्राद सोवियत प्रतिक्रान्ति की तथा दंगा-फ़साद की कोशिशों से शहर को बचाने और वहां क्रांतिकारी सुव्यवस्था सुरक्षित रखने की ज़िम्मेदारी अपने ऊपर लेती है।

पेत्रोग्राद गैरिसन किसी प्रकार की हिंसा और उपद्रव को नहीं होने देगी। जनता का आवाहन किया जाता है कि वह उपद्रवियों और यमदूत सभाई आन्दोलनकर्ताओं को गिरफ़्तार कर ले और उन्हें सबसे नज़दीक की बारिकों में सोवियत कमिसारों के पास ले जाये। यमदूती शक्तियों ने पेत्रोग्राद की सड़कों पर जहां फ़साद मचाने की कोई कोशिश की, चाहे वह ठगी-बटमारी हो या लड़ाई, मुजरिमों का एकदम सफ़ाया कर दिया जायेगा और इस धरती पर उनका निशान भी न छोड़ा जायेगा !

नागरिको ! हम आपका आह्वान करते हैं कि आप अपने को क़ाबू में रखें और पूर्ण शान्ति बनाये रखें। क्रान्ति तथा सुव्यवस्था का ध्येय मज़बूत हाथों में है।

जिन रेजीमेंटों में सैनिक क्रान्तिकारी समिति के कमिसार मौजूद हैं, उनकी सूची यह है ...

तीन तारीख को बोल्शेविकों के नेताओं की एक और ऐतिहासिक महत्त्व की बन्द मीटिंग हुई। जाल्किंद* से सूचना पा कर मैं दरवाज़े

* जाल्किंद, इ० अ० — पेत्रोग्राद के बोल्शेविक संगठन के सदस्य, जिन्होंने नवंबर विद्रोह में सक्रिय भाग लिया। — सं०

से बाहर गलियारे में इन्तज़ार करता रहा। वोलोदार्स्की ने निकलते ही मुझे बताया कि मीटिंग में क्या हो रहा था।

लेनिन ने कहा: "छ: नवम्बर वक़्त से पहले होगा। विद्रोह के लिए एक अखिल रूसी आधार होना ही चाहिए; और छ: तारीख़ तक कांग्रेस के सारे प्रतिनिधि पहुंचे नहीं होंगे ... दूसरी ओर ८ नवम्बर तक वक़्त बीत चुकेगा। उस वक़्त तक कांग्रेस संगठित हो चुकेगी और लोगों के किसी भी बड़े संगठित निकाय के लिए तेज़ी से निर्णायक क़दम उठाना कठिन है। हमें ७ नवम्बर को, जिस दिन कांग्रेस जुटती है, उसी दिन, कार्रवाई शुरू करनी होगी, ताकि हम उससे कह सकें, 'लीजिये, यह है सत्ता! बताइये, आप उसका क्या करेंगे?'"

ऊपर के एक कमरे में दुबले चेहरे और लम्बे बालों वाला एक व्यक्ति काम कर रहा था। ओव्सेयेन्को नामक यह सज्जन, जिन्हें अन्तोनोव कह कर पुकारते थे, किसी ज़माने में ज़ारशाही सेना के अफ़सर थे और बाद में क्रान्तिकारी आन्दोलन में आये और निर्वासित हुए। वह गणितज्ञ और शतरंज के खिलाड़ी भी थे। इस समय वह बड़ी सावधानी से राजधानी पर क़ब्ज़ा करने की योजना बनाने में लगे हुए थे।

अपनी ओर सरकार भी तैयारी कर रही थी। कुछ वफ़ादार रेजीमेंटों को, जो पूरे मोर्चे पर बिखरी हुई डिवीज़नों से चुनी गयी थीं, चुपचाप पेत्रोग्राद आने का हुक्म दिया गया। शिशिर प्रासाद में **युंकर** तोपख़ाना बैठा दिया गया।जुलाई के दिनों के बाद पहली बार कज़्ज़ाक सिपाहियों ने सड़कों पर गश्त लगाना शुरू किया। पोल्कोवनिकोव ने "पूरी ताक़त" के साथ नाफ़रमानी और सरकशी को कुचल देने की धमकी देते हुए आदेश पर आदेश जारी किये। सार्वजनिक शिक्षा-मन्त्री किशकिन, जो मन्त्रियों में सबसे ज़्यादा नफ़रत की निगाह से देखे जाते थे, पेत्रोग्राद में शान्ति और सुव्यवस्था क़ायम रखने के लिए विशेष कमिसार नियुक्त किये गये। उन्होंने दो आदमियों को अपने सहायक नियुक्त किये, जो उतने ही बदनाम थे, जितने वह ख़ुद। ये थे रुतेनबेर्ग और पालचीन्स्की। पेत्रोग्राद, क्रोंश्तादत तथा फ़िनलैंड को मुहासराबन्द घोषित किया गया। इस पर पूंजीवादी अख़बार 'नोवोये व्रेम्या' (नव-युग) ने विद्रूप करते हुए लिखा:

मुहासराबन्दी क्यों? सरकार के हाथ में न सत्ता है, न बलप्रयोग के लिए आवश्यक उपकरण, न ही उसकी कोई नैतिक प्रतिष्ठा रह गयी है... परिस्थिति बहुत अनुकूल हो, तो वह बस समझौते की बात-चीत कर सकती है, बशर्ते कि उसके साथ कोई बात करने के लिये तैयार हो। इससे अधिक अधिकार उसके पास नहीं है...

सोमवार, ५ नवम्बर की सुबह। मैंने सोचा कि मारिईन्स्की प्रासाद में ज़रा जाकर देखूं कि रूसी जनतन्त्र की परिषद् में क्या हो रहा है। गया तो देखा कि तेरेश्चेन्को की विदेश नीति को लेकर तेज़ बहस छिड़ी हुई है। बूर्त्सेव-वेर्ख़ोव्स्की काण्ड की गूंज भी सुनायी पड़ी। सारे कूटनीतिज्ञ मौजूद थे, एक इतालवी राजदूत को छोड़ कर। लोगों का कहना था कि कार्सो-दुर्घटना ने उनका दिल तोड़ दिया था।

जिस वक़्त मैं अन्दर दाख़िल हुआ, वामपंथी समाजवादी-क्रान्तिकारी करेलिन लंदन 'टाइम्स' का एक सम्पादकीय लेख पढ़ कर सुना रहे थे, जिसमें लिखा हुआ था, "बोल्शेविज़्म का एक ही इलाज है – गोली!"

कैडेटों की ओर मुड़कर उन्होंने कहा, "आपका भी यही ख़्याल है!"

दक्षिणपंथी बेंचों से आवाज़ें, "हां, है!"

करेलिन ने गरम होकर कहा, "हां, मैं जानता हूं आपका यही ख़्याल है। लेकिन आपमें ऐसा करने की हिम्मत नहीं है!"

इसके बाद स्कोबेलेव बोलने के लिये खड़े हुए – मुलायम उजली दाढ़ी, सुनहरे घुंघराले बाल – देखने में वह किसी नाटक के मैटिनी शो के प्रिय अभिनेता लगते थे। उन्होंने हिचकिचाते हुए उखड़े-उखड़े ढंग से सोवियत **नकाज़** का समर्थन किया। उनके बाद तेरेश्चेन्को उठे – उठते ही वामपंथियों की बौछार: "इस्तीफ़ा दो! गद्दी छोड़ दो!" उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि पेरिस सम्मेलन में सरकार के प्रतिनिधि तथा **त्से-ई-काह** के प्रतिनिधि, दोनों का एक ही दृष्टिकोण, यानी उनका – तेरेश्चेन्को का दृष्टिकोण ग्रहण करना चाहिए। इसके बाद सेना में

अनुशासन की पुनःस्थापना के बारे में, विजयपर्यन्त युद्ध के बारे में कुछ शब्द ... शोर, हंगामा ... और अड़ियल वामपंथियों के कड़े विरोध की परवाह न करती हुई जनतन्त्र की परिषद् अपनी साधारण दिनचर्या में लग गयी।

सदन में एक ओर बोल्शेविक बेंचों की क़तारें थीं – वे उसी दिन से ख़ाली पड़ी थीं, जिस दिन बोल्शेविक जनतन्त्र की परिषद् को छोड़कर निकल गये थे। उनके साथ सदन की रौनक़ जाती रही थी। सीढ़ियों से उतरते समय मुझे ऐसा लगा कि यहां चाहे जितनी तू तू मैं मैं हो, बाहर के क्षुब्ध अशान्त संसार की सच्ची आवाज़ इस विशाल पर निर्जीव भवन में प्रवेश नहीं कर सकती, और यह कि अस्थायी सरकार युद्ध और शान्ति की उसी चट्टान से टकराकर चकनाचूर हो गयी थी, जिसने मिल्युकोव मंत्रिमण्डल को खण्ड-खण्ड कर दिया था ... दरबान ने मुझे ओवरकोट पहनाते हुए कहा, "मैं नहीं जानता कि हमारे ग़रीब मुल्क का क्या होने वाला है ... ये सारे मेन्शेविक और बोल्शेविक और त्रुदोविक ... यह उक्रइना और यह फ़िनलैण्ड, जर्मन साम्राज्यवादी और अंग्रेज़ साम्राज्यवादी। मेरी उम्र पैंतालिस साल की हो चली है, लेकिन अपनी पूरी ज़िन्दगी में मैंने इतने सारे शब्द नहीं सुने थे, जितने यहां सुनने को मिल रहे हैं।"

बरामदे में मेरी मुलाक़ात प्रोफ़ेसर शात्स्की से हुई – चुहिया का सा छोटा सा मुंह, बदन पर भड़कीला कोट, यह सज्जन कैडेट पार्टी की सभाओं में बड़ा प्रभाव रखते थे। मैंने उनसे पूछा कि बहुचर्चित बोल्शेविक **विस्तुप्लेनिये** – प्रदर्शन – के बारे में उनका क्या ख़्याल है। उन्होंने कंधे सिकोड़ कर विद्रूप के स्वर में कहा :

"वे जानवर हैं, जानवर। वे प्रदर्शन करने की जुर्रत नहीं करेंगे, लेकिन अगर उन्होंने जुर्रत की, तो उन्हें फूंक मार कर उड़ा दिया जायेगा। हमारे दृष्टिकोण से **विस्तुप्लेनिये** बुरी चीज न होगी, क्योंकि तब वे स्वयं ही अपना सर्वनाश बुलायेंगे और संविधान सभा में उनकी कोई शक्ति नहीं रह जायेगी ...

"लेकिन, मेहरबान, मुझे इस बात की इजाज़त दीजिये कि मैं आपको नई शासन-पद्धति के बारे में अपनी उस योजना की रूपरेखा

दूं, जो संविधान सभा में पेश की जानेवाली है। आप जानते हैं, मैं उस आयोग का सभापति हूं, जिसे अस्थायी सरकार के साथ मिलकर जनतन्त्र की परिषद् ने संविधान का एक प्रारूप बनाने के लिये नियुक्त किया है... हम एक ऐसी विधान सभा स्थापित करेंगे, जिसके दो सदन होंगे, जैसे आपके यहां, संयुक्त राज्य अमरीका में हैं। अवर सदन में प्रादेशिक प्रतिनिधि होंगे और प्रवर में उदार पेशों के, ज़ेम्सत्वोओं, सहकारी समितियों तथा ट्रेड-यूनियनों के प्रतिनिधि होंगे..."

बाहर नम और ठंडी पछुवा हवा चल रही थी और पैरों के नीचे ठंडी कीचड़ से जूते भीतर तक गीले हो रहे थे। **युंकरों** की दो कम्पनियां झूमती-झामती मोस्कोया मार्ग से निकल गयीं। **युंकर** अपने लम्बे कोटों में जैसे अकड़े हुए मार्च कर रहे थे और पुराने ज़माने का एक ज़ोरदार कोरस उच्च स्वर में गा रहे थे, जैसा ज़ारशाही ज़माने में सिपाही गाया करते थे... पहले ही चौराहे पर मैंने देखा कि नगर मिलिशिया के सिपाही घोड़ों पर सवार थे और उन्हें पिस्तौलों से लैस किया गया था, जिनके नये पिस्तौलदान चमक रहे थे। एक ओर कुछ लोग गोल बनाये खड़े उनकी ओर एकटक देख रहे थे। नेव्स्की मार्ग की मोड़ पर मैंने लेनिन का लिखा हुआ एक पैम्फ़लेट ख़रीदा, 'क्या बोल्शेविक राज्य-सत्ता रख सकते हैं?' जिसके लिये मैंने एक टिकट दिया; ऐसे टिकट अक्सर पैसों की जगह दिये जा सकते थे। ट्राम-गाड़ियां गोंज़ की तरह रेंगती चली जा रही थीं, नागरिक और सिपाही बाहर की ओर इस तरह टंगे हुए थे कि उन्हें देखकर थियोडोर पी० शोन्ट्स* को भी भारी ईर्ष्या होती... सड़क के किनारे पटरी पर एक क़तार में खड़े सैनिक भगोड़े अपनी वर्दियां पहने सिगरेट और सूरजमुखी के बीज बेच रहे थे...

नेव्स्की मार्ग पर गीले कुहासे में लोगों की भीड़ ताज़ा अख़बारों के लिए छीना-झपटी कर रही थी। जहां भी खड़ी सपाट जगह मिली थी, तरह-तरह के पोस्टर चिपकाये गये थे और उनके सामने लोग झुण्ड के झुण्ड खड़े अपीलों और घोषणाओं को पढ़ने की कोशिश कर रहे थे। **त्से-ई-काह**,

* अमरीका के एक प्रसिद्ध नट। —सं०

किसानों की सोवियतों, "नरम" समाजवादी पार्टियों, सैनिक समितियों की अपीलें और घोषणायें, जिनमें मज़दूरों और सिपाहियों को धमकियां दी गयी थीं, गालियां दी गयी थीं और उनसे विनती भी की गयी थी कि वे चुपचाप अपने घरों में बैठे रहें और सरकार का समर्थन करें ...

एक बख़्तरबन्द मोटर-गाड़ी नेव्स्की मार्ग पर ऊपर और नीचे गश्त लगा रही थी, उसका सायरन बुरी तरह चीख रहा था। गली-सड़क के हर नुक्कड़ पर, हर खुली जगह में लोगों की भीड़ जमा थी – बहस करते हुए सिपाहियों और विद्यार्थियों की भीड़। अंधेरा घिर रहा था, सड़कों पर दूर दूर लगी हुई बत्तियां टिमटिमा रही थीं और भीड़ के झोंके पर झोंके आ रहे थे ... तूफ़ान फटने से पहले पेत्रोग्राद में हमेशा ऐसा ही होता है ...

शहर में दहशत थी। लोग खटका होते ही चौंक पड़ते। मगर बोल्शेविकों का अभी तक पता न था। सिपाही अपनी बारिकों में और मज़दूर कारख़ानों में ठहरे हुए थे ... हम कज़ान गिरजाघर के नज़दीक एक फ़िल्म देखने के लिये गये – हिंसा और षड्यन्त्रों से भरी एक उत्तेजनापूर्ण इतालवी फ़िल्म। नीचे सामने की ओर बैठे हुए कुछ सिपाही और मल्लाह पर्दे की ओर शिशुवत आश्चर्य के भाव से देख रहे थे – उनकी समझ में बिल्कुल नहीं आ रहा था कि इतनी अंधाधुंध दौड़-भाग, इतनी मारकाट की क्या ज़रूरत थी।

वहां से निकल कर मैं जल्दी जल्दी स्मोल्नी पहुंचा। सबसे ऊपर की मंज़िल पर दस नम्बर के कमरे में सैनिक क्रांतिकारी समिति की लगातार बैठक चल रही थी। लाज़िमीर नाम का एक अठारह साल का नौजवान, जिसके बालों का रंग पटसन जैसा था, सदारत कर रहा था। मेरे पास से गुज़रता हुआ, उसने मुझे देखा और रुक कर सलज्ज भाव से हाथ मिलाया।

"पीटर-पाल क़िला अभी-अभी हमारी ओर आ गया है," उसने खुशी से मुस्करा कर कहा। "क्षण भर पहले हमारे पास एक रेजीमेंट का संदेश पहुंचा, जिसे सरकार ने पेत्रोग्राद पहुंचने का हुक्म दिया था। सिपाहियों को कुछ शुबहा हुआ, इसलिये उन्होंने गातचिना के स्टेशन पर

रेल-गाड़ी रोक दी और हमारे पास एक प्रतिनिधिमण्डल भेजा। 'माजरा क्या है?' उन्होंने पूछा। 'आप क्या कहते हैं? हमने अभी अभी एक प्रस्ताव पास किया है — समस्त सत्ता सोवियतों के हाथ में'... सैनिक क्रांतिकारी समिति ने उत्तर में संदेश भेजा, 'भाइयो! हम क्रांति के नाम पर आपका अभिनन्दन करते हैं। जब तक आपको और हिदायतें नहीं दी जातीं, आप जहां हैं वहीं टिके रहें!'"

उसने बताया कि सारे टेलीफ़ोन काटे जा चुके थे, लेकिन फिर भी सैनिक टेलीग्राफ़ उपकरणों की बदौलत कारख़ानों और बारिकों से सम्पर्क बना हुआ था...

संदेशवाहक और कमिसार लगातार आ-जा रहे थे। दरवाज़े से बाहर एक दर्जन वालंटियर ख़बर मिलते ही उसे बात की बात में शहर के दूर से दूर इलाक़े में पहुंचाने के लिये तैयार खड़े थे। उनमें से जिप्सी की शक्ल के एक आदमी ने, जिसने लेफ़्टीनेंट की वर्दी पहन रखी थी, फ़ांसीसी ज़बान में कहा, "हम बिल्कुल तैयार हैं, बटन दबाते ही सारी कार्रवाई शुरू हो जायेगी..."

उसी वक़्त पोद्वोइस्की वहां से गुज़रे — दुबले-पतले, दढ़ियल सिविलियन, जिनके मस्तिष्क ने विद्रोह की रणनीति को आकल्पित किया था; अन्तोनोव, दाढ़ी बढ़ी हुई, कालर मैला, रात रात भर जगने से आंखें लाल, जैसे वह नशे में हों; नाटे और ठिंगने क्रिलेन्को, जिनके चौड़े-चपटे चेहरे पर हंसी हमेशा खेला करती और जो बड़े ज़ोर से हाथ हिला हिला कर बोलते; और लम्बे-तड़ंगे, दढ़ियल मल्लाह दिबेन्को, जिनका चेहरा शान्त और आवेशहीन था। ये ही थे इस घड़ी के और आने वाली घड़ियों के इतिहास-पुरुष।

नीचे कारखाना समितियों के दफ़्तर में सेरातोव बैठे हुक्मनामों पर दस्तख़त कर रहे थे — सरकारी शस्त्रागार को हुक्म दिया जाता है कि हर कारखाने को डेढ़ सौ बन्दूकें दी जायें... कारख़ानों के प्रतिनिधि — वे चालीस थे — दालान में खड़े इंतज़ार कर रहे थे।

हॉल में अन्दर मेरी मुठभेड़ कुछ छोटे-मोटे बोल्शेविक नेताओं से हो गयी। एक ने, जिसका चेहरा ज़र्द था — मुझे तमंचा दिखा कर कहा, "लड़ाई छिड़ गई है, हम चाहे कोई क़दम उठायें या न उठायें, दूसरा

पक्ष जानता है कि या तो वह हमारा सफ़ाया करे, नहीं तो हम उसका सफ़ाया कर देंगे ..."

पेत्रोग्राद सोवियत की बैठक रात और दिन बराबर चल रही थी। जब मैं बड़े हॉल में दाख़िल हुआ, त्रोत्स्की अपना भाषण समाप्त कर रहे थे :

"हमसे पूछा जाता है कि क्या हम **विस्तुप्लेनिये** का इरादा रखते हैं। मैं इस सवाल का साफ़ जवाब दे सकता हूं। पेत्रोग्राद सोवियत यह महसूस करती है कि आख़िरकार वह घड़ी आ पहुंची है, जब सत्ता ज़रूर सोवियतों के हाथ में आनी चाहिये। सत्ता का यह अन्तरण अखिल रूसी कांग्रेस द्वारा सम्पन्न किया जायेगा। सशस्त्र प्रदर्शन की ज़रूरत होगी या नहीं, यह ... यह उन लोगों पर निर्भर है, जो अखिल रूसी कांग्रेस के काम में रुकावट डालना चाहते हैं ...

"हम महसूस करते हैं कि हमारी सरकार, जो अस्थायी मंत्रिमण्डल के सदस्यों के हाथ में है, एक दयनीय और निःसहाय सरकार है, जो सिर्फ़ इस बात का इन्तज़ार कर रही है कि इतिहास उसे कूड़े-कचरे की तरह उठाकर एक ओर फेंक दे और उसकी जगह एक सच्ची लोकप्रिय सरकार की स्थापना करे। लेकिन हम आज भी, इस घड़ी भी टकराव से बचने की कोशिश कर रहे हैं। हम आशा करते हैं कि अखिल रूसी कांग्रेस अपने हाथों में वह सत्ता और अधिकार ग्रहण करेगी, जिसका आधार है जनता की संगठित स्वतन्त्रता। सरकार चन्द घड़ियों की मेहमान है, लेकिन अगर वह इन घड़ियों – चौबीस घंटों, अड़तालीस घंटों या बहत्तर घंटों – का इस्तेमाल कर हमारे ऊपर हमला करना चाहती है, तो हम जवाबी हमले करेंगे, हम एक घूंसे की जगह दो लगायेंगे, ईंट का जवाब पत्थर से देंगे !"

उन्होंने घोषणा की – और उनकी घोषणा का तालियों से स्वागत किया गया – कि वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारियों ने सैनिक क्रांतिकारी समिति में अपने प्रतिनिधियों को भेजना मंज़ूर कर लिया है ...

जब सुबह तीन बजे मैं स्मोल्नी से रवाना हो रहा था, मैंने देखा कि दरवाज़े के दोनों ओर दो मशीनगनें बैठायी गयी हैं और सिपाहियों के मज़बूत गश्ती दस्ते फाटकों पर और पास के मोड़ों और नुक्कड़ों पर

पहरा दे रहे हैं। बिल शातोव* सीढ़ियों पर दौड़ते हुए आये। "सुना?" उन्होंने चिल्ला कर कहा। "हम निकल पड़े हैं! केरेन्स्की ने **युंकरों** को हमारे अखबार 'सोल्दात' और 'राबोची पूत' को बन्द करने के लिये भेजा, लेकिन हमारे सिपाहियों ने जाकर सरकारी ताले और सील-मुहर तोड़ डाले और अब हम अपने दस्तों को पूंजीवादी अखबारों के दफ़्तरों पर छापा मारने और उनपर क़ब्ज़ा कर लेने के लिये भेज रहे हैं।" उन्होंने बड़े जोश में आकर मेरी पीठ पर एक धौल जमायी और अन्दर दौड़ गये।

छः तारीख़ की सुबह मुझे सेंसर से कुछ काम था, जिसका दफ़्तर [illegible] मन्त्रालय में था। मैंने वहां देखा कि सभी दीवारों पर, सभी जगह पोस्टर लगे हुए हैं, जिनमें जनता से घबराई हुई अपीलें की गयी थीं कि वह "शान्त" रहे। पोल्कोवनिकोव एक **प्रिकाज़** (आदेश) के बाद दूसरा **प्रिकाज़** जारी कर रहे थे। एक बानगी यह है:

मैं सभी सैनिक यूनिटों और दस्तों को हुक्म देता हूं कि वे जब तक सैनिक क्षेत्र के स्टाफ़ की दूसरी हिदायतें न मिलें, अपनी बारिकों के अन्दर रहें। जो अफ़सर अपने ऊपर के अफ़सरों के हुक्म के बग़ैर कोई कार्रवाई करेंगे, उनका बग़ावत के लिये कोर्टमार्शल किया जायेगा। मैं सिपाहियों को किन्हीं भी दूसरे संगठनों की हिदायतों को तामील करने से बिलकुल मना करता हूं...

सुबह अखबारों ने खबर दी कि सरकार ने 'नोवाया रूस', 'जिवोये स्लोवो', 'राबोची पूत' और 'सोल्दात' नामक अखबारों को बन्द कर दिया है और पेत्रोग्राद सोवियत के नेताओं की तथा सैनिक क्रांतिकारी समिति के सदस्यों की गिरफ़्तारी का वारंट जारी किया है...

जब मैं द्वोर्त्सोवाया चौक को पार कर रहा था, मैंने देखा कि **युंकर**

*__शातोव, व्लादीमिर सेर्गेयेविच__, जो अमरीका में "विश्व के औद्योगिक मज़दूरों" के एक संगठनकर्ता थे और वहां से मई, १९१७ में स्वदेश लौटे। १९१७ में वह पेत्रोग्राद की सैनिक क्रांतिकारी समिति के सदस्य तथा कारखाना समितियों की केंद्रीय परिषद् के अध्यक्ष मंडल के सदस्य थे। बाद में वह कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल हो गये। — सं०

तोपख़ाने की कई बैटरियां दुलकी चाल से टनटन करती हुई लाल मेहराबी दरवाज़े से निकल कर राजमहल के सामने पंक्तिबद्ध हो रही थीं। जनरल स्टाफ़ के विशाल लाल भवन में ग़ैरमामूली चहलपहल थी। कई बख़्तरबन्द मोटर-गाड़ियां दरवाज़े के सामने खड़ी थीं और अफ़सरों से लदी मोटरें आ-जा रही थीं... सेंसर महोदय इस तरह उत्तेजित थे, जैसे सरकस के अन्दर एक छोटा सा लड़का होता है। उन्होंने मुझे बताया कि केरेन्स्की अभी अभी जनतन्त्र की परिषद् में यह घोषणा करने के लिए गये हैं कि वह इस्तीफ़ा देने के लिये तैयार हैं। मैं भागा भागा मारिईन्स्की प्रासाद गया। जब मैं वहां पहुंचा, केरेन्स्की अपनी जोशीली और बहुत कुछ बेतुकी और बेतरतीब तक़रीर ख़त्म कर रहे थे, जिसमें उन्होंने अपना बचाव और अपने दुश्मनों की सख़्त लानत-मलामत करते हुए बहुत सी बातें कही थीं। उनके भाषण का एक टुकड़ा यह है:

"मैं यहां एक उद्धरण पढ़ूंगा, जो 'राबोची पूत' में प्रकाशित होनेवाली एक पूरी लेखमाला के लिये लाक्षणिक है, जिसका लेखक उल्यानोव-लेनिन नामक एक फ़रार राज्य-अपराधी है, जिसे हम पकड़ने की कोशिश कर रहे हैं... इस राज्य-अपराधी ने सर्वहारा को और पेत्रोग्राद की गैरिसन को न्योता दिया है कि वे १६–१८ जुलाई के अनुभव को दोहरायें। वह ज़ोर देकर कहता है कि अविलम्ब सशस्त्र विद्रोह करना ज़रूरी है... यही नहीं, दूसरे बोल्शेविक नेताओं ने भी, जो एक के बाद एक कितनी ही मीटिंगों में बोले हैं, फ़ौरन बग़ावत करने की अपील की है। इस सम्बन्ध में पेत्रोग्राद सोवियत के मौजूदा अध्यक्ष ब्रोन्स्तीन-त्रोत्स्की के क्रिया-कलाप पर विशेष ध्यान देना चाहिये...

"मुझे इस ओर आपका ध्यान दिलाना चाहिये... कि 'राबोची पूत' तथा 'सोल्दात' में प्रकाशित होनेवाली एक पूरी लेखमाला की ध्वनि और शैली हू-ब-हू वही है, जो 'नोवाया रूस' की है... हमारा साबिक़ा अमुक या अमुक राजनीतिक पार्टी के आन्दोलन से उतना नहीं पड़ा है, जितना इस बात से कि आबादी के एक हिस्से की राजनीतिक अनभिज्ञता तथा अपराधपूर्ण प्रवृत्तियों का नाजायज़ इस्तेमाल किया जा रहा है, हमारा साबिक़ा एक ऐसे संगठन से पड़ा है, जिसका उद्देश्य है

कि रूस में, चाहे जिस क़ीमत पर भी हो, तबाही और लूटमार का विप्लवकारी आन्दोलन भड़काया जाये, क्योंकि जन-साधारण की जैसी मानसिक दशा है उसको देखते हुए यह निश्चित है कि पेत्रोग्राद में कोई आन्दोलन छिड़ा नहीं कि यहां पर हौलनाक कत्ले-आम शुरू हो जायेगा, जिससे स्वतन्त्र रूस के नाम पर सदा के लिये बट्टा लग जायेगा।

" उल्यानोव-लेनिन ने खुद यह स्वीकार किया है कि रूस में सामाजिक-जनवादियों के घोर वामपंथियों के लिये परिस्थिति बहुत ही अनुकूल है।" (यहां केरेन्स्की ने लेनिन के लेख का निम्नलिखित उद्धरण पढ़ा):

जरा सोचिये!.. जर्मन साथियों के एक ही नेता हैं – लीब्कनेख़्त, उनके पास अखबार नहीं हैं, मीटिंग करने की आजादी नहीं है, सोवियतें नहीं हैं, उन्हें समाज के सभी वर्गों की कट्टर दुश्मनी झेलनी पड़ रही है - और फिर भी जर्मन साथी विद्रोह करने की कोशिश करते हैं, और हम, जिनके पास दर्जनों अखबार हैं, जिनके हाथ में अधिकांश सोवियतें हैं, जिन्हें मीटिंग करने की आजादी हासिल है, हम, जो समस्त संसार के सबसे सुगठित सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावादी हैं, क्या हम जर्मन क्रान्तिकारियों और विद्रोही संगठनों का समर्थन करने से इनकार कर सकते हैं?

केरेन्स्की ने आगे कहा:

"इस प्रकार विद्रोह के संगठनकर्ता यह मानते हैं कि इस समय रूस में किसी भी राजनीतिक पार्टी के स्वतन्त्र क्रिया-कलाप के लिये बेहतरीन हालात मौजूद हैं, जबकि रूस का प्रशासन एक ऐसी अस्थायी सरकार कर रही है, जिसका अध्यक्ष इस पार्टी की दृष्टि में 'बलाद्ग्राही' है, एक ऐसा आदमी है, जिसने अपने आपको पूंजीपति वर्ग के हाथ बेच दिया है, वह है मन्त्रि-सभापति केरेन्स्की

" विद्रोह के संगठनकर्ता जर्मन सर्वहारा की नहीं, जर्मन शासक वर्गों की मदद करते हैं और वे विल्हेल्म तथा उसके मित्रों के फ़ौलादी

घूंसे से चकनाचूर हो जाने के लिये रूसी मोर्चे को अरक्षित छोड़ देते हैं... अस्थायी सरकार को इस बात से मतलब नहीं है कि इन लोगों के उद्देश्य क्या हैं, इस बात से मतलब नहीं है कि वे ऐसा जानबूझकर करते हैं या अनजाने करते हैं; बहरसूरत मैं इस मंच से, अपनी ज़िम्मेदारी को पूरी तरह समझता हुआ एक रूसी राजनीतिक पार्टी की ऐसी कार्रवाइयों को रूस के प्रति विश्वासघात का नाम देता हूं!

"...मैं न्याय के दृष्टिकोण को ग्रहण करता हूं और मैं प्रस्ताव करता हूं कि फ़ौरन तहक़ीक़ात शुरू की जाये और ज़रूरी गिरफ़्तारियां की जायें।" (वामपंथी बेंचों से शोर।) "मेरी बात सुनिये!" उन्होंने कड़क कर कहा। "एक ऐसी घड़ी में, जब जानबूझकर या अनजाने की गई ग़द्दारी की वजह से राज्य ख़तरे में है, अस्थायी सरकार और दूसरों के साथ मैं ख़ुद रूस की ज़िन्दगी, इज़्ज़त और आज़ादी से ग़द्दारी करने के बजाय मारा जाना ज़्यादा पसन्द करूंगा..."

इसी समय केरेन्स्की के हाथ में एक पुर्ज़ा दिया गया।

"मुझे अभी वह घोषणा मिली है, जिसे वे रेजीमेंटों में बांट रहे हैं। यह है उसका मज़मून, सुनिये।" वह पढ़ते हैं:

"'मज़दूरों तथा सैनिकों के प्रतिनिधियों की पेत्रोग्राद सोवियत ख़तरे में है। हम रेजीमेंटों को आदेश देते हैं कि वे फ़ौरन युद्ध की स्थिति के अनुसार तैयारियां करें और नये आदेशों की प्रतीक्षा करें। इसमें अगर कोई देर होती है, या अगर इस आदेश का पालन नहीं किया जाता, तो इसे क्रांति के प्रति विश्वासघात समझा जायेगा। क्रान्तिकारी सैनिक समिति। अध्यक्ष के लिये, पोद्वोइस्की। मन्त्री, अन्तोनोव।'

"वास्तव में यह वर्तमान व्यवस्था के विरुद्ध भीड़ को भड़काने, संविधान सभा को छिन्न-भिन्न करने और विल्हेल्म के फ़ौलादी घूंसे—उसकी सेना की रेजीमेंटों के सामने मोर्चे को खुला छोड़ देने की कोशिश है...

"मैंने 'भीड़' शब्द इरादतन कहा है, क्योंकि चेतन जनवादी तत्व तथा उनकी **त्से-ई-काह**, सभी सैनिक संगठन, स्वतन्त्र रूस की दृष्टि में जो कुछ भी गौरवपूर्ण है वह सब—महान् रूसी जनवाद की सुबुद्धि, आत्मसम्मान तथा अन्तर्विवेक—एक ओर हैं और ये सब बातें दूसरी ओर...

"मैं यहां कोई विनती करने नहीं आया हूं, बल्कि अपना यह दृढ़ विश्वास प्रगट करने आया हूं कि अस्थायी सरकार को, जो इस घड़ी हमारी सद्यः प्राप्त स्वतन्त्रता की रक्षा कर रही है, नये रूसी राज्य को, जिसका भविष्य उज्जवल है, सभी का समर्थन प्राप्त होगा, सिवाय उन लोगों के, जिन्होंने कभी भी सच्चाई से आंखें चार करने का साहस नहीं किया है...

"अस्थायी सरकार ने राज्य के प्रत्येक नागरिक को अपने राजनीतिक अधिकारों का उपयोग करने की स्वतन्त्रता का कभी उल्लंघन नहीं किया है... परन्तु अब अस्थायी सरकार... घोषणा करती है: इस घड़ी रूसी राज्य के जिन अंशकों ने, जिन दलों और पार्टियों ने रूसी जनता की स्वतन्त्र इच्छा पर हाथ उठाने की जुर्रत की है, और साथ ही जो जर्मनी के लिये मोर्चे को खुला छोड़ देने की धमकी दे रहे हैं, उन्हें दृढ़ता से समाप्त करना होगा!..

"पेत्रोग्राद की जनता यह समझ ले कि उसके सामने एक ऐसी सत्ता है, जो विचलित होने वाली नहीं है और शायद आख़िरी वक़्त उन लोगों के हृदय में सुबुद्धि, अन्तर्विवेक और आत्मसम्मान की विजय होगी, जो उसे बिल्कुल ही खो नहीं बैठे हैं..."

जितनी देर यह भाषण चलता रहा, हॉल में इस क़दर शोर होता रहा कि लगता था कान के परदे फट जायेंगे। जब मन्त्रि-सभापति भाषण समाप्त कर मंच से उतरे – उनका चेहरा ज़र्द और बदन पसीने से तर हो रहा था – और अपने अफ़सरों के साथ बाहर निकल गये, वामपंथियों और मध्यमार्गियों के बीच से एक के बाद एक वक्ता ने उठकर दक्षिणपंथियों को आड़े हाथों लिया। उनके भाषण क्या थे एक प्रचण्ड गर्जन था। यहां तक कि समाजवादी-क्रांतिकारियों ने भी गोत्स की आवाज़ में कहा:

"बोल्शेविकों की जनता के असंतोष का नाजायज़ इस्तेमाल करने की नीति कोरा अवसरवाद है, एक जुर्म है। परन्तु जनता की कितनी ही मांगें हैं, जिन्हें अब तक पूरा नहीं किया गया है... शान्ति, भूमि और सेना के जनवादीकरण के प्रश्नों का निरूपण इस प्रकार किया जाना चाहिए कि किसी भी सिपाही, किसान या मज़दूर को इस बात में तनिक

भी सन्देह न रहे कि हमारी सरकार दृढ़ तथा अविचल भाव से इन प्रश्नों को हल करने की कोशिश कर रही है ...

"हम और मेन्शेविक लोग मन्त्रिमण्डल में संकट पैदा करना नहीं चाहते, और हम अपनी पूरी ताक़त से अपने ख़ून का आख़िरी क़तरा देकर भी अस्थायी सरकार को बचाने के लिये तैयार हैं – बशर्ते कि इन सभी उत्कट प्रश्नों के बारे में अस्थायी सरकार स्पष्ट और दो टूक शब्दों में वह बात कहे, जिसका लोग इतनी बेसब्री से इन्तज़ार कर रहे हैं ..."

और तब मार्तोव ग़ुस्से में:

"मन्त्रि-सभापति के ये शब्द, जिन्होंने एक ऐसे वक़्त 'भीड़' की बात की है, जब सवाल सर्वहारा तथा सेना के महत्त्वपूर्ण भागों के आन्दोलन का है – चाहे उन्हें ग़लत दिशा में ले जाया जा रहा है – ऐसे वक़्त मन्त्रि-सभापति के ये शब्द और कुछ नहीं गृहयुद्ध के लिये एक उकसावा हैं।"

वामपंथियों ने जो प्रस्ताव पेश किया, सभा ने उसे स्वीकृत किया। वस्तुतः इसका अर्थ था मन्त्रिमण्डल में अविश्वास का वोट। प्रस्ताव निम्नलिखित है:

१. पिछले कुछ दिनों से जिस सशस्त्र प्रदर्शन की तैयारियां की जा रही हैं, उसका उद्देश्य है सरकार का तख़्ता उलट देना, उससे गृहयुद्ध छिड़ जाने का ख़तरा पैदा हो गया है और दंगा-फ़साद तथा प्रतिक्रांति के लिये और यमदूत सभाइयों जैसी प्रतिक्रांतिकारी शक्तियों के एकजुट होने के लिये अनुकूल परिस्थितियां उत्पन्न हो गयी हैं, जिसका अनिवार्य परिणाम यह होगा कि संविधान सभा को बुलाना असम्भव हो जायेगा, सैनिक पराजय होगी, क्रांति का नाश होगा, देश का आर्थिक जीवन ठप हो जायेगा और रूस मटियामेट हो जायेगा;

२. ज़रूरी कार्रवाइयों में देर होने के कारण और उन वस्तुगत परिस्थितियों के कारण भी इस आन्दोलन के लिये अनुकूल भूमि तैयार हुई है, जो युद्ध तथा सामान्य अव्यवस्था के फलस्वरूप उत्पन्न हुई हैं। इसलिए सबसे ज़्यादा ज़रूरी काम यह है कि भूमि को तत्काल किसानों की भूमि समितियों के हाथ में सौंपने के लिए एक आज्ञप्ति जारी की जाये और मित्र-राष्ट्रों से शान्ति की अपनी शर्तों की घोषणा करने और

शान्ति-वार्ता आरम्भ करने का प्रस्ताव करके अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में एक ज़ोरदार कार्रवाई करने की नीति अपनाई जाये ;

३. अराजकतावादी प्रदर्शनों और फ़सादी आन्दोलनों से पार पाने के लिए यह लाज़िमी है कि इन आन्दोलनों को कुचलने के लिए फ़ौरन कार्रवाई की जाये और इस उद्देश्य से पेत्रोग्राद में नगरपालिका तथा क्रान्तिकारी जनवादी निकायों के प्रतिनिधियों को लेकर एक सार्वजनिक सुरक्षा समिति स्थापित की जाये, जो अस्थायी सरकार से सम्पर्क रखती हुई कार्य करेगी ...

यह एक दिलचस्प बात है कि सभी मेन्शेविक और समाजवादी-क्रान्तिकारी इस प्रस्ताव के समर्थन में एकजुट थे ... परन्तु जब केरेन्स्की ने उसे पढ़ा, उन्होंने उसका स्पष्टीकरण करने के लिए अव्क्सेन्त्येव को शिशिर प्रासाद में बुला भेजा। उन्होंने अव्क्सेन्त्येव से अनुरोध किया कि अगर इस प्रस्ताव द्वारा अस्थायी सरकार में अविश्वास प्रगट किया गया है, तो वह एक नया मन्त्रिमण्डल बनायें। "समझौतापरस्तों" के नेता दान, गोत्स और अव्क्सेन्त्येव ने अपना आख़िरी समझौता सम्पन्न किया ... उन्होंने केरेन्स्की से सफ़ाई देते हुए कहा कि प्रस्ताव का अर्थ सरकार की आलोचना करना नहीं है !

मोर्स्काया मार्ग तथा नेव्स्की मार्ग के नुक्कड़ पर संगीनधारी सिपाहियों के जत्थे सभी प्राइवेट मोटर-गाड़ियों को रोक रहे थे, उनमें सवार लोगों को उतार कर गाड़ियों को शिशिर प्रासाद की ओर भेज रहे थे। उन्हें देखने के लिये ख़ासा मजमा इकट्ठा हो गया था। यह किसी को नहीं मालूम था कि ये सिपाही सरकार के हैं या सैनिक क्रान्तिकारी समिति के। कज़ान गिरजाघर के सामने भी यही बात हो रही थी और गाड़ियों को नेव्स्की मार्ग पर पीछे लौटाया जा रहा था। बन्दूक़ें लिये और उत्तेजित भाव से ज़ोर ज़ोर से हंसते हुए पांच-छः मल्लाह वहां पहुंच गये और दो सिपाहियों से बातचीत करने लगे। उनकी टोपियों की पट्टियों पर बाल्टिक बेड़े के प्रमुख बोल्शेविक क्रूज़र, "अव्रोरा" और "ज़ार्या स्वोबोदी" के नाम अंकित थे। एक मल्लाह ने कहा : "क्रोंश्ताद्त के लोग आ रहे हैं ! " यह कहना ऐसा ही था, जैसे १७९२ में पेरिस

की सड़कों पर किमी का यह कहना: "मार्सेल्स के लोग आ रहे हैं!" क्योंकि क्रोंश्तादृत में २५ हज़ार मल्लाह थे, सबके सब पक्के बोल्शेविक और मौत से बेख़ौफ़...

'राबोची इ मोल्दात' अभी अभी निकला था। उसका मुखपृष्ठ पूरा का पूरा एक घोषणा से भरा था, जिसे बड़ी बड़ी सुर्खियों के साथ प्रकाशित किया गया था:

सैनिको! मज़दूरो! नागरिको!

पिछली रात जनता के दुश्मनों ने हमला शुरू कर दिया। सैनिक स्टाफ़ के कोर्नीलोवपंथी शहर के बाहरी हिस्सों से **युंकरों** और वालंटियर-टुकड़ियों को ले आने की कोशिश कर रहे हैं। ओरानियेनबाउम के **युंकरों** ने तथा त्सारस्कोये सेलो के वालांटियरों ने बाहर आने से इनकार कर दिया है। पेत्रोग्राद सोवियत पर प्रबल विश्वासघाती आक्रमण करने का विचार किया जा रहा है... प्रतिक्रान्तिकारियों का अभियान सोवियतों की अखिल रूसी कांग्रेस के विरुद्ध एक ऐसे समय निर्देशित है, जब उसका अधिवेशन होने जा रहा है। वह संविधान सभा के विरुद्ध, जनता के विरुद्ध निर्देशित है। पेत्रोग्राद सोवियत क्रान्ति की हिफ़ाज़त कर रही है। सैनिक क्रान्तिकारी समिति के निर्देश में षड्यन्त्रकारियों के आक्रमण को छिन्न-भिन्न करने की तैयारी हो रही है। पेत्रोग्राद की समूची गैरिसन और सर्वहारा वर्ग जनता के दुश्मनों पर क़रारी चोट करने के लिये तैयार हैं।

सैनिक क्रान्तिकारी समिति आदेश देती है:

१. सोवियत कमिसारों के साथ सभी रेजीमेंटों, डिवीज़नों और जंगी जहाज़ों की समितियों तथा सभी क्रान्तिकारी संगठनों की बैठकें लगातार चलती रहें, और वे षड्यन्त्रकारियों की योजनाओं के बारे में समस्त सूचनाओं को एकत्र करें।

२. समिति की अनुमति के बिना एक भी सिपाही अपनी डिवीज़न को न छोड़े।

३. हर सैनिक यूनिट से दो तथा हर वार्ड-सोवियत से पांच प्रतिनिधि अविलम्ब स्मोल्नी भेजे जायें।

८. पेत्रोग्राद सोवियत के सभी सदस्यों तथा अखिल रूसी कांग्रेस के सभी प्रतिनिधियों को एक असाधारण सभा के लिये फ़ौरन स्मोल्नी आने का बुलावा भेजा जाता है।

प्रतिक्रान्ति ने अपना ज़हरीला फन उठाया है।

सिपाहियों और मज़दूरों की सभी जीतों और आशाओं के लिये भारी ख़तरा पैदा हो गया है।

परन्तु क्रान्ति की शक्तियां शत्रु की शक्तियों से कहीं ज़्यादा हैं।

जनता का ध्येय शक्तिशाली हाथों में है। षड्यन्त्रकारियों को कुचल दिया जायेगा।

दुविधा या संशय को फटकने मत दीजिये! अविचल दृढ़ता, अनुशासन तथा संकल्प से काम लीजिये!

इंकलाब ज़िन्दाबाद!

सैनिक क्रान्तिकारी समिति

स्मोल्नी में, जो तूफ़ानी घटनाओं का केन्द्र बना हुआ था, पेत्रोग्राद सोवियत की लगातार बैठक हो रही थी। सोवियत के सदस्य नींद से बेदम हो वहीं फ़र्श पर लुढ़क जाते, और फिर उठ कर बहस में हिस्सा लेने लगते। त्रोत्स्की, कामेनेव, वोलोदार्स्की एक दिन के अन्दर छः घंटे, आठ घंटे, बारह घंटे बोले होंगे ...

मैं पहली मंज़िल पर १८ नम्बर के कमरे में गया, जहां बोल्शेविक प्रतिनिधियों की एक अन्तरंग सभा हो रही थी। एक कड़कती हुई आवाज़ लगातार गूंज रही थी, लेकिन बोलने वाला भीड़ की वजह से दिखाई नहीं दे रहा था। "समझौतापरस्तों का कहना है कि हम जनता से कट गये हैं। उनकी बात पर ध्यान न दीजिये। वे अनिवार्यतः हमारे साथ खिंच आयेंगे, नहीं तो अपने अनुयायियों से हाथ धोयेंगे ..."

कहते कहते उसने हाथ ऊंचा कर एक पुर्ज़ा दिखाया। "हम उन्हें खींच रहे हैं! यह देखिये, मेन्शेविकों और समाजवादी-क्रान्तिकारियों का एक सन्देश अभी अभी पहुंचा है! वे कहते हैं कि वे हमारी कार्रवाई की निन्दा करते हैं, परन्तु यदि सरकार हमारे ऊपर हमला करती है, तो वे

सर्वहारा के ध्येय का विरोध नहीं करेंगे!" लोग मारे ख़ुशी के चिल्लाने और नारे लगाने लगे...

रात होते ही स्मोल्नी भवन का बड़ा हॉल सिपाहियों और मज़दूरों से भर उठा – एक विशाल धूसर जनपुंज, जिसकी आवाज़ धुएं के नीले कुहासे में गहरी गूंज रही थी। पुरानी **त्से-ई-काह** ने अन्ततोगत्वा उस नयी कांग्रेस के प्रतिनिधियों का स्वागत करने का निश्चय किया था, जिसके होने का मतलब था उसका अपना सर्वनाश और संभवतः जिस क्रान्तिकारी व्यवस्था का उन्होंने निर्माण किया था उसका भी सर्वनाश। लेकिन अभी जो मीटिंग शुरू हो रही थी, उसमें **त्से-ई-काह** के सदस्य ही वोट दे सकते थे...

जब गोत्स ने सभापति का आसन ग्रहण किया और दान बोलने के लिये उठे, आधी रात गुज़र चुकी थी। हॉल में ख़ामोशी थी, मगर ऐसी तनाववाली ख़ामोशी, जिससे डर ही लगता है।

"ये घड़ियां, जिनमें हम रह रहे हैं, बेहद अलमनाक हैं," दान ने कहा, "दुश्मन पेत्रोग्राद के दरवाज़े पर खड़ा है, जनवादी शक्तियां उसका मुक़ाबला करने के लिये संगठित होने की कोशिश कर रही हैं, और फिर भी हम राजधानी की सड़कों पर ख़ून-ख़राबा होने का इन्तज़ार कर रहे हैं, अकाल हमारी यकरंगी सरकार को ही नहीं, स्वयं क्रान्ति को अपना ग्रास बनाना चाहता है...

"जन-साधारण बेहद ऊबे-खीझे और थके-मांदे हैं। क्रान्ति में उनकी कोई दिलचस्पी नहीं है। अगर बोल्शेविकों ने कोई हंगामा शुरू किया, तो वे क्रान्ति की मौत बुलायेंगे..." (**आवाज़ें** – "यह सरासर झूठ है!")

"बोल्शेविकों के साथ प्रतिक्रान्तिकारी लोग भी दंगा-फ़साद और मारकाट शुरू करने के इन्तज़ार में हैं अगर कोई भी **विस्तुप्लेनिये** होती है, तो फिर संविधान सभा होने वाली नहीं है..." (**आवाज़ें** – "झूठ! शर्म!")

"युद्ध-क्षेत्र में होती हुई भी पेत्रोग्राद की गैरिसन सैनिक स्टाफ़ के हुक्म की तामील न करे – यह बात हरगिज़ मानी नहीं जा सकती...

आप के लिये ज़रूरी है कि आप स्टाफ़ के और आपके द्वारा निर्वाचित **त्से-ई-काह** के आदेशों का पालन करें। समस्त सत्ता सोवियतों के हाथ में– इस नारे का अर्थ है सर्वनाश! चोर और लुटेरे उस घड़ी का इन्तज़ार कर रहे हैं, जब वे लूटमार और आगज़नी शुरू कर सकते हैं... जब आप को इस क़िस्म के नारे दिये जाते हैं, जैसे 'मकानों के अन्दर घुस जाओ, पूंजीपतियों से उनके जूते व कपड़े छीन लो...' " (**शोर, आवाज़ें** – "झूठ है! ऐसा कोई नारा नहीं दिया गया है!") "हो सकता है शुरूआत और तरीक़े से हो, लेकिन ख़ात्मा इसी ढंग से होगा!

"**त्से-ई-काह** को, जो भी कार्रवाई वह करना चाहे, करने का पूरा अधिकार है और उसकी आज्ञा का पालन होना ही चाहिये... हम संगीनों से नहीं डरते... **त्से-ई-काह** अपने शरीर की आड़ देकर क्रांति की रक्षा करेगी..." (**आवाज़ें** – "शरीर कहां है, वह तो बहुत पहले मर चुका!")

शोर-शराबा उसी तरह जारी था, और उसमें दान की चीखती हुई आवाज़ मुश्किल से सुनाई दे सकती थी। वह मेज़ पर ज़ोर ज़ोर से हाथ पटक कर कह रहे थे, "जो लोगों को इसके लिये उकसा रहे हैं, वे एक बहुत बड़ा जुर्म कर रहे हैं!"

एक आवाज़ – "आपने बहुत पहले जुर्म किया, जब आपने सत्ता पर अधिकार किया और फिर उसे पूंजीपति वर्ग के हवाले कर दिया!"

सभापति गोत्स ने घंटी बजाते हुए कहा: "चुप रहिये, वरना मैं आपको बाहर निकलवा दूंगा!"

एक आवाज़ – "ज़रा कोशिश करके देखिये तो सही!" तालियां और सीटियां।

"अब शान्ति सम्बन्धी अपनी नीति के बारे में दो शब्द।" (**हंसी**) "दुर्भाग्य की बात है कि रूस अब और लड़ाई जारी रखने का समर्थन नहीं कर सकता। शान्ति स्थापित होने जा रही है, परन्तु वह स्थायी शान्ति न होगी, जनवादी शान्ति न होगी... आज जनतन्त्र की परिषद् में हमने ख़ून-ख़राबे से बचने की गरज़ से एक प्रस्ताव पास किया, जिसके द्वारा हमने मांग की कि भूमि भूमि समितियों के हवाले की जाये और

शान्ति-वार्ता तुरत शुरू की जाये ..." (**हंसी, आवाज़ें** – "अब ऐसे प्रस्तावों का वक़्त बीत चुका है!")

और तब बोल्शेविकों की ओर से त्रोत्स्की बोलने के लिये खड़े हुए – उनका प्रचण्ड जयघोष से स्वागत किया गया। लोग खड़े हो गये और तालियां पीटने लगे। उनके दुबले, तीखे चेहरे पर द्वेषपूर्ण व्यंग्य का ऐसा भाव था कि इस घड़ी उनकी मुखाकृति सचमुच दानवीय प्रतीत हो रही थी।

"दान की कार्यनीति से सिद्ध हो गया है कि विशाल जन-समुदाय – मूढ़ और जड़ जन-समुदाय – बिल्कुल उन्हीं के साथ हैं!" (**हंसी के ठहाके**) उन्होंने सभापति की ओर बड़े नाटकीय ढंग से मुड़कर कहा, "जब हमने किसानों को भूमि देने की बात की, आपने उसकी मुख़ालफ़त की। हमने किसानों से कहा, 'अगर वे आपको भूमि नहीं देते, तो आप ख़ुद उसपर क़ब्ज़ा कर लीजिये!' और किसानों ने हमारी सलाह को मान लिया। हमने छः महीने पहले जो कहा आप आज उसका समर्थन करने चले हैं ...

"मैं नहीं समझता कि केरेन्स्की ने अपने आदर्शों से प्रेरित होकर सेना में मृत्यु-दण्ड स्थगित करने का आदेश दिया है। मेरा ख़्याल है कि पेत्रोग्राद की गैरिसन ने, जिसने उनका हुक्म मानने से इनकार किया, केरेन्स्की को क़ायल किया है।

"आज दान के ऊपर यह आरोप लगाया गया है कि उन्होंने जनतन्त्र की परिषद् में एक ऐसा भाषण किया, जिससे यह सिद्ध हो जाता है कि वह प्रच्छन्न बोल्शेविक हैं ... वह वक़्त भी आ सकता है, जब दान कहेंगे कि सोलह और अठारह जुलाई के विद्रोह में क्रांति के बेहतरीन सपूतों ने भाग लिया ... जनतन्त्र की परिषद् में दान के आज के प्रस्ताव में सेना में अनुशासन लागू करने का कोई ज़िक्र नहीं था, हालांकि उनकी पार्टी के प्रचार में इस बात का आग्रह किया जा रहा है ...

"नहीं। पिछले सात महीनों के इतिहास ने यह दिखा दिया है कि आम जनता ने मेन्शेविकों का साथ छोड़ दिया है। मेन्शेविकों और समाजवादी-क्रांतिकारियों ने कैडेटों को परास्त किया, लेकिन जब उनके हाथ में सत्ता आई, उन्होंने उसे उन्हीं कैडेटों के हवाले कर दिया ...

"दान आपसे कहते हैं कि आपको विद्रोह करने का अधिकार नहीं

है। विद्रोह सभी क्रांतिकारियों का अधिकार है! जब पददलित जन-साधारण विद्रोह करते हैं, यह उनका अधिकार होता है ..."

और तब लम्बे मुंहवाले मुंहफट लीबेर बोलने के लिये खड़े हुए। लोगों ने उनका हंसी और 'हाय हाय' से स्वागत किया। लीबेर ने कहा:

"एंगेल्स और मार्क्स ने कहा है कि सर्वहारा वर्ग को सत्ता हाथ में लेने का तब तक कोई अधिकार नहीं है, जब तक कि वह उसके लिये तैयार न हो गया हो। इस जैसी पूंजीवादी क्रांति में ... जन-साधारण का सत्ता पर क़ब्ज़ा करने का अर्थ है क्रांति का दु:खद अन्त ... एक सामाजिक-जनवादी सिद्धान्तकार के नाते त्रोत्स्की स्वयं उस बात में विश्वास नहीं करते, जिसका आज वह यहां पर समर्थन कर रहे हैं ..." (**आवाज़ें** – "बस करो! लीबेर मुर्दाबाद!")

फिर मार्तोव का भाषण, जिसमें बराबर ख़लल डाला गया:

"अन्तर्राष्ट्रीयतावादी लोग जनवादी तत्वों के हाथ में सत्ता के अन्तरण के विरोधी नहीं हैं, परन्तु वे बोल्शेविकों के तरीक़ों का अनुमोदन नहीं करते। अभी वह घड़ी नहीं आई है कि सत्ता पर क़ब्ज़ा किया जाये ..."

दान फिर बोलने के लिये खड़े हुए और उन्होंने सैनिक क्रांतिकारी समिति द्वारा 'इज़्वेस्तिया' अख़बार के दफ़्तर पर क़ब्ज़ा करने और उसका सेंसर करने के लिये एक कमिसार के भेजे जाने के प्रति घोर प्रतिवाद प्रगट किया। दान की इस बात पर बेतरह शोर होने लगा। मार्तोव ने बोलने की कोशिश की, लेकिन उनकी बात सुनी नहीं जा सकी। पूरे हॉल में सेना तथा बाल्टिक बेड़े के प्रतिनिधि उठ खड़े हुए और उन्होंने चिल्ला चिल्ला कर कहना शुरू किया कि सोवियत ही **उनकी** सरकार है।

अन्धाधुन्ध गड़बड़ी के बीच एरलिख़* ने एक प्रस्ताव पेश किया, जिसमें मज़दूरों और सिपाहियों से अपील की गयी थी कि वे शान्त रहें और प्रदर्शन के भड़कावे में न आयें, अविलम्ब एक सार्वजनिक सुरक्षा समिति की स्थापना आवश्यक मानी गयी थी और अस्थायी सरकार से मांग की गयी थी कि वह भूमि को किसानों के हाथ में अन्तरित करने

---

* **एरलिख** — एक मेन्शेविक नेता। — सं०

के लिये तुरन्त आज्ञप्तियां जारी करे और शान्ति-वार्ता शुरू करे...

इस पर वोलोदास्र्की उछल पड़े और उन्होंने कड़क कर कहा कि एक ऐसे वक़्त, जब कांग्रेस होने ही वाली है, **त्से-ई-काह** को कोई अधिकार नहीं है कि वह कांग्रेस के कर्तव्यों को अपने ऊपर ओढ़े। उन्होंने कहा कि **त्से-ई-काह** वस्तुतः मर चुकी है और यह प्रस्ताव उसकी क्षीण होती हुई शक्ति को थूनी लगा कर किसी तरह बचा लेने की एक चाल भर है...

"जहां तक हम बोल्शेविकों का प्रश्न है, हम इस प्रस्ताव पर वोट नहीं देंगे!" इस पर सारे बोल्शेविक हॉल से बाहर चले गये और प्रस्ताव पास कर दिया गया...

सुबह चार बजे के क़रीब बाहरी हॉल में मेरी मुलाक़ात ज़ोरिन से हुई, जिनके कंधे से एक राइफ़ल लटक रही थी।

"हम कार्रवाई शुरू कर रहे हैं!"[7] उन्होंने शान्त भाव से, परन्तु साथ ही बड़े संतोष से कहा, "हमने उप-न्यायमंत्री तथा धर्म-मन्त्री को हिरासत में ले लिया है और अब वे नीचे क़ैद की कोठरी में हैं। एक रेजीमेंट टेलीफ़ोन एक्सचेंज पर क़ब्ज़ा करने के लिये बढ़ रही है, दूसरी तारघर पर और तीसरी राजकीय बैंक पर। लाल गार्ड के दल सड़कों पर निकल आये हैं..."

स्मोल्नी की सीढ़ियों पर, अंधेरे और सर्दी में हमने पहली बार लाल गार्डों को देखा – मज़दूरों के कपड़े पहने और संगीनदार बन्दूक़ें लिये नौजवान, जो एक झुंड में खड़े थे और घबराये से एक दूसरे से बात कर रहे थे।

दूर पश्चिम में बेहिस छतों के ऊपर से छिटपुट गोली छूटने की आवाज़ें आ रही थीं। वहां नेवा के तट पर **युंकर** लोग पुल उठाने की कोशिश कर रहे थे, ताकि विबोर्ग बस्ती के मिल-मज़दूर और सिपाही बीच शहर में आकर सोवियत शक्तियों के साथ मिलने न पायें, लेकिन क्रोंश्तादत के मल्लाह उन्हें फिर गिरा रहे थे...

हमारे पीछे विशाल स्मोल्नी भवन रोशनी से जगमग मधुमक्खियों के एक विराट छत्ते की तरह गुंजार कर रहा था...

चौथा अध्याय

अस्थायी सरकार का पतन

बुधवार, ७ नवम्बर, मैं सोकर बहुत देर से उठा। जब मैं नेव्स्की मार्ग पहुंचा, पीटर-पाल क़िले में दोपहर की तोप दागी गयी। उस दिन ठंड तो थी ही, साथ में सीलन भी थी। राजकीय बैंक के सामने बन्द दरवाज़ों के बाहर कुछ सिपाही हाथ में संगीनदार बन्दूकें लिये खड़े थे।

"आप लोग किस तरफ़ हैं?" मैंने पूछा, "सरकार की तरफ़?"

"अब कोई सरकार-वरकार नहीं है," एक सिपाही ने हंस कर कहा। "**स्लावा बोगु!** ख़ुदा की शान है!" मैं उससे और कोई बात नहीं निकाल सका...

नेव्स्की मार्ग से ट्राम-गाड़ियां आ-जा रही थीं और उनके बाहर पैर टिकाने की कोई ऐसी जगह न थी, जहां मर्द, औरत और छोटे बच्चे तक लटके हुए नहीं चल रहे थे। दूकानें खुली थीं और ऐसा लगता था कि सड़कों पर लोगों में सनसनी कल से भी कम थी। रात में दीवालों पर विद्रोह के खिलाफ़ नयी अपीलों की एक पूरी "फ़सल" तैयार हो चुकी थी—किसानों के नाम, मोर्चे पर सिपाहियों के नाम और पेत्रोग्राद के मजदूरों के नाम अपीलें। एक बानगी यह है:

पेत्रोग्राद की नगर दूमा की ओर से

नगर दूमा नागरिकों को सूचना देती है कि छः नवम्बर को एक असाधारण बैठक में दूमा ने केन्द्रीय तथा हल्कों की दूमाओं के सदस्यों को

तथा निम्नलिखित क्रांतिकारी जनवादी संगठनों के प्रतिनिधियों को लेकर एक सार्वजनिक सुरक्षा समिति गठित की: **त्से-ई-काह**, किसानों के प्रतिनिधियों की अखिल रूसी कार्यकारिणी समिति, सैनिक संगठन, **त्सेन्त्रोफ़्लोत**, मज़दूरों तथा सैनिकों के प्रतिनिधियों की पेत्रोग्राद सोवियत (!), ट्रेड-यूनियन परिषद् तथा अन्य संगठन।

सार्वजनिक सुरक्षा समिति के सदस्य नगर दूमा के भवन में ड्यूटी पर तैनात रहेंगे। उनके टेलीफ़ोन नम्बर ये हैं – १५-४०, २२३-७७, १३८-३६।

७ नवम्बर, १९१७

यद्यपि उस समय मैंने यह बात नहीं समझी, यह सूचना वस्तुतः बोल्शेविकों के ख़िलाफ़ दूमा की युद्ध-घोषणा थी।

मैंने 'राबोची पूत' की एक प्रति ख़रीदी, जिसके अलावा कोई दूसरा अख़बार बिकता हुआ दिखाई नहीं दे रहा था, मगर थोड़ी ही देर बाद मैंने एक सिपाही को ५० कोपेक देकर 'देन' की एक पढ़ी हुई प्रति ख़रीदी। 'रूस्काया वोल्या' के दफ़्तर पर क़ब्ज़ा करके वहां बड़े आकार के क़ाग़ज़ पर छापे गये इस बोल्शेविक अख़बार में बड़ी बड़ी सुर्खियां दी गयी थीं: "**समस्त सत्ता मज़दूरों, सैनिकों तथा किसानों की सोवियतों के हाथ में! शान्ति! रोटी! ज़मीन!**" सम्पादकीय लेख ज़िनोव्येव* के नाम से निकला था, जो फ़रारी की हालत में लेनिन के साथ थे। यह लेख इस प्रकार शुरू हुआ था:

हर सिपाही, हर मज़दूर, हर सच्चा समाजवादी, हर ईमानदार जनवादी इस बात को समझता है कि मौजूदा परिस्थिति में केवल दो विकल्प हैं।

या तो राज्य-सत्ता पूंजीपति-ज़मींदार गिरोह के हाथ में बनी रहे और इसका मतलब होगा मज़दूरों, किसानों और सिपाहियों पर हर तरह का दमन, लड़ाई का जारी रहना और अनिवार्यतः भूख तथा मौत...

---

* यह एक ग़लती है। जिस लेख से अभिप्राय है वह ७ नवंबर, १९१७ को 'राबोची पूत' में निकला था, लेकिन उसके साथ लेखक का नाम न था। उसका लेखक अज्ञात है। – **सं०**

या फिर सत्ता क्रांतिकारी मज़दूरों, सिपाहियों और किसानों के हाथ में अन्तरित की जाये, जिसका अर्थ होगा सामन्ती अत्याचार का पूर्ण उन्मूलन, पूंजीपतियों की फ़ौरन रोक-थाम और एक न्यायपूर्ण शान्ति-सन्धि की अविलम्ब प्रस्तावना। ऐसी स्थिति में किसानों के लिये भूमि सुनिश्चित है, मज़दूरों के लिये उद्योग पर नियन्त्रण सुनिश्चित है, भूखों के लिये रोटी सुनिश्चित है और इस निरर्थक युद्ध का अन्त सुनिश्चित है।

'देन' में रात की हलचल की कुछ छिटपुट ख़बर छपी थी – टेलीफ़ोन एक्सचेंज, बाल्टिक स्टेशन और तारघर पर बोल्शेविकों का क़ब्ज़ा; पीटरहोफ़ के **युंकरों** का पेत्रोग्राद पहुंचने में असमर्थ होना; कज़ाकों की डांवाडोल स्थिति; कुछ मन्त्रियों की गिरफ़्तारियां; नगर-मिलिशिया के अध्यक्ष मेयेर को गोली मार दिया जाना; गिरफ़्तारियां और बदले में दूसरी ओर गिरफ़्तारियां, विरोधी गश्ती सिपाहियों, **युंकरों** और लाल गार्डों के बीच मुठभेड़ें'।

मोर्स्काया मार्ग के नुक्कड़ पर मैं मेन्शेविक-**ओबोरोनेत्स** (प्रतिरक्षावादी) तथा मेन्शेविक पार्टी की सैनिक शाखा के मन्त्री कप्तान गोम्बर्ग से टकरा गया। जब मैंने उनसे पूछा कि क्या सचमुच ही बग़ावत हुई है, उन्होंने क्लान्त भाव से अपने कंधों को सिकोड़ कर कहा, "**चोर्त ज़्नायेत**! (शैतान जानता है!) हां, बोल्शेविक शायद राज्य-सत्ता पर क़ब्ज़ा कर सकते हैं, परन्तु वे उसे तीन दिन से ज़्यादा अपने हाथ में नहीं रख सकेंगे। उनके पास सरकार चलाने के लिये आदमी नहीं हैं। शायद उन्हें चलाने की कोशिश करने देना अच्छा होगा। इससे उनकी मिट्टी ही पलीद होगी..."

सेन्ट इसाक के चौक के कोने में जो सैनिक होटल था, उसकी हथियारबन्द मल्लाहों ने नाकेबंदी कर रखी थी। होटल के हॉल में बहुत से शौकीन, नौजवान अफ़सर चहलक़दमी कर रहे थे या आपस में फुसफुसा कर कुछ कह रहे थे, मल्लाह उन्हें यहां से बाहर जाने नहीं दे रहे थे।

एकाएक बाहर गोली छूटने की तेज़ आवाज़ आयी और उसके बाद

छिटफूट गोलीबारी की आवाजें। मैं बाहर दौड़ा। मारिईन्स्की प्रासाद की तरफ़, जहां रूसी जनतन्त्र की परिषद् की बैठक हुई थी, कोई असाधारण बात हो रही थी। वहां सिपाही एक आड़ी रेखा में वसीह चौक के एक सिरे से दूसरे सिरे तक पंक्तिबद्ध खड़े थे, हाथ में राइफलें लिये, गोली छोड़ने के लिये तैयार, होटल की छत की ओर निगाह उठाये।

"**प्रोवोकात्सिया!** (उकसावेबाज़ी) हमारे ऊपर गोली चलायी गई है!" एक सिपाही ने ग़ुस्से से कहा और दूसरा दरवाज़े की तरफ़ दौड़ा।

प्रासाद के पश्चिमी कोने में एक बड़ी बख़्तरबंद गाड़ी खड़ी थी। गाड़ी पर एक लाल झंडा फहरा रहा था और उसपर ताज़ा पेन्ट किये हुए लाल अक्षरों में लिखा था: "सो० रा० सो० दे०" (**सोवेत राबोचिख़ इ सोल्दातस्किख़ देपुतातोव**); बख़्तरबंद गाड़ी की सभी तोपें सेन्ट इसाक की ओर सीधी की हुई थीं। नोवाया ऊलित्सा (नयी सड़क) के मुहाने पर एक बैरिकेड बनाया गया था—बक्सों, पीपों, एक पुरानी स्प्रिंगदार चारपाई, एक सग्गड़—इन सबका इस्तेमाल किया गया था। मोइका घाट के किनारे को लक्कड़-पत्थर जमा करके रोक दिया गया था। पास की एक लकड़ी की टाल से लकड़ियां लेकर इमारत के सामने एक रेलिंग सी बनाई जा रही थी...

"क्या लड़ाई होने जा रही है?" मैंने पूछा।

"जल्द, बहुत जल्द," एक सिपाही ने उत्तेजित स्वर में कहा, "आप यहां से चले जायें, साथी, नहीं तो आपको चोट लग जायेगी। वे उधर से आयेंगे," और उसने एडमिरेल्टी भवन की ओर इशारा किया।

"कौन आयेंगे?"

"इसके बारे में मैं कुछ नहीं कह सकता, भाई," उसने ज़मीन पर थूकते हुए कहा।

प्रासाद के द्वार पर सिपाहियों और मल्लाहों की एक भीड़ जमा थी। एक मल्लाह बता रहा था कि रूसी जनतन्त्र की परिषद् का अन्त कैसे हुआ: "हम वहां घुस गये और हमने सभी दरवाज़ों को घेरकर साथियों को खड़ा कर दिया। सभापति की गद्दी पर जो प्रतिक्रांतिकारी

[illegible]नोवपंथी बैठा था, मैंने उसके पास जाकर कहा, 'परिषद् बन्द करो और सीधे घर भाग जाओ!'"

इस पर हंसी छूट पड़ी। मैं अपने कई तरह के मिले-जुले काग़ज़ात दिखलाता हुआ किसी तरह प्रेस गैलरी के दरवाज़े तक पहुंच गया। वहां एक लंबे-तड़ंगे हंसमुख मल्लाह ने मुझे रोका। जब मैंने उसे अपना पास दिखाया, उसने बस इतना ही कहा, "साथी, अगर आप ख़ुद सेन्त मिखाईल होते, तो भी यहां से गुज़र नहीं सकते थे!" दरवाज़े के शीशे से मैं देख सकता था, एक फ़्रांसीसी संवाददाता, जिसका चेहरा विकृत हो रहा था, जोर ज़ोर से हाथ हिला कर अपनी बात समझाने की कोशिश कर रहा था। उसे अन्दर बन्द कर दिया गया था...

पास में एक नाटे क़द का भूरी मूछों वाला आदमी जनरल की वर्दी पहने खड़ा था, जिसके चारों ओर सिपाहियों का झुण्ड जमा था। उसका चेहरा तमतमाया हुआ था।

"मैं हूं जनरल अलेक्सेयेव," उसने चिलाकर कहा। "आपके ऊपर का अफ़सर होने के नाते और जनतन्त्र की परिषद् का सदस्य होने के नाते, मैं मांग करता हूं कि मुझे अन्दर जाने दिया जाये!" सन्तरी ने अपना माथा खुजलाया और वह परेशानी की मुद्रा में आंख चुराये एक ओर देखता रहा। उसने एक अफ़सर की ओर इशारा किया, जो उधर ही आ रहा था। अफ़सर ने जब देखा कि उसके सामने कौन खड़ा है, वह घबरा उठा और इसके पहले कि उसे यह ख़्याल हो कि वह कर क्या रहा है, उसने उसे सलाम ठोंका।

"**वाशे विसोकोप्रेवोस्खोदीतेल्स्त्वो**" (महामान्य), उसने हकलाते हुए पुरानी हुकूमत के तर्ज़ पर कहा, "प्रासाद के अन्दर जाने की सख़्त मनाही है। मुझे कोई हक़ नहीं है..."

तभी एक मोटर-गाड़ी उधर आयी, और मैंने देखा अन्दर गोत्स बैठे [illegible] बड़े विनोद के भाव से मुस्कुरा रहे थे। चन्द मिनट बाद एक और गाड़ी आयी—अस्थायी सरकार के गिरफ़्तार सदस्यों से लदी हुई। अगली सीट पर हथियारबन्द सिपाही थे। उसी वक़्त सैनिक क्रान्तिकारी समिति के समाजवादी सदस्य पेतेर्स जल्दी जल्दी चौक को पार कर [illegible]।

स्मोल्नी संस्थान का प्रवेश-द्वार, जहां सिपाहियों और लाल गार्डों का पहरा था।

"मेरा ख़्याल था आपने पिछली रात को ही इन साहबान को पकड़ लिया था," मैंने उनकी ओर इशारा करते हुए कहा।

"ओह, इसके पहले कि हम पक्का इरादा बना सके, उन बेवक़ूफ़ों ने उन्हें छोड़ दिया," उन्होंने एक नन्हें बच्चे के से भाव से कहा, जो हाथ की मिठाई गिर जाने से उदास हो गया हो।

वोस्क्रेसेन्स्की मार्ग पर मल्लाह एक बड़ी संख्या में क़तार बांधे जा रहे थे, और उनके पीछे, जितनी दूर भी निगाह जा सकती थी, सिपाही मार्च करते हुए चले आ रहे थे।

हम एडमिरेल्टेइस्की मार्ग से होकर शिशिर प्रासाद की ओर बढ़े। संतरियों ने प्रासाद के चौक में जानेवाले सारे रास्तों की नाकेबंदी कर रखी थी, और चौक के पश्चिमी सिरे पर हथियारबन्द सिपाहियों का घेरा पड़ा हुआ था, जिनके गिर्द नागरिकों की एक अशान्त भीड़ जुट आई थी। दूर पर जो सिपाही प्रासाद के प्रांगण से लकड़ियां ला लाकर

लाल गार्ड स्मोल्नी के लिए दिये गये पासों को देख रहे हैं।

सदर फाटक के सामने जमा कर रहे थे, उन्हें छोड़ चारों तरफ़ खामोशी थी।

हम यह अन्दाज़ा नहीं लगा पाये कि ये संतरी सरकार की तरफ़ हैं, कि सोवियत की तरफ़। स्मोल्नी से जो काग़ज़ात हमें मिले थे, वे [illegible] बेकार साबित हुए, लिहाज़ा हम दूसरी सफ़ों की ओर बड़े रोब से [illegible] बढ़े और हमने अमरीकी पासपोर्ट दिखाते हुए कहा, "हम सरकारी काम से आये हैं!" और लोगों को ठेलते-ठालते भीतर घुस गये। प्रासाद के अन्दर उन्हीं पुराने **श्वेइत्सारों** (दरबानों) ने, जो पीतल के बटन वाली और लाल-सुनहरे कालर वाली नीली वर्दियां पहने हुए थे, हमारे ओवरकोट और हैट ले लिये, और हम ऊपर सीढ़ियों से चढ़ गये। सूने अंधियारे गलियारे में, जिसके पर्दे नदारद थे, कुछ पुराने कर्मचारी [illegible] थे और केरेन्स्की के कमरे के सामने एक नौजवान अफ़सर अपनी [illegible] हुआ चहलक़दमी कर रहा था। हमने उससे पूछा कि क्या हम [illegible] से मुलाक़ात कर सकते हैं? उसने अदब से झुककर [illegible] बजाते हुए [illegible] से इनकार किया।

"नहीं, मुझे अफ़सोस है। अलेक्सान्द्र फ्योदोरोविच इस समय बहुत ही व्यस्त हैं..." उसने हमारी ओर एक नज़र देखा और फिर कहा, "दरअसल वह यहां हैं ही नहीं..."

"फिर कहां हैं?"

"वह मोर्चे पर गये[2]। आपको मालूम है, उनकी मोटर के लिये काफ़ी पेट्रोल भी न था। हमें अंगरेज़ी अस्पताल से आदमी भेज कर पेट्रोल मंगाना पड़ा।"

"क्या मन्त्रिगण यहां मौजूद हैं?"

"वे किसी कमरे में मीटिंग कर रहे हैं, लेकिन मैं नहीं जानता किस कमरे में।"

"क्या बोल्शेविक लोग आने वाले हैं?"

"बेशक, वे आने ही वाले हैं। मुझे हर लमहा इस बात का इन्तज़ार है कि टेलीफ़ोन पर ख़बर आयेगी कि वे आ रहे हैं। लेकिन हम भी तैयार हैं। प्रासाद के सामने **युंकर** तैनात कर दिये गये हैं। उधर उस दरवाज़े की दूसरी ओर।"

"क्या हम उस तरफ़ अन्दर जा सकते हैं?"

"नहीं, बिल्कुल नहीं। वहां जाना मना है।" यकायक उसने हम सभी से हाथ मिलाया और एक ओर को चल दिया। हम उस दरवाज़े की ओर बढ़े, जिसके भीतर जाना मना था। दरवाज़ा हॉल को दो खण्डों में बांटने वाली एक अस्थायी दीवार में लगा था और हमारी ओर से बन्द था। उसकी दूसरी ओर से लोगों के बोलने की और एक आदमी के हंसने की आवाज़ें आ रही थीं। ये ही आवाज़ें थीं, नहीं तो इस पुराने राजमहल के विशाल कोष्ठों-प्रकोष्ठों में क़ब्रिस्तान की सी ख़ामोशी छाई हुई थी। एक बूढ़ा **श्वेइत्सार** दौड़ता हुआ वहां आया और बोला, "नहीं, मालिक, आप हरग़िज़ अन्दर नहीं जा सकते।"

"दरवाज़ा बन्द क्यों है?"

"ताकि सिपाही बाहर न निकलने पायें," उसने जवाब दिया।

क्षण भर बाद उसने एक गिलास चाय पीने के बारे में कुछ कहा और हॉल में वापिस चला गया। हम दरवाज़ा खोल कर अन्दर दाख़िल हुए।

दहलीज़ के ठीक अन्दर ही दो सिपाही पहरा दे रहे थे, लेकिन उन्होंने कुछ कहा नहीं। जहां गलियारा ख़त्म होता था, एक बड़ा, ख़ूब सजा हुआ सुनहरी कार्निसों और बड़े बड़े बिल्लौरी झाड़-फ़ानूस वाला कमरा था और उससे आगे कई छोटे कमरे थे, जिनकी दीवारों पर सियाह लकड़ी से तख़्ताबन्दी की गयी थी। लकड़ी के फ़र्श की दोनों तरफ़ क़तार की क़तार मैले-कुचैले गद्दे और कम्बल पड़े थे—कुछ पर इक्के-दुक्के सिपाही टांगें पसारे लेटे हुए थे। हर जगह जली हुई सिगरेटें, डबल-रोटी के टुकड़े और चीथड़े और क़ीमती फ़्रांसीसी शराब की खाली बोतलें पड़ी हुई थीं। [illegible] रूमालों के लाल बिल्ले कंधों पर लगाये अधिकाधिक सिपाही सिगरेट के धुएं और मैले-कुचैले बेनहाये-धोये मानव-शरीरों के उस गंदे दुर्गंधपूर्ण वातावरण में घूम-फिर रहे थे। एक सिपाही के पास सफ़ेद बुर्गुंडी की एक बोतल थी, जिसे स्पष्टतः उसनें राजमहल के शराब के तहख़ाने से उड़ाया था। जब हम एक कमरे के बाद दूसरे कमरे से गुज़रते हुए घूम रहे थे, वे हमारी ओर अचरज से देख रहे थे। अन्ततः हम एक ऐसी जगह पहुंचे, जहां एक सिलसिले से विशाल राजकीय स्वागत-कक्ष बने हुए थे, जिनकी लम्बी, गर्द-गुबार से भरी खिड़कियां चौक में खुलती थीं। दीवारों पर बड़े बड़े सुनहरे फ़्रेमों में जड़ी हुई तसवीरें लटकी हुई थीं। ऐतिहासिक युद्ध-दृश्य ... '१२ अक्तूबर, १८१२', '६ नवम्बर, १८१२' और '१६–२८ अगस्त, १८१३'। एक तसवीर में ऊपर दाईं ओर कोने में एक बड़ा सा चीरा था।

राजमहल एक बहुत बड़ी बारिक बना हुआ था और फ़र्श और दीवारों को देखने से मालूम होता था कि हफ़्तों से बना हुआ था। खिड़कियों की सिलों पर मशीनगनें बैठायी गयी थीं; गद्दों के बीच में बन्दूकें [illegible] थीं।

जिस वक़्त हम इन तसवीरों को देख रहे थे, मेरी बायीं कनपटी की ओर से [illegible] की भभक आयी और एक आदमी ने, अच्छी-ख़ासी फ़्रांसीसी बोलते हुए, [illegible] स्वर से कहा, "आप लोग जिस तरह तारीफ़ की नज़र से इन तसवीरों को देख रहे हैं, उससे मुझे लगता है कि आप

विदेशी हैं।" वह एक मोटा, ठिंगना सा आदमी था और जब उसने अपनी टोपी हाथ में ली, मैंने देखा उसका सिर गंजा हो रहा था।

"आप लोग अमरीकी हैं? वाह, कितनी ख़ुशी की बात है। मैं हूं आपका हुक्म बजा लाने के लिये तैयार स्तेब्स-कप्तान व्लादीमिर अर्त्सिबाशेव।" मालूम होता था उसके लिये यह कोई असाधारण या विलक्षण बात न थी कि चार अजनबी, जिनमें एक औरत थी, एक सेना की रक्षा-पंक्तियों के बीच मज़े से घूम रहे थे, ऐसे वक़्त जब वह हमले का इन्तज़ार कर रही थी। उसने रूस की हालत के बारे में शिकायत के लहजे में कहना शुरू किया।

"ये बोल्शेविक ही अकेली आफ़त नहीं हैं," उसने कहा। "रूसी सेना की बेहतरीन परम्परायें टूट चुकी हैं। अपने चारों ओर निगाह दौड़ाइये। देखिये, ये सभी अफ़सरी की तालीम देने वाले ट्रेनिंग स्कूलों के छात्र हैं। परन्तु ये क्या भद्रलोग हैं? केरेन्स्की ने इन स्कूलों के दरवाज़े साधारण सैनिकों के लिये, जो भी सैनिक एक इम्तहान पास कर सके, उसके लिये खोल दिये थे। स्वभावतः उनमें ऐसे कितने ही लोग हैं, जिन्हें क्रांति का संक्रामक रोग लग चुका है..."

अपनी बात पूरी किये बिना ही उसने विषय बदल दिया। "मैं रूस से बाहर जाने के लिये बहुत बेताब हूं। मैंने अमरीकी फ़ौज में भर्ती होने का इरादा बना लिया है। क्या आप मेहरबानी करके अपने राजदूत से मिलेंगे और मेरे लिये कुछ इन्तज़ाम करेंगे? मैं आपको अपना पता देता हूं।" हमारे बारबार मना करने पर भी उसने एक चिट पर अपना पता लिखा और ऐसा लगा कि फ़ौरन उसके दिल के ऊपर से एक बोझ उतर गया और वह अपने को हल्का महसूस करने लगा। यह पता अभी भी मेरे पास है – "**ओरानियेनबाउमस्काया श्कोला प्रापोरश्चिकोव २, स्तारी पीटरहोफ़।**"

हमें कमरों के बीच से ले जाते हुए और सब कुछ दिखाते और समझाते हुए, उसने कहा, "आज सुबह बड़े तड़के ही फ़ौजी मुआयना हुआ। औरतों की बटालियन ने सरकार के प्रति वफ़ादार रहने का निश्चय किया।"

"क्या महिला सैनिक प्रासाद में मौजूद हैं?"

"जी हां, वे पीछे के कमरों में हैं, जहां अगर कुछ गड़बड़ी हुई, तो उन पर आंच न आयेगी।" फिर उसने ठंडी सांस लेकर कहा, "हमारे लिए यह एक बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है।"

हम थोड़ी देर तक खिड़की के सामने खड़े नीचे चौक की ओर देखते रहे, जहां लम्बे कोटधारी **युंकरों** की तीन कम्पनियां हथियारों से लैस पंक्तिबद्ध खड़ी थीं और एक लम्बा-तड़ंगा, चुस्त और फुर्तीला अफ़सर उन्हें हिदायतें दे रहा था। मैंने पहचाना वह अस्थायी सरकार का प्रमुख सैनिक कमिसार स्तान्केविच था। ज़रा देर बाद दो कम्पनियों ने बड़े ज़ोर की खनखनाहट के साथ हथियार उठाये और लेफ़्ट-राइट की आवाज़ के साथ मार्च करती हुई चौक से पार हो गईं और लाल मेहराबी दरवाज़े से* निकल कर खामोश शहर के भीतर अदृश्य हो गईं।

"ये टेलीफ़ोन एक्सचेंज पर क़ब्ज़ा करने जा रहे हैं," किसी ने कहा। हमारे पास **युंकर** स्कूल के तीन छात्र खड़े थे और हम उनसे बातचीत करने लगे। उन्होंने कहा कि वे सेना की पांतों से निकल कर स्कूलों में दाखिल हुए हैं। उन्होंने अपने नाम बताये – राबर्ट ओलेव, अलेक्सेई वासिलेन्को और एर्नी साक्स। यह साक्स एस्तोनियाई था। लेकिन उन्होंने कहा, अब वे अफ़सर होना नहीं चाहते, क्योंकि अफ़सरों की साख बिल्कुल मिट गयी थी। और वास्तव में यह स्पष्ट था कि वे अपनी स्थिति से बहुत प्रसन्न नहीं थे और उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि वे करें क्या। लेकिन ज़रा ही देर बाद वे लगे डींगें हांकने:

"अगर बोल्शेविक आते हैं, तो हम उन्हें मज़ा चखायेंगे और दिखायेंगे कि लड़ा कैसे जाता है। वे कायर हैं, वे लड़ने की क्या हिम्मत करेंगे! मगर अगर हम बेक़ाबू कर ही दिये जायें, तो हर आदमी के पास एक गोली अपने लिये है..."

ठीक इसी वक़्त कहीं नज़दीक ही गोलियां छूटने की आवाज़ आई। बाहर चौक में भगदड़ मच गई और लोग तितर-बितर भागने लगे और मुंह के बल गिरने लगे। नुक्कड़ों पर खड़े **इज़्वोज़चिकों** (कोचवानों) ने अपने घोड़े चारों ओर दौड़ा दिये। प्रासाद के अन्दर खलबली मच गयी

* जनरल स्टाफ़ भवन का मेहराबी दरवाज़ा। – सं०

और कोलाहल होने लगा। सिपाही इधर से उधर दौड़-भाग रहे थे, झपट कर बन्दूकें और कमरबन्द उठा रहे थे और चीख रहे थे, "आ गये वे! आ गये वे!.." लेकिन ज़रा ही देर में फिर सन्नाटा छा गया। कोचवान लौट आये और जो लोग मुंह के बल लेट गये थे, वे उठ खड़े हुए। लाल मेहराबी दरवाज़े से **युंकर** आते हुए दिखाई पड़े। लेकिन वे पूरी तरह क़दम मिलाकर मार्च नहीं कर रहे थे और उनमें एक अपने दो साथियों के सहारे चल रहा था।

जब हम प्रासाद से रवाना हुए, काफ़ी देर हो गयी थी। चौक से संतरी सारे के सारे ग़ायब थे। एक अर्द्धवृत्ताकार रेखा में खड़ी बड़ी बड़ी सरकारी इमारतों में वीरानगी नज़र आ रही थी। हम खाना खाने के लिये फ़्रांस होटल में गये। अभी हम अपना सूप ही पी रहे थे कि बीच में ही एक वेटर, जिसके चेहरे का रंग उड़ गया था, वहां आया और उसने साग्रह कहा कि हम होटल के पिछले हिस्से में खाने के बड़े कमरे में चले जायें, क्योंकि सामने के रेस्तोरां वाले हिस्से में बत्तियां बुझाई जा रही थीं। "मालूम होता है, ख़ूब गोलियां चलेंगी," उसने कहा।

जब हम फिर मोर्स्काया मार्ग पर आये, अंधेरा पूरी तरह घिर आया था, बस नेव्स्की मार्ग की मोड़ पर सड़क की एक बत्ती टिमटिमा रही थी, जिसके नीचे एक बड़ी बख़्तरबन्द गाड़ी खड़ी थी। उसका इंजन चालू था और उससे बुरी तरह पेट्रोल का धुआं निकल रहा था। एक छोटा सा लड़का गाड़ी के ऊपर चढ़ गया था और वह मशीनगन की नाल से आंख लगा कर देख रहा था। सिपाही और मल्लाह गाड़ी के चारों ओर खड़े थे, स्पष्ट ही, वे किसी चीज़ का इन्तज़ार कर रहे थे। हम पीछे मुड़ कर लाल मेहराबी दरवाज़े तक आये, जहां सिपाहियों का एक झुण्ड इकट्ठा हो गया था। वे रोशनी से जगमग शिशिर प्रासाद की ओर एकटक देख रहे थे और ज़ोर ज़ोर से बात कर रहे थे।

"नहीं, साथियो," एक कह रहा था, "हम उनके ऊपर गोली कैसे चला सकते हैं? औरतों की बटालियन अन्दर है – लोग कहेंगे, हमने रूसी औरतों पर गोली चलाई।"

जिस वक़्त हम नेव्स्की मार्ग पर फिर पहुंचे, एक और बख़्तरबन्द

गाड़ी मोड़ से घूमकर वहां आयी और एक आदमी उसकी बुर्जी में से सिर निकाल कर जोर से चिल्लाया:

"आ जाओ! हम चलें और हमला बोल दें!"

दूसरी गाड़ी का ड्राइवर वहां चला आया और चिल्ला कर बोला, ताकि इंजन के शोर में उसकी आवाज सुनी जा सके, "समिति का कहना है कि हम अभी इन्तजार करें! उन्होंने वहां लकड़ी के अटाले के पीछे तोपखाना बैठा रखा है..."

इस जगह ट्रामों का चलना बन्द हो गया था, इक्के-दुक्के आदमी ही आते जाते नजर आते थे, और सड़क पर रोशनी नहीं थी, लेकिन वहां से थोड़ी ही दूर पर बीच में इमारतों की एक लाइन पार करने की देर थी—हम चलती हुई ट्रामों, दूकानों की जगमग खिड़कियों, सिनेमा के बिजली के जगमगाते इश्तहारों और भीड़-भड़क्के को देख सकते थे—जिन्दगी बदस्तूर चलती जा रही थी। हमारे पास मारिईन्स्की थियेटर के बैले के टिकट थे—थियेटर सभी खुले हुए थे—परन्तु बाहर इतनी हलचल थी कि वहां जाये कौन...

अंधेरे में एक जगह ठोकर खाकर हम गिरते गिरते बचे—पुलिस पुल की नाकेबन्दी के लिये बहुत सा काठ-कबाड़ जमा किया गया था। अंधेरे में नजर ठहरा कर हमने देखा स्त्रोगानोव प्रासाद के सामने कुछ सिपाही तीन इंच की एक तोप को बैठा रहे थे। तरह तरह की वर्दियां पहने लोग निरुद्देश्य भाव से आ जा रहे थे और बड़ी बातें कर रहे थे...

नेव्स्की मार्ग को देखने से ऐसा लगता था कि पूरा शहर घूमने के लिए बाहर निकल पड़ा है। हर नाके और मोड़ पर गरमागरम बहस छिड़ी हुई थी, और चारों ओर सुननेवालों की एक खासी बड़ी भीड़ जमा थी। हर चौराहे पर संगीनें लिए एक दर्जन सिपाहियों की टुकड़ियां तैनात थीं, कीमती फ़र-कोट पहने सुर्खरू बूढ़े आदमी उन्हें घूंसा दिखाते, भड़कीली पोशाकें पहने औरतें चीख चीख कर उन्हें जली-कटी सुनातीं। सिपाही सहमे से जवाब देते और परेशान, फीकी हंसी हंसते... बख्तरबन्द गाड़ियां सड़कों से आ जा रही थीं, जिन्हें पहले के राजाओं के नाम पर 'ओलेग', 'रूरिक' या 'स्व्यातोस्लाव' कहते थे, और जिन पर बड़े बड़े लाल अक्षर पुते थे 'रू० सा० ज० म० पा०' (रोस्सीइस्काया

सोत्सिआल-देमोक्रातीचेस्काया राबोचाया पार्तिया)*। मिखाइलोव्स्की मार्ग पर एक आदमी अख़बारों का बंडल लिये आया और बेसब्र, बेताब आदमियों की एक भीड़ फ़ौरन उस पर 'टूट' पड़ी—वे एक अख़बार के लिए एक रूबल, पांच रूबल, दस रूबल तक देने के लिए तैयार थे, और अख़बारों के लिए इस तरह छीना-झपटी कर रहे थे, जैसे वे इंसान नहीं, चील-कौवे हों। यह अख़बार 'राबोची इ सोल्दात' था, जिसमें सर्वहारा क्रान्ति की विजय की और जेल से बोल्शेविक क़ैदियों की रिहाई की घोषणा की गयी थी, और मोर्चे और पिछाये दोनों जगह की सेनाओं से अपील की गयी थी कि वे क्रान्ति का समर्थन करें... अख़बार क्या था चार पन्नों का एक गरम, पुरजोश पर्चा था, जिसमें ख़बरें नदारद थीं...

सदोवाया मार्ग के मोड़ पर लगभग दो हज़ार नागरिकों की एक भीड़ इकट्ठी हो गयी थी, जो एक ऊंची इमारत की छत की ओर एकटक देख रहे थे, जहां एक छोटी सी लाल बत्ती बार बार जल रही थी और बुझ रही थी।

"देखा!" एक लम्बे-तड़ंगे किसान ने उसकी ओर इशारा करते हुए कहा। "वह कोई उकसावेबाज़ है। देखना, वह अभी लोगों पर गोली चलायेगा..." इतने लोग जमा थे, लेकिन मालूम होता है किसी ने यह नहीं सोचा कि वहां जा कर पता लगाये कि माजरा क्या है।

* * *

जब हम विशाल स्मोल्नी भवन के सामने पहुंचे, हमने देखा वह रोशनी से जगमगा रहा था और अंधेरे में हर रास्ते से झुण्ड की झुण्ड दौड़ती-भागती परछाइयां उसी ओर आ रही थीं। मोटरें और मोटरसाइकिलें आ जा रही थीं। एक बहुत बड़ी मटमैले गजवर्ण की बख़्तरबन्द मोटर-गाड़ी, जिसकी बुर्जी से दो लाल झण्डे लगे हुए थे, घड़घड़ाती हुए निकली। उसका साइरन चीख़ रहा था। सर्दी बहुत थी

---

* रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर पार्टी। —सं०

और बाहरी फाटक पर लाल गार्डों ने अलाव सुलगा रखा था। अन्दर के फाटक पर भी आग जल रही थी, जिसकी रोशनी में सन्तरियों ने हमारे पासों को टो टोकर पढ़ा और हमें सिर से पैर तक देखा। फाटक के दोनों ओर जो चार मशीनगनें बैठायी गयी थीं, उनकी कैनवस की खोल हटा ली गयी थी और उनकी ब्रीचों से कारतूसों की पेटियां सांप के मानिन्द लटक रही थीं। सहन में दरख़्तों के साये में मटमैले रंग की बख़्तरबन्द गाड़ियों का एक झुंड जमा था – उनके इंजन चालू थे। स्मोल्नी भवन के बड़े बड़े बेआरास्ता हॉलों में, जिनमें मद्धिम रोशनी फैली हुई थी, चीखते, पुकारते लोगों की आवाज़ें और उनकी पदचाप गूंज रही थी। वातावरण में यह भावना व्याप्त थी कि जान पर खेल जाओ, देखा जायेगा। कुछ आदमियों का एक झुंड सीढ़ियों से नीचे उतरा – काले जैकेट और फर की काली गोल टोपियां पहने मज़दूर, जिनमें कितनों के कन्धों से बन्दूकें लटक रही थीं, मटमैले खुरदरे कोट और भूरी पिचकी हुई फर की शापकी (टोपी) पहने सिपाही, और इक्के-दुक्के नेता भी – लूनाचार्स्की, कामेनेव * – अपने गिर्द एक साथ बोलते हुए लोगों की भीड़ लिये हुए, चेहरे पर परेशानी और फ़िक्र का भाव और हाथ में काग़ज़-पत्र से ठसाठस भरे पोर्टफोलियो। पेत्रोग्राद सोवियत की असाधारण बैठक समाप्त हो चुकी थी। मैंने कामेनेव को रोका – नाटे क़द के एक फुरतीले आदमी, जिनका चौड़ा, ओजपूर्ण चेहरा उनके कंधों पर इस तरह बैठा था कि गर्दन का पता ही न चलता था। उन्होंने बिना कोई भूमिका बांधे फ़्रांसीसी में जल्दी जल्दी वह प्रस्ताव पढ़ कर सुनाया, जिसे अभी अभी सोवियत ने स्वीकृत किया था :

---

* **कामेनेव (रोज़ेनफ़ेल्द), ले० बो०**, १६०१ से बोल्शेविक पार्टी के सदस्य। नवंबर क्रांति के पश्चात् मास्को सोवियत के अध्यक्ष। जन-कमिसार परिषद् के उपाध्यक्ष।

बहुधा लेनिन की नीति का विरोध किया ; मार्च की पूंजीवादी-जनवादी क्रांति के बाद समाजवादी क्रांति अग्रसर करने की पार्टी की नीति की मुख़ालफ़त की ; नवंबर १६१७ में मेन्शेविकों तथा समाजवादी-क्रांतिकारियों के साथ मिलकर संयुक्त सरकार स्थापित करने के विचार का समर्थन किया।

बाद में मार्क्सवाद-लेनिनवाद से अपना नाता तोड़ लिया और पार्टी से निकाल दिये गये। – **सं०**

मज़दूरों तथा सैनिकों के प्रतिनिधियों की पेत्रोग्राद सोवियत पेत्रोग्राद सर्वहारा तथा गैरिसन की विजयी क्रान्ति का अभिनन्दन करती है और इस विद्रोह में जन-साधारण ने जो एकता, संगठन, अनुशासन तथा पूर्ण सहयोग प्रदर्शित किया है, उस पर विशेष बल देती है। पहले किसी विद्रोह में शायद ही कभी इतना कम खून बहाया गया हो, पहले शायद ही कभी कोई विद्रोह इतनी अच्छी तरह सम्पन्न हुआ हो।

पेत्रोग्राद सोवियत अपना दृढ़ विश्वास प्रगट करती है कि मज़दूरों और किसानों की सरकार, जो सोवियतों की सरकार के रूप में क्रान्ति द्वारा स्थापित की जायेगी, और जो औद्योगिक सर्वहारा के लिए ग़रीब किसानों के समूचे जन-समुदाय का समर्थन सुनिश्चित बना देगी, मज़बूत क़दमों से समाजवाद की ओर बढ़ेगी, जिसके द्वारा ही देश को युद्ध की अश्रुतपूर्व विभीषिकाओं तथा कष्टों से बचाया जा सकता है।

नयी मज़दूरों और किसानों की सरकार सभी युद्धरत देशों से अविलम्ब एक न्याय्य तथा जनवादी शान्ति-सन्धि सम्पन्न करने का प्रस्ताव करेगी।

वह ज़मींदारियों को फ़ौरन ज़ब्त करेगी और भूमि किसानों के हाथों में अन्तरित करेगी। वह उत्पादन पर तथा तैयार माल के वितरण पर मज़दूरों का नियन्त्रण लागू करेगी और बैंकों पर, जिन्हें राजकीय इजारेदारी में बदल दिया जायेगा, सामान्य नियन्त्रण स्थापित करेगी।

मज़दूरों तथा सैनिकों के प्रतिनिधियों की पेत्रोग्राद सोवियत रूस के मज़दूरों और किसानों का आह्वान करती है कि वे अपनी पूरी शक्ति और पूरी निष्ठा से सर्वहारा क्रान्ति का समर्थन करें। पेत्रोग्राद सोवियत अपना यह विश्वास प्रगट करती है कि नगर के मज़दूर और उनके संघाती ग़रीब किसान पूर्ण क्रान्तिकारी सुव्यवस्था को, जो समाजवाद की विजय के लिए अपरिहार्य है, सुनिश्चित बनायेंगे। सोवियत को यक़ीन है कि पश्चिमी यूरोपीय देशों का सर्वहारा हमें समाजवाद के ध्येय को वास्तविक तथा स्थायी विजय की परिणति तक पहुंचाने में मदद देगा।

"आपका विचार है, क्रान्ति की विजय हुई है?"

उन्होंने अपने कंधे उचका कर कहा, "अभी बहुत कुछ करने को पड़ा है – बहुत कुछ। यह तो बस शुरूआत है..."

सीढ़ियों के मोड़ पर मेरी मुलाक़ात ट्रेड-यूनियनों के उपाध्यक्ष रियाज़ानोव से हुई – वह अपनी भूरी दाढ़ी चबा रहे थे और उनके चेहरे पर काली छाया थी। "यह सरासर पागलपन है – पागलपन है!" उन्होंने चिल्लाकर कहा। "यूरोपीय मज़दूर वर्ग हिलने वाला नहीं है! समूचा रूस ..." उन्होंने विक्षिप्त भाव से हाथ झटकारा और तेज़ी से नीचे उतर गये। रियाज़ानोव और कामेनेव दोनों ने विद्रोह का विरोध किया था और लेनिन के तीखे शब्द-वाणों से क्षत-विक्षत हुए थे ...

पेत्रोग्राद सोवियत की यह बैठक बड़ी महत्वपूर्ण थी। सैनिक क्रान्तिकारी समिति की ओर से त्रोत्स्की ने घोषणा की कि अस्थायी सरकार का अस्तित्व समाप्त हो चुका है।

"जनता को धोखा देना पूंजीवादी सरकारों की चारित्रिक विशेषता है," त्रोत्स्की ने कहा। "हम, मज़दूरों, सैनिकों तथा किसानों के प्रतिनिधियों की सोवियतें, एक ऐसा प्रयोग करने जा रहे हैं, जो इतिहास में अद्‌भुत और अद्वितीय है। हम एक ऐसी सत्ता स्थापित करने जा रहे हैं, जिसका एक ही उद्देश्य होगा – सैनिकों, मज़दूरों और किसानों की ज़रूरतों को पूरा करना।"

विश्वव्यापी समाजवादी क्रान्ति की भविष्यवाणी करते हुए लेनिन प्रगट हुए थे और उनका तालियों की गड़गड़ाहट से स्वागत किया गया। ज़िनोव्येव कड़क रहे थे, "आज हमने अंतर्राष्ट्रीय सर्वहारा के प्रति अपने ऋण का शोध किया है, हमने युद्ध पर प्रचण्ड आघात किया है, और सभी साम्राज्यवादियों पर, विशेष रूप से जल्लाद विल्हेल्म पर, कुठाराघात किया है ..."

और तब त्रोत्स्की ने बताया कि विद्रोह की विजय की घोषणा करते हुए मोर्चे पर तार भेजे गये हैं, परन्तु अभी तक कोई उत्तर नहीं आया है। कहा जाता है कि सेनायें पेत्रोग्राद पर चढ़ाई करने आ रही हैं – उनके पास एक प्रतिनिधिमण्डल भेजना होगा, ताकि उन्हें सच बात बतायी जा सके।

आवाज़ें – "आप सोवियतों की अखिल रूसी कांग्रेस की इच्छा का पूर्वानुमान कर रहे हैं!"

त्रोत्स्की ने रुखाई से जवाब दिया, "पेत्रोग्राद के मज़दूरों और

सिपाहियों के विद्रोह ने सोवियतों की अखिल रूसी कांग्रेस की इच्छा का पूर्वानुमान किया है!"

हम दरवाज़े पर जमा शोरगुल करती भीड़ को ठेलते-ठालते विशाल सभा भवन के भीतर पहुंचे। उजले झाड़-फ़ानूस के नीचे क़तार की क़तार सीटों में, दोनों ओर की ख़ाली जगहों और दर्म्यानी रास्तों में ठसाठस भरे और हर खिड़की से और मंच के किनारे तक से पैर लटकाये बैठे हुए समूचे रूस के मज़दूरों और सिपाहियों के प्रतिनिधि चुपचाप व्यग्र भाव से या बेज़ब्त उल्लास से सभापति की घंटी बजने का इन्तज़ार कर रहे थे। हॉल में सिवा बेनहाये-धोये मानव-शरीरों की गरमाई के, जिससे दम ही घुटता था, और कोई गरमाई न थी। जनसमूह के बीच से उठ कर सिगरेट के दूषित नीले धुएं का बादल बोझिल हवा में छाया हुआ था। कभी-कभी कोई नेता मंच पर आकर कहता कि साथी सिगरेट न पिएं, और तब पीने वाले और नहीं पीने वाले, सभी एक साथ आवाज़ें देते, "साथियो, आप लोग सिगरेट न पिएं," और उसी तरह कश लगाते रहते। ओबूख़ोव कारख़ाने के अराजकतावादी प्रतिनिधि पेत्रोव्स्की ने मेरे लिए अपनी बग़ल में जगह की। मैला-कुचैला, दाढ़ी बढ़ी हुई, वह सैनिक क्रान्तिकारी समिति में तीन रातों तक जाग कर काम करने से चूर था।

मंच पर पुरानी **त्से-ई-काह** के नेता बैठे थे – वे आख़िरी बार उन सरकश सोवियतों पर शासन कर रहे थे, जिन पर उन्होंने शुरूआती दिनों से ही शासन किया था, परन्तु जो अब उनके ख़िलाफ़ बग़ावत पर आमादा थीं। यह उस रूसी क्रान्ति के प्रथम चरण की अन्तिम घड़ी थी, जिसे इन लोगों ने फूंक फूंक कर क़दम रखते हुए बंधे हुए रास्ते से ले चलने की कोशिश की थी... उनके तीन सबसे बड़े चौधरी वहां न थे: केरेन्स्की, जो छोटे क़स्बों से होते हुए मोर्चे की ओर भागे जा रहे थे, मगर ये क़स्बे भी उभड़ रहे थे और भरोसे लायक न रहे थे; बूढ़ा घाघ छेईद्ज़े, जो अवज्ञापूर्वक राजनीति से सन्यास ले स्वदेश जार्जिया के पहाड़ों में चले गये थे – तपेदिक से घुलने के लिए; और महामना त्सेरेतेली, छेईद्ज़े की तरह ही सांघातिक रोग से पीड़ित, परन्तु फिर भी जो लौट कर हारे हुए ध्येय के लिए धाराप्रवाह बोलने और सुन्दर

शब्दों की झड़ी लगाने वाले थे। ये तीनों वहां नहीं थे, मगर गोत्स थे, दान, लीबेर, बोग्दानोव, ब्रोइदो, फ़िलिप्पोव्स्की थे – चेहरे फक, आंखें गढ़ों में धंसी हुई, गुस्से मे भरे। उनके नीचे हॉल में अखिल रूसी सोवियतों की दूसरी **स्येज़्द** (कांग्रेस) उमड़-घुमड़ रही थी, उफन रही थी। और उनके ऊपर सैनिक क्रान्तिकारी समिति शोला बनी बिजली की तेज़ी से काम कर रही थी – विद्रोह के सारे सूत्र उसके हाथ में थे और वह जो वार कर रही थी, उसका असर दूर तक पहुंचता था... रात के दस बजकर चालीस मिनट हो चुके थे।

फ़ौजी डाक्टर की एक ढीली-ढाली, बेढंगी वर्दी पहने, फीके चेहरेवाले दान, जिनका सिर गंजा हो चला था, घंटी बजा रहे थे। हॉल में सन्नाटा छा गया, गहरा सन्नाटा, परन्तु दरवाज़े पर जमा लोगों की तकरार और हाथापाई से निस्तब्धता भंग हो रही थी...

"हमारे हाथ में सत्ता आ गयी है," उन्होंने मातमी ढंग से अपना भाषण शुरू किया और फिर क्षण भर रुक कर धीमी आवाज़ में कहा, "साथियो! सोवियतों की कांग्रेस की यह सभा ऐसी असाधारण परिस्थिति में और ऐसी असाधारण घड़ी में हो रही है कि आप इस बात को समझेंगे कि क्यों **त्से-ई-काह** आपके सामने राजनीतिक भाषण करना अनावश्यक समझती है। मेरी यह बात आपके लिए और भी साफ़ हो जायेगी, अगर आप यह याद करें कि मैं **त्से-ई-काह** का सदस्य हूं और ठीक इसी घड़ी शिशिर प्रासाद में हमारी पार्टी के साथियों पर गोलाबारी की जा रही है और वे **त्से-ई-काह** द्वारा उनके ऊपर डाली गयी ज़िम्मेदारियों को पूरा करने के लिए अपने जीवन की आहुति दे रहे हैं।" **(शोरगुल और हंगामा।)**

"मैं मज़दूरों तथा सैनिकों के प्रतिनिधियों की सोवियतों की दूसरी कांग्रेस के पहले अधिवेशन के उद्घाटन की घोषणा करता हूं!"

हॉल में काफ़ी हलचल और दौड़-भाग के बीच सभापतिमण्डल का चुनाव हुआ। अवानेसोव ने एलान किया कि बोल्शेविकों, वामपंथी समाजवादी-क्रान्तिकारियों तथा मेन्शेविक-अन्तर्राष्ट्रीयतावादियों की राय से यह फ़ैसला किया गया है कि सभापतिमण्डल का चुनाव अनुपाती प्रतिनिधित्व के आधार पर हो। फ़ौरन कई मेन्शेविक प्रतिनिधि उछल

पड़े और प्रतिवाद करने लगे। एक दढ़ियल सिपाही ने चिल्ला कर उनसे कहा, "याद रखिये, जब हम बोल्शेविक अल्पमत में थे, आपने हमारे साथ क्या किया था!" चुनाव का परिणाम: बोल्शेविक १४, समाजवादी क्रान्तिकारी ७, मेन्शेविक ३ और अंतर्राष्ट्रीयतावादी (गोर्की का दल) १। दक्षिणपंथी तथा मध्यमार्गी समाजवादी-क्रान्तिकारियों की ओर से बोलते हुए गेन्देलमान ने कहा कि वे सभापतिमण्डल में भाग लेने से इनकार करते हैं, मेन्शेविकों की ओर से ख़िनचूक ने भी यही बात कही। मेन्शेविक-अन्तर्राष्ट्रीयतावादियों की ओर से कहा गया कि जब तक कुछ विशेष परिस्थितियों की जांच न कर ली जाये, वे भी सभापतिमण्डल में प्रवेश नहीं कर सकते। छिटपुट तालियां, और सीटियां। एक आवाज़, "ग़द्दारो, तुम अपने को समाजवादी कहते हो!" उक्रइनी प्रतिनिधिमण्डल के एक सदस्य ने सभापतिमण्डल में जगह मांगी और उसे जगह दी गयी। फिर पुरानी **त्से-ई-काह** के सदस्य मंच से नीचे उतर गये, और उनके स्थान पर त्रोत्स्की, कामेनेव, लुनाचार्स्की, श्रीमती कोल्लोन्ताई, नोगीन विराजमान हुए... प्रतिनिधिगण तालियां बजाते और गगनभेदी नारे लगाते उठ खड़े हुए। ये बोल्शेविक कितना ऊपर उठ गये थे! कहां, चार महीने भी नहीं हुए, वे एक गुट * थे, जिन्हें हिकारत की निगाह से देखा जाता था, जिनका पीछा किया जाता था, और कहां आज उन्होंने क्रान्ति की लहर पर उठ कर यह सर्वोच्च स्थान, विशाल रूस के कर्णधारों का स्थान ग्रहण किया था!

कामेनेव ने कहा कि दिवस के कार्यक्रम की पहली मद्द थी, सत्ता का संगठन; दूसरी, युद्ध तथा शान्ति; और तीसरी, संविधान सभा। लोज़ोव्स्की ने उठ कर घोषणा की कि सभी दलों के ब्यूरो की राय से यह विचार किया गया है कि पहले पेत्रोग्राद सोवियत की रिपोर्ट पेश हो और उस पर बहस हो, फिर **त्से-ई-काह** के सदस्यों तथा विभिन्न पार्टियों के प्रतिनिधियों को बोलने के लिए आमन्त्रित किया जाये और अन्त में दिवस का कार्यक्रम लिया जाये।

लेकिन अचानक एक नयी आवाज़ सुनायी पड़ी – जन-कोलाहल से

---

* देखिये संपादकीय टिप्पणी, पृष्ठ ४३। – सं०

गहरी आवाज़, लगातार आने वाली और बेचैन कर देने वाली आवाज़ – यह तोपों का धमाका था। लोग परेशानी से अंधेरी खिड़कियों की ओर देखने लगे और उन्हें जैसे बुख़ार चढ़ आया। मार्तोव ने बोलने की इजाज़त मांगी और भारी, बैठी हुई आवाज़ में कहना शुरू किया, "गृहयुद्ध शुरू हो रहा है, साथियो! हमारे सामने पहला सवाल होना चाहिए इस संकट का शान्तिपूर्ण निपटारा। सिद्धान्त तथा राजनीति की दृष्टि से इस बात पर विचार करना आवश्यक है कि गृहयुद्ध से कैसे बचा जाये। हमारे भाइयों को सड़कों पर गोलियों से भूना जा रहा है! इसी घड़ी, जब सोवियतों की कांग्रेस के उद्घाटन से पहले सत्ता का प्रश्न एक क्रान्तिकारी पार्टी द्वारा संगठित सैनिक षड्यन्त्र के ज़रिए हल किया जा रहा है..." क्षण भर के लिए शोरगुल के बीच उनकी आवाज़ सुनाई नहीं दे सकी। "हर क्रान्तिकारी पार्टी के लिए ज़रूरी है कि वह सचाई से आंखें चार करे! कांग्रेस के सामने पहला **वोप्रोस** (प्रश्न) सत्ता का प्रश्न है, और इस प्रश्न का अभी से सड़कों पर शस्त्र-बल द्वारा निपटारा किया जा रहा है!.. हमें अवश्य ही एक ऐसी सत्ता स्थापित करनी चाहिए, जो सभी जनवादी तत्वों के लिए मान्य हो। अगर यह कांग्रेस क्रान्तिकारी जनवाद की आवाज़ होना चाहती है, तो वह हाथ पर हाथ धरे गृहयुद्ध की लपटों को फैलते हुए नहीं देख सकती, जिसके फलस्वरूप प्रतिक्रान्ति खतरनाक ढंग से भड़क सकती है... घटनाओं की शान्तिपूर्ण परिणति की संभावना एक संयुक्त जनवादी सत्ता की स्थापना में निहित है। हमारे लिए ज़रूरी है कि हम दूसरी समाजवादी पार्टियों तथा संगठनों से बातचीत करने के लिए एक प्रतिनिधिमण्डल का चुनाव करें..."

खिड़कियों से तोप के धमाके की दबी हुई आवाज़ बराबर आ रही थी और कांग्रेस के प्रतिनिधि एक दूसरे पर चीख़ रहे थे... इस प्रकार अन्धकार में तोप के धमाके के साथ, घृणा और भय और निर्भय साहस के साथ नये रूस का जन्म हो रहा था।

वामपंथी समाजवादी क्रांतिकारियों और संयुक्त सामाजिक-जनवादियों ने मार्तोव के प्रस्ताव का समर्थन किया और उसे मान लिया गया। एक सिपाही ने बताया कि किसानों की अखिल रूसी सोवियतों ने कांग्रेस में अपने प्रतिनिधि भेजने से इनकार कर दिया था और उसने प्रस्ताव किया

कि उन्हें औपचारिक रूप से आमन्त्रित करने के लिए एक प्रतिनिधिमण्डल भेजा जाये। "किसानों की सोवियतों के कुछ प्रतिनिधि यहां मौजूद हैं," उसने कहा। "मैं प्रस्ताव करता हूं कि उन्हें वोट देने का अधिकार दिया जाये।" प्रस्ताव स्वीकार कर लिया गया।

कप्तान की वर्दी पहने ख़र्राश ने बड़े गुस्से से बोलने की इजाज़त मांगी। उसने चिल्लाकर कहा, "जो सियासी मक्कार इस कांग्रेस पर हावी हैं, उन्होंने हमें बताया था कि हमें सत्ता के प्रश्न का निपटारा करना है – और उस प्रश्न का हमारी पीठ पीछे, कांग्रेस के शुरू होने से पहले ही निपटारा किया जा चुका है! शिशिर प्रासाद पर गोले बरसाये जा रहे हैं, और जिस राजनीतिक पार्टी ने ऐसा दुःसाहसिक कार्य करने की जोखिम उठायी है, वह इन गोलों को दाग़ कर अपनी मौत बुला रही है!" शोरगुल। ख़र्राश के बाद गार्रा* नामक एक प्रतिनिधि बोलने के लिए खड़े हुए: "यहां जब हम शान्ति के प्रस्तावों पर विचार कर रहे हैं, वहां सड़कों पर जंग छिड़ी हुई है... समाजवादी-क्रांतिकारी और मेन्शेविक इन घटनाओं में भाग लेने से इनकार करते हैं, और सभी सार्वजनिक शक्तियों से अपील करते हैं कि वे सत्ता पर अधिकार जमाने की चेष्टा का प्रतिरोध करें..." बारहवीं सेना का प्रतिनिधि और 'त्रुदोविक' दल का सदस्य कूचिन: "मुझे केवल सूचना देने के लिए यहां भेजा गया है और मैं फ़ौरन मोर्चे पर वापिस जा रहा हूं, जहां सभी सैनिक समितियों का मत है कि संविधान सभा के बुलाये जाने से केवल तीन सप्ताह पहले सोवियतों द्वारा सत्ता पर क़ब्ज़ा करना सेना की पीठ में छुरा घोंपना है, वह जनता के ख़िलाफ़ एक अपराध है!" पुरज़ोर आवाज़ें, "झूठ! आप झूठ बोलते हैं!.." शोरगुल के बीच उसकी आवाज़ फिर सुनी गयी, "पेत्रोग्राद में जो दुःसाहसिकता हुई है, हमें चाहिये कि हम उसे समाप्त करें! मैं सभी प्रतिनिधियों का आह्वान करता हूं कि वे देश को और क्रांति को बचाने के लिए सभा का परित्याग करें!" जब कान के पर्दे फाड़ देनेवाले शोरगुल के बीच वह नीचे उतरे, लोग उनकी ओर इस तरह बढ़े, गोया वे उनके ऊपर टूट

---

* 'प्राव्दा' की रिपोर्ट के अनुसार ये शब्द ख़र्राश के हैं। – सं०

लेफ़्टीनेंट श्मीद्त के नाम से पुकारी जानेवाली बख़्तरबन्द गाड़ी में पुतीलोव कारख़ाने के लाल गार्ड, अक्तूबर, १९१७।

पड़ेंगे... इसके बाद ख़िनचूक* नाम के एक भूरी बुच्ची दाढ़ी वाले अफ़सर ने बड़े मुलायम लहजे में समझाते हुए कहा: "मैं मोर्चे के प्रतिनिधियों की ओर से बोल रहा हूं। इस कांग्रेस में सेना को पर्याप्त प्रतिनिधित्व प्राप्त नहीं हुआ है। इतना ही नहीं, इस समय जब संविधान सभा के उद्घाटन में सिर्फ़ तीन हफ़्ते ही रह गये हैं, सेना सोवियतों की इस कांग्रेस को आवश्यक नहीं मानती..." उसके भाषण के बीच आवाज़ें और चीखें तेज़ होती गयीं और लोग और भी ज़ोर ज़ोर से पैर पटकने लगे। "सेना यह नहीं मानती कि सोवियतों की इस कांग्रेस को आवश्यक अधिकार प्राप्त है..." पूरे हॉल में सिपाही उठ कर खड़े होने लगे।

---

* सभी रिपोर्टों के अनुसार यह कार्चिन के भाषण का पूरक है। —सं०

पेत्रोग्राद की विबोर्ग बस्ती के 'नोवी लेसनर' कारखाने के लाल गार्ड।

उन्होंने चिल्ला कर पूछा, "आप किसकी ओर से बोल रहे हैं? आप किसके प्रतिनिधि हैं?"

"पांचवीं सेना, दूसरी एफ़० रेजीमेंट, पहली एन० रेजीमेंट, तीसरी एस० राइफ़ल्स की सोवियत की केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति की ओर से..."

"आपको चुना कब गया था? आप अफ़सरों के प्रतिनिधि हैं, सिपाहियों के नहीं! सिपाही इसके बारे में क्या कहते हैं?" फ़ब्तियां और सीटियां।

"हम मोर्चा-दल के लोग जो कुछ हुआ है और हो रहा है, उससे दस्तबरदार होते हैं और हम यह ज़रूरी समझते हैं कि क्रांति के उद्धार के लिए सभी चेतन क्रान्तिकारी शक्तियों को एकजुट किया जाये! मोर्चा-दल कांग्रेस का परित्याग करेगा... लड़ने की जगह बाहर सड़कों पर है!"

शोर, चीखें, "आप जनरल स्टाफ़ की ओर से बोलते हैं, सेना की ओर से नहीं!"

"मैं सभी चेतन सिपाहियों से अपील करता हूं कि वे इस कांग्रेस से निकल जायें!"

"कोर्नीलोवपंथी! प्रतिक्रांतिकारी! उकसावेबाज़!" लोगों ने गालियां बरसानी शुरू कीं।

और तब मेन्शेविकों की ओर से खिनचूक ने एलान किया कि प्रश्न के शान्तिपूर्ण समाधान की एक ही संभावना है – अस्थायी सरकार के साथ एक ऐसे नये मंत्रिमण्डल के गठन के लिए बातचीत शुरू करना, जिसे समाज की सभी श्रेणियों का समर्थन प्राप्त हो। वह कई मिनट तक बोल नहीं सके। और फिर अपनी आवाज़ बुलन्द करते हुए उन्होंने मेन्शेविकों की एक घोषणा को पढ़ा:

"चूंकि बोल्शेविकों ने दूसरी पार्टियों और दलों से सलाह किये बग़ैर पेत्रोग्राद सोवियत की सहायता से एक सैनिक षड्यन्त्र रचा है, हमारे लिए कांग्रेस में भाग लेना असम्भव हो गया है। हम इसलिए सभा त्याग करते हैं और दूसरे दलों को भी बुलावा देते हैं कि वे हमारा अनुसरण करें और परिस्थितियों पर विचार करने के लिए एक साथ बैठें!"

"ग़द्दार, भगोड़े!"

बीच बीच में प्रायः अविराम कोलाहल के ऊपर समाजवादी-क्रांतिकारियों की ओर से बोलते हुए गेंदेलमान की आवाज़ सुनाई दे जाती – वह शिशिर प्रासाद पर बमबारी के विरुद्ध प्रतिवाद कर रहे थे... "हम इस प्रकार की अराजकता का विरोध करते हैं..."

वह मंच से मुश्किल से ही उतरे होंगे कि एक नौजवान दुबला-पतला सिपाही, जिसकी आंखें चमक रही थीं, छलांग मारकर मंच के ऊपर चढ़ गया और उसने बड़े नाटकीय ढंग से अपना हाथ उठा कर कहा:

"साथियो!" हॉल में एकदम सन्नाटा छा गया। "मेरी **फ़मीलिया** (नाम) पेटेर्सन है और मैं दूसरी लाटवियाई राइफ़ल्स की ओर से बोल रहा हूं। आपने सैनिक समितियों के दो प्रतिनिधियों के वक्तव्य सुने; **अगर ये वक्ता सेना के प्रतिनिधि होते**, तो इन वक्तव्यों का कुछ मूल्य हो सकता था" ज़ोर की तालियां। "**परन्तु वे सिपाहियों का**

प्रतिनिधित्व नहीं करते! "और फिर अपना घूंसा दिखाते हुए उसने कहा, "बारहवीं सेना बहुत दिनों से आग्रह कर रही है कि सोवियत तथा सैनिक समिति का फिर से चुनाव किया जाये, परन्तु आपकी अपनी **त्से-ई-काह** की ही तरह हमारी समिति ने भी सितम्बर के अन्त तक आम सिपाहियों के प्रतिनिधियों की मीटिंग बुलाने से इनकार किया, ताकि ये प्रतिक्रियावादी इस कांग्रेस के लिए अपने नक़ली प्रतिनिधि चुन सकें। मैं आपसे कहता हूं, लाटवियाई सिपाहियों ने बारम्बार कहा है, 'हमें और प्रस्ताव नहीं चाहिये! हमें और बातचीत नहीं चाहिये! हम कथनी नहीं, करनी चाहते हैं! हमारे हाथ में सत्ता आनी ही चाहिये!' इन प्रवंचक प्रतिनिधियों को कांग्रेस छोड़ कर जाने दीजिये! सेना उनके साथ नहीं है!"

सभा भवन तालियों की गड़गड़ाहट से हिल उठा। अधिवेशन की पहली घड़ी में घटना-चक्र की तेज़ी से हतबुद्धि हो कर, तोपों के धमाकों से चौंक कर प्रतिनिधियों ने कुछ हिचकिचाहट दिखाई। घंटे भर तक कांग्रेस के मंच से उनके ऊपर हथौड़े की एक चोट के बाद दूसरी चोट पड़ी थी, जिसने उन्हें संहत तो किया पर चुटीला भी किया। तब क्या वे अकेले हैं? क्या रूस उनके ख़िलाफ़ उठ रहा है? क्या यह सच है कि सेना पेत्रोग्राद पर चढ़ाई कर रही है? परंतु फिर इस निर्मल दृष्टि वाले नौजवान सिपाही ने भाषण दिया और, जैसे अंधेरे में बिजली कौंध गई हो, उन्होंने देखा कि वह सच कह रहा है...**यह थी सिपाहियों की सच्ची आवाज़** – लाखों वर्दीपोश मज़दूर और किसान, जिनके बीच हलचल थी और उथल-पुथल थी, उन्हीं जैसे लोग थे और उनके विचार और भावनायें भी उन्हीं जैसी थीं।

बोलने वालों में और भी सिपाही... मोर्चे से आने वाले प्रतिनिधियों की ओर से ग्जेलश्चाक ने कहा कि इन प्रतिनिधियों ने चन्द वोटों के बहुमत से ही सभा त्याग करने का फ़ैसला किया था और **बोल्शेविक सदस्यों ने तो उस मतदान में भाग भी नहीं लिया था**, क्योंकि उनका मत था कि प्रतिनिधि गुटों के अनुसार नहीं, राजनीतिक पार्टियों के हिसाब से बंटें। उन्होंने कहा, "मोर्चे के सैकड़ों प्रतिनिधि मतदान में सिपाहियों के भाग लिए बिना ही चुने जा रहे हैं, क्योंकि सैनिक समितियां

आम सिपाहियों की सच्ची प्रतिनिधि नहीं रह गई हैं..." लुक्यानोव ने बुलन्द आवाज़ में कहा कि ख़र्राश और ख़िनचूक जैसे अफ़सर इस कांग्रेस में सेना का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकते, वे केवल सर्वोच्च कमान का प्रतिनिधित्व कर सकते हैं। "खाइयों के सच्चे 'बाशिन्दे' दिलोजान से चाहते हैं कि सोवियतों के हाथों में सत्ता का अन्तरण हो और वे इन सोवियतों से बड़ी आस लगाये हैं!.." धारा का रुख़ बदल रहा था।

इसके बाद यहूदी सामाजिक-जनवादियों के संगठन **बुन्द** की ओर से अब्रामोविच बोलने के लिए खड़े हुए – मोटे शीशे के नीचे उनकी आंखें चमक रही थीं और वह गुस्से से कांप रहे थे।*

"पेत्रोग्राद में इस समय जो कुछ हो रहा है, वह एक भीषण दुर्भाग्य है! हमारा **बुन्द** दल मेन्शेविकों और समाजवादी-क्रांतिकारियों की घोषणा को स्वीकार करता है और वह कांग्रेस में नहीं रह सकता।" फिर उन्होंने अपना हाथ उठा कर बुलन्द आवाज़ में कहा, "रूसी सर्वहारा वर्ग के प्रति हमारा कर्तव्य हमें इस बात की इजाज़त नहीं देता कि हम यहां बैठे रहें और अपने ऊपर इन अपराधों के लिए ज़िम्मेदारी ओढ़ें। क्योंकि शिशिर प्रासाद पर गोलाबारी बन्द नहीं हो रही है, मेन्शेविकों और समाजवादी-क्रांतिकारियों तथा किसानों की सोवियत की कार्यकारिणी समिति के साथ मिलकर नगर दूमा ने अस्थायी सरकार के संग-संग मर मिटने का फ़ैसला किया है। हम उनके साथ ही बाहर जा रहे हैं! हम निहत्थे ही आतंकवादियों की मशीनगनों के सामने अपना सीना खोल देंगे... हम इस कांग्रेस के सभी प्रतिनिधियों को बुलावा देते हैं..." सीटियों, धमकियों, गालियों की ऐसी धुआंधार बौछार शुरू हुई कि उनकी बात अधूरी ही रह गई। और जब एक साथ पचास प्रतिनिधि उठ कर लोगों को ठेलते-ठालते बाहर निकल गये, यह बौछार इतनी तेज़ हो गयी कि मालूम होता था आसमान फट पड़ेगा।

कामेनेव ने घंटी बजाई और कड़ककर कहा, "आप सब बैठे रहें, हम अपना काम जारी रखेंगे!" फिर त्रोत्स्की उठे – उनका चेहरा कठोर

---

* जॉन रीड ने शायद दो भाषण – अब्रामोविच और एर्लिख़ के भाषण – गड्डमड्ड कर दिये हैं। – **सं०**

हो रहा था और उसकी आभा जैसे जाती रही थी – और उन्होंने मन्द्र, गम्भीर स्वर में, शान्त, आवेशहीन घृणा व्यक्त करते हुए कहा, "ये सारे तथाकथित समाजवादी समझौतापरस्त, ये घबराये मेन्शेविक, समाजवादी-क्रांतिकारी और **बुन्द** वाले – इन्हें जाने दीजिये! ये बस कूड़ा-कचरा हैं, जिन्हें इतिहास के कूड़ेखाने में फेंक दिया जायेगा!"

बोल्शेविकों की ओर से रियाज़ानोव ने कहा कि नगर दूमा के अनुरोध पर सैनिक क्रांतिकारी समिति ने समझौते की बातचीत का प्रस्ताव करने के लिए शिशिर प्रासाद में एक प्रतिनिधिमण्डल भेजा है। "इस प्रकार हमने ख़ून-ख़राबा न होने देने के लिए अपनी भरसक सब कुछ किया है..."

हम जल्दी जल्दी वहां से निकले और क्षण भर के लिए उस कमरे के सामने रुके, जहां तार की खट-खट की आवाज़ के बीच सैनिक क्रांतिकारी समिति धुआंधार काम कर रही थी, जहां दौड़ते-हांफते हरकारे अन्दर जाते और बाहर की ओर भागते और जहां से कमिसार, जिनके हाथों में ज़िन्दगी और मौत के अख़्तियार दिए हुए थे, शहर के कोने-कोने में भेजे जा रहे थे। दरवाज़ा खुला और बासी हवा और सिगरेट के धुएं का एक झोंका बाहर आया। हमें भीतर की एक झलक मिली – कई बिखरे बालों वाले आदमी शेडदार बत्ती की रोशनी में एक नक़शे के ऊपर झुके हुए थे... कामरेड योज़ेफ़ोव-दुख़्वीन्स्की नामक एक हंसमुख और घने सुनहरे बालों वाले नौजवान ने हमारे लिए पास बनाये।

जब हम सर्द रात में बाहर निकले, स्मोल्नी के सामने की सारी ज़मीन जैसे मोटरों का एक भारी अड्डा बनी हुई थी, जहां गाड़ियां लगातार आ-जा रही थीं। उनके शोर में भी दूर कहीं रह रह कर तोप के छूटने की आवाज़ सुनाई दे जाती। एक बहुत बड़ी ट्रक वहां खड़ी थी, उसका इंजन शोर कर रहा था और पूरी ट्रक को हिलाये दे रहा था। लोग उसमें बंडल उछाल रहे थे और दूसरे लोग, जिनके पास बन्दूकें थीं, उन्हें लोक रहे थे।

"आप लोग कहां जा रहे हैं?" मैंने चिल्ला कर पूछा।

"अन्दर शहर में, चारों ओर – सभी जगह," एक नाटे क़द के मज़दूर ने बड़े जोश से हाथ झटकारते और हंसते हुए कहा।

हमने अपने पास दिखाये ; देखकर उन्होंने कहा, "चले चलो! लेकिन वे शायद गोलियां चलायें।" हम अन्दर चढ़ गये। ड्राइवर ने खटाक से क्लच दबाया और वह भारी ट्रक एक ज़बरदस्त झटके के साथ आगे बढ़ी ; हम झटका खा कर पीछे उन लोगों पर गिरे, जो अभी अन्दर चढ़ रहे थे। गाड़ी चली, उस फाटक से निकलती हुई, जहां एक बड़ा अलाव जलाया गया था और फिर बाहरी फाटक से, जहां एक और अलाव जल रहा था। उसकी लाल रोशनी चारों ओर बन्दूकें लिए बैठे मज़दूरों के चेहरों पर चमक रही थी। फिर गाड़ी हचकोले खाती और कभी इधर, कभी उधर झुकती पूरी रफ़्तार से सुवोरोव्स्की मार्ग से चली ... एक आदमी ने जिस काग़ज़ में बंडल लिपटा था उसे फाड़ डाला और दनादन हाथ हाथ भर पर्चे उठा कर उन्हें हवा में उछालने लगा। हमने भी उसकी देखा-देखी यही किया। हम अंधेरी सड़क पर बेतहाशा भागे जा रहे थे और पीछे गाड़ी के साथ सफ़ेद पर्चों के दुमछल्ले हवा में तैर रहे थे और चक्कर खा रहे थे। राह चलते लोग, जो इतनी रात गये इक्के-दुक्के आ जा रहे थे, उन्हें झुक कर उठा लेते। मोड़ों पर आग सेंकते हुए गश्ती सिपाही हाथ फैलाये उन्हें पकड़ने के लिए दौड़ पड़ते। कभी कभी सामने अंधेरे में हथियारबन्द आदमियों की शक्लें नज़र आतीं और वे बन्दूकें तानते हुए चिल्लाते "**स्तोई !**" (ठहर जाओ!) और हमारा ड्राइवर उत्तर में कुछ अनबूझ बात कहता और हम घड़ घड़ करते आगे बढ़ जाते ...

मैंने एक पर्चा उठाया और सड़क की एक झिलमिलाती हुई बत्ती की रोशनी में पढ़ा :

रूस के नागरिकों के नाम

अस्थायी सरकार का तख़्ता उलट दिया गया है। राज्य-सत्ता मज़दूरों तथा सैनिकों के प्रतिनिधियों की पेत्रोग्राद सोवियत के अंग, सैनिक क्रान्तिकारी समिति के हाथों में आ गयी है, जो पेत्रोग्राद सर्वहारा तथा गैरिसन की अगुआई कर रही है।

जिस ध्येय के लिए जनता संघर्ष कर रही थी – जनवादी शान्ति-

सन्धि की अविलम्ब प्रस्तावना, भूमि पर ज़मींदारों के स्वामित्व का उन्मूलन, उत्पादन पर मज़दूरों का नियन्त्रण, सोवियत सरकार की स्थापना – वह ध्येय दृढ़ रूप से प्राप्त कर लिया गया है।

मज़दूरों, सिपाहियों और किसानों की क्रान्ति ज़िन्दाबाद!

सैनिक क्रान्तिकारी समिति,

मज़दूरों और सिपाहियों के प्रतिनिधियों की पेत्रोग्राद सोवियत।

मेरी बग़ल में बैठा एक ऐंची आंख वाला आदमी, जिसका चेहरा मंगोलियाई था और जो काकेशियाई क़िस्म का लबादा पहने था, बोला, "ख़बरदार! यहां हमेशा उकसावेबाज़ खिड़कियों से गोली चलाते हैं!" हम ज़्नामेन्स्काया चौक में, जहां सुनसान अंधेरा था, मुड़े, त्रुबेत्स्कोई द्वारा बनाई गई बर्बर मूर्ति* की ओर से घूम कर नेव्स्की के प्रशस्त मार्ग पर आ गये। गाड़ी में तीन आदमी बन्दूकें लिये फ़ायर करने के लिए तैयार खड़े, खिड़कियों की ओर देख रहे थे। हमारे पीछे लोग भागे आ रहे थे और पर्चे उठाने के लिए झुक रहे थे – उनके कारण सड़क पर काफ़ी चहल-पहल हो गयी थी। अब तोप के धमाके सुनाई नहीं पड़ रहे थे, और जितना ही हम शहर के अन्दर और शिशिर प्रासाद के नज़दीक पहुंचते गये, सड़कें उतनी ही ख़ामोश, उतनी ही वीरान दिखाई देती थीं। नगर दूमा का भवन ख़ूब जगमग था। उससे और आगे हम लोगों की एक क्षुब्ध भीड़ को और मल्लाहों की एक कतार को देख सकते थे। मल्लाहों ने ग़ुस्से से चिल्ला कर हमें रुकने को कहा। गाड़ी धीमी हो गयी और हम उतर पड़े।

सामने एक आश्चर्यजनक दृश्य था। येकातेरीना नहर के मोड़ पर, एक आर्क-लैम्प के प्रकाश में नेव्स्की मार्ग के आर-पार हथियारबन्द मल्लाह पंक्तिबद्ध घेरा डाले खड़े थे और चार चार की क़तार में खड़े लोगों की एक भीड़ का रास्ता रोके हुए थे। क़रीब तीन-चार सौ लोग

---

* ज़ार अलेक्सान्द्र तृतीय की मूर्ति। – **सं०**

होंगे – लंबे कोट पहने साहब, सजी-धजी औरतें, अफ़सर – हर तरह के और हर हालत के लोग थे। हमने पहचाना, उनमें कांग्रेस के बहुत से प्रतिनिधि थे, मेन्शेविकों तथा समाजवादी-क्रान्तिकारियों के नेता थे—किसानों की सोवियतों के दुबले-पतले लाल दाढ़ी वाले सभापति अव्क्सेन्त्येव, केरेन्स्की के प्रवक्ता सोरोकिन, ख़िनचूक, अब्रामोविच; और उन सब के आगे पेत्रोग्राद के मेयर, सफ़ेद दाढ़ी वाले बूढ़े श्रेइदेर और अस्थायी सरकार में खाद्य-मन्त्री प्रोकोपोविच। मन्त्री महोदय को उसी दिन सुबह गिरफ़्तार किया गया था और फिर छोड़ दिया गया था। मेरी निगाह «Russian Daily News»* के रिपोर्टर माल्किन पर पड़ी। "शिशिर प्रासाद में मृत्यु का वरण करने जा रहे हैं," उसने हंसते हुए कहा। जुलूस रुका खड़ा था, लेकिन उसकी अगली क़तार से ज़ोर ज़ोर से बहस करने की आवाज़ें आ रही थीं। श्रेइदेर और प्रोकोपोविच एक लम्बे-तड़ंगे मल्लाह पर, जो टुकड़ी का नायक मालूम होता था, गरज-तड़प रहे थे।

"हम मांग करते हैं कि हमें जाने दिया जाये," उन्होंने चिल्ला कर कहा। "देखिये, ये साथी सोवियतों की कांग्रेस से आये हैं! उनके कार्डों पर नज़र डालिये! हम शिशिर प्रासाद जा रहे हैं!"

मल्लाह स्पष्टतः उलझन में था। उसने अपनी बड़ी बड़ी उंगलियों से सिर खुजलाते हुए, भौंहें सिकोड़ते हुए और कुछ भुनभुनाते हुए कहा, "मुझे समिति का आदेश है कि किसी को भी शिशिर प्रासाद जाने न दिया जाये। फिर भी मैं स्मोल्नी टेलीफ़ोन करने के लिये एक साथी को भेजता हूं..."

"हम आग्रह करते हैं कि हमें जाने दिया जाये! हमारे हाथ में हथियार नहीं हैं और आप चाहे हमें इजाज़त दें या न दें, हम जायेंगे ज़रूर!" बूढ़े श्रेइदेर ने अत्यन्त उत्तेजित होकर कहा।

"हमें हुक्म है..." मल्लाह ने चिढ़ कर दोहराया।

"अगर आप हमारे ऊपर गोलियां चलाना चाहते हैं, तो बेशक चलाइये! लेकिन हम जायेंगे ज़रूर! बढ़ो, साथियो!" सभी ओर से आवाज़ें आईं। "अगर आप का हृदय इतना कठोर है कि आप रूसियों

---

* १९१७ में पेत्रोग्राद में निकलने वाला एक अंग्रेजी समाचारपत्र। – सं०

पर और अपने साथियों पर गोली चला सकते हैं, तो ज़रूर चलाइये, हम मरने के लिये तैयार हैं! हम आपकी बन्दूकों के सामने अपना सीना खोल देने के लिये तैयार हैं!"

"नहीं," मल्लाह ने बिना टस से मस हुए कहा। "मैं आपको हरगिज़ जाने की इजाज़त नहीं दे सकता।"

"लेकिन अगर हम आगे बढ़ें, तो आप क्या करेंगे? क्या आप गोली चलायेंगे?"

"नहीं, मैं उन लोगों पर गोली नहीं चलाऊंगा, जिनके हाथ में हथियार नहीं हैं। हम निहत्थे रूसियों पर गोली नहीं चलायेंगे..."

"हम ज़रूर जायेंगे! आप कर ही क्या सकते हैं?"

"हम कुछ करेंगे ही," मल्लाह ने जवाब दिया। लेकिन स्पष्टत: उसकी समझ में यह नहीं आ रहा था कि वह क्या करेगा। "हम आपको हरगिज़ जाने नहीं दे सकते। हम कुछ न कुछ करेंगे ही।"

"आप क्या करेंगे? आप क्या करेंगे?"

एक और मल्लाह ग़ुस्से से भरा हुआ वहां आया। "हम आपकी मरम्मत करेंगे!" उसने ज़ोरदार लहजे में कहा। "और ज़रूरत होने पर हम गोली भी चलायेंगे। आप घर जाइये और हमें छेड़िये नहीं!"

उसकी इस बात से लोग बेतरह चिढ़ कर चीखने-चिल्लाने लगे। प्रोकोपोविच वहां पड़ी हुई एक पेटी-वेटी जैसी चीज़ पर चढ़ गये थे और अपनी छतरी हिलाते हुए उन्होंने एक भाषण दे डाला:

"साथियो और नागरिको," उन्होंने कहा। "हमारे ऊपर हाथ उठाया जा रहा है! हम यह गवारा नहीं कर सकते कि इन अनपढ़ गंवार लोगों के हाथ से हमारे जैसे निर्दोष आदमियों का ख़ून बहे! ये स्विचमैन..." ("स्विचमैन" से उनका क्या मतलब था, यह मैं आज तक समझ नहीं सका हूं) "...हमें इस सड़क पर गोलियों से भूनें, यह हमारे लिए अपमानजनक है। आइये, हम दूमा लौट जायें और इस बात पर विचार करें कि देश तथा क्रांति को बचाने का सबसे अच्छा तरीक़ा क्या है!"

इस पर जुलूस चुपचाप बड़े शोभनीय ढंग से पीछे मुड़ पड़ा और उसी तरह चार चार की क़तार में नेव्स्की मार्ग पर बढ़ा। रक्षकों का

ध्यान बंट जाने से फ़ायदा उठा कर हम चुपके से घेरे के भीतर घुस गये और शिशिर प्रासाद की ओर बढ़े।

उधर की ओर घुप अंधेरा था और वहां सख़्त, तुले हुए सिपाहियों और लाल गार्डों के पिकेट-दलों को छोड़ कर कहीं कोई हरकत न थी। कज़ान गिरजाघर के सामने बीच सड़क में तीन इंच के मुंह वाली एक मैदानी तोप देखी जा सकती थी, जो घरों की छतों के ऊपर अपना आख़िरी गोला दाग़ने के बाद उसके झटके से एक ओर को झुक गयी थी। हर दहलीज़ पर सिपाही खड़े धीरे धीरे बातें कर रहे थे और नीचे पुलिस पुल की ओर बड़े ध्यान से देख रहे थे। मैंने सुना, एक आदमी कह रहा था: "हो सकता है, हमने ग़लती ही की हो..." हर मोड़ पर गश्ती दस्ते आने जाने वालों को रोक रहे थे। इन दस्तों की सदस्यता बड़ी दिलचस्प थी, क्योंकि उनमें नियमित सैनिकों की कमान निरपवाद रूप से किसी न किसी लाल गार्ड के हाथ में थी... गोलाबारी बन्द हो चुकी थी।

हम मोर्स्कीया मार्ग पर पहुंचे ही थे कि एक आदमी ने चिल्ला कर कहा, **युंकरों** ने ख़बर भेजी है—वे चाहते हैं कि हम जाकर उन्हें बाहर निकालें!" सिपाहियों के बीच हुक्म देने की आवाज़ें आने लगीं और घुप अंधेरे में हमने देखा एक धुंधला-धुंधला जनसमूह आगे बढ़ रहा था। शस्त्रों की झनकार और पगध्वनि को छोड़ कर और कोई ध्वनि न थी। हम सबसे अगली पांतों के साथ क़दम मिला कर चल दिये।

जैसे एक सियाह दरिया उमड़ पड़ा हो, हम पूरी सड़क को भरे हुए लाल मेहराबी दरवाज़े से निकले—हमारे लबों पर कोई गीत नहीं था, न हंसी थी, न कोई जोश देने वाला नारा। जो आदमी ठीक मेरे सामने था, उसने आहिस्ता आवाज़ में कहा, "ख़बरदार, साथियो, उनका एतबार न कीजिये। वे ज़रूर गोली चलायेंगे!" खुली जगह में आकर हम दोहरे झुके और एक दूसरे से सटे-सटे दौड़ने लगे। अचानक हम अलेक्सान्द्र की लाट की कुर्सी के पीछे आकर रुक गये।

"उनके हाथों आगमं मे कितने मारे गये?" मैंने पूछा।

"मैं नहीं जानता, शायद दस..."

कुछ मिनटों तक वहां सैकड़ों आदमी अफ़रा-तफ़री में खड़े रहे, लेकिन उसके बाद यह सेना आश्वस्त सी हो कर और बिना कोई हुक्म

मिले अचानक ही आगे बढ़ने लगी। अब शिशिर प्रासाद की सभी खिड़कियों से आनेवाली रोशनी में मैं देख सकता था कि सबसे आगे के दो या तीन सौ आदमी लाल गार्ड थे और उनमें सिपाही बस थोड़े से छिटपुट ही थे। लकड़ियों को जमा करके जो बैरिकेड बनाया गया था, हम उस पर चढ़ गये और जब हम दूसरी ओर नीचे कूदे, हम विजय के उल्लास से चिल्ला पड़े, क्योंकि हमारे पैरों के नीचे ढेर की ढेर बन्दूकें पड़ी थीं, जो **युंकरों** ने फेंक दी थीं। सदर फाटक के दोनों ओर दरवाज़े पूरे के पूरे खुले हुए थे और उनसे निकल कर रोशनी बाहर फैल रही थी, लेकिन लकड़ियों के उस अम्बार से चूं तक की आवाज़ नहीं आ रही थी।

बेक़रार भीड़ के एक झोंके के साथ हम भी दायीं ओर के दरवाज़े से अन्दर पहुंच गये। यह दरवाज़ा एक बड़े बेआरास्ता मेहराबी कमरे में खुलता था। यह था प्रासाद के पूर्वी खण्ड का तहख़ाना ; जिससे कितने ही गलियारे निकले हुए थे और सीढ़ियां ऊपर गई थीं। ज़मीन पर कई बड़ी बड़ी पेटियां पड़ी हुई थीं, जिन पर लाल गार्ड तथा सिपाही बेतहाशा टूट पड़े, उन्हें अपनी बन्दूकों के कुन्दों से तोड़ने लगे और उनके अन्दर से क़ालीन, पर्दे, कपड़े, चीनी मिट्टी और शीशे के बर्तन निकालने लगे ... एक आदमी अपने कंधे पर कांसे की एक दीवारगीर घड़ी उठाये बड़े शान से इतराता हुआ चल रहा था। एक दूसरे आदमी के हाथ शुतुर्मुर्ग़ के पंखों का एक गुच्छा लगा, जिसे उसने अपनी टोपी में लगा लिया। लूट शुरू ही हो रही थी, जब किसी ने चिल्लाकर कहा, "साथियो! किसी चीज़ पर हाथ न लगाइये, किसी चीज़ को न उठाइये! यह सब जनता की सम्पत्ति है!" और फ़ौरन बीस आवाज़ों ने इस बात को दोहराया, "बन्द करो! जो कुछ उठाया है, उसे वापिस रखो! किसी चीज़ को हाथ मत लगाओ! यह सब कुछ जनता की सम्पत्ति है!" कितने ही हाथों ने लूटमार शुरू करने वालों की गरदन नापी। जिन लोगों के पास दमिश्की वस्त्र या पर्दे थे, उनके हाथ से वे छीन लिये गये ; दो आदमियों ने झपट कर कांसे की घड़ी ले ली। जल्दी जल्दी और बेढंगे तरीक़े से ये चीज़ें पेटियों में वापिस डाल दी गईं और स्वयं-निर्दिष्ट प्रहरी चौकसी पर तैनात हो गये। यह सब कुछ बिलकुल

ही अपने आप हो गया। गलियारों और सीढ़ियों से दूर होती हुई और हल्की पड़ती हुई आवाजें आ रही थीं, "क्रांतिकारी अनुशासन! जनता की सम्पत्ति ..."

हम पीछे मुड़कर पश्चिमी खण्ड में बायें दरवाज़े की ओर बढ़े। वहां भी व्यवस्था स्थापित की जा रही थी। भीतरी दरवाज़े से अपना सिर बाहर निकाल कर एक लाल गार्ड ने कड़ी आवाज़ में कहा, "महल से बाहर निकलो! साथियो, हमें यह दिखा देना है कि हम चोर और लुटेरे नहीं हैं। जब तक कि हम संतरियों को तैनात नहीं कर लेते, कमिसारों को छोड़ कर बाक़ी सभी महल से बाहर निकल जायें।"

दो लाल गार्ड, एक सिपाही और दूसरा अफ़सर, हाथ में रिवाल्वर लिये खड़े थे। उनके पीछे एक मेज के साथ एक दूसरा सिपाही हाथ में काग़ज़ और क़लम लिये बैठा था। अन्दर दूर और नज़दीक सभी जगह एक ही आवाज़ गूंज रही थी, "सब बाहर निकल जायें! सब बाहर जाओ!" और सिपाही एक दूसरे को धक्का देते, एक दूसरे से कंधे रगड़ते, शिकायत करते, बहस करते दरवाज़े से धड़ाधड़ बाहर निकलने लगे। जैसे ही एक आदमी दरवाज़े पर पहुंचता, उसे स्वयं-निर्दिष्ट समिति पकड़ लेती, उसकी जेबों को उलट देती और उसके कोट के नीचे देखती। जो भी चीज़ स्पष्टतः उसकी अपनी न होती, वह उससे छीन ली जाती, मेज़ के साथ बैठा आदमी उसे काग़ज़ में दर्ज कर लेता और फिर उसे एक छोटे से कमरे में ले जाकर धर दिया जाता। तरह तरह की अजीबोग़रीब चीज़ें ज़ब्त की गईं। छोटी छोटी मूर्तियां, दावातें, पलंगपोश जिन पर शाही राजचिह्न कढ़े हुए थे, शमादान, एक छोटा सा तैल-चित्र, [illegible], सोने की मुठिया वाली तलवारें, साबुन की टिकियां, हर तरह के कपड़े, कम्बल वग़ैरह। एक लाल गार्ड तीन बन्दूकें लिये आया, जिनमें से दो युंकरों से छीनी गई थीं; एक दूसरे लाल गार्ड के साथ में चार पोर्टफ़ोलियो थे, जिनमें तहरीरी दस्तावेज़ें ठूंस ठूंस कर भरी हुई थीं। अपराधी या तो चिढ़ कर इन चीज़ों को हवाले करते या बड़ी मासूमियत से बच्चों की तरह दलीलें देते। समिति के सदस्यों ने, सबके सब एक साथ बात करते हुए, उन्हें समझाया कि जो लोग जनता के

ध्येय के लिये लड़ने हैं, उनके लिये चोरी करना शोभनीय नहीं है। उनकी बात का असर यह होता कि अक्सर जिन्हें पकड़ा गया था, वे रुख़ बदल कर बाक़ी साथियों की तलाशी लेने में मदद देने लगते।[3]

और फिर **युंकरों** की टोलियां आयीं – तीन-तीन, चार-चार एक साथ। समिति उनके ऊपर बड़े जोशोखरोश से टूट पड़ी, और उनकी तलाशी लेते हुए फ़ब्तियां कसती रही, "ये हैं साले उकसावेबाज़! कोर्नीलोवपंथी कहीं के! प्रतिक्रांतिकारी! जनता के हत्यारे!" लेकिन उन्हें कोई ज़रब नहीं पहुंचायी गयी, हालांकि **युंकर** डरे और घबराये हुए थे। उनकी जेबें भी लूटी हुई छोटी-मोटी चीज़ों से भरी थीं, जिन्हें उसी मुहर्रिर ने बड़ी सावधानी से दर्ज किया और उस छोटे से कमरे में जमा कर दिया... **युंकरों** के पास जो हथियार थे, वे रखवा लिये गये। "अब फिर तुम जनता के ख़िलाफ़ हथियार उठावोगे?" लोगों ने चिल्ला चिल्ला कर उनसे पूछा।

"नहीं, नहीं," युंकरों ने एक एक कर जवाब दिया। इसके बाद उन्हें छुट्टा छोड़ दिया गया।

हमने पूछा कि क्या हम अन्दर जा सकते हैं। समिति को निश्चय न था, परन्तु एक लंबे-तड़ंगे लाल गार्ड ने दृढ़ता से उत्तर दिया कि अन्दर जाना मना है। "बहरसूरत, तुम हो कौन?" उसने पूछा, "मुझे कैसे मालूम हो कि तुम सारे केरेन्स्की के आदमी नहीं हो?" (हम पांच थे, जिनमें दो औरतें भी थीं।)

"**पजालस्ता, तोवारिश्ची!** मेहरबानी करके रास्ता दीजिये, साथियो!" यह कहते हुए एक सिपाही और एक लाल गार्ड भीड़ को हटाते-बढ़ाते दरवाज़े पर आ गये। साथ में संगीनें लिये दूसरे गार्ड भी थे। उनके पीछे एक एक कर सिविलियन पोशाक में आधे दर्जन आदमी चल रहे थे। ये थे अस्थायी सरकार के सदस्य। पहले किशकिन आये, चेहरा खिंचा और बुझा हुआ; उनके पीछे रुतेनबेर्ग, निगाहें नीचे झुकी हुईं मगर गुस्से में; उनके बाद तेरेश्चेन्को, चारों ओर चौकन्नी नज़र डालते हुए – उन्होंने हमारी ओर रुखाई से एकटक देखा... वे चुपचाप वहां से निकल गये – किसी ने उन्हें कुछ कहा-सुना नहीं। विजयी विद्रोहियों ने उन्हें देखने के लिए भीड़ ज़रूर लगायी, लेकिन गुस्से से भुनभुनाने

वाले दो-चार ही थे। हमें बाद में मालूम हुआ कि सड़क पर लोग उन्हें नोच डालने पर आमादा थे और गोलियां भी चलायी गयीं, लेकिन सिपाहियों ने बाहिफ़ाज़त उन्हें पीटर-पाल क़िले में पहुंचा दिया ...

इस बीच हम प्रासाद में घुस गये—किसी ने हमें मना नहीं किया। अभी भी बहुत काफ़ी लोग आ जा रहे थे, विशाल भवन के नये देखे गये भागों को ढूंढ़ा जा रहा था, **युंकरों** की रूपोश गैरिसनों की तलाश की जा रही थी, जिनका वास्तव में अस्तित्व ही न था। हम ऊपर चढ़ गये और एक कमरे के बाद दूसरे कमरे में घूमते रहे। प्रासाद के इस भाग में दूसरी टुकड़ियों ने भी नेवा की ओर से प्रवेश किया था। विशाल राजकीय कक्षों के चित्र, मूर्तियां, परदे और क़ालीनें ज्यों की त्यों थीं। परन्तु कार्यालयों में सभी मेज़ों और आलमारियों को छान डाला गया था और ज़मीन पर काग़ज़-पत्र बिखेर दिये गये थे। रिहायशी हिस्से में चारपाइयां नंगी कर दी गयी थीं और कपड़े रखने की आलमारियों को खींच-खांच कर खोल डाला गया था। लूट की चीज़ों में अगर कोई चीज़ सबसे क़ीमती समझी जाती थी, तो वह पहनने का कपड़ा थी, जिसकी मेहनतकशों को सख़्त ज़रूरत थी। एक कमरे में, जहां मेज़-कुर्सियां जमा थीं, हमने दो सिपाहियों को चौंका दिया, जो कुर्सियों की मोटी स्पेनी चमड़े की गद्दियों को उधेड़ रहे थे। उन्होंने बताया कि वे उससे जूते बनवायेंगे ...

प्रासाद के पुराने नौकर अपनी लाल, नीली और सुनहरी वर्दियां पहने हुए घबराये से खड़े थे और अभ्यास-वश बार बार कह रहे थे, "आप वहां नहीं जा सकते, मालिक! वहां जाना मना है..." हम अन्दर घुसते घुसते आख़िरकार स्वर्ण तथा मैलाकाइट कक्ष में पहुंचे, जहां लाल किमख़ाब के परदे लटक रहे थे। यहां पूरे दिन और रात मन्त्रिमण्डल की बैठक होती रही थी और यहीं प्रासाद के **श्वेइत्सारों** ने मन्त्रियों को लाल गार्डों के हवाले कर दिया था। हरे ऊनी कपड़े से ढंकी लम्बी मेज़ वैसे ही पड़ी थी, जैसे उन्होंने उसे गिरफ़्तार होने की घड़ी में छोड़ा था। हर ख़ाली कुर्सी के सामने क़लम और दावात और काग़ज़ था; काग़ज़ों पर कुछ न कुछ कार्रवाई करने की प्रारम्भिक योजनायें और घोषणाओं

के कच्चे मसौदे घसीटे गये थे। उनमें से अधिकांश को काट दिया गया था, क्योंकि उनकी निरर्थकता स्पष्ट हो गयी थी, काग़ज़ का बाक़ी हिस्सा ज्यामितीय रेखाओं से भरा पड़ा था, जो खोये-खोये भाव से उस वक़्त खींची गयी थीं, जब निराशा में डूबा लेखक एक मन्त्री के बाद दूसरे मन्त्री को हवाई स्कीमों का प्रस्ताव करते सुन रहा था। मैंने घसीटा हुआ एक परचा उठाया, जिस पर कोनोवालोव के हाथ से लिखा हुआ था, "अस्थायी सरकार सभी वर्गों से समर्थन की अपील करती है..."

यह हरगिज़ भूलना नहीं चाहिए कि यद्यपि शिशिर प्रासाद पर घेरा डाल दिया गया था, सरकार का मोर्चे से और रूस के प्रान्तों से सम्पर्क पूरे वक़्त बना हुआ था। बोल्शेविकों ने युद्ध-मन्त्रालय पर सुबह-सुबह ही क़ब्ज़ा कर लिया था, परन्तु उन्हें यह नहीं मालूम था कि अटारी में सैनिक तारघर काम कर रहा था, या यह कि एक प्राइवेट टेलीफ़ोन लाइन तारघर को शिशिर प्रासाद से जोड़ती थी। अटारी में बैठा एक नौजवान अफ़सर ढेरों अपीलें और घोषणायें पूरे दिन देश भर में भेजता रहा था और जब उसने सुना कि शिशिर प्रासाद का पतन हो गया, उसने अपना हैट उठाया और चुपके से बाइत्मीनान इमारत से बाहर निकल गया...

हम अपने पर्यवेक्षण में इतने तल्लीन थे कि बहुत देर तक हमारा ध्यान इस ओर नहीं गया कि हमारे चारों ओर जो सिपाही और लाल गार्ड थे, उनका रुख़ बदला हुआ है। जब हम एक कमरे से दूसरे कमरे में जा रहे थे, एक छोटी सी टोली हमारा पीछा कर रही थी। जिस विशाल चित्रशाला में हमने तीसरा पहर **युंकरों** के साथ बिताया था, वहां पहुंचते पहुंचते, हमारे पीछे लगभग एक सौ आदमियों की भीड़ जुट आयी थी। एक देव जैसा सिपाही हमारा रास्ता रोके खड़ा था, उसका चेहरा शक और ग़ुस्से से सियाह हो रहा था।

"आप लोग कौन हैं?" वह गुर्राया। "आप लोग यहां क्या कर रहे हैं?" और लोग भी धीरे धीरे वहां जमा हो गये और हमारी ओर घूरते हुए बड़बड़ करने लगे। मैंने एक आदमी को कहते सुना,

"**प्रोवोकातोरी**!" (उकसावेबाज़) "लुटेरे!" मैंने सैनिक क्रान्तिकारी समिति के पासों को दिखाया। सिपाही ने उन्हें इस तरह हाथ में लिया, जैसे वे उसके छूने से मैले हो जायेंगे, उन्हें उलट-पुलट कर अनबूझ भाव से देखा। ज़ाहिर था कि वह निपट निरक्षर था। उसने ज़मीन पर थूकते हुए उन्हें लौटा दिया। "**बुमागी**! कागज़ात!" उसने हिक़ारत से कहा। भीड़ घनी होने और हमारे गिर्द सिमटने लगी, जैसे गाय हांकते हुए किसी आदमी को मरकहे बैल घेर लें। मैंने देखा उनके पीछे एक अफ़सर निःसहाय भाव से खड़ा था, और मैंने उसकी गुहार की। वह लोगों को हटाते-बढ़ाते हमारी ओर आया।

"मैं कमिसार हूं," उसने मुझसे कहा। "आप कौन हैं? बात क्या है?" और लोग अपने ऊपर ज़ब्त कर इन्तज़ार करते रहे। मैंने अपने कागज़ात पेश किये। "आप लोग विदेशी हैं?" अफ़सर ने फ़्रांसीसी भाषा में जल्दी जल्दी बोलते हुए पूछा। "बहुत ही ख़तरनाक बात है..." और फिर वह हमारी दस्तावेज़ों को दिखाता हुआ भीड़ की ओर मुख़ातिब हुआ। "साथियो," उसने चिल्ला कर कहा। "ये लोग विदेशी साथी हैं – अमरीकी साथी। वे यहां इसलिए आये हैं कि अपने देशवासियों को सर्वहारा सेनां के साहस और क्रान्तिकारी अनुशासन के बारे में बता सकें!"

"आप यह कैसे जानते हैं?" देव जैसे सिपाही ने कहा। "मेरी बात मानिये, ये उकसावेबाज़ हैं! वे कहते हैं कि वे सर्वहारा सेना का क्रान्तिकारी अनुशासन देखने के लिए आये हैं, परन्तु वे महल के अन्दर आज़ादी से घूम रहे हैं, और क्या पता उनकी जेबों में लूट का माल भरा हो!"

"**प्राविल्नो**! ठीक बात है!" दूसरों ने हमारी ओर बढ़ते हुए कहा।

"साथियो! साथियो!" अफ़सर ने उनसे अपील करते हुए कहा और उसके माथे पर पसीने की बूंदें चमकने लगीं। "मैं सैनिक क्रान्तिकारी समिति का कमिसार हूं। आप मेरा विश्वास करते हैं? तो मैं आप से कहता हूं कि ये पास उन्हीं लोगों के दस्तख़त से जारी किये गये हैं, जिनके दस्तख़त से मेरा पास।"

वह हमें लिये नीचे उतरा और हमें प्रासाद से होते हुए एक दरवाज़े से बाहर निकाला, जो नेवा नदी की घाट की ओर खुलता था। दरवाज़े के सामने वही समिति, लोगों की तलाशी लेती हुई... "आप लोग बाल बाल बचे हैं," वह मुंह का पसीना पोंछते हुए भुनभुनाया।

"औरतों की बटालियन का क्या हुआ?" हमने पूछा।

"ओह – औरतों का!" उसने हंसकर कहा। "वे सब पीछे के एक कमरे में गठरी बनी बैठी थीं। उनके बारे में क्या किया जाये, हमारे लिए यह फ़ैसला करना बड़ा मुश्किल था। उनमें बहुतेरी आपे से बाहर हो गयी थीं और बकने-झकने लगी थीं। अन्त में हम उन्हें मार्च कराते हुए फ़िनलैण्ड-स्टेशन ले गये और वहां उन्हें लेवाशोवो जाने वाली एक गाड़ी में बैठा दिया, जहां उनका एक कैम्प है..."[4]

हम बाहर आये – सर्द रात बेचैन, घबराई हुई थी और उसमें अज्ञात सेनाओं के पदचापों की गूंज थी, गश्ती सिपाहियों की आवाज़ों की सनसनाहट थी। दरिया पार से, जहां पीटर-पाल का विशाल दुर्ग धुंधला-धुंधला नज़र आ रहा था, एक फटी आवाज़ आयी... नीचे पटरी पर राजमहल की कार्निस से, जहां क्रूज़र 'अव्रोरा' के दो गोले गिरे थे, टूटा हुआ पलस्तर बिखरा पड़ा था। गोलाबारी से बस यही एक नुक़सान हुआ था...*

सबेरे के तीन बज चुके थे। नेव्स्की मार्ग पर सड़क की सारी बत्तियां फिर जल रही थीं, तोप हटा ली गयी थी, और वहां युद्ध का कोई लक्षण था तो केवल यह कि लाल गार्ड और सिपाही अलाव के चारों ओर बैठे आग सेंक रहे थे। नगर शान्त था – संभवतः अपने पूरे इतिहास में वह कभी इतना शान्त न था। उस रात न तो कोई ठगी-बटमारी हुई, न एक भी चोरी।

---

* यह बात सही नहीं है कि 'अव्रोरा' क्रूज़र ने दो गोले दाग़े थे। दरअसल ७ नवंबर, १९१७ को पौने दस बजे रात में 'अव्रोरा' ने एक ख़ाली गोला दाग़ा था, जिसका प्रयोजन था शिशिर प्रासाद पर धावा बोलने के लिए संकेत देना। वह नुक़सान, जिसकी ओर जॉन रीड इशारा करते हैं, पीटर-पाल क़िले से गोलाबारी के कारण हुआ था। – सं०

लेकिन नगर दूमा का भवन प्रकाश से जगमग था। हम गैलरियों वाले अलेक्सान्द्र हॉल में गये, जिसकी दीवारों पर सुनहरे फ़्रेमों में जड़े हुए और लाल कपड़े से ढंके हुए शाही शबीह टंगे हुए थे। क़रीब एक सौ लोग मंच के गिर्द जमा थे, जहां स्कोबेलेव बोल रहे थे। उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि सार्वजनिक सुरक्षा समिति की सदस्य-संख्या बढ़ायी जानी चाहिए, ताकि सभी बोल्शेविक-विरोधी तत्त्वों को एक विशाल संगठन में एकजुट किया जा सके और उसे देश तथा क्रान्ति की उद्धार समिति का नाम दिया जाना चाहिए। हमारे देखते देखते यह उद्धार समिति गठित कर दी गयी – वही समिति, जो बोल्शेविकों की इतनी प्रबल शत्रु बन जाने वाली थी, और अगले सप्ताह में कभी तो अपने नाम से, जिससे उसकी जानिबदारी ज़ाहिर होती थी, और कभी बिल्कुल ग़ैरजानिबदार सार्वजनिक सुरक्षा समिति के नाम से सामने आने वाली थी...

दान, गोत्स और अव्क्सेन्त्येव वहां पर थे, कुछ विद्रोही सोवियत प्रतिनिधि, किसानों की सोवियतों की कार्यकारिणी समिति के सदस्य, बूढ़े प्रोकोपोविच और यहां तक कि विनावेर और अन्य कैडेटों समेत जनतन्त्र की परिषद् के सदस्य भी वहां थे। लीबेर ने चिल्ला कर कहा कि सोवियतों की कांग्रेस एक जायज़ कांग्रेस न थी, कि पुरानी **त्से-ई-काह** पदच्युत नहीं हुई है... देश के नाम एक अपील का मसौदा तैयार किया गया।

हमने एक बग्घी-गाड़ी को आवाज़ दी। "कहां जाना है?" परन्तु जब हमने कहा, "स्मोल्नी" **इज़्वोज़चिक** (कोचवान) ने सिर हिला कर कहा, "**नेत!** नहीं, भाई, मैं उस शैतानी जगह नहीं जाऊंगा..." घूमते घूमते थक कर चूर हो जाने के बाद ही हमें एक ऐसा कोचवान मिला, जो वहां जाने के लिए तैयार था – इसके लिए उसने तीस रूबल मांगे और हमें थोड़ा पहले ही उतार दिया।

स्मोल्नी भवन की खिड़कियों में अभी भी रोशनी थी। मोटरें बराबर आ जा रही थीं, और अभी भी धू धू कर जलते अलावों के चारों ओर एक-दूसरे से सटे बैठे सन्तरी हर आदमी से बड़े चाव से पूछते कि सबसे ताज़ा समाचार क्या है। भवन के गलियारे दौड़ते-भागते

आदमियों से भरे हुए थे – मैले-कुचैले लोग, जिनकी आंखें गढ़े में धंसी हुई थीं। कई समिति-कक्षों में लोग फ़र्श पर सो रहे थे, बग़ल में उनकी बन्दूकें पड़ी हुई थीं। सभा-त्याग करनेवाले प्रतिनिधियों के बावजूद, सभा मण्डप में लोग खचाखच भरे हुए थे – लग रहा था जैसे समुद्र गर्जन कर रहा है। जब हम अन्दर दाख़िल हुए, कामेनेव गिरफ़्तार मन्त्रियों की सूची पढ़ रहे थे। तेरेश्चेंको का नाम लेते ही लोग ख़ुशी से तालियां पीटने लगे और ठहाके लगाने लगे। रुतेनबेर्ग के नाम पर इतना जोश नहीं ज़ाहिर किया गया। पालचीन्स्की का नाम लेते ही लोग थुड़ी थुड़ी करने लगे, लानतें भेजने और तालियां पीटने लगे... सभा में घोषणा की गयी कि चुदनोव्स्की को शिशिर प्रासाद का कमिसार नियुक्त किया गया है।

इसी समय एक नाटकीय व्याघात उपस्थित हुआ। एक लम्बा-तड़ंगा दढ़ियल किसान, जो ग़ुस्से से कांप रहा था, मंच पर चढ़ आया और सभापति की मेज़ पर घूंसा जमाते हुए बोला:

"हम समाजवादी-क्रान्तिकारी इसरार करते हैं कि शिशिर प्रासाद में गिरफ़्तार समाजवादी मन्त्रियों को फ़ौरन रिहा किया जाये! साथियो! आपको मालूम है कि चार साथी, जिन्होंने अपनी जान पर खेल कर और अपनी आज़ादी को ख़तरे में डालकर ज़ार के निरंकुश शासन से संघर्ष किया, पीटर-पाल की जेल में – आज़ादी के तारीख़ी मक़बरे में – बन्द कर दिये गये हैं?" शोरग़ुल के बीच वह मेज़ पीटता रहा और चिल्लाता रहा। एक और प्रतिनिधि ऊपर चढ़ आया और उसकी बग़ल में खड़ा हो गया। सभापतिमण्डल की ओर इशारा करते हुए उसने कहा:

"क्या क्रान्तिकारी जन-साधारण चुपचाप हाथ पर हाथ धरे बोल्शेविकों की **ओख़राना** (ख़ुफ़िया पुलिस) द्वारा अपने नेताओं की मिट्टी पलीद होते देखते रहेंगे?"

त्रोत्स्की ने लोगों को ख़ामोश होने का इशारा करते हुए कहा, "ये 'साथी' सट्टेबाज़ केरेन्स्की के साथ मिलकर सोवियतों को कुचल देने का षड्यन्त्र रचते हुए पकड़े गये हैं, क्या इनके साथ नर्मी के साथ पेश आने की कोई वजह है? १६ और १८ जुलाई के बाद, उन्होंने हमारे प्रति

बहुत सौजन्य नहीं दिखाया था!" उन्होंने उल्लसित स्वर में फिर कहा, "अब चूंकि **ओबोरोनत्सी** (प्रतिरक्षावादी) और बुज़दिल चले गये हैं और क्रान्ति को बचाने और उसकी हिफ़ाज़त करने की पूरी ज़िम्मेदारी हमारे कन्धों पर आ पड़ी है, यह और भी ज़रूरी हो गया है कि हम काम करें और आराम को हराम समझें! हमने फ़ैसला किया है कि जान दे देंगे, मगर घुटने नहीं टेकेंगे!"

उनके बाद त्सारस्कोये सेलो का एक कमिसार बोलने के लिए खड़ा हुआ। वह सरपट घोड़ा दौड़ाते अभी अभी वहां पहुंचा था। रास्ते की कीचड़ के छींटे उसके कपड़ों पर थे और वह हांफ रहा था। "त्सारस्कोये सेलो की गैरिसन पेत्रोग्राद के दरवाज़े पर चौकसी कर रही है, और वह सोवियतों की और सैनिक क्रान्तिकारी समिति की हिफ़ाज़त के लिए तैयार है!" बड़े ज़ोर की तालियां। "मोर्चे से भेजी गयी साइकिल-कोर त्सारस्कोये सेलो पहुंच चुकी है, और कोर के सिपाही अब हमारे साथ हैं। वे सोवियतों की सत्ता को मानते हैं, वे ज़मीन फ़ौरन किसानों के हाथ में और उद्योगों का नियन्त्रण मज़दूरों के हाथ में देने की ज़रूरत को मानते हैं। त्सारस्कोये सेलो में तैनात साइकिल सैनिकों की पांचवीं बटालियन हमारी है..."

इसके बाद तीसरी साइकिल बटालियन का एक प्रतिनिधि। उसने बताया – और जब वह बोल रहा था, लोगों का जोश दीवानगी की हद तक पहुंच गया – कि किस प्रकार **तीन दिन पहले** साइकिल कोर को दक्षिण-पश्चिमी मोर्चे से "पेत्रोग्राद की रक्षा" के लिए कूच करने का हुक्म दिया गया। लेकिन उन्होंने भांप लिया कि दाल में कुछ काला ज़रूर है। पेरेदोल्स्क के स्टेशन पर त्सारस्कोये सेलो से आनेवाले पांचवीं बटालियन के प्रतिनिधि उनसे मिले। उनकी एक संयुक्त सभा हुई और सभा में यह प्रगट हुआ कि "साइकिल सैनिकों में एक भी आदमी ऐसा न था, जो अपने भाइयों का ख़ून बहाने या पूंजीपतियों और ज़मींदारों की सरकार का समर्थन करने के लिए तैयार हो!"

मेन्शेविक-अंतर्राष्ट्रीयतावादियों की ओर से बोलते हुए कापेलीन्स्की ने प्रस्ताव किया कि गृहयुद्ध के शान्तिपूर्ण निपटारे के लिए एक विशेष

समिति गठित की जाये। "कोई शान्तिपूर्ण निपटारा नहीं हो सकता!" भीड़ ने गरज कर कहा। "निपटारा एक ही तरह से हो सकता है— हमारी विजय से!" यह प्रस्ताव प्रबल बहुमत से विफल हो गया और मेन्शेविक-अंतर्राष्ट्रीयतावादी लोगों की हू हू और लू लू और गालियों की बौछार के बीच सभा त्याग कर चले गये। अब लोगों में कोई ख़ौफ़ या दहशत न थी... मेन्शेविक-अंतर्राष्ट्रीयतावादियों के जाते जाते, कामेनेव ने मंच से उन्हें ललकारते हुए कहा, "मेन्शेविक-अंतर्राष्ट्रीयतावादियों का दावा है कि 'शान्तिपूर्ण निपटारे' का प्रश्न एक 'आपाती' प्रश्न बन गया है, लेकिन जब कांग्रेस से निकल जाने की इच्छा रखनेवाले गुटों ने अपने वक्तव्य देने चाहे, इन लोगों ने इसके लिए सदा काम-रोको प्रस्ताव के पक्ष में वोट दिया। ज़ाहिर है," कामेनेव ने अपनी बात ख़त्म करते हुए कहा, "कि ये सभी ग़द्दार सभा त्याग करने का निश्चय पहले से ही कर चुके थे!"

सभा ने निश्चय किया कि गुटों के सभा-त्याग पर ध्यान देने की आवश्यकता नहीं है और पूरे रूस के मज़दूरों, सिपाहियों और किसानों के नाम अपील पर विचार करना शुरू किया जाये। अपील यूं है:

मज़दूरों, सिपाहियों और किसानों के नाम

मज़दूरों तथा सैनिकों की सोवियतों के प्रतिनिधियों की दूसरी अखिल रूसी कांग्रेस शुरू हो गयी है। यह कांग्रेस सोवियतों के विशाल बहुमत का प्रतिनिधित्व करती है। उसमें अनेक किसान प्रतिनिधि भी मौजूद हैं। मज़दूरों, सिपाहियों और किसानों के विशाल बहुमत का आधार ग्रहण करके, पेत्रोग्राद के मज़दूरों और सिपाहियों के विजयी विद्रोह का आधार ग्रहण करके, कांग्रेस राज्य-सत्ता अपने हाथ में लेती है।

अस्थायी सरकार को गद्दी से उतार दिया गया है। अस्थायी सरकार के अधिकांश सदस्य गिरफ़्तार किये जा चुके हैं।

सोवियत सत्ता सभी राष्ट्रों से अविलम्ब एक जनवादी शान्ति-सन्धि सम्पन्न करने का, सभी मोर्चों पर अविलम्ब युद्ध-विराम सम्पन्न करने

का तुरन्त ही प्रस्ताव करेगी। वह ज़मींदारों की ज़मीनों, शाही ज़मीनों और मठों की ज़मीनों के बिला मुआवज़ा भूमि समितियों के हाथ में अन्तरण को सुनिश्चित बनायेगी, सिपाहियों के अधिकारों की रक्षा करेगी, सेना के पूर्ण जनवादीकरण को लागू करेगी, उत्पादन के ऊपर मज़दूरों का नियन्त्रण स्थापित करेगी, उचित तिथि पर संविधान सभा का बुलाया जाना सुनिश्चित बनायेगी, शहरों के लिये रोटी और गांवों के लिये सबसे आवश्यक वस्तुओं की सप्लाई के लिये उपाय करेगी और रूस में रहने वाली सभी जातियों के लिये आत्मनिर्णय का वास्तविक अधिकार सुनिश्चित बनायेगी।

कांग्रेस निश्चय करती है: समस्त स्थानीय सत्ता मज़दूरों, सैनिकों तथा किसानों के प्रतिनिधियों की सोवियतों के हाथ में अन्तरित की जायेगी। इन सोवियतों के लिये आवश्यक है कि वे क्रांतिकारी सुव्यवस्था स्थापित करें।

कांग्रेस खाइयों में पड़े सिपाहियों का आह्वान करती है कि वे दृढ़ और सतर्क रहें। सोवियतों की कांग्रेस को पूरा विश्वास है कि क्रांतिकारी सेना को यह बख़ूबी मालूम है कि जब तक नयी सरकार एक जनवादी शान्ति-संधि को सम्पन्न नहीं कर लेती, जिसका वह सीधे सीधे सभी राष्ट्रों से प्रस्ताव करने वाली है, तब तक साम्राज्यवाद के हर हमले से क्रांति की हिफ़ाज़त किस प्रकार की जा सकती है। अधिग्रहण की तथा मिल्की वर्गों पर टैक्स लगाने की एक दृढ़ नीति के द्वारा नयी सरकार क्रांतिकारी सेना के लिये जो कुछ भी अपेक्षित है, उसको प्राप्त करने के लिये तथा सैनिक परिवारों की हालत को सुधारने के लिये भी सभी आवश्यक क़दम उठायेगी।

कोर्नीलोवपंथी – केरेन्स्की, कलेदिन और दूसरे लोग – सेनाओं को पेत्रोग्राद पर चढ़ाई करने के लिए तैयार करने की कोशिश कर रहे हैं। कई रेजीमेंटों ने, जिनको केरेन्स्की ने धोखे में डाल रखा था, विद्रोही जनता का पक्ष लिया है।

सिपाहियो! कोर्नीलोवपंथी केरेन्स्की का सक्रिय रूप से मुक़ाबला कीजिये! ख़बरदार रहिये!

रेल मज़दूरो! पेत्रोग्राद पर चढ़ाई करने के लिये केरेन्स्की द्वारा भेजी जाने वाली सभी सैनिक रेलगाड़ियों को रोक लीजिये!

सिपाहियो, मज़दूरो और क्लर्क-कर्मचारियो! क्रांति का तथा जनवादी शान्ति का भविष्य आपके ही हाथों में है!

इन्क़लाब ज़िन्दाबाद!

मज़दूरों तथा सैनिकों के प्रतिनिधियों की सोवियतों की अखिल रूसी कांग्रेस। किसानों की सावियतों के प्रतिनिधि*

सबेरे के ठीक पांच बज कर सत्तरह मिनट हुए थे, जब थकावट से चूर-चूर, लड़खड़ाते हुए क्रिलेन्को हाथ में एक तार लिये मंच पर आये। "साथियो! उत्तरी मोर्चे से। बारहवीं सेना सोवियतों की कांग्रेस को अपना अभिवादन भेजती है और घोषणा करती है कि उन्होंने एक सैनिक क्रांतिकारी समिति का गठन किया है, जिसने उत्तरी मोर्चे की कमान संभाल ली है!" कोलाहल, लोग विह्वल हो कर एक दूसरे से गले लगने लगे, उनकी आंखें आंसुओं से गीली थीं। "जनरल चेरेमीसोव ने समिति के अधिकार को मान लिया है। अस्थायी सरकार के कमिसार वोइतीन्स्की ने इस्तीफ़ा दे दिया है!"

इस प्रकार लेनिन तथा पेत्रोग्राद के मज़दूरों ने विद्रोह करने का निश्चय किया, पेत्रोग्राद सोवियत ने अस्थायी सरकार का तख़्ता उलट दिया और इस उलट-पुलट को सोवियतों की कांग्रेस के सिर डाल दिया। अब उन्हें सारे रूस को अपनी ओर लाना था और फिर संसार को! क्या पेत्रोग्राद का अनुसरण कर पूरा रूस उठेगा? और दुनिया – दुनिया क्या करेगी? क्या दुनिया के लोग प्रत्युत्तर देंगे और उठेंगे? क्या एक विश्वव्यापी लाल लहर उठेगी?

यद्यपि सवेरे के छः बजे थे, फिर भी अंधेरा छाया हुआ था, रात अभी बाक़ी थी – ठंडी और बोझिल रात। बस एक हल्का और फीका प्रकाश निस्तब्ध सड़कों पर चुपके चुपके फैल रहा था और उसके कारण संतरियों के अलाव की रोशनी मद्धिम पड़ रही थी – एक भयावह भोर का कुहासा रूस पर छा रहा था

---

* अपीलकर्त्ताओं के रूप में "किसानों की सोवियतों के प्रतिनिधि" तब जोड़ दिया गया, जब किसानों के एक प्रतिनिधि ने इस आशय की घोषणा की। – सं०

पांचवां अध्याय

तेज़ बढ़ाव

बृहस्पतिवार, ८ नवम्बर। जब पौ फटी, शहर में घोर उत्तेजना फैली हुई थी और ऐसा मालूम होता था, जैसे हर चीज़ उलट-पुलट गई हो। समूचा राष्ट्र एक ज़बरदस्त गरजते हुए तूफ़ान के झोंकों में इस तरह उठता जा रहा था, जैसे लहर पर लहर उठती है। ऊपर से देखने में पूरी शान्ति थी। लाखों आदमी मुनासिब वक़्त पर सोये थे और सुबह जल्दी ही उठ कर काम पर चले थे। पेत्रोग्राद में ट्राम-गाड़ियां दौड़ रही थीं, दूकान और रेस्तोरां खुले हुए थे, थियेटर चल रहे थे और चित्रों की एक प्रदर्शनी का विज्ञापन किया गया था... सामान्य जीवन की जटिल दिनचर्या, जो युद्धकाल में भी उकता देने वाली होती है, बदस्तूर चल रही थी। सामाजिक निकाय में जो गज़ब की प्राणशक्ति है, जिस तरह वह घोर से घोर विपत्ति के सम्मुख भी टिका रहता है और उसका खाना-पीना, पहनना-ओढ़ना, आमोद-प्रमोद, सब यथाक्रम चलता रहता है, उससे बढ़ कर अचरज की दूसरी बात नहीं है...

केरेन्स्की के बारे में तरह तरह की अफ़वाहें उड़ रही थीं। कहा जा रहा था कि उन्होंने मोर्चे को उभाड़ा है और एक बड़ी सेना लेकर राजधानी पर चढ़ाई करने के लिए चले आ रहे हैं। 'वोल्या नरोदा' ने प्स्कोव में उनके द्वारा जारी किये गये एक **प्रिकाज़** (आदेश) को प्रकाशित किया:

बोल्शेविकों की वहशियाना कोशिशों से जो गड़बड़ी पैदा हुई है, उसने देश को विनाश के कगार पर पहुंचा दिया है, और यह परिस्थिति, हमारी पितृभूमि जिस भयानक परीक्षा की घड़ी से गुज़र रही है, उससे

कामयाबी के साथ निकल पाने के लिए हममें प्रत्येक मे हमारे समस्त संकल्प, साहस और निष्ठा की मांग करती है...

जब तक एक नयी सरकार – अगर ऐसी सरकार बनायी जाती है – के गठन की घोषणा नहीं की जाती, हर आदमी को चाहिए कि वह अपनी जगह से न हिले और लहूलुहान रूस के प्रति अपना कर्तव्य पूरा करे। यह अवश्य ही याद रखना है कि मौजूदा सैनिक संगठनों के साथ तनिक भी छेड़-छाड़ से दुश्मन के लिए रास्ता साफ़ हो सकता है और इस प्रकार भीषण, अमार्जनीय क्षति पहुंच सकती है। इसलिये यह बिल्कुल ज़रूरी है कि पूर्ण सुव्यवस्था सुनिश्चित करके, सेना को नये आघातों से बचा कर और अफ़सरों और उनके मातहतों के बीच पूर्ण विश्वास बनाये रख कर सैनिकों के मनोबल को हर क़ीमत पर अक्षुण्ण रखा जाये। मैं देश की हिफ़ाज़त के नाम पर सभी प्रधान अधिकारियों और कमिसारों को आदेश देता हूं कि वे जब तक कि जनतन्त्र की अस्थायी सरकार अपनी मर्ज़ी ज़ाहिर नहीं करती है, अपने पदों को न छोड़ें, उसी प्रकार जैसे मैं स्वयं मुख्य सेनापति के अपने पद को संभाले हुए हूं...

जवाब में सभी जगह दीवारों पर यह पोस्टर चिपकाया गया:

सोवियतों की अखिल रूसी कांग्रेस की ओर से

"भूतपूर्व मन्त्री कोनोवालोव, किशकिन, तेरेश्चेन्को, माल्यान्तोविच, निकीतिन इत्यादि सैनिक क्रान्तिकारी समिति द्वारा गिरफ़्तार कर लिये गये हैं। केरेन्स्की भाग खड़े हुए हैं। सभी सैनिक संगठनों को आदेश दिया जाता है कि वे केरेन्स्की को फ़ौरन गिरफ़्तार करने और उन्हें पेत्रोग्राद पहुंचाने के लिए जो भी कार्रवाइयां की जा सकती हैं, करें।

"केरेन्स्की को किसी प्रकार की सहायता देना राज्य के ख़िलाफ़ भीषण अपराध समझा जायेगा और ऐसी सहायता करनेवाले को दण्डित किया जायेगा।"

समस्त अवरोधों से मुक्त हो कर सैनिक क्रान्तिकारी समिति धुआं-धार काम कर रही थी। समिति से आदेश, अपीलें और आज्ञप्तियां इस प्रकार

निकल रही थीं, जैसे एक बेतहाशा चक्कर काटते हुए अग्नि-पिण्ड से चिनगारियां छूटती रही हों[1] ... कोर्नीलोव को पेत्रोग्राद लाने का हुक्म दिया गया। अस्थायी सरकार द्वारा गिरफ़्तार किसानों की भूमि समितियों के सदस्यों की रिहाई का एलान किया गया। सेना में मृत्यु-दण्ड समाप्त कर दिया गया। सरकारी कर्मचारियों को आदेश दिया कि वे अपना काम जारी रखें और उन्हें चेतावनी दी गयी कि अगर उन्होंने ऐसा करने से इनकार किया, तो उन्हें कठोर दण्ड दिया जायेगा। एक आज्ञा द्वारा लूटमार, फ़साद और सट्टेबाज़ी की मनाही की गयी और उसके उल्लंघन की सज़ा मौत घोषित की गयी। विभिन्न मन्त्रालयों में अस्थायी कमिसार नियुक्त किये गये: परराष्ट्र मन्त्रालय में – उरीत्स्की और त्रोत्स्की; गृह तथा न्याय मन्त्रालय में रीकोव; श्रम मन्त्रालय में श्ल्याप्निकोव; वित्त – मेन्जीन्स्की; जन-कल्याण – श्रीमती कोल्लोन्ताई; वाणिज्य, रेल परिवहन – रियाज़ानोव; नौसेना – नाविक कोरबिंर; डाक-तार – स्पीरो; थियेटर – मुराव्योव; राजकीय मुद्रणालय – देरबिशेव; पेत्रोग्राद नगर – लेफ़्टिनेंट नेस्तेरोव; उत्तरी मोर्चा – पोज़ेर्न ... *

सेना से सैनिक क्रान्तिकारी समितियां स्थापित करने के लिए अपील की गयी, रेल मज़दूरों से सुव्यवस्था क़ायम रखने और विशेषतः नगरों और मोर्चों के लिए खाद्य के परिवहन में विलम्ब न होने देने के लिए ... बदले में उन्हें वचन दिया गया कि उनके प्रतिनिधि रेल परिवहन मन्त्रालय में शामिल किये जायेंगे।

कज़्ज़ाक भाइयो, एक एलान में कहा गया था, आपको पेत्रोग्राद पर हमला करने के लिए उकसाया जा रहा है। वे आपको ज़बरदस्ती राजधानी के मज़दूरों और सिपाहियों के साथ भिड़ा देना चाहते हैं। हमारे सामान्य शत्रु ज़मींदार और पूंजीपति जो कुछ कहते हैं, उस पर तनिक भी विश्वास न कीजिये।

---

* अस्थायी कमिसारों की नियुक्तियों का जो विवरण यहां दिया गया है, वह पूरी तरह सही नहीं है: परराष्ट्र मंत्रालय के लिए केवल उरीत्स्की की नियुक्ति की गयी थी; नौसेना मंत्रालय सभी बेड़ों के प्रतिनिधियों द्वारा सोवियतों की अखिल रूसी कांग्रेस में निर्वाचित नौसैनिक क्रान्तिकारी समिति के सुपुर्द किया गया था। – सं०

रूस के सभी संगठित मज़दूरों और सिपाहियों तथा जागरूक किसानों के प्रतिनिधि हमारी कांग्रेस में मौजूद हैं। कांग्रेस श्रमिक कज़्ज़ाकों को भी अपने बीच में देखना चाहती है। ज़मींदारों के और नृशंस निकोलाई के अनुचर, यमदूत सभाइयों के जनरल हमारे शत्रु हैं।

वे आप से कहते हैं कि सोवियतें कज़्ज़ाकों की ज़मीनों को ज़ब्त कर लेना चाहती हैं। यह सरासर झूठ है। क्रान्ति केवल बड़े बड़े कज़्ज़ाक ज़मींदारों की ज़मीनों को ज़ब्त करेगी और उन्हें जनता के हवाले करेगी।

कज़्ज़ाकों के प्रतिनिधियों की सोवियतों को संगठित कीजिये! मज़दूरों तथा सैनिकों के प्रतिनिधियों की सोवियतों के साथ हाथ मिलाइये!

यमदूत सभाइयों को दिखा दीजिये कि आप जनता के प्रति ग़द्दार नहीं हैं, और आप हरगिज़ यह नहीं चाहते कि समूचा क्रान्तिकारी रूस आपको कोसे!..

कज़्ज़ाक भाइयो, जनता के शत्रुओं की किसी भी आज्ञा का पालन न कीजिये। अपने प्रतिनिधियों को हमारे साथ बातचीत करने के लिए पेत्रोग्राद भेजिये... पेत्रोग्राद गैरिसन के कज़्ज़ाकों ने अपनी लाज रखी है और उन्होंने जनता के शत्रुओं की आशाओं पर पानी फेर दिया है...

कज़्ज़ाक भाइयो, सोवियतों की अखिल रूसी कांग्रेस आपकी ओर दोस्ती और भाईचारे का हाथ बढ़ाती है। समूचे रूस के सिपाहियों, मज़दूरों और किसानों के साथ कज़्ज़ाकों का भाईचारा ज़िन्दाबाद! *

दूसरी ओर अंधाधुंध प्रचार – असंख्य घोषणायें दीवारों पर चिपकाई गयीं, और सभी जगह परचे बांटे गये। अख़बार चीखते, पानी पी पीकर बोल्शेविकों को कोसते और बुरे अंजाम की पेशीनगोई करते। अब छापेख़ाने की लड़ाई बड़े ज़ोर से शुरू हुई – बाक़ी सभी हथियार सोवियतों के हाथ में आ चुके थे।

सबसे पहले, देश तथा क्रान्ति की उद्धार समिति की अपील, जो पूरे रूस और यूरोप में प्रसारित की गयी:

---

* यह अपील मज़दूरों तथा सैनिकों के प्रतिनिधियों की अखिल रूसी कांग्रेस की ओर से शाया की गई थी। – सं०

रूसी जनतन्त्र के नागरिकों के नाम

७ नवम्बर को पेत्रोग्राद के बोल्शेविकों ने क्रान्तिकारी जन-साधारण की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ अस्थायी सरकार के कुछ सदस्यों को गिरफ़्तार करने, जनतन्त्र की परिषद् को भंग करने तथा एक अवैध सत्ता की घोषणा करने की मुजरिमाना हरकत की। बाहरी ख़तरे की सबसे नाज़ुक घड़ी में क्रान्तिकारी रूस की सरकार के प्रति किया जाने वाला यह बलप्रयोग पितृभूमि के प्रति एक वर्णनातीत अपराध है।

बोल्शेविकों का विद्रोह राष्ट्रीय सुरक्षा के ध्येय पर एक सांघातिक आघात है और वह शान्ति की अभीप्सित घड़ी को बेअन्दाज़ दूर टाल देता है।

बोल्शेविकों ने जो गृहयुद्ध शुरू किया है, उसने देश के अराजकता तथा प्रतिक्रान्ति की विभीषिका का ग्रास बन जाने तथा उस संविधान सभा के विफल हो जाने का ख़तरा पैदा कर दिया है, जिसे अनिवार्यतः जनतन्त्रीय शासन पर मुहर लगानी है और जो ज़मीन पर जनता के हक़ को हमेशा के लिए उसके हाथ में सौंप देनेवाली है।

एकमात्र वैध शासन-सत्ता के नैरन्तर्य को अक्षुण्ण रखती हुई, ७ नवम्बर की रात में स्थापित देश तथा क्रान्ति की उद्धार समिति एक नयी अस्थायी सरकार क़ायम करने में पहल करती है। जनवाद की शक्तियों का आधार ग्रहण कर यह सरकार देश को संविधान सभा की ओर अग्रसर करेगी और उसे अराजकता तथा प्रतिक्रान्ति से बचायेगी। नागरिको, उद्धार समिति आपका आह्वान करती है कि आप हिंसक सत्ता को मानने से इनकार कर दें। आप उसके आदेशों का पालन न करें!

देश तथा क्रान्ति की हिफ़ाज़त के लिए उठ खड़े होइये!

उद्धार समिति का समर्थन कीजिये!

हस्ताक्षरित: रूसी जनतन्त्र की परिषद्, पेत्रोग्राद की नगर दूमा, त्से-ई-काह (पहली कांग्रेस), किसानों की सोवियतों की कार्यकारिणी समिति, तथा स्वयं कांग्रेस के प्रतिनिधियों के बीच से मोर्चा-दल, समाजवादी-क्रान्तिकारियों, मेन्शेविकों, जन-समाजवादियों, संयुक्त सामाजिक-जनवादियों के गुट तथा 'येदीन्स्त्वो' दल।

इस अपील के बाद समाजवादी-क्रान्तिकारी पार्टी, मेन्शेविक-**ओबोरोन्त्सी** (प्रतिरक्षावादियों) के, और फिर किसानों की सोवियतों के पोस्टर। केन्द्रीय सैनिक समिति, **त्सेन्त्रोफ़्लोत** (केन्द्रीय नौसैनिक समिति) के पोस्टर...

...अकाल पेत्रोग्राद को पीस डालेगा! (वे चीखते।) जर्मन सेनायें हमारी स्वतन्त्रता को रौंद डालेंगी। अगर हम सब – जागरूक मज़दूर, सिपाही, नागरिक – एकताबद्ध नहीं होते, तो यमदूत सभाइयों द्वारा भड़काये गये दंगे-फ़साद पूरे रूस में फैल जायेंगे...

बोल्शेविकों के वादों पर यक़ीन न कीजिये! तत्काल शान्ति का उनका वादा झूठा है! रोटी का वादा एक ढोंग है! और ज़मीन का वादा एक परी-कहानी है!..

सारे पोस्टर इसी ढंग के थे।

साथियो! आपको बड़ी बेरहमी और कमीनेपन के साथ धोखा दिया गया है! बोल्शेविकों ने अकेले ही सत्ता पर क़ब्ज़ा कर लिया है... उन्होंने सोवियत में शामिल दूसरी समाजवादी पार्टियों से अपने षड्यन्त्र को छिपाया...

आपको भूमि और स्वतन्त्रता का वचन दिया गया है, परन्तु बोल्शेविकों ने जो अराजकता उत्पन्न की है, उससे प्रतिक्रांति को फ़ायदा पहुंचेगा और वह आपको भूमि और स्वतन्त्रता दोनों से वंचित करेगी...

अख़बारों में भी इसी तरह की वाही-तबाही बकी जा रही थी।

हमारा कर्तव्य यह है ('देलो नरोदा' ने लिखा) कि हम मज़दूर वर्ग के साथ दग़ा करने वाले इन ग़द्दारों का पर्दाफ़ाश करें। हमारा कर्तव्य है कि हम अपनी सभी शक्तियों को एकजुट करें और क्रांति के ध्येय की चौकसी करें।

पुरानी **त्से-ई-काह** के नाम पर आख़िरी बार बोलते हुए 'इज़्वेस्तिया' ने भयानक प्रतिशोध की धमकी दी:

जहां तक सोवियतों की कांग्रेस का प्रश्न है, हम ज़ोर देकर कहते हैं कि सोवियतों की कोई कांग्रेस नहीं हुई है। हम ज़ोर देकर कहते हैं कि जो चीज़ हुई है, वह कांग्रेस नहीं, बोल्शेविक गुट की एक प्राइवेट कान्फ़्रेंस थी। ऐसी सूरत में उन्हें **त्से-ई-काह** के अधिकारों को रद्द करने का कोई हक़ नहीं है।

'नोवाया जीज़्न' ने जहां एक ओर एक ऐसी नई सरकार की स्थापना की वकालत की, जो सभी समाजवादी पार्टियों को एकताबद्ध करेगी, वहीं उसने समाजवादी-क्रांतिकारियों और मेन्शेविकों की कांग्रेस से निकल आने के लिये कठोर आलोचना की, और इस बात की ओर संकेत किया कि बोल्शेविक विद्रोह का एक अर्थ अत्यन्त स्पष्ट है, वह यह कि पूंजीपति वर्ग के साथ संश्रय के विषय में जो भ्रांतियां थीं, वे सब निरर्थक सिद्ध हुई हैं ...

'राबोची पूत' ने लेनिन के समाचारपत्र 'प्राव्दा' के रूप में, जिसे जुलाई में बन्द कर दिया गया था, एक नया जीवन पाया। उसने रोष और विजयोल्लास से हुंकार किया :

मज़दूरो, सिपाहियो, किसानो! मार्च में आपने सामन्ती गुट के निरंकुश शासन को एक ही वार में ढेर कर दिया। कल आपने पूंजीवादी गिरोह के निरंकुश शासन को भी ढेर कर दिया ...

अब हमारा पहला काम है पेत्रोग्राद के प्रवेश-मार्गों की रक्षा करना।

दूसरा काम है पेत्रोग्राद के प्रतिक्रांतिकारी तत्वों को निश्चित रूप से निरस्त्र करना।

और तीसरा काम है क्रांतिकारी सत्ता को निश्चित रूप से संगठित करना तथा लोकप्रिय कार्यक्रम के कार्यान्वयन को सुनिश्चित बनाना।

कैडेटों के और सामान्यतः पूंजीपति वर्ग के जो इने-गिने अख़बार निकल रहे थे, उन्होंने इस सारे कांड के प्रति एक प्रकार का तटस्थ विद्रूपात्मक दृष्टिकोण अपनाया, मानों वे दूसरी पार्टियों से अवज्ञा के साथ कह रहे हों: "हमने आपसे क्या कहा था, याद है?" नगर दूमा तथा

उद्धार समिति के इर्द-गिर्द प्रभावशाली कैडेट नेताओं को मंडराते हुए देखा जा सकता था। इसके अलावा पूंजीपति वर्ग ने कोई हरक़त नहीं की, वह चुपचाप बैठा अवसर की घात में था – और यह अवसर बहुत दूर नहीं मालूम होता था। लेनिन, त्रोत्स्की, पेत्रोग्राद के मज़दूरों और सीधे-सादे सिपाहियों को छोड़कर, यह बात शायद किसी के दिमाग़ में नहीं आई होगी कि बोल्शेविक तीन दिन से अधिक सत्तारूढ़ रह सकते हैं...

उसी दिन ऊंची छतवाले गोल निकोलाई हॉल में मैंने देखा कि नगर दूमा का लगातार अधिवेशन हो रहा था – एक तूफ़ानी अधिवेशन – जिसके चारों ओर बोल्शेविक-विरोधी सभी शक्तियां एकत्र थीं। बूढ़े मेयर श्रेइदेर, जो अपने सफ़ेद बालों और सफ़ेद दाढ़ी के कारण बड़े तेजस्वी दिखाई देते थे, बता रहे थे कि किस प्रकार उन्होंने पिछली रात स्मोल्नी जाकर स्वायत्तशासी नगरपालिका की ओर से प्रतिवाद प्रगट किया। "समान, प्रत्यक्ष तथा गुप्त मतदान द्वारा निर्वाचित दूमा, जो नगर की एकमात्र वैधानिक सरकार है, नई सत्ता को मान्यता नहीं देगी," उन्होंने त्रोत्स्की से कहा था। और त्रोत्स्की ने जवाब दिया था, "इसका एक वैधानिक उपाय है – दूमा को भंग करके उस का फिर से चुनाव किया जा सकता है..." श्रेइदेर की इस रिपोर्ट पर भीषण कोलाहल मच गया।

दूमा को सम्बोधित करते हुए बूढ़े श्रेइदेर ने कहा, "अगर कोई संगीनों के ज़ोर से हुकूमत करने वाली सरकार को मानता है, तो ऐसी सरकार हमारे यहां मौजूद है। परन्तु मैं उसी सरकार को जायज़ मानता हूं, जिसे जनता का बहुमत स्वीकार करे, न कि उसे जो अल्पमत द्वारा सत्ता हड़प लिए जाने के कारण उत्पन्न हुई है।" उनकी इस बात पर बोल्शेविकों को छोड़ कर बाक़ी सभी ज़ोर ज़ोर से तालियां पीटने लगे। शोर व हंगामे के बीच मेयर ने घोषणा की कि बोल्शेविक लोग अभी से बहुत से विभागों में कमिसारों की नियुक्ति कर नगरपालिका के स्वायत्त अधिकारों का उल्लंघन कर रहे हैं।

बोल्शेविक वक्ता ने इस बात की कोशिश में कि लोग उसे सुन सकें ज़ोर ज़ोर से चिल्ला कर कहा कि सोवियतों की कांग्रेस के निर्णय का अर्थ यह है कि समूचा रूस बोल्शेविकों द्वारा उठाये गये क़दम का समर्थन करता है। "आप लोग," उसने कड़क कर कहा, "आप लोग

पेत्रोग्राद की जनता के सच्चे प्रतिनिधि नहीं हैं!" आवाज़ें – "ऐसा कहना हमारी तौहीन करना है, हमारी बेइज़्ज़ती करना है!" बूढ़े मेयर ने बड़े गौरव भाव से बोल्शेविक वक्ता को याद दिलाया कि दूमा जनता के जनतन्त्र मे स्वतन्त्र मतदान द्वारा निर्वाचित हुई थी। "हां, हुई थी," बोल्शेविक वक्ता ने जवाब दिया। "लेकिन बहुत दिन पहले हुई थी, उसी तरह जैसे त्से-ई-काह, उसी तरह जैसे सैनिक समिति।" "सोवियतों की कोई नयी कांग्रेस नहीं हुई है!" जवाब में वे चिल्लाये। "बोल्शेविक दल प्रतिक्रान्ति के इस अड्डे में एक मिनट भी और ठहरने से इनकार करता है..." शोरगुल। "... और हम मांग करते हैं कि दूमा का फिर से चुनाव किया जाये..." इसके बाद बोल्शेविक सदन से निकल गये और उनके पीछे आवाज़ें लगती रहीं, "जर्मनों के दलाल! गद्दारों का नाश हो!"

बोल्शेविकों के चले जाने के बाद कैडेट शिंगारेव ने मांग की कि नगरपालिका के जिन कर्मचारियों ने सैनिक क्रान्तिकारी समिति का कमिसार बनना मंज़ूर किया है, उन्हें पदच्युत किया जाये और उन्हें अपराधी घोषित किया जाये। श्रेइदेर फिर उठ खड़े हुए; उन्होंने इस आशय का एक प्रस्ताव पेश किया कि दूमा उसे भंग करने की बोल्शेविकों की धमकी के प्रति प्रतिवाद प्रगट करती है और जनता की एकमात्र वैधानिक प्रतिनिधि-संस्था होने के नाते वह हरगिज़ अपने स्थान का परित्याग नहीं करेगी।

बाहर, अलेक्सान्द्र हॉल में भी भीड़ जुटी हुई थी; वहां उद्धार समिति की बैठक हो रही थी और स्कोबेलेव फिर बोल रहे थे। "आज तक कभी क्रान्ति का भाग्य इतने संकट में नहीं पड़ा था," उन्होंने कहा। "कभी राज्य के अस्तित्व के प्रश्न ने आज तक कभी इतनी चिन्ता उत्पन्न नहीं की थी। आज तक कभी इतिहास ने इतने कठोर और निश्चयात्मक रूप में इस प्रश्न को उपस्थित नहीं किया था – रूस को जीना है या मिट जाना है। क्रान्ति के उद्धार की महान् वेला आ पहुंची है, और इस बात का अनुभव करते हुए हम देख रहे हैं कि क्रान्तिकारी जनवाद की सारी प्राणवान शक्तियां घनिष्ठ रूप से एकताबद्ध हैं। उनके संगठित संकल्प द्वारा अभी से देश तथा क्रान्ति के उद्धार के लिए एक केन्द्र स्थापित किया जा चुका है..." स्कोबेलेव ने इसी तर्ज़ पर और बहुत

सी बातें कहीं, और अन्त में, "हम मरते दम तक अपने मोर्चे पर डटे रहेंगे!"

तालियों की गड़गड़ाहट के बीच यह घोषणा की गयी कि रेल मज़दूरों की यूनियन उद्धार समिति के साथ आ गयी है। ज़रा देर बाद डाक-तार कर्मचारी भी आ गये। और इसके बाद कुछ मेन्शेविक-अंतर्राष्ट्रीयतावादी भी हॉल में दाखिल हुए, और उनका तालियों से स्वागत किया गया। रेल मज़दूरों ने कहा कि वे बोल्शेविकों को नहीं मानते, उन्होंने समस्त रेल-उपकरण अपने हाथ में ले लिया है, और उसे किसी की बलाद्ग्राही सत्ता के हवाले करने से इनकार करते हैं। तारकर्मचारियों के प्रतिनिधि ने कहा कि जब तक बोल्शेविक कमिसार तारघर में मौजूद है, आपरेटर अपने औज़ारों को हाथ नहीं लगायेंगे। डाकिये स्मोल्नी की डाक छुएंगे भी नहीं... स्मोल्नी के सारे टेलीफ़ोन काट दिये गये थे। सभा को बड़े उल्लास के साथ बताया गया कि किस प्रकार उरीत्स्की गुप्त सन्धियों को मांगने के लिए विदेश मन्त्रालय गये थे और किस प्रकार नेरातोव* ने उन्हें वहां से बाहर निकलवा दिया। सारे सरकारी कर्मचारी काम ठप कर रहे थे...

यह एक लड़ाई थी – पहले से सोची-विचारी रूसी ढंग की लड़ाई, हड़तालों और तोड़-फोड़ द्वारा लड़ाई। हम वहां बैठे ही थे कि सभापति ने एक सूची पढ़ कर सुनायी, जिसमें उनको दी गयी ज़िम्मेदारियों के साथ कुछ लोगों के नाम थे। फ़लां आदमी मन्त्रालयों का दौरा करेगा, फ़लां बैंकों का; दस-बारह आदमियों के ज़िम्मे यह काम सौंपा गया कि वे बारिकों में जायें और सिपाहियों को समझायें कि वे तटस्थ रहें – "रूसी सिपाहियो, आप अपने भाइयों का ख़ून न बहाइये!" केरेन्स्की से मुलाक़ात और मशविरा करने के लिए एक शिष्टमण्डल नियुक्त किया गया; अन्य शिष्टमण्डलों को प्रान्तीय नगरों में इस प्रयोजन से भेजा गया कि वे वहां पर उद्धार समिति की शाखायें स्थापित करें और सभी बोल्शेविक-विरोधी तत्त्वों को एक सूत्र में बांधें।

---

* **नेरातोव**, अस्थायी सरकार में परराष्ट्र उप-मंत्री, भूतपूर्व ज़ारशाही कूटनीतिज्ञ। – **सं०**

भीड़ बड़े जोश में थी। "ये बोल्शेविक बुद्धिजीवियों पर हुक्म चलायेंगे? ज़रा कोशिश करके देखें तो! हम उन्हें अच्छा मज़ा चखायेंगे!"

इस सभा में और सोवियतों की कांग्रेस में ज़मीन और आसमान का फ़र्क था। वहां फटेहाल सिपाहियों, मैले-कुचैले मज़दूरों, गंवार किसानों के विशाल जनसमुदाय थे – उन ग़रीब आदमियों के समुदाय थे, जो जीवन के कठोर, पाशविक संघर्ष में संतप्त और दग्ध थे। और यहां अव्क्सेन्त्येव, दान और लीबेर जैसे मेन्शेविक तथा समाजवादी-क्रान्तिकारी नेता, स्कोबेलेव और चेर्नोव जैसे भूतपूर्व समाजवादी मन्त्री, चिकने-चुपड़े शात्स्की और सजीले विनावेर जैसे कैडेटों के साथ, पत्रकारों, विद्यार्थियों और प्रायः सभी शिविरों के बुद्धिजीवियों के साथ कन्धे रगड़ते थे। दूमा की यह भीड़ अच्छा खाने-पीने और अच्छा पहनने वाले लोगों की भीड़ थी। मैंने इन लोगों में मुश्किल से तीन मज़दूर देखे होंगे...

ख़बरें आयीं। बिख़ोव में कोर्नीलोव के वफ़ादार **तेकीन्त्सी*** ने पहरेदारों को मार कर उसे छुड़ा दिया था और वह जेल से भाग निकला था। कलेदिन उत्तर की ओर बढ़ा आ रहा था... मास्को सोवियत ने एक सैनिक क्रांतिकारी समिति स्थापित की थी और वह शस्त्रागार को अपने क़ब्ज़े में लेने के लिए नगर के कमांडेण्ट से बातचीत कर रही थी, जिससे मज़दूरों को हथियारों से लैस किया जा सके।

इन ख़बरों के साथ अफ़वाहें, उलटे-पलटे बयान और सफ़ेद झूठ इस बुरी तरह मिल गये थे कि ताज्जुब होता था। उदाहरण के लिए, एक होशियार नौजवान कैडेट ने, जो पहले मिल्युकोव का और फिर तेरेश्चेन्को का निजी सचिव था, हमें एक ओर ले जाकर शिशिर प्रासाद के पतन का पूरा हाल सुनाया।

"जर्मन और आस्ट्रियाई अफ़सर बोल्शेविकों की रहनुमाई कर रहे थे," उसने ज़ोर देकर कहा।

"ऐसी बात है?" हमने नम्रता से कहा, "आप कैसे जानते हैं?"

"मेरा एक दोस्त वहां था, उसने अपनी आंखों से देखा।"

"उसने यह कैसे समझा कि वे अफ़सर जर्मन थे?"

"इसलिए कि वे जर्मन वर्दियां पहने थे!"

---

* देखिये, 'टिप्पणियां और व्याख्याएं'। – **जॉ० री०**

इस तरह के सैकड़ों बेतुके क़िस्से थे, जिन्हें बोल्शेविक-विरोधी अख़बारों ने बड़ी संजीदगी से छापा था; और तो और, समाजवादी-क्रान्तिकारियों और मेन्शेविकों तक ने, सचाई के प्रति गंभीर निष्ठा जिनकी सदा से एक विशेषता रही है, उनमें विश्वास किया ...

परन्तु इससे अधिक गंभीर बात यह थी कि बोल्शेविक हिंसा और आतंक की कहानियां फैलाई जा रही थीं। उदाहरण के लिए, यह कहा गया और छापा तक गया कि लाल गार्डों ने शिशिर प्रासाद को बुरी तरह लूटा ही नहीं था, वरन् उन्होंने पहले **युंकरों** से हथियार रखवा लिए और फिर उनका सफ़ाया कर दिया और कई मन्त्रियों को बड़ी बेदर्दी से मार डाला था। जहां तक महिला सैनिकों का सवाल है, उनमें से अधिकांश के साथ बलात्कार किया गया। बहुतों ने तो जिन यन्त्रणाओं को उन्हें भुगतना पड़ा उनके कारण आत्महत्या कर ली ... ये सारी कहानियां दूमा में उपस्थित पूरी भीड़ के गले के नीचे बड़ी आसानी से उतर गयीं। इससे भी बुरी बात यह हुई कि **युंकरों** और महिला सैनिकों के मां-बाप ने इन ख़ौफ़नाक तफ़सीलवार क़िस्सों को, **जिनके साथ अक्सर नामों की फ़ेहरिस्त भी होती थी**, पढ़ा और रात होते होते क्षुब्ध, उत्तेजित नागरिकों की एक भीड़ दूमा में जुट आई ...

एक उपलक्षक उदाहरण शाहज़ादा तुमानोव का है, जिनके बारे में बहुत से अख़बारों में ख़बर छपी कि उनकी लाश मोइका नहर में तैरती हुई पायी गयी। थोड़ी ही देर बाद उनके परिवार के लोगों ने इस समाचार का खण्डन किया और बताया कि दरअसल उन्हें गिरफ़्तार कर लिया गया है। फिर अख़बारों ने कहा कि लाश तुमानोव की नहीं, जनरल देनीसोव की थी। लेकिन जब जनरल भी जीते-जागते पाये गये, तब हमने जांच-पड़ताल की और हमें किसी भी लाश के कहीं भी पाये जाने का पता नहीं लग सका ...

जब हम दूमा-भवन से निकले, दो बाल स्वयंसेवक भवन के बाहर की विशाल भीड़ के बीच परचे बांट रहे थे। दुकानदारों, व्यापारियों दफ़्तर-कर्मचारियों और **चिनोव्निकों** (क्लर्कों) की यह भीड़ दूमा-भवन के सामने पूरे नेव्स्की मार्ग को घेरकर खड़ी थी। एक परचे में लिखा था:

नगर दूमा की ओर से

नगर दूमा ने २६ अक्तूबर को अपने अधिवेशन में उस दिन की घटनाओं को देखते हुए यह आज्ञप्ति जारी की: वह निजी घरों की अलंघनीयता घोषित करती है और आवास-समितियों की मारफ़त पेत्रोग्राद नगर की जनता का आह्वान करती है कि वह निजी घरों में बलात् प्रवेश करने की सभी कोशिशों को निर्णायक रूप से विफल कर दे और नागरिकों की आत्मरक्षा के हित में शस्त्र-प्रयोग करने से भी न हिचकिचाये।

लितेइनी के मोड़ पर पांच-छः लाल गार्डों और दो मल्लाहों ने एक पत्र-विक्रेता को घेर लिया था और मांग कर रहे थे कि वह मेन्शेविक पत्र 'राबोचाया गज़ेता' (मज़दूर अख़बार) की अपनी प्रतियों को उनके हवाले कर दे। एक मल्लाह को अपने स्टाल से ज़बर्दस्ती अख़बार उठाते देख वह अपना घूंसा दिखाते हुए उसके ऊपर बरस पड़ा। एक क्रुद्ध भीड़ इकट्ठी हो गई थी और गश्ती दस्ते को गालियां दे रही थी। एक नाटे क़द का मज़दूर लोगों को और पत्र-विक्रेता को धैर्यपूर्वक समझाते हुए बार-बार कह रहा था, "इस अख़बार में केरेन्स्की की घोषणा छपी है, जिसमें कहा गया है कि हमने कितने ही रूसियों को ठिकाने लगा दिया है। इस बात से ख़ून-ख़राबा ही होगा..."

स्मोल्नी में इतनी उत्तेजना कभी देखी नहीं गयी – यह थी उत्तेजना की चरम पराकाष्ठा। अंधेरे गलियारों में वे ही दौड़ते-भागते आदमी, बन्दूकें लिये मज़दूरों के दस्ते, भारी ठसाठस भरे पोर्टफ़ोलियो लिये परेशान नेता, जो मित्रों तथा सहायकों से घिरे हुए बहस करते, समझाते और हुक्म सुनाते एक ओर या दूसरी ओर भागे जा रहे थे। ये लोग जिन्हें अपनी सुध-बुध न थी, जिन्हें अपने तन-बदन का होश न था, जो एक झपकी सोये बिना रात काम करके अतिमानवीय श्रम के जीते-जागते उदाहरण बने हुए थे, मैले-कुचैले, दाढ़ी बढ़ी हुई, आंखें जलती हुई – ये लोग अपने प्रचंड उत्साह के बल पर अपने निश्चित लक्ष्य की ओर उद्दाम वेग से धावमान थे। उनके लिए अभी कितना काम पड़ा

हुआ था! सरकारी मशीनरी अपने हाथ में लेना, नगर में व्यवस्था स्थापित करना, गैरिसन को वफ़ादार बनाये रखना, दूमा से और उद्धार समिति से संघर्ष करना, जर्मनों को घुसने न देना, केरेन्स्की से लड़ने की तैयारी करना, यहां जो घटनायें हुई हैं, उनकी सूचना प्रान्तों में पहुं-चाना और अर्खांगेल्स्क से लेकर व्लादिवोस्तोक तक, पूरे देश में धुआंधार प्रचार करना... हालत यह थी कि सरकार और नगरपालिका के कर्म-चारी कमिसारों का हुक्म मानने से इनकार कर रहे थे, डाक-तार कर्मचारी उन्हें संचार की सुविधायें देने से इनकार कर रहे थे, रेल कर्मचारी रेलगाड़ियों के लिए उनकी अपीलों को निष्ठुर होकर अनसुनी कर रहे थे। केरेन्स्की बढ़ते आ रहे थे, गैरिसन पर पूरा पूरा भरोसा नहीं किया जा सकता था, कज़्ज़ाक मौक़े का इन्ज़ार कर रहे थे... बोल्शेविकों के ख़िलाफ़ संगठित पूंजीपति वर्ग ही नहीं था, बल्कि वामपंथी समाजवादी क्रांतिकारियों, मुट्ठी भर मेन्शेविक-अन्तर्राष्ट्रीयता-वादियों और सामाजिक जनवादी अन्तर्राष्ट्रीयतावादियों को छोड़कर — और ये लोग भी डांवांडोल थे और यह निश्चय नहीं कर पा रहे थे कि बोल्शेविकों का साथ दें या नहीं — इन्हें छोड़कर बाक़ी सभी समाजवादी पार्टियां उनके ख़िलाफ़ थीं। यह सच है कि मज़दूर और सैनिक जन-समुदाय उनके साथ थे ; जहां तक किसानों का सवाल था, यह पता न था कि ऊंट किस करवट बैठेगा ; बोल्शेविकों का राजनीतिक दल ऐसा न था कि उसमें अनुभवी और शिक्षित लोगों की भरमार हो...

सामने सीढ़ियों से रियाज़ानोव ऊपर आ रहे थे और कुछ घबराये से और कुछ मज़ाक़िया लहजे में कह रहे थे कि वह वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री हैं, परन्तु वह व्यवसाय के बारे में क ख ग भी नहीं जानते। ऊपर रेस्तोरां में एक सज्जन बकरी की खाल का लबादा पहने अकेले एक कोने में बैठे थे ; जो कपड़े वह पहने हुए थे, उन्हीं में वह — मैं कहने जा रहा था — "सोये थे," परन्तु ज़ाहिर था कि वह सोये ही नहीं थे। उनकी दाढ़ी तीन दिन से नहीं बनी थी। वह चिन्तित मुद्रा में बैठे एक मैले लिफ़ाफ़े पर कोई हिसाब लगा रहे थे और बीच बीच में अपनी पेंसिल चबाते जाते थे। यह थे वित्त-कमिसार मेन्जीन्स्की, जिनकी इस पद के लिए एकमात्र योग्यता यह थी कि वह कभी एक फ़्रांसीसी

बैंक में क्लर्क रह चुके थे... और सैनिक क्रांतिकारी समिति के कार्यालय से नीचे तेज़ क़दमों से जाते हुए और चलते चलते काग़ज़ के टुकड़ों पर कुछ घसीटते हुए ये चार आदमी – ये वे कमिसार थे, जिन्हें रूस के चारों कोने भेजा जा रहा था कि वे क्रांति की ख़बर पहुंचायें, लोगों से बहस करें या लड़ें और इसके लिए जो भी तर्क या हथियार उनके हाथ लगें, उनका इस्तेमाल करें...

कांग्रेस एक बजे शुरू होने वाली थी और विशाल सभा-भवन बहुत पहले ही भर गया था, परन्तु सात बजे तक सभापतिमण्डल का ही पता न था... बोल्शेविक दल और वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारी दल अपने अपने कक्षों में मीटिंग कर रहे थे। तीसरे पहर पूरे वक़्त लेनिन और त्रोत्स्की ने समझौता करने का विरोध किया था। बोल्शेविकों का एक काफ़ी बड़ा भाग झुक जाने के पक्ष में था, ताकि सभी समाजवादी पार्टियों को लेकर एक संयुक्त सरकार का गठन किया जा सके। "हम अकेले कब तक ठहर सकते हैं!" इन लोगों ने कहा। "विरोध पक्ष अत्यन्त प्रबल है। हमारे पास आदमी नहीं हैं। हम जनता से कट जायेंगे और सब चौपट हो जायेगा।" कामेनेव, रियाज़ानोव वग़ैरह इसी प्रकार तर्क कर रहे थे।

परन्तु लेनिन, और उनके साथ त्रोत्स्की, चट्टान की तरह दृढ़ और अविचल रहे। "समझौतापरस्त हमारे कार्यक्रम को स्वीकार कर लें और फिर बेशक वे मंत्रिमंडल में आ सकते हैं! हम जौ भर भी हटने के लिए तैयार नहीं हैं। अगर यहां पर ऐसे साथी हैं, जिनमें इतना साहस और संकल्प नहीं है कि वे जोखिम उठायें, जिस तरह हम उठाने के लिए तैयार हैं, तो वे भी बाक़ी कायरों और मिलापकारियों के साथ कांग्रेस को छोड़कर चले जायें। हम मज़दूरों और सिपाहियों के समर्थन से अपने क़दम बढ़ाते जायेंगे।"

सात बजकर पांच मिनट पर वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारियों का संदेश आया कि वे सैनिक क्रांतिकारी समिति से इस्तीफ़ा नहीं देंगे।

"देखा!" लेनिन ने कहा। "वे हमारे पीछे आ रहे हैं!"

ज़रा देर बाद, जब हम विशाल सभा-भवन की प्रेस गैलरी में बैठे

थे, पूंजीवादी अख़बारों के लिए लिखने वाले एक अराजकतावादी सज्जन ने मुझसे कहा कि हम क्यों न बाहर चलें और पता लगायें कि सभापतिमण्डल का क्या हुआ। हमने जाकर देखा **त्से-ई-काह** के कार्यालय में कोई न था, न ही पेत्रोग्राद सोवियत के ब्यूरो में कोई था। हम दोनों स्मोल्नी-भवन के एक कक्ष से दूसरे कक्ष में घूमते रहे, परन्तु मालूम होता था कि किसी को भी इस बात का ज़रा सा भी अन्दाज़ा नहीं था कि कांग्रेस का निर्देशक निकाय कहां है। चलते चलते मेरे साथी ने मुझे अपने पुराने क्रांतिकारी क्रियाकलाप के बारे में, फ़्रांस में अपने निर्वासन के दीर्घ और सुखद काल के बारे में बताया... जहां तक बोल्शेविकों का प्रश्न है, उन्होंने मेरे ऊपर विश्वास करके मुझे अपने मन की बात बतायी, वे निहायत मामूली क़िस्म के लोग हैं – उजड्ड और गंवार, जिन्हें सौंदर्य तथा कला की भावना छू तक नहीं गयी है। यह अराजकतावादी सज्जन रूसी बुद्धिजीवियों का एक सच्चा नमूना थे... इस प्रकार बात करते करते वह मुझे लेकर अन्ततः सत्रह नम्बर के कमरे के सामने आये, जहां सैनिक क्रांतिकारी समिति का कार्यालय था। लोग बेतहाशा दौड़-भाग रहे थे और वह इस तमाम आपाधापी के बीच मजे से खड़े थे। इतने में दरवाज़ा खुला और बग़ैर बिल्ले की वर्दी पहने एक ठिंगना चौड़े-चकले चेहरे वाला आदमी झपट कर बाहर निकला। पहली नज़र में ऐसा लगा कि वह मुस्करा रहा है, लेकिन दूसरी ही नज़र ने बता दिया कि दरअसल वह मुस्करा नहीं रहा है, बल्कि बेहद थकान से उसकी खीसें निकल आयी हैं। यह थे क्रिलेन्को।

मेरे साथी, जो देखने में एक बहुत शाइस्ता, सजीले जवान थे, ख़ुशी से चीख़ उठे और आगे बढ़े।

"निकोलाई वसील्येविच," उन्होंने अपना हाथ बढ़ाते हुए कहा। "आप मुझे भूल तो नहीं गये हैं, कामरेड? हम दोनों जेल में एक साथ थे।"

क्रिलेन्को ने बड़ी कोशिश से अपनी दृष्टि और अपने ध्यान को एकाग्र किया और फिर उन्हें सिर से पैर तक अत्यन्त मैत्रीपूर्ण भाव से देखते हुए जवाब दिया, "नहीं, भूलूंगा क्यों? आप हैं स०... **ज़्द्रास्त-वूइते!** (नमस्कार!)" वे एक दूसरे के गले लग गये। "तुम इस

हंगामे में क्या कर रहे हो?" क्रिलेन्को ने हाथ से चारों ओर इशारा करते हुए कहा।

"ओह, मैं तो बस एक तमाशबीन हूं! आप, मालूम होता है, ख़ूब कामयाब हुए हैं।"

"हां," क्रिलेन्को ने साग्रह कहा, "सर्वहारा क्रान्ति ख़ूब कामयाब हुई है।" और फिर हंस कर, "लेकिन – लेकिन शायद हम दोबारा जेल में मिलेंगे!"

जब हम फिर गलियारे में निकले, मेरे साथी ने दोबारा अपना वृत्तान्त शुरू किया। "आप जानते हैं, मैं क्रोपोत्किन का अनुयायी हूं। हमारी दृष्टि में क्रांति एकदम असफल हुई है। वह जन-साधारण में देशभक्ति का भाव जाग्रत करने में असमर्थ रही है। बेशक, इससे यही साबित होता है कि जनता अभी क्रान्ति के लिए तैयार नहीं है..."

ठीक आठ बजकर चालीस मिनट हुए थे, जब तालियों की गड़-गड़ाहट के साथ सभापतिमंडल के सदस्यों ने प्रवेश किया। उनमें लेनिन – महान् लेनिन भी थे। नाटा क़द, गठा हुआ शरीर, भारी सिर – गंजा, उभरा हुआ और मज़बूती से गर्दन पर बैठा हुआ। छोटी छोटी आंखें, चिपटी सी नाक, काफ़ी बड़ा, फैला हुआ मुंह और भारी ठुड्डी; दाढ़ी फ़िलहाल सफ़ाचट, लेकिन पहले के और बाद के बर्षों की उनकी मशहूर दाढ़ी अभी से उगने लगी थी। पुराने कपड़े पहने हुए, जिनमें पतलून उनके क़द को देखते हुए ख़ासकर लम्बी थी। चेहरे-मोहरे से वह जनता के आराध्य नहीं लगते थे, फिर भी उन्हें जितना प्रेम और सम्मान मिला, उतना इतिहास में बिरले ही नेताओं को मिला होगा। एक विलक्षण जन-नेता, जो केवल अपनी बुद्धि के बल पर नेता बने थे। तबीयत में न रंगीनी न लताफ़त, न ही कोई ऐसी स्वभावगत विलक्षणता, जो मन को आकर्षित करती। वह दृढ़, अविचल तथा अनासक्त आदमी थे, परन्तु उनमें गहन विचारों को सीधे-सादे शब्दों में समझाने की और किसी भी ठोस परिस्थिति को विश्लेषित करने की अपूर्व क्षमता थी। और उनमें सूक्ष्मदर्शिता के साथ साथ बौद्धिक साहसिकता कूट कूट कर भरी थी।

कामेनेव सैनिक क्रांतिकारी समिति की कार्रवाइयों के बारे में रिपोर्ट पेश कर रहे थे: सेना में मृत्यु-दण्ड समाप्त कर दिया गया है, प्रचार-स्वातन्त्र्य को फिर से पुनःस्थापित किया गया है और राजनीतिक अपराधों के लिए गिरफ़्तार अफ़सरों और सिपाहियों को रिहा कर दिया गया है, केरेन्स्की को गिरफ़्तार करने का और निजी गोदामों में जमा अनाज की ज़ब्ती का हुक्म जारी किया गया है... बड़े ज़ोर की तालियां।

बुंद का प्रतिनिधि फिर बोलने के लिए खड़ा हुआ – बोल्शेविकों के कट्टर रुख़ का नतीजा यह होगा कि क्रान्ति कुचल दी जायेगी। इसलिए **बुंद**-प्रतिनिधि कांग्रेस में भाग लेने से इनकार करते हैं। हाल से आवाज़ें, "हमने तो समझा था कि आप लोग कल रात ही निकल गये! आप लोग कितनी बार सभा त्याग करेंगे?"

इसके बाद मेन्शेविक-अन्तर्राष्ट्रीयतावादियों के प्रतिनिधि। आवाज़ें, "हैं! आप अभी यहां मौजूद हैं?" वक्ता ने सफ़ाई देते हुए कहा कि सभी मेन्शेविक-अन्तर्राष्ट्रीयतावादियों ने कांग्रेस का परित्याग नहीं किया है, कुछ चले गये और बाक़ी कांग्रेस में भाग लेने वाले हैं...

"हम समझते हैं कि सत्ता सोवियतों के हाथ में अन्तरित करना क्रान्ति के लिए ख़तरनाक है और सम्भवतः सांघातिक भी..." बीच में आवाज़ें, शोर। "लेकिन फिर भी हम अपना यह कर्तव्य समझते हैं कि कांग्रेस में मौजूद रहें और इस अन्तरण के विरुद्ध वोट दें।"

और भी लोग बोले, परन्तु प्रगटतः किसी क्रम से नहीं। दोन प्रदेश के खान मज़दूरों के एक प्रतिनिधि ने मांग की कि कांग्रेस कलेदिन के ख़िलाफ़ कार्रवाई करे, जो राजधानी को होनेवाली कोयले और अनाज की सप्लाई की लाइन को काट सकता है। मोर्चे से अभी अभी पहुंचने वाले कई सिपाहियों ने कांग्रेस को अपनी अपनी रेजीमेंटों का उत्साहपूर्ण अभिवादन-संदेश दिया... और बाद में लेनिन बोलने के लिए खड़े हुए। मिनटों तक तालियों की गड़गड़ाहट होती रही, लेकिन वह ज़ाहिरा उससे बेख़बर लोगों के ख़ामोश हो जाने का इन्तज़ार करते हुए खड़े रहे – अपने सामने रीडिंग-स्टैंड को पकड़े, वह अपनी छोटी छोटी, मिचमिचाती आंखों से भीड़ को एक सिरे से दूसरे सिरे तक देख रहे थे। जब तालियां बंद हुईं, उन्होंने निहायत सादगी से बस इतना ही

कहा, "अब हम समाजवादी व्यवस्था का निर्माण शुरू करेंगे!" और फिर जनसमुद्र का वही प्रचण्ड गर्जन।

"पहला काम है शान्ति सम्पन्न करने के लिए अमली कार्रवाई करना... हम सोवियत शर्तों के आधार पर सभी युद्धरत देशों की जनता से शांति का प्रस्ताव करेंगे। ये शर्तें हैं बग़ैर संयोजनों के, बग़ैर हरजानों के और जातियों के आत्मनिर्णय के अधिकार के साथ शान्ति। साथ ही, अपने वादे के मुताबिक हम गुप्त संधियों को प्रकाशित करेंगे और उन्हें रद्द करेंगे... युद्ध और शांति का प्रश्न इतना स्पष्ट है कि मेरा ख़्याल है कि मैं बिना किसी प्रस्तावना के सभी युद्धरत देशों के जनों के नाम घोषणा के मसौदे को पढ़ सकता हूं..."

जब वह बोल रहे थे, उनका चौड़ा मुंह पूरा खुला था और उस पर जैसे हंसी खेल रही थी। उनकी आवाज़ भारी थी, मगर सुनने में बुरी नहीं थी—लगता था कि सालों तक बोलते रहने से यह आवाज़ सख़्त हो गयी हो। वह एक ही लहजे में बोलते रहे और सुनने वाले को यह महसूस होता था कि वह हमेशा, हमेशा ऐसे ही बोलते रह सकते हैं और उनकी आवाज़ कभी भी बंद होनेवाली नहीं है... अपनी बात पर ज़ोर देना होता, तो वह बस ज़रा सा आगे की ओर झुक जाते। न अंगविक्षेप, न भावभंगी। और उनके सामने एक हज़ार सीधे-सादे लोगों के एकाग्र मुखड़े श्रद्धा और भक्ति से उनकी ओर उठे हुए थे।

सभी युद्धरत राष्ट्रों के जनों और सरकारों के नाम घोषणा

छः तथा सात नवम्बर की क्रांति द्वारा स्थापित और मज़दूरों, सैनिकों तथा किसानों के प्रतिनिधियों की सोवियतों पर आधारित, यह मज़दूर तथा किसान सरकार सभी युद्धरत जनों तथा उनकी सरकारों से प्रस्ताव करती है कि वे एक न्याय्य तथा जनवादी शांति-संधि के लिए अविलंब वार्ता आरम्भ करें।

न्याय्य तथा जनवादी शान्ति से—जिसकी सभी युद्धरत देशों के युद्ध से थके-मांदे और नंगे-बूचे मज़दूरों तथा मेहनतकश वर्गों का विशाल बहुमत आकांक्षा रखता है, जिसकी ज़ारशाही राजतंत्र को धराशयी करने

के बाद से रूसी मज़दूर और किसान बराबर, स्पष्ट तथा निरपेक्ष रूप से मांग करते रहे हैं – सरकार का तात्पर्य वह शान्ति है, जो बग़ैर संयोजन किये (अर्थात् बग़ैर विदेशी प्रदेशों को अधीन बनाये, बग़ैर दूसरी जातियों का बलात् संयोजन किये) और बग़ैर हरजाना लिये अविलम्ब सम्पन्न की जाये।

रूस की सरकार सभी युद्धरत जनों से प्रस्ताव करती है कि सभी देशों तथा सभी जातियों की जनता की अधिकृत सभाओं द्वारा ऐसी शांति की सभी शर्तों का निश्चित रूप से अनुसमर्थन होने से पहले वे ऐसी शांति के उद्देश्य से तुरंत, तनिक सा भी विलंब किये बिना, वार्ता आरंभ करने का निर्णायक क़दम उठाने के लिए अपनी तत्परता प्रगट कर अविलम्ब ऐसी शांति सम्पन्न करें।

सामान्यतः जनवादी अधिकारों की और विशेषतः मेहनतकश वर्गों के अधिकारों की धारणा के अनुरूप ही, संयोजन अथवा विदेशी प्रदेश के अधीनीकरण से सरकार का तात्पर्य किसी छोटी और कमज़ोर जाति का उसकी मरज़ी और स्वीकृति की स्वैच्छिक, स्पष्ट तथा ठीक ठीक अभिव्यक्ति के बिना, एक विशाल और शक्तिशाली राज्य के साथ मिलाया जाना है, चाहे ऐसा बलात् संयोजन किसी भी घड़ी में सम्पन्न क्यों न किया गया हो, चाहे बलात् संयोजित किये जाने वाले अथवा अन्य राज्य की सीमाओं के भीतर रखे जाने वाले राष्ट्र की सभ्यता का स्तर कुछ भी क्यों न हो और चाहे वह राष्ट्र यूरोप में हो या समुद्र पार के दूर देशों में।

यदि एक राष्ट्र अन्य राज्य की सीमाओं के भीतर बलात् रखा जाता है; यदि उसके द्वारा व्यक्त इच्छा के बावजूद (इस बात से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता कि यह इच्छा समाचारपत्रों, जन-सभाओं, राजनीतिक पार्टियों के निर्णयों द्वारा व्यक्त हुई है अथवा राष्ट्रीय उत्पीड़न के विरुद्ध उपद्रव तथा विद्रोह द्वारा) उस राष्ट्र को संयोजन करने वाले अथवा संयोजन की इच्छा रखने वाले अथवा सामान्यतः अधिक शक्तिशाली राष्ट्र की सेनाओं के पूरी तरह हटा लिये जाने के बाद, उसके ऊपर ज़रा सा भी दबाव डाले बिना, स्वतन्त्र मतदान द्वारा अपने राष्ट्रीय तथा राजनीतिक संगठन का रूप निश्चित करने का अधिकार नहीं दिया जाता,

तो ऐसे राष्ट्र का मिलाया जाना संयोजन है, अर्थात् अधीनीकरण है और हिंसात्मक कार्य है।

सरकार की दृष्टि में इस लड़ाई को इस गरज़ से जारी रखना कि शक्तिशाली तथा समृद्ध राष्ट्र दुर्बल तथा विजित जातियों को आपस में बांट सकें, मानवता के विरुद्ध जघन्यतम अपराध है। और सरकार उपरोक्त शर्तों पर, जो निरपवाद रूप से सभी जातियों के लिए समान रूप से न्यायपूर्ण हैं, शांति-संधि संपन्न करने के अपने निर्णय की पूरी गंभीरता से घोषणा करती है, जिसके द्वारा युद्ध को समाप्त किया जायेगा।

इसके साथ ही सरकार यह भी घोषणा करती है कि वह शान्ति की उपरोक्त शर्तों को अन्तिम चुनौती के रूप में नहीं पेश कर रही है, दूसरे शब्दों में, वह शान्ति की किन्हीं दूसरी शर्तों पर भी विचार करने को तैयार है, परन्तु वह केवल इस पर आग्रह करती है कि कोई भी युद्धरत राष्ट्र यथाशीघ्र उन्हें प्रस्तुत करे और यह कि शान्ति के सुझावों में बिल्कुल स्पष्टता हो और किसी प्रकार की गोलमोल बातें या गोपनीयता न हो।

सरकार गुप्त कूटनीति को समाप्त करती है और वह समस्त वार्ता को जनता की नज़र के सामने खुले तौर पर चलाने के अपने दृढ़ निश्चय को पूरे देश के सामने प्रगट करती है। मार्च से लेकर ७ नवंबर, १६१७ तक ज़मींदारों और पूंजीपतियों की सरकार ने जिन गुप्त संधियों को अनुमोदित अथवा संपन्न किया है, सरकार उन सब का पूर्ण अविकल प्रकाशन तत्काल आरम्भ करेगी। सरकार गुप्त संधियों की सभी धाराओं को, जिनका उद्देश्य अधिकांशतः रूसी पूंजीपतियों के लिए सुविधायें तथा विशेषाधिकार प्राप्त करना है अथवा रूसी साम्राज्यवादियों के संयोजनों को क़ायम रखना या बढ़ाना है, फ़ौरन बिना किसी बातचीत के रद्द करती है।

सभी सरकारों तथा सभी जनों से शांति-संधि के लिए सार्वजनिक वार्ता करने का प्रस्ताव करती हुई सरकार घोषणा करती है कि वह ऐसी वार्ता डाक-तार के द्वारा अथवा विभिन्न देशों के प्रतिनिधियों की वार्ता द्वारा अथवा इन प्रतिनिधियों के एक सम्मेलन में चलाने के लिए तैयार है। ऐसी वार्ता सुविधाजनक रूप से हो सके, इसके लिए सरकार तटस्थ देशों में अपने अधिकृत प्रतिनिधि नियुक्त करती है।

सरकार सभी युद्धरत देशों की सरकारों तथा जनों से प्रस्ताव

करती है कि वे अविलम्ब युद्ध-विराम समझौता सम्पन्न करें और साथ ही यह सुझाव देती है कि यह युद्ध-विराम कम से कम तीन महीने के लिए होना चाहिए, जिस अवधि में निरपवाद रूप से युद्ध में खिंच आये या उसमें भाग लेने के लिए विवश सभी राष्ट्रों और जातियों के प्रतिनिधियों के बीच न केवल आवश्यक प्रारंभिक वार्ता ही पूर्णतः संभव है, बल्कि शान्ति की शर्तों को निश्चित रूप से स्वीकार करने के उद्देश्य से सभी देशों की जनता के प्रतिनिधियों की अधिकृत सभायें भी बखूबी बुलायी जा सकती हैं।

सभी युद्धरत देशों की सरकारों तथा जनों से शान्ति का यह प्रस्ताव करती हुई रूस की अस्थायी मज़दूर तथा किसान सरकार उन तीन राष्ट्रों – इंग्लैंड, फ़्रांस और जर्मनी – के वर्ग-चेतन मज़दूरों का विशेष रूप से सम्बोधन करती है, जो मानवता के सबसे उन्नत राष्ट्र हैं और जो वर्तमान युद्ध में भाग लेने वाले राष्ट्रों में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण हैं।

इन देशों के मज़दूरों ने प्रगति तथा समाजवाद के ध्येय की बहुत बड़ी सेवा की है। इंग्लैंड में चार्टिस्ट आन्दोलन, फ़्रांसीसी सर्वहारा द्वारा सम्पन्न विश्वव्यापी ऐतिहासिक महत्त्व की क्रान्तियों का पूरा सिलसिला और अन्ततः जर्मनी में असाधारण क़ानूनों के खिलाफ़ ऐतिहासिक संघर्ष, जो सारी दुनिया के मज़दूरों के लिए दीर्घकालीन दृढ़ संघर्ष का एक उदाहरण है, और जर्मन सर्वहाराओं के प्रबल संगठनों की स्थापना – ये सारी शानदार मिसालें, सर्वहारा वीरता के ये नमूने, इतिहास की ये स्मरणीय घटनायें हमारे लिए इस बात की पक्की गारंटी हैं कि इन देशों के मज़दूरों के ऊपर मानवता को युद्ध की विभीषिकाओं तथा उसके परिणामों से मुक्त करने का जो कार्यभार आ पड़ा है वे उसे समझेंगे, कि ये मज़दूर प्रबल, निर्णायक तथा सतत संघर्ष के द्वारा शान्ति के ध्येय को, और साथ ही समस्त दासता तथा समस्त शोषण से शोषित श्रमिक जन-साधारण की मुक्ति के ध्येय को सफलतापूर्वक पूरा करने में हमारी सहायता करेंगे।

जब तालियों की गड़गड़ाहट शान्त हुई, लेनिन ने फिर बोलना शुरू किया :

"हम प्रस्ताव करते हैं कि कांग्रेस इस घोषणा का अनुसमर्थन करे। हम जनता का सम्बोधन करते हैं और सरकारों का भी, क्योंकि यदि हमारी घोषणा युद्धरत देशों की जनता के नाम ही हो, तो उससे शान्ति-सन्धि सम्पन्न करने में विलंब हो सकता है। युद्ध-विराम काल में शान्ति-सन्धि की जो शर्तें विवृत की जायेंगी, संविधान सभा उनका अनुसमर्थन करेगी। युद्ध-विराम की अवधि तीन महीना निश्चित करने में हमारी मंशा यह है कि इस ख़ून-ख़राबे और मारकाट के बाद जनता को यथासंभव अधिक से अधिक विराम मिल सके और उसे अपने प्रतिनिधियों का चुनाव करने के लिए प्रचुर समय मिल सके। साम्राज्यवादी सरकारें हमारे इस शान्ति-प्रस्ताव का विरोध करेंगी – हमें इसके बारे में कोई मुग़ालता नहीं है। परन्तु हम आशा करते हैं कि सभी युद्धरत देशों में क्रान्ति जल्द ही भड़क उठेगी, यही कारण है कि हम फ़्रांस, इंग्लैंड और जर्मनी के मज़दूरों का विशेष रूप से सम्बोधन करते हैं ..."

उन्होंने अपना भाषण इन शब्दों के साथ ख़त्म किया, "छः तथा सात नवम्बर की क्रान्ति ने समाजवादी क्रान्ति के युग का सूत्रपात किया है ... शान्ति तथा समाजवाद के नाम पर मज़दूर आन्दोलन जीतेगा और अपने भवितव्य को चरितार्थ करेगा ..."

इन शब्दों में एक ऐसी अद्‌भुत निष्कम्प शक्ति थी, जो प्राणों को आलोड़ित करती थी। इसे आसानी से समझा जा सकता है कि क्यों जब लेनिन बोलते थे, लोग उनकी बात पर विश्वास करते थे ...

लोगों ने हाथ उठाकर यह तुरंत फ़ैसला कर दिया कि केवल राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों को ही प्रस्ताव पर बोलने की इजाज़त दी जानी चाहिए, और हर भाषणकर्ता के लिए पन्द्रह मिनट का समय बांध देना चाहिए।

सबसे पहले वामपंथी समाजवादी-क्रान्तिकारियों की ओर से करेलिन बोले: "हमारे दल को घोषणा के मज़मून में संशोधन पेश करने का कोई मौक़ा नहीं मिला है। घोषणा बोल्शेविकों की निजी दस्तावेज़ है। फिर भी हम उसके पक्ष में वोट देंगे, क्योंकि हम उसकी भावना से सहमत हैं ..."

सामाजिक-जनवादी अन्तर्राष्ट्रीयतावादियों की ओर से क्रामारोव उठे।

लंबा क़द, कंधे कुछ झुके हुए, आंखें समीप-दर्शी – यह थे कामारोव, जो आने वाले दिनों में विरोध पक्ष के विदूषक के रूप में शोहरत हासिल करने वाले थे। उन्होंने कहा कि सभी समाजवादी पार्टियों द्वारा बनायी गयी सरकार ही एक ऐसा महत्त्वपूर्ण क़दम उठाने का अधिकार रख सकती है। अगर एक संयुक्त समाजवादी मंत्रिमंडल बनाया जाये, तो उनका दल समूचे कार्यक्रम का समर्थन करेगा, नहीं तो वह उसके एक भाग का ही समर्थन करेगा। जहां तक घोषणा का प्रश्न है, अंतर्राष्ट्रीयतावादी उसकी मुख्य बातों से पूरी तरह सहमत हैं...

और तब उत्तरोत्तर बढ़ते हुए उत्साह के बीच एक वक्ता के बाद दूसरा वक्ता बोला: उक्रइनी सामाजिक-जनवाद की ओर से – समर्थन; लिथुआनियाई सामाजिक-जनवाद की ओर से – समर्थन; जन-समाजवादी – समर्थन; पोलिश सामाजिक-जनवाद – समर्थन; पोलिश समाजवादी – समर्थन, परन्तु उनकी दृष्टि में संयुक्त समाजवादी मंत्रिमण्डल अधिक श्रेयस्कर होगा; लाटवियाई सामाजिक-जनवाद – समर्थन... इन आदमियों में जैसे कोई ज्योति जग गयी थी। एक ने "आसन्न विश्वक्रान्ति, जिसके हम अगले दस्ते हैं," की बात की; दूसरे ने उस "नये भ्रातृत्वपूर्ण युग" की बात की, "जब संसार के सभी जन एक परिवार जैसे हो जायेंगे..." एक प्रतिनिधि ने व्यक्तिगत रूप से बोलने की अनुमति मांगी। "घोषणा में एक अंतर्विरोध है," उसने कहा। "पहले आप बग़ैर संयोजनों और हरजानों के शान्ति का प्रस्ताव करते हैं और फिर आप कहते हैं कि आप शान्ति के सभी प्रस्तावों पर विचार करेंगे। विचार करने का अर्थ है ग्रहण करना..."

लेनिन उठ खड़े हुए। "हम न्याय्य शान्ति चाहते हैं, पर हम क्रान्तिकारी युद्ध से घबराते नहीं... साम्राज्यवादी सरकारें संभवतः हमारी अपील का उत्तर नहीं देंगी, परन्तु हम कोई अल्टीमेटम नहीं जारी करेंगे, जिसे ठुकरा देना आसान होगा... अगर जर्मन सर्वहारा यह समझ ले कि हम शान्ति के सभी प्रस्तावों पर विचार करने के लिए तैयार हैं, तो शायद यह बारूद में चिनगारी का काम करे – और जर्मनी में क्रांति भड़क उठे...

"हम शान्ति की सभी शर्तों पर ग़ौर करने के लिए राज़ी हैं, मगर

इसका मतलब यह नहीं है कि हम उन शर्तों को मंजूर भी कर लेंगे ... अपनी कुछ शर्तों के लिए हम अंत तक लड़ेंगे, लेकिन हो सकता है कि दूसरी शर्तों की ख़ातिर हम लड़ाई चलाते जाना असंभव पायेंगे ... सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि हम लड़ाई ख़त्म करना चाहते हैं ..."

ठीक दस बजकर पैंतीस मिनट पर कामेनेव ने कहा कि जो लोग घोषणा के पक्ष में हैं, वे अपने कार्ड दिखायें। केवल एक प्रतिनिधि ने विरोध में अपना हाथ उठाने की जुर्रत की, लेकिन इस पर चारों ओर लोगों में इतना ग़ुस्सा भड़क उठा कि उसने भी अपना हाथ जल्दी से नीचे कर लिया ... घोषणा सर्वसम्मति से स्वीकृत हो गयी।

सहसा हम सब एक ही सहज प्रेरणा के वशीभूत होकर उठ खड़े हुए और 'इंटरनेशनल' का मुक्त, निर्बाध, आरोही स्वर हमारे कंठों से फूट निकला। एक पुराना, खिचड़ी बालों वाला सिपाही बच्चे की तरह फूट-फूट कर रो पड़ा। अलेक्सान्द्रा कोल्लोन्ताई ने जल्दी से अपने आंसुओं को रोका। एक हज़ार कंठों से निकली यह प्रबल ध्वनि सभा-भवन में तरंगित होकर खिड़कियों-दरवाज़ों से बाहर निकली और ऊपर उठती गयी, ऊपर उठती गयी और निभृत आकाश में व्याप्त हो गयी। "लड़ाई ख़त्म हो गयी! लड़ाई ख़त्म हो गयी!" मेरे पास खड़े एक नौजवान मज़दूर ने कहा, जिसका चेहरा चमक रहा था। और जब यह गान समाप्त हो गया और हम वहां निस्तब्ध खोये से खड़े थे, हॉल के पीछे से किसी ने आवाज़ दी, "साथियो, हम उन लोगों की याद करें, जिन्होंने आज़ादी के लिए अपना जीवन बलिदान कर दिया!" और इस प्रकार हमने शोकगान 'शवयात्रा' गाना शुरू किया, जिसका स्वर धीमा और उदास होते हुए भी विजयपूर्ण था। यह था दिल को हिला देने वाला एक ठेठ रूसी गाना। कुछ भी हो, 'इन्टरनेशनल' का राग विदेशी ही ठहरा, परन्तु 'शवयात्रा' में उस विशाल जनता के प्राणों की गूंज थी, जिसके प्रतिनिधि इस हॉल में बैठे थे और अपने धुंधले धुंधले मानस-चित्र के आधार पर नये रूस का सृजन कर रहे थे – और शायद और भी ज़्यादा ...

'शवयात्रा' की पंक्तियां :

तुमने जन-स्वातन्त्र्य के लिए, **जन-सम्मान** के लिए
प्राणघाती युद्ध में अपने प्राणों की आहुति दी...
तुमने अपना जीवन बलिदान दिया
और अपना सब कुछ होम कर दिया।
तुमने बंदीगृह में नरक की यातनायें भोगीं
तुम ज़ंजीरों से बंधे कालापानी गये...
तुमने इन ज़ंजीरों को ढोया
और उफ़ भी नहीं किया।
क्योंकि तुम अपने दुःखी भाइयों की आवाज़ को
अनसुनी नहीं कर सकते थे।
क्योंकि तुम्हारा विश्वास था कि न्याय की शक्ति
खड्ग की शक्ति से बड़ी है...
समय आयेगा जब तुम्हारा अर्पित जीवन रंग लायेगा
वह समय आने ही वाला है;
अत्याचार ढहेगा और जनता उठेगी–स्वतन्त्र और महान्।
अलविदा, भाइयो! तुमने अपने लिये महान् पथ चुना।
तुम्हारे पदचिह्नों पर एक नयी सेना चल रही है,
ज़ुल्म सहने और मर मिटने के लिए तैयार...
अलविदा, भाइयो! तुमने अपने लिये महान् पथ चुना।
हम तुम्हारी समाधि पर शपथ उठाते हैं,
हम संघर्ष करेंगे, आज़ादी के लिए और जनता की ख़ुशी के लिए...

इसी के लिए ही वे वहां पड़े रहे हैं, मार्च के शहीद, मार्स मैदान के अपने ठण्डे बिरादराना क़ब्रगाह में पड़े रहे हैं; इसी के लिए हज़ारों आदमियों ने जेलों में, कालापानी में और साइबेरिया की ख़ानों में अपनी जानें दीं। आज वह क्रांति आयी है, हालांकि वह उस तरह नहीं आयी है, जैसा वे सोचते थे या जैसा बुद्धिजीवी चाहते थे, लेकिन वह आयी है–कठोर और शक्तिशाली, फारमूलों की धज्जियां उड़ाती हुई और कोरी भावुकता से तर्क करती हुई। यह है **सच्ची, वास्तविक ...**

लेनिन भूमि संबंधी आज्ञप्ति को पढ़ रहे थे:

(१) भूमि का समस्त निजी स्वामित्व बिला मुआविज़ा फ़ौरन ख़त्म किया जाता है।

(२) ज़मींदारों की सभी ज़मीनें, शाही ज़मीनें, मठों और गिरजाघरों की ज़मीनें, मय तमाम मवेशियों के और औज़ारों के, मय तमाम इंमारतों और लवाज़मात के, जब तक कि संविधान सभा का अधिवेशन नहीं होता तब तक के लिए ज़िला भूमि समितियों तथा किसानों के प्रतिनिधियों की उयेज़्द सोवियतों के हाथ में अन्तरित की जाती हैं।

(३) ज़ब्त की हुई सम्पत्ति को, जो आज से समस्त जनता की सम्पत्ति है, अगर कोई भी नुकसान पहुंचाया जाता है, तो उसे गंभीर अपराध माना जायेगा और वह क्रांतिकारी न्यायाधिकरणों द्वारा दंडनीय होगा। ज़मींदारों की ज़मींनों पर क़ब्ज़ा करते समय किसानों के प्रतिनिधियों की उयेज़्द सोवियतें पूरी कड़ाई से सुव्यवस्था क़ायम रखने के लिए, ज़मीन के टुकड़ों की लम्बाई-चौड़ाई निश्चित करने के लिए और यह निश्चित करने के लिए कि कौन से टुकड़े ज़ब्ती क़ानून के अन्तर्गत आते हैं, ज़ब्त की हुई तमाम जायदाद की फ़ेहरिस्त बनाने के लिए और जनता के हाथों में अन्तरित की जाने वाली समस्त कृषि-सम्पत्ति की, मय इमारतों, मवेशियों, औज़ारों और उपज के संचयों के, कठोरतम क्रांतिकारी सुरक्षा के लिए सभी आवश्यक क़दम उठायेंगी।

(४) जब तक कि संविधान सभा भूमि-सुधारों का अंतिम स्वरूप निश्चित न करे, तब तक इन महत्त्वपूर्ण भूमि-सुधारों को पूरा करने का काम निम्नलिखित किसान के **नकाज़**[3] (निर्देश-पत्र) द्वारा निर्देशित होगा, जो २४२ स्थानीय किसान-**नकाज़ों** के आधार पर 'किसानों के प्रतिनिधियों की अखिल रूसी सोवियत के समाचार' ('इज़्वेस्तिया') के सम्पादक-मण्डल द्वारा तैयार किया गया है और उक्त 'इज़्वेस्तिया' के अंक ८८ में प्रकाशित किया गया है (पेत्रोग्राद, अंक ८८, १९ अगस्त, १९१७)।

किसानों और कज़्ज़ाकों की ज़मीनों को ज़ब्त नहीं किया जायेगा।

आज्ञप्ति की व्याख्या करते हुए लेनिन ने कहा, "यह भूतपूर्व मन्त्री चेर्नोव की योजना नहीं है, जिन्होंने 'एक ढांचा तैयार करने' की बात

की थी और ऊपर से सुधार सम्पन्न करने की चेष्टा की थी। भूमि के बंटवारे के सवालों का फ़ैसला नीचे से, गांवों में होगा, किसी किसान को कितनी ज़मीन मिलेगी, यह स्थान विशेष पर निर्भर होगा ...

"अस्थायी सरकार के अन्तर्गत **पोमेश्चिकों** (ज़मींदारों) ने भूमि समितियों के आदेशों को मानने से साफ़ इनकार कर दिया था – उन भूमि समितियों के आदेशों को, जिन्हें ल्वोव ने आकल्पित किया था, शिंगारेव ने जन्म दिया था और जिनका केरेन्स्की ने शासन-प्रबन्ध किया था!"

इसके पहले कि बहस शुरू हो, एक आदमी बड़ी तेज़ी से भीड़ को चीरता हुआ मंच पर चढ़ आया। यह किसानों की सोवियतों की कार्यकारिणी समिति के सदस्य प्यानिख़ थे। वह बिलकुल आपे से बाहर हो रहे थे।

उन्होंने गोया भीड़ पर पत्थर फेंकते हुए कहा, "किसानों के प्रतिनिधियों की अखिल रूसी सोवियतों की कार्यकारिणी समिति अपने साथियों, मन्त्री सलाज़किन तथा मास्लोव की गिरफ़्तारी के प्रति प्रतिवाद प्रगट करती है! हम उनकी फ़ौरन रिहाई की मांग करते हैं! वे इस समय पीटर-पाल क़िले में बंद हैं। इसके बारे में फ़ौरन कार्रवाई करनी होगी! एक मिनट की भी देर नहीं की जा सकती!"

उनके बाद एक और आदमी बोलने के लिए खड़ा हुआ, एक सिपाही, जिसकी दाढ़ी अस्त-व्यस्त हो रही थी और आंखें चमक रही थीं। "आप यहां मज़े से बैठे किसानों को ज़मीन देने की बात कर रहे हैं, और साथ ही अत्याचारियों और बलादग्राहियों की तरह उन्हीं किसानों के चुने हुए प्रतिनिधियों पर ज़ुल्म ढा रहे हैं!" और फिर उसने अपना घूंसा दिखाते हुए कहा, "याद रखिये, अगर उनका बाल भी बांका हुआ, तो बग़ावत की आग भड़क उठेगी!" भीड़ में जैसे खलबली मच गयी – लोगों में उलझन के साथ बेचैनी थी।

और फिर तालियों की गड़गड़ाहट के साथ त्रोत्स्की उठे, शांत, ज़हर के बुझे, अपनी ताक़त का एहसास करते हुए। "कल सैनिक क्रांतिकारी समिति ने सिद्धान्त रूप से निश्चित किया कि समाजवादी-क्रांतिकारी तथा मेन्शेविक मंत्रिगण – मास्लोव, सलाज़किन, ग्वोज़्देव और माल्यान्तोविच – ये छोड़ दिये जायें। अगर वे अभी भी पीटर-पाल

क़िले में हैं, तो इसका कारण केवल यह है कि हमारे सिर पर बहुत सा काम पड़ा हुआ है और हमें उन्हें बाहर निकालने की फ़ुर्सत नहीं मिली ... लेकिन जब तक कोर्नीलोव-कांड के समय केरेन्स्की की विश्वासघातपूर्ण कार्रवाइयों में उनका हाथ कहां तक है, इसकी हम जांच न कर लें, तब तक उन्हें अपने घरों में गिरफ्तार रखा जायेगा!"

प्यानिख़ ने चिल्लाकर कहा, "यहां जैसी बातें हम देख रहे हैं वैसी कभी किसी क्रांति के दौरान नहीं हुई हैं!"

"आप ग़लती पर हैं," त्रोत्स्की ने जवाब दिया। "ऐसी बातें हमारी क्रांति में भी देखी गयी हैं। जुलाई के दिनों में हमारे सैकड़ों साथी गिरफ़्तार कर लिये गये थे... जब कामरेड कोल्लोन्ताई को डाक्टर की हिदायत पर जेल से रिहा किया गया, अव्क्सेन्त्येव ने उनके घर के दरवाज़े पर ज़ार की ख़ुफ़िया पुलिस के दो भूतपूर्व एजेन्टों को तैनात कर दिया!" त्रोत्स्की के उत्तर से किसानों की बोलती बन्द हो गयी और वे बड़बड़ाते हुए, लोगों की फ़ब्तियों और फ़िकरों का निशाना बने, मंच से नीचे उतर गये।

वामपंथी समाजवादी-क्रान्तिकारियों के प्रतिनिधि ने भूमि संबंधी आज्ञप्ति पर भाषण किया। सिद्धान्त रूप में उससे सहमत होते हुए भी उन्होंने कहा कि उनका दल जब तक बातचीत और बहस न हो ले इस प्रश्न पर मतदान नहीं करेगा। उन्होंने आग्रह किया कि किसानों की सोवियतों से परामर्श करना चाहिए...

मेन्शेविक-अन्तर्राष्ट्रीयतावादियों ने भी साग्रह कहा कि वे इस प्रश्न पर अपनी पार्टी की अंतरंग सभा में विचार करेंगे।

इसके बाद किसानों के अराजकतावादी पक्ष, पराकाष्ठावादियों के एक नेता ने भाषण किया: "हमें उस राजनीतिक पार्टी को सम्मान देना होगा, जो पहले ही दिन बग़ैर लफ़्फ़ाज़ी किये और लेक्चर झाड़े इस प्रकार का कार्य सम्पन्न करती है!"

मंच पर एक ठेठ किसान बोलने के लिए खड़ा हुआ; वेशभूषा ठेठ किसानों जैसी – लम्बे बाल, भारी बूट और चमड़े का कोट। सभी ओर झुक कर अभिवादन प्रगट करते हुए उसने कहा, "मैं आपका भला चाहता हूं, साथियो और नागरिको। बाहर कुछ कैडेट विचरण कर रहे

हैं। आपने हमारे समाजवादी किसानों को तो गिरफ़्तार कर लिया, उन्हें क्यों नहीं गिरफ़्तार करते?"

यह भाषण जैसे नक्कारे पर चोट था, जिसने कितने ही उत्तेजित किसानों को बोलने के लिए खड़ा किया, और वे ठीक उसी तरह बोले, जिस तरह पिछली रात सिपाही बोले थे। ये थे गांवों के सच्चे सर्वहारा...

"अव्क्सेन्त्येव और उनकी मंडली जैसे हमारी कार्यकारिणी समिति के जिन सदस्यों के बारे में हमने सोचा था कि वे किसानों के रक्षक हैं, वे भक्षक निकले – वे भी कैडेट ही हैं! उन्हें भी गिरफ़्तार करो! उन्हें पकड़ लो!"

एक दूसरा वक्ता, "ये प्यानिख़ जैसे, अव्क्सेन्त्येव जैसे लोग कौन हैं? उन्हें भला किसान कौन कहेगा! वे करते-धरते कुछ नहीं, सिर्फ़ अपनी उंगलियां चटकाते हैं!"

भीड़ ने किस क़दर तालियां बजाईं – उसने पहचाना कि ये किसान हमारे ही भाई हैं!

वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारियों ने प्रस्ताव किया कि सभा आधे घंटे के लिए विसर्जित की जाये। जिस घड़ी प्रतिनिधि बाहर निकल रहे थे, लेनिन ने अपने स्थान पर उठ कर कहा:

"हमें एक मिनट भी ज़ाया नहीं करना है, साथियो! यह ख़बर, जो रूस के लिए इतने महत्त्व की है, कल सुबह अख़बारों में ज़रूर छप जानी चाहिये! इसमें देर न हो!"

और उत्तेजित तर्क-वितर्क, वाद-विवाद तथा पदचाप की सम्मिलित ध्वनि के बीच सैनिक क्रांतिकारी समिति के एक दूत का कठिन स्वर सुना जा सकता था, "पन्द्रह प्रचारक सत्रह नम्बर के कमरे में एक दम पहुंच जायें, उन्हें मोर्चे पर जाना है!.."

लगभग ढाई घंटे बाद छिटपुट करके प्रतिनिधि वापिस आये, सभापतिमण्डल ने अपना आसन ग्रहण किया और अधिवेशन पुनः आरम्भ हुआ। एक रेजीमेंट के बाद दूसरी रेजीमेंट के तार पढ़कर सुनाये गये, जिनमें उन्होंने सैनिक क्रांतिकारी समिति के प्रति अपनी वफ़ादारी का एलान किया था।

धीरे धीरे मीटिंग में तेज़ी आयी। मैकेदोनियाई मोर्चे पर रूसी सेनाओं के एक प्रतिनिधि ने वहां की परिस्थिति के बारे में तल्ख़ बयान दिया। "हम वहां पर दुश्मन से उतने परेशान नहीं हैं, जितने अपने 'मित्र-राष्ट्रों' की दोस्ती से," उसने कहा। दसवीं और बारहवीं सेनाओं के प्रतिनिधियों ने, जो जल्दी जल्दी चल कर अभी वहां पहुंचे थे, कहा "हम अपनी पूरी शक्ति से आपका समर्थन करते हैं!" एक किसान सिपाही ने "ग़द्दार समाजवादियों मास्लोव और सलाज़किन" की रिहाई के ख़िलाफ़ प्रतिवाद प्रगट किया और कहा कि जहां तक किसानों की सोवियतों की कार्यकारिणी समिति का प्रश्न है, उसे पूरे का पूरा गिरफ़्तार कर लेना चाहिए! ये थीं इंक़लाब की सच्ची आवाज़ें... फ़ारस में रूसी सेना के एक प्रतिनिधि ने एलान किया कि उसे सेना की ओर से हिदायत दी गयी है कि वह समस्त सत्ता सोवियतों के हाथ में अन्तरित की जाने की मांग करे... एक उक्रइनी अफ़सर ने अपनी मातृभाषा में बोलते हुए कहा: "इस संकट में राष्ट्रवाद के लिए कोई जगह नहीं है... सभी देशों का सर्वहारा अधिनायकत्व ज़िंदाबाद!" उदात्त तथा उत्तेजनापूर्ण भावनाओं की एक ऐसी ज्वार उठी, ऐसा वाक्-प्रवाह कि स्पष्ट था, अब रूस कभी भी मौन, निःस्वर नहीं होगा।

कामेनेव ने कहा कि बोल्शेविक-विरोधी शक्तियां सभी जगह उपद्रव भड़काने की कोशिश कर रही हैं और उन्होंने रूस की सभी सोवियतों के नाम कांग्रेस की अपील को पढ़ कर सुनाया:

कुछ किसानों के प्रतिनिधियों समेत मज़दूरों तथा सैनिकों के प्रतिनिधियों की सोवियतों की अखिल रूसी कांग्रेस सभी स्थानीय सोवियतों का आह्वान करती है कि वे समस्त प्रतिक्रांतिकारी कार्रवाइयों, यहूदी-विरोधी और सभी दूसरे दंगा-फ़सादों का, चाहे वे कैसे भी क्यों न हों, मुक़ाबला करने के लिए फ़ौरन ज़ोरदार क़दम उठायें। मज़दूरों, किसानों और सिपाहियों की क्रांति की इज़्ज़त का तक़ाज़ा है कि किसी भी तरह का दंगा-फ़साद बर्दाश्त न किया जाये।

पेत्रोग्राद के लाल गार्ड, क्रांतिकारी गैरिसन और मल्लाहों ने राजधानी में पूर्ण सुव्यवस्था क़ायम रखी है।

मज़दूरो, सिपाहियो और किसानो, आपको सभी जगह पेत्रोग्राद के मज़दूरों और सिपाहियों की मिसाल पर चलना चाहिए।

साथी सिपाहियो और कज़्ज़ाको, सच्ची क्रांतिकारी सुव्यवस्था को सुनिश्चित बनाने का कार्यभार आपके कंधों पर आ पड़ा है। समूचे क्रांतिकारी रूस की और समूची दुनिया की निगाहें आपके ऊपर लगी हुई हैं...

रात के दो बजे भूमि-सम्बन्धी आज्ञप्ति पर वोट लिया गया और उसके ख़िलाफ़ केवल एक वोट पड़ा। किसान प्रतिनिधि फूले नहीं समा रहे थे... इस प्रकार बोल्शेविक लोग दुविधा और विरोध का अतिक्रमण कर, अप्रतिहत गति से आगे बढ़े – रूस में ये ही लोग ऐसे थे, जिनके पास एक निश्चित, व्यावहारिक कार्यक्रम था, जबकि दूसरे लोग पूरे आठ महीनों से सिर्फ़ बातें बघार रहे थे।

अब एक सिपाही बोलने के लिए खड़ा हुआ – दुबला, फटेहाल, बोलने में होशियार। उसने **नकाज़** * की उस धारा का विरोध किया, जिसके अनुसार फ़ौजी भगोड़ों को गांवों में भूमि के वितरण में हिस्सा पाने से वंचित किया गया था। शुरू शुरू में उस पर आवाज़ें कसी गईं और शोर किया गया, लेकिन आख़िरकार उसकी सीधी-सादी और पुरअसर तक़रीर ने रंग दिखाया और लोग ख़ामोश उसे सुनने लगे। "सिपाही को उसकी मरज़ी के ख़िलाफ़ खाइयों की मारकाट में झोंक दिया गया, जिसे आपने ख़ुद शांति की आज्ञप्ति में बेमानी ही नहीं, खौफ़नाक भी कहा है, और उसने अमन और आज़ादी की उम्मीद से क्रांति का स्वागत किया। अमन? केरेन्स्की की सरकार ने उसे मजबूर किया कि वह फिर मरने और मारने के लिए गैलीशिया में जाये; अमन की उसकी पुकारों को तेरेश्चेंको ने हंस कर उड़ा दिया... और आज़ादी? केरेन्स्की के तहत उसने देखा कि उसकी समितियों का दमन किया जा रहा है, उसके अख़बारों को उसके पास पहुंचने नहीं दिया जा रहा है, उसकी पार्टी के वक्ताओं को जेल में डाला जा रहा है... घर का हाल यह

---

* इशारा उस 'नकाज़' (निर्देश पत्र) की ओर है, जिसे कांग्रेस ने भूमि-संबंधी आज्ञप्ति के साथ ही साथ स्वीकृत किया था। – सं०

था कि उसके गांव में ज़मींदार भूमि समितियों को अंगूठा दिखा कर उसके साथियों को जेलों में बंद कर रहे थे ... पेत्रोग्राद में जर्मनों के साथ सांठ-गांठ करके पूंजीपति वर्ग सेना के लिए खाद्य तथा गोला-बारूद की सप्लाई को तोड़-फोड़ के ज़रिए चौपट कर रहा था ... सिपाही के पैर में जूते न थे, बदन पर कपड़े न थे ... तब फिर किसने उसे सेना से भागने पर मजबूर किया? केरेन्स्की की सरकार ने, जिसे आपने उलट दिया है!" जब उसका भाषण ख़त्म हुआ, लोगों ने तारीफ़ में तालियां बजायीं।

लेकिन एक दूसरे सिपाही ने फटकार सुनायी: "भगोड़ापन जैसी गंदी हरकत केरेन्स्की की सरकार की आड़ लेकर छिपायी नहीं जा सकती! भगोड़े, जो अपने साथियों को अकेले खाइयों में मरने के लिए छोड़कर घर भाग जाते हैं, नीच हैं, कमीने हैं! हर भगोड़ा ग़द्दार है और उसे सज़ा देनी चाहिए ..." शोर, आवाज़ें, "**दोवोल्नो!**" (बस करो)। "**तीशे!**" (चुप रहो)। कामेनेव ने जल्दी से उठकर प्रस्ताव किया कि इस मामले को फ़ैसले के लिए सरकार के सुपुर्द कर दिया जाये[4]।

रात के ढाई बजे कामेनेव ने सरकार की स्थापना से संबंधित आज्ञप्ति को पढ़कर सुनाया। हॉल में सन्नाटा छा गया।

संविधान सभा का अधिवेशन होने तक, किसानों और मज़दूरों की एक अस्थायी सरकार स्थापित की जाती है, जिसे जन-कमिसार परिषद्[5] का नाम दिया जायेगा।

राजकीय क्रियाकलाप के विभिन्न क्षेत्रों का प्रशासन आयोगों के सुपुर्द किया जायेगा, जिन्हें इस प्रकार गठित किया जायेगा कि श्रमिक स्त्री-पुरुषों के, मल्लाहों, सिपाहियों, किसानों तथा दफ़्तर-कर्मचारियों के जन-संगठनों के साथ घनिष्ठ रूप से मिलकर कांग्रेस द्वारा घोषित कार्यक्रम को क्रियान्वित करना सुनिश्चित हो सके। शासन-सत्ता इन आयोगों के अध्यक्षों के एक मंडल में अर्थात् जन-कमिसार परिषद् में निविष्ट की जाती है।

मज़दूरों, किसानों तथा सैनिकों के प्रतिनिधियों की सोवियतों की

अखिल रूसी कांग्रेस तथा उसकी केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति जन-कमिसारों के क्रियाकलाप का नियन्त्रण करेंगी और उन्हें बदल देने का भी अधिकार प्राप्त होगा।

ख़ामोशी अभी भी बरक़रार थी, लेकिन जब वह कमिसारों की सूची पढ़ने लगे, हर नाम पर, विशेषतः लेनिन और त्रोत्स्की के नामों पर बड़े ज़ोर की तालियां बजीं।

परिषद् के अध्यक्ष: **व्लादीमिर उल्यानोव (लेनिन)**;

गृह मंत्री: **अ० इ० रीकोव**;

कृषि मंत्री: **व्ला० पा० मिल्यूतिन**;

श्रम मंत्री: **अ० ग० श्ल्याप्निकोव**;

सैनिक तथा नौसैनिक मामले: **व्ला० अ० ओव्सेयेंको (अन्तोनोव)**, **नि० व० क्रिलेंको** तथा **पा० ये० दिबेंको** की एक समिति;

वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री: **वी० पा० नोगीन**;

सार्वजनिक शिक्षा मंत्री: **अ० व० लुनाचार्स्की**;

वित्त मंत्री: **इ० इ० स्क्वोर्त्सोव (स्तेपानोव)**;

परराष्ट्र मंत्री: **ले० द० ब्रोन्सतीन (त्रोत्स्की)**;

न्याय मंत्री: **ग० इ० ओप्पोकोव (लोमोव)**;

खाद्य मंत्री: **इ० अ० तेओदोरोविच**;

डाक-तार मंत्री: **न० प० आवीलोव (ग्लेबोव)**;

जातियों के लिए सभापति: **जो० वि० द्जुगाश्वीली (स्तालिन)**;

रेल मंत्री: बाद में नियुक्ति होगी।

सभा-भवन में दीवारों के पास संगीनें खड़ी थीं, प्रतिनिधियों के बीच में भी संगीनें चमक रही थीं। सैनिक क्रान्तिकारी समिति सभी को हथियारों से लैस कर रही थी – बोल्शेविज़्म केरेन्स्की से, जिसकी रणदुन्दुभि की आवाज़ दखनैया-पछुवा हवा के साथ आ रही थी, निर्णायक युद्ध करने के लिए शस्त्र धारण कर रहा था... इस बीच कोई घर नहीं गया, उल्टे सैकड़ों नवागन्तुक भीतर घुस आये और फलस्वरूप वह विशाल कक्ष सिपाहियों और मज़दूरों से ठसाठस भर गया; उनके

चेहरों पर काठिन्य था और वे घंटों वहां खड़े रहे – अनथक और एकाग्र। हवा में सिगरेट का धुआं भरा था, उसमें लोगों की सांसों की घुटन थी, मैले-कुचैले कपड़ों और पसीने की गन्ध थी।

"'नोवाया जीज़्न' पत्र में काम करने वाले आवीलोव सामाजिक-जनवादी अन्तर्राष्ट्रीयतावादियों और बचे-खुचे मेन्शेविक-अन्तर्राष्ट्रीयतावादियों की ओर से बोल रहे थे। भड़कीला लंबा कोट पहने आवीलोव, जिनके चेहरे से तरुणाई और बुद्धिमत्ता झलकती थी, वहां कुछ अजनबी से दिखाई दे रहे थे।

"हमें अपने आप से पूछना होगा कि हम किधर जा रहे हैं... संयुक्त सरकार जितनी आसानी से उलट दी गयी, उसका कारण जनवाद के वामपक्ष की शक्ति नहीं है, उसका कारण केवल यह है कि सरकार जनता को शांति तथा रोटी देने में समर्थ सिद्ध नहीं हुई। और वामपक्ष भी तभी सत्तारूढ़ बना रह सकता है, जब वह इन प्रश्नों को हल कर ले...

"क्या वह जनता को रोटी दे सकता है? अनाज की तंगी है। किसानों का बहुमत आपका साथ नहीं देगा, क्योंकि आप उन्हें वे मशीनें नहीं दे सकते, जिनकी उन्हें ज़रूरत है। ईंधन तथा दूसरी ज़रूरियात को मुहैया करना लगभग असंभव हो गया है...

"जहां तक शांति का प्रश्न है, यह और भी टेढ़ी खीर होगी। मित्र-राष्ट्रों ने स्कोबेलेव से बात करने से इनकार कर दिया। वे आपके हाथों शांति-सम्मेलन का प्रस्ताव कभी भी स्वीकार करने वाले नहीं हैं। आपको न लंदन और पेरिस में मान्यता दी जायेगी, न बर्लिन में...

"आप मित्र-राष्ट्रों के सर्वहारा वर्ग की कारगर मदद का भरोसा नहीं कर सकते, क्योंकि अधिकांश देशों में वह क्रांतिकारी संघर्ष से अभी भी बहुत दूर है। याद रखिये, मित्र-राष्ट्रों का जनवाद स्टाकहोम सम्मेलन बुलाने तक में असमर्थ रहा है। जहां तक जर्मन सामाजिक-जनवादियों का सवाल है, मैंने अभी स्टाकहोम सम्मेलन में हमारे एक प्रतिनिधि कामरेड गोल्देनबेर्ग से बात की है। उन्हें घोर वामपंथियों के एक प्रतिनिधि ने बताया कि जर्मनी में युद्धकाल में क्रांति असंभव है..."

लोगों ने ताबड़तोड़ आवाज़ें देना और शोर मचाना शुरू किया, लेकिन उसकी परवाह न कर आवीलोव ने अपना भाषण जारी रखा।

"रूस का विलगाव अनिवार्य है चाहे रूसी सेना जर्मनों द्वारा पराजित होगी या **रूस को बलि चढ़ा कर** आस्ट्रियाई-जर्मन संश्रय और फ़्रांसीसी-ब्रिटिश संश्रय के बीच किसी प्रकार तोड़-जोड़ कर शांति स्थापित होगी, या फिर जर्मनी के साथ पृथक् शांति-संधि सम्पन्न होगी।

"मुझे अभी अभी मालूम हुआ है कि मित्र-राष्ट्रों के राजदूत यहां से जाने की तैयारी कर रहे हैं और यह कि रूस के सभी नगरों में देश तथा क्रांति की उद्धार समितियां स्थापित की जा रही हैं...

"अकेली कोई भी पार्टी इन भीषण कठिनाइयों से पार नहीं पा सकती। समाजवादी संयुक्त सरकार का समर्थन करनेवाला जनता का बहुमत ही क्रांति को सम्पन्न कर सकता है..."

इसके बाद आवीलोव ने दोनों दलों के प्रस्ताव को पढ़ा:

यह मानते हुए कि क्रांति की उपलब्धियों को सुरक्षित रखने के लिये मज़दूरों, सैनिकों तथा किसानों के प्रतिनिधियों की सोवियतों में संगठित क्रांतिकारी जनवाद पर आधारित एक सरकार का अविलम्ब गठन अपिरहार्य है, और यह भी मानते हुए कि यथाशीघ्र शांति स्थापित करना, भूमि समितियों के हाथों में भूमि अन्तरित करना, औद्योगिक उत्पादन का नियन्त्रण संगठित करना तथा निश्चित तिथि पर संविधान सभा को बुलाना इस सरकार के कार्यभार होंगे, कांग्रेस उसमें भाग लेनेवाले जनवादी दलों की रज़ामंदी से ऐसी सरकार गठित करने के लिये एक कार्यकारिणी समिति नियुक्त करती है।

उपस्थित जनता के क्रांतिकारी विजयोल्लास के बावजूद आवीलोव की शांत, धैर्यपूर्ण तर्कना ने उसे हिला दिया था। उनका भाषण ख़त्म होते होते आवाज़ें और सीटियां बन्द हो गयीं और कुछ लोगों ने तो तालियां भी बजायीं।

आवीलोव के बाद वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारियों की ओर से, मारीया स्पिरिदोनोवा की पार्टी की ओर से, क्रांतिकारी किसानों का प्रतिनिधित्व* करनेवाली उस पार्टी की ओर से, जो बोल्शेविकों का अनुसरण करने वाली प्रायः अकेली ही पार्टी थी, करेलिन बोलने के लिये खड़े हुए, तरुण, निर्भय और साहसी करेलिन, जिनकी सच्चाई और ईमानदारी में किसी को भी सन्देह न हो सकता था।

"हमारी पार्टी ने जन-कमिसार परिषद् में शामिल होने से इनकार कर दिया है, क्योंकि हम क्रांतिकारी सेना के उस भाग से, जिसने कांग्रेस का परित्याग किया है, अपने को सदा के लिये अलग कर लेना नहीं चाहते। यह अलगाव हमारे लिये बोल्शेविकों तथा दूसरे जनवादी दलों के बीच मध्यस्थता करना असंभव बना देगा ... और यह मध्यस्थता ही इस समय हमारा प्रधान कर्तव्य है। हम संयुक्त समाजवादी सरकार के सिवाय और किसी सरकार का समर्थन नहीं कर सकते ...

"इसके अलावा हम बोल्शेविकों के अत्याचारपूर्ण व्यवहार के प्रति अपना प्रतिवाद प्रगट करते हैं। हमारे कमिसारों को उनके पदों से बलपूर्वक हटा दिया गया है। कल ही हमारे एकमात्र मुखपत्र 'ज़्नाम्या त्रुदा' (श्रम-पताका) के प्रकाशन पर रोक लगा दी गयी ...

"नगर दूमा आपका मुक़ाबला करने के लिये एक शक्तिशाली देश तथा क्रांति की उद्धार समिति स्थापित कर रही है। आप अभी से विलग हो गये हैं और आपकी सरकार को किसी भी दूसरे जनवादी दल का समर्थन प्राप्त नहीं है ..."

इसके बाद त्रोत्स्की आत्मविश्वास तथा अधिकार के भाव से बोलने के लिये खड़े हुए। उनके मुंह पर व्यंग्य का भाव, प्रायः विद्रूप की हंसी खेल रही थी। उन्होंने पुरज़ोर आवाज़ में भाषण किया और भीड़ प्रत्यक्षतः उनकी ओर खिंची।

"हमारी पार्टी के अलग हो जाने के ख़तरे के बारे में ये ख़्यालात कोई नये नहीं हैं। विद्रोह के ठीक पहले हमारी घातक पराजय की

---

* क्रांतिकारी किसानों का केवल एक भाग ही वामपंथी समाजवादी क्रांतिकारियों का अनुगमन करता था। – सं०

भविष्यवाणी की गयी थी। उस समय सभी हमारे खिलाफ़ थे ; सैनिक क्रांतिकारी समिति में वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारियों का एक दल ही हमारे साथ था। तब यह कैसे हुआ कि हम प्रायः रक्तपात के बिना ही सरकार का तख़्ता उलट सके?.. यह एक ऐसी सचाई है, जो इस बात को निहायत पुरअसर तरीक़े से साबित कर देती है कि हम जनता से विलग नहीं हुए थे। वास्तव में विलगाव अस्थायी सरकार का हुआ था ; विलगाव उन जनवादी पार्टियों का हुआ था और अभी भी है, जो हमारे खिलाफ़ मुहिम चला रही हैं, वे ही सर्वहारा वर्ग से सदा के लिये कट गयी हैं!

"वे संश्रय की आवश्यकता की बात करते हैं। संश्रय एक ही प्रकार का हो सकता है – मज़दूरों, सिपाहियों और ग़रीब किसानों का संश्रय और हमारी पार्टी को ही ऐसा संश्रय सम्पन्न करने का गौरव प्राप्त हुआ है... आवीलोव ने जब संश्रय की बात की, तो उनका अभिप्राय किस प्रकार के संश्रय से था? क्या उन लोगों के साथ संश्रय, जिन्होंने जनता से ग़द्दारी करने वाली सरकार का समर्थन किया था? संश्रय से सदा शक्ति नहीं प्राप्त होती। उदाहरण के लिये अगर दान और अव्क्सेन्त्येव हमारी पांतों में होते, तो क्या हम विद्रोह का संगठन कर सकते थे?" हंसी के ठहाके।

"अव्क्सेन्त्येव ने जनता को रोटी नहीं दी। क्या **ओबोरोन्त्सों** (प्रतिरक्षावादियों) के साथ संश्रय स्थापित करने से ज़्यादा रोटी मिलती? किसानों और अव्क्सेन्त्येव के बीच, जिन्होंने भूमि समितियों के सदस्यों की गिरफ़्तारी का आदेश दिया, हमने किसानों को चुना! हमारी क्रांति इतिहास की क्लासिकीय क्रांति मानी जायेगी...

"वे हमारे ऊपर इलज़ाम लगाते हैं कि हमने दूसरी जनवादी पार्टियों के साथ समझौता नहीं होने दिया है। लेकिन क्या इसके लिये हम दोषी हैं? या क्या, जैसा करेलिन ने कहा, दोष इस बात का है कि कोई "ग़लतफ़हमी" हो गई? नहीं, साथियो, जब क्रांति की पूरी ज्वार में एक पार्टी, जिसके चारों ओर बारूद का धुआं अभी भी चक्कर काट रहा है, आती है और कहती है, 'यह है सत्ता, इसे अपने हाथ में लीजिये!' और जिन लोगों को यह सत्ता अर्पित की जाती है वे शत्रु

की ओर चले जाते हैं, तो यह ग़लतफ़हमी की बात नहीं है ... यह निर्मम युद्ध की घोषणा है। इस युद्ध की घोषणा हम लोगों ने नहीं की है ...

"अगर हम 'अलग' रहे, तो आवीलोव शांति के हमारे प्रयासों के विफल हो जाने का ख़तरा हमें दिखाते हैं। मैं फिर कहता हूं, मेरी समझ में यह बात नहीं आती कि स्कोबेलेव के साथ, यहां तक कि तेरेश्चेंको के साथ संश्रय स्थापित करने से हमें शांति प्राप्त करने में सहूलियत कैसे हो सकती है! आवीलोव रूस को बलि पर चढ़ा कर शांति स्थापित करने का हौवा हमें दिखाते हैं। इसके जवाब में मेरा कहना यह है कि अगर यूरोप पर साम्राज्यवादी पूंजीपति वर्ग का शासन बना रहा, तो किसी भी सूरत में क्रांतिकारी रूस का विनाश निश्चित है ...

"हमारे सामने दो ही विकल्प हैं! या तो रूसी क्रांति यूरोप में भी क्रांतिकारी आन्दोलन को जन्म देगी, या यूरोपीय शक्तियां रूसी क्रांति का काम तमाम कर देंगी!"

लोगों ने जिहादी जोश के साथ बड़े ज़ोरों से तालियां पीटकर उनके भाषण का स्वागत किया; वे इस भावना से दीप्त थे कि उन्होंने ऐसा करने का साहस किया था और मानवजाति के हितों की रक्षा करने का बीड़ा उठाया था। और उसी घड़ी से विद्रोही जन-साधारण के समस्त क्रिया-कलाप में एक ऐसा दृढ़ निश्चयपूर्ण तथा सचेत भाव आ गया, जो फिर कभी लुप्त नहीं हुआ।

परन्तु दूसरी ओर भी ख़म ठोंककर लड़ने की तैयारी हो रही थी। कामेनेव ने रेल मज़दूर यूनियन के एक प्रतिनिधि को बोलने की इजाज़त दी, कट्टर शत्रुता का भाव लिये सख़्त चेहरे का एक ठिंगना सा आदमी, जिसने सभा पर मानो एक बम फेंक कर उसे चौंका दिया:

"रूस के सबसे प्रबल संगठन के नाम पर मैं मांग करता हूं कि मुझे बोलने का हक़ दिया जाये और मैं आपसे कहता हूं: **विक्जेल*** ने मुझे यह ज़िम्मेदारी दी है कि मैं सत्ता के संघटन के बारे में यूनियन के निर्णय को आप पर प्रगट करूं। अगर बोल्शेविक लोग रूस के सभी जनवादी अंशकों से अपने को विलग कर लेने पर अड़े रहते हैं, तो हमारी केन्द्रीय समिति उनका समर्थन करने से बिल्कुल

* **विक्जेल** – अखिल रूसी रेल मज़दूर यूनियन की कार्यकारिणी समिति। – सं०

इनकार करती है!" पूरे सभा-भवन में बेहद खलबली मच गयी।

"१६०५ में और कोर्नीलोव-कांड के दिनों में रेल मज़दूर क्रांति के सर्वश्रेष्ठ रक्षकों में थे। परंतु आपने हमें अपनी कांग्रेस में आमंत्रित नहीं किया..." आवाज़ें: "हमने नहीं, पुरानी **त्से-ई-काह** ने नहीं किया!" इन आवाज़ों पर कान न देकर भाषणकर्ता ने आगे कहा, "हम इस कांग्रेस को वैध नहीं मानते। मेन्शेविकों और समाजवादी-क्रांतिकारियों के निकल जाने के बाद से यहां पर नियमानुसार कोरम नहीं रह गया है... यूनियन पुरानी **त्से-ई-काह** का समर्थन करती है और घोषणा करती है कि कांग्रेस को नयी समिति चुनने का कोई अधिकार नहीं है...

"राज्य-सत्ता समस्त क्रांतिकारी जनवाद के अधिकृत निकायों के प्रति उत्तरदायी समाजवादी तथा क्रांतिकारी सत्ता होनी चाहिए। जब तक ऐसी सत्ता का संघटन न हो, रेल मज़दूर यूनियन प्रतिक्रांतिकारी सेनाओं को पेत्रोग्राद पहुंचाने से इनकार करती है और साथ ही **विक्ज़ेल** की रज़ामंदी के बग़ैर किसी भी हुक्म की तामील की मनाही करती है। **विक्ज़ेल** रूस के समस्त रेल-प्रशासन को अपने हाथों में लेती है।"

अंत में लोग इस तरह उसके ऊपर बरस पड़े और गालियों की बौछार करने लगे कि उसको सुनना मुश्किल हो गया। लेकिन थी यह एक क़रारी चोट – सभापतिमंडल के सदस्यों के चेहरे पर चिंता का जो भाव प्रगट हुआ, उससे यह स्पष्ट था। लेकिन कामेनेव ने जवाब में बस इतना ही कहा कि कांग्रेस के वैध होने के बारे में कोई संदेह नहीं हो सकता, क्योंकि मेन्शेविकों और समाजवादी-क्रांतिकारियों के अलग हो जाने के बावजूद भी पुरानी **त्से-ई-काह** द्वारा निर्धारित कोरम से भी ज़्यादा लोग मौजूद हैं...

इसके बाद सरकार के बारे में मतदान हुआ और जन-कमिसार परिषद् विशाल बहुमत से सत्तारूढ़ हुई...

नयी **त्से-ई-काह** के, रूसी जनतन्त्र की नयी संसद के चुनाव में कुल पन्द्रह मिनट लगे। त्रोत्स्की ने उसकी सदस्यता घोषित की: कुल एक सौ सदस्य, जिनमें सत्तर बोल्शेविक थे... जहां तक किसानों और बहिर्गामी दलों का प्रश्न था, नये निकाय में उनके लिये स्थान सुरक्षित रखा गया। "हम मन्त्रिमंडल में उन सभी पार्टियों और दलों का स्वागत

करते हैं, जो हमारे कार्यक्रम को अपनाने के लिये तैयार हैं," त्रोत्स्की ने अंत में कहा।

इसके बाद सोवियतों की दूसरी अखिल रूसी कांग्रेस समाप्त कर दी गई, ताकि उसके प्रतिनिधि रूस के कोने कोने में अपने घरों में जल्दी से पहुंच सकें और जनता को इन महान् घटनाओं के बारे में बता सकें...

जब हम बाहर निकले और हमने उन ट्राम-गाड़ियों के कंडक्टरों और ड्राइवरों को जगाया, जो ट्राम-मज़दूर यूनियन के निर्देश पर सोवियत सदस्यों को अपने घर पहुंचाने के लिये स्मोल्नी भवन के बाहर बराबर इंतज़ार करती रहती थीं, क़रीब सात बजे थे। मैंने सोचा, ठसाठस भरी ट्राम-गाड़ी में वह उल्लास नहीं है, जो पिछली रात दिखायी पड़ा था। बहुतेरे चेहरों पर चिंता की छाया थी; वे शायद अपने आप से कह रहे थे, "अब मालिक हम हैं, हम अपनी मर्ज़ी को कैसे चलायेंगे?"

जब हम अपने घर पहुंचे, हमें अंधेरे में नागरिकों के एक हथियारबंद दस्ते ने टोका और हमारी अच्छी तरह तलाशी ली। दूमा की घोषणा का असर होने लगा था...

मकानदारनी को हमारे अन्दर आने की आहट लगी और वह गुलाबी रेशमी चादर ओढ़े लड़खड़ाती हुई बाहर आयी।

"आवास-समिति ने फिर कहा है कि बाक़ी लोगों के साथ आप भी अपनी बारी से पहरे की ड्यूटी दें," उसने कहा।

"क्यों, क्या बात है? पहरे की ड्यूटी क्यों लगायी गयी है?"

"मकान की औरतों और बच्चों की हिफ़ाज़त करने के लिए।"

"लेकिन किससे?"

"चोरों और हत्यारों से।"

"लेकिन, मान लीजिये, सैनिक क्रांतिकारी समिति का कोई कमिसार हथियारों के लिये तलाशी लेने आये, तो?"

"ओह, वे तो यह कहेंगे ही कि वे कमिसार हैं... और फिर बात एक ही है, उनमें फ़र्क़ ही क्या है?"

मैंने निहायत संजीदगी के साथ कहा कि अमरीकी दूतावास ने अमरीकी नागरिकों को हथियार लेकर चलने से मना कर दिया है, खासकर ऐसी जगहों में जहां रूसी बुद्धिजीवी लोग रहते हों...

उद्धार समिति

शुक्रवार, ९ नवंबर ...

नोवोचेर्कास्क, ८ नवंबर

बोल्शेविकों के विद्रोह को तथा अस्थायी सरकार को उलट देने और पेत्रोग्राद में सत्ता हथियाने की उनकी कोशिशों को देखती हुई ... कज़्ज़ाक सरकार घोषणा करती है कि उसकी दृष्टि में ये हरकतें मुजरिमाना हैं और बिल्कुल ही अस्वीकार्य हैं। फलस्वरूप कज़्ज़ाक लोग अस्थायी सरकार का, जो एक संयुक्त सरकार है, पूरी तरह समर्थन करेंगे। इन परिस्थितियों के कारण, जब तक अस्थायी सरकार पुनः सत्तारूढ़ नहीं होती और रूस में सुव्यवस्था पुनःस्थापित नहीं होती, मैं ७ नवंबर की तारीख़ से, जहां तक दोन-प्रदेश का संबंध है, समस्त सत्ता अपने हाथ में लेता हूं।

हस्ताक्षर – आतामान कलेदिन

कज़्ज़ाक सेनाओं की

सरकार के अध्यक्ष

गातचिना में जारी किया गया मंत्रि-सभापति केरेन्स्की का **प्रिकाज़** (आदेश) :

मैं, अस्थायी सरकार का मंत्रि-सभापति तथा रूसी जनतंत्र की समस्त

सेनाओं का मुख्य सेनापति, घोषणा करता हूं कि मोर्चे की जो रेजीमेंटें पितृभूमि के प्रति वफ़ादार रही हैं, उन सब की कमान मेरे हाथ में है।

मैं पेत्रोग्राद के सैनिक हलक़े के उन सभी सैनिकों को, जिन्होंने ग़लती से या बेवक़ूफ़ी से देश के साथ और क्रांति के साथ ग़द्दारी करने वालों की अपील पर कान दिया है, हुक्म करता हूं कि वे अविलंब अपनी ड्यूटी पर वापस चले जायें।

यह आदेश सभी रेजीमेंटों, बटालियनों और स्क्वाड्रनों में पढ़ा जायेगा।

हस्ताक्षर – **अस्थायी सरकार के मंत्रि-सभापति तथा मुख्य सेनापति**

अ० फ़० केरेन्स्की

उत्तरी मोर्चे की कमान जिस जनरल के हाथ में थी, उसके नाम केरेन्स्की का तार:

वफ़ादार रेजीमेंटों ने बिना खून बहाये ही गातचिना पर क़ब्ज़ा कर लिया है। क्रोंश्ताद्त के मल्लाहों के तथा सेम्योनोव्स्की और इज़्मा-इलोव्स्की रेजीमेंटों के दस्तों ने बग़ैर मुक़ाबला किये हथियार डाल दिये और सरकारी सेना के साथ मिल गये।

मैं सभी नामांकित टुकड़ियों को आदेश देता हूं कि वे जितनी तेज़ी से हो सके आगे बढ़ें। सैनिक क्रांतिकारी समिति ने अपने सैनिकों को पीछे हटने का हुक्म दिया है...

पेत्रोग्राद से क़रीब तीस किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम की ओर स्थित गातचिना का नगर पिछली रात हाथ से निकल गया था। केरेन्स्की के तार में जिन दो रेजीमेंटों का ज़िक्र था, जब उनके नेतृत्वहीन दस्ते – मगर मल्लाहों के दस्ते नहीं – गातचिना के पास भटक रहे थे, कज़्ज़ाकों ने उन्हें सचमुच घेर लिया था और उनसे हथियार रखवा लिये थे। लेकिन यह बात सच नहीं थी कि वे सरकारी सेना से मिल गये थे। जिस घड़ी यह तार भेजा जा रहा था, उसी घड़ी, ये सिपाही – हैरान, परेशान और शर्मिंदा – झुंड के झुंड स्मोल्नी पहुंचे हुए थे और सफ़ाई देने की

कोशिश कर रहे थे। उन्हें बिल्कुल यह ख्याल नहीं था कि कज़्ज़ाक इतने नज़दीक हैं... उन्होंने कज़्ज़ाकों को समझाने की कोशिश भी की थी...

ऐसा लगता था कि क्रांतिकारी मोर्चे पर सिपाही बेहद उलझन में पड़े हुए हैं। दक्षिण की ओर जो छोटे छोटे शहर थे, उन सभी की गैरिसनों में बुरी तरह फूट पड़ गयी थी और वे दो गुटों में – या तीन में – बंट गयी थीं। चोटी के अफ़सर यह सोच कर केरेन्स्की की ओर थे कि जब तक कोई और मज़बूत आदमी नज़र नहीं आता, चलो, केरेन्स्की ही सही। साधारण सिपाहियों का बहुमत सोवियतों के साथ था और बाक़ी लोग दुर्भाग्यवश डांवांडोल थे।

ऐसी स्थिति में सैनिक क्रांतिकारी समिति ने हड़बड़ी में नियमित सेना के एक महत्वाकांक्षी कप्तान मुराव्योव* को पेत्रोग्राद की रक्षा के लिए नियुक्त किया और पेत्रोग्राद की कमान उनके हाथ में सौंप दी। यह वही मुराव्योव थे, जिन्होंने गर्मियों में 'शहीदी टुकड़ियों' का संगठन किया था और जिन्होंने सरकार को यह सलाह दी थी कि "वह बोल्शेविकों के प्रति बहुत ही नरम है। उनका बिल्कुल ही सफ़ाया कर देना चाहिये।" मुराव्योव फ़ौजी सांचे में ढले हुए आदमी थे, जो शक्ति और साहस की सराहना करते थे और शायद ईमानदारी के साथ करते थे...

जब सुबह मैं घर से निकला, मैंने देखा मेरे दरवाज़े के पास ही सैनिक क्रांतिकारी समिति के दो नये आदेश-पत्र चिपकाये गये हैं, जिनमें यह निर्देश दिया गया था कि सभी दूकानें हस्ब मामूल खुलें और सभी खाली कमरे और फ़्लैट समिति के उपयोग के लिए सुलभ बनाये जायें...

छत्तीस घंटों से बोल्शेविकों का न तो रूस के प्रांतों से संपर्क रह गया था, न बाहरी दुनिया से। रेल तथा तार कर्मचारी उनकी सूचनाओं और संदेशों को भेजने से इनकार कर रहे थे। डाकिये उनकी डाक को हाथ लगाने से इनकार कर रहे थे। बस त्सारस्कोये सेलो में सरकारी रेडियो काम कर रहा था और आध-आध घंटे पर आकाश में चारों दिशाओं में समाचार-बुलेटिनें तथा घोषणायें प्रसारित कर रहा था।

---

* वास्तव में मुराव्योव लेफ़्टीनेंट-कर्नल थे। – सं०

स्मोल्नी के कमिसार नगर दूमा के कमिसारों से रेस लगाए हुए भागती हुई रेल-गाड़ियों पर पृथ्वी की आधी दूरी नापते। प्रचार-सामग्री से लदे दो हवाई जहाज़ मोर्चे की ओर उड़े ...

लेकिन विद्रोह की लहर रूस के एक छोर से लेकर दूसरे छोर तक जिस तेज़ी से फैल रही थी, वह किसी भी मानवीय संचार-साधन के लिए संभव न थी। हेल्सिंगफ़ोर्स की सोवियत ने समर्थन के प्रस्ताव पास किये। कीयेव के बोल्शेविकों ने शस्त्रागार और तारघर पर क़ब्ज़ा कर लिया, लेकिन थोड़ी ही देर के लिये। वहां जो कज़्ज़ाक-कांग्रेस हो रही थी, उसके प्रतिनिधियों ने उन्हें खदेड़ दिया। कज़ान में स्थापित सैनिक क्रांतिकारी समिति ने स्थानीय गैरिसन के स्टाफ़ तथा अस्थायी सरकार के कमिसार को गिरफ़्तार कर लिया। साइबेरिया के सुदूर क्रास्नोयार्स्क से ख़बर आयी कि नगरपालिका का प्रशासन सोवियतों के हाथ में आ गया है। मास्को में, जहां एक ओर चर्मकारों की ज़बर्दस्त हड़ताल से और दूसरी ओर आम तालाबंदी की धमकी से परिस्थिति अधिक गभीर हो गयी थी, सोवियतों ने विशाल बहुमत से पेत्रोग्राद में बोल्शेविकों की कार्रवाई का समर्थन करने का निश्चय किया ... वहां अभी से एक सैनिक क्रांतिकारी समिति काम करने लगी थी।

हर जगह वही बात हो रही थी। मामूली सिपाहियों और औद्योगिक मज़दूरों ने विशाल बहुमत से सोवियतों का समर्थन किया। अफ़सर, **युंकर** और निम्न-पूंजीपति सामान्यतः सरकार की ओर थे और उन्हीं की तरह पूंजीवादी कैडेट तथा "नरम" समाजवादी पार्टियां भी सरकार की तरफ़दार थीं। सभी शहरों में देश तथा क्रांति की उद्धार समितियां बन रही थीं और गृहयुद्ध के लिए हथियारों से लैस हो रही थीं ...

विशाल रूस विखंडित और चूर-चूर हो रहा था। यह प्रक्रिया १९०५ में ही शुरू हुई थी; मार्च की क्रांति ने उसे गति दी थी और वह नयी व्यवस्था का एक प्रकार से पूर्वाभास देकर पुरानी व्यवस्था के खोखले ढांचे को ही बस क़ायम रखकर समाप्त हो गयी थी। लेकिन अब बोल्शेविकों ने एक रात में ही उसे फूंक कर उड़ा दिया था, जैसे कोई धुएं को उड़ा दे। पुराना रूस विलुप्त हो गया था। आदिम उत्ताप में

मानव-समाज पिघल गया था और प्रचंड बडवानल से वर्ग-संघर्ष की, कठोर, निर्मम वर्ग-संघर्ष की लपटें उठ रही थीं – और नये पिंडों का जन्म हो रहा था, जिनकी नर्म परत धीरे धीरे ठंडी हो कर बैठ रही थी ...

पेत्रोग्राद में सोलह मंत्रालय हड़ताल पर थे, जिनके अगुआ श्रम तथा खाद्य मंत्रालय थे। ये ही दो मंत्रालय ऐसे थे, जिन्हें अगस्त की पूर्ण समाजवादी* सरकार ने स्थापित किया था।

अगर इनसान ने कभी भी अपने को अकेला पाया है, तो ज़ाहिरा उस उदास और ठिठरती हुई सुबह को "मुट्ठी भर बोल्शेविक" प्रत्यक्षतः अकेले थे और उनके चारों ओर आंधियां बह रही थीं।[1] जान पर नौबत आयी हुई देखकर सैनिक क्रांतिकारी समिति ने प्राणरक्षा की खातिर दुश्मन पर चोट की। «De l'audace, encore de l'audace, et toujours del'audace...»** तड़के पांच बजे लाल गार्ड नगर-प्रशासन के छापेखाने में घुस गये, उन्होंने दूमा की अपील व प्रतिवाद की हज़ारों प्रतियों को ज़ब्त कर लिया और नगरपालिका के आधिकारिक मुखपत्र, 'वेस्तनिक गोरोद्स्कोवो सामोउप्राव्लेनिया' (नगरपालिका स्वशासन बुलेटिन) को बंद कर दिया। सभी पूंजीवादी अख़बारों को, यहां तक कि पुरानी **त्से-ई-काह** के अख़बार 'गोलोस सोल्दाता' को भी छपते छपते मशीन से उतार लिया गया। 'गोलोस सोल्दाता' फिर भी निकला – 'सोल्दात्स्की गोलोस' के नाम से उसकी एक लाख प्रतियां छपीं। क्रुद्ध गर्जन करते हुए उसने ललकारा:

जिन लोगों ने रात में विश्वासघातपूर्ण प्रहार किया, जिन लोगों ने अख़बारों को बंद किया, वे देश को बहुत दिनों तक धोखे में नहीं रख सकेंगे। देश जानेगा कि सचाई क्या है! वह आप को समझेगा, बोल्शेविक महानुभावो! हम देखेंगे!..

---

* मेन्शेविकों और समाजवादी-क्रान्तिकारियों से बनी। – सं०

** "हिम्मत से काम लो, एक बार फिर हिम्मत से काम लो, और हमेशा हिम्मत से काम लो!" दान्तों के प्रसिद्ध उद्गार! दान्तों ने ये शब्द २ सितंबर १७९२ को फ़्रांसीसी विधान-सभा में युद्ध के खतरे के और प्रशा तथा आस्ट्रिया के प्रतिक्रांतिकारी संश्रय के आक्रमण से क्रांति की रक्षा करने की आवश्यकता के बारे में बोलते हुए कहे थे। – सं०

जब हम ढलती दुपहरिया में नेव्स्की मार्ग पर जा रहे थे, दूमा-भवन के सामने का पूरा रास्ता लोगों से खचाखच भरा था। जहां-तहां संगीनें लिये लाल गार्ड और मल्लाह खड़े थे – एक एक के गिर्द एक एक सौ की भीड़ रही होगी – घूंसा दिखाते, गालियां देते और धमकाते हुए क्लर्कों, विद्यार्थियों, दूकानदारों, **चिनोव्निकों** (सरकारी कर्मचारियों) की भीड़। सीढ़ियों पर बाल-स्वयंसेवक और अफ़सर 'सोल्दात्स्की गोलोस' की प्रतियां बांट रहे थे। एक मज़दूर, जो अपनी बांह में लाल फीता लगाये और हाथ में तमंचा लिये था, सीढ़ियों के नीचे क्रुद्ध भीड़ के बीच खड़ा ग़ुस्से से और घबराहट से भी कांप रहा था – वह भीड़ से डपट कर कह रहा था कि अख़बारों की प्रतियां उसके हवाले की जायें... मैं समझता हूं, इतिहास में कभी भी इस क़िस्म की बात नहीं हुई होगी। एक ओर विजयी विद्रोह का प्रतिनिधित्व करने वाले मुट्ठी भर मज़दूर और मामूली सिपाही – हाथों में हथियार लिए हुए और बेहद परेशानी में पड़े हुए, और दूसरी ओर एक उत्तेजित भीड़ – जैसी भीड़ दोपहर को फ़िफ़्थ एवेन्यू * की पटरी पर नज़र आती है – मुंह चिढ़ाती, पानी पी पीकर कोसती और चीखती हुई: "ग़द्दारो! उकसावेबाज़ो! **ओप्रीच्निको** ** !"

दूमा-भवन के दरवाज़ों पर विद्यार्थी और अफ़सर पहरा दे रहे थे। उन्होंने अपनी बांहों में सफ़ेद पट्टियां लगा रखी थीं, जिन पर लाल अक्षरों में अंकित था: "सार्वजनिक सुरक्षा समिति की मिलिशिया"। आधा दर्जन बाल-स्वयंसेवक दौड़-भाग रहे थे। ऊपर पूरे भवन में खलबली मची हुई थी। कप्तान गोम्बेर्ग सीढ़ियों से उतर रहे थे। "वे दूमा को भंग करने जा रहे हैं," उन्होंने कहा। "बोल्शेविक कमिसार मेयर के साथ बैठा हुआ है।" जिस वक़्त हम ऊपर पहुंचे, रियाज़ानोव तेज़ी से बाहर निकले। वह यह मांग करने के लिए आये थे कि दूमा जन-कमिसार परिषद् को अंगीकार करे, लेकिन मेयर ने साफ़ इनकार कर दिया था।

दूमा के कार्यालयों में कोलाहल मचा हुआ था। हाथ के इशारे करते, दौड़ते-भागते, चीख़ते-चिल्लाते लोगों की भीड़ – सरकारी कर्म-

---

* न्यू-यार्क की एक सड़क, जहां धनी लोग रहते हैं। – सं०

** ज़ार इवान भयानक के अंग-रक्षक, १६ वीं शताब्दी। – सं०

चारी, बुद्धिजीवी, पत्रकार, विदेशी संवाददाता, फ़ांसीसी और अंग्रेज़ अफ़सर ... नगर-इंजीनियर ने उनकी ओर इशारा करते हुए विजयपूर्ण भाव से कहा, "दूतावास अब दूमा को ही एकमात्र सत्ता मानते हैं। ये बोल्शेविक लुटेरे और हत्यारे अब बस चंद घंटों के मेहमान हैं! सारा रूस हमारी ओर आ रहा है ..."

अलेक्सान्द्र हॉल में उद्धार समिति की एक विराट् सभा हो रही थी। फ़िलिप्पोव्स्की सदारत कर रहे थे और मंच पर फिर वही स्कोबेलेव इस बात की रिपोर्ट दे रहे थे कि कौनसे नये संगठन समिति में शामिल हुए हैं। तालियों की गड़गड़ाहट के बीच उन्होंने गिनाया: किसानों की सोवियतों की कार्यकारिणी समिति, पुरानी **त्से-ई-काह**, केंद्रीय सैनिक समिति, **त्सेन्त्रोफ़्लोत**, सोवियतों की कांग्रेस के मेन्शेविक, समाजवादी-क्रांतिकारी तथा मोर्चे के दल के प्रतिनिधि, मेन्शेविक, समाजवादी-क्रांतिकारी और जन-समाजवादी पार्टियों की केंद्रीय समितियां, "**येदीन्स्त्वो**" दल, किसान-संघ, सहकारी समितियां, **ज़ेम्सत्वो**, नगरपालिकायें, डाक-तार यूनियन, **विक्जेल**, रूसी जनतंत्र की परिषद्, यूनियनों की यूनियन*, व्यापारियों और कारख़ानेदारों का संघ ...

"... सोवियत सत्ता जनवादी सत्ता नहीं है, वह अधिनायकत्व है— सर्वहारा का अधिनायकत्व नहीं, सर्वहारा के **ख़िलाफ़** अधिनायकत्व। जिन लोगों ने भी क्रांतिकारी उत्साह का अनुभव किया है या अनुभव करना जानते हैं, उन्हें इस समय क्रांति की रक्षा के लिए ज़रूर हाथ मिलाना चाहिए ...

"आज की समस्या यही नहीं है कि ग़ैरज़िम्मेदार लफ़्फ़ाज़ों और बड़बोलों को सीधा कर दिया जाये; प्रतिक्रांति से संघर्ष करना भी आज की समस्या है ... अगर ये अफ़वाहें कि प्रांतों में कुछ जनरल घटनाक्रम से लाभ उठा कर अपने अलग मंसूबे लेकर पेत्रोग्राद पर चढ़ाई करने की कोशिश कर रहे हैं सही हैं, तो यह इस बात का एक और सबूत है कि हमें जनवादी सरकार के लिए एक ठोस आधार प्रस्तुत करना होगा। वरना वामपंथियों के उपद्रव के बाद दक्षिणपंथियों के उपद्रव शुरू हो जायेंगे ...

---

* देखिये, 'टिप्पणियां और व्याख्यायें'। – **जॉ० री०**

"पेत्रोग्राद की गैरिसन इस बात के प्रति उदासीन नहीं रह सकती कि 'गोलोस सोल्दाता' को ख़रीदने वाले नागरिक और 'राबोचाया गज़ेता' को बेचने वाले लड़के सड़कों पर गिरफ़्तार किये जा रहे हैं...

"प्रस्तावों की घड़ी बीत चुकी है... जिन लोगों को क्रांति में विश्वास नहीं रह गया है, वे अलग हो जायें... एक संयुक्त सत्ता को स्थापित करने के लिए यह आवश्यक है कि हम क्रांति को पुनःप्रतिष्ठित करें...

"आइये, हम यह शपथ उठायें कि या तो हम क्रांति की रक्षा करेंगे, नहीं तो जान दे देंगे!"

सब के सब तालियां पीटते उठ खड़े हुए। उनकी आंखें चमक रही थीं। लेकिन उनमें कहीं पर एक भी सर्वहारा नज़र नहीं आ रहा था...

इसके बाद वाइनश्तेइन बोले:

"यह आवश्यक है कि हम शांत रहें और तब तक अपना हाथ रोके रहें, जब तक कि जनमत उद्धार समिति के समर्थन में प्रबल रूप से एकजुट न हो जाये – तब हम बचाव करना छोड़कर हमला शुरू कर सकते हैं!"

विक्जेल-प्रतिनिधि ने घोषणा की कि उसका संगठन नयी सरकार का गठन करने में पहल कर रहा है और अभी से उसके प्रतिनिधि इस मामले में स्मोल्नी के साथ बातचीत कर रहे हैं... बोल्शेविकों को नयी सरकार में शामिल किया जाये या नहीं? इस सवाल को लेकर गरमा-गरम बहस छिड़ गई। मार्तोव ने उन्हें शामिल करने के लिए वकालत की। उन्होंने कहा कि कुछ भी हो, बोल्शेविक एक महत्त्वपूर्ण राजनीतिक पार्टी का प्रतिनिधित्व करते हैं। इस प्रश्न पर लोगों में बड़ा मतभेद था – दक्षिणपंथी मेन्शेविक तथा समाजवादी-क्रांतिकारी और साथ ही जन-समाजवादी, सहकारी समितियां तथा पूंजीवादी अंशक बोल्शेविकों के शामिल किये जाने के घोर विरोधी थे...

एक वक्ता ने कहा, "उन्होंने रूस के साथ ग़द्दारी की है। उन्होंने गृहयुद्ध शुरू किया है और जर्मनों के लिए मोर्चा खोल दिया है। बोल्शेविकों को सख़्ती से कुचल देना होगा..."

स्कोबेलेव बोल्शेविकों और कैडेटों दोनों को मंत्रिमंडल से अलग रखने के पक्ष में थे।

हमारी बातचीत एक तरुण समाजवादी-क्रांतिकारी से हुई, जिसने बोल्शेविकों के साथ उस रात जनवादी सम्मेलन का परित्याग किया था, जब त्सेरेतेली और दूसरे समझौतापरस्तों ने रूस के जनवादी तत्वों पर ज़बर्दस्ती समझौते की नीति थोप दी थी।

"आप यहां?" मैंने आश्चर्य से पूछा।

उसकी आंखों में बिजली कौंध गयी। "जी हां!" उसने तेज़ी से कहा। "मैंने अपनी पार्टी के साथ बुधवार की रात को कांग्रेस का परित्याग किया। मैंने बीस सालों से अपनी जान इसलिए जोखिम में नहीं डाली है कि आज मैं जाहिल लोगों के अत्याचारों को सहन करूं। उनके तरीक़े बर्दाश्त के क़ाबिल नहीं हैं। लेकिन उन्होंने अपने हिसाब में किसानों का ध्यान नहीं रखा है... जब किसान उठेंगे, वे मिनटों में 'टें' बोल देंगे।"

"लेकिन किसान – किसान क्या सचमुच उठेंगे? क्या भूमि-संबंधी आज्ञप्ति किसानों के सवाल का निपटारा नहीं कर देती? वे इससे ज़्यादा और क्या चाह सकते हैं?"

"ओह, भूमि-संबंधी आज्ञप्ति!" उसने गुस्से से कहा। "आप जानते हैं यह भूमि-संबंधी आज्ञप्ति क्या चीज़ है? यह **हमारी** आज्ञप्ति है – यह समाजवादी-क्रांतिकारियों का कार्यक्रम है, पूरा का पूरा! मेरी पार्टी ने स्वयं किसानों की इच्छाओं का बड़ी सावधानी से पता लगाने और संग्रह करने के बाद इस नीति को निर्धारित किया था। बोल्शेविकों का उसे हथिया लेना – यह सरासर अंधेर है..."

"लेकिन अगर यह आपकी अपनी नीति है, तो फिर आप एतराज़ क्यों करते हैं? अगर वही किसानों की मर्ज़ी है, तो वे भला उसका विरोध क्यों करेंगे?"

"आप नहीं समझते! किसान फ़ौरन यह भांप लेंगे कि यह आज्ञप्ति एक तिकड़म है, कि इन ठगों ने समाजवादी-क्रांतिकारी कार्यक्रम को चुरा लिया है, समझा आपने?"

मैंने पूछा कि क्या यह सही है कि कलेदिन उत्तर की ओर अपनी सेना लिये मार्च कर रहे हैं।

उसने स्वीकृति में सिर हिलाया और एक प्रकार के कटु, तिक्त संतोष के भाव से हाथों को मलता हुआ बोला, "हां, अब अप देख सकते हैं कि इन बोल्शेविकों ने क्या कर डाला है। उन्होंने हमारे ख़िलाफ़ प्रति-क्रांति को उभाड़ा है। क्रांति लुट गयी है, जी हां, क्रांति लुट गयी है।"

"लेकिन क्या आप क्रांति को बचायेंगे नहीं?"

"बेशक बचायेंगे – अपने ख़ून का आख़िरी कतरा देकर बचायेंगे। लेकिन हम किसी भी सूरत में बोल्शेविकों के साथ सहयोग नहीं करेंगे..."

"फिर भी अगर कलेदिन पेत्रोग्राद पर चढ़ाई करते हैं और बोल्शेविक नगर की रक्षा करते हैं, तो क्या आप उनके साथ हाथ नहीं मिलायेंगे?"

"बेशक नहीं। नगर की रक्षा हम भी करेंगे, लेकिन हम बोल्शेविकों का समर्थन नहीं करेंगे। अगर कलेदिन क्रांति का दुश्मन है, तो बोल्शेविक उसके कुछ कम दुश्मन नहीं हैं।"

"लेकिन दोनों में चुनना हो, तो आप किसे चुनेंगे – कलेदिन को या बोल्शेविकों को?"

"यह ऐसा सवाल नहीं है, जिस पर बहस की जाये!" उसने अधीर होकर कहा। "मैं आपसे फिर कहता हूं, क्रांति लुट गयी है, और इसके लिए बोल्शेविक दोषी हैं। लेकिन सुनिये, हम क्यों इन बातों की चर्चा करें? केरेन्स्की आ रहे हैं... परसों हम हमला शुरू कर देंगे... स्मोल्नी ने अभी से हमारे पास अपने प्रतिनिधि भेजे हैं और हमें एक नयी सरकार बनाने के लिए आमन्त्रित किया है। वे मुट्ठी में हैं – वे बिल्कुल नपुंसक हैं... हम उनके साथ हाथ नहीं मिलायेंगे..."

बाहर गोली चलने की आवाज़ आयी। हम दौड़कर खिड़कियों के पास गये। भीड़ के ताने-तिशनों से आख़िरकार झुंझलाकर एक लाल गार्ड ने गोली चला दी थी, जिससे एक नौजवान लड़की के हाथ में चोट लग गयी थी। हम ऊपर से उसे एक बग्घी-गाड़ी में बैठाये जाते देख सकते थे। गाड़ी के चारों ओर उत्तेजित लोगों की एक भीड़ थी, जिनकी चीख़-पुकार ऊपर हमारे कानों तक पहुंच रही थी। हम अभी उधर देख ही रहे थे कि यकायक एक बख़्तरबंद मोटर-गाड़ी मिखाइलोव्स्की मार्ग के मोड़ पर दिखायी पड़ी – उसकी तोपें हिल-डुल रही थीं, वे कभी इधर रुख़ करतीं तो कभी उधर। गाड़ी के नज़र आते ही भगदड़ मच गयी और जैसा कि पेत्रोग्राद में ऐसी

सूरतों में होता है, लोग चुपचाप सड़क पर मुंह के बल लेट गये, झुंड के झुंड नालों और गड्ढों में एक पर एक लद गये या तार के खंभों के पीछे छिप गये। गाड़ी धड़धड़ाती हुई दूमा-भवन के सामने पहुंची और उसकी टरेट से एक आदमी ने सिर निकालकर मांग की कि 'सोल्दात्स्की गोलोस' की कापियां उसके हवाले की जायें। बाल-स्वयंसेवक उसका मुंह चिढ़ाकर अंदर भाग गये। क्षण भर बाद गाड़ी कुछ अनिश्चित भाव से घूमी और नेव्स्की मार्ग से होकर निकल गयी। उसके आंख से ओझल होते ही सैकड़ों स्त्री-पुरुष धूल झाड़ते उठ खड़े हुए ...

दूमा-भवन के अन्दर लोग हाथों में 'सोल्दात्स्की गोलोस' के बंडल लिये बेतहाशा इधर से उधर दौड़ रहे थे और उन्हें छिपाने की जगह तलाश कर रहे थे ...

एक पत्रकार दौड़ता हुआ कमरे के अन्दर आया, उसके हाथ में एक पर्चा था, जिसे वह हिला हिलाकर दिखा रहा था।

"यह क्रास्नोव की घोषणा है!" उसने चिल्लाकर कहा और उसकी आवाज़ सुनते ही लोग उसके चारों ओर जुट आये। "इसे छपवाइये, जल्दी से छपवाइये और बारिकों में पहुंचाइये!"

मुख्य सेनापति की आज्ञा से मुझे पेत्रोग्राद में एकत्र सेनाओं का कमांडर नियुक्त किया गया है।

नागरिको, सिपाहियो, दोन के, कुबान के, बैकाल-पार के, आमूर के, येनिसेई के बहादुर कज़्ज़ाको, आप सबसे, जो अपनी प्रतिज्ञा के प्रति निष्ठापूर्ण रहे हैं, मैं अपील करता हूं, आपका, जिन्होंने अपनी कज़्ज़ाक-प्रतिज्ञा का उल्लंघन न होने देने का बीड़ा उठाया है, मैं आह्वान करता हूं कि आप पेत्रोग्राद को अराजकता से, अकाल से, अत्याचार से बचायें और विल्हेल्म के ज़रखरीद मुट्ठीभर जाहिल लोग रूस के माथे पर जो कभी न मिटने वाला कलंक का टीका लगाने की कोशिश कर रहे हैं, उसे कभी न लगने दें।

अस्थायी सरकार, जिसके प्रति आपने मार्च के महान् दिवसों में निष्ठा की शपथ ग्रहण की थी, उलट नहीं दी गयी है, बल्कि बलात् उस भवन से बाहर निकाल दी गयी है, जहां उसकी बैठकें हुआ करती थीं। फिर भी

यह सरकार अपने कर्त्तव्य के प्रति निष्ठा रखने वाली मोर्चे की सेनाओं की सहायता से, उस कज़्ज़ाक-परिषद् की सहायता से, जिसने अपनी कमान के तहत सभी कज़्ज़ाकों को एकजुट किया है, और जिसने कज़्ज़ाक प्रांतों में व्याप्त मनोबल से शक्ति ग्रहण कर और रूसी जनता की इच्छा का अनुसरण कर देश की सेवा करने का बीड़ा उठाया है, जैसे उसके पूर्वजों ने १६१२ की अशांत घड़ी में उसकी सेवा की थी, जब कि दोन के कज़्ज़ाकों ने स्वीडनियों, पोलों और लिथुआनियाइयों से घिरे हुए मास्को को मुक्त किया – [यह सरकार, आपकी सरकार अभी भी क़ायम है...]*

कर्त्तव्यपरायण सेना इन अपराधियों को नफ़रत और हिक़ारत की नज़र से देखती है। लूटमार और तहज़ीबसोज़ी की उनकी हरकतें, उनके जुर्म, जर्मनों की नज़र से रूस को देखने की उनकी आदत, उस रूस को जिसने घायल होते हुए भी अभी तक अपने घुटने नहीं टेके हैं – इन सबने उन्हें समूची जनता से दूर कर दिया है।

नागरिको, सिपाहियो, पेत्रोग्राद की गैरिसन के बहादुर कज़्ज़ाको, आप अपने प्रतिनिधियों को मेरे पास भेजें, ताकि मुझे मालूम हो सके कि कौन देश के प्रति ग़द्दार है और कौन नहीं, ताकि बेक़सूर इन्सानों का ख़ून न बहने पाये।

प्रायः इसी समय कानोंकान ख़बर फैल गयी कि लाल गार्डों ने दूमा-भवन को घेर लिया है। उनका एक अफ़सर बांह में लाल फीता लगाये अन्दर घुस आया और कहा कि उसे मेयर से मिलना है। थोड़ी देर बाद वह वापिस चला गया और बूढ़े श्रेइदेर लाल-पीले होते हुए अपने कार्यालय से बाहर निकले।

"दूमा का एक विशेष अधिवेशन! तुरत इसी वक़्त!" उन्होंने चिल्लाकर कहा।

बड़े हॉल में जो सभा चल रही थी, वह स्थगित कर दी गयी। "दूमा के सभी सदस्य विशेष अधिवेशन के लिए प्रस्थान करें!"

"मामला क्या है?"

"मैं नहीं जानता... वे शायद हमें गिरफ़्तार करने जा रहे हैं...

---

* कोष्ठकों के भीतर के ये शब्द अख़बारी रिपोर्टों में नहीं पाये जाते। – सं०

दूमा को भंग करने जा रहे हैं... दूमा के सदस्यों को ऐन दूमा की ड्योढ़ी पर हिरासत में लेते हैं।" लोग उत्तेजित होकर इसी प्रकार की टीका-टिप्पणी कर रहे थे।

निकोलाई हॉल में मुश्किल से इतनी जगह थी कि खड़ा हुआ जा सके। मेयर ने घोषणा की कि दूमा-भवन के सभी दरवाज़ों पर सैनिक तैनात हैं, वे न किसी को अन्दर आने दे रहे हैं, न बाहर जाने और एक कमिसार ने आकर नगर दूमा को भंग करने और उसके सदस्यों को गिरफ़्तार करने की धमकी दी है। इस घोषणा के उत्तर में सदस्यों की और यहां तक कि दर्शकों की जोशीली तक़रीरों की एक बाढ़ सी आ गई। उन्होंने कहा: ऐसी **कोई** सत्ता **नहीं** है, जो स्वतंत्र रूप से निर्वाचित नगर-प्रशासन को भंग कर सके; मेयर तथा दूमा के सभी सदस्यों की व्यक्तिगत स्वतंत्रता अनुल्लंघनीय है; ज़ालिमों, उकसावेबाज़ों और जर्मन दलालों को कभी भी मान्यता नहीं दी जानी चाहिए; जहां तक दूमा को भंग करने की इन धमकियों का सवाल है, ज़रा वे कोशिश करके तो देखें – वे हमारी लाशों पर पांव रखकर ही इस सदन पर क़ब्ज़ा कर सकेंगे, जहां हम प्राचीन रोम के सीनेटरों की तरह मर्यादा और आत्मसम्मान के साथ गोथों के आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं...

प्रस्ताव – समूचे रूस की दूमा और ज़ेम्सत्वो सभाओं को बज़रिये तार के सूचना दी जाये। दूसरा प्रस्ताव – मेयर अथवा दूमा के सभापति के लिए सैनिक क्रांतिकारी समिति के प्रतिनिधियों के साथ अथवा तथाकथित जन-कमिसार परिषद् के साथ किसी भी प्रकार का संबंध स्थापित करना असंभव है। तीसरा प्रस्ताव – पेत्रोग्राद की जनता के नाम एक और अपील जारी की जाये कि वे अपने निर्वाचित नगर-प्रशासन की रक्षा के लिए उठ खड़े हों। एक और प्रस्ताव – दूमा का अधिवेशन लगातार चलता रहे...

इसी बीच एक सदस्य यह सूचना लेकर आये कि उन्होंने स्मोल्नी को फ़ोन किया था और सैनिक क्रांतिकारी समिति ने कहा है कि दूमा की घेराबंदी के लिए कोई आदेश नहीं दिया गया है और दूमा-भवन से सैनिक हटा लिये जायेंगे...

जब हम सीढ़ियों से नीचे उतर रहे थे, रियाज़ानोव बड़ी तेज़ी से सामने के दरवाज़े से घुसे – वह बड़े उत्तेजित थे।

"क्या आप दूमा को भंग करने जा रहे हैं?" मैंने पूछा।

"ईश्वर के लिए, नहीं," उन्होंने उत्तर दिया। "यह सब एक ग़लतफ़हमी है। मैंने आज सुबह मेयर से कहा है कि दूमा को छेड़ा नहीं जायेगा ..."

बाहर नेव्स्की मार्ग पर शाम के गहरे होते हुए धुंधलके में साइकिल-सवारों की एक लम्बी दोहरी क़तार चली आ रही थी – बन्दूक़ें उनके कंधों से लटकी हुईं। जब वे रुके, भीड़ वहां धंस पड़ी और लोगों ने सवालों की एक झड़ी लगा दी।

"आप लोग कौन हैं? कहां से आते हैं?" एक बूढ़े मोटे-ताज़े आदमी ने, जिसके मुंह से सिगार लगा हुआ था, पूछा।

"हम बारहवीं सेना के साइकिल-सवार हैं और मोर्चे से आ रहे हैं। हम कमबख़्त पूंजीपतियों के ख़िलाफ़ सोवियतों का समर्थन करने आ रहे हैं!"

"ओह, यह बात है!" लोग गुस्से से चीख पड़े। "ये बोल्शेविक जल्लाद हैं! बोल्शेविक कज़्ज़ाक हैं!"

चमड़े का कोट पहने नाटे क़द का एक अफ़सर भागा भागा सीढ़ियों से उतरा। "गैरिसन का रुख बदल रहा है!" उसने मेरे कान में फुसफुसा कर कहा। "यह बोल्शेविकों के ख़ात्मे की शुरूआत है। आप देखना चाहते हैं, धारा का रुख किस तरह बदल रहा है? आइये, मेरे साथ आइये!" वह मिखाइलोव्स्की मार्ग की ओर लपका और हम उसके पीछे चल पड़े।

"यह कौन सी रेजीमेंट है?"

"**ब्रोनेवीकों** की ..." सचमुच यहां परिस्थिति विपद्जनक थी। **ब्रोनेवीक** बख़्तरबंद मोटर-गाड़ियां थे और परिस्थिति की कुंजी उन्हीं के हाथ में थी। जिसके हाथ में **ब्रोनेवीक** हों, उसके हाथ में समझिये पूरा शहर है। "उद्धार समिति के तथा दूमा के कमिसारों ने उनसे बात की है। इस समय यह फ़ैसला करने के लिए एक मीटिंग हो रही है कि ..."

"क्या फ़ैसला करने के लिए? कि वे किस की तरफ़ लड़ेंगे?"

"नहीं, भाई, इस तरह थोड़े ही काम साधा जा सकता है। वे बोल्शेविकों के ख़िलाफ़ कभी हथियार नहीं उठायेंगे! वे तटस्थ रहने के पक्ष में मतदान देंगे और फिर **युंकर** और कज़्ज़ाक ..."

मिखाइलोव्स्की अश्वारोहण पाठशाला के विशाल भवन के किवाड़ मुंह बाये हुए थे। दो संतरियों ने हमें रोकने की कोशिश की, लेकिन उनकी परवाह न कर और उनकी क्रुद्ध आपत्तियों को अनसुनी कर हम फर्राटे से अंदर घुस गये। अंदर विशाल हॉल में बिल्कुल ऊपर छत के पास केवल एक आर्क-बत्ती मंद मंद जल रही थी। हॉल के ऊंचे चौकोर खंभे और क़तार की क़तार खिड़कियां अंधेरे में जैसे खो गयी थीं। वहां खड़ी बख़्तरबंद गाड़ियों की भयावह आकृतियां धुंधली धुंधली दिखायी दे रही थीं। एक गाड़ी सबसे अलग हॉल के बीचोंबीच, ऐन आर्क-बत्ती के नीचे, खड़ी थी, और उसके चारों ओर भूरी वर्दियां पहने क़रीब दो हज़ार सिपाही जमा थे, जो उस वसीह शाही इमारत में खो से गये थे। लगभग एक दर्जन आदमी – अफ़सर, सैनिक समितियों के सभापति तथा वक्ता – गाड़ी के ऊपर जमा थे और बीच के टरेट में खड़ा एक सैनिक बोल रहा था। यह वही ख़ानजोनोव था, जो पिछली गर्मियों में होनेवाली बख़्तरबन्द टुकड़ियों की अखिल रूसी कांग्रेस का अध्यक्ष था। चमड़े का कोट पहने, जिस पर लेफ़्टिनेंट का झब्बा लगा था, सुंदर छरहरे बदन का यह आदमी तटस्थता के समर्थन में धाराप्रवाह बोल रहा था।

"रूसियों के लिए अपने ही रूसी भाइयों को मारना एक खौफ़नाक बात है," उसने कहा। "जिन सिपाहियों ने कंधे से कंधा मिलाकर ज़ार का मुक़ाबला किया और उन लड़ाइयों में विदेशी शत्रु को परास्त किया, जो इतिहास में सदैव अंकित रहेंगी, उनके बीच गृहयुद्ध हर्गिज़ नहीं होना चाहिये! हम सिपाहियों को राजनीतिक पार्टियों के इन झगड़ों-टंटों से क्या लेना-देना है? मैं यह तो नहीं कहूंगा कि अस्थायी सरकार जनवादी सरकार थी; हम पूंजीपति वर्ग से संश्रय नहीं चाहते, क़तई नहीं चाहते। लेकिन हमें एक संयुक्त जनवादी सरकार ज़रूर चाहिये, नहीं तो रूस का बेड़ा ग़र्क़ हो जायेगा! ऐसी सरकार हो, तो गृहयुद्ध की कोई ज़रूरत नहीं है, भाई के लिये भाई को मारने की ज़रूरत नहीं है!"

सुनने में बड़ी समझदारी की बात थी – विशाल हॉल गगनभेदी नारों से और तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा।

एक सिपाही बोलने के लिये ऊपर चढ़ गया – चेहरे पर तनाव, रंग उड़ा हुआ। "साथियो," उसने पुरज़ोर आवाज़ में कहा, "मैं रूमानिया के

मोर्चे से आप सबको यह ज़रूरी संदेश देने के लिये आया हूं: शांति होनी ही चाहिये और फ़ौरन होनी चाहिये! जो भी हमें यह शांति प्रदान कर सकता है, चाहे वह बोल्शेविक पार्टी हो या यह नई सरकार हो, हम उसके पीछे चलेंगे। शांति! मोर्चे पर हम लोग अब लड़ते रहने में असमर्थ हैं। हम न जर्मनों से लड़ सकते हैं, न रूसियों से..." यह कह कर वह नीचे कूद पड़ा और क्षुब्ध, उत्तेजित भीड़ जैसे दर्द से कराह उठी, लेकिन जब उसके बाद एक मेन्शेविक प्रतिरक्षावादी ने उठकर यह कहने की कोशिश की कि लड़ाई को तब तक लड़ते जाना होगा, जब तक कि मित्र-राष्ट्र विजयी नहीं हो जाते, भीड़ जैसे गुस्से से भड़क उठी।

"आप बिल्कुल केरेन्स्की की तरह बात कर रहे हैं!" एक आदमी ने कर्कश स्वर में कहा।

दूमा के एक प्रतिनिधि ने तटस्थता के लिये दलीलें पेश कीं। सिपाहियों ने उसे सुना ज़रूर, लेकिन बुड़बुड़ाते हुए; वे यह महसूस कर रहे थे कि बोलने वाला उनके लिए पराया है। वे निश्चल भाव से बोलनेवाले की ओर टकटकी बांधे देख रहे थे – उनकी दृष्टि में भयावह स्थिरता थी – सोचने की कोशिश में उनके माथे पर बल पड़े हुए थे, और पसीने की बूंदें भी चमक रही थीं। ये आदमी क्या थे, देव थे, उनकी आंखें निर्दोष बच्चों की तरह निश्छल और स्वच्छ थीं और चेहरे प्राचीन महाकाव्यों के शूरवीरों की तरह...

अब एक उनका अपना आदमी—एक बोल्शेविक—बोल रहा था, गुस्से और नफ़रत से भरा हुआ। उसकी बात उन्हें दूसरों से ज़्यादा नहीं भायी। उस समय उनका मिज़ाज कुछ और ही था। इस घड़ी वे विचारों के साधारण प्रवाह से निकल कर और उसके ऊपर उठ कर रूस के, समाजवाद के, संसार के बारे में सोच रहे थे, मानो क्रांति जीयेगी या मरेगी इसका दारोमदार उन्हीं पर हो...

एक के बाद एक, कितने ही भाषणकर्ता आये और उन सब ने तनाव भरी खामोशी, तारीफ़ में तालियों की गड़गड़ाहट या क्रुद्ध गर्जन के बीच एक ही सवाल के बारे में बहस की: हमें उठना चाहिए या नहीं? खानजोनोव फिर बोला, बड़ी सहानुभूति से समझाने की कोशिश करता हुआ। लेकिन वह शांति का चाहे जितना ढिंढोरा पीटे, वह अफ़सर ठहरा,

ओबोरोनेत्स (प्रतिरक्षावादी) ठहरा। इसके बाद वासील्येव्स्की ओस्त्रोव का एक मज़दूर आया, जिसका उन्होंने इस प्रश्न के साथ स्वागत किया, "मज़दूर भाई, क्या **आप** हमें शांति प्रदान करने जा रहे हैं ?" हमारे पास कुछ आदमियों ने, जिनमें बहुतेरे अफ़सर थे, एक गुट बना रखा था और जब भी कोई तटस्थता की वकालत करता, वे तालियां बजाते। वे बार बार आवाज़ उठाते, "ख़ानजोनोव ! ख़ानजोनोव !" और जब बोल्शेविक बोलने की कोशिश करते, वे सीटियां बजा कर उनका अपमान करते।

यकायक गाड़ी के ऊपर जमा सैनिक समितियों के आदमी तथा अफ़सर किसी चीज़ के बारे में बड़े ज़ोर ज़ोर से हाथ हिला हिला कर बहस करने लगे। श्रोताओं ने चिल्ला कर पूछा कि माजरा क्या है। वह सारा जन-समुदाय आलोड़ित और तरंगित हो उठा। एक सिपाही ने, जिसे एक अफ़सर रोकने की कोशिश कर रहा था, अपने को छुड़ाते हुए और हाथ झटकारते हुए कहा :

"साथियो, कामरेड क्रिलेन्को यहां मौजूद हैं और आपसे बात करना चाहते हैं।" हॉल में हल्ला मच गया—एक साथ ही तालियां, सीटियां और कड़ी आवाज़ें : "**प्रोसिम ! प्रोसिम ! दोलोई !** बोलिये ! बोलिये ! मुर्दाबाद !" इस सारे हल्ले-गुल्ले के बीच सैनिक मामलों के जन-कमिसार गाड़ी पर चढ़ गये – अगर सामने और पीछे से कुछ हाथ उनको सहारा दे रहे थे, तो कुछ उन्हें धकेल भी रहे थे। गाड़ी पर चढ़ कर उन्होंने क्षण भर सांस ली और फिर रेडियेटर पर जाकर खड़े हो गये और अपने दोनों हाथ कमर पर रख कर मुस्कराते हुए चारों ओर देखने लगे – एक ठिंगने आदमी, जिनकी टांगें उनके शरीर के मुक़ाबिले छोटी थीं, नंगे सिर, बग़ैर बिल्लों-झब्बों की वर्दी पहने हुए।

मेरे पास जो गिरोह था, उसने बेतहाशा चीख़ना शुरू किया, "ख़ानजोनोव ! हम ख़ानजोनोव को चाहते हैं ! क्रिलेन्को मुर्दाबाद ! ग़द्दार क्रिलेन्को मुर्दाबाद ! बंद करो !" पूरे हॉल में खलबली मच गयी और बेहद शोर-गुल होने लगा। और फिर जैसे बर्फ़ की एक चट्टान धसकती है और टूट पड़ती है, वैसे ही कुछ लंबे-तड़ंगे काली भौंहों वाले आदमी भीड़ को ठेलते-ठालते उधर झपटे, जहां हम खड़े थे।

"कौन साला हमारी मीटिंग को तोड़ रहा है ?" उन्होंने कड़क कर

कहा। "यहां कौन सीटी बजा रहा है?" वहां जो गिरोह इकट्ठा हुआ था, वह बिना कुछ-रियायत के तितर-बितर कर दिया गया और वह ऐसा बिखरा कि फिर नहीं जुट सका...

"साथी सिपाहियो!" क्रिलेन्को ने शुरू किया – उनकी आवाज़ थकान से भारी थी। "मुझे अफ़सोस है कि मैं आपसे ठीक से बात नहीं कर सकता, मैं चार रातों से सोया नहीं हूं...

"मुझे आपको यह बताने की जरूरत नहीं है कि मैं एक सिपाही हूं। मुझे आपको यह बताने की जरूरत नहीं है कि मैं शांति चाहता हूं। जो बात मुझे कहनी है, वह यह है कि बोल्शेविक पार्टी ने, जिसने आपकी सहायता से और उन सभी दूसरे बहादुर साथियों की सहायता से, जिन्होंने रक्त-लोलुप पूंजीपति वर्ग की सत्ता को सदा के लिए धराशायी कर दिया है, मजदूरों और सिपाहियों की क्रांति को सफलतापूर्वक संपन्न किया है, सभी जनों से शांति का प्रस्ताव करने का वचन दिया था – और यह वचन पूरा किया गया है – आज ही पूरा किया गया है!" तालियों की गड़गड़ाहट।

"आपसे तटस्थ रहने को कहा गया है, आपसे कहा गया है कि आप तटस्थ रहें और युंकर और शहीदी टुकड़ियां, जो कभी भी तटस्थ नहीं हो सकतीं, हमें सड़कों पर गोलियों से भूनें और केरेन्स्की को या शायद इसी गिरोह के किसी दूसरे डाकू को पेत्रोग्राद वापस लायें। कलेदिन दोन की ओर से मार्च कर रहे हैं। केरेन्स्की मोर्चे की ओर से आ रहे हैं। कोर्नीलोव अगस्त की अपनी कोशिश को दुहराने के लिए तेकीन्त्सों को उभाड़ रहे हैं। ये सारे मेन्शेविक और समाजवादी-क्रांतिकारी, जो आज आपसे गृहयुद्ध न होने देने के लिए अपील कर रहे हैं, उन्होंने अगर गृहयुद्ध के द्वारा – उस गृहयुद्ध के द्वारा, जो जुलाई से लगातार चल रहा है और जिसमें वे बराबर पूंजीपति वर्ग की ओर रहे हैं, जैसे वे आज हैं – सत्ता अपने हाथ में नहीं रखी, तो कैसे रखी?

"अगर आपने एक इरादा बना लिया है, तो मैं आपको कैसे क़ायल कर सकता हूं? लेकिन सवाल बहुत साफ़ है। एक ओर केरेन्स्की, कलेदिन और कोर्नीलोव हैं, मेन्शेविक, समाजवादी-क्रांतिकारी, कैडेट, दूमाएं तथा अफ़सर हैं... वे हमसे कहते हैं कि उनके उद्देश्य बड़े अच्छे हैं। दूसरी ओर मजदूर, सिपाही और मल्लाह हैं, गरीब से गरीब किसान हैं। सरकार आपके

हाथ में है। मालिक आप हैं। विशाल रूस आज आपके अधिकार में है। क्या आप यह अधिकार लौटा देंगे?"

क्रिलेन्को जब बोल रहे थे, स्पष्ट था कि वह केवल अपनी इच्छा-शक्ति के बल पर खड़े हैं, और जैसे जैसे वह बोलते गये, उनकी थकी, बैठी हुई आवाज़ के बावजूद उनके शब्दों के अंदर जो गहरी सच्ची भावना थी, वह प्रगट होती गयी। भाषण ख़त्म करते ही वह लड़खड़ाये और अगर सौ हाथों ने उन्हें सहारा देकर नीचे न उतारा होता, तो शायद वह गिर ही पड़ते। जिस मेघ-गर्जन से उनके भाषण का स्वागत किया गया वह उस विशाल, धुंधले हॉल के कोने कोने से प्रतिध्वनित हो उठा।

ख़ानजोनोव ने फिर बोलने की कोशिश की, लेकिन लोगों ने चीख़ना शुरू किया, "वोट लो! वोट लो!" आख़िरकार उनकी मर्ज़ी के सामने झुकते हुए, उसने अपना प्रस्ताव पढ़ कर सुनाया: बख़्तरबन्द टुकड़ी सैनिक क्रांतिकारी समिति से अपने प्रतिनिधि को वापस बुलाती है, और इस गृहयुद्ध में अपनी तटस्थता की घोषणा करती है। जो लोग इस प्रस्ताव का समर्थन करते हैं, वे दायीं ओर चले जायें और जो विरोध, वे बायीं ओर। क्षण भर की दुविधा और निस्तब्ध प्रतीक्षा के बाद भीड़ तेज़ से तेज़तर बायीं ओर उमड़ने लगी; लोग एक दूसरे के ऊपर गिरते-पड़ते बेतहाशा उधर ही दौड़े। मद्धिम प्रकाश में सैंकड़ों लंबे-तड़ंगे सिपाहियों का एक विशाल जनपुंज एक साथ एक ओर से दूसरी ओर – बायीं ओर – हो गया। हमारे क़रीब पचास आदमी, जो प्रस्ताव का समर्थन करने पर तुले हुए थे, अकेले पड़ गये और जिस समय गगनभेदी जयघोष से ऐसा लगता था कि छत फट पड़ेगी, उन्होंने पीछे की ओर रुख़ किया और तेज़ क़दमों से हॉल से बाहर निकल गये – उनमें से कुछ तो क्रांति के क्षेत्र से भी बाहर निकल गये...

कल्पना कीजिये कि यह कशमक़श जो इस हॉल में हुई शहर की हर बारिक में, हल्क़े में, पूरे मोर्चे पर, समूचे रूस में दोहरायी गयी। कल्पना कीजिये कि क्रिलेन्को जैसे कई कई रात के जगे लोग रेजीमेंटों का रुख़ देख रहे हैं, एक जगह से दूसरी जगह दौड़ रहे हैं, बहस कर रहे हैं और कहीं डरा-धमका रहे हैं, तो कहीं चिरौरी-विनती भी कर रहे हैं। और फिर कल्पना कीजिये कि यही बात हर मज़दूर यूनियन की हर स्थानीय शाखा

म, कारख़ानों में, गांवों में और दूर तक फैले हुए रूसी बेड़ों के जंगी जहाज़ों में दोहरायी गयी। क़यास कीजिये कि इस विशाल देश के एक छोर से दूसरे छोर तक सभी जगह लाखों रूसी लोग – मज़दूर, किसान, सिपाही और मल्लाह – भाषणकर्ताओं की ओर नज़र गड़ाये देख रहे हैं और एकाग्र भाव से उनकी बात को समझने की और यह तय करने की कोशिश कर रहे हैं कि अपने लिये कौन सा रास्ता चुनें और फिर अन्त में इस प्रकार सर्वसम्मति से एक फ़ैसला कर रहे हैं। ऐसी ही थी रूसी क्रांति ...

उधर स्मोल्नी में नयी जन-कमिसार परिषद् चुप नहीं बैठी थी। उसकी पहली आज्ञप्ति, जिसे उसी रात हज़ारों की संख्या में शहर भर में बंटवा देना था और भारी भारी बंडलों में हर रेलगाड़ी में दक्षिण और पूर्व की ओर रवाना करना था, छप रही थी :

किसान प्रतिनिधियों की शिरकत से मज़दूरों तथा सैनिकों के प्रतिनिधियों की अखिल रूसी कांग्रेस द्वारा निर्वाचित रूसी जनतन्त्र की सरकार के नाम पर जन-कमिसार परिषद् आज्ञप्ति करती है कि :

१. संविधान सभा के चुनाव निश्चित तिथि पर, अर्थात १२ नवंबर को सम्पन्न किये जायेंगे।

२. सभी चुनाव आयोगों, स्थानीय स्वशासन निकायों, मज़दूरों, सैनिकों तथा किसानों के प्रतिनिधियों की सोवियतों तथा मोर्चे के सैनिक संगठनों को चाहिये कि वे नियत तिथि पर स्वतंत्र तथा नियमित चुनावों को सुनिश्चित बनाने के लिये पूरा प्रयत्न करें।

रूसी जनतंत्र की सरकार के नाम पर

जन-कमिसार परिषद् के अध्यक्ष

व्लादीमिर उल्यानोव-लेनिन

नगर दूमा भवन में दूमा की मीटिंग बड़े ज़ोर-शोर से चल रही थी। जब हम अन्दर घुसे जनतंत्र की परिषद् के एक सदस्य बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि परिषद् अपने को भंग बिल्कुल नहीं समझती, वह केवल यह

समझती है कि जब तक उसे एक नया सभा-भवन उपलब्ध न हो, वह अपने क्रिया-कलाप को जारी रखने में असमर्थ है। इस बीच उसकी प्रवर-समिति ने सामूहिक रूप से उद्धार समिति में प्रवेश करने का निश्चय किया है... प्रसंगवश, इतिहास में रूसी जनतंत्र की परिषद् का इसके बाद कभी भी ज़िक्र नहीं मिलता...

इसके बाद मंत्रालयों, **विक्जेल**, डाक-तार यूनियन के प्रतिनिधि बदस्तूर एक के बाद एक वहां आये और उन्होंने सौवें मर्तबा अपने इस संकल्प को दोहराया कि वे बोल्शेविक बलाद्ग्राहियों के लिये हरगिज़ काम नहीं करेंगे। एक **युंकर** ने, जो शिशिर प्रासाद में मौजूद था, अपनी और अपने साथियों की वीरता की और लाल गार्डों के अपमानजनक व्यवहार की एक घोर अतिरंजित कथा सुनायी—और लोगों ने इन सारे क़िस्से-कहानियों पर आंख मूंद कर विश्वास कर लिया। किसी ने समाजवादी-क्रांतिकारी अख़बार 'नरोद' में छपी एक रिपोर्ट को पढ़ कर सुनाया, जिसमें यह कहा गया था कि शिशिर प्रासाद को जो क्षति पहुंचायी गयी है, उसे पूरा करने में पचास करोड़ रूबल ख़र्च होंगे और जिसमें वहां होने वाली लूट-मार और तोड़-फोड़ का विशद वर्णन था।

बीच बीच में संदेशवाहक टेलीफ़ोन से प्राप्त होने वाले समाचारों को लेकर वहां आते। चार समाजवादी मंत्रियों को क़ैद से रिहा कर दिया गया है। क्रिलेन्को ने पीटर-पाल क़िले में जाकर एडमिरल वेर्देरेव्स्की से कहा कि नौ-मंत्रालय परित्यक्त है और उनसे अनुरोध किया कि वह रूस की ख़ातिर जन-कमिसार परिषद् के तहत मंत्रालय का भार संभालें, और बूढ़े नाविक ने उनकी बात मान ली। केरेंस्की गातचिना से उत्तर की ओर बढ़ रहे हैं और बोल्शेविक गैरिसनें उनका मुक़ाबला न कर पीछे हट रही हैं। स्मोल्नी ने एक और आज्ञप्ति जारी की है, जिसके द्वारा खाद्य-संभरण के मामले में नगर दूमाओं के अधिकारों को बढ़ा दिया गया था।

यह अंतिम बात एक ऐसी धृष्ठता मालूम पड़ी कि लोगों का गुस्सा भड़क उठा। यह लेनिन, बलाद्ग्राही और अत्याचारी लेनिन, जिसके कमिसारों ने नगरपालिका की मोटर-गाड़ियों पर क़ब्ज़ा कर लिया था, नगरपालिका के गोदामों में प्रवेश किया था, और संभरण-समितियों के काम में तथा खाद्य के वितरण में हस्तक्षेप किया था,—इस लेनिन की

ऐसी जुर्रत कि वह स्वतंत्र, स्वाधीन, स्वायत्त नगर-प्रशासन के अधिकारों की सीमा बांधे! एक दूमा-सदस्य ने अपना घूंसा दिखाते हुए प्रस्ताव किया कि अगर बोल्शेविक संभरण-समितियों के काम में दस्तंदाज़ी करने की जुर्रत करें, तो नगर को खाद्य की सप्लाई बंद की जाये... एक दूसरे सदस्य ने, जो विशेष संभरण-समिति के प्रतिनिधि थे, ख़बर दी कि खाद्य-स्थिति अत्यन्त गंभीर है और उन्होंने मांग की कि दूमा अपने दूतों को बाहर दौड़ाये, ताकि अनाज की गाड़ियां जल्दी से जल्दी पेत्रोग्राद लायी जा सकें।

देदोनेन्को ने नाटकीय ढंग से घोषणा की कि गैरिसन डांवांडोल हो रही है। सेम्योनोव्स्की रेजीमेंट ने अभी से फ़ैसला कर लिया है कि वह समाजवादी-क्रांतिकारी पार्टी की ही आज्ञा का पालन करेगी। नेवा नदी की टारपीडो-नावों के मल्लाह भी डांवांडोल हैं। फ़ौरन सात सदस्यों को प्रचार-कार्य जारी रखने के लिये नियुक्त किया गया...

इसके बाद बूढ़े मेयर मंच पर बोलने के लिये खड़े हुए: "साथियो और नागरिको! मुझे अभी अभी मालूम हुआ है कि पीटर-पाल क़िले के क़ैदी ख़तरे में हैं। बोल्शेविक रक्षकों ने पाव्लोव्स्क स्कूल के चौदह **युंकरों** को नंगा करके उन्हें मारा-पीटा है। उनमें से एक पागल हो गया है। वे क़ानून को ताक पर रखकर मंत्रियों को भी भुरता बना देने की धमकी दे रहे हैं!" मेयर का यह कहना नहीं था कि क्रोध और घृणा की जैसे एक ज्वार आ गयी। वह उस वक़्त और भी उग्र हो गयी, जब भूरे कपड़े पहने हुए नाटे क़द की एक ठिंगनी सी औरत ने बोलने की इजाज़त मांगी और कठोर स्वर में, जिसमें लोहे की खनक थी, बोलने लगी। यह थीं पुरानी तपी हुई क्रांतिकारी महिला तथा दूमा की बोल्शेविक सदस्य वेरा स्लूत्स्काया।

"यह सरासर झूठ है और उकसावा है!" उन्होंने गालियों की बौछार की परवाह न करके कहा। "मज़दूरों और किसानों की सरकार, जिसने मृत्यु-दंड समाप्त कर दिया है, ऐसी हरकतों की इजाज़त नहीं दे सकती। हम मांग करते हैं कि इस रिपोर्ट की फ़ौरन जांच की जाये। अगर उसमें कोई सचाई है, तो सरकार ज़रूर ज़ोरदार क़दम उठायेगी!"

Коииссарь
Главнаго Упавленія до-
мовъ заключенія
"..6.." ..Ноябр. 1917. г.
№. 213...
Петроградъ Смольный
Институтъ; комн. № 56.-

ПРОПУСКЪ

Представителю Американскихъ Соціалистическихъ газетъ ДЖОНУ РИДУ, во всѣ мѣста заключенія гг. Петрограда и Кронштата, для общаго ознакомленія положенія заключенныхъ и широкаго общественнаго освѣдомленія въ цѣляхъ прекращенія газетной травли противъ демократіи.-

Военно-Революціонный Комитет.

...ный Комиссаръ
Секретарь

सभी जेलों में बेरोकटोक जाने के लिए जॉन रीड को दिया गया पास

सभी पार्टियों के सदस्यों को लेकर फ़ौरन एक आयोग की नियुक्ति की गयी और मामले की तहक़ीक़ात के लिये यह आयोग मेयर के साथ पीटर-पाल क़िले के लिये रवाना हुआ। हम उनके पीछे पीछे निकल ही रहे थे कि हमने देखा, दूमा केरेन्स्की के साथ मुलाक़ात के लिये एक दूसरा आयोग नियुक्त कर रही थी और उसे यह ज़िम्मेदारी सौंप रही थी कि जब केरेन्स्की राजधानी में प्रवेश करें, यह आयोग उनसे मिल कर इस बात की कोशिश करे कि शहर में ख़ून-ख़राबा न होने पाये ...

जब हम क़िले पहुंचे और हमने फाटक पर संतरियों को चकमा दे कर अन्दर प्रवेश किया, रात आधी गुज़र चुकी थी। हम गिरजाघर की ओर इक्की-दुक्की बिजली की बत्तियों के मद्धिम प्रकाश में आगे बढ़े। यहीं, इसी गिरजाघर में सुन्दर स्वर्ण कलश और घंटे के नीचे, जिस पर हर रोज़ ऐन दोपहर को पहले की ही तरह अभी भी **बोजे त्सार्या ख़रानी** * की धुन बजती रही थी, ज़ारों की क़ब्रें थीं ... इस समय वहां बिल्कुल सन्नाटा था; अधिकांश खिड़कियों में रोशनी तक न थी। अंधेरे में चलते

---

* ईश्वर ज़ार की रक्षा करे। यह एक ग़लती है: पीटर-पाल का घंटा "कोल स्लावेन ..." (गौरव है आपका ...) की धुन बजाता था। – सं०

चलते हम किसी वक़्त किसी मुस्टंडे-मुस्टंडे से टकरा जाते, जो हमारे सवालों का हस्बमामूल एक ही जवाब देता, "**या न्ये ज्नायू**" (मुझे नहीं मालूम)।

बायीं ओर **त्रुबेत्स्कोई** बुर्ज की धुंधली धुंधली आकृति दिखायी दे रही थी – वही बुर्ज, जो क़ैदियों के लिए जीते जी क़ब्र था, जहां ज़ारशाही ज़माने में आज़ादी की लड़ाई के कितने ही शहीदों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा या अपनी बुद्धि से, जहां अपने वक़्त अस्थायी सरकार ने ज़ारशाही मंत्रियों को बंद कर दिया था और अब बोल्शेविकों ने अस्थायी सरकार के मंत्रियों को बंद किया था।

एक मल्लाह ने हमें बड़े मैत्रीपूर्ण भाव से टकसाल के पास एक छोटे से घर में पहुंचाया, जहां कमांडेंट का दफ़्तर था। एक गर्म कमरे में, जिसमें धुआं भरा हुआ था, आधा दर्जन लाल गार्ड, मल्लाह और सिपाही बैठे हुए थे। पास ही समोवार मे पानी के खदबदाने की सुखद ध्वनि आ रही थी। उन्होंने बड़े हार्दिक भाव से हमारा स्वागत किया और चाय पिला कर हमारी ख़ातिर की। कमांडेंट मौजूद न थे, वह नगर दूमा से आये "**साबोताज्निकों**" (तोड़-फोड़ करने वालों) के आयोग के साथ थे, जिनका कहना था कि **युंकरों** का क़त्ले-आम किया जा रहा है। यहां लोगों को इस बात पर बेहद हंसी आ रही थी। कमरे में एक तरफ़ नाटे क़द और गंजी खोपड़ी वाले एक साहब, जिन्हें देखने से मालूम होता था कि उन्होंने अपने दिन ऐयाशी में बिताये हैं, एक सूट और क़ीमती फर कोट पहने बैठे थे। वह अपनी मूंछें चबा रहे थे और अपने चारों ओर चूहादानी में फंसे चूहे की तरह सहमी नज़र से देख रहे थे। उन्हें अभी अभी गिरफ़्तार किया गया था। किसी ने उनकी ओर उड़ती हुई नज़र से देखकर कहा कि वह मंत्री-यंत्री कुछ हैं... मालूम होता था नाटे आदमी ने उसकी बात सुनी नहीं। ज़ाहिर था कि वह बेहद डरे हुए और घबराये हुए थे, हालांकि कमरे में मौजूद लोगों ने उन्हें कोई नाराज़गी नहीं दिखायी थी।

मैंने उनके पास जा कर उनसे फ़्रांसीसी में बात की। "काउंट तोल्स्तोई," उन्होंने औपचारिक रूप से झुककर अपना परिचय दिया। "मेरी समझ में नहीं आता कि मुझे क्यों गिरफ़्तार किया गया है। मैं अपने घर के पास से बोल्शोई पुल को पार कर रहा था कि इनमें से... इनमें

से ... दो आदमियों ने मुझे पकड़ लिया। बेशक मैं अस्थायी सरकार का कमिसार था और मुझे मुख्य सैनिक कार्यालय के साथ लगा दिया गया था, लेकिन मैं क़िसी भी माने में मंत्रिमंडल का सदस्य नहीं था ..."

"उसे जाने दो ..." एक मल्लाह ने कहा। "वह कोई ख़तरनाक आदमी नहीं मालूम होता ..."

"नहीं," जो सिपाही उसे गिरफ़्तार कर के यहां लाया था, उसने कहा। "पहले हमें कमांडेंट से पूछना होगा।"

"ओह, कमांडेंट!" मल्लाह ने मज़ाक उड़ाया। "तुमने क्रांति काहे के लिए की? इसीलिए कि अफ़सरों का हुक्म बजाते रहो?"

पाव्लोव्स्की रेजीमेंट का एक **प्रापोरश्चीक** बता रहा था कि विद्रोह कैसे शुरू हुआ। "छः तारीख़ की रात को हमारी रेजीमेंट की ड्यूटी मुख्य सैनिक कार्यालय में लगी थी। मैं अपने कुछ साथियों के साथ पहरे पर तैनात था। जिस कमरे में जनरल स्टाफ़ की बैठक हो रही थी, उसमें इवान पाव्लोविच और एक और आदमी, जिसका नाम मुझे याद नहीं आ रहा है, पर्दों के पीछे छिप गये और उन्होंने कितनी ही बातें सुनीं। उदाहरण के लिए, उन्होंने सुना कि गातचिना के **युंकरों** को रातों रात पेत्रोग्राद आने और कज़्ज़ाकों को सुबह मार्च करने के लिए तैयार रहने का हुक्म दिया जा रहा था ... उनकी योजना थी कि शहर के ख़ास ख़ास नाकों पर सवेरा होने से पहले ही क़ब्ज़ा कर लिया जाये। फिर पुलों के भी खोलने की बात थी। लेकिन जब वे स्मोल्नी भवन पर घेरा डालने की बात करने लगे, इवान पाव्लोविच से रहा न गया। ठीक उसी समय काफ़ी लोग वहां आ जा रहे थे – उन्हीं में मिल कर वह चुपके से निकल आया और नीचे गारद-घर में आ गया। दूसरा साथी उनकी बात सुनने के लिये, जितनी भी वह सुन सकता था, वहां रह गया।

"मुझे पहले से ही शुबहा था कि कोई न कोई गुल ज़रूर खिलाया जा रहा है। अफ़सरों से लदी मोटर-गाड़ियां बराबर आ रही थीं और सभी मंत्री वहां मौजूद थे। इवान पाव्लोविच ने जो कुछ अपने कानों सुना था, मुझे बताया। उस वक़्त रात के ढाई बजे थे। रेजीमेंट-समिति के मंत्री वहां मौजूद थे। हमने सारा क़िस्सा उन्हें सुनाया और पूछा कि क्या करना चाहिए।

" 'आने-जाने वाले सभी आदमियों को गिरफ़्तार कर लो,' उन्होंने कहा। लिहाज़ा हमने ऐसा ही करना शुरू किया। घंटे भर के अंदर ही हमने कुछ अफ़सरों और दो मंत्रियों को पकड़ कर सीधे स्मोल्नी भिजवा दिया। लेकिन सैनिक क्रांतिकारी समिति इसके लिए तैयार न थी। उनकी समझ में नहीं आया कि वे क्या करें। थोड़ी ही देर बाद हमारे पास हुक्म आया कि हम हर आदमी को छोड़ दें और अब किसी को न पकड़ें। फिर हम भागे भागे काले कोस स्मोल्नी गये और मेरा ख़्याल है घंटे भर की माथापच्ची के बाद कहीं जा कर उनके ज़ेहन में यह बात आयी कि यह दरअसल एक लड़ाई है। जब हम वापिस यहां पहुंचे पांच बज चुके थे और चिड़ियां हाथ से निकल चुकी थीं। कुछ तो फिर भी फंस ही गयीं। गैरिसन पूरी की पूरी निकल पड़ी थी ..."

वासील्येव्स्की ओस्त्रोव के एक लाल गार्ड ने बड़े विस्तार से बताया कि विद्रोह के दिन उसके हलक़े में क्या हुआ। "वहां हमारे पास मशीनगनें न थीं, और न वे हमें स्मोल्नी से मिल सकती थीं," उसने मुस्कराते हुए कहा। "वार्ड दूमा की **उप्रावा** (केंद्रीय ब्यूरो) के सदस्य कामरेड ज़ालकिन्द को अचानक याद आया कि **उप्रावा** के सभा कक्ष में एक मशीनगन पड़ी है, जो जर्मनों से छीनी गयी थी। लिहाज़ा वह और मैं और एक और साथी वहां पहुंचे। मेन्शेविक और समाजवादी-क्रांतिकारी लोग वहां मीटिंग कर रहे थे। हमने आव देखा न ताव, दरवाज़ा खोल कर सीधे अंदर घुस गये। हम तीन थे और वे बारह या पंद्रह रहे होंगे, सब के सब एक मेज़ के चारों ओर बैठे हुए। जब उन्होंने हमें देखा, उन्हें जैसे सांप सूंघ गया। उनकी बोलती बंद हो गयी और वे बस हमारा मुंह देखते रह गये। हम बेसाख़्ता कमरे की दूसरी जानिब गये, मशीनगन के हिस्सों को अलग किया, एक हिस्सा कामरेड ज़ालकिन्द ने उठाया, दूसरा मैंने और हम उन्हें कंधे पर लादे बाहर निकल आये और एक भी आदमी ने चूं तक नहीं की!"

"तुम जानते हो शिशिर प्रासाद पर कैसे क़ब्ज़ा किया गया?" एक तीसरे आदमी ने, एक मल्लाह ने पूछा। "क़रीब ग्यारह बजे हमें पता चला कि नेवा की तरफ़ वाले हिस्से में **युंकर** मौजूद नहीं हैं। लिहाज़ा हम दरवाज़े तोड़ कर अंदर घुस गये और एक एक या दो दो, चार चार

कर के सीढ़ियों से चुपचाप ऊपर चढ़ गये। जब हम ऊपर पहुंचे, **युंकरों** ने हमें रोका और हमारी बंदूकें छीन लीं। लेकिन थोड़े थोड़े करके हमारे साथी बराबर आते ही रहे, जब तक कि हमारी तादाद उनसे ज़्यादा न हो गयी। फिर क्या था, हमने बाज़ी पलट दी और **युंकरों** से उनकी बंदूकें रखवा लीं ..."

ठीक उसी समय कमांडेंट ने प्रवेश किया – एक हंसमुख नौजवान ग़ैर-कमीशनयाफ़्ता अफ़सर, जिसका एक हाथ गले की पट्टी से लटका हुआ था और आंखों के नीचे कई कई रात जगते रहने से काली रेखायें उभर आयी थीं। उसकी निगाह पहले क़ैदी पर पड़ी, जो फ़ौरन अपनी सफ़ाई देने लगा।

"जी हां," कमांडेंट ने उसकी बात काट कर कहा। "आप उसी समिति के मेंबर थे न, जिसने बुधवार को तीसरे पहर जनरल स्टाफ़ को हमारे हवाले करने से इनकार किया था। बहरहाल, हमें आपकी ज़रूरत नहीं है। माफ़ कीजिए, नागरिक ..." उसने दरवाज़ा खोल कर काउंट तोल्स्तोई को इशारा किया कि वह बराय मेहरबानी तशरीफ़ ले जायें। कई और लोगों ने, ख़ास कर लाल गार्डों ने भुनभुना कर अपना प्रतिवाद प्रगट किया और मल्लाह ने विजय के भाव से कहा, "देखा! मैंने क्या कहा था?"

अब दो सिपाही कमांडेंट की ओर मुख़ातिब हुए। क़िले की गैरिसन ने प्रतिवाद प्रगट करने के लिये उन दो आदमियों की एक समिति चुनी थी। उन्होंने कहा कि ऐसे वक़्त जब पेट भर खाना मिलना दुश्वार था, क़ैदियों को वही ख़ुराक दी जा रही थी, जो रक्षकों को। "प्रतिक्रांतिकारियों के साथ इतना अच्छा सलूक क्यों किया जाये?"

"साथियो, हम क्रांतिकारी हैं, लुटेरे नहीं," कमांडेंट ने जवाब दिया। अब वह हमारी ओर मुड़ा। हमने कहा कि शहर में अफ़वाहें उड़ रही हैं कि **युंकरों** को मारा-पीटा जा रहा है और मंत्रियों की जान भी ख़तरे में है। "क्या हमें क़ैदियों से मिलने दिया जा सकता है, ताकि हम दुनिया के सामने साबित कर सकें कि ..."

"नहीं," नौजवान सैनिक ने खीझ कर कहा। "मैं दोबारा क़ैदियों की नींद में ख़लल नहीं डाल सकता। मुझे अभी अभी मजबूरन उन्हें जगाना

पड़ा – उन्होंने बिल्कुल यही समझा कि उन्हें जहन्नुम रसीद किया जाने वाला है ... बहरहाल ज़्यादातर **युंकरों** को छोड़ ही दिया गया है और बाकी कल छोड़ दिये जायेंगे।" उसने यकायक दूसरी ओर रुख़ किया।

"तब क्या हम दूमा आयोग से बात कर सकते हैं?"

कमांडेंट ने, जो अपने लिए गिलास में चाय ढाल रहा था, सिर हिलाकर स्वीकृति दी। "वे अभी भी बाहर हॉल में हैं," उसने बेपरवाही से कहा।

और सचमुच एक चिराग़ की मद्धिम रोशनी में हमने देखा, वे दरवाज़े के ठीक बाहर मेयर को घेरे खड़े हैं और उत्तेजित स्वर में बातें कर रहे हैं।

"मेयर महोदय," मैंने कहा, "हम अमरीकी संवाददाता हैं। क्या आप हमें कृपा कर आधिकारिक रूप से बतायेंगे कि आप की जांच-पड़ताल का क्या नतीजा निकला?"

वह हमारी ओर मुख़ातिब हुए – उनके चेहरे पर वही श्रद्धेय, गौरवास्पद भाव था।

"उन रिपोर्टों में कोई सचाई नहीं है," उन्होंने आहिस्ता लहजे में कहा। "जब मंत्रिगण यहां लाये जा रहे थे, उस समय जो घटनायें हुईं, उन्हें छोड़ दें, तो उनके साथ सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार किया गया है। जहां तक **युंकरों** का प्रश्न है, किसी का बाल भी बांका नहीं हुआ है ..."

नेव्स्की मार्ग पर रात के तीसरे पहर के निस्तब्ध धुंधलके में सिपाहियों की क़तार पर क़तार चुपचाप चली जा रही थी–वे केरेन्स्की से लड़ने जा रहे थे। अंधेरे उपमार्गों पर बग़ैर बत्ती के मोटरें दौड़ रही थीं। किसानों की सोवियत के सदर दफ़्तर, फ़ोन्तान्का छः में, नेव्स्की मार्ग के एक विशाल भवन के एक फ़्लैट में और **इंजीनेर्नी ज़ामोक** (इंजीनियरों का स्कूल) में गुप-चुप कार्रवाइयां हो रही थीं। दूमा भवन जगमगा रहा था ...

स्मोल्नी संस्थान में सैनिक क्रांतिकारी समिति शोला बनी हुई थी और एक अतिभारित डाइनामो की तरह बेतहाशा काम कर रही थी ...

सातवां अध्याय

क्रान्तिकारी मोर्चा

शनिवार, १० नवम्बर ...

नागरिको!

सैनिक क्रांतिकारी समिति घोषणा करती है कि वह क्रांतिकारी सुव्यवस्था के किसी भी प्रकार के उल्लंघन को सहन नहीं करेगी ...

चोरी, ठगी, बटमारी और ख़ून-ख़राबे की कोशिशों के लिये कठोर दंड दिया जायेगा ...

जो भी लूटमार करेगा या फ़साद भड़कायेगा, पेरिस कम्यून के उदाहरण का अनुसरण करती हुई समिति उसे बिना किसी रू-रिआयत के मिट्टी में मिला देगी ...

नगर में पूर्ण शान्ति थी। चोरी और बटमारी की एक भी घटना नहीं, शराबियों का सिर-फुटौवल तक नहीं। रात को हथियारबंद गश्ती दस्ते ख़ामोश सड़कों का चक्कर लगाते और गली-सड़कों के नुक्कड़ों पर सिपाही और लाल गार्ड छोटे छोटे अलावों के चारों ओर बैठे बातचीत करते, हंसते और गाना गाते दिखायी देते। दिन के वक़्त सड़क की पटरियों पर भीड़ इकट्ठी हो जाती, झुंड के झुंड लोग विद्यार्थियों और सिपाहियों, व्यवसायियों और मजदूरों के बीच कभी न ख़त्म होने वाली गर्मागर्म बहसों को सुनने के लिये खड़े हो जाते।

सड़कों पर राह चलते नागरिक एक दूसरे को रोक कर पूछते:

"क्यों भाई, सुना है, कज़्ज़ाक आने वाले हैं?"

"नहीं ..."

"ताज़ा ख़बर क्या है?"

"मैं नहीं जानता। आपको मालूम है केरेन्स्की कहां हैं?"

"लोगों का कहना है कि पेत्रोग्राद से कुल आठ **वेर्स्ता** दूर... क्या यह सच है कि बोल्शेविकों ने भाग कर क्रूज़र 'अव्रोरा' में शरण ली है?"

"कहते तो यही हैं..."

दीवारों पर पोस्टर और इने-गिने अख़बार; अपीलों, फटकारों, आज्ञप्तियों की भरमार...

एक बड़े भारी पोस्टर में किसानों की सोवियतों की कार्यकारिणी समिति का घोषणापत्र छपा था, जिसमें बहुत सी वाही-तबाही बकी गयी थी:

...वे (बोल्शेविक) यह कहने की जुर्रत करते हैं कि उन्हें किसानों के प्रतिनिधियों की सोवियतों का समर्थन प्राप्त है और यह कि वे किसानों के प्रतिनिधियों की सोवियतों की ओर से बोल रहे हैं...

रूस का समूचा मज़दूर वर्ग जान ले कि यह सरासर **झूठ** है, **कि किसानों के प्रतिनिधियों की अखिल रूसी सोवियतों की कार्यकारिणी समिति** के रूप में **सारे मेहनतकश किसान** इस बात का क्रोधपूर्वक खंडन करते हैं कि संगठित किसान वर्ग ने मेहनतकश वर्गों की इच्छा के इस अपराधपूर्ण उल्लंघन में किसी भी प्रकार से योगदान दिया है...

समाजवादी-क्रांतिकारी पार्टी की सैनिक शाखा ने घोषणा की:

बोल्शेविकों का विक्षिप्त प्रयास ध्वस्त होने को ही है। गैरिसन के अंदर फूट पड़ गई है... मंत्रालयों के कर्मचारी हड़ताल पर हैं और रोटी और भी दुर्लभ हो गयी है। मुट्ठी भर बोल्शेविकों को छोड़कर सभी दल कांग्रेस से निकल आये हैं। बोल्शेविक अकेले पड़ गये हैं...

हम सभी समझदार अंशकों से अपील करते हैं कि वे देश तथा क्रांति की उद्धार समिति के चारों ओर एकत्र हों और इस बात की गंभीर तैयारी करें कि केन्द्रीय समिति का आह्वान होते ही कमर कस कर

जनतंत्र की परिषद् ने एक परचा निकाल कर अपनी शिकायतें पेश कीं:

संगीनों के सामने मजबूर होकर जनतंत्र की परिषद् विसर्जित होने और अस्थायी रूप से अपनी सभा स्थगित करने के लिए बाध्य हुई है।

बलाद्ग्राहियों ने लबों पर "आज़ादी और समाजवाद" का नारा लेकर निरंकुश हिंसापूर्ण शासन स्थापित किया है। उन्होंने अस्थायी सरकार के सदस्यों को गिरफ़्तार कर लिया है, अख़बारों को बंद कर दिया है और छापाख़ानों पर क़ब्ज़ा कर लिया है... यह ज़रूरी है कि इस सत्ता को जनता तथा क्रांति का शत्रु समझा जाये; यह ज़रूरी है कि उससे संघर्ष किया जाये और उसे गिराया जाये...

जब तक जनतंत्र की परिषद् अपना काम फिर से शुरू नहीं करती, वह रूसी जनतंत्र के नागरिकों को आमंत्रित करती है कि वे देश तथा क्रांति की स्थानीय उद्धार समितियों के गिर्द एकजुट हों। ये समितियां बोल्शेविकों की सरकार को उलटने और एक ऐसी सरकार की स्थापना करने का कार्य संगठित कर रही हैं, जो देश को संविधान सभा की ओर अग्रसर करने में समर्थ होगी।

'देलो नरोदा' ने लिखा:

क्रांति का अर्थ है समस्त जनता का विद्रोह... परंतु हम यहां क्या देखते हैं? लेनिन और त्रोत्स्की द्वारा ठगे और बुद्धू बनाये गये बेचारे मुट्ठी भर बेवक़ूफ़ों को, बस... उनकी आज्ञप्तियां और अपीलें ऐतिहासिक विचित्र-वस्तु संग्रहालय की शोभा ही बढ़ा सकती हैं...

जन-समाजवादियों के अख़बार 'नरोद्नोये स्लोवो, (जनवाणी) ने भी अपना तीर छोड़ा:

"मज़दूरों और किसानों की सरकार?" यह सचाई नहीं, किसी अफ़ीमची की सनक है। रूस में या मित्र-राष्ट्रों में, यहां तक कि शत्रु-देशों में भी एक भी आदमी इस "सरकार" को मान्यता देने वाला नहीं है...

पूंजीवादी अख़बार फ़िलहाल ग़ायब हो गये थे...

'प्राव्दा' ने नयी **त्से-ई-काह** के, जो अब रूसी सोवियत जनतंत्र की गगद बन गयी थी, पहले अधिवेशन की एक रिपोर्ट छापी। अधिवेशन ा कृषि-कमिसार मिल्यूतिन ने कहा कि किसानों की कार्यकारिणी समिति ने १३ दिसम्बर को अखिल रूसी किसान कांग्रेस बुलायी है।

"लेकिन हम तब तक इंतज़ार नहीं कर सकते," उन्होंने कहा। "हमारे लिए किसानों का समर्थन पाना ज़रूरी है। मेरा प्रस्ताव है कि हम किसानों की कांग्रेस बुलायें और फ़ौरन ही बुलायें..." वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारियों ने सहमति प्रगट की। रूस के किसानों के नाम अपील का एक मसौदा जल्दी जल्दी तैयार किया गया और इस योजना को कार्यान्वित करने के लिए पांच आदमियों की एक समिति निर्वाचित की गई।

भूमि-वितरण की विशद योजना का प्रश्न तथा उद्योग पर मज़दूरों के नियन्त्रण का प्रश्न तब तक के लिए मुल्तवी कर दिया गया, जब तक कि इन प्रश्नों का अध्ययन करने वाले विशेषज्ञ अपनी रिपोर्ट न दें।

तीन आज्ञप्तियां[1] पढ़ी गयीं और स्वीकृत की गयीं: पहली, लेनिन की 'समाचारपत्रों के लिए सामान्य नियमावली', जिसके द्वारा यह आदेश दिया गया कि उन सभी अख़बारों को बंद किया जाये, जो नयी सरकार के प्रति प्रतिरोध और आज्ञाभंग के भाव को उभाड़ते हैं, अपराधपूर्ण कार्रवाइयों के लिए उकसावा देते हैं, या जान-बूझकर ख़बरों को तोड़ते-मरोड़ते हैं। दूसरी, मकानों के किरायों के अधिस्थगन संबंधी आज्ञप्ति और तीसरी, मज़दूर मिलिशिया की स्थापना संबंधी। कई हुक्मनामे भी पढ़े गये; एक के द्वारा नगर दूमा को यह अधिकार दिया गया कि वह सभी ख़ाली मकानों और फ़्लैटों को अपने अधिकार में ले ले। दूसरा हुक्म यह था कि रेलवे स्टेशनों पर माल-गाड़ियों के डिब्बों का सामान उतारा जाये, ताकि आवश्यक वस्तुओं का शीघ्रतर वितरण हो सके और इंजनों और डिब्बों को, जिनकी बेहद जरूरत थी, दूसरी जगह काम के लिए ख़ाली किया जा सके...

दो घंटे बाद किसानों की सोवियतों की कार्यकारिणी समिति पूरे रूस में निम्नलिखित तार प्रसारित कर रही थी:

"किसानों की अखिल रूसी कांग्रेस के लिए संगठन-ब्यूरो" कहा जाने

वाला बोल्शेविकों का मनमाना संगठन किसानों की सभी सोवियतों को आमंत्रित कर रहा है कि वे अपने प्रतिनिधियों को पेत्रोग्राद में होने वाली कांग्रेस के लिए भेजें ...

किसानों के प्रतिनिधियों की सोवियतों की कार्यकारिणी समिति घोषणा करती है कि पहले ही की तरह आज भी उसका यह विचार है कि इस घड़ी प्रांतों से उन शक्तियों को हटा लेना ख़तरनाक होगा, जो संविधान सभा के चुनावों की तैयारी के लिए वहां ज़रूरी हैं, जिस सभा के द्वारा ही मज़दूर वर्ग तथा देश का कल्याण हो सकता है। हम किसानों की कांग्रेस के लिए निर्धारित तिथि की पुष्टि करते हैं – यह तिथि है **१३ दिसम्बर।**

दूमा के अंदर सर्वत्र उत्तेजना फैली हुई थी, अफ़सर आ-जा रहे थे और मेयर महोदय उद्धार समिति के नेताओं के साथ सलाह-मशविरा कर रहे थे। एक सभासद केरेन्स्की की घोषणा की एक प्रति लिये दौड़ा दौड़ा आया, जिसे सैकड़ों की तादाद में नेव्स्की मार्ग के ऊपर नीचे नीचे उड़ने वाले एक हवाई जहाज़ द्वारा गिराया गया था। घोषणा में सभी बाग़ियों और सरकशों को भयानक दंड देने की धमकी दी गई थी और सिपाहियों को हुक्म दिया गया था कि वे अपने हथियार डाल दें और फ़ौरन मार्स मैदान में इकट्ठे हों।

हमें बताया गया कि मंत्रि-सभापति ने त्सारस्कोये सेलो पर क़ब्ज़ा कर लिया है और वह पेत्रोग्राद से पांच मील दूर पहुंच चुके थे। वह कल ही – कुछ घंटों में ही – नगर में प्रवेश करेंगे। कहा गया कि उनके कज़्ज़ाकों के साथ जिन सोवियत टुकड़ियों का सामना हुआ, वे अस्थायी सरकार की ओर चली जा रही हैं। चेर्नोव बीच में कहीं पर थे, वह "तटस्थ" सैनिकों को लेकर एक सेना संगठित करने का प्रयास कर रहे थे, ताकि गृहयुद्ध को रोका जा सके।

दूमा में लोगों का कहना था कि शहर में गैरिसन की रेजीमेंटें बोल्शेविकों का साथ छोड़ रही थीं और स्मोल्नी को अभी से ख़ाली कर दिया गया था ... सरकार की पूरी मशीनरी ठप हो चुकी थी। राजकीय बैंक के कर्मचारियों ने स्मोल्नी के कमिसारों के तहत काम करने से इनकार

कर दिया था और वे उन्हें पैसा देने से इनकार कर रहे थे। सारे प्राइवेट बैंक बंद थे। मंत्रालयों में हड़ताल थी। इस समय भी दूमा की एक समिति उद्योगपतियों के भवनों का चक्कर लगा रही थी, वह हड़तालियों को वेतन देने के लिए एक कोष[2] जमा कर रही थी...

त्रोत्स्की ने विदेश मंत्रालय में जाकर क्लर्कों को आदेश दिया कि वे शांति संबंधी आज्ञप्ति का विदेशी भाषाओं में अनुवाद करें। अनुवाद करना तो दूर छः सौ कर्मचारियों ने अपने इस्तीफ़े उनके मुंह पर दे मारे... श्रम-मंत्री श्ल्याप्निकोव ने अपने मंत्रालय के सभी कर्मचारियों को आदेश दिया कि वे चौबीस घंटों के अंदर अपनी अपनी जगहों पर लौट आयें, नहीं तो उन्हें नौकरी से बर्ख़ास्त किया जायेगा और उनसे पेंशन पाने का हक़ भी छीन लिया जायेगा। दरबानों के सिवाय बाक़ी सबने इस आदेश को अनसुना कर दिया... विशेष खाद्य-संभरण समिति की कुछ शाखाओं ने बोल्शेविकों की अधीनता स्वीकार करने की अपेक्षा अपना काम बंद कर देना बेहतर समझा... ऊंची तनख़ाहों और काम करने के बेहतर हालात के लंबे-चौड़े वादों के बावजूद टेलीफ़ोन आपरेटरों ने सोवियत सदर दफ़्तर को लाइन देने से इनकार किया...

समाजवादी-क्रांतिकारी पार्टी ने इस हक़ में वोट दिया कि उन सभी सदस्यों को, जिन्होंने सोवियतों की कांग्रेस का परित्याग नहीं किया था और उन सभी लोगों को, जो विद्रोह में हिस्सा ले रहे थे, पार्टी से बाहर निकाल दिया जाये...

प्रांतों की ख़बरें: मोगिल्योव ने बोल्शेविकों की मुख़ालफ़त का एलान किया है। कीयेव में कज़्ज़ाकों ने सोवियतों का तख़्ता उलट दिया है और सभी विद्रोही नेताओं को गिरफ़्तार कर लिया है। लूगा की सोवियत और उसकी तीस हज़ार सिपाहियों की गैरिसन ने अस्थायी सरकार के प्रति अपनी निष्ठा की पुष्टि की है और पूरे रूस से अपील की है कि वह इस सरकार के गिर्द एकजुट हो। कलेदिन ने दोन प्रदेश में सभी सोवियतों तथा ट्रेड-यूनियनों को छिन्न-भिन्न कर दिया है और उनकी सेनायें उत्तर की ओर बढ़ रही हैं...

रेल मज़दूरों के एक प्रतिनिधि ने कहा: "कल हमने रूस के कोने कोने एक तार भेजा, जिसमें हमने यह मांग की कि राजनीतिक पार्टियों

के बीच युद्ध तत्काल बंद हो और इस बात का आग्रह प्रगट किया कि एक संयुक्त समाजवादी सरकार की स्थापना की जाये, नहीं तो हम कल रात से हड़ताल पर चले जायेंगे... सुबह इस प्रश्न का निबटारा करने के लिए सभी दलों की एक मीटिंग होगी। ऐसा लगता है कि बोल्शेविक समझौते के लिए उत्सुक हैं..."

"वे भला तब तक चल भी सकेंगे!" मोटे-ताज़े लाल टमाटर जैसे नगर इंजीनियर ने हंसते हुए कहा...

जब हम स्मोल्नी पहुंचे—ख़ाली होना तो दूर वहां और भी भीड़-भड़क्का था—झुंड के झुंड मज़दूर और सिपाही अंदर-बाहर दौड़ रहे थे और सभी जगह संतरियों की दोहरी चौकी तैनात थी। जब हम वहां पहुंचे, हमारी मुलाक़ात पूंजीवादी तथा "नरम" समाजवादी अख़बारों के रिपोर्टरों से हुई।

'वोल्या नरोदा' का एक रिपोर्टर चीख़ा, "उन्होंने हमें गर्दनियां देकर बाहर कर दिया! बोन्च-ब्रुयेविच नीचे प्रेस-ब्यूरो में तशरीफ़ ले आये और उन्होंने कहा कि हम चले जायें! कहा कि हम जासूस हैं!" वे सबके सब एक साथ बोलने लगे: "तौहीन! अंधेरगर्दी! प्रेस-स्वातंत्र्य का अपहरण!"

लॉबी में बड़ी बड़ी मेज़ों पर सैनिक क्रांतिकारी समिति की अपीलों, घोषणाओं और आदेशों के ढेर लगे थे। मज़दूर और सिपाही उनके भारी भारी बंडल उठाये, जिनके बोझ से वे दबे जा रहे थे, बाहर जा रहे थे। वहां मोटरें उनकी प्रतीक्षा कर रही थीं। एक बानगी यहां दी जाती है:

कठघरे में!

इस संकटकाल में, जिससे रूसी जन-साधारण गुज़र रहे हैं, मेन्शेविकों तथा उनके अनुयायियों ने और दक्षिणपंथी समाजवादी-क्रांतिकारियों ने मज़दूर वर्ग के साथ विश्वासघात किया है। उन्होंने कोर्नीलोव, केरेन्स्की और साविन्कोव की ओर स्थान ग्रहण किया है...

वे ग़द्दार केरेन्स्की के आदेशों को छाप रहे हैं और उस भगोड़े की काल्पनिक जीतों की बिल्कुल हास्यास्पद अफ़वाहें फैलाकर शहर में दहशत पैदा कर रहे हैं...

नागरिको। इन झूठी अफ़वाहों पर विश्वास मत कीजिये। कोई भी शक्ति जन-क्रांति को हरा नहीं सकती... केरेन्स्की और उनके अनुयायियों का एक ही भवितव्य है, उन्हें शीघ्र ही उचित दंड दिया जायेगा...

हम उन्हें कठघरे में खड़ा कर रहे हैं। हम उन्हें उन मज़दूरों सिपाहियों, मल्लाहों और किसानों की क्रोधाग्नि को समर्पित कर रहे हैं, जिन्हें वे पुरानी ज़ंजीरों में फिर से जकड़ना चाहते हैं। वे अपने शरीर से कभी भी जनता की घृणा तथा अवज्ञा का कलंक मिटा नहीं सकेंगे।

जनता से दग़ा करनेवाले इन ग़द्दारों को हज़ार लानतें और बददुआयें!

सैनिक क्रांतिकारी समिति का दफ़्तर एक और बड़ी जगह में—सबसे ऊपर की मंज़िल पर १७ नंबर के कमरे में—क़ायम हो गया था। लाल गार्ड दरवाज़े पर पहरा दे रहे थे। अंदर, रेलिंग के सामने जो थोड़ी सी जगह थी, वह सुंदर वेश-भूषा वाले व्यक्तियों से भरी थी, जो बाहर से चाहे जितने संभ्रांत हों, अंदर से ज़हर के बुझे थे। ये वे बुर्जुआ लोग थे, जो अपनी मोटरों के लिए परमिट या शहर से रवानगी के लिए पासपोर्ट चाहते थे। उनमें कितने ही विदेशी थे... बिल शातोव और पेटेर्स ड्यूटी दे रहे थे। उन्होंने अपना सारा काम छोड़कर हमें ताज़ा बुलेटिनें पढ़कर सुनायीं।

१७९ वीं रिज़र्व रेजीमेंट सर्वसम्मति से समर्थन जताती है। पुतीलोव-घाट के पांच हज़ार कुली नयी सरकार का अभिनंदन करते हैं। ट्रेड-यूनियनों की केंद्रीय समिति—उत्साहपूर्ण समर्थन। रेवेल की गैरिसन तथा स्क्वाड्रन ने सहयोग स्थापित करने के लिए और सैनिकों को भेजने के लिए सैनिक क्रांतिकारी समितियों का निर्वाचन किया है। प्स्कोव और मीन्स्क सैनिक क्रांतिकारी समितियों के अधिकार में हैं। त्सारीत्सिन, रोस्तोव-आन-दोन, प्यातिगोर्स्क, सेवास्तोपोल की सोवियतें अभिवादन-संदेश भेजती हैं... फ़िनलैंडी डिवीज़न, पांचवीं तथा बारहवीं सेनाओं की नयी समितियां वफ़ादारी का एलान करती हैं...

मास्को से कोई पक्की ख़बर नहीं मिली है। सैनिक क्रांतिकारी समिति के सैनिकों ने शहर के नाकों पर क़ब्ज़ा कर लिया है। क्रेमलिन में तैनात दो कंपनियां सोवियतों की ओर हो गयी हैं, परंतु शस्त्रागार कर्नल रियाब्त्सेव और उनके **युंकरों** के हाथ में है। सैनिक क्रांतिकारी समिति ने मज़दूरों को लैस करने के लिए हथियार मांगे और रियाब्त्सेव ने आज सुबह तक समिति के साथ बातचीत चलायी और फिर यकायक उन्होंने अल्टीमेटम की शक्ल में हुक्म दिया कि सोवियत सैनिक समर्पण करें और समिति को भंग किया जाये। वहां लड़ाई शुरू हो गयी है...

पेत्रोग्राद में सैनिक स्टाफ़ ने चूं भी नहीं की और स्मोल्नी के कमिसारों की आज्ञा का अविलंब पालन किया। **त्सेन्त्रोफ़्लोत** ने इनकार किया, लेकिन इस पर दिबेंको ने क्रोंश्तादत के मल्लाहों की एक कंपनी को लेकर चढ़ाई की, और बाल्टिक सागर तथा काला सागर के युद्धपोतों के समर्थन से एक नया **त्सेन्त्रोफ़्लोत** स्थापित किया गया...

इन सुखद समाचारों से जो आश्वासन उत्पन्न होता था, उसके बावजूद वातावरण में एक प्रकार की आशंका, भय और घबराहट की भावना व्याप्त थी। केरेन्स्की के कज़्ज़ाक तेज़ी से बढ़े आ रहे थे – उनके पास तोपख़ाना भी था। कारख़ाना समितियों के मंत्री स्क्रिप्निक ने, जिनके चेहरे पर चिंता की गहरी रेखायें थीं और रंग उड़ा हुआ था, मुझे विश्वास दिलाया कि केरेन्स्की के पास कज़्ज़ाकों का पूरा एक कोर है और फिर उन्होंने तेज़ होकर भैरव स्वर में कहा, "हम मरते दम तक उनसे लड़ेंगे!" पेत्रोव्स्की ने क्लांत भाव से हंसकर टीका की, "कल शायद हमें सोने को मिले – लंबी नींद सोने को!.." लाल दाढ़ी वाले लोज़ोव्स्की ने, जिनका चेहरा सूखा हुआ और गाल पिचके हुए थे, कहा, "हमारे लिए भला क्या उम्मीद हो सकती है? बिल्कुल अकेले... प्रशिक्षित सैनिकों के ख़िलाफ़ एक भीड़!"

पेत्रोग्राद से दक्षिण तथा दक्षिण-पश्चिम की ओर केरेन्स्की के सामने सोवियतों के पैर उखड़ गये थे। गातचिना, पाव्लोव्स्क, त्सारस्कोये सेलो की गैरिसनों में फूट पड़ गयी थी – आधे लोगों ने तटस्थ रहने के पक्ष में वोट दिये, और आधे, बग़ैर अफ़सरों के, पीछे राजधानी की ओर अस्त-व्यस्त भागे।

उधर सभा-कक्षों में बुलेटिनें चिपकाई जा रही थीं:

क्रास्नोये सेलो से, १० नवंबर, ८ बजे प्रातः।

सभी स्टाफ़ सेनापतियों, मुख्य सेनापतियों, सेनापतियों की, सर्वत्र, सबकी सूचना के लिए।

भूतपूर्व मंत्री केरेन्स्की ने जान-बूझकर सभी जगह सभी को इस आशय का एक झूठा तार भेजा है कि क्रांतिकारी पेत्रोग्राद के सैनिकों ने स्वेच्छा से हथियार डाल दिये हैं और भूतपूर्व सरकार, ग़द्दार सरकार की सेनाओं में शामिल हो गये हैं, कि सैनिक क्रांतिकारी समिति ने अपने सिपाहियों को पीछे हटने का आदेश दिया है। स्वतंत्र जनता की सेना पीठ नहीं दिखाती, न ही वह अपने घुटने टेकती है।

हमारे सिपाहियों ने गातचिना को इसलिए छोड़ा कि उनके और उनके गुमराह भाइयों—कज़्ज़ाकों—के बीच ख़ून-ख़राबा न होने पाये और इसलिए भी कि वे एक अधिक सुविधाजनक स्थिति को ग्रहण कर सकें, जो इस समय इतनी अधिक शक्तिशाली है कि अगर केरेन्स्की और उनके मुसल्लेह साथी अपनी सेनाओं को दस गुना बढ़ा सकें, तो भी चिंता की कोई बात नहीं है। हमारे सैनिकों का मनोबल ख़ूब अच्छा है।

पेत्रोग्राद में पूरी शांति है।

पेत्रोग्राद तथा पेत्रोग्राद के हलक़े के रक्षा-अध्यक्ष
लेफ़्टीनेंट-कर्नल मुराव्योव

जब हम सैनिक क्रांतिकारी समिति के दफ़्तर से रुख़सत हो रहे थे, अन्तोनोव हाथ में काग़ज़ का एक पुर्ज़ा लिये आये—उन्हें देखने से ऐसा लगता था, जैसे वह सीधे क़ब्र से उठे चले आ रहे हों।

"इसे रवाना करना है," उन्होंने कहा।

मज़दूरों के प्रतिनिधियों की सभी वार्ड-सोवियतों तथा कारख़ाना समितियों के नाम

आदेश

केरेन्स्की के कोर्नीलोवपंथी गिरोहों ने राजधानी के प्रवेशमार्गों के लिए ख़तरा पैदा कर दिया है। जनता के और उसकी उपलब्धियों के विरुद्ध प्रतिक्रांतिकारी प्रयास को निर्ममता से कुचल देने के लिए सभी आवश्यक आदेश जारी किये गये हैं।

क्रांति की सेना तथा लाल गार्ड को इस बात की अपेक्षा है कि मज़दूर तुरत उनकी ओर सहारे का हाथ बढ़ायें।

हम वार्ड-सोवियतों और कारख़ाना समितियों को आदेश देते हैं:

१) खाइयां खोदने, बैरिकेड तैयार करने, कंटीले तारों की बाड़ खड़ी करने के लिए जितने भी ज़्यादा मज़दूर भेजे जा सकें, भेजे जायें।

२) जहां भी इसके लिए कारख़ानों में काम बंद करना ज़रूरी हो, ऐसा अविलंब किया जाये।

३) जितने भी मामूली और कंटीले तार मिल सकें, उन्हें मुहैया किया जाये और खाइयां खोदने और बैरिकेड खड़ा करने के लिए जो औज़ार मिलें, उन्हें भी इकट्ठा किया जाये।

४) जितने भी अस्त्र-शस्त्र उपलब्ध हो सकें, ले लिये जायें।

५) कठोर से कठोर अनुशासन का पालन किया जाये और हर आदमी क्रांतिकारी सेना का समस्त साधनों से समर्थन करने के लिए अवश्य प्रस्तुत रहे।

मज़दूरों तथा सैनिकों के प्रतिनिधियों की पेत्रोग्राद सोवियत के सभापति

जन-कमिसार लेव त्रोत्स्की

सैनिक क्रान्तिकारी समिति के सभापति

मुख्य सेनापति पोद्वोइस्की

जब हम बाहर धुंध और कुहासे में निकले, नगर के चतुर्दिक् कारख़ानों के भोंपू बज रहे थे और उनकी परुष, कर्कश तथा व्याकुल ध्वनि एक प्रकार से आनेवाली घटनाओं का पूर्वाभास देती थी। दसियों हज़ार कमकर – मर्द और औरत – बाहर निकल पड़े थे। गुंजान बस्तियों और

नालों से दसियों हज़ार मटमैले और मैले-कुचैले लोग झुंड के झुंड टिड्डी-दलों की तरह निकल पड़े थे। लाल पेत्रोग्राद ख़तरे में था! कज़्ज़ाक आ रहे थे! दक्षिण और दक्षिण-पश्चिम की ओर ये लोग गंदी गलियों से होकर मोस्कोव्स्काया द्वार की ओर बढ़ रहे थे, बन्दूकें, फरसे-कुल्हाड़े, तार के बंडल लिये मर्द, औरतें और बच्चे, अपने काम करने के कपड़ों के ऊपर कारतूस की पेटियां डाले हुए... एक पूरा शहर इस तरह अपने आप बाहर निकल पड़ा हो, आज तक कभी भी ऐसा देखा नहीं गया! ऐसा लगता था, जैसे एक जन-समुद्र उमड़ पड़ा हो – सिपाहियों के दस्ते, तोपें, ट्रकें, छकड़ा-गाड़ियां, सब के सब उसी धारा में बहे जा रहे थे। क्रांतिकारी सर्वहारा वर्ग मज़दूरों और किसानों के जनतंत्र की राजधानी को अपनी छाती ठोंक कर बचाने पर तुला हुआ था!

स्मोल्नी भवन के फाटक के बाहर एक मोटर-गाड़ी खड़ी थी, जिसके मडगार्ड का सहारा लेकर बेढंगे ढीले-ढाले ओवरकोट की जेबों में हाथ डाले एक दुबला-पतला आदमी खड़ा था। उसकी लाल आंखों पर मोटा चश्मा चढ़ा था, जिसकी वजह से वे और भी बड़ी दिखायी देती थीं। वह बोलता था, तो सप्रयास जैसे उसके लिए बोलना एक कठिन परिश्रम हो। पास ही एक लंबा-तड़ंगा दढ़ियल मल्लाह, जिसकी आंखें किशोर बालक की तरह स्वच्छ और पारदर्शक थीं, बेचैनी से चहलक़दमी कर रहा था और एक बहुत बड़े नीले इस्पात के तमंचे से, जिसे वह अपने हाथ से क्षण भर के लिए भी अलग नहीं कर रहा था, अन्यमनस्क भाव से खिलवाड़ कर रहा था। ये अन्तोनोव और दिबेन्को थे।

कुछ सिपाही दो फ़ौजी साइकिलों को मोटर-गाड़ी के पायदान के साथ बांधने की कोशिश कर रहे थे, जिसपर ड्राइवर उग्र प्रतिवाद कर रहा था। गाड़ी के एनेमल पर खरोंच लग जायेगी, उसने कहा। यह सच है कि वह बोल्शेविक है और गाड़ी किसी पूंजीपति से ज़ब्त की हुई है। यह भी सच है कि साइकिलें अर्दलियों के इस्तेमाल के लिए थीं, फिर भी अपने पेशे में ड्राइवर को जो अभिमान था, वह इन साइकिलों से आहत हो रहा था... लिहाजा साइकिलों को छोड़ दिया गया...

युद्ध तथा नौसेना के जन-कमिसार क्रांतिकारी मोर्चे के – यह मोर्चा जहां भी हो – मुआइने के लिए जा रहे थे। क्या हम भी साथ जा सकते

हैं? नहीं, क़तई नहीं। मोटर में सिर्फ़ पांच आदमियों के लिए जगह है, दो कमिसार, दो अर्दली, एक ड्राइवर। ताहम मेरे परिचित एक रूसी सज्जन, जिन्हें मैं त्रुसीश्का कहूंगा, गाड़ी के अंदर चुपचाप बैठ गये और कोई भी तर्क उन्हें हिला न सका – वह वहां मज़े से बैठे रहे...

त्रुसीश्का ने इस यात्रा की जो कहानी मुझे सुनायी, मुझे उसमें शक करने की कोई वजह दिखायी नहीं देती। जब वे सुवोरोव्स्की मार्ग से जा रहे थे, किसी ने खाने-पीने की बात उठायी। हो सकता है उन्हें एक ऐसे इलाक़े में तीन-चार दिन बिताना पड़े, जहां रसद-पानी का माकूल इंतज़ाम न हो। गाड़ी रोक ली गयी। लेकिन पैसे? युद्ध-कमिसार ने अपनी जेबों को उलट डाला – उनमें एक फूटी कौड़ी भी न मिली। नौसेना-कमिसार भी बिल्कुल दिवालिया निकले। ड्राइवर के पास भी एक टका न था। लिहाज़ा त्रुसीश्का ने ही खाने-पीने का सामान ख़रीदा...

जैसे ही वे नेव्स्की मार्ग में मुड़े, एक टायर बोल गया।

"अब क्या किया जाये?" अन्तोनोव ने पूछा।

"दूसरी गाड़ी ज़ब्त कर लो!" दिबेन्को ने अपना रिवाल्वर घुमाते हुए सुझाव दिया। अन्तोनोव ने सड़क के बीचोबीच खड़े होकर उधर से गुज़रने वाली एक गाड़ी को रुकने का इशारा किया।

"मुझे यह गाड़ी चाहिए," अन्तोनोव ने कहा।

"आपको यह गाड़ी नहीं मिलेगी," सिपाही ने जवाब दिया।

"तुम जानते हो, मैं कौन हूं?" अन्तोनोव ने अपनी जेब से एक पर्चा निकालते हुए कहा, जिस पर लिखा हुआ था कि उन्हें रूसी जनतंत्र की सभी सेनाओं का मुख्य सेनापति नियुक्त किया जाता है और यह कि हर आदमी को बिना चूं भी किये उनकी आज्ञा का पालन करना चाहिए।

"आप मुजस्सम शैतान भी हों, तो क्या हुआ! मेरे ठेंगे से!" सिपाही ने गर्म होकर कहा। "यह गाड़ी पहली मशीनगन रेजीमेंट की है और हम उसमें गोला-बारूद ले जा रहे हैं। आप हरगिज़ इसे पा नहीं सकते..."

उसी वक़्त एक पुरानी भुरकुस टैक्सी-गाड़ी के आ जाने से यह मुश्किल हल हो गई। टैक्सी के बोनेट पर इतालवी झंडा लगा हुआ था (अशान्ति-काल में प्राइवेट गाड़ियां विदेशी दूतावासों के नाम रजिस्टर की जाती थीं,

ताकि वे ज़ब्ती से महफ़ूज़ रहें)। गाड़ी के अंदर से क़ीमती फर-कोट पहने एक मोटे-ताज़े सज्जन बिला मुलाहज़ा नीचे उतार दिये गये और उसमें सवार होकर निरीक्षण-दल आगे बढ़ा।

वहां से क़रीब दस मील दूर नार्वस्काया ज़ास्तावा पहुंचकर अन्तोनोव ने लाल गार्डों के कमांडर को तलब किया। उन्हें शहर के बिल्कुल एक छोर पर ले जाया गया, जहां कई सौ मज़दूर खाइयां खोदकर कज़्ज़ाकों के आने का इंतज़ार कर रहे थे।

"यहां सब ठीक-ठाक है, कामरेड?" अन्तोनोव ने पूछा।

"सब चाक-चौबन्द है, कामरेड," कमांडर ने जवाब दिया। "सैनिकों में बड़ा उत्साह है... बस एक चीज़ की कसर है—हमारे पास गोला-बारूद नहीं है..."

"स्मोल्नी में दो अरब कारतूस पड़े हुए हैं," अन्तोनोव ने कहा। "ठहरिये, मैं आपको आर्डर लिखे देता हूं।" उन्होंने अपनी जेबों में हाथ डाला। "क्या किसी के पास काग़ज़ है?"

काग़ज़ न दिबेन्को के पास था और न अर्दलियों के पास। लाचारी दर्जे त्रुसीश्का को अपनी नोटबुक बढ़ानी पड़ी।

"कम्बख़्त, मेरे पास पेंसिल भी नहीं है!" अन्तोनोव ने खीझकर कहा। "किसी के पास पेंसिल है?" कहने की ज़रूरत नहीं, कि अगर इस मजमे में किसी के पास पेंसिल थी, तो त्रुसीश्का के पास...

हम लोग, जो पीछे रह गये थे, त्सारस्कोये सेलो स्टेशन की ओर बढ़े। जब हम नेव्स्की मार्ग से जा रहे थे, हमने देखा कि लाल गार्ड मार्च कर रहे हैं। सबके सब हथियारों से लैस थे, गो कुछ के पास संगीनें थीं और कुछ के पास नहीं। जैसा जाड़ों में होता है, दिन के तीसरे पहर ही शाम का झुटपुटा होने लगा था। ये गार्ड चार चार की बेतरतीब क़तार में ठंड में, पानी और कीचड़ में सीना ताने मार्च कर रहे थे, उनके साथ न बैंडबाजा था, न भेरी-तुरही। एक लाल झंडा, जिस पर सुनहरे पर भोंडे अक्षरों में अंकित था, "शांति! भूमि!" उनके ऊपर लहरा रहा था। ये सारे गार्ड जवानी में पैर रख ही रहे थे। उनके चेहरों पर ऐसा भाव था कि वे मर-मिटने के लिए तैयार हैं... पटरी पर जमा भीड़ उन्हें कुछ

दहशत और कुछ हिक़ारत से देख रही थी। वह ख़ामोश थी, मगर उसकी ख़ामोशी में नफ़रत का जज़्बा था।

रेलवे स्टेशन पर किसी को भी इस बात का पता न था कि केरेन्स्की कहां पर हैं, या लड़ाई का मोर्चा कहां पर है। रेल-गाड़ियां त्सारस्कोये सेलो से आगे नहीं जा रही थीं ...

हमारे डिब्बे में देहातियों की भरमार थी, जो सामान के बंडल लादे और शाम के अख़बार लिये घर लौट रहे थे। बातचीत का एक ही विषय था—बोल्शेविकों का विद्रोह। लेकिन इस बातचीत के अलावा ऐसी कोई बात नहीं थी, जिससे यह महसूस हो कि गृहयुद्ध विशाल रूस को दो खंडों में बांट रहा है, या यह कि रेल-गाड़ी सीधे लड़ाई के इलाक़े में जा रही है। खिड़की से बाहर तेज़ी से घिरते हुए अंधेरे में हम झुंड के झुंड सिपाहियों को देख सकते थे, जो कीचड़-भरी सड़क से शहर की ओर जा रहे थे और जो आपस में बहस करते हुए अपने हाथों को झटका दे रहे थे। हमने बड़े बड़े अलावों की रोशनी में देखा, सैनिकों से खचाखच भरी एक माल-गाड़ी साइडिंग में खड़ी थी। युद्ध के बस ये ही लक्षण थे। हमारे पीछे क्षितिज-रेखा पर शहर की बत्तियों का प्रकाश मद्धिम होता हुआ रात के अंधेरे में खो गया था। दूर-परिसर में एक ट्राम-गाड़ी रेंग रही थी ...

त्सारस्कोये सेलो स्टेशन शान्त था, लेकिन जहां-तहां सिपाहियों के छोटे-छोटे झुंड खड़े थे, वे आपस में धीरे धीरे बात कर रहे थे और चिंतित भाव से गातचिना की ओर रेल की ख़ाली पटरी पर निगाह दौड़ा रहे थे। कुछ सिपाहियों से मैंने पूछा कि वे किस तरफ़ हैं। एक ने जवाब दिया, "भई, हम ठीक ठीक नहीं जानते कि कौन सही है, कौन ग़लत .... इसमें शक नहीं कि केरेन्स्की उकसावेबाज़ है, लेकिन रूसी रूसियों पर गोली चलायें, इसे हम अच्छा नहीं समझते।"

स्टेशन कमांडेंट के दफ़्तर में एक लहीम-शहीम, हंसमुख दढ़ियल सिपाही, अदना सिपाही, रेजीमेंट-समिति का लाल बिल्ला लगाये खड़ा था। स्मोल्नी से हमें जो प्रत्यय-पत्र मिला था, उसका तुरंत असर हुआ। स्पष्टतः यह सिपाही सोवियतों का पक्षधर था, परंतु वह उलझन में पड़ा हुआ था।

"अभी दो घंटा पहले लाल गार्ड यहां थे, लेकिन फिर वे चले

था। एक कमिसार सुबह यहां तशरीफ़ ले आये थे, लेकिन जब कज़्ज़ाक पहुंचे, तो वह वापिस पेत्रोग्राद चले गये।''

''तो क्या कज़्ज़ाक यहां मौजूद हैं?''

उसने अफ़सोस के साथ सिर हिला कर संकेत किया कि हां, हैं। ''यहां लड़ाई हुई है। कज़्ज़ाक तड़के ही यहां पहुंचे। उन्होंने हमारे दो-तीन सौ आदमियों को पकड़ लिया और क़रीब पच्चीस का सफ़ाया कर डाला।''

''कज़्ज़ाक कहां पर हैं?''

''भई, वे यहां तक पहुंचे नहीं। मैं ठीक नहीं जानता कि वे कहां हैं। शायद उधर की ओर...'' उसने अपने हाथ से पश्चिम की ओर अस्पष्ट संकेत करते हुए कहा।

हमने स्टेशन के रेस्तोरां में खाना खाया—खाना बड़ा अच्छा था, पेत्रोग्राद में जैसा खाना मिल सकता था, उससे बेहतर और सस्ता भी। हमारे पास ही एक फ़्रांसीसी अफ़सर बैठा था, जो अभी अभी गातचिना से पैदल यहां पहुंचा था। गातचिना में पूरी शांति है, उसने बताया। शहर केरेन्स्की के हाथ में है। ''ये रूसी भी ख़ूब हैं!'' उसने अपनी बात जारी रखते हुए कहा। ''वे अपना सानी नहीं रखते! अच्छा गृहयुद्ध है यह! इसमें युद्ध नहीं है, बाक़ी सब कुछ है!''

हम शहर की ओर चल दिये। ऐन स्टेशन के फाटक पर दो सिपाही संगीन लिये खड़े थे, और उनके चारों ओर क़रीब एक सौ व्यापारियों, सरकारी कर्मचारियों और विद्यार्थियों की भीड़ थी, जो उन पर तर्कों और शब्दबाणों की धुआंधार बौछार कर रहे थे। उन बच्चों की तरह जिन्हें बेवजह डांटा गया हो, ये सिपाही आकुल और आहत भाव से उनकी ओर देख रहे थे।

विद्यार्थियों की वर्दी पहने लम्बे क़द का एक नौजवान, जिसके चेहरे पर एक प्रकार का उद्धत भाव था, सबसे आगे बढ़कर चोट कर रहा था।

उसने सिपाही से कहा, ''मेरा ख़्याल है आप इस बात को समझते हैं कि अपने ही भाइयों के ख़िलाफ़ हथियार उठाकर आप अपने को हत्यारों और गद्दारों के हाथ का खिलौना बना रहे हैं?''

''भाई, आप नहीं समझते,'' सिपाही ने गंभीरता से उत्तर

दिया। “देखिये न, समाज के दो वर्ग हैं – सर्वहारा और पूंजीपति। हम ...”

“मैं इन वाहियात बातों को बख़ूबी जानता हूं!” विद्यार्थी ने ढिठाई से उसकी बात काट कर कहा। “आप जैसे कुछ मूढ़, गंवार किसानों ने किसी को चार नारे लगाते हुए सुन लिया और बस लगे आप लोग तोतों की तरह रट लगाने। उनका मतलब क्या है, यह आप ख़ाक-पत्थर कुछ नहीं समझते!” लोग उसकी बात पर हंस पड़े। “मैं मार्क्सवादी विद्यार्थी हूं, और मैं आपको बताता हूं कि आप जिस चीज़ के लिये लड़ रहे हैं वह क़तई समाजवाद नहीं है। वह सरासर अराजकता है, जिससे बस जर्मनों का उल्लू सीधा होता है!”

“जी हां, मैं जानता हूं,” सिपाही ने जवाब दिया और उसके माथे पर पसीने की बूंदें चमक रही थीं। “मैं सहज ही देख सकता हूं कि आप पढ़े-लिखे आदमी हैं और मैं ठहरा सीधा-सादा आदमी। फिर भी मुझे ऐसा लगता है कि ...”

विद्यार्थी ने फिर बड़ी हिक़ारत से उसकी बात काटते हुए कहा, “मेरा ख़्याल है आप समझते हैं, लेनिन सचमुच सर्वहारा वर्ग के बड़े भारी दोस्त हैं?”

“हां, मैं समझता हूं,” सिपाही ने आहत भाव से उत्तर दिया।

“तो मेरे दोस्त, क्या आप जानते हैं कि लेनिन को एक बंद गाड़ी में जर्मनी होकर यहां भेजा गया था? क्या आप जानते हैं कि लेनिन ने जर्मनों से पैसा लिया है?”

“भई, मैं इन सब बातों के बारे में कुछ भी नहीं जानता,” सिपाही ने हठपूर्वक कहा, “लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि लेनिन वही बात कहते हैं, जो मैं और मेरे जैसे सभी सीधे-सादे आदमी सुनना पसंद करते हैं। अब यही लीजिये, समाज के अंदर दो वर्ग हैं, पूंजीपति और सर्वहारा...”

“आप हैं बिल्कुल सिड़ी! आपको मालूम है, मेरे दोस्त, कि मैंने क्रांतिकारी कार्रवाइयों के लिये श्लिसेलबुर्ग में दो साल काटे हैं। उस समय, जब आप क्रांतिकारियों पर गोली चला रहे थे और अलाप रहे थे, 'ईश्वर ज़ार को बचाये!' मेरा नाम है वासीली गेओर्गियेविच पानिन। क्या आपने कभी भी मेरे बारे में नहीं सुना?”

"मुझे अफ़सोस है, मैंने कभी नहीं सुना," सिपाही ने ख़ाकसारी से जवाब दिया। "लेकिन भाई, मैं कोई पढ़ा-लिखा आदमी थोड़े ही हूं। आप शायद बहुत बड़े हीरो हैं।"

"हूं ही," विद्यार्थी ने विश्वासपूर्ण भाव से कहा। "और मैं बोल्शेविकों के बिल्कुल ख़िलाफ़ हूं, जो रूस को और हमारी स्वतंत्र क्रांति को चौपट कर रहे हैं। इसका आपके पास क्या जवाब है?"

सिपाही ने अपना माथा खुजलाया। "मेरे पास इसका कोई जवाब नहीं है," उसने कहा। सोचने के कष्ट से उसका मुंह बिगड़ गया था। "मुझे तो बात बिल्कुल सीधी-सादी मालूम होती है, लेकिन... यह बात ज़रूर है कि मैं बहुत पढ़ा-लिखा नहीं हूं। फिर भी मुझे लगता है कि दो ही वर्ग हैं, सर्वहारा और पूंजीपति..."

"आपने फिर उसी बेहूदा फारमूले को रटना शुरू कर दिया!" विद्यार्थी ने तेज़ लहजे में कहा।

"...दो ही वर्ग हैं," सिपाही अपनी बात पर अड़ा रहा। "और जो भी एक ओर नहीं है, वह दूसरी ओर है..."

हम वहां से निकल कर सड़क पर आये, जहां इक्की-दुक्की बत्तियां ही दूर दूर पर जल रही थीं और शायद ही कोई आ-जा रहा था। वहां एक निस्तब्ध, भयावह शांति थी – जैसे वह स्वर्ग और नरक के बीच की एक पापमोचन अवांतर भूमि हो, राजनीतिक दृष्टि से लावारिस भूमि। केवल नाइयों की दूकानों में ख़ूब रोशनी और भीड़-भाड़ थी और सार्वजनिक स्नानागार के सामने एक लाइन लग गयी थी, क्योंकि यह शनिवार की शाम थी, जब पूरा रूस नहाता है और तेल-फुलेल लगाता है। मुझे इस बात से रत्ती भर भी संदेह नहीं है कि जिन स्थानों में ये संस्कार संपन्न किये जाते थे, वहां सोवियत सैनिक और कज़्ज़ाक एक-दूसरे के साथ कंधे रगड़ रहे थे।

हम शाही बाग़ के जितना ही पास पहुंचते गये, सड़कें उतनी ही ज़्यादा सूनी नज़र आती गयीं। एक डरे-सहमे पादरी ने हाथ से सोवियत [illegible] की ओर इशारा किया और जल्दी से आगे बढ़ गया। बाग़ के सामने जो शाही महल थे, उन्हीं के एक खंड में यह दफ़्तर था। उसका दरवाज़ा बंद था और [illegible] में रोशनी न थी। एक सिपाही पतलून

की जेबों में हाथ डाले घूम रहा था, उसने हमें सिर से पैर तक संदेह की दृष्टि से देखा। "दो दिन पहले सोवियत दफ़्तर यहां से चला गया," उसने बताया। "कहां?" उसने अपने कंधे सिकोड़ कर जवाब दिया, "न्ये ज़्नायू" (मुझे नहीं मालूम)।

ज़रा दूर आगे बढ़कर एक बड़ी इमारत थी, रोशनी से जगमग। अंदर से खटाखट हथौड़ा चलने की आवाज़ आ रही थी। हम असमंजस में खड़े थे कि इतने में एक सिपाही और एक मल्लाह हाथ में हाथ दिये उधर निकले। स्मोल्नी का अपना पास दिखाते हुए मैंने उनसे पूछा, "आप क्या सोवियतों की ओर हैं?" उन्होंने जवाब नहीं दिया, बल्कि घबराये से एक-दूसरे का मुंह देखने लगे।

मल्लाह ने इमारत की ओर इशारा करके पूछा, "अंदर क्या हो रहा है?"

"मैं नहीं जानता।"

सिपाही ने हिचकिचाते हुए अपना हाथ बढ़ाकर एक पल्ला ज़रा सा खोला। अंदर एक बड़े हॉल में, जिसे झंडियों और बंदनवार से सजाया गया था, कुर्सियों की क़तारें लगाई जा रही थीं और एक स्टेज बनाया जा रहा था।

एक मोटी-ताज़ी औरत, जिसके हाथ में हथौड़ा था और मुंह में कीलें दबी हुई थीं, बाहर निकली। "आप क्या चाहते हैं?" उसने पूछा।

"आज क्या यहां कोई शो होने जा रहा है?" मल्लाह ने भर्राई हुई आवाज़ में पूछा।

"इतवार की रात को यहां प्राइवेट शो होगा – ड्रामे होंगे," औरत ने सख़्त लहजे में जवाब दिया, "इस वक़्त यहां से चले जाओ।"

हमने सिपाही और मल्लाह से बातचीत करने की कोशिश की, लेकिन वे परेशान और घबराये हुए लगते थे, और हमसे बात न करके वे अंधेरे में ग़ायब हो गये।

दूर दूर तक फैले अंधेरे बाग़ों के किनारे किनारे टहलते हुए हम शाही महलों की ओर बढ़े। इन बाग़ों के विचित्र मण्डप और सजावटी पुल रात मे धुंधले धुंधले से दिखाई दे रहे थे और उनके फ़व्वारों से पानी के छींटे हलके हलके छूट रहे थे। एक जगह, जहां एक नक़ली गुफा में एक अजीबोगरीब आहनी हंस के मुंह से बराबर पानी की धार निकल रही थी,

हमें एकाएक महसूस हुआ कि कोई हमें देख रहा है। सिर ऊपर उठाते ही हमारी निगाहें आधे दर्जन लम्बे-तड़ंगे हथियारबंद सिपाहियों की शक और गुस्सा भरी निगाहों से मिलीं – वे एक हरे-भरे लान में खड़े नीचे हमारी ओर कड़ी नज़र से देख रहे थे। मैं ऊपर चढ़ कर उनके पास चला गया। "आप लोग कौन हैं?" मैंने पूछा।

"हम यहां की गारद के सिपाही हैं," एक ने जवाब दिया। वे सब बड़े उदास और खिन्न दिखाई दे रहे थे, और वास्तव में हफ़्तों से चलने वाली रात-दिन की बहस और तक़रार से वे बुरी तरह ऊब चुके थे।

"आप केरेन्स्की के सिपाही हैं या सोवियतों के?"

वे क्षण भर व्यग्र भाव से एक-दूसरे का मुंह देखते रहे, एक लमहे तक ख़ामोशी रही और फिर उसी सिपाही ने जवाब दिया, "हम तटस्थ हैं।"

सदर मुकाम का पता पूछते हुए हम लोग विशाल येकातेरीना प्रासाद के तोरण-द्वार से निकल कर प्रासाद के प्रांगण में आ गये। प्रासाद के एक गोलाकार खंड के एक दरवाज़े के बाहर खड़े संतरी ने बताया कि कमांडेंट अंदर तशरीफ़ रखते हैं।

एक जार्जियाई ढंग के बने ख़ूबसूरत काफ़ूरी कमरे में, जिसे एक दोहरे आतिशदान ने दो ग़ैर-बराबर हिस्सों में बांट दिया था, अफ़सरों की एक मंडली खड़ी बातचीत कर रही थी। उनके चेहरों का रंग उड़ा हुआ था और वे परेशान नज़र आते थे। ज़ाहिर था कि वे कई रातों से सोये नहीं थे। उनमें एक अधेड़ सा आदमी था, जिसकी दाढ़ी के बाल सफ़ेद हो चुके थे और जिसकी वर्दी पर तमग़ों की भरमार थी। हमें बताया गया कि वह कर्नल है, और हमने उसे अपने बोल्शेविकों के दिये कागज़ात दिखाये।

उसने अचकचा कर नर्मी से पूछा, "आप लोग यहां ज़िन्दा पहुंच कैसे गये? इस वक़्त तो सड़कों पर निकलना अपनी जान को जोखिम में डालना है। त्सारस्कोये सेलो में बेतरह राजनीतिक उत्तेजना फैली हुई है। आज सुबह ही यहां लड़ाई हुई है और कल सुबह फिर होने वाली है। आज रात को केरेन्स्की शहर में दाखिल होने वाले हैं।"

"कज़ाक सिपाही किस जगह हैं?"

"यहां क़रीब एक मील दूर," उसने हाथ का इशारा किया।

"और आप उनके हाथों से शहर को बचायेंगे?"

"ओ, नहीं भाई, नहीं," उसने मुस्करा कर कहा। "हम केरेन्स्की के लिये ही तो शहर पर क़ब्ज़ा किये हुए हैं।" यह सुनना नहीं था कि हमारा दिल बैठ गया, क्योंकि हमारे पासों में साफ़ साफ़ लिखा हुआ था कि हम पक्के क्रांतिकारी हैं। कर्नल ने खांस कर कहा, "आपके इन पासों के बारे में मैं कहना चाहता हूं कि अगर कहीं आप पकड़े गये, तो आपकी जान पर आ बनेगी। इसलिये अगर आप लड़ाई देखना ही चाहते हैं, तो मैं आदेश दूंगा कि अफ़सरों के मेस में आपको कमरे दिये जायें और अगर आप सुबह सात बजे फिर यहां आयें, तो मैं आपको नये पास दूंगा।"

"इसका मतलब है आप केरेन्स्की की ओर हैं," हमने कहा।

कर्नल ने हिचकिचाते हुए जवाब दिया, "ठीक केरेन्स्की **की ओर** तो नहीं। बात यह है कि गैरिसन के अधिकांश सिपाही बोल्शेविक हैं और आज लड़ाई के बाद वे सब पेत्रोग्राद की ओर चले गये और अपने साथ तोपख़ाना भी लेते गये। आप चाहें तो कह सकते हैं कि केरेन्स्की की ओर एक भी **सिपाही** नहीं है। लेकिन यह बात ज़रूर है कि कुछ सिपाही किसी भी सूरत में लड़ना नहीं चाहते। **अफ़सर** जितने हैं सब केरेन्स्की की सेना में शामिल हो गये हैं, या बस चम्पत हो गये हैं। हूं, आप देखते हैं न, हम कितनी कठिन स्थिति में हैं ..."

हमें इस बात का यक़ीन नहीं था कि यहां सचमुच लड़ाई होगी ... कर्नल ने सौजन्य से अपने अर्दली को स्टेशन तक हमारे साथ कर दिया। अर्दली दक्षिण में बेसाराबिया का रहने वाला था और उसके मां-बाप फ़्रांसीसी थे, जो आकर बेसाराबिया में बस गये थे। रास्ते भर वह यही कहता रहा, "मुझे न ख़तरे की परवाह है, न मुसीबतों की। मुझे अगर फ़िक्र है, तो सिर्फ़ इस बात की कि मुझे अपनी मां से जुदा हुए इतने दिन – पूरे तीन साल – हो गये ..."

जब हमारी गाड़ी ठंड और अंधेरे में पेत्रोग्राद की ओर भागी जा रही थी, मैंने खिड़की से बाहर झांका और मुझे अलावों की रोशनी में ज़ोर ज़ोर से हाथ हिला कर बात करते हुए, दल के दल सिपाहियों की और चौराहों पर एक साथ ठहरी हुई झुंड की झुंड बख़्तरबंद गाड़ियों की भी झलक मिली, जिनके ड्राइवर गाड़ियों की टरेट से गर्दन निकाल कर एक-दूसरे को आवाज़ें दे रहे थे ...

उस अशान्त, क्षुब्ध रात्रि में, उजाड़ मैदानों में उलझन में पड़े नेतृत्वहीन सिपाहियों और लाल गार्डों के बदहवास झुंड एक दूसरे से टकराते घूम रहे थे। सैनिक क्रांतिकारी समिति के कमिसार एक दल से दूसरे दल के पास दौड़ रहे थे और किसी प्रकार नगर की रक्षा संगठित करने का प्रयास कर रहे थे।

वापिस शहर पहुंच कर हमने देखा, नेव्स्की मार्ग पर उत्तेजित लोगों की भीड़ उमड़ रही थी – कुछ लोग गोल बांधे ऊपर की ओर जा रहे थे, तो कुछ नीचे आ रहे थे। हवा में सनसनी थी। वार्सा रेलवे स्टेशन से दूर कहीं गोलाबारी होने की आवाज़ सुनी जा सकती थी। **युंकर** स्कूलों में बड़ी सरगर्मी थी। दूमा के सदस्य एक बारिक से दूसरी बारिक जा रहे थे, वे सिपाहियों के साथ बहस करते, उन्हें समझाते-बुझाते और बोल्शेविक हिंसा की भयानक कथायें सुनाते – शिशिर प्रासाद में **युंकरों** का क़त्ले-आम, महिला सैनिकों के साथ बलात्कार, दूमा-भवन के सामने एक लड़की पर गोली का चलाया जाना, शाहज़ादा तुमानोव की हत्या... दूमा-भवन के अलेक्सान्द्र हॉल में उद्धार समिति का विशेष अधिवेशन हो रहा था। कमिसार दौड़-भाग रहे थे, कोई लपका हुआ चला आ रहा था, तो कोई जा रहा था... स्मोल्नी से जिन पत्रकारों को निकाल दिया गया था, वे यहां मौजूद थे और बड़े जोश में थे। त्सारस्कोये सेलो के हालात के बारे में हमने उन्हें जो रिपोर्ट दी, उस पर उन्हें एतबार न आया। खूब! सभी जानते हैं कि त्सारस्कोये सेलो केरेन्स्की के हाथ में है और अब कज़्ज़ाक सिपाही पूल्कोवो में पहुंच गये हैं। सबेरे रेलवे स्टेशन पर केरेन्स्की की अगवानी के लिये एक समिति का निर्वाचन किया जा रहा था...

एक पत्रकार ने कड़ी ताक़ीद करते हुए कि किसी के कान में इस बात की भनक न पड़े, मुझे गुप-चुप बताया कि आज आधी रात को प्रतिक्रांति शुरू होने वाली है। उसने मुझे दो घोषणायें दिखायीं – एक में, जो गोत्स और पोल्कोवनिकोव के दस्तख़त से जारी की गयी थी, **युंकर** स्कूलों, अस्पतालों में स्वास्थ्यलाभ करते हुए सिपाहियों और सेंट जार्ज के शूरवीरों को आदेश दिया गया था कि वे लड़ाई के लिए तैयार हो जायें और उद्धार समिति के आदेशों की प्रतीक्षा करें। दूसरी, स्वयं उद्धार समिति द्वारा जारी की गयी घोषणा में लिखा था :

पेत्रोग्राद की आबादी के नाम !

साथियो, मज़दूरो, सिपाहियो तथा क्रांतिकारी पेत्रोग्राद के नागरिको !

बोल्शेविक लोग जहां मोर्चे पर शांति के लिए अपील कर रहे हैं, वहीं पिछाये में गृहयुद्ध भड़का रहे हैं।

उनकी भड़काने वाली अपीलों पर कान मत दीजिये !

खाइयां मत खोदिये !

ग़द्दारों के बैरिकेडों का नाश हो !

अपने हथियार डाल दीजिये !

सिपाहियो, अपनी बारिकों में वापस चले जाइये !

पेत्रोग्राद में जो लड़ाई शुरू हुई है, उसका मतलब है क्रांति की मौत !

स्वतंत्रता, भूमि तथा शांति के नाम पर देश तथा क्रांति की उद्धार समिति के गिर्द एकजुट होइये !

जब हम दूमा से लौट रहे थे, हमने देखा लाल गार्डों की एक कंपनी अंधेरी सूनी सड़क पर मार्च करती हुई आ रही है – उनके मुंह पर एक कठोर भाव था, और वे लड़ने-मरने के लिए तैयार थे। वे एक दर्जन क़ैदियों को साथ लिये जा रहे थे – ये कज़्ज़ाक-परिषद् की स्थानीय शाखा के सदस्य थे, जिन्हें अपने सदर दफ़्तर में प्रतिक्रांतिकारी षड्यंत्र रचते हुए रंगे हाथों पकड़ा गया था ...

एक सिपाही, जिसके साथ एक वर्तन में लेई लिये एक छोटा सा लड़का था, एक बड़ा सा भड़कीला पोस्टर चिपका रहा था :

वर्तमान आदेश द्वारा यह एलान किया जाता है कि पेत्रोग्राद शहर और शहर के आस-पास के इलाक़े मुहासिरे की स्थिति में हैं। जब तक आगे और आदेश न दिये जायें, सड़कों पर और सामान्यतः खुली जगहों में सभाओं और जमावड़ों की मनाही की जाती है।

सैनिक क्रान्तिकारी समिति के अध्यक्ष
न० पोद्वोइस्की

जब हम घर लौट रहे थे, हवा में तरह तरह की आवाज़ें गूंज रही थी – मोटर का भोंपू, चीखें, दूर कहीं गोली छूटने की आवाज़। शहर जाग रहा था – क्षुब्ध और बेचैन।

सवेरे तड़के **युंकरों** की एक कंपनी सेम्योनोव्स्की रेजीमेंट के सिपाहियों का वेश धारण कर टेलीफ़ोन एक्सचेंज पर ठीक पहरा बदलने के वक़्त आयी। उन्होंने बोल्शेविक संकेत-शब्द दिया और बग़ैर किसी तरह का शक पैदा किये एक्सचेंज पर क़ब्ज़ा कर लिया। ज़रा देर बाद अन्तोनोव मुआयने के अपने दौरे के सिलसिले में वहां आये। उन्हें गिरफ़्तार कर के एक छोटी सी कोठरी में डाल दिया गया। जब कुमक आयी, उसका गोलियों की बौछार से स्वागत किया गया। कई सिपाही मारे गये।

प्रतिक्रांति शुरू हो गयी थी...

आठवां अध्याय

प्रतिक्रान्ति

दूसरे दिन इतवार पड़ता था और तारीख़ ग्यारह। कज़्ज़ाकों ने सुबह ही त्सारस्कोये सेलो में प्रवेश किया – केरेन्स्की[1] स्वयं एक सफ़ेद घोड़े पर सवार थे। उनके स्वागत में गिरजाघरों के घंटे टनटना रहे थे। शहर के बाहर एक छोटी सी पहाड़ी की चोटी से सुनहरी मीनारें और रंग-बिरंगे गुंबद देखे जा सकते थे, एक बीहड़ मैदान में दूर दूर तक बेतरतीब फैली हुई राजधानी की धुंधली-धुंधली आकृति नज़र आ रही थी। उससे और दूर फ़िनलैंड की खाड़ी का इस्पाती रंग झलक रहा था।

लड़ाई तो नहीं हुई, लेकिन केरेन्स्की ने एक भयंकर भूल की। सात बजे सुबह उन्होंने दूसरी त्सारस्कोये सेलो राइफ़ल्स को संदेश भेजा कि वे अपने हथियार डाल दें। सिपाहियों ने जवाब दिया कि वे तटस्थ रहेंगे, लेकिन हथियार नहीं डालेंगे। केरेन्स्की ने उन्हें इस हुक्म की तामील के लिए दस मिनट का वक़्त दिया। सिपाहियों का ग़ुस्सा भड़क उठा। आठ महीनों से उन्होंने अपनी समिति को छोड़ कर किसी के हुक्म की तामील नहीं की थी और अब फिर वही ज़ारशाही के ज़माने का रवैया... कुछ मिनट ही बीते होंगे कि कज़्ज़ाक तोपख़ाने ने बारिक पर गोलाबारी शुरू कर दी। आठ आदमी मारे गये। उस घड़ी से त्सारस्कोये सेलो में "तटस्थ" सिपाही न रह गये...

सवेरे उठने के साथ ही पेत्रोग्राद के लोगों के कानों में गोलियां छूटने की और मार्च करते हुए सिपाहियों के भयानक पदचाप की आवाज़ आयी। आकाश कुहासाच्छन्न था और ठंडी हवा बर्फ़बारी का आभास दे रही थी। तड़के **युंकरों** के बड़े बड़े दस्तों ने सैनिक होटल और तारघर पर क़ब्ज़ा

कर लिया था, लेकिन उन्हें वापस ले लिया गया था, हालांकि इसके लिए बहुत सा ख़ून बहाना पड़ा था। टेलीफ़ोन पर मल्लाहों ने घेरा डाल दिया था, जो मोर्स्काया मार्ग के बीचोंबीच पीपों, बक्सों और टीन की चादरों के बैरीकेड के पीछे से, या गोरोख़ोवाया तथा सेंट इसाक चौक के मोड़ पर छिप कर वहां से गोलियां चला रहे थे और किसी भी हिलती हुई चीज़ को अपना निशाना बना रहे थे। कभी कभी रेड क्रास का झंडा लगाये एक मोटर-गाड़ी अंदर जाती और बाहर आती। मल्लाहों ने उसे रोकने की कोशिश नहीं की...

एल्बर्ट राइस विलियम्स * टेलीफ़ोन एक्सचेंज में थे। जब रेड क्रास की गाड़ी ज़ाहिरा घायलों से भरी बाहर निकली, वह भी उसमें थे। शहर में इधर-उधर चक्कर लगाने के बाद गाड़ी टेढ़े-मेढ़े रास्ते से होकर प्रतिक्रांति के केंद्र मिख़ाइलोव्स्की **युंकर** स्कूल पहुंची। स्कूल के अहाते में मौजूद एक फ़ांसीसी अफ़सर प्रत्यक्षतः इन कार्रवाइयों का संचालन कर रहा था... इसी तरीक़े से गोला-बारूद और दूसरा सामान टेलीफ़ोन एक्सचेंज पहुंचाया जा रहा था। बीसों ऐसी ऐंबुलेंस-गाड़ियां **युंकरों** के लिए संदेश और गोला-बारूद पहुंचाने का काम कर रही थीं।

युंकरों के हाथ में पांच–छः बख़्तरबंद गाड़ियां थीं, जो दरअसल उस ब्रिटिश बख़्तरबंद गाड़ी डिवीज़न की गाड़ियां थीं जिसे वियोजित कर दिया गया था। जिस समय लुइसे ब्रयान्त ** सेंट इसाक के चौक से गुज़र रही थीं, एक गाड़ी ऐंडमिराल्टी भवन की तरफ़ से आयी। गाड़ी टेलीफ़ोन एक्सचेंज की ओर जा रही थी, लेकिन गोगोल सड़क के मोड़ पर, जहां ब्रयान्त खड़ी थीं, उसके ठीक सामने, गाड़ी के इंजन ने जवाब दे दिया। कुछ मल्लाहों ने, जो लकड़ियों के एक अंबार के पीछे घात लगाये छिपे हुए थे, गोली चलानी शुरू की। गाड़ी की टरेट के अंदर मशीनगन ने

---

* **एल्बर्ट राइस विलियम्स** जॉन रीड के मित्र थे और अमरीका के सार्वजनिक जीवन में एक प्रगतिशील कार्यकर्ता के रूप में विख्यात थे। वह पत्रकार थे और उन्होंने सोवियत संघ में समाजवाद के लिए होने वाले संघर्ष के बारे में कई पुस्तकों की रचना की। – **सं०**

** **लुईसे ब्रयान्त** (१८९०-१९३६) – अमरीकी लेखिका, जॉन रीड की पत्नी तथा साथी। – **सं०**

जुंबिश खायी और बिना किसी भेदभाव के लकड़ियों पर और आस-पास की भीड़ पर गोलियों की बौछार की। जिस मेहराबी दरवाज़े में लुइसे ब्रयान्त खड़ी थीं, वहां सात आदमियों की लाशें तड़पती नज़र आयीं; उनमें दो छोटे छोटे बच्चे भी थे। अचानक मल्लाह चिल्लाते हुए उछल पड़े और सीधे उस आग की बौछार में पिल पड़े। उन्होंने उस विकराल "दानव" को घेर लिया और चीखते हुए गाड़ी की मोखों में अपनी संगीनें धंसा दीं, निकालीं और फिर धंसा दीं, बार बार निकालीं और धंसायीं। ड्राइवर ने ज़ख़्मी होने का बहाना किया और उन्होंने उसे छोड़ दिया – वह दौड़ता दौड़ता दूमा पहुंचा, और बोल्शेविक पाशविकता की कहानियों में एक नयी कहानी जुड़ गयी... मारे जानेवाले लोगों में एक ब्रिटिश अफ़सर भी था...

बाद में अख़बारों में एक फ़्रांसीसी अफ़सर के बारे में ख़बर छपी, जो **युंकरों** की एक बख़्तरबंद गाड़ी में पकड़ा गया था और पीटर-पाल क़िले में भेज दिया गया था। फ़्रांसीसी दूतावास ने तत्काल इस समाचार का खंडन किया, परंतु एक नगर सभासद ने बताया कि उन्होंने स्वयं इस अफ़सर को जेल से छुड़वाया था।

मित्र-राष्ट्रों के दूतावासों का औपचारिक दृष्टिकोण जो भी हो, व्यक्तिगत रूप से फ़्रांसीसी और अंगरेज़ अफ़सर इन दिनों बड़े सक्रिय थे – इस हद तक कि वे उद्धार समिति के कार्यकारी अधिवेशनों में परामर्श तक देने के लिए आते थे।

पूरे दिन शहर की हर बस्ती और मुहल्ले में **युंकरों** और लाल गार्डों के बीच मुठभेड़ें होती रहीं, बख़्तरबंद गाड़ियों की लड़ाइयां होती रहीं। दूर हो या नज़दीक सभी जगह गोलियों की बौछार की, छिटपुट गोलियां चलने की आवाज़ या मशीनगनों की कड़-कड़, चड़-चड़ सुनी जा सकती थी। दूकानों के लौह-कपाट बंद थे, लेकिन इसके बावजूद कारोबार चल रहा था। यहां तक कि सिनेमाघर भी भरे थे और तसवीरें दिखायी जा रही थीं, बस बाहर की सभी बत्तियां गुल कर दी गयी थीं। ट्राम-गाड़ियां बदस्तूर चल रही थीं। टेलीफ़ोन भी सारे काम कर रहे थे। 'सेन्टर' फ़ोन करने पर, गोली चलने की आवाज़ टेलीफ़ोन में साफ़ सुनी जा सकती थी... स्मोल्नी के टेलीफ़ोन काट दिये गये थे, लेकिन दूमा और उद्धार समिति

था सभी **युंकर** स्कूलों से और त्सारस्कोये सेलो में केरेन्स्की से संपर्क बराबर बना हुआ था।

सुबह सात बजे सिपाहियों, मल्लाहों और लाल गार्डों का एक गश्ती दस्ता व्लादीमिर **युंकर** स्कूल आया। उन्होंने **युंकरों** को हथियार डालने के लिए बीस मिनट का समय दिया। युंकरों ने इस अल्टीमेटम को ठुकरा दिया। घंटा भर बाद **युंकरों** ने मार्च करने की तैयारी की, लेकिन ग्रेबेत्सकाया सड़क और बोल्शोई मार्ग के मोड़ से गोलियों की ऐसी ज़बर्दस्त बौछार आयी कि उन्हें पीछे हटना पड़ा। सोवियत सिपाहियों ने इमारत को घेर लिया और फ़ायर करना शुरू किया। दो बख़्तरबंद गाड़ियां, जिनकी मशीनगनों से लगातार गोलियां छूट रही थीं, चक्कर कांट रही थीं। **युंकरों** ने फ़ोन कर के मदद मांगी। कज़्ज़ाकों ने जवाब दिया कि वे उनकी मदद के लिए आने की हिम्मत नहीं कर सकते, क्योंकि मल्लाहों के एक बड़े दस्ते ने, जिनके पास दो तोपें भी थीं, उनकी बारिकों पर घेरा डाल दिया था। पाव्लोव्स्क स्कूल को भी घेर लिया गया था। मिख़ाइलोव्स्क के अधिकांश **युंकर** सड़कों पर लड़ रहे थे...

साढ़े ग्यारह बजे दिन को वहां पर तीन मैदानी तोपें लायी गयीं। जब दोबारा समर्पण करने की मांग की गयी, **युंकरों** ने सफ़ेद झंडी लिये समर्पण-प्रस्ताव लाने वाले दो सोवियत प्रतिनिधियों को गोली मार कर उस मांग का उत्तर दिया। अब क्या था—ज़बर्दस्त गोलाबारी शुरू हो गयी। स्कूल की दीवारों की ईंटें बिखरने लगीं, और उनमें बड़ी बड़ी दरारें पड़ गयीं। युंकरों ने जान पर खेल कर बचाव करने की कोशिश की। क्रांतिकारी लाल गार्डों की एक लहर के बाद दूसरी लहर गरजती हुई उठती, लेकिन वे सब गोलियों से भूने जाकर ढेर हो जाते... त्सारस्कोये सेलो से केरेन्स्की ने फ़ोन पर कहा कि सैनिक क्रांतिकारी समिति से किसी प्रकार की वार्ता न की जाये।

अपनी हार और अपने साथियों की लाशों के ढेर लग जाने से एकदम पागल होकर सोवियत सिपाहियों ने उस इमारत पर, जिसकी ईंट ईंट अभी से बिखर रही थी, ऐसी भयंकर गोलाबारी की कि मालूम होता था उस पर गोलियां नहीं, लाल दहकते हुए अंगारे और पिघला हुआ लोहा बरस रहा है। खुद उनके अपने अफ़सर इस भयंकर गोलाबारी को रोक नहीं

सकते थे। किरीलोव नामक स्मोल्नी के एक कमिसार ने उसे रोकने की कोशिश की, जिससे सिपाही इतने बिगड़ खड़े हुए कि किरीलोव को अपनी जान बचाना मुश्किल हो गया। लाल गार्डों का ख़ून खौल उठा था।

दिन के ढाई बजे **युंकरों** ने सफ़ेद झंडा फहराया ; उन्होंने कहा कि अगर उन्हें हिफ़ाज़त की गारंटी दी जाये, तो वे हथियार डालने को तैयार हैं। यह गारंटी दी गई। हज़ारों सिपाही और लाल गार्ड चीखते-चिल्लाते खिड़कियों, दरवाज़ों और टूटी दीवारों से भीतर पिल पड़े। इसके पहले कि कोई कुछ कर सके, पांच **युंकरों** को मार मार कर भुर्ता बना दिया गया और उन्हें संगीनें भोंक दी गईं। बाक़ी क़रीब दो सौ **युंकरों** को छोटे छोटे दलों में बांट कर, ताकि उनकी ओर लोगों का ध्यान आकर्षित न हो, सिपाहियों की निगरानी में पीटर-पाल क़िले में पहुंचाया गया। रास्ते में भीड़ एक दल के ऊपर टूट पड़ी – आठ और **युंकर** मारे गये ... इस लड़ाई में एक सौ से ज़्यादा लाल गार्ड और सिपाही खेत रहे ...

दो घंटे बाद दूमा को टेलीफ़ोन से ख़बर मिली कि सोवियत विजेता **इंजीनेरनी ज़ामोक** – इंजीनियरों के स्कूल – की ओर बढ़े आ रहे हैं। फ़ौरन दूमा के एक दर्जन सदस्य उनके बीच उद्धार समिति की सबसे ताज़ा घोषणा बांटने के लिये निकल पड़े। उनमें से कई नहीं लौटे ... बाक़ी सभी **युंकर** स्कूलों ने बग़ैर मुक़ाबला किये हथियार डाल दिये और **युंकरों** को बाहिफ़ाज़त पीटर-पाल क़िले में और क्रोंश्तादत पहुंचाया गया ...

टेलीफ़ोन-एक्सचेंज ने तीसरे पहर ही कहीं जाकर, जब वहां पर एक बोल्शेविक बख़्तरबंद गाड़ी पहुंची और मल्लाहों ने उस पर धावा बोला, समर्पण किया। अंदर एक्सचेंज की डरी हुई लड़कियां हाय-तोबा मचाये हुए थीं, वे मारे घबराहट के कभी इधर दौड़तीं, तो कभी उधर। **युंकरों** ने अपनी वर्दियों से सारे बिल्ले वग़ैरह, जिनसे उनकी पहचान हो सके, चीथ डाले, एक ने विलियम्स से कहा कि अगर वह मेहरबानी करके थोड़ी देर के लिये अपना ओवरकोट उसे दे दें, ताकि वह अपना भेष बदल सके, तो वह बदले में **कुछ भी** देने को तैयार है ... "वे हमें बोटी बोटी काट डालेंगे! वे हमें ज़िंदा न छोड़ेंगे!" **युंकर** चीख़ रहे थे। उनके इस डर की वजह थी – उनमें से बहुतों ने शिशिर प्रासाद में वचन दिया था कि वे फिर कभी जनता के विरुद्ध शस्त्र धारण नहीं करेंगे। विलियम्स ने कहा कि अगर

अन्तोनोव को छोड़ दिया जाये, तो वह बीच में पड़ने के लिये तैयार हैं। ऐसा तुरत किया गया। विजयी मल्लाहों के सामने, जो अपने बहुत से साथियों के मारे जाने की वजह से आपे से बाहर हो रहे थे, अन्तोनोव और विलियम्स ने भाषण दिये... और एक बार फिर **युंकरों** को छोड़ दिया गया... सिवाय उन चंद बदनसीबों के, जिन्होंने अपनी घबराहट में छतों से कूद कर भाग निकलने की कोशिश की या जो ऊपर बरसाती में छिप गये थे, जिन्हें जब उनका पता चला नीचे सड़क में उछाल दिया गया।

थके-मांदे, खून से लथपथ परन्तु विजयी मल्लाह और मज़दूर झुंड के झुंड एक्सचेंज के स्विचबोर्ड-कक्ष में घुस पड़े और वहां पर इतनी सारी खूबसूरत लड़कियों को देख कर वे बेचारे अचकचा कर भौंचक्के से खड़े रह गये। एक भी लड़की का बाल बांका नहीं हुआ, एक की भी तौहीन नहीं की गई। वे डरी-सहमी कोने-अंतरों में गठरी सी बनी खड़ी थीं, लेकिन जब उन्होंने देखा कि उन्हें कोई ख़तरा नहीं है, उन्होंने अपने दिल का ग़ुबार निकालना शुरू किया। "छि:,, गंदे, गंवार लोग! बेवकूफ़!.." मल्लाह और लाल गार्ड असमंजस में पड़े खड़े थे। "गधे! जानवर।" लड़कियां अपने कोट और हैट पहनती हुई चीखीं। थोड़ी देर पहले, जब उन्होंने अपने उत्साही तरुण रक्षकों, **युंकरों** की ओर, जिनमें बहुतेरे अभिजात परिवारों से आते थे और जो उनके प्रिय ज़ार की हुकूमत को फिर से क़ायम करने के लिये लड़ रहे थे, कारतूस बढ़ाये थे और उनके जख़्मों की मरहम-पट्टी की थी, तो उन्होंने रोमानी भावनाओं का अनुभव किया था! ये लोग तो बस मामूली मज़दूर और किसान थे... "गंवार लोग..."

सैनिक क्रांतिकारी समिति के कमिसार बौने विश्न्याक ने लड़कियों को समझाने की कोशिश की कि वे एक्सचेंज न छोड़ें। वह विनय की मूर्ति बने हुए थे। "आप लोगों के साथ बहुत बुरा सलूक किया गया है," उन्होंने कहा। "टेलीफ़ोन-व्यवस्था नगर दूमा के हाथ में थी। आपको महीने [illegible] मिलते थे और दस दस घंटे या इससे भी ज़्यादा काम करना पड़ता था। [illegible] सारी बातें बदल दी जायेंगी। सरकार का इरादा है कि [illegible] के मातहत कर दिया जाये। आपकी तनख़्वाह [illegible] दी जायेंगी और काम के घंटे

घटा दिये जायेंगे। मज़दूर वर्ग की सदस्य होने के नाते आपको ख़ुश होना चाहिये ... "

मज़दूर वर्ग की सदस्य ! ख़ूब ! क्या विश्न्याक का मतलब यह है कि इन ... इन जानवरों और **हमारे** बीच कोई चीज़ समान हो सकती है? हम यहां रह कर काम करें? नहीं, हरगिज़ नहीं! वे हमें एक हज़ार रूबल दें, तो भी नहीं!.. मग़रूर और बुग्ज़ से भरी लड़कियां झनक कर वहां से चली गईं ...

एक्सचेंज के साधारण कर्मचारियों, लाइनमैन और मज़दूरों ने काम नहीं छोड़ा। लेकिन स्विच-बोर्डों को चालू करना था—टेलीफ़ोन एक ज़रूरी चीज़ है ... वहां बस गिनती के छः आपरेटर थे। लोगों से कहा गया कि वालंटियरों की तरह काम करने के लिये अपने नाम दें। क़रीब एक सौ आदमियों—मल्लाहों, सिपाहियों और मज़दूरों—ने अपने नाम दिये। छः लड़कियां, लोगों को हिदायतें और मदद देती हुई, डांटती-फटकारती हुई, उनके बीच दौड़ दौड़ कर काम कर रही थीं ... इस प्रकार एक्सचेंज लंगड़ाते लंगड़ाते फिर **चलने** लग गया और टेलीफ़ोन के तारों में धीरे धीरे फिर ज़िंदा हरकत होने लगी। पहला काम यह था कि स्मोल्नी को बारिकों और कारख़ानों से मिलाया जाये; दूसरा दूमा और **युंकर** स्कूलों के टेलीफ़ोन काट दिये जायें ... दिन ढलने को आ रहा था, जब यह ख़बर शहर में फैल गयी और सैकड़ों पूंजीवादियों ने फ़ोन पर चीखना शुरू किया, "बेवक़ूफ़ो! शैतानो! तुम दो रोज़ के मेहमान हो! आने दो कज़्ज़ाकों को, तब तुम देखना!"

शाम का झुटपुटा अभी से घिर रहा था। नेव्स्की मार्ग पर, जहां तेज़ ठंडी हवा चल रही थी, और शायद ही कोई आदमी कहीं नज़र आता था, कज़ान गिरजाघर के सामने एक भीड़ इकट्ठी हो गई थी—थोड़े से मज़दूर, मुट्ठी भर सिपाही और बाक़ी दुकानदार, क्लर्क और उनके जैसे लोग। उनके बीच वही पुरानी कभी न ख़त्म होने वाली बहस छिड़ी हुई थी।

"लेकिन लेनिन जर्मनी को सुलह करने के लिए तैयार नहीं कर सकते!" एक ने तेज़ लहजे में कहा।

एक उग्र तरुण सैनिक ने उत्तर दिया, "इसमें ग़लती किसकी है?

नारा? सम्यक्त पूंजीशाह केरेन्स्की की! केरेन्स्की जहन्नुम में जाये, हम ... नहीं चाहते! हम लेनिन को चाहते हैं..."

दूमा-भवन के बाहर बांह में सफ़ेद फ़ीता बांधे एक अफ़सर ज़ोर से ...ता हुआ दीवार पर लगे पोस्टरों को फाड़ रहा था। एक पोस्टर ... लिखा था:

पेत्रोग्राद की आबादी के नाम!

इस खतरनाक घड़ी में, जब नगर दूमा को आबादी को शांत रखने के लिये सभी उपायों का उपयोग करना चाहिये, उसके लिये रोटी और दूसरी ज़रूरियात को सुनिश्चित बनाना चाहिये, दक्षिणपंथी समाजवादी-क्रांतिकारियों और कैडेटों ने अपने कर्तव्य का ध्यान छोड़कर दूमा को एक प्रतिक्रांतिकारी सभा में बदल दिया है और वे कोर्नीलोव – केरेन्स्की की ... में सुविधा पहुंचाने की गरज़ से आबादी के एक भाग को शेष भागों के खिलाफ़ उभाड़ने की कोशिश कर रहे हैं। अपना कर्तव्य पालन करने के बजाय इन दक्षिणपंथी समाजवादी-क्रांतिकारियों और कैडेटों ने दूमा को मज़दूरों, सैनिकों तथा किसानों के प्रतिनिधियों की सोवियतों पर, तथा शांति, रोटी और आज़ादी वाली क्रांतिकारी सरकार पर राजनीतिक प्रहार के आक्रमण के लिए एक अखाड़ा बना दिया है।

पेत्रोग्राद के नागरिको! आपके द्वारा निर्वाचित नगरपालिका के हम बोल्शेविक सभासद आपको यह जताना चाहते हैं कि दक्षिणपंथी समाजवादी-क्रांतिकारी और कैडेट प्रतिक्रांतिकारी कार्रवाइयों में लगे हुए हैं, और वे अपना कर्तव्य का ध्यान छोड़ कर आबादी को अकाल और गृहयुद्ध के मुंह में डाल रहे हैं। हम लोग, जिन्हें १८३ ००० वोटों से चुना गया है, अपना यह कर्तव्य समझते हैं कि दूमा में जो कुछ हो रहा है, उसकी ओर अपने चुनावकर्ताओं का ध्यान दिलायें और यह घोषणा करें कि उसका ... जो भयानक परिणाम होगा, उसके लिये हमारी कोई ज़िम्मेदारी नहीं है।

दूर कहीं अभी भी बीच बीच में गोली चलने की आवाज़ आ रही थी, लेकिन कुल मिलाकर शहर खामोश और ठंडा पड़ा हुआ था। जैसे

अभी अभी जिस भयंकर दौरे ने उसके अंजर-पंजर को झिंझोड़ दिया है, उससे वह बेदम होकर पड़ गया हो।

निकोलाई हॉल में दूमा का अधिवेशन समाप्त हो रहा था। कट्टर जंगजू दूमा भी किंचित स्तम्भित रह गयी थी। एक के बाद एक उसके कमिसारों ने ख़बर दी – टेलीफ़ोन-एक्सचेंज पर क़ब्ज़ा कर लिया गया, सड़कों पर लड़ाई हो रही है, व्लादीमिर स्कूल हाथ से चला गया... त्रूप्प ने कहा, "निरंकुश हिंसा के विरुद्ध संघर्ष में दूमा निश्चय ही जनवाद की ओर है, परन्तु कुछ भी हो, कोई भी पक्ष जीते, दूमा सदैव शारीरिक यंत्रणा और अवैध वध का विरोध करेगी..."

कैडेट कोनोव्स्की उठे – लंबे-तड़ंगे बूढ़े आदमी, चेहरा सख़्त। कठोर स्वर में बोले, "जब क़ानूनी सरकार की सेना पेत्रोग्राद पहुंचेगी, वह इन विद्रोहियों को गोलियों से भून देगी, और यह निश्चय ही अवैध वध नहीं होगा!" सदन के हर भाग ने, यहां तक कि उनकी अपनी पार्टी के लोगों ने कोनोव्स्की की इस बात पर एतराज़ ज़ाहिर किया।

दूमा के अंदर दुविधा, शंका और विषाद का वातावरण था। प्रतिक्रांति कुचली जा रही थी। समाजवादी-क्रांतिकारी पार्टी की केन्द्रीय समिति ने अपने नेताओं में अविश्वास प्रगट किया था; पार्टी पर वामपक्ष हावी हो गया था। अव्क्सेन्त्येव ने इस्तीफ़ा दे दिया था। एक संदेशवाहक ने बताया कि जो स्वागत समिति रेलवे स्टेशन पर केरेन्स्की से मुलाक़ात करने के लिये भेजी गई थी, उसे गिरफ़्तार कर लिया गया है। सड़कों पर दक्षिण और दक्षिण-पश्चिम की ओर दूर कहीं तोपों के धमाकों की दबी हुई आवाज़ आ रही थी। केरेन्स्की का अभी भी पता न था...

उस दिन तीन ही अख़बार निकले थे – 'प्राव्दा', 'देलो नरोदा' और 'नोवाया जीज़्न'। तीनों में एक नई "संयुक्त" सरकार के विषय में बहुत कुछ कहा गया था। समाजवादी-क्रांतिकारी अख़बार ने मांग की थी कि एक ऐसा मंत्रिमंडल बनाया जाये, जिसमें न तो कैडेट हों और न ही बोल्शेविक। गोर्की का स्वर आशापूर्ण था; स्मोल्नी ने रियायतें दी थीं। एक विशुद्ध समाजवादी सरकार आकार ग्रहण कर रही थी – पूंजीपति वर्ग को छोड़कर उसमें सभी तत्व शामिल होंगे। जहां तक 'प्राव्दा' का प्रश्न है, उसने विद्रूप के स्वर में कहा:

हमें ऐसी राजनीतिक पार्टियों के साथ संश्रय की बात पर हंसी आती है, जिनके सर्वप्रमुख सदस्य संदिग्ध प्रतिष्ठा के कुछ पत्रकार हैं। हमारा "संश्रय" सर्वहारा वर्ग की पार्टी का क्रांतिकारी सेना और ग़रीब किसानों के साथ "संश्रय" है...

दीवारों पर **विक्जेल** की एक दंभपूर्ण घोषणा लगी थी, जिसमें यह धमकी दी गई थी कि अगर दोनों पक्ष समझौता नहीं करते, तो रेल मज़दूर हड़ताल पर चले जायेंगे। घोषणा में डींग मारी गई थी:

इस दंगा-फ़साद पर क़ाबू पाने वाले, देश को तबाही से बचानेवाले बोल्शेविक नहीं होंगे, उद्धार समिति और केरेन्स्की के सैनिक नहीं होंगे बल्कि हम होंगे, हमारी रेल मज़दूर यूनियन होगी...

लाल गार्ड रेलवे जैसी जटिल व्यवस्था को संभालने में असमर्थ हैं; जहां तक अस्थायी सरकार का सम्बन्ध है, वह शासन-सूत्र अपने हाथ में रखने में असमर्थ सिद्ध हुई है...

जब तक कोई दल ऐसी सरकार द्वारा अधिकृत रूप से कार्य न करे... जिसका आधार समस्त जनवाद का विश्वास है, हम उसे अपनी सेवायें देने से इंकार करेंगे...

स्मोल्नी संघर्षरत अक्षय्य मानवता की निस्सीम प्राणशक्ति से स्पंदित था।

ट्रेड-यूनियनों के सदर दफ़्तर में लोज़ोव्स्की ने मेरा परिचय निकोलाई रेल लाइन के मजदूरों के एक प्रतिनिधि के साथ कराया, जिसने मुझे बताया कि रेल मजदूर बड़ी बड़ी जन-सभायें करके अपने नेताओं के रवैये की निंदा कर रहे हैं।

ग़ुस्से में आ मेज पर हाथ मारते हुए उसने कहा, "समस्त सत्ता सोवियतों के हाथ में हो! हमारी केन्द्रीय समिति के **ओबोरोन्त्सी** (प्रतिरक्षावादी) कार्नीलोव की गोटी बैठा रहे हैं। उन्होंने अपना एक प्रतिनिधि [illegible] (उत्तर [illegible]) भेजा, लेकिन हमने उन्हें मिन्स्क में गिरफ़्तार कर लिया। हमारी शाखा ने अखिल रूसी सम्मेलन की मांग की है, लेकिन वे उसे बुलाने से इंकार कर रहे हैं..."

यहां भी वही स्थिति थी, जो सोवियतों और सैनिक समितियों में थी। पूरे रूस में विभिन्न जनवादी संगठन एक के बाद एक टूट रहे थे और बदल रहे थे। सहकारी समितियों में अन्दरूनी झगड़ों की वजह से फूट पड़ गई थी; किसान कार्यकारिणी समिति की बैठकों में ज़ोर की बहस-तकरार छिड़ी हुई थी। यहां तक कि कज़्ज़ाकों के बीच भी बेचैनी थी...

स्मोल्नी भवन की सबसे ऊपर की मंज़िल पर सैनिक क्रांतिकारी समिति धुआंधार काम कर रही थी – वह बिना ढील दिये चोट पर चोट कर रही थी। वह एक ऐसी भयानक मशीन बनी हुई थी, जिसमें ताज़गी से और स्फूर्ति से भरे लोग, दिन हो रात हो, रात हो दिन हो, अपने आपको झोंक देते और जब वे उसमें से निकलते, वे बेदम होते, थक कर बिल्कुल चूर, मैले-कुचैले, आवाज़ भारी और बैठी हुई, और वे वहीं फ़र्श पर लुढ़क जाते और सो रहते... उद्धार समिति को गैरक़ानूनी क़रार दिया गया था। ढेर की ढेर नई घोषणायें[2] फ़र्श पर बिखरी पड़ी थीं:

...षड्यन्त्रकारियों ने, जिन्हें गैरिसन या मज़दूर वर्ग के बीच कोई समर्थन प्राप्त नहीं है, सबसे ज़्यादा अपने आक्रमण की आकस्मिकता का भरोसा किया। लाल गार्ड दल के एक सिपाही की, जिसका नाम घोषित किया जायेगा, सतर्कता की बदौलत सब-लेफ़्टिनेंट ब्लागोन्रावोव को उनकी योजना का सुराग लग गया। उद्धार समिति षड्यन्त्र का केन्द्र बनी हुई थी। उनके सैनिकों की कमान कर्नल पोल्कोवनिकोव के हाथ में थी और हुक्मनामों पर अस्थायी सरकार के भूतपूर्व सदस्य उन्हीं गोत्स के दस्तख़त थे, जिन्हें हलफ़िया बयान देने पर क़ैद से रिहा कर दिया गया था...

इन बातों की ओर पेत्रोग्राद की जनता का ध्यान दिलाती हुई सैनिक क्रांतिकारी समिति उन सभी आदमियों की गिरफ़्तारी का आदेश देती है, जिनका इस षड्यन्त्र में हाथ है। उन पर क्रांतिकारी न्यायाधिकरण के सम्मुख मुक़दमा चलाया जायेगा...

मास्को से ख़बर आई कि **युंकरों** और कज़्ज़ाकों ने क्रेमलिन को घेर लिया और सोवियत सैनिकों को हथियार डालने का हुक्म दिया। सोवियत सैनिकों ने इसे मंजूर कर लिया और जब वे क्रेमलिन से बाहर निकल रहे थे, **युंकर** उन पर टूट पड़े और उन्हें गोलियों से भून डाला गया।

बोल्शेविकों की छोटी छोटी टुकड़ियों को टेलीफ़ोन एक्सचेंज और तारघर से खदेड़ दिया गया। उस समय नगर-केन्द्र **युंकरों** के हाथ में था ... लेकिन उनके चारों ओर सोवियत सिपाही एकजुट हो रहे थे। सड़कों की लड़ाई धीरे धीरे ज़ोर पकड़ रही थी। समझौते की सारी कोशिशें बेकार हो गई थीं ... सोवियत की ओर गैरिसन के दस हज़ार सिपाही और मुट्ठी भर लाल गार्ड थे, सरकार की ओर छः हज़ार **युंकर**, ढाई हज़ार कज़्ज़ाक और दो हज़ार सफ़ेद गार्ड थे।

पेत्रोग्राद सोवियत की बैठक हो रही थी और साथ के कक्ष में नई **त्से-ई-काह** उन आज्ञप्तियों और आदेशों पर विचार कर रही थी, जो लगातार जन-कमिसार परिषद् से, जिसका अधिवेशन ऊपर के एक कमरे में हो रहा था, भेजे जा रहे थे[3]। निम्नलिखित प्रश्नों पर विचार किया गया: आदेशों की मंजूरी और प्रकाशन की व्यवस्था, मज़दूरों के लिए आठ घंटों के कार्य-दिवस का आदेश और लुनाचार्स्की का "सार्वजनिक-शिक्षा की व्यवस्था का आधार"। इन दोनों मीटिंगों में केवल दो-तीन सौ आदमी रहे होंगे, जिनमें से अधिकांश हथियारों से लैस थे। स्मोल्नी में एक तरह से पूरा सन्नाटा था, बस कुछ रक्षक खिड़कियों पर मशीनगनें बैठा रहे थे, जहां से इमारत के दोनों बाज़ू की जगह को देखा जा सकता था।

त्से-ई-काह की सभा में **विक्जेल** का एक प्रतिनिधि कह रहा था:

"हम दोनों में से किसी भी पक्ष के दलों का परिवहन करने से इनकार करते हैं ... हमने केरेन्स्की के पास उन्हें यह सूचना देने के लिये एक शिष्टमंडल भेजा है कि अगर उन्होंने पेत्रोग्राद की ओर अपना बढ़ाव जारी रखा, तो हम उनकी संचार-लाइनों को काट देंगे ..."

उसने एक नई सरकार की स्थापना के हेतु सभी समाजवादी पार्टियों के एक सम्मेलन के लिये अपनी हस्ब मामूल दलील दी ...

कामेनेव ने सर्तक भाव से उत्तर दिया, उन्होंने कहा कि बोल्शेविक बड़ी खुशी से सम्मेलन में भाग लेंगे। लेकिन मुख्य बात ऐसी सरकार का गठन नहीं है, वरन उसके द्वारा सोवियतों की कांग्रेस के कार्यक्रम की स्वीकृति है। **त्से-ई-काह** ने वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारियों तथा सामा-जिक-जनवादी अंतर्राष्ट्रीयतावादियों द्वारा की गई एक घोषणा पर विचार किया था और सम्मेलन में आनुपातिक प्रतिनिधित्व के प्रस्ताव को स्वीकार

किया था। यहां तक कि उसने सैनिक समितियों तथा किसानों की सोवियतों के प्रतिनिधियों को भी शामिल कर लेना मंज़ूर कर लिया था...

बड़े हॉल में त्रोत्स्की उस दिन की घटनाओं को बयान कर रहे थे। उन्होंने कहा :

"हमने व्लादीमिर स्कूल के **युंकरों** को आत्मसमर्पण करने का अवसर दिया। हम रक्तपात के बिना मामले का निपटारा करना चाहते थे। लेकिन अब चूंकि रक्तपात हुआ है, हमारे लिए एक ही रास्ता रह गया है – निर्मम संघर्ष का रास्ता। यह सोचना कि हम किसी और तरीक़े से जीत सकते हैं बचकानापन होगा... यह घड़ी एक निर्णायक घड़ी है। यह बिल्कुल ज़रूरी है कि हर आदमी सैनिक क्रांतिकारी समिति के साथ सहयोग करे और जहां भी कंटीले तारों, बेंज़िन, बन्दूकों के स्टोर हों, उनकी समिति को ख़बर दे... हमने सत्ता पर अधिकार किया है, अब हमें उसे अपने हाथ में रखना है!"

मेन्शेविक इयोफ़े ने अपनी पार्टी की घोषणा पढ़नी चाही, लेकिन त्रोत्स्की ने "उसूलों की बहस" के लिये इजाज़त नहीं दी।

उन्होंने चिल्ला कर कहा, "अब हमारी बहसें सड़कों पर होंगी। निर्णायक क़दम उठा लिया गया है। जो कुछ हो रहा है, उसके लिये हम सब ज़िम्मेदारी लेते हैं, व्यक्तिगत रूप से मैं लेता हूं..."

मोर्चे से आने वाले, गातचिना से आने वाले सिपाहियों ने अपनी कहानियां सुनायीं। शहीदी बटालियन, ४८१वीं तोपख़ाना बटालियन के एक सिपाही ने कहा, "जब खाइयों में पड़े सिपाही इस ख़बर को पायेंगे, वे बोल उठेंगे, 'यह **हमारी ही** सरकार है!'" पीटरहोफ़ के एक **युंकर** ने कहा कि अपने दो साथियों के साथ उसने सोवियतों के ख़िलाफ़ मुहिम में शामिल होने से इनकार कर दिया था, और जब शिशिर प्रासाद का बचाव करने वाले उसके साथी वहां से लौटे, उन्होंने उसे अपना कमिसार नियुक्त कर के स्मोल्नी भेजा कि वह उनकी सेवाओं को **सच्ची** क्रांति के लिए अर्पित करे...

और फिर त्रोत्स्की आये, आग-भभूका बने, स्फूर्ति से भरे हुए – वह आदेश पर आदेश दे रहे थे या सवालों के जवाब दे रहे थे।

"मज़दूरों, सिपाहियों और किसानों को हराने के लिए टुटपुंजिया

वर्ग शैतान से भी सांठ-गांठ करने के लिए तैयार है!" उन्होंने एक बार कहा। पिछले दो दिनों में शराबख़ोरी की कई मिसालें नज़र आयी थीं। उनकी ओर इशारा करते हुए त्रोत्स्की ने कहा, "साथियो, शराबख़ोरी बंद होनी चाहिए! शाम को आठ बजे के बाद नियमित रक्षक दलों को छोड़ कर और किसी को सड़कों पर निकलना नहीं चाहिए। अगर किसी जगह के बारे में शुबहा हो कि वहां शराब का गोदाम है, तो उसकी तलाशी ली जानी चाहिए और वहां पायी जाने वाली शराब नष्ट कर देनी चाहिये[4]। शराब बेचने वालों के साथ कोई नर्मी नहीं होनी चाहिए..."

सैनिक क्रांतिकारी समिति ने विबोर्ग शाखा के शिष्टमंडल को, फिर पुतीलोव शाखा के सदस्यों को बुलाया। वे जल्दी जल्दी वहां आये।

त्रोत्स्की ने कहा, "हम हर क्रांतिकारी की जान के बदले पांच प्रतिक्रांतिकारियों की जानें लेंगे!"

हम फिर बीच शहर में थे। दूमा-भवन रोशनी से जगमग था और उसमें भीड़ उमड़ी हुई चली आ रही थी। नीचे के हॉल से रोने-सिसकने की आवाज़ें आ रही थीं। नोटिस-बोर्ड के सामने पूरी रेल-पेल थी – उस पर एक सूची लगी थी, जिसमें उन **युंकरों** के नाम थे, जो उस दिन की लड़ाई में मारे गये थे या कहना चाहिए, जिनके बारे में ख़्याल था कि वे मारे गये हैं, क्योंकि बाद में उनमें से अधिकांश जीते-जागते पाये गये... ऊपर अलेक्सान्द्र हॉल में उद्धार समिति की बैठक में जोशीले भाषण हो रहे थे। अफ़सरों के लाल और सुनहरे झब्बे चमक रहे थे, मेन्शेविक और समाजवादी-क्रांतिकारी बुद्धिजीवियों के परिचित चेहरे दिखाई दे रहे थे; भड़कीले कपड़े पहने बैंकर और कूटनीतिज्ञ, जिनकी आंख का पानी मर गया था और जिनके शरीर पर मोटापा छाया हुआ था, ज़ारशाही ज़माने के अफ़सर, लकदक कपड़े पहने सजी-धजी औरतें – ये सभी वहां थे...

टेलीफ़ोन एक्सचेंज की लड़कियां अपने बयान दे रही थीं। एक के बाद एक लड़की मंच पर आई – कपड़ों से लदी-फंदी, फ़ैशन पर जान देने वाली लड़कियां, जिनके चेहरों पर मांस न था और जूतों के तल्ले चटके हुए थे। पेत्रोग्राद के "भद्र लोगों" – अफ़सरों, रईसों, सियासी दुनिया में मशहूर और बड़े लीडरों – की तालियों से ख़ुशी से बाग बाग होती हुई एक लड़की के बाद दूसरी लड़की ने वहां आकर मज़दूरों के हाथों भुगती हुई अपनी

मुसीबतों को बयान किया और जो कुछ भी प्राचीन था, परम्परागत था और शक्तिशाली था, उसके प्रति अपनी निष्ठा की घोषणा की...

निकोलाई हॉल में दूमा का फिर अधिवेशन हो रहा था। मेयर ने आशापूर्ण भाव से कहा कि पेत्रोग्राद की रेजीमेंटें अपनी हरक़तों पर शर्मिंदा हैं। प्रचार-कार्य तेज़ी से आगे बढ़ रहा था... दूतों का आना-जाना लगा हुआ था – वे बोल्शेविकों की दहशतनाक हरक़तों की रिपोर्ट देते, **युंकरों** की जान बचाने के लिए बीच में पड़ते और बड़ी सरगर्मी से तहक़ीक़ात करते...

त्रूप्प ने कहा, "बोल्शेविकों के ऊपर संगीनों से नहीं, नैतिक बल से विजय पाई जायेगी..."

उधर क्रांतिकारी मोर्चे का हाल बिल्कुल ही अच्छा हो, यह बात न थी। दुश्मन मोर्चे पर बख़्तरबंद रेलगाड़ियां, जिन पर तोपें चढ़ी हुई थीं, ले आया था। सोवियत सेना, जिसमें अधिकांशतः नौसिखुये लाल गार्ड ही थे, बग़ैर अफ़सरों के थी और उसके पास कोई निश्चित योजना भी न थी। उसमें केवल पांच हज़ार नियमित सैनिक शामिल हुए थे। गैरिसन के बाक़ी सिपाही या तो **युंकर**-विद्रोह को दबाने में और शहर की हिफ़ाज़त करने में लगे हुए थे, या फिर वे अनिश्चित भाव से हाथ पर हाथ धरे बैठे हुए थे। रात को दस बजे लेनिन ने शहर की रेजीमेंटों के प्रतिनिधियों की एक सभा में भाषण किया – सभा ने प्रबल बहुमत से लड़ाई के हक़ में फ़ैसला किया और बहैसियत जनरल स्टाफ़ के काम करने के लिये पांच आदमियों की एक समिति निर्वाचित की। दूसरे दिन भोर में ही युद्ध-सज्जित रेजीमेंटें अपनी बारिकों से निकल पड़ीं... घर लौटते हुए मैंने उन्हें गुज़रते हुए देखा था – वे विजित नगर की सूनी सड़कों से पुराने तपे हुए सिपाहियों की बंधी हुई चाल से क़दम से क़दम बिल्कुल मिलाये हुए चली जा रही थीं...

उसी समय सदोवाया मार्ग पर **विक्जेल** के सदर दफ़्तर में एक नयी सरकार की स्थापना के लिये सभी समाजवादी पार्टियों की कांफ़्रेंस हो रही थी। मध्यमार्गी मेन्शेविकों की ओर से बोलते हुए अब्रामोविच ने कहा कि जो हो गया वह हो गया, उसे भूल जाना चाहिये और यह नहीं समझना चाहिये कि किसी की जीत हुई है या किसी की हार... इस बात से

सभी वामपंथी पार्टियां सहमत थीं। दक्षिणपंथी मेन्शेविकों की ओर से बोलते हुए दान ने लड़ाई बंद करने के लिए बोल्शेविकों से निम्नलिखित शर्तों का प्रस्ताव किया: लाल गार्ड निरस्त्र किये जायें और पेत्रोग्राद की गैरिसन को दूमा के अधीन किया जाये ; केरेन्स्की के सिपाही न एक भी गोली चलायें और न एक भी आदमी को गिरफ़्तार करें ; **बोल्शेविकों को छोड़ कर** बाक़ी सभी समाजवादी पार्टियों को लेकर एक मंत्रिमंडल बनाया जाये। स्मोल्नी की ओर से रियाज़ानोव और कामेनेव ने एलान किया कि सभी पार्टियों का एक संयुक्त मंत्रिमंडल उनके लिये स्वीकार्य है, परन्तु उन्होंने दान के प्रस्तावों के प्रति प्रतिवाद प्रगट किया। समाजवादी-क्रांतिकारी एकमत न थे ; परन्तु किसानों की सोवियतों की कार्यकारिणी समिति और जन-समाजवादियों ने बोल्शेविकों को शामिल करने से साफ़ इनकार कर दिया... तल्ख़ बहस और तकरार के बाद एक व्यवहार्य योजना बनाने के लिए एक आयोग का चुनाव किया गया...

आयोग के अंदर उस दिन पूरी रात और दूसरे दिन और दूसरी रात को भी झगड़ा होता रहा। एक बार पहले, ९ नवम्बर को मार्तोव और गोर्की के नेतृत्व में समझौते की इसी तरह की कोशिश हुई थी। परन्तु केरेन्स्की के आगमन और उद्धार समिति की कार्रवाइयों के फलस्वरूप दक्षिणपंथी मेन्शेविकों, समाजवादी-क्रांतिकारियों और जन-समाजवादियों ने यकायक अपना हाथ खींच लिया था। अब वे **युंकर**-विद्रोह के दमन से आतंकित थे...

सोमवार १२ नवम्बर का दिन बड़े शशोपंज का दिन था। समूचे जग की निगाहें पेत्रोग्राद से बाहर उस धूसर मैदान पर लगी हुई थीं, जहां पुरानी सत्ता की समस्त उपलब्ध शक्ति नयी अज्ञात सत्ता की असंगठित शक्ति के ख़िलाफ़ जुटी हुई थी। मास्को में सुलह का एलान किया गया था ; राजधानी में क्या फ़ैसला होता है, इसका इंतज़ार करते हुए दोनों पक्ष बातचीत कर रहे थे। इसी समय सोवियतों की कांग्रेस के प्रतिनिधि क्रांति का ज्वलंत संदेश लिये हुए, बेतहाशा भागती हुई रेलगाड़ियों में सवार होकर रूसिया के दूर से दूर भागों से अपने घरों में पहुंच रहे थे। राजधानी में जो चमत्कार हुआ था, उसका समाचार पूरे देश में उसी तरह फैल रहा

था, जैसे पानी में पत्थर फेंकने से लहरें फैलती जाती हैं, और इस समाचार से शहर और क़स्बे और दूर दूर के गांव आलोड़ित और मंथित हो रहे थे, विपर्यस्त और विभक्त हो रहे थे – एक ओर सोवियतें और सैनिक क्रांतिकारी समितियां, दूसरी ओर दूमायें, ज़ेम्स्त्वो और सरकारी कमिसार; एक ओर लाल गार्ड, दूसरी ओर सफ़ेद। सड़कों पर लड़ाइयां और गर्मागर्म भाषण... इस कशमकश का क्या नतीजा होगा, यह इस बात पर मुनहसर था कि पेत्रोग्राद से क्या ख़बर आती है...

स्मोल्नी लगभग खाली था, लेकिन दूमा में उसी तरह भीड़-भाड़ और हंगामा था। बूढ़े मेयर अपने उसी शिष्ट भाव से बोल्शेविक सभासदों की अपील के प्रति प्रतिवाद कर रहे थे।

"दूमा प्रतिक्रांति का अड्डा नहीं है," उन्होंने बड़े जोश से कहा। "दूमा राजनीतिक पार्टियों के मौजूदा संघर्ष में कोई हिस्सा नहीं ले रही है। परन्तु ऐसे समय, जब देश में कोई वैध सत्ता नहीं है, सुव्यवस्था का एक ही केन्द्र रह गया है – नगरपालिका का स्वायत्त शासन। अमन पसंद आबादी इस हक़ीक़त को मानती है; विदेशी दूतावास उन्हीं दस्तावेज़ों को मानते हैं, जिन पर नगर के मेयर के दस्तख़त हों। नगरपालिका का स्वायत्त शासन ही एकमात्र ऐसा निकाय है, जो नागरिकों के हितों की रक्षा करने में समर्थ है – यूरोपीय दिमाग़ सिर्फ़ इसी स्थिति को स्वीकार्य मानते हैं। नगर-प्रशासन उन सभी संगठनों को आश्रय देने के लिये कर्तव्यबद्ध है, जो ऐसे आश्रय से लाभ उठाने की इच्छा रखते हैं, और इसलिये दूमा अपने भवन के अंदर किसी भी अख़बार के वितरण को रोक नहीं सकती। हमारा कार्यक्षेत्र फैल रहा है, और यह आवश्यक है कि हमें काम करने की पूरी छूट दी जाये और दोनों ही पक्ष हमारे अधिकारों का लिहाज़ करें...

"हम बिल्कुल ही तटस्थ हैं। जब **युंकरों** ने टेलीफ़ोन एक्सचेंज पर क़ब्ज़ा कर लिया था, कर्नल पोल्कोवनिकोव ने हुक्म दिया कि स्मोल्नी के टेलीफ़ोन काट दिये जायें, परन्तु मैंने प्रतिवाद किया और ये टेलीफ़ोन काम करते रहे..."

इस बात पर बोल्शेविक बेंचों से विद्रूप की हंसी आयी और दक्षिणपंथी बेंचों से लानतें भेजी गयीं।

श्रेइदेर कहते गये, "और फिर भी वे समझते हैं कि हम प्रतिक्रांतिकारी हैं, और वे हमारे ख़िलाफ़ जनता से रिपोर्ट करते हैं। वे हमसे हमारी आख़िरी मोटर-गाड़ियां छीन कर हमें परिवहन के साधनों से वंचित कर रहे हैं। अगर नगर में अकाल पड़ा, तो इसमें हमारा कोई दोष न होगा। प्रतिवाद करना निरर्थक है ..."

नगर-बोर्ड के बोल्शेविक सदस्य कोबोज़ेव ने इस बात में संदेह प्रगट किया कि सैनिक क्रांतिकारी समिति ने नगरपालिका की गाड़ियों को अपने अधिकार में ले लिया है। अगर यह बात सच भी हो, तो शायद किसी अनधिकृत व्यक्ति ने नागहानी की सूरत में ऐसा किया होगा।

कोबोज़ेव ने आगे कहा, "मेयर महोदय कहते हैं कि हमें हरगिज़ दूमा को राजनीतिक सभा में नहीं बदलना चाहिये, लेकिन यहां मेन्शेविक या समाजवादी-क्रांतिकारी सज्जन जो भी कहते हैं, वह सिवाय पार्टी प्रचार के और कुछ नहीं है। ऐन दूमा के दरवाज़े पर वे बग़ावत के लिये भड़काने वाले अपने ग़ैरक़ानूनी अख़बार 'ईस्क्रा' (चिनगारी), 'सोल्दात्स्की गोलोस' और 'रबोचाया गाज़ेता' बांटते हैं। अगर हम बोल्शेविक भी अपने अख़बार यहां पर बांटने लगें, तो? लेकिन हम ऐसा नहीं करेंगे, क्योंकि हम दूमा का सम्मान करते हैं। हमने नगरपालिका के स्वायत्त-शासन पर हमला नहीं किया है और न ही हम ऐसा करेंगे। लेकिन आपने आबादी के नाम एक अपील शाया की है और हमें भी ऐसा करने का हक़ है ..."

उनके बाद कैडेट शिंगारेव बोलने के लिये खड़े हुए। उन्होंने कहा कि उन लोगों के साथ कोई मेल नहीं बैठ सकता, जिन्हें बाक़ायदा अभ्यारोपण के लिये एटार्नी जनरल के सामने लाया जा सकता है और जिन पर राजद्रोह के अपराध के लिये लाज़िमी तौर पर मुक़द्दमा चलाया जाना चाहिये ... उन्होंने दोबारा यह प्रस्ताव किया कि बोल्शेविक सदस्य दूमा से निकाले जायें। परन्तु यह प्रस्ताव अनिश्चित काल के लिये स्थगित कर दिया गया, क्योंकि इन सदस्यों के ख़िलाफ़ कोई व्यक्तिगत आरोप न थे और वे नगरपालिका-प्रशासन में सक्रिय भाग ले रहे थे।

इसके बाद दो मेन्शेविक अंतर्राष्ट्रीयतावादियों ने उठ कर कहा कि बोल्शेविक सभासदों की अपील प्रत्यक्षतः दंगा-फ़साद के लिये भड़कावा है। पिन्केविच ने कहा, "अगर जो भी बोल्शेविकों के ख़िलाफ़ है, वह

प्रतिक्रांतिकारी है, तो मैं नहीं जानता कि क्रांति और अराजकता में क्या अंतर है... बोल्शेविक निरंकुश जन-साधारण की गरमजोशी का भरोसा कर रहे हैं; हमें सिवाय नैतिक बल के और किसी चीज़ का भरोसा नहीं है। हम दोनों पक्षों के दंगा-फ़साद और हिंसा के प्रति प्रतिवाद करेंगे, क्योंकि हमारा काम शांतिपूर्ण हल ढूंढ़ निकालना है।"

नज़ार्येव ने कहा, "सड़कों पर 'कठघरे में' शीर्षक से जो नोटिस चिपकायी गयी है, जिसमें जनता का मेन्शेविकों और समाजवादी-क्रांतिकारियों का नाश करने के लिये आह्वान किया गया है, एक ऐसा अपराध है, जिसे आप बोल्शेविक लोग धो नहीं सकेंगे। ऐसी घोषणा से आप जिस चीज़ की तैयारी कर रहे हैं, उसके लिए कल की भीषण घटनायें एक प्रस्तावना भर हैं... मैंने हमेशा दूसरी पार्टियों से आपकी सुलह-मसालहत कराने की कोशिश की है, लेकिन इस वक़्त मेरे दिल में आपके लिये हिक़ारत के सिवा और कुछ नहीं है!"

यह सुनना नहीं था कि बोल्शेविक सभासद उछल पड़े और उन्होंने बड़े ग़ुस्से से इस बात का विरोध किया। दूसरी ओर से लोग हाथ हिला हिला कर और गला फाड़ कर चिल्लाने लगे और उन पर लानतों की बौछार करने लगे...

हॉल के बाहर मेरी मुठभेड़ नगर इंजीनियर, मेन्शेविक गोम्बेर्ग और तीन-चार रिपोर्टरों से हो गयी। वे सब के सब बड़े जोश में थे।

"देखा!" उन्होंने कहा। "ये गीदड़ हमसे कितना डरते हैं! उनकी यह जुर्रत नहीं हुई कि दूमा सदस्यों को गिरफ़्तार करें! सैनिक क्रांतिकारी समिति की यह हिम्मत नहीं है कि इस भवन में अपना कमिसार भेजे। अरे, आज ही सदोवाया मार्ग के मोड़ पर मैंने देखा, एक लाल गार्ड एक लड़के को 'सोल्दात्स्की गोलोस' बेचने से रोकने की कोशिश कर रहा था। लड़के ने उसका मुंह चिढ़ाते हुए टिली-लि-ली की। फ़ौरन ही एक भीड़ वहां जुट गयी और लोगों ने उस ठग का वहीं भुरकुस निकाल देना चाहा। भाई अब बस चंद घंटों की बात है। अगर केरेन्स्की न आयें, तो भी इन लोगों के पास सरकार चलाने के लिये आदमी नहीं होंगे। बिल्कुल बेतुकी बात है! सुना है स्मोल्नी में वे आपस में ही लड़-झगड़ रहे हैं!"

मेरे एक समाजवादी-क्रांतिकारी दोस्त ने मुझे अलग ले जा कर

कहा, "मुझे मालूम है उद्धार समिति कहां छिपी हुई है। क्या आप चल कर उनसे बात करना चाहते हैं?"

झुटपुटा हो गया था। शहर की ज़िन्दगी फिर बदस्तूर चलने लगी थी – दुकानें खुली थीं, बत्तियां जल रही थीं और सड़कों पर ख़ासी भीड़-भाड़ थी, लोग धीरे धीरे बहस-मुबाहिसा करते चल रहे थे...

हम ८६, नेव्स्की मार्ग पर आकर एक गलियारे से निकल कर एक बड़े अहाते में आ गये, जिसके चारों ओर ऊंची रिहायशी इमारतें थीं। मेरे दोस्त ने २२९ नम्बर के एक फ़्लैट पर एक ख़ास अंदाज़ से दस्तक दी। भीतर से धक्कम-धक्का और ठेला-ठेल की आवाज़ आई, अंदर का एक दरवाज़ा खटाक से बंद हुआ, फिर बाहर का दरवाज़ा ज़रा-सा खुला और उसमें एक स्त्री का चेहरा दिखाई पड़ा। एक लमहे तक ग़ौर से देखने के बाद वह हमें अंदर ले गई – वह एक अधेड़ उम्र की स्त्री थी, जिसका चेहरा शांत, निर्विकार था। उसने छूटते ही कहा, "किरील, सब ठीक है!" खाने के कमरे में, जहां मेज़ पर एक समोवार 'खद-बद' कर रहा था और डबल-रोटी और मछलियों से भरी रकाबियां पड़ी थीं, एक वर्दीपोश आदमी पर्दों के पीछे से निकला और मज़दूरों के कपड़े पहने हुए एक दूसरा आदमी एक छोटे से कमरे से निकला। उन्हें एक अमरीकी रिपोर्टर से मिलकर बड़ी ख़ुशी हुई। उन्होंने काफ़ी रस लेते हुए कहा कि अगर बोल्शेविकों ने उन्हें पकड़ लिया, तो उन्हें ज़रूर गोली मार दी जायेगी। वे अपना नाम बताने के लिये तैयार नहीं थे, लेकिन दोनों ही समाजवादी-क्रांतिकारी थे...

मैंने उनसे पूछा, "आप अपने अख़बारों में ऐसी झूठी ख़बरें क्यों छापते हैं?"

वर्दीपोश अफ़सर ने इस बात पर नाराज़ हुए बिना जवाब दिया, "हां, मैं जानता हूं। लेकिन हम क्या कर सकते हैं?" उसने अपने कंधों को जुम्बिश दी। "आपको मानना होगा कि हमारे लिये यह ज़रूरी है कि हम लोगों के अन्दर एक ख़ास तरह का मिज़ाज पैदा करें..."

दूसरे आदमी ने बीच में ही टोंक कर कहा, "यह बोल्शेविकों का दुस्साहस मात्र है। उनके बीच कोई बुद्धिजीवी नहीं हैं... मंत्रालय काम करने के लिये तैयार नहीं होंगे... हम एक शहर ही नहीं, एक पूरा देश

है... यह समझते हुए कि वे चंद रोज़ से ज़्यादा अपने पैर टिकाये नहीं रह सकते, हमने फ़ैसला किया है कि हम उनके विरोध की सबसे प्रबल शक्ति की, केरेन्स्की की सहायता करेंगे और सुव्यवस्था पुनःस्थापित करने में मदद पहुंचायेंगे।"

"बहुत अच्छी बात है," मैंने कहा, "लेकिन आप लोग कैडेटों के साथ हाथ क्यों मिला रहे हैं?"

नकली मज़दूर ने निष्कपट मुसकरा कर कहा, "सच कहा जाये, तो बात यह है कि इस घड़ी जन-साधारण बोल्शेविकों के पीछे हैं। इस समय हमारे पीछे कोई नहीं है। हम थोड़े से भी सिपाहियों को जुटा नहीं सकते। हमें हथियार भी सुलभ नहीं हैं... एक हद तक बोल्शेविकों की बात सही है; इस घड़ी रूस में दो ही पार्टियां ऐसी हैं, जिनमें कुछ ताक़त है—बोल्शेविक और प्रतिक्रियावादी, जो सब के सब कैडेटों का दामन पकड़े हुए हैं। कैडेट सोचते हैं कि वे हमारा इस्तेमाल कर रहे हैं, लेकिन दर-असल हम कैडेटों का इस्तेमाल कर रहे हैं। जब हम बोल्शेविकों को चकनाचूर कर लेंगे, हम कैडेटों की ख़बर लेंगे..."

"क्या बोल्शेविकों को नयी सरकार में लिया जायेगा?"

उसने अपना सिर खुजलाते हुए कहा: "यह एक समस्या है। कहने की ज़रूरत नहीं कि अगर उन्हें नहीं लिया जाता, तो वे शायद फिर यही कांड दुहरायें। बहरसूरत संविधान सभा में, यानी अगर संविधान सभा **होती है,** उन्हें शक्ति-संतुलन अपने हाथ में रखने का मौक़ा मिलेगा।"

"और फिर इसके साथ ही," समाजवादी-क्रांतिकारी अफ़सर ने कहा, "नये मंत्रिमंडल में कैडेटों को भी शामिल करने का सवाल पैदा होता है, और उन्हीं कारणों से होता है। आप जानते हैं, कैडेट सचमुच संविधान सभा नहीं चाहते—अगर इस समय बोल्शेविकों को मटियामेट किया जा सकता है, तो बिल्कुल ही नहीं चाहते।" उसने अपना सिर हिलाया। "हम रूसियों के लिये राजनीति एक बला है। राजनीति आप अमरीकी लोगों की घुट्टी में पड़ी है—आप आजीवन इस खेल को खेलते रहे हैं। लेकिन हम? आप जानते ही हैं, हमें कुल साल भर ही तो हुआ!"

"केरेन्स्की के बारे में आपका क्या ख़्याल है?" मैंने पूछा।

"ओह, अस्थायी सरकार के सारे पाप केरेन्स्की के सिर हैं," दूसरे

आदमी ने जवाब दिया। "केरेन्स्की ने खुद हमें पूंजीपति वर्ग के साथ संश्रय मंज़ूर करने के लिए मजबूर किया। अगर उन्होंने इस्तीफ़ा दिया होता, जैसा करने की उन्होंने धमकी दी थी, तो इसका अर्थ होता संविधान सभा से केवल सोलह हफ़्ते पहले मंत्रिमंडल का एक नया संकट, और हम इस संकट से बचना चाहते थे।"

"लेकिन बहरसूरत बात तो यही हुई, क्यों?"

"जी हां, लेकिन हमें क्या मालूम था कि ऐसा होगा। उन लोगों ने, केरेन्स्की और अव्क्सेन्त्येव जैसे लोगों ने हमें चकमा दिया। गोत्स कुछ अधिक उग्र विचारों के हैं। लेकिन सच्चे क्रांतिकारी चेर्नोव हैं और मैं उनके साथ हूं ... यही देखिये, लेनिन ने आज ही संदेश भिजवाया है कि अगर चेर्नोव मंत्रिमंडल में प्रवेश करें, तो उन्हें कोई आपत्ति न होगी।

"हम भी केरेन्स्की सरकार से छुटकारा पाना चाहते थे, लेकिन हमने यह बेहतर समझा कि संविधान सभा का इंतज़ार किया जाये ... जब यह मामला शुरू हुआ, मैं बोल्शेविकों के साथ था, लेकिन मेरी पार्टी की केन्द्रीय समिति ने सर्वसम्मति से बोल्शेविकों का साथ देने के खिलाफ़ फ़ैसला किया – फिर मैं भला क्या कर सकता था? सवाल पार्टी के अनुशासन का था ...

"बोल्शेविक सरकार हफ़्ता भर के अंदर ही टुकड़े टुकड़े हो जायेगी। अगर समाजवादी-क्रांतिकारी बस अलग खड़े होकर इंतज़ार कर सकें, तो सरकार उनकी झोली में आ टपकेगी। लेकिन अगर हम हफ़्ता भर इंतज़ार करें, तो देश में इतनी अधिक विशृंखलता फैल जायेगी कि जर्मन साम्राज्यवादी जीत जायेंगे। इसी लिये बावजूद इस बात के कि सिपाहियों की केवल दो रेजीमेंटों ने हमारा समर्थन करने का वचन दिया, हमने अपना विद्रोह शुरू कर दिया और अब वे भी हमारे खिलाफ़ हो गये हैं ... अब हमारे साथ केवल युंकर ही बच रहे हैं ..."

"लेकिन कज़्ज़ाक – वे आपके साथ नहीं हैं?"

आदमी ने ठंडी सांस लेकर कहा, "वे तो अपनी जगह से हिले भी नहीं। पहले उन्होंने कहा कि अगर पैदल सिपाही उनकी पुश्त में हों, तो वे निकल पड़ेंगे। फिर यह कहा कि उनके आदमी केरेन्स्की के साथ हैं और वे अपना कर्तव्य पूरा कर रहे हैं। उन्होंने यह भी कहा कि

कज़्ज़ाकों पर हमेशा यह इल्ज़ाम लगाया गया कि वे जनवाद के पुश्तैनी दुश्मन हैं... उनकी आख़िरी बात थी, 'बोल्शेविकों ने वादा किया है कि वे हमारी ज़मीनों को नहीं छीनेंगे, लिहाज़ा हम तटस्थ ही रहेंगे।'"

जब यह बातचीत हो रही थी, लोग बराबर आ-जा रहे थे – उनमें से अधिकांश अफ़सर थे, लेकिन उन्होंने अपनी वर्दियों से बिल्ले चीथ डाले थे। हम उन्हें बरोठे में देख सकते थे और उनकी आहिस्ता मगर पुरजोश बातचीत की भनक भी हमारे कानों में पड़ रही थी। कभी कभी आधे सरकाये हुए पर्दों से हमें एक दरवाज़े की झलक मिलती, जो ग़ुस्लख़ाने में खुलता था, जहां कर्नल की वर्दी पहने दोहरे शरीर का एक अफ़सर आराम से कमोड पर बैठा अपने घुटनों पर एक पैड रखे कुछ लिख रहा था। मैंने पहचाना यह पेत्रोग्राद के भूतपूर्व कमांडेंट कर्नल पोल्कोवनिकोव थे, जिनकी गिरफ़्तारी के लिये सैनिक क्रांतिकारी समिति मुंहमांगा इनाम दे सकती थी।

"हमारा कार्यक्रम?" अफ़सर ने कहा। "यह है हमारा कार्यक्रम: भूमि भूमि समितियों के हवाले की जाये। मज़दूरों को उद्योग के नियन्त्रण में पूरा प्रतिनिधित्व दिया जाये। शांति का बेशक एक ज़ोरदार प्रोग्राम हो, लेकिन वैसा अल्टीमेटम नहीं, जैसा बोल्शेविकों ने दुनिया को दे डाला है। बोल्शेविकों ने जन-साधारण से जो वादे किये हैं, वे उन्हें बाहर तो क्या देश के अंदर भी पूरा नहीं कर सकते। हम उन्हें करने नहीं देंगे... उन्होंने किसानों का समर्थन पाने के लिये हमारा भूमि-कार्यक्रम चुरा लिया। यह सरासर बेइमानी है। अगर उन्होंने संविधान सभा के लिये इंतज़ार किया होता..."

"संविधान सभा की बात बेसूद है!" दूसरे अफ़सर ने उसकी बात काट कर कहा। "अगर बोल्शेविक यहां पर समाजवादी राज्य क़ायम करना चाहते हैं, तो हम उनके साथ मिलकर किसी भी सूरत में काम नहीं कर सकते! केरेन्स्की ने एक भयंकर भूल की। उन्होंने जनतन्त्र की परिषद् में यह एलान कर कि उन्होंने बोल्शेविकों की गिरफ़्तारी का हुक्म दिया है अपना इरादा उनके ऊपर ज़ाहिर कर दिया..."

"लेकिन इस वक़्त आप क्या करने का इरादा कर रहे हैं?" मैंने पूछा।

दोनों आदमी एक दूसरे का मुंह देखते रह गये। एक ने कहा, "चंद दिनों के अंदर ही आपको मालूम हो जायेगा। अगर मोर्चे के काफ़ी सिपाही हमारी ओर होते हैं, तो हम बोल्शेविकों के साथ समझौता नहीं करेंगे। नहीं तो हमें शायद समझौता करने के लिये मजबूर होना पड़े..."

वहां से फिर नेव्स्की मार्ग पर आकर हम उछल कर एक ट्राम-गाड़ी में चढ़ गये, जो लोगों से ठसाठस भरी थी और जिसके पायदान बोझ से झुक गये थे और ज़मीन के साथ रगड़ खाते थे। गाड़ी चींटी की चाल से चलती, चीख़ती-कराहती स्मोल्नी का लम्बा फ़ासला तय कर रही थी।

जब हम वहां पहुंचे, साफ़-सुथरे, छोटे क़द के और दुबले-पतले मेन्जीन्स्की चिंतित भाव से नीचे उतर रहे थे। उन्होंने हमें बताया कि मंत्रालयों की हड़ताल अपना रंग दिखा रही थी। उदाहरण के लिए, जन-कमिसार परिषद् ने गुप्त संधियों के प्रकाशन का वादा किया था। लेकिन ये संधियां जिस कर्मचारी के चार्ज में हैं वह, नेरातोव, ग़ायब हो गया है और अपने साथ दस्तावेज़ों को भी लेता गया है। कहा जाता है कि ये दस्तावेज़ें ब्रिटिश दूतावास में छिपा दी गई हैं...

लेकिन इन सबसे बुरी चीज़ बैंकों की हड़ताल थी। "रुपये-पैसे के बिना हम बिल्कुल लाचार हैं," मेन्जीन्स्की ने कहा। "रेल मज़दूरों, डाक-तार कर्मचारियों की तनख़ाहें देनी हैं, मगर कैसे दी जायें... बैंक बंद हैं और जिस राजकीय बैंक के हाथ में परिस्थिति की कुंजी है, वह भी बंद है। रूस में सभी बैंक-क्लर्कों को काम ठप कर देने के लिए घूस दी गयी है...

"लेकिन लेनिन ने हुक्म जारी किया है कि राजकीय बैंक के तहख़ानों के दरवाज़ों को डाइनामाइट से उड़ा दिया जाये और अभी अभी एक आज्ञप्ति निकली है, जिसमें प्राइवेट बैंकों को कल ही खुलने का हुक्म दिया गया है, नहीं तो हम उन्हें ख़ुद-ब-ख़ुद खोल डालेंगे!"

पेत्रोग्राद सोवियत की मीटिंग पूरे ज़ोर पर थी, वहां हथियारबंद लोग भरे हुए थे, और त्रोत्स्की रिपोर्ट दे रहे थे:

"कज़्ज़ाक क्रास्नोये सेलो से पीछे हट रहे हैं" (ज़ोर की उल्लासपूर्ण तालियां), "लेकिन लड़ाई अभी शुरू ही हो रही है। पूल्कोवो में ज़बरदस्त

लड़ाई हो रही है। जितने भी सैनिक दस्ते मिल सकें, उन्हें जल्द से जल्द वहां भेज देना चाहिये ...

"मास्को की ख़बर अच्छी नहीं है। क्रेमलिन **युंकरों** के हाथ में है और मज़दूरों के पास हथियारों की कमी है। वहां क्या फ़ैसला होता है, यह पेत्रोग्राद पर मुनहसर है।

"मोर्चे पर शांति तथा भूमि की आज्ञप्तियां बड़ा जोश पैदा कर रही हैं। केरेन्स्की खाइयों में पेत्रोग्राद के बारे में मनगढ़ंत क़िस्से फैला रहे हैं कि पेत्रोग्राद जल रहा है और ख़ून से नहा रहा है, कि औरतें और बच्चे बोल्शेविकों के हाथों मारे जा रहे हैं। लेकिन कोई उनकी बात मानता नहीं ...

"'ओलेग', 'अव्रोरा' और 'रेस्पूब्लिका' नामक क्रूज़र-पोत नेवा में लंगर डाले हुए हैं, उनकी तोपें नगर के प्रवेश-मार्गों की ओर सीधी कर दी गई हैं ..."

"आप वहां लाल गार्डों के बीच क्यों नहीं जाते?" एक कर्कश आवाज़ आई।

"मैं जा ही रहा हूं!" त्रोत्स्की ने जवाब दिया और मंच से उतर आये। उनका चेहरा हस्ब मामूल से कुछ ज़्यादा ज़र्द था। वह उत्साही मित्रों से घिरे हुए कमरे से जल्दी जल्दी बाहर निकल गये, जहां एक मोटर-गाड़ी उनका इंतज़ार कर रही थी।

उनके बाद कामेनेव बोले और उन्होंने मेल-मिलाप सम्मेलन की कार्रवाइयों का वर्णन किया। उन्होंने बताया कि मेन्शेविकों ने युद्ध-विराम के लिए जो शर्तें पेश की थीं, उन्हें हिक़ारत के साथ ठुकरा दिया गया है। रेल मज़दूर यूनियन की शाखाओं तक ने ऐसे प्रस्ताव के ख़िलाफ़ वोट दिया है ...

"अब जब हमने सत्ता पर अधिकार कर लिया है और अप्रतिहत गति से पूरे रूस को सर कर रहे हैं," उन्होंने ज़ोर देकर कहा, "वे हमसे बस तीन बहुत छोटी सी बातें चाहते हैं: १. हम सत्ता का परित्याग करें; २. सिपाहियों को लड़ाई चलाते जाने पर आमादा करें; ३. किसानों को ज़मीन की बात भूल जाने के लिये तैयार करें ..."

लेनिन दो मिनट के लिये वहां आये – समाजवादी-क्रांतिकारियों के आरोपों का उत्तर देने के लिये।

"वे हमारे ऊपर यह आरोप लगाते हैं कि हमने उनके भूमि-कार्यक्रम को चुरा लिया है..." उन्होंने कहा, "अगर ऐसी बात है, तो हम उनके सामने सिर झुकाते हैं। हमारे लिये यह कार्यक्रम काफ़ी अच्छा है..."

इस प्रकार मीटिंग बड़े ज़ोरशोर से चलती रही – एक नेता के बाद दूसरा नेता आता और लोगों को ब्योरे के साथ समझाता, जोश दिलाता और बहस करता; एक सिपाही के बाद दूसरा सिपाही, एक मज़दूर के बाद दूसरा मज़दूर खड़ा होता और अपने दिल का ग़ुबार निकालता, अपने मन की बात सुनाता... सुनने वाले लोग बराबर बदलते रहते–कुछ जाते, तो उनकी जगह कुछ नये आ जाते। वक़्तन-फ़वक़्तन लोग आते और चीखते – फलां या फलां दस्ते के लोगों को मोर्चे पर जाना है। दूसरे ख़लास हुए या ज़ख़्मी हुए, या हथियारों और साज़-सामान के लिये स्मोल्नी आये सिपाही झुंड के झुंड भीतर आते...

तीन बजे थे और रात ढलने को आ रही थी, जब सभा-मंडल से चलते हुए हमने देखा कि सैनिक क्रांतिकारी समिति के अधिकारी गोल्त्स-मान बेतहाशा दौड़ते हुए वहां आये – उनके चेहरे पर अपूर्व दीप्ति थी।

"सब कुछ ठीक है," उन्होंने मेरा हाथ अपने हाथ में लेते हुए बड़े जोश से कहा। "मोर्चे से तार आया है, केरेन्स्की को चकनाचूर कर दिया गया! यह देखिये!"

उन्होंने हमारी ओर एक पुर्ज़ा बढ़ाया, जिस पर पेंसिल से जल्दी जल्दी कुछ घसीट कर लिखा गया था, और फिर यह देख कर कि हम उसे पढ़ने में असमर्थ हैं, उन्होंने ज़ोर से धाराप्रवाह पढ़ना शुरू किया :

पूल्कोवो, सैनिक स्टाफ़, रात २.१०. बजे।

३०–३१ अक्तूबर की रात इतिहास में सदैव अंकित रहेगी। क्रांति की राजधानी के ख़िलाफ़ प्रतिक्रांतिकारी सेनाओं को लेकर धावा बोलने की केरेन्स्की की कोशिश निर्णायक रूप से विफल कर दी गई है। केरेन्स्की पीछे हट रहे हैं और हम आगे बढ़ रहे हैं। पेत्रोग्राद के सिपाहियों, मल्लाहों और मज़दूरों ने दिखा दिया है कि वे हाथ में हथियार लेकर जनवाद की

इच्छा और प्रभुता को लागू कर सकते हैं और करेंगे। पूंजीपति वर्ग ने क्रांतिकारी सेना को विलग करने का प्रयत्न किया। केरेन्स्की ने कज़्ज़ाकों की शक्ति से उसे खंडित करने का प्रयत्न किया। दोनों योजनायें दयनीय रूप से विफल हुईं।

मज़दूर तथा किसान जनवाद की प्रभुता के महान् विचार ने सेना की पांतों को एकजुट किया और उसके संकल्प को दृढ़ बनाया। आज से पूरे देश को इस बात का विश्वास हो जायेगा कि सोवियतों की सत्ता कोई क्षणिक सत्ता नहीं है, वरन् वह एक अटल वास्तविकता है... केरेन्स्की की हार ज़मींदारों की, पूंजीपतियों की और सामान्यतः कोर्नीलोवपंथियों की हार है। केरेन्स्की की हार जनता के शांतिपूर्ण, स्वतंत्र जीवन, भूमि, रोटी और सत्ता के अधिकार पर मुहर लगा देती है। अपने वीरत्वपूर्ण प्रहार से पूल्कोवो-दस्ते ने मज़दूरों और किसानों की क्रांति के ध्येय को प्रबल किया है। अब पीछे की ओर लौटा नहीं जा सकता। हमारे सामने संघर्ष हैं, बाधायें हैं, क़ुर्बानियां हैं, परंतु हमारा रास्ता साफ़ है और हमारी विजय निश्चित है।

क्रांतिकारी रूस तथा सोवियत सत्ता कर्नल वाल्डेन की कमान में लड़ने वाले पूल्कोवो-दस्ते पर गर्व कर सकती है। युद्ध में वीरगति पाने वाले सैनिक अमर हैं! क्रांति के योद्धा, जनता के प्रति निष्ठा रखनेवाले सैनिक और अफ़सर गौरवान्वित हैं!

क्रांतिकारी समाजवादी रूस, जनता का रूस ज़िन्दाबाद!

परिषद् की ओर से

ले० त्रोत्स्की, जन-कमिसार

ज़्नामेन्स्की चौक से गाड़ी में बैठे घर जाते हुए, हमने निकोलाई रेलवे-स्टेशन के सामने एक असाधारण भीड़ देखी। कई हज़ार मल्लाह, जिनके बीच संगीनें चमक रही थीं, वहां इकट्ठे थे।

स्टेशन की सीढ़ियों पर खड़ा **विक्जेल** का एक सदस्य उनसे विनम्रता से कह रहा था:

"साथियो, हम आपको मास्को नहीं ले जा सकते। हम तटस्थ हैं।

उम किसी भी पक्ष के सैनिकों को नहीं ले जाते। हम आपको मास्को नहीं ले जा सकते, जहां अभी से भयानक गृहयुद्ध छिड़ा हुआ है..."

चौक में भरी उत्तेजित भीड़ उस आदमी पर बरस पड़ी। मल्लाह आगे बढ़ने लगे। यकायक स्टेशन का एक दूसरा फाटक खुल गया, उसमें दो या तीन ब्रेकमेन, एक फायरमैन और एकाध और आदमी खड़े थे।

"इधर आइये, साथियो!" उनमें से एक ने चिल्ला कर कहा। "हम आपको मास्को ले चलेंगे या व्लादीवोस्तोक या आप जहां भी चाहें वहां! इन्कलाब ज़िन्दाबाद!"

नौवां अध्याय

विजय

पहला आदेश

पूल्कोवो-दस्ते के सिपाहियों के नाम

१३ नवंबर १९१७, सवेरे ९.३८ बजे

सख़्त लड़ाई के बाद पूल्कोवो-दस्ते के सिपाहियों ने प्रतिक्रांतिकारी सेनाओं को बिल्कुल ही खदेड़ दिया ; वे अपने स्थानों से अस्त-व्यस्त भाग खड़ी हुईं और त्सारस्कोये सेलो की आड़ में पाव्लोव्स्क द्वितीय और गातचिना की ओर पीछे हटीं।

हमारे आगे बढ़े हुए दस्तों ने त्सारस्कोये सेलो के उत्तर-पूर्वी छोर और अलेक्सान्द्रोव्स्काया स्टेशन पर क़ब्ज़ा कर लिया। कोलपिनो का दस्ता हमारी बायीं ओर था और क्रास्नोये सेलो का दस्ता दायीं ओर।

मैंने पूल्कोवो की सेना को आदेश दिया कि वह त्सारस्कोये सेलो पर कब्ज़ा कर ले, उसके प्रवेश-मार्गों की, ख़ास तौर पर गातचिना की ओर के मार्ग की मोर्चाबंदी करे।

मैंने यह भी आदेश दिया कि वह आगे बढ़ कर पाव्लोव्स्कोये पर क़ब्ज़ा कर ले, उसके दक्षिण की ओर मोर्चाबंदी करे और द्नो स्टेशन तक रेलवे लाइन अपने हाथ में कर ले।

सैनिकों के लिए आवश्यक है कि उन्होंने जिन स्थानों पर क़ब्ज़ा किया है, उनको खाइयां खोद कर और बचाव की ऐसी दूसरी तामीरें कर सुदृढ़ करने के लिए सभी उपाय करें।

उनके लिए आवश्यक है कि वे कोलपिनो और क्रास्नोये सेलो के दस्तों के साथ और पेत्रोग्राद की रक्षा के लिए नियुक्त मुख्य सेनापति के स्टाफ़ के साथ भी घनिष्ठ संपर्क स्थापित करें।

हस्ताक्षरित,

केरेन्स्की की प्रतिक्रांतिकारी सेनाओं के ख़िलाफ़ लड़ने वाली सभी सेनाओं के मुख्य सेनापति,

लेफ़्टीनेंट-कर्नल मुराव्योव

मंगलवार, सुबह। लेकिन यह हो क्या गया? अभी दो ही रोज़ पहले पेत्रोग्राद के इर्द-गिर्द नेतृत्वहीन सिपाहियों के झुंड के झुंड बेमक़सद, बेसरोसामान घूम रहे थे – उनके पास रसद-पानी न था, तोपें न थीं, न कोई योजना ही थी। अनुशासनहीन लाल गार्डों और बग़ैर अफ़सरों के सिपाहियों के इस विसंगठित समुदाय को किस चीज़ ने एक सूत्र में बांध कर उसे एक सेना का रूप दिया था, जो स्वयं अपने निर्वाचित हाई कमान की वशानुवर्ती थी और जो इतनी तपी हुई थी कि तोपों और कज़्ज़ाक घुड़सवारों के हमले का मुक़ाबला कर सकी और उसे चूर चूर कर सकी?[1]

विद्रोही जनता में कुछ ऐसा गुण है कि वह पुरानी सैनिक नज़ीरों को बरतरफ़ कर देती है। इस संबंध में फ़ांसीसी क्रांति की फटेहाल सेनाओं को – वाल्मी और वेइसेमबुर्ग* की विजयी सेनाओं को – भुलाया नहीं जा सकता। सोवियत सेनाओं के ख़िलाफ़ **युंकरों**, कज़्ज़ाकों, ज़मींदारों, अमीरज़ादों, यमदूत सभाइयों का भारी जमाव था – ज़ार का नया अवतार हो रहा था, ज़ारशाही की ख़ुफ़िया पुलिस **ओख़राना** की और साइबेरिया में जेल और काला पानी की बेड़ियां फिर गढ़ी जा रही थीं। ऊपर से जर्मनों का सर्वव्यापी, भीषण ख़तरा था... कार्लाइल के शब्दों में, विजय का अर्थ था "अनंत देवत्व तथा स्वर्णयुग!"

इतवार की रात सैनिक क्रांतिकारी समिति के कमिसार लड़ाई के मैदान से निराश लौट रहे थे। पेत्रोग्राद की गैरिसन ने अपनी पांच आदमियों की – दो अफ़सरों और तीन सिपाहियों की – समिति, अपना

---

* २० सितम्बर १७९२ को हुई वाल्मी की ऐतिहासिक लड़ाई में फ़्रांस क्रांतिकारी सेना के वालंटियर दस्तों ने प्रशियाई सैनिक टुकड़ियों को, जो पेरिस की ओर बढ़ रही थीं, हरा दिया और उन्हें पीछे हटने पर मजबूर किया। १७९४ में वेइसेमबुर्ग की लड़ाई में फ़ांसीसी क्रांतिकारी सेना ने, जिसकी कमान वास्तव में सेंट-जुस्त के हाथ में थी, आस्ट्रियाई सेना को चूर कर दिया और उसे फ़ांस की सीमाओं से पीछे खदेड़ दिया। – सं०

सैनिक स्टाफ़ निर्वाचित किया, जिनके बारे में साधिकार यह घोषणा की गयी कि वे प्रतिक्रांति के कलुष से सर्वथा मुक्त हैं। कमान भूतपूर्व प्रतिरक्षावादी कर्नल मुराव्योव के हाथ में थी, जिनकी कारगुज़ारी के बारे में शक न था, लेकिन फिर भी जिनके ऊपर कड़ी नज़र रखना ज़रूरी था।* कोलपिनो में, ओबूख़ोवो में, पूल्कोवो और क्रास्नोये सेलो में अस्थायी सैनिक दस्तों का गठन किया गया, और जैसे जैसे भटके हुए सिपाही चारों ओर से आ आकर इन दस्तों में शामिल होने लगे, उनका आकार बढ़ने लगा। सिपाही, मल्लाह, लाल गार्ड, रेजीमेंटों के हिस्से, पैदल सिपाही, घुड़सवार और तोपख़ाने – ये सब आकर इन दस्तों में मिल गये थे। उनमें कुछ बख़्तरबंद गाड़ियां भी शामिल हो गई थीं।

पौ फटी और केरेन्स्की के कज़्ज़ाकों की गश्ती टुकड़ियों के साथ इन सिपाहियों का सामना हुआ। छिटपुट गोलियां चलीं और आत्मसमर्पण करने को कहा गया। बीहड़ मैदान में ठंडी ख़ामोश हवा में लड़ाई की आवाज़ गूंजने लगी और यह आवाज़ अपने छोटे छोटे अलावों के चारों ओर बैठे इंतज़ार करते हुए झुंड के झुंड घुमंतू सिपाहियों के कानों में पड़ी... अच्छा, तो लड़ाई शुरू हो रही है! और ये सिपाही लड़ाई के मैदान की तरफ़ बढ़े। सीधे राजमार्गों से आ रहे मज़दूरों ने अपने क़दम बढ़ाये... इस प्रकार आक्रमण के प्रत्येक बिंदु पर क्रुद्ध मानवों के झुंड अपने आप बटुर गये, जहां पहुंचते ही कमिसारों ने उनका स्वागत किया, उन्हें ख़ास ख़ास जगहों में तैनात किया और बताया कि उन्हें क्या काम करना है। यह **उनकी** अपनी लड़ाई थी, **अपनी** दुनिया के लिये उनकी लड़ाई और जिन अफ़सरों के हाथ में कमान थी, वे **उन्हीं** के द्वारा चुने गये थे। इस घड़ी असंख्य इच्छायें एकाकार होकर एक इच्छा में बदल गयी थीं।

इस लड़ाई में जिन लोगों ने भाग लिया, उन्होंने मुझे बताया कि किस प्रकार मल्लाह तब तक दनादन गोलियां चलाते रहे, जब तक कि उनके कारतूस चुक नहीं गये और फिर वे दुश्मन के ऊपर एकबारगी टूट पड़े;

---

* **मुराव्योव** ढुलमुल राजनीतिक विचारों के व्यक्ति थे। सोवियतों की ओर आने से पहले उन्होंने "विजय पर्यंत युद्ध" के नारे का समर्थन किया। कोर्नीलोव विद्रोह के दौरान उन्होंने वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारियों के साथ सांठ-गांठ की। बाद में वह सोवियत सत्ता के शत्रुओं की ओर हो गये। – **सं०**

किस प्रकार मामूली मज़दूर, जिन्हें लड़ाई का कोई इल्म न था, हमला करते हुए कज़्ज़ाक घुड़सवारों पर झपटे, उन्हें उनके घोड़ों से खींचकर नीचे गिरा दिया ; किस प्रकार अनाम जनता के दल के दल घुप्प अंधेरे में रणक्षेत्र के चतुर्दिक जुट कर तूफ़ान की तरह उठे और शत्रु के ऊपर छा गये सोमवार को आधी रात होते होते कज़्ज़ाकों के पैर उखड़ गये और वे अपना तोपख़ाना पीछे छोड़कर भाग खड़े हुए। सर्वहारा सेना दूर तक फैले हुए ऊबड़-खाबड़ मोर्चे पर आगे बढ़ी और देखते देखते त्सारस्कोये सेलो में उमड़ पड़ी। दुश्मन को इतना भी मौक़ा न मिला कि वह उस वृहत् सरकारी रेडियो स्टेशन को नष्ट कर सके, जिससे इस समय स्मोल्नी के कमिसार दुनिया को ललकार ललकार कर अपनी विजय-गाथा, अपनी प्रशस्तियां प्रसारित कर रहे थे...

सभी मज़दूरों तथा सैनिकों के प्रतिनिधियों की सोवियतों के नाम

१२ नवम्बर को त्सारस्कोये सेलो के पास ख़ूंरेज़ लड़ाई में क्रांतिकारी सेना ने केरेन्स्की और कोर्नीलोव की प्रतिक्रांतिकारी सेना को हरा दिया। क्रांतिकारी सरकार के नाम पर मैं सभी रेजीमेंटों को आदेश देता हूं कि वे क्रांतिकारी जनवाद के शत्रुओं पर हमला बोल दें और केरेन्स्की को गिरफ़्तार करने के लिये सभी उपाय करें और ऐसे किसी भी दुस्साहसिक कार्य का विरोध भी करें, जिससे क्रांति की उपलब्धियां और सर्वहारा की विजय ख़तरे में पड़ सकती हो।

क्रांतिकारी सेना जिन्दाबाद!

मुराव्योव

प्रांतों से ख़बरें...

सेवास्तोपोल में स्थानीय सोवियत ने शासन-सूत्र अपने हाथ में ले लिया है ; बन्दरगाह में मौजूद जंगी जहाजों के मल्लाहों की एक विशाल सभा ने अपने अफ़सरों को मजबूर किया कि वे उनके साथ क़दम मिला

कर नयी सरकार के प्रति निष्ठा की शपथ लें। नीजनी नोवगोरोद नगर सोवियत के हाथ में है। कज़ान से ख़बर आयी कि वहां सड़कों पर लड़ाई हो रही है – एक ओर बोल्शेविक गैरिसन, दूसरी ओर **युंकर** लोग और एक तोपख़ाना ब्रिगेड ...

मास्को में फिर घमासान लड़ाई छिड़ गयी थी। क्रेमलिन और नगर के मध्य भाग पर **युंकरों** और सफ़ेद गार्डों का क़ब्ज़ा था, जिनपर सैनिक क्रांतिकारी समिति के सिपाही चारों ओर से छापा मार रहे थे। सोवियत तोपख़ाना स्कोबेलेव चौक में बैठाया गया था और वहां से नगर दूमा-भवन, कलक्टरी तथा मेट्रोपोल होटल पर गोलाबारी की जा रही थी। त्वेरस्काया तथा निकीत्स्काया सड़कों के पत्थर खाइयों और बैरिकेडों के लिए उखाड़ डाले गये थे। बड़े बड़े बैंकों और कोठियों वाली जगहों पर मशीनगनों से गोलियों की बौछार की जा रही थी। बत्तियां गुल थीं, टेलीफ़ोन काम नहीं कर रहे थे। शहर की आबादी का पूंजीवादी हिस्सा तहख़ानों में छिप गया था ... ताज़ा समाचार-बुलेटिन के अनुसार सैनिक क्रांतिकारी समिति ने सार्वजनिक सुरक्षा समिति* को अल्टीमेटम देकर मांग की थी कि वे क्रेमलिन छोड़ दें, नहीं तो उस पर गोलाबारी की जायेगी।

"क्रेमलिन पर गोलाबारी? भला उनकी जुर्रत भी होगी!" साधारण नागरिक ने कहा।

वोलोग्दा से दूर साइबेरिया में चिता तक, प्स्कोव से काले सागर तटवर्ती सेवास्तोपोल तक, बड़े बड़े शहरों में और छोटे छोटे गांवों में भी गृहयुद्ध की आग भड़क उठी। हज़ारों कारख़ानों, गांव-समुदायों, रेजीमेंटों, सेनाओं, समुद्र में संतरण कर रहे जहाज़ों के अभिनंदन-संदेश, जनता की सरकार के लिए अभिनंदन-संदेश पेत्रोग्राद पहुंचने लगे।

नोवोचेर्कास्क से क़ज़्ज़ाक सरकार ने केरेन्स्की को तार दिया, "**कज़्ज़ाक सैनिक सरकार अस्थायी सरकार को और जनतंत्र की परिषद् के सदस्यों को बुलावा भेजती है कि अगर संभव हो, तो वे नोवोचे-**

---

* **सार्वजनिक सुरक्षा समिति** – नवम्बर, १९१७ में मास्को में प्रतिक्रांति का केन्द्र। – **सं०**

कोल्ख चले आयें, जहां हम मिल-जुल कर बोल्शेविकों के ख़िलाफ़ संघर्ष संगठित कर सकते हैं।"

फ़िनलैंड में भी हलचल शुरू हो गयी थी। हेलसिंगफ़ोर्स की सोवियत और त्सेन्त्रोबाल्त (बाल्टिक बेड़े की केन्द्रीय समिति) ने संयुक्त रूप से घोषणा का प्रकाशन किया था और कहा था कि बोल्शेविक सेनाओं के साथ किसी तरह की छेड़छाड़ करने की कोशिश को और सोवियत के आदेशों के प्रति सशस्त्र प्रतिरोध को सख़्ती के साथ कुचल दिया जायेगा। इसके साथ ही, फ़िनलैंड की रेल मज़दूर यूनियन ने एक देशव्यापी हड़ताल बुलायी, ताकि समाजवादी संसद ने, जिसे केरेन्स्की ने भंग कर दिया था, सन १९१७ में जो क़ानून स्वीकृत किये थे, उन्हें कार्यान्वित किया जा सके...

सुबह तड़के ही निकल कर मैं स्मोल्नी पहुंचा। बाहरी फाटक से घुस कर जब मैं लकड़ी की बनी लंबी पटरी से जा रहा था, मैंने देखा शांत, निस्तब्ध, धूमिल आकाश से बर्फ़ की नर्म पंखुड़ियां हल्के हल्के झर रही हैं। यह मौसम की पहली बर्फ़ थी। दरवाज़े पर खड़े सिपाही की बत्तीसी खिल गयी। वह ख़ुशी से चीख़ पड़ा, "बर्फ़! सेहतबख़्श बर्फ़!" अंदर लंबे लंबे धुंधले हॉलों में और मनहूस कमरों में सन्नाटा छाया हुआ था। इतनी बड़ी इमारत में तिनका भी नहीं हिल रहा था। और फिर एक गहरी अजीब-सी आवाज़ मेरे कानों में पड़ीं। चारों ओर नज़र दौड़ा कर मैंने देखा, हर जगह, फ़र्श पर, दीवारों के साथ लोग सोये पड़े हैं। रुक्ष, कठोर, मैले-कुचैले लोग, मज़दूर और सिपाही, कीचड़ में सने, अकेले या झुंड के झुंड, घोड़ा बेच कर सो रहे थे—अपने से बिल्कुल बेख़बर! कुछ ने अपने ज़ख़्मों पर पट्टियों की जगह गूदड़-गादड़ बांध रखे थे, जिन पर ख़ून के धब्बे थे। बंदूकें और कारतूस की पेटियां चारों तरफ़ बिखरी पड़ी थीं... यह थी विजयी सर्वहारा सेना!

ऊपर रेस्तोरां में इतने आदमी पड़े हुए थे कि उनके बीच से निकलना मुश्किल था। हवा में घुटन थी। कुहासाछन्न खिड़कियों से मद्धिम रोशनी आ रही थी। एक पुराना दबा-पिचका समोवार काउंटर पर रखा हुआ था-बिल्कुल ठंडा—और पास में बहुत से गिलास जिनमें चाय पी गयी थी पड़े थे। नजदीक ही सैनिक क्रांतिकारी समिति की ताज़ी बुलेटिन की एक कापी

उल्टी पड़ी थी, और उस पर किसी की टेढ़ी-मेढ़ी लिखावट थी। दर-असल यह किसी सिपाही ने फ़र्श पर लुढ़क कर सो जाने से पहले अपने उन साथियों की यादगार में लिखा था, जो केरेन्स्की के ख़िलाफ़ लड़ाई में खेत रहे थे। रोशनाई जगह जगह फैली हुई थी, शायद लिखते हुए कुछ आंसू टपक पड़े थे...

अलेक्सेई विनोग्रादोव	द० लेओन्स्की
द० मोस्क्वीन	द० प्रेओब्राजेन्स्की
स० स्तोलबिकोव	व० लाइदान्स्की
अ० वोस्क्रेसेन्स्की	मि० बेर्चिकोव

ये आदमी १५ नवंबर, १६१६ को सेना में भर्ती किये गये थे। उनमें से केवल तीन बचे हैं—

मिख़ाईल बेर्चिकोव
अलेक्सेई वोस्क्रेसेन्स्की
द्मीत्री लेओन्स्की

सोओ, वीरो, चैन की नींद सोओ,
तुमने, हमारे प्यारो, सुख और अनंत शांति अर्जित की है।
अपनी क़ब्र की मिट्टी के नीचे
तुमने अपनी पांतों को एकजुट किया है।
सोओ नागरिको!

केवल सैनिक क्रांतिकारी समिति अभी भी काम कर रही थी, उसके लिये नींद हराम थी। भीतरी कमरे से निकलते हुए स्क्रिप्निक ने कहा कि गोत्स को गिरफ़्तार कर लिया गया है, लेकिन अव्क्सेन्त्येव की तरह उन्होंने भी इस बात से साफ़ इनकार किया कि उन्होंने उद्धार समिति की घोषणा पर हस्ताक्षर किया था। खुद उद्धार समिति ने गैरिसन के नाम अपनी अपील को रद्द कर दिया। स्क्रिप्निक ने बताया कि शहर की रेजीमेंटों

[illegible] भी अशान्ति थी, मगर वोलीन्स्की रेजीमेंट ने केरेन्स्की के खिलाफ हथियार उठाने से इनकार कर दिया था।

[illegible] के नेतृत्व में "तटस्थ" सैनिकों के कई दस्ते गातचिना में मौजूद थे और वे केरेन्स्की को इसके लिये क़ायल करने की कोशिश कर रहे थे कि वह पेत्रोग्राद पर अपना हमला बंद करें।

[illegible] ने हंसकर कहा, "अब किसी के 'तटस्थ' रहने का सवाल नहीं रह गया है। हमारी जीत हुई है!" उसके तीखे दढ़ियल चेहरे पर [illegible] रोशनी थी, गोया उसे इलहाम हासिल हुआ हो। "मोर्चे से साठ से ज़्यादा प्रतिनिधि यहां पहुंचे हैं और उन्होंने हमें, रूमानियाई मोर्चे के सिपाहियों को छोड़कर, जिनकी कोई ख़बर नहीं मिली है, बाक़ी सभी सेनाओं के समर्थन का आश्वासन दिया है। सैनिक समितियों ने पेत्रोग्राद से पहुंचने वाले समाचारों को दबाने की कोशिश की है, परंतु अब हमने संदेशवाहकों की एक नियमित व्यवस्था स्थापित कर ली है..."

नीचे सामने के हॉल में, नयी सरकार की स्थापना के लिये होने वाले सम्मेलन के रात भर के अधिवेशन से थक कर चूर, मगर फिर भी [illegible] कामेनेव प्रवेश कर ही रहे थे। उन्होंने मुझे बताया, "समाजवादी-क्रान्तिकारी अब हम नयी सरकार में शामिल करने का रुझान रखते हैं। [illegible] दल क्रान्तिकारी अदालतों से घबराये हुए हैं। वे मारे दहशत के मांग कर रहे हैं कि वे तभी आगे बातचीत करेंगे, जब हम इन अदालतों को भंग कर दें... हमने **विक्जेल** के एक यकरंगी समाजवादी मंत्रिमंडल बनाने के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया है और अब वे अपने इस प्रस्ताव को विस्तृत रूप दे रहे हैं। आप देखते हैं ये सारी बातें हमारी विजय से पैदा होती हैं। जब हम दबे हुए थे, ये हमें किसी भी क़ीमत पर लेने के लिये तैयार नहीं थे, लेकिन अब सभी इस हक़ में हैं कि सोवियतों के साथ किसी न किसी तरह का समझौता होना चाहिये... हमें जिस चीज़ की ज़रूरत है, वह है वास्तव में निर्णायक विजय। केरेन्स्की युद्ध-विराम चाहते हैं, परन्तु उसे आत्मसमर्पण करना होगा..."[2]

यह था बोल्शेविक नेताओं का मिज़ाज*। जब एक विदेशी पत्रकार

* [illegible] की [illegible] अखिल रूसी रेल मज़दूर यूनियन की कार्यकारिणी समिति [illegible] क्रान्ति के बाद [illegible] विरोधी [illegible] का एक मुख्य

ने त्रोत्स्की से पूछा कि क्या वह दुनिया को कोई बयान देना चाहेंगे, उन्होंने जवाब दिया : "इस घड़ी अगर हम कोई बयान दे सकते हैं, तो वही जो हम अपनी तोपों के दहानों से दे रहे हैं!"

परन्तु विजय के इस उल्लास के भीतर ही भीतर वास्तविक चिंता का एक भाव भी छिपा हुआ था – वह चिंता थी वित्त के प्रश्न को लेकर। बैंक-कर्मचारी यूनियन ने सैनिक क्रांतिकारी समिति के आदेशानुसार बैंकों को खोलना तो दूर बाक़ायदा एक मीटिंग करके हड़ताल की घोषणा कर दी थी। स्मोल्नी ने राजकीय बैंक से साढ़े तीन करोड़ रूबल की मांग की थी, लेकिन कैशियर ने ख़ज़ाने में ताला लगा दिया था और वह सिर्फ़ अस्थायी सरकार के प्रतिनिधियों को रुपया दे रहा था। प्रतिक्रियावादी राजकीय बैंक का अपने एक राजनीतिक अस्त्र के रूप में उपयोग कर रहे थे। उदाहरण के लिये, जब **विक्जेल** ने सरकारी रेल कर्मचारियों की तनख़ाहों की अदायगी के लिये पैसा मांगा, तो उसे स्मोल्नी का रास्ता दिखाया गया, उससे कहा गया, जाओ स्मोल्नी से मांगो ...

मैं नये कमिसार से मुलाक़ात करने राजकीय बैंक गया। पेत्रोविच नामक तांबाई रंग के बालों वाले यह सज्जन उक्राइनी बोल्शेविक थे।

केन्द्र बन गई थी, एक प्रस्ताव पास किया, जिसमें सभी "समाजवादी" पार्टियों की एक सरकार की मांग की गयी थी। लेनिन तथा केन्द्रीय समिति ने परिकल्पना की थी कि विक्जेल के साथ वार्ता "युद्ध के लिए एक कूटनीतिक पर्दे" का काम देगी। परन्तु कामेनेव और सोकोलनिकोव ने, जिन्होंने इस वार्ता में बोल्शेविकों का प्रतिनिधित्व किया, लेनिन तथा केन्द्रीय समिति के निर्देशों का उल्लंघन कर विक्जेल की मांगों को मान लिया और सरकार के अन्दर प्रतिक्रान्तिकारी मेन्शेविक तथा समाजवादी-क्रान्तिकारी पार्टियों को शामिल करना मंजूर कर लिया।

१५ नवम्बर को केन्द्रीय समिति ने लेनिन के सुझाव पर एक प्रस्ताव स्वीकृत किया, जिसके द्वारा इन पार्टियों के साथ समझौते की नीति को ठुकरा दिया गया। प्रस्ताव में इस बात पर बल दिया गया था कि "सोवियत सत्ता के नारे का परित्याग किये बिना ख़ालिस बोल्शेविक सरकार की नीति को छोड़ देना असम्भव है," क्योंकि सोवियत की अखिल रूसी कांग्रेस ने इसी सरकार के हाथ में सत्ता सुपुर्द की है। इस प्रकार रीड द्वारा उद्धृत कामेनेव के शब्द सभी बोल्शेविकों की नहीं, केन्द्रीय समिति के अन्दर केवल उस छोटे से अवसरवादी दल की भावनाओं को व्यक्त करते है, जिसकी दृष्टि में रूस में समाजवादी क्रान्ति असम्भव थी।**—सं०**

अस्थायी क्लर्क बैंक को जिस अस्त-व्यस्त स्थिति में छोड़ गये थे, वह उसे ठीक करने और व्यवस्था स्थापित करने की कोशिश कर रहे थे। उस विशाल भवन के सभी कार्यालयों में वालंटियर मज़दूर, सिपाही और मल्लाह अजीब उलझन और परेशानी की मुद्रा में बड़े बड़े खातों पर झुके हुए थे। गाढ़े मानसिक परिश्रम से उन्हें दांतों पसीना आ रहा था और प्राण गले तक आ गये थे।

दूमा-भवन में ख़ासी भीड़ थी। नयी सरकार को अभी भी बाज़ औक़ात चुनौती दी जा रही थी, लेकिन बाज़ औक़ात ही। केन्द्रीय भूमि समिति ने किसानों से अपील करते हुए उन्हें आदेश दिया था कि वे सोवियतों की कांग्रेस द्वारा स्वीकृत भूमि-आज्ञप्ति को न मानें, क्योंकि उससे उलझाव पैदा होगा और गृहयुद्ध भड़केगा। मेयर श्रेइदेर ने घोषणा की कि बोल्शेविक विद्रोह के कारण संविधान सभा के चुनावों को अनिश्चित काल के लिये स्थगित कर देना पड़ेगा। गृहयुद्ध की उग्रता और भीषणता से स्तंभित सभी आदमियों के मन में दो ख़ास सवाल थे – पहला, रक्तपात बंद करने का सवाल[3] और दूसरा, नयी सरकार की स्थापना करने का। अब "बोल्शेविकों को नेस्तनाबूद करने" की बातचीत बन्द हो चुकी थी। जन-समाजवादियों और किसानों की सोवियतों को छोड़कर शायद ही कोई बोल्शेविकों को सरकार से अलग रखने की बात कर रहा था। यहां तक कि स्मोल्नी के सबसे कट्टर शत्रु **स्ताव्का** (सदर मुकाम) में स्थापित केन्द्रीय सैनिक समिति ने मोगिल्योव से फ़ोन किया: "अगर नये मंत्रिमंडल का गठन करने के लिए बोल्शेविकों के साथ समझौता क़ायम करना ज़रूरी है, तो हम उन्हें मंत्रिमंडल में **अल्पमत में** शामिल करने के लिये राज़ी हैं।"

'प्राव्दा' ने केरेन्स्की की "मानव-प्रेमी भावनाओं" की ओर विद्रूप के भाव से ध्यान आकर्षित करते हुए उद्धार समिति के नाम उनके संदेश को प्रकाशित किया:

उद्धार समिति तथा उसके गिर्द एकजुट सभी जनवादी संगठनों के प्रस्तावों के मुताबिक मैंने विद्रोहियों के खिलाफ हर तरह की फ़ौजी कार्रवाई बंद कर दी है। समिति के एक प्रतिनिधि को समझौते की बातचीत के लिये

भेजा गया है। निरर्थक रक्तपात को रोकने के लिये आप सभी तरह के उपाय करें।

विक्जेल ने रूस के कोने कोने में इस आशय का तार भेजा:

समझौते की आवश्यकता को माननेवाले युद्धरत पक्षों के प्रतिनिधियों के साथ रेल-मज़दूर यूनियन का जो सम्मेलन हुआ है, वह गृहयुद्ध में, विशेषतः जब वह क्रांतिकारी जनवाद के विभिन्न दलों के बीच चलाया जा रहा हो, राज़नीतिक आतंक के इस्तेमाल के प्रति प्रबल प्रतिवाद प्रगट करता है और घोषणा करता है कि राजनीतिक आतंक, वह चाहे जिस भी रूप में हो, नयी सरकार स्थापित करने के लिये समझौते की बातचीत के विचार का ही खंडन है ...

सम्मेलन* ने अपने शिष्टमंडलों को मोर्चे के लिए, गातचिना के लिये रवाना किया। सम्मेलन में ऐसा लगता था कि सभी बातें अंतिम रूप से तय हो जानेवाली हैं। उसमें यहां तक फ़ैसला कर लिया गया था कि एक अस्थायी जन-परिषद् का चुनाव किया जायेगा, जिसमें क़रीब चार सौ सदस्य होंगे – ७५ स्मोल्नी के प्रतिनिधि, ७५ पुरानी **त्से-ई-काह** के और शेष सदस्य नगर दूमाओं, ट्रेड-यूनियनों, भूमि समितियों तथा राजनीतिक पार्टियों के बीच बंटे होंगे। नये प्रधान-मंत्री के लिये चेर्नोव का नाम लिया गया। अफ़वाह यह थी कि लेनिन और त्रोत्स्की को नयी सरकार से अलग रखा जायेगा ...

दोपहर के क़रीब मैं फिर स्मोल्नी भवन के सामने था और क्रांतिकारी मोर्चे के लिए रवाना होने के लिये तैयार एक एम्बुलेंस-गाड़ी के ड्राइवर से बात कर रहा था। मैंने उससे पूछा कि क्या मैं उसके साथ चल सकता हूं। बेशक, उसने कहा। ड्राइवर दरअसल यूनिवर्सिटी का एक

---

* इशारा "मेल-मिलाप सम्मेलन" – एक नई सरकार बनाने के लिए सम्मेलन – की ओर है। – **सं०**

विद्यार्थी था, जो अब वालंटियर हो गया था। और जब हमारी गाड़ी सड़क से सरपट भागी जा रही थी, वह पीछे मुड़ कर भ्रष्ट जर्मन फ़िकरे बोलता "Also, gut! Wir nach die Kasernen zu essen gehen!"* जाता: उसकी बात से मैंने समझा कि हम किसी बारिक में रूक कर खाना खायेंगे।

कीरोचनाया मार्ग पर आकर हम एक बहुत बड़े अहाते में दाख़िल हुए, जिसके चारों ओर फ़ौजी इमारतें थीं। अंधेरी सीढ़ियां चढ़ कर हम एक कमरे में पहुंचे। उसकी छत बहुत नीची थी और उसमें बस एक ही खिड़की थी, जिससे रोशनी आ रही थी। एक लम्बी लकड़ी की मेज़ के चारों ओर करीब बीस सिपाही बैठे थे। वे लकड़ी की चम्मचों से एक बड़े भारी टब से, जैसा अमूमन नहाने-धोने के काम आता है, **श्ची** (बंदगोभी का शोरबा) निकाल निकाल कर खाते और ज़ोर ज़ोर से बात भी करते जाते। बीच बीच में हंसी के ठहाके भी लगते जा रहे थे।

"छठी रिज़र्व इंजीनियर बटालियन की बटालियन समिति को अभिवादन!" मेरे दोस्त ने चिल्ला कर कहा और एक अमरीकी समाजवादी के रूप में मेरा परिचय दिया। सभी उठकर हमसे हाथ मिलाने लगे और एक पुराने सिपाही ने मुझे अपनी बांहों में भर कर चूमा। किसी ने लकड़ी की एक चम्मच पेश की और उनके साथ मैं भी बैठ गया। एक और टब वहां लाया गया, उसमें **काशा** (दलिया) लबालब भरा था, साथ में एक बहुत बड़ी काली डबल-रोटी थी और चायदानियां तो ख़ैर थीं ही। फ़ौरन हर आदमी ने मुझसे अमरीका के बारे में सवाल पूछना शुरू किया। क्या यह सच है कि एक आज़ाद देश के लोग अपने वोटों को पैसों के लिए बेच देते हैं? अगर यह बात है, तो वे अपनी ज़रूरतें कैसे पूरी करवा सकते हैं? "टैमिनी"** के बारे में आपको क्या कहना है? क्या यह सच है कि एक आज़ाद देश में मुट्ठी भर लोग अपना गुट बना कर एक पूरे शहर पर हावी हो सकते हैं और उसे अपने ज़ाती फ़ायदे के लिये इस्तेमाल कर सकते

---

* इस वाक्य का अर्थ लगभग यह है: "अच्छी बात है! हम बारिक में खाना खाने जायेंगे!" – सं०

** "**टैमिनी**" और "**टैमिनी हॉल**", न्यू-यार्क में अमरीकी डेमाक्रेटिक पार्टी का सदर दफ़्तर, जो उन दिनों हुए भंडाफोड़ के बाद भ्रष्टाचार तथा अपराध का प्रतीक बन गया। – सं०

दिबेंको की कमान में मल्लाहों
का एक दस्ता केरेन्स्की की
सेना से लड़ने जा रहा है।

हैं? लोग इस चीज़ को कैसे बर्दाश्त करते हैं? रूस में ज़ार के ज़माने में भी ऐसी बातें नहीं हो सकती थीं। यह सच है कि यहां घूस का बाज़ार हमेशा गर्म था, लेकिन एक पूरे शहर को, जिसमें इतने सारे लोग रहते हों, ख़रीदना और बेचना! और वह भी एक आज़ाद देश में! क्या वहां लोगों में क्रांतिकारी भावना नदारद है? मैंने उन्हें समझाने की कोशिश की कि मेरे देश में लोग क़ानून के ज़रिये रद्दोबदल लाने की कोशिश करते हैं।

बक्लानोव नामक एक नौजवान सार्जेंट ने, जो फ़्रांसीसी बोलता था, अपना सिर हिला कर कहा, "बेशक, लेकिन आपके यहां अत्यधिक विकसित पूंजीपति वर्ग मौजूद है, क्यों? अगर ऐसा है, तो यह वर्ग ज़रूर विधान सभाओं और अदालतों पर हावी होगा। फिर लोग हालात को कैसे बदल सकते हैं? मैं आपके देश को नहीं जानता, लिहाज़ा आप मुझे क़ायल कर सकते हैं, फिर भी मुझे यह बात अविश्वसनीय मालूम होती है..."

बख़्तरबन्द ट्राम-गाड़ी, जिसे
मास्को के ज़ामोस्क्वोरेच्ये इलाक़े
में नवम्बर की लड़ाई में इस्तेमाल
किया गया था।

मैंने कहा कि मैं त्सारस्कोये सेलो जा रहा हूं। "मैं भी चलूंगा," ...क्लानोव ने यकायक कहा। "और मैं भी ... और मैं भी ..." कइयों ने कहा। और फिर तो सब के सब तुरत त्सारस्कोये सेलो जाने का फ़ैसला कर बैठे।

ठीक उसी वक़्त दरवाज़े पर दस्तक हुई। दरवाज़ा खुला तो चौखट पर एक कर्नल की शक्ल नज़र आयी। उसे देख कर उठा तो कोई भी नहीं, लेकिन सभी ने ऊंची आवाज़ में अभिवादन जताया। "मैं अंदर आ सकता हूं?" कर्नल ने पूछा। "**प्रोसिम! प्रोसिम!**" (बेशक, बेशक) उन्होंने सहर्ष कहा। कर्नल मुस्कुराते हुए अंदर आये – लंबा क़द, बदन पर एक चमड़े का लबादा, जिस पर सुनहरी ज़री का काम था। "मेरा ख़्याल है मैंने आप लोगों को यह कहते हुए सुना कि आप त्सारस्कोये सेलो जा रहे हैं," कर्नल ने कहा, "क्या मैं भी आपके साथ चल सकता हूं?"

बक्लानोव ने सोचते हुए जवाब दिया, "मैं नहीं समझता कि आज यहां हमें कुछ करना है। अच्छी बात है, कामरेड, आप बड़ी ख़ुशी से हमारे साथ चलिये।" कर्नल ने उन्हें धन्यवाद जताया और अपने लिए गिलास में चाय ढालते हुए बैठ गये।

बक्लानोव ने कर्नल के अभिमान को ठेस पहुंचाने के भय से मेरे कान में कहा: "बात यह है कि मैं समिति का अध्यक्ष हूं। सिवाय लड़ाई के वक़्त, जब हम कमान कर्नल के हाथ में सौंप देते हैं, बटालियन पूरी तरह हमारे अख़्तियार में हैं। लड़ाई के मैदान में उनके हुक्म की तामील ज़रूरी है, लेकिन वह हमारे प्रति पूरी तरह उत्तरदायी हैं। बारिकों के अन्दर बिना हमारी इजाज़त के वह कोई कार्रवाई नहीं कर सकते। आप उन्हें हमारा कार्यकारी अफ़सर कह सकते हैं..."

हमें हथियार–बंदूकें और तमंचे–दिये गये। "मालूम है, रास्ते में कज़्ज़ाकों से मुठभेड़ हो सकती है,"–और हम सब ऐंबुलेंस-गाड़ी में लद गये। मोर्चे के लिए अख़बारों के तीन बड़े बड़े बंडल भी उसमें लाद दिये गये। गाड़ी सीधे लितेइनी की सड़क से और फिर ज़ागोरोद्नी मार्ग से धड़ धड़ करती हुई चली। मेरी बग़ल में लेफ़्टीनेंट का बिल्ला लगाये एक नौजवान बैठा था। ऐसा लगता था कि वह यूरोप की सभी भाषाओं को समान रूप से धड़ल्ले से बोलता है। वह बटालियन समिति का एक सदस्य था।

"मैं बोल्शेविक नहीं हूं," उसने मुझे विश्वास दिलाते हुए आग्रहपूर्वक कहा। "मेरा परिवार बड़े पुराने और अभिजात परिवारों में से है। मैं ख़ुद–आप चाहें तो कह सकते हैं कि मैं कैडेट हूं..."

"लेकिन कैसे..." मैं अचकचा कर पूछने लगा था कि उसने कहा:

"हां, मैं समिति का सदस्य हूं। मैं अपने राजनीतिक विचारों को छिपाता नहीं हूं, लेकिन दूसरों को कोई एतराज़ नहीं है, क्योंकि वे जानते हैं कि मैं बहुमत की इच्छा का विरोध करने का हामी नहीं हूं... फिर भी मैंने मौजूदा गृहयुद्ध में कोई भी भाग लेने से इनकार किया है, क्योंकि मैं अपने रूसी भाइयों के ऊपर तलवार उठाने का हामी नहीं हूं..."

"उकसावेबाज़! कोर्नीलोवपंथी!" पास के दूसरे आदमी ने हंसते हुए उसके कंधे पर हाथ मार कर कहा...

मोम्कोव्स्की द्वार के विशाल सियाहीमायल पत्थर से बने मेहराब के नीचे से निकल कर, जिस पर सुनहरे चित्राक्षर, भारी-भरकम शाही उकाब और ज़ारों के नाम खुदे हुए थे, हम प्रशस्त राजमार्ग पर दौड़ने लगे, जिसके सलेटी रंग में मौसम की पहली हल्की बर्फ़ की सफ़ेदी मिल गयी थी। सड़क पर लाल गार्डों का रेला चला आ रहा था – गाते-बजाते और शोर मचाते वे क्रान्तिकारी मोर्चे की ओर पैदल चले जा रहे थे। दूसरी ओर से लोग, जिनके मुंह सूखे हुए और कपड़े कीचड़ में सने हुए थे, लौट रहे थे। उनमें अधिकांश लड़के मालूम होते थे। औरतें जा रही थीं – कुछ फावड़ा-कुदाल लिये, कुछ बंदूकें और कारतूस की पेटियां लिये और कुछ अपनी बांहों पर रेड क्रास का फीता लगाये – झुग्गी-झोंपड़ियों की औरतें, जो मेहनत करते करते छीज गयी थीं और जिनकी कमर झुक गयी थी। सिपाहियों के दस्ते बेतरतीब चलते हुए और लाल गार्डों को मुहब्बत भरी आवाज़ें देते हुए ; रुक्ष, कठोर मल्लाह ; अपने मां-बाप के लिए खाने के छोटे छोटे पैकेट लिये हुए लड़के—ये सब आ रहे थे या जा रहे थे। पथरीली सड़क पर चार अंगुल कीचड़ होगी, जिसमें बर्फ़ की सफ़ेदी मिल गयी थी – उसमें पैर धंसाते लोग चले जा रहे थे। गोला-बारूद की पेटियों के साथ टन टन करती दक्षिण की ओर जाती तोपें ; हथियारबंद लोगों से खचाखच भरी दोनों ओर जा रही ट्रकें ; लड़ाई के मैदान से लौटती घायलों से भरी ऐंबुलेंस-गाड़ियां – हम इन सबको पीछे छोड़ कर आगे बढ़ गये। एक बार चूं-चूं करता एक देहाती छकड़ा भी नज़र आया, जिसमें एक विवर्ण-मुख नौजवान अपने पेट के ऊपर, जो ज़ख़्म हो गया था, झुका हुआ था और लगातार एक से स्वर में चीख़-कराह रहा था। दोनों ओर खेतों में औरतें और बूढ़े आदमी खाइयां खोद रहे थे और कंटीले तार लगा रहे थे।

पीछे उत्तर की ओर बादल सहसा, जैसे एक चमत्कार हो गया हो, फट गये और पीला, मुरझाया हुआ सूरज निकल आया। सपाट, कीचड़ भरे मैदान के उस पार पेत्रोग्राद चमक रहा था। दायीं ओर सफ़ेद, सुनहरे और रंगीन गुंबद और मीनारें ; बायीं ओर ऊंची ऊंची, काला धुआं उगलती कई चिमनियां। दूर फिनलैंड के ऊपर आसमान में उमड़ते-घुमड़ते बादल। हमारे दोनों बाजू गिरजाघर, मठ... कभी कभी कोई भिक्षु सड़क पर

लहराती, बल खाती सर्वहारा सेना को देखता नज़र आ जाता था।

पूल्कोवो में सड़क एक तिमुहानी में मिल गयी थी; वहां एक बहुत बड़ी भीड़ के बीच हम रुक गये। वहां, जहां तीनों ओर से रेले चले आ रहे थे, भारी जमघट लगा हुआ था–दोस्त बड़े जोश के साथ मिलते, एक-दूसरे को बधाइयां देते और एक-दूसरे को लड़ाई का हाल सुनाते। ऐन तिमुहानी पर इमारतों की एक क़तार थी, जिन पर गोलियों के निशान थे। आधे मील की दूरी में लोगों के पैरों के नीचे मिट्टी बुरी तरह रौंदी गयी थी, जैसे आटा गूंधा जाता है। यहां घमासान लड़ाई हुई थी ... पास ही कज़्ज़ाकों के बिना सवारों के घोड़े भूखे चक्कर काट रहे थे, क्योंकि मैदानों की घास बहुत पहले ही मर चुकी थी। बिल्कुल हमारे सामने ही एक लाल गार्ड एक घोड़े पर चढ़ने की अटपटी कोशिश कर रहा था, वह बार बार गिरता और फिर चढ़ने की कोशिश करता। एक हज़ार सीधे-सादे लोग उसे देख कर बच्चों की तरह आनंद ले रहे थे।

बायीं ओर की सड़क, जिससे बचे-खुचे कज़्ज़ाक भाग निकले थे, एक पहाड़ी के ऊपर आबाद एक छोटे से गांव को जाती थी, जहां से नीचे दूर दूर तक फैले हुए धूसर मैदान का, शांत, निस्तब्ध समुद्र की तरह जस्तई मैदान का बड़ा सुंदर दृश्य देखने को मिलता था–ऊपर काले काले-बादल उमड़-घुमड़ रहे थे, और नीचे सड़कों पर उस शाही शहर के हलक़ से निकले हुए हज़ारों नागरिकों का हुजूम था। दूर बायीं ओर क्रास्नोये सेलो की पहाड़ी थी, जहां शाही गार्ड के ग्रीष्म आवास का परेड-मैदान था और साथ में शाही डेयरी भी थी। बीच की दूरी में सपाट मैदान था, जिसकी एकरसता को अगर कोई चीज़ भंग करती थी, तो वह थी चहारदीवारी से घिरे हुए मठ और विहार, इक्के-दुक्के कारख़ाने और कुछ बड़ी बड़ी इमारतें, जिनके अहातों में झाड़-झंखाड़ भरे थे – ये थे अनाथालय और आश्रम ...

उस बीहड़ पहाड़ी पर मोटर चढ़ाते हुए ड्राइवर ने कहा, "यह देखिए, यहां वेरा स्लूत्स्काया मारी गयीं – जी हां, दूमा की बोल्शेविक सदस्य वेरा स्लूत्स्काया। आज सुबह की ही तो बात है। वह एक मोटर में थीं – साथ में ज़ालकिन्द और एक साथी और थे। लड़ाई में मोहलत का एलान किया गया था, और वे मोर्चे की खाइयों की तरफ़ जा रहे थे।

थे हम हंस कर बात कर रहे थे कि यकायक जिस बख़्तरबंद रेल-गाड़ी में केरेन्स्की ख़ुद सफ़र कर रहे थे, उसमें किसी ने मोटर को देखा और उस पर एक गोला दाग़ दिया। गोला वेरा स्लूत्स्काया को लगा और वह मारी गयीं..."

इस प्रकार हम त्सारस्कोये सेलो पहुंचे, जहां सर्वहारा सेना के गर्वस्फीत शूरवीर भीड़ लगाये हुए थे। जिस महल में सोवियत की मीटिंग हुई थी, वहां ख़ूब चहल-पहल थी। सहन में लाल गार्डों और मल्लाहों की भीड़ थी, दरवाज़ों पर संतरी खड़े थे और दूतों तथा कमिसारों की आवा-जाही बराबर लगी हुई थी। सोवियत सभा-कक्ष में समोवार रख दिया गया था और पचास-साठ मज़दूर, सिपाही, मल्लाह और अफ़सर चारों ओर खड़े चाय की चुसकियां ले रहे थे और ज़ोर ज़ोर से बातें कर रहे थे। एक कोने में दो मज़दूर एक साइक्लो मशीन को चलाने की कोशिश कर रहे थे। बीच की मेज़ पर विशालकाय दिबेंको एक नक़्शे के ऊपर झुके हुए थे और लाल तथा नीली पेंसिलों से सेनाओं की स्थितियों को अंकित कर रहे थे। हमेशा की तरह इस वक़्त भी उनके खाली हाथ में नीले इस्पात का बड़ा तमंचा था। ज़रा देर बाद ही वह टाइपराइटर के सामने बैठ गये और एक ही उंगली से खट-खट टाइप करने लगे। ज़रा ज़रा देर बाद रुक कर वह तमंचा उठा लेते और उसे बड़े प्रेम से हाथ में घुमाने लगते।

दीवार के साथ एक सोफ़ा पड़ा था, जिस पर एक नौजवान मज़दूर लेटा हुआ था। दो लाल गार्ड उसकी सेवा-सुश्रूषा में लगे हुए थे, लेकिन बाक़ी लोग उधर ध्यान नहीं दे रहे थे। गोली ने उसकी छाती में सूराख़ कर दिया था; दिल की हर धड़कन के साथ ताज़ा ख़ून उसके कपड़ों में छलक पड़ता। उसकी आंखें बंद थीं, और दढ़ियल चेहरे पर मुर्दनी छाई हुई थी, उसकी सांस अभी भी धीमी धीमी चल रही थी और हर सांस के साथ आवाज़ आ रही थी – "**मीर बूदित! मीर बूदित!**" (शांति आनेवाली है! शांति आनेवाली है!)

जब हम अंदर घुसे, दिबेंको ने सिर उठा कर हमारी ओर देखा, और फिर बक्लानोव से कहा, "कामरेड, क्या आप कमांडेंट के सदर दफ़्तर का चार्ज लेंगे? ठहरिये, मैं आपके लिए प्रत्यय-पत्र लिख दूं।" वह टाइपराइटर के सामने बैठकर धीरे धीरे एक अक्षर के बाद दूसरे अक्षर पर उंगली मारने लगे।

त्सारस्कोये सेलो के नये कमांडेंट के साथ मैं येकातेरीना प्रासाद के लिए रवाना हो गया। बक्लानोव बड़ा उत्तेजित था, वह यह महसूस कर रहा था कि उसे एक बड़ी ज़िम्मेदारी दी गई है। उसी काफ़ूरी सजावटी कमरे में कई लाल गार्ड कौतूहल से चीज़ों को ग़ौर से देख रहे थे और मेरा पुराना दोस्त कर्नल खिड़की के पास खड़ा अपनी मूंछें चबा रहा था। वह मुझसे इस प्रकार से मिला, जैसे उसे उसका बहुत दिनों का खोया हुआ भाई मिल गया हो। दरवाज़े के पास एक मेज़ के साथ बेसाराबिया का रहने वाला फ़्रांसीसी भी बैठा था। बोल्शेविकों ने उसे हुक्म दिया था कि वह वहीं रहे और अपना काम करता रहे।

"मैं भला करता ही क्या?" वह भुनभुनाया। "मेरे जैसे आदमी कमीनी भीड़ की नादिरशाही को फ़ितरी तौर पर कितना भी नापसंद क्यों न करें, वे ऐसी लड़ाई में किसी भी ओर से लड़ नहीं सकते... मुझे सिर्फ़ एक ही अफ़सोस है, कि मैं बेसाराबिया में अपनी मां से इतना दूर हूं!"

बक्लानोव औपचारिक रूप से कमांडेंट से चार्ज ले रहा था। "यह लीजिये, मेज़ की दराज़ों की चाबियां," कर्नल ने भर्राई हुई आवाज़ में कहा।

एक लाल गार्ड ने बीच में टोंक कर कड़े स्वर में पूछा, "रुपया कहां है?" कर्नल जैसे ताज्जुब में आकर बोला, "रुपया, रुपया? आपका मतलब शायद संदूकची से है। यह लीजिये, बिलकुल वैसी ही, जैसी मैंने उसे आज से तीन दिन पहले पाया था। चाबियां?" कर्नल ने अपने कंधे को जुंबिश दी। "चाबियां मेरे पास नहीं हैं।"

लाल गार्ड ने उसकी खिल्ली उड़ाते हुए इस अंदाज़ से कहा, जैसे उसे सब कुछ मालूम है: "क्यों होंगी! आपकी सहूलियत जो ठहरी!"

"आइये, हम संदूकची को खोल डालें," बक्लानोव ने कहा, "लाना भाई एक हथौड़ा। यह हमारे एक अमरीकी साथी हैं, वही संदूकची को तोड़ डालें और जो भी उन्हें उसके भीतर मिले, उसे दर्ज कर लें।"

मैंने हथौड़ा चलाया। लकड़ी की संदूकची खाली थी।

"हमें इसे गिरफ़्तार कर लेना चाहिए," लाल गार्ड ने ग़ुस्से और नफ़रत से कहा। "यह केरेन्स्की का आदमी है। इसने पैसे चुरा लिये हैं और उन्हें केरेन्स्की को दे डाला है।"

बक्लानोव उसे गिरफ़्तार नहीं करना चाहता था। "नहीं, नहीं," उसने कहा। "पहले जो कोर्नीलोवपंथी यहां था, उसने यह काम किया होगा। यह दोषी नहीं है।"

"आप नहीं जानते, यह पूरा शैतान है," लाल गार्ड ने तेज़ लहजे में कहा। "**मैं** कहता हूं, यह केरेन्स्की का आदमी है। अगर **आप** इसे गिरफ़्तार नहीं करेंगे, तो **हम** करेंगे। हम उसे पेत्रोग्राद ले जायेंगे और पीटर-पाल क़िले में बंद कर देंगे। उसकी वही जगह है!" दूसरे लाल गार्डों ने भी गुर्राते हुए उसकी हां में हां मिलायी। कर्नल हमारी ओर दयनीय दृष्टि से देखते हुए ले जाया गया...

उस महल के सामने, जहां सोवियत का सदर दफ़्तर था, एक ट्रक खड़ी थी और मोर्चे के लिए रवाना होने को थी। एक लम्बे-तड़ंगे मज़दूर के नेतृत्व में आधा दर्जन लाल गार्ड, चंद मल्लाह और दो-एक सिपाही ट्रक के अंदर चढ़ गये और उन्होंने मुझे आवाज़ लगाई कि मैं भी उनके साथ चला चलूं। सदर दफ़्तर से कई लाल गार्ड निकले, वे **ग्रुबित** से भरे छोटे छोटे नालीदार लोहे के बम हाथ में लिये थे और उसके बोझ से लड़खड़ा कर चल रहे थे। कहते हैं कि **ग्रुबित** डाइनामाइट से दस गुना अधिक विस्फोटक और पांच गुना जल्दी भड़क उठने वाला होता है। बमों को ट्रक के अंदर डाल दिया गया, फिर एक तीन इंच के मुंह वाली तोप उसमें लाद दी गई और उसे ट्रक के पीछे की ओर रस्सियों और तार से बांध दिया गया।

हमने ज़ोर की एक दहाड़ मारी और चल दिये—कहने की ज़रूरत नहीं कि बड़ी तेज़ रफ़्तार से चले। ट्रक झोंक में कभी दायीं ओर होती, तो कभी बायीं ओर। जुम्बिश खाकर तोप का कभी एक पहिया ऊपर उठ जाता, कभी दूसरा। **ग्रुबित** के बम हमारे पैरों के नीचे गाड़ी भर में लुढ़कते-फिरते और उसकी दीवार के साथ बड़ी ज़ोर से टकराते।

लंबे-तड़ंगे लाल गार्ड ने, जिसका नाम व्लादीमिर निकोलायेविच था, अमरीका के बारे में सवालों की झड़ी लगा दी। "अमरीका लड़ाई में क्यों शामिल हुआ? क्या अमरीकी मज़दूर पूंजीपतियों का तख़्ता उलटने के लिए

तैयार हैं? मूनी* वाले मामले में अब क्या स्थिति है? क्या वे बर्कमैन** को सान-फ़्रांसिस्को के हवाले कर देंगे?" और इसी तरह के दूसरे सवाल, जिनका जवाब देना मुश्किल था। वह चिल्ला चिल्ला कर बोल रहा था, ताकि गाड़ी के शोरगुल के बीच उसे सुना जा सके और हम एक दूसरे को थामे हुए थे और साथ साथ झोंके खा रहे थे, और हमारे इर्द-गिर्द **ग्रुबित** के बम ढुलक रहे थे।

कभी कभी कोई गश्ती दस्ता हमें रोकने की कोशिश करता। सिपाही सड़क पर दौड़ कर हमारे सामने आ जाते और चिल्लाते "**स्तोइ!**" (ठहर जाओ!) और अपनी बन्दूकें सीधी करते।

हम उनकी बात पर ध्यान नहीं देते। "जहन्नुम में जाओ!" लाल गार्ड चिल्लाते। "हम हैं लाल गार्ड! हम किसी के लिये रुकने वाले नहीं हैं!" और हम बड़े रोब से धड़धड़ाते हुए निकल जाते। और उसी शोर-गुल में व्लादीमिर निकोलायेविच गला फाड़ कर चिल्लाते—पनामा नहर के अंतर्राष्ट्रीयकरण के बारे में और दूसरी ऐसी ही बातों के बारे में बात करते...

क़रीब पांच मील जाने के बाद हमने देखा कि मल्लाहों का एक जत्था वापिस लौट रहा था और हमने गाड़ी धीमी कर दी।

"मोर्चा कहां है, भाइयो?"

सबसे आगे जो मल्लाह था उसने रुककर अपना माथा खुजलाते हुए कहा, "आज सुबह तो वह यहां से लगभग आधा मील दूर था। लेकिन इस वक़्त तो कमबख़्त वह कहीं भी नज़र नहीं आता। हम चलते गये, चलते गये, लेकिन मोर्चे का कहीं पता न था।"

वे भी गाड़ी में चढ़ आये और हम आगे बढ़े। हम क़रीब एक मील गये

---

* **टाम मूनी**—अमरीका के मज़दूर आन्दोलन में सक्रिय भाग लेने वाले एक स्मेल्टर, जिसे २२ जुलाई, १९१६ को सान-फ़्रांसिस्को नगर की परेड में बम फेंकने का भूठा इलज़ाम लगा कर मौत की सज़ा दी गई। जनता के दबाव के कारण प्रेज़िडेंट को इस मामले में हस्तक्षेप करना पड़ा और मौत की सज़ा आजीवन कारावास में बदल दी गई। यद्यपि बाद में यह पूरी तरह प्रमाणित हो गया कि टाम मूनी निर्दोष था, उसे बीस साल जेल में काटने पड़े और उसे तभी छोड़ा गया, जब रूज़वेल्ट अमरीका के प्रेज़िडेंट हुए। —**सं०**

** **बर्कमैन** पर टाम मूनी के साथ ही मुक़दमा चलाया गया था। —**सं०**

होंगे कि व्लादीमिर निकोलायेविच के कान खड़े हो गये, उन्होंने ध्यान से सुना और ड्राइवर को रुकने को कहा।

"सुनते हो? गोली चलने की आवाज़!" उन्होंने कहा। क्षण भर निस्तब्ध शांति और फिर ज़रा आगे बाईं ओर दनादन तीन गोलियों के छूटने की आवाज़। जहां हम ठहरे थे, सड़क के किनारे घना जंगल था। हम अत्यंत उत्तेजित भाव से फुसफुसा कर बात करते चींटी की चाल से आगे बढ़ते गये, जब तक कि गाड़ी क़रीब क़रीब उस जगह से सामने नहीं आ गई, जहां से गोलियां छूटी थीं। हर आदमी ने अपनी बंदूक उठाई और हम नीचे उतर कर फैल गये और दबे क़दमों से जंगल के अंदर घुस गये।

इसी बीच दो साथियों ने तोप को खोल लिया था और उस समय तक घुमाते रहे, जब तक कि वह हमारी पीठ की ओर सीधी न हो गई।

जंगल के अंदर निस्तब्ध शांति थी। पेड़ों की पत्तियां झड़ चुकी थीं और शरद की रुग्ण निस्तेज धूप में ऐसा लगता था कि उनके तनों पर मुर्दनी छाई हुई है। सिवाय जंगल के तलइयों की बर्फ़ के, जो हमारे पैरों के दबाव से कांप रही थी, कहीं पर एक पत्ता भी नहीं खड़क रहा था। मन में हुआ, कहीं दुश्मन घात में तो नहीं बैठा है?

हम बिना किसी दुर्घटना के तब तक आगे बढ़ते गये, जब तक कि हम जंगल के एक बहुत झीने भाग में नहीं पहुंच गये। उस ओर, जहां पेड़ों को काट कर थोड़ी सी जगह साफ़ कर ली गई थी, तीन सिपाही हमारी ओर से बिल्कुल बेख़बर एक छोटे से अलाव के चारों ओर बैठे थे।

व्लादीमिर निकोलायेविच ने आगे बढ़ कर अभिवादन जताया, "**ज्द्रास्त्वुइते**, साथियो!" उनके पीछे एक तोप, बीस बन्दूकें और गाड़ी भर **ग्रुबित** के बम एक इशारे पर छूटने के लिए तैयार थे। तीनों सिपाही उछल पड़े।

"यहां कैसी गोली चल रही थी?"

एक सिपाही ने इतमीनान की सांस लेते हुए कहा, "कुछ नहीं, कामरेड, हम बस ख़रगोश का शिकार कर रहे थे..."

दिन की खुली, उजली धूप में हमारी गाड़ी रोमानोव की ओर बढ़ी। पहले चौराहे पर दो सिपाही दौड़ कर हमारे सामने आ गये और उन्होंने

अपनी बन्दूकों से इशारा किया। हमने गाड़ी धीमी की और रुक गये।

"आपके पास कहां हैं, साथियो!"

लाल गार्डों ने बड़ा हल्ला मचाया। "अजी, हम लाल गार्ड हैं, हमें पास-वास की ज़रूरत नहीं है... ड्राइवर, आगे बढ़ो, उनकी परवाह मत करो!"

लेकिन एक मल्लाह ने एतराज़ किया, "यह चीज़ ग़लत है, साथियो।

ИСПОЛНИТЕЛЬНЫЙ КОМИТЕТ
ПЕТРОГРАДСКОГО СОВЕТА
РАБОЧИХЪ и СОЛДАТСКИХ
ДЕПУТАТОВЪ
Военный Отделъ

28 Октября 191 г.
2614/35

УДОСТОВѢРЕНІЕ.

Настоящее удостовѣреніе дано представите Американской Социалъ - демократіи Интернаціоналисту товарищу ДЖОНУ РИДЪ въ томъ, Военно - Революціонный Комитетъ Петербургскаг Совѣта Рабочихъ и Солдатскихъ Депутатовъ пред - ставившъ имъ права свободнаго проѣзда по Всѣм Сѣверному фронту въ цѣляхъ освѣдомленія нашихъ Американскихъ товарищей интернаціоналистовъ съ событіями въ Россіи.

Предсѣдатель:

Секретарь:

उत्तरी मोर्चे की यात्रा करने के लिए जॉन रीड को दिया गया पास

हमारे लिये क्रांतिकारी अनुशासन ज़रूरी है। मान लीजिये, कुछ प्रति-क्रांतिकारी ट्रक में चढ़ कर आयें और बोलें 'हमें पासों की ज़रूरत नहीं है' तो फिर? आख़िर यहां के साथी आपको जानते तो नहीं हैं।"

इस पर एक ख़ासी बहस छिड़ गई। एक एक करके मल्लाहों और सिपाहियों ने पहले मल्लाह की हां में हां मिलाई। हर लाल गार्ड ने भनभुनाते हुए अपना गंदा **बुमागा** (कागज़) निकाला। मेरे पास के सिवा, जो स्मोल्नी में क्रांतिकारी सैनिक स्टाफ़ द्वारा जारी किया गया था, बाक़ी सभी कागज़ एक ही ढंग के थे। संतिरयों ने कहा कि मुझे उनके साथ जाना होगा। लाल गार्डों ने घोर आपत्ति प्रगट की, लेकिन जिस मल्लाह ने पहले-पहल बात की थी, उसने आग्रहपूर्वक कहा, "हम जानते हैं कि यह साथी सच्चे साथी हैं। परन्तु समिति के कुछ आदेश हैं, जिनका उल्लंघन हरगिज़ नहीं किया जा सकता। यही तो क्रांतिकारी अनुशासन है..."

मेरी वजह से कोई परेशानी न पैदा हो, इस ख़्याल से मैं ट्रक से नीचे उतर आया और मेरे देखते देखते वह साथियों की अलविदा के साथ सड़क के मोड़ पर ग़ायब हो गयी। सिपाहियों ने आपस में मिनट भर सलाह-मशविरा किया और फिर मुझे ले जा कर एक दीवार के साथ खड़ा कर दिया। बिजली की तरह मेरे मन में यह बात कौंध गई: वे मुझे शूट करने जा रहे हैं!

तीनों दिशाओं में चिड़िया का एक पूत भी दिखायी नहीं दे रहा था। बस बग़ल की सड़क से चौथाई मील दूर एक **दाचा** – लकड़ी के एक बेढंगे मकान से जो धुआं निकल रहा था, वही जीवन का एकमात्र चिह्न था।

दोनों सिपाही सड़क पर पहुंचे ही होंगे कि मैं घबराया हुआ उनके पीछे दौड़ा।

"लेकिन, साथियो, देखिये, यह सैनिक क्रांतिकारी समिति की मुहर है!"

उन्होंने अनबूझ भाव से एकटक मेरे पास की ओर देखा और फिर एक दूसरे की ओर।

"भाई, हम पढ़ नहीं सकते," एक ने कुछ चिढ़कर कहा। "लेकिन यह पास औरों से अलग है।"

मैंने उसकी कुहनी पकड़ते हुए कहा, "आइये, हम उधर उस घर की ओर चलें। बेशक वहां कोई न कोई इसे पढ़ सकेगा।" वे हिचकिचा

रहे थे। "नहीं," एक ने कहा। दूसरा मुझे सिर से पांव तक देख कर भुनभुनाया, "क्यों नहीं? आख़िरकार एक बेक़सूर आदमी को मारना भारी अपराध है।"

हमने मकान के सामने के दरवाज़े पर जाकर दस्तक दी। एक मोटी ठिंगनी सी औरत ने दरवाज़ा खोला और घबराकर पीछे हट गई। उसने लड़खड़ाई हुई आवाज़ में कहा, "मैं उनके बारे में कुछ नहीं जानती! मैं उनके बारे में कुछ नहीं जानती!" एक संतरी ने उसकी ओर मेरा पास बढ़ाया। वह डर के मारे फिर चीख़ पड़ी। "कुछ नहीं, इसे बस पढ़ दीजिये, कामरेड।" उसने कांपते हाथों से पुर्ज़ा लिया और जल्दी जल्दी पढ़ डाला:

इस पास के वाहक, जॉन रीड, अमरीकी सामाजिक-जनवाद के एक प्रतिनिधि हैं, एक अन्तर्राष्ट्रीयतावादी हैं...

सड़क पर वापिस आकर दोनों सिपाहियों ने फिर आपस में मशविरा किया। "हमें आपको रेजीमेंट समिति के पास ले जाना होगा," उन्होंने कहा। हम शाम के तेज़ी से गहरे होते हुए झुटपुटे में कीचड़ भरी सड़क से मन मन भर के पैर रखते चले। कभी कभी सिपाहियों का कोई दस्ता रास्ते में मिल जाता। वे हमें रोक लेते और मुझे क्रुद्ध दृष्टि से घूरते हुए एक दूसरे के हाथ में मेरे पास को देते और इस बात को लेकर गर्मागर्म बहस करते कि आया मुझे गोली मार देनी चाहिये या नहीं...

जब हम दूसरी त्सारस्कोये सेलो राइफिल्स की बारिकों में पहुंचे, अंधेरा घिर आया था। सड़क के किनारे नीची छत की इमारतें, एक दूसरी से सटी सटी, बेढंगे तरीक़े से फैली हुई थीं। फाटक पर शिथिल भाव से खड़े कुछ सिपाहियों ने बड़े उत्सुक भाव से पूछना शुरू कर दिया, "जासूस है? उकसावेबाज़ है?" हम घुमावदार सीढ़ियों से चढ़ कर एक बहुत बड़े हॉल में आ गये, जो सामान से खाली था और जिसके बीच में एक बहुत बड़ी भट्ठी जल रही थी। फ़र्श पर क़तार की क़तार चारपाइयां बिछी हुई थीं, जिन पर लगभग एक हज़ार सिपाही ताश खेल रहे थे, बातचीत कर रहे थे, गा-बजा रहे थे या बस सोये पड़े थे। छत में, जहां केरेन्स्की का गोला गिरा था, एक बेढंगा सूराख़ था...

मैं ड्योढ़ी में खड़ा था और यकायक हॉल में सन्नाटा छा गया और सिपाहियों के झुंड मेरी ओर मुड़ कर मुझे घूरने लगे, और फिर अचानक वे उठ खड़े हुए और पहले धीरे धीरे और फिर तेज़ी से चिल्लाते हुए मेरी ओर लपके। उनके चेहरे नफ़रत से सियाह हो रहे थे। "साथियो, साथियो," मेरे साथ के एक संतरी ने चिल्ला कर कहा, "समिति, समिति को बुलाइये!" भीड़ ठहर गई और लोग भुनभुनाते हुए मुझे घेर कर खड़े हो गये। उनको ठेलता-ठालता एक दुबला-पतला नौजवान सामने आया, जिसने अपनी बांह पर एक लाल फीता बांध रखा था।

"यह कौन है?" उसने कड़ी आवाज़ में पूछा। गार्डों ने सारा मामला उसे समझाया। "लाओ, काग़ज़ मेरे हाथ में दो।" उसने मेरी ओर तेज़ नज़र से देखते हुए उसे ध्यान से पढ़ा। फिर वह मुस्करा पड़ा और मुझे पास वापिस देता हुआ बोला, "साथियो, यह अमरीका के एक साथी हैं। मैं समिति का अध्यक्ष हूं और आपका रेजीमेंट में स्वागत करता हूं..." यकायक भीड़ से एक गूंज उठी, जो अभिवादन के तुमुल स्वर में बदल गयी। वे मुझसे हाथ मिलाने के लिए बढ़े।

"आपने खाना तो नहीं खाया होगा? यहां हम खा चुके हैं। आप अफ़सरों के मेस में जायें, वहां आपको अपनी भाषा बोलने वाले कुछ लोग मिलेंगे..."

वह मुझे लिए सहन पार कर एक दूसरी इमारत के दरवाज़े पर पहुंचा। वहां लेफ़्टीनेंट की वर्दी पहने एक नौजवान, जो देखने में रईसज़ादा मालूम होता था, उसी वक़्त अंदर दाख़िल हो रहा था। अध्यक्ष ने उससे मेरी मुलाक़ात कराई और हाथ मिला कर वापिस चला गया।

लेफ़्टीनेंट ने सुन्दर फ़्रांसीसी बोलते हुए कहा, "मैं स्तेपान गेओर्गियेविच मोरोव्स्की हूं और मैं आपकी ख़िदमत में हाज़िर हूं।"

सजे-सजाये प्रवेश-कक्ष से एक आरायशी सीढ़ी ऊपर चली गई थी, जिस पर चमकते हुए झाड़-फ़ानूसों की रोशनी पड़ रही थी। ऊपर की मंज़िल पर एक हॉल था, जिसके दरवाज़े बिलियर्ड खेलने, ताश खेलने के कमरों और लाइब्रेरी में खुलते थे। हम खाने के कमरे में दाख़िल हुए, जिसके बीच में एक लंबी मेज़ लगी थी और उसके चारों ओर क़रीब बीस अफ़सर

अपनी पूरी वर्दियां पहने, सोने और चांदी की मुठियों वाली तलवारें बांधे और शाही तमग़ों को लगाये हुए बैठे थे। जब मैं घुसा, सबके सब शिष्टाचार से उठ खड़े हुए और उन्होंने मेरे लिए कर्नल की बग़ल में जगह की। वह एक लहीम-शहीम रोबीले चेहरे का आदमी था, जिसकी दाढ़ी भूरी थी। अर्दली सधे हाथों से खाना परस रहे थे। वातावरण वही था, जो यूरोप में किसी भी अफ़सरी मेस का हो सकता है। तो फिर कहां थी क्रांति?

"आप बोल्शेविक तो नहीं हैं?" मैंने मोरोव्स्की से पूछा।

मेज़ के गिर्द बैठे लोग मुस्करा पड़े। लेकिन मैंने यह भी लक्ष्य किया कि एक-दो आदमी नज़र बचा कर अर्दली की ओर देख रहे थे।

"नहीं," मेरे दोस्त ने जवाब दिया। "इस रेजीमेंट में सिर्फ़ एक ही बोल्शेविक अफ़सर है, और इस रात वह पेत्रोग्राद में है। कर्नल मेन्शेविक हैं, और उधर बैठे कप्तान ख़ेर्लोव कैडेट हैं। मैं ख़ुद दक्षिणपंथी समाजवादी-क्रांतिकारी हूं... मुझे कहना चाहिये कि सेना के अधिकांश अफ़सर बोल्शेविक नहीं हैं, लेकिन मेरी तरह वे भी जनवाद में विश्वास करते हैं, वे विश्वास करते हैं कि उन्हें आम सिपाहियों की इच्छा का पालन ज़रूर करना चाहिये..."

खाना ख़त्म होने के बाद नक़्शे लाये गये और कर्नल ने उन्हें मेज़ पर फैला दिया। बाक़ी लोग भी नक़्शे के ऊपर झुक गये।

कर्नल ने नक़्शे पर पेंसिल के निशानों की ओर इशारा करते हुए कहा, "यह देखिये, आज सुबह हमारे मोर्चे यहां पर थे। व्लादीमिर किरीलोविच, आपकी कंपनी कहां पर है?"

कप्तान ख़ेर्लोव ने नक़्शे में एक स्थल की ओर संकेत करते हुए उत्तर दिया, "हमें जो हुक्म दिया गया था, उसके मुताबिक़ हमने इस सड़क के किनारे की जगह पर क़ब्ज़ा कर लिया। पांच बजे करसाविन ने मुझसे चार्ज लिया।"

ठीक उसी वक़्त दरवाज़ा खुला और एक सिपाही के साथ रेजीमेंट समिति के अध्यक्ष अंदर आये। कर्नल के पीछे जो लोग खड़े थे, वे भी उनके साथ नक़्शे को देखने लगे।

"ठीक है," कर्नल ने कहा, "हमारे क्षेत्र में कज़्ज़ाक दस किलोमीटर पीछे हट गये हैं। मेरे ख़्याल में आगे बढ़ कर मोर्चाबंदी करना ज़रूरी नहीं

है। आप साहबान आज की रात मौजूदा मोर्चों को संभालेंगे और उन्हें मज़बूत करने के लिए ..."

रेजीमेंट समिति के अध्यक्ष ने बात काटते हुए फ़रमाया, "आपकी इजाज़त से मैं कुछ कहना चाहता हूं। हुक्म यह है कि पूरी तेज़ी के साथ आगे बढ़ा जाये और सुबह गातचिना के उत्तर में कज़्ज़ाकों से लोहा लेने की तैयारी की जाये। उन्हें ज़बरदस्त शिकस्त देना ज़रूरी है। आप कृपा कर उचित व्यवस्था करें।"

क्षण भर सन्नाटा रहा। कर्नल ने दोबारा नक़्शे पर झुककर भिन्न स्वर में कहा, "अच्छी बात है, स्तेपान गेओर्गियेविच, आप कृपा कर..." नक़्शे पर एक नीली पेंसिल से जल्दी जल्दी निशान लगाते हुए उन्होंने अपने हुक्म दिये और साथ ही साथ एक सार्जेंट शार्टहैंड में उन्हें दर्ज करता गया। फिर सार्जेंट वहां से चला गया और दस मिनट बाद कर्नल के हुक्म को टाइप करके मय एक कार्बन कापी के ले आया। समिति के अध्यक्ष ने एक कापी अपने सामने रख कर नक़्शे का ध्यान से अध्ययन किया।

"ठीक है," उन्होंने उठते हुए कहा और कार्बन कापी चौपत मोड़ कर अपनी जेब में डाली। फिर उन्होंने दूसरी प्रति पर हस्ताक्षर किये, अपनी जेब से गोल सील निकाल कर उस पर मोहर लगाई और उसे कर्नल के हाथ में दे दिया।

यह थी क्रांति!

मैं रेजीमेंट की स्टाफ़-गाड़ी में बैठे कर त्सारस्कोये के सोवियत प्रासाद को वापिस लौटा। अभी भी वहां झुंड के झुंड मज़दूरों, सिपाहियों और मल्लाहों का आना-जाना लगा हुआ था; अभी भी वहां ट्रकों, बख़्तरबंद गाड़ियों की रेल-पेल थी, वैसे ही दरवाज़े पर बदस्तूर तोप थी और नयी, निराली विजय के उल्लास में उद्घोष और अट्टहास गूंज रहा था। आधे दर्जन लाल गार्ड अपने बीच में एक पादरी को लिये हुए भीड़ को ठेलते हुए अंदर घुस रहे थे। उन्होंने कहा कि यह फादर इवान हैं, जिन्होंने कज़्ज़ाकों को, जब वे शहर में दाख़िल हुए, अपना आशीर्वाद दिया था। बाद में मैंने सुना कि उन्हें गोली मार दी गई ...[4]

दिबेंको उसी वक़्त वहां से निकल रहे थे और लगातार आदेश पर आदेश दिये जा रहे थे। उनके हाथ में वही भारी तमंचा था। सड़क के

किनारे एक मोटर-गाड़ी खड़ी थी, जिसका इंजन दौड़ रहा था। वह पीछे की सीट में अकेले ही बैठे गये और केरेन्स्की को जीतने के लिए गातचिना के लिए रवाना हो गये।

रात होते होते वह शहर के बाहरी हिस्से में पहुंचे और वहां गाड़ी से उतर कर पैदल ही आगे बढ़े। दिबेंको ने कज़्ज़ाकों से क्या कहा, कोई नहीं जानता, लेकिन हक़ीक़त यह है कि जनरल क्रास्नोव और उनके स्टाफ़ और कई हज़ार कज़्ज़ाकों ने हथियार डाल दिये और केरेन्स्की को भी ऐसा ही करने की राय दी।[5]

जहां तक केरेन्स्की का सवाल है, १४ नवम्बर की सुबह जनरल क्रास्नोव ने जो बयान दिया, उसे मैं यहां छाप रहा हूं:

"गातचिना, १४ नवम्बर, १९१७। आज क़रीब तीन बजे (सुबह) मुख्य सेनापति (केरेन्स्की) ने मुझे तलब किया। वह बहुत उत्तेजित और बहुत घबराये हुए थे।

"'जनरल,' उन्होंने मुझसे कहा, 'आपने मुझे धोखा दिया। आपके कज़्ज़ाकों ने यह साफ़ एलान किया है कि वे मुझे गिरफ़्तार करके मल्लाहों के हवाले कर देंगे।'

"'जी हां,' मैंने जवाब दिया, 'इस क़िस्म की बातचीत सुनने में आयी है। मैं जानता हूं कि आपके लिए कहीं भी किसी को हमदर्दी नहीं है।'

"'लेकिन अफ़सर भी वही बात कह रहे हैं।'

"'जी हां, अफ़सर ही आप से सबसे ज़्यादा ख़फ़ा हैं।'

"'फिर मैं क्या करूं? मुझे आत्महत्या कर लेनी चाहिये!'

"'अगर आप सम्माननीय व्यक्ति हैं, तो आपको चाहिये कि आप फ़ौरन हाथ में सफ़ेद झंडी लेकर पेत्रोग्राद जायें, सैनिक क्रांतिकारी समिति के सामने हाज़िर हों और अस्थायी सरकार के अध्यक्ष की हैसियत से उनके साथ बातचीत शुरू करें।'

"'अच्छी बात है। मैं ऐसा ही करूंगा, जनरल।'

"'मैं आपको एक रक्षक-दल दूंगा और यह भी मांग करूंगा कि एक मल्लाह आपके साथ जाये।'

"'नहीं नहीं, मल्लाह नहीं। क्या यह सच है कि दिबेंको यहां पर मौजूद है? आप जानते हैं?'

"'मैं नहीं जानता दिबेंको कौन है।'

"'वह मेरा दुश्मन है।'

"'इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। अगर आपने भारी बाज़ी लगाई है, तो आपको यह जानना ही चाहिये कि अवसर का उपयोग कैसे किया जाये।'

"'हां, मैं आज रात ही रवाना हो जाऊंगा।'

"'रात में क्यों? इसका मतलब होगा भागना। आप खुल्लमखुल्ला इत्मीनान से जाइये, ताकि हर आदमी देख सके कि आप भाग नहीं रहे हैं।'

"'अच्छी बात है। लेकिन आप मुझे ज़रूर ऐसे रक्षक दीजिये, जिन पर मैं भरोसा कर सकूं।'

"'ठीक है।'

"मैं बाहर निकल आया और मैंने दोन की दसवीं रेजीमेंट के कज़्ज़ाक रूसाकोव को बुलाया और उसे हुक्म दिया कि वह मुख्य सेनापति के साथ जाने के लिए दस कज़्ज़ाकों को चुन ले। आधा घंटा बाद कज़्ज़ाकों ने आकर मुझे बताया कि केरेन्स्की अपने मुकाम में नहीं हैं, कि वह भाग गये हैं।

"मैंने ख़तरे का बिगुल बजवाया और हुक्म दिया कि उनकी तलाश की जाये। मेरा ख़्याल था कि वह गातचिना से बाहर नहीं जा सके होंगे। लेकिन उनका पता न चल सका..."

और इस प्रकार केरेन्स्की मल्लाह की वर्दी में छिप कर अकेले भाग निकले। अगर रूसी जन-साधारण के बीच उनकी कुछ साख बची थी, तो वह इस हरक़त से बिल्कुल ही जाती रही...

मैं एक ट्रक की सामने की सीट में बैठ कर पेत्रोग्राद वापिस लौटा, जिसे एक मज़दूर चला रहा था और जिसमें लाल गार्ड भरे हुए थे। ट्रक की बत्तियां गुल थीं, क्योंकि हमारे पास मिट्टी का तेल न था। सड़क पर घर लौटती हुई सर्वहारा सेना का और उनकी जगह लेने के लिए उमड़ने वाले नये रिज़र्व सैनिकों का रेला था। रात के अंधेरे में हमारी ट्रक जैसी बड़ी बड़ी ट्रकें, क़तार की क़तार तोपें और छकड़ा-गाड़ियां धुंधली धुंधली दिखाई

दे रही थीं। हमारी ही तरह सब की सब बग़ैर रोशनी के थीं। हमारी गाड़ी हड़हड़ाती हुई बेतहाशा दौड़ रही थी और टक्करों से बचने के लिए, जो मालूम होता था लग कर ही रहेंगी, झटके से कभी दाईं ओर मुड़ती, तो कभी बाईं ओर और दूसरी गाड़ियों के साथ रगड़ खाती आगे बढ़ जाती। पीछे से पैदल मुसाफ़िर कोसते और गालियां देते।

राजधानी, जो दिन के मुक़ाबले रात में कहीं ज़्यादा ख़ूबसूरत नज़र आ रही थी, क्षितिज पर धनुषाकार फैली हुई थी और उसकी बत्तियां चमक रही थीं। ऐसा मालूम होता था, जैसे बीहड़ मैदान में किसी ने हीरे-मोती के ढेर जमा कर दिये हों।

पुराने मज़दूर ने, जिसका एक हाथ गाड़ी की स्टियरिंग पर था, दूसरे हाथ को घुमाते हुए दूर चमकती राजधानी की ओर बड़े उल्लासपूर्ण भाव से इशारा किया।

"मेरा पेत्रोग्राद!" वह चीख़ उठा और उसका चेहरा चमक रहा था। "मेरा! सारा का सारा मेरा!"

दसवां अध्याय

मास्को

सैनिक क्रांतिकारी समिति अपनी विजय के बाद हाथ पर हाथ धरे नहीं बैठी रही, बल्कि वह ताबड़तोड़ चोट पर चोट करती गई :

१४ नवम्बर।

सभी सेनाओं, कोरों, डिवीज़नों, रेजीमेंटों की समितियों, सभी मज़दूरों, सैनिकों तथा किसानों के प्रतिनिधियों की सोवियतों के नाम, सभी जनों के नाम, सभी के नाम।

कज़्ज़ाकों, **युंकरों**, सिपाहियों, मल्लाहों और मज़दूरों के बीच हुए समझौते के मुताबिक़ यह फ़ैसला किया गया है कि अलेक्सान्द्र फ़्योदोरोविच केरेन्स्की को जनता के एक न्यायाधिकरण के सम्मुख आरोप के लिए बुलाया जाये। हम मांग करते हैं कि केरेन्स्की को गिरफ़्तार किया जाये और उन्हें निम्नलिखित संगठनों के नाम पर आदेश दिया जाये कि वह अविलम्ब पेत्रोग्राद आयें और न्यायाधिकरण के सामने हाज़िर हों।

हस्ताक्षरित, **उसूरी घुड़सवार सेना की पहली डिवीज़न के कज़्ज़ाक ; पेत्रोग्राद क्षेत्र के छापामार दस्ते की युंकर समिति ; पांचवीं सेना का प्रतिनिधि।**

जन-कमिसार दिबेंको

उद्धार समिति, दूमा, समाजवादी-क्रांतिकारी पार्टी की केन्द्रीय समिति, जो गर्व के साथ दावा करती थी कि केरेन्स्की उसकी पार्टी के सदस्य हैं, — उन सब ने उग्र प्रतिवाद किया और कहा कि उन्हें संविधान सभा के प्रति ही उत्तरदायी ठहराया जा सकता है।

१६ नवम्बर की शाम को मैंने देखा, ज़ागोरोद्नी मार्ग पर एक फ़ौजी बैंड के पीछे, जो 'मर्सेइयेज़' की धुन बजा रहा था – सुनने में यह धुन उस घड़ी कितनी संगत लग रही थी! – दो हज़ार लाल गार्ड मार्च कर रहे थे; मज़दूरों की धूसर पांतों के ऊपर लाल – शहीदों के ख़ून की तरह लाल – झंडे लहरा रहे थे। ये लोग अपने उन भाइयों का स्वागत करने निकले थे, जो "लाल पेत्रोग्राद" की रक्षा करने के बाद घर लौट रहे थे। शाम के झुटपुटे और सर्दी में वे – मर्द और औरत दोनों ही – भारी क़दमों से चले जा रहे थे, और उनके क़दमों के साथ उनकी ऊंची संगीनें जुंबिश खा रही थीं। जिन सड़कों से वे गुज़र रहे थे, उन पर कीचड़ थी और फिसलन थी और रोशनी नाम को ही थी, और उसके दोनों ओर पूंजीवादियों की ख़ामोश भीड़ थी, जो उन्हें घृणा से पर भय से भी देख रहे थे...

ये सभी उनके ख़िलाफ़ थे – व्यापारी, सट्टाबाज़ी करनेवाले और पूंजी की कमाई खानेवाले लोग, ज़मींदार, सैनिक अफ़सर, राजनीतिज्ञ, अध्यापक, विद्यार्थी, उदार पेशों के लोग, दुकानदार, क्लर्क, दलाल। दूसरी समाजवादी पार्टियां बोल्शेविकों से घोर घृणा करती थीं। सोवियतों की ओर थे साधारण मज़दूर, मल्लाह, वे सभी सिपाही, जो पस्तहिम्मत नहीं हुए थे, खेतिहर मज़दूर, थोड़े से – बहुत थोड़े से – बुद्धिजीवी...

विशाल रूस के, जहां सड़कों की घमासान लड़ाई भड़क उठी थी, जैसे आग भड़कती है, कोने कोने से केरेन्स्की की पराजय का समाचार सर्वहारा के प्रचण्ड जयघोष को प्रतिध्वनित कर रहा था – कज़ान, सरातोव, नोवगोरोद, वीन्नित्सा से, जहां सड़कें ख़ून से तर हो गई थीं; मास्को से, जहां बोल्शेविकों ने अपनी तोपें पूंजीपति वर्ग के आख़िरी गढ़ क्रेमलिन की ओर सीधी कर दी थीं।

"वे क्रेमलिन पर गोलाबारी कर रहे हैं!" पेत्रोग्राद के गली-कूचों में यह ख़बर कानोंकान फैल गई, लोगों के दिलों में एक तरह का हौल पैदा करती हुई। "शुभ्र और उज्ज्वल प्यारी मां मास्को" से आने वाले यात्रियों ने भयानक कथायें सुनायीं – हज़ारों मारे गये हैं; त्वेरस्काया और कुज़नेत्स्की मोस्त जल रहे हैं, वसीली ब्लाजेन्नी का गिरजा आग की लपटों में स्वाहा हो गया है; उस्पेंस्की गिरजाघर ढह गया है; क्रेमलिन का स्पास्स्की द्वार भहरा पड़ा है, दूमा-भवन जल कर राख हो चुका है।[1]

बोल्शेविकों ने अभी तक जो कुछ भी किया था, उसकी तुलना किसी भी प्रकार पवित्र रूस के केंद्र में हुए इस भयानक कुफ़्र के साथ नहीं की जा सकती थी। पवित्र, प्रावोस्लाव गिरजे पर गोले बरसाती हुई और रूसी राष्ट्र के पवित्र उपासना गृह को धूल में मिलाती हुई तोपों के धमाके श्रद्धालुओं के कान में पड़े...

१५ नवम्बर को जन-शिक्षा-कमिसार लुनाचार्स्की जन-कमिसार परिषद् के अधिवेशन में रो पड़े और यह कहते हुए कमरे से बाहर निकल गये, "मैं इस चीज़ को बर्दाश्त नहीं कर सकता! मैं सौंदर्य तथा परम्परा के इस भयंकर विनाश को सहन नहीं कर सकता..."

उसी दिन तीसरे पहर अखबारों में उनकी इस्तीफ़े की चिट्ठी छपी:

मुझे मास्को से आने वाले लोगों ने वहां की घटनाओं के बारे में अभी अभी बताया है।

वसीली ब्लाजेन्नी के गिरजे पर और उस्पेंस्की गिरजे पर गोलाबारी की गई है। क्रेमलिन पर, जहां पेत्रोग्राद तथा मास्को की सबसे महत्वपूर्ण कला-निधियां संचित हैं, गोलाबारी हो रही है। हज़ारों आदमी हताहत हुए हैं।

यह भयानक संघर्ष पाशविक नृशंसता की पराकाष्ठा पर पहुंच गया है।

अब बाक़ी क्या बचा है? इससे ज़्यादा और क्या हो सकता है?

मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर सकता। मेरा प्याला लबरेज़ हो चुका है। मैं इन विभीषिकाओं को सहन करने में असमर्थ हूं। जो विचार मुझे पागल बनाये दे रहे हैं, वे जब बराबर कोंच रहे हों, काम करना असंभव है!

यही वजह है कि मैं जन-कमिसार परिषद् से बरतरफ़ हो रहा हूं।

मैं अपने इस निर्णय की गंभीरता को समझता हूं, परंतु मैं अब और सहन नहीं कर सकता...[2]

उसी दिन क्रेमलिन में मौजूद सफ़ेद गार्डों और युंकरों ने हथियार डाल दिये और उन्हें सही-सलामत बाहर जाने दिया गया। उनके और बोल्शेविकों के बीच जो शांति-संधि हुई, यह नीचे दी जाती है:

१. सार्वजनिक सुरक्षा समिति का अस्तित्व समाप्त किया जाता है।

२. सफ़ेद गार्ड अपने हथियार रखते हैं और अपने संगठन को भंग करते हैं। अफ़सर अपनी तलवारें और नियमानुमोदित दूसरे छोटे हथियार रख सकते हैं। सैनिक स्कूलों में वही हथियार छोड़े जायेंगे, जो शिक्षण के लिए आवश्यक हैं। बाक़ी सभी हथियार **युंकरों** द्वारा समर्पित किये जायेंगे। सैनिक क्रांतिकारी समिति व्यक्तिगत स्वतंत्रता तथा सुरक्षा की गारंटी देती है।

३. दूसरी धारा में उल्लिखित निरस्त्रीकरण के प्रश्न का निपटारा करने के लिए शांतिवार्ता में भाग लेने वाले सभी संगठनों के प्रतिनिधियों को लेकर एक विशेष आयोग नियुक्त किया जाता है।

४. इस शान्ति-संधि पर हस्ताक्षर होते ही दोनों पक्ष अविलंब लड़ाई बन्द करने तथा समस्त सैनिक गतिविधि रोक देने के लिए आदेश देंगे और इस आदेश की यथासमय पूर्ति के लिए कार्रवाई करेंगे।

५. संधि पर हस्ताक्षर होने पर दोनों पक्षों द्वारा गिरफ़्तार किये गये सभी क़ैदियों को रिहा कर दिया जायेगा...

दो दिनों से शहर बोल्शेविकों के हाथ में था। भयभीत नागरिक तहख़ानों से निकल रहे थे और अपने साथियों की लाशों को ढूंढ़ रहे थे। बैरिकेड हटा दिये गये थे। फिर भी मास्को के विध्वंस की कहानियां घटने की जगह और भी अतिरंजित होकर फैलती जा रही थीं... वहां से आने वाली इन भयानक रिपोर्टों के असर से ही हमने मास्को जाने का फ़ैसला किया।

कुछ भी हो, पेत्रोग्राद दो सौ साल से शासन का केन्द्र होते हुए भी अभी भी एक कृत्रिम नगर था। मास्को है असली रूस, रूस जैसा वह अतीत में था और जैसा वह भविष्य में होगा। मास्को में हमें क्रांति के बारे में रूसी जनता की सच्ची भावना का पता लगेगा। वहां पर जीवन अधिक तीव्र है।

पिछले एक सप्ताह मे आम मज़दूरों की सहायता से पेत्रोग्राद की सैनिक क्रांतिकारी समिति ने निकोलाई रेलवे लाइन पर क़ब्ज़ा कर रखा था और वह उस लाइन पर दक्षिण-पूर्व की ओर मल्लाहों और लाल गार्डों से भरी रेल-गाड़ी पर रेल-गाड़ी दौड़ा रही थी... हमें स्मोलनी से पास

मिले थे, जिनके बिना कोई भी राजधानी से बाहर नहीं जा सकता था ...
जब गाड़ी पीछे की ओर चलती हुई स्टेशन में आकर ठहर गई, मैले-कुचैले सिपाहियों की एक भीड़, जो अपने हाथों में खाने-पीने की चीज़ों की बोरियां लिये हुए थे, दरवाज़ों-खिड़कियों पर टूट पड़ी; उन्होंने खिड़कियों के शीशे तोड़ डाले और वे सभी डिब्बों में इस तरह भर गये, कि सीटें तो क्या रास्तों में भी तिल धरने की जगह न रह गयी, यहां तक कि कुछ गाड़ी की छत पर भी चढ़ गये। हममें से तीन बड़ी मुश्किल से एक डिब्बे में घुस गये, लेकिन क़रीब उसी वक़्त बीसेक सिपाही अंदर घुसने लगे, जब कि वहां सिर्फ़ चार आदमियों के लिए जगह थी। हमने उनके साथ बहस की, आपत्ति प्रगट की और कंडक्टर ने भी हमारा समर्थन किया, लेकिन सब बेसूद, सिपाहियों ने हमारी बात को हंसी में उड़ा दिया। वे उन सारे **बुर्जुई** (पूंजीपतियों) के आराम की फ़िक्र क्यों करें? हमने स्मोल्नी के अपने पास दिखाये और सिपाहियों का रुख़ फ़ौरन बदल गया।

"मान जाइये, साथियो," एक ने चिल्ला कर कहा। "ये अमरीकी **तोवारिश्ची** (साथी) हैं। ये लोग तीस हज़ार **वेर्स्ता** से हमारी क्रांति को देखने आये हैं और स्वभावतः थके हुए हैं ..."

नम्र और मैत्रीपूर्ण भाव से क्षमा मांगते हुए सिपाही जाने लगे। ज़रा देर बाद आवाज़ आई, वे ज़बरदस्ती एक डिब्बे में घुस रहे थे, जिसमें दो मोटे-ताज़े सुन्दर वेश-भूषा वाले रूसी जमे हुए थे; उन्होंने कंडक्टर को धूस दी थी और भीतर से दरवाज़ा बंद कर लिया था।

शाम को क़रीब सात बजे गाड़ी स्टेशन से बाहर निकली – एक बहुत बड़ी गाड़ी, जिसे एक छोटा सा कमज़ोर इंजन खींच रहा था, जिसमें कोयले की जगह लकड़ी जलाई जा रही थी। गाड़ी धीमी रफ़्तार से जगह जगह रुकती, लड़खड़ाती चली जा रही थी। छत पर बैठे सिपाही अपने पैरों से ताल देकर गांवों के करूण, शोकपूर्ण गीत गा रहे थे। अंदर कैरीडोर में, जहां ऐसी ठसाठस भीड़ थी कि बीच से निकलना मुश्किल था, पूरी रात गर्मागर्म बहसें होती रहीं। आदत और दस्तूर के मुताबिक़ कभी कभी कंडक्टर टिकट देखने के लिए वहां आता, लेकिन हमारे जैसे दो-चार आदमियों को छोड़ कर टिकट नदारद थे। आधे घंटे तक फ़ज़ूल बहस और

तकरार करने के बाद वह निराश भाव से अपने हाथ को झटकारता हुआ वहां से चला गया। हवा में बदबू और धुआं भरा हुआ था और बेतरह घुटन थी। अगर खिड़कियों के शीशे टूटे न होते, तो ज़रूर रात में हमारा दम घुट गया होता।

सुबह कई घंटे 'लेट' चलते हुए, हमने खिड़कियों से देखा – बाहर एक बर्फ़ की दुनिया फैली हुई थी। कड़ाके का जाड़ा पड़ रहा था। दोपहर के क़रीब एक किसान औरत डिब्बे में आई, जिसके हाथ में डबल-रोटी की एक टोकरी थी और कहवे के नाम पर किसी नीमगर्म पेय का एक बड़ा भारी टीन था। इसके बाद से अंधेरा होने तक बस एक ही चीज़– ठसाठस भरी, हचकोले खाती और जगह-जगह रुकती हुई गाड़ी और यदा-कदा कोई स्टेशन, जहां भूखी भीड़ रेस्तोरां पर टूट पड़ती और जो भी थोड़ा-बहुत सामान वहां मिलता, उसे सफ़ाचट कर जाती ... इन्हीं में से एक स्टेशन पर मैं नोगीन और रीकोव से टकरा गया, जो जन-कमिसार परिषद् से बरतरफ़ हो गये थे और अपनी सोवियत के सामने शिकायतें पेश करने के लिए मास्को वापिस लौट रहे थे।* वहां से ज़रा दूर पर भूरी दाढ़ी वाले नाटे क़द के बुख़ारिन खड़े थे, जिनकी आंखों से एक तरह की दीवानगी झलकती थी। "यह लेनिन से भी अधिक वामपंथी हैं," लोग उनके बारे में कहते ...

स्टेशन के घंटे पर तीसरी चोट हुई और हम गाड़ी की तरफ़ दौड़े और घुस कर अंदर गाड़ी के जनसंकुल और कोलाहलपूर्ण भीड़ से एक एक क़दम मुश्किल से चलते हुए अपनी जगह पहुंचे ... यह एक ख़ुशमिज़ाज भीड़ थी, जो सफ़र की तक़लीफ़ों को पुरमज़ाक़ सब्र के साथ झेल रही थी और जो, पेत्रोग्राद की परिस्थिति से लेकर ब्रिटिश ट्रेड-यूनियन व्यवस्था तक दुनिया की सभी चीजों के बारे में कभी न ख़त्म होने वाली बहस कर रही थी और गाड़ी में जो चंद **बुर्जुई** (पूंजीपति) थे उनके साथ रार मचाये हुई थी। मास्को पहुंचने से पहले प्रायः हर डिब्बे ने खाद्य सामग्री को प्राप्त करने और उसका वितरण करने के लिए एक समिति का निर्वाचन कर लिया था; ये समितियां राजनीतिक दलों में बंट गईं, जो बुनियादी सिद्धांतों को लेकर आपस में झगड़ा करने लगे ...

* देखिये अध्याय ११। – **जॉ० री०**

मास्को का स्टेशन सूना पड़ा था। हम अपने वापसी टिकटों का प्रबन्ध करने के लिए कमिसार के कार्यालय में गये। लेफ़्टीनेंट की वर्दी पहने हुए एक नौजवान आदमी मुंह पर खीझ का भाव लिए वहां बैठा था—यह था कमिसार। जब हमने स्मोल्नी के अपने काग़ज़ात उसे दिखाये, उसका गुस्सा भड़क उठा। उसने कहा कि वह बोल्शेविक नहीं है, वह सार्वजनिक सुरक्षा समिति का प्रतिनिधि है... यह एक मिसाली वाक़या था—शहर पर क़ब्ज़ा करने की आम हड़बड़ी में विजेताओं को मुख्य रेलवे स्टेशन का ही ध्यान न रहा था...

बाहर एक भी बग्घी-गाड़ी नज़र नहीं आ रही थी। लेकिन वहां से थोड़ी ही दूर पर एक **इज़्वोज़चिक** (कोचवान) भद्दी रूईदार बंडी पहने अपनी छोटी सी स्लेज के बाक्स पर बैठे बैठे ऊंघ रहा था। हमने उससे पूछा, "बीच शहर चलने का क्या लोगे, भाई?"

उसने अपना माथा खुजलाते हुए कहा, "आप श्रीमानों को किसी भी होटल में कमरा नहीं मिलेगा। लेकिन सौ रूबल दीजिये, तो मैं आपको घुमा दूं..." क्रान्ति से पहले उतनी दूर जाने के सिर्फ़ **दो रूबल** लगते थे! हमने एतराज़ किया, लेकिन उसने अपने कंधों को जुम्बिश देकर कहा, "जनाब, आजकल स्लेज चलाना मामूली बात नहीं है। उसके लिए गज भर की छाती चाहिये।" हम किसी भी तरह उसे पचास रूबल से नीचे नहीं उतार सके... जब हम निस्तब्ध धुंधली बर्फ़ीली सड़कों पर स्लेज-गाड़ी से भागे जा रहे थे, उसने छः दिन की लड़ाई के अपने रोमांचकारी अनुभव को बयान किया: "स्लेज-गाड़ी चला रहा हूं या किसी मोड़ पर मुसाफ़िर का इंतज़ार कर रहा हूं और यकायक बड़े ज़ोर का धमाका! एक गोला यहां छूट रहा है एक वहां और फिर कड़कड़ कड़कड़ मशीनगन चलने की आवाज़... चारों ओर धांय धांय गोलियां छूट रही हैं... मैं घोड़ा दौड़ा देता हूं और एक अच्छी ख़ामोश सड़क पर पहुंचकर रुक जाता हूं, ज़रा देर ऊंघता हूं और फिर वही धमाका—एक और गोला फटता है—फिर वही कड़कड़... शैतान के बच्चे! शैतान के बच्चे!!"

बीच शहर में बर्फ़ से भरी सड़कों पर हंगामे के बाद की ख़ामोशी छाई हुई थी गोया शहर भारी बीमारी के बाद निढाल पड़ा हो। चंद आर्क-बत्तियां ही जल रही थीं और इक्के-दुक्के आदमी राह चलते नज़र

आ रहे थे। मैदानों से बर्फ़ानी हवा बह रही थी, जो बदन को तीर की तरह लगती थी। हम सबसे पहले जिस होटल में घुसे, उसके दफ़्तर में दो मोमबत्तियां जल रही थीं।

"जी हां, हमारे पास कुछ बहुत ही आरामदेह कमरे हैं, लेकिन उनकी खिड़कियों के शीशे उड़ गये हैं। अगर **गोस्पोदीन** (श्रीमान) को थोड़ी सी ताज़ी हवा खाने में एतराज़ न हो..."

त्वेरस्काया मार्ग पर दुकानों की खिड़कियां चकनाचूर हो गई थीं; सड़क पर गोलियों के निशान थे और जहां-तहां उखड़े हुए पत्थर पड़े थे। हम एक के बाद दूसरे होटल में गये। वे सभी भरे हुए थे, या उनके मालिक अभी भी इतने डरे हुए थे कि वे बस इतना ही अपने मुंह से निकाल सके, "नहीं, भाई, नहीं, हमारे यहां जगह नहीं है, बिल्कुल जगह नहीं है!" मुख्य सड़कों पर, जहां बड़े बड़े बैंक और कोठियां थीं, बोल्शेविक तोपख़ाने ने आयें-बायें देखे बिना ज़बरदस्त गोलाबारी की थी। जैसा एक सोवियत अधिकारी ने मुझे बताया, "जब भी हमें यह मालूम न होता कि **युंकर** और सफ़ेद कहां हैं, हम उनकी 'पासबुकों' पर गोले दाग़ते ..."

अन्ततोगत्वा 'नत्सिओनाल' होटल में, जो एक ख़ासा बड़ा होटल था, हमें जगह दी गई, कारण, हम विदेशी थे और सैनिक क्रांतिकारी समिति ने उन जगहों की रक्षा का वचन दिया था, जहां विदेशी रहते हैं... सबसे ऊपर की मंज़िल पर मैनेजर ने हमें वे जगहें दिखाईं, जहां कई खिड़कियां गोलियों से चकनाचूर हो गई थीं। कल्पना में बोल्शेविकों को अपना घूंसा दिखाते हुए उसने कहा, "जानवर कहीं के! लेकिन ठहरो! उनके दिन पूरे होने ही वाले हैं! दो-चार दिनों के अंदर ही इस हास्यास्पद सरकार का पतन होता और फिर हम उन्हें मज़ा चखायेंगे!.."

हमने एक शाकाहारी भोजनालय में खाना खाया, जिसका नाम बड़ा दिलचस्प था: 'मैं किसी को खाता नहीं' और जिसकी दीवारों पर तोल्स्तोई की तसवीरें लगी थीं। खाना खाते ही हम फिर सड़कों पर निकल पड़े।

मास्को सोवियत का सदर दफ़्तर ठीक स्कोबेलेव चौक पर एक शानदार सफ़ेद इमारत में था – एक महल, जो भूतपूर्व गवर्नर-जनरल का आवास था। फाटक पर लाल गार्ड पहरा दे रहे थे। चौड़ी आरास्ता

सीढ़ी से, जिसकी दीवारें समिति की सभाओं तथा राजनीतिक पार्टियों के भाषणों की सूचनाओं से भरी हुई थीं, चढ़ कर हम एक के बाद एक कई आलीशान पेश-कमरों से गुज़रे, जिनमें सुनहरे फ़्रेमों में जड़ी और लाल कपड़े से ढंकी तसवीरें टंगी हुई थीं, और फिर हम सुनहरी कार्निसों वाले भव्य राजकीय स्वागत-कक्ष में पहुंचे, जिसमें बिल्लौरी के ख़ूबसूरत झाड़-फ़ानूस लगे हुए थे। वहां धीमी आवाज़ों की एक हल्की सी गूंज के साथ बीसेक सिलाई मशीनों की घर्र घर्र की आवाज़ मिल गई थी। लाल और काले कपड़े के सूती थान खुले हुए थे और वे जगह जगह बल खाते लकड़ी के फ़र्श और मेज़ों के ऊपर फैले हुए थे। मेज़ों के साथ क़रीब पचास कटाई और सिलाई करती हुई औरतें क्रांतिकारी शहीदों की शवयात्रा के लिए फरहरे और झंडे तैयार कर रही थीं। इन स्त्रियों के चेहरे जीवन की कठिन दाह से झुलस गये थे और उनमें स्निग्धता शेष न रही थी। इस समय वे निस्तब्ध भाव से काम कर रही थीं और उनमें बहुतों की आंखें रोते रोते लाल हो गई थीं... लाल सेना के बहुत से आदमी मारे गये थे।

एक कोने में मेज़ के साथ दढ़ियल रोगोव बैठे थे–देखने में बुद्धिमान, चश्मा लगाये और मज़दूरों की काली जैकेट पहने हुए। उन्होंने हमें आमन्त्रित किया कि हम दूसरे दिन शवयात्रा में केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति के साथ साथ चलें...

"समाजवादी-क्रांतिकारियों और मेन्शेविकों को कुछ भी सिखाना असंभव है!" उन्होंने तेज़ी से कहा। "वे अपनी आदत से मजबूर हैं और समझौता किये बिना मान नहीं सकते। ज़रा सोचिये, उन्होंने प्रस्ताव किया कि हम **युंकरों** के साथ मिल कर जनाज़े निकालें!"

हॉल की दूसरी ओर से सिपाहियों वाला फटा पुराना कोट पहने और **शाप्का** (टोपी) लगाये एक आदमी वहां आया, जिसका चेहरा मेरे लिये परिचित था। मैंने पहचाना, यह मेल्निचान्स्की था। उसे बायोने, न्यू-जर्सी (अमरीका) में स्टैण्डर्ड आयल कम्पनी की ज़बरदस्त हड़ताल के ज़माने में मैं घड़ीसाज़ जार्ज मेल्चर के नाम से जानता था। उसने मुझे बताया कि अब वह मास्को धातुकर्मी यूनियन का मंत्री और लड़ाई के दौरान सैनिक क्रांतिकारी समिति का एक कमिसार था।

"मेरा हाल देखिये!" उसने अपने फटे-पुराने कपड़ों की ओर इशारा

करके कहा। "जब पहली बार **युंकर** क्रेमलिन में आये, मैं वहां अपने जवानों के साथ था। उन्होंने मुझे तहख़ाने में बंद कर दिया और मेरा ओवरकोट, रुपया-पैसा, मेरी घड़ी और यहां तक कि मेरी अंगूठी भी उड़ा दी। अब मेरे पास पहनने के लिए बस यही रह गया है!"

उसने मुझे उस छः दिन की ख़ूनी लड़ाई के बारे में बहुत सी बातें बताईं, जिसने मास्को को दो हिस्सों में बांट दिया था। पेत्रोग्राद के विपरीत मास्को में नगर दूमा ने **युंकरों** और सफ़ेद गार्डों की कमान संभाली थी। मेयर रूदनेव और दूमा के सभापति मीनोर महोदय ने सार्वजनिक सुरक्षा समिति की तथा सैनिकों की कार्यवाहियों का संचालन किया था। नगर का कमांडेंट, रियाब्त्सेव जनवादी प्रवृत्तियों का व्यक्ति था और वह सैनिक क्रांतिकारी समिति की मुख़ालफ़त करते हिचकिचा रहा था, लेकिन दूमा ने उसे मजबूर कर दिया था... क्रेमलिन पर क़ब्ज़ा करने का आग्रह मेयर ने ही किया था। "वहां वे आपके ऊपर गोले दाग़ने की जुर्रत कभी नहीं करेंगे," उन्होंने कहा था...

गैरिसन की एक रेजीमेंट से, जो लंबी निष्क्रियता के कारण बिल्कुल पस्तहिम्मत हो चुकी थी, दोनों पक्षों ने सहायता मांगी। रेजीमेंट ने यह फ़ैसला करने के लिये कि वह क्या क़दम उठाये, एक मीटिंग की और यह फ़ैसला किया कि रेजीमेंट तटस्थ रहे और अपनी मौजूदा कार्रवाइयों को चलाती जाये–ये कार्रवाइयां थीं सूरजमुखी के बीज और लाइटर बेचना!

"लेकिन सबसे बुरी बात यह थी,'" मेल्निचान्स्की ने आगे कहा, "कि हमें लड़ते लड़ते ही अपने को संगठित भी करना पड़ा। दूसरा पक्ष जानता था कि उसे क्या चाहिए, लेकिन हमारे यहां सिपाहियों की अपनी सोवियत थी और मज़दूरों की अपनी... मुख्य सेनापति कौन होगा, इस बात को लेकर ऐसी तू-तू मैं-मैं हुई कि पूछो मत। कई रेजीमेंटों न कई कई दिन तक बहस करने के बाद ही कहीं जाकर कुछ करने का फ़ैसला किया। और जब अफ़सरों ने एकाएक हमारा साथ छोड़ दिया, हमें आदेश देने वाला कोई न रहा; हमारी युद्ध-कमान ही नदारद थी..."

उसने उन दिनों की छोटी छोटी घटनाओं का बड़ा सजीव वर्णन किया। एक दिन, जब आसमान धुंधला-धुंधला था और काफ़ी सर्दी थी, वह निकीत्स्काया मार्ग की मोड़ पर खड़ा था, जहां मशीनगन की गोलियों

की बौछार हो रही थी। मोड़ पर छोटे छोटे लड़कों की एक भीड़ जमा थी – सड़कों पर आवारा फिरने वाले लड़के, जो पहले अख़बार बेचा करते थे। धृष्ठ, दुस्साहसी, उत्तेजित, जैसे उन्हें खेलने के लिए एक नया खेल मिल गया हो, वे बौछार धीमी होने का इंतज़ार करते और फिर दौड़ कर सड़क पार करने की कोशिश करते ... उनमें बहुतेरे मारे गये, लेकिन बाक़ी एक ओर से दूसरी ओर दौड़ लगाते रहे, हंसते खिलखिलाते, एक दूसरे को ललकारते ...

शाम को काफ़ी देर से मैं **द्वोरियान्सकोये सोब्रानिये** – अभिजातों के क्लब – में गया, जहां मास्को के बोल्शेविक मिलने वाले थे और जन-कमिसार परिषद् का परित्याग करके आये हुए नोगीन, रीकोव इत्यादि की रिपोर्ट पर विचार करने वाले थे।

सभा एक थियेटर में हुई, जहां पुराने ज़ारशाही ज़माने में शौकिया खिलाड़ी सब से ताज़ा फ़्रांसीसी प्रहसन का अफ़सरों और भड़कीले कपड़े पहनी हुई महिलाओं के सामने अभिनय किया करते थे।

सभा में सबसे पहले बुद्धिजीवी लोग इकट्ठे हुए, जो नगर-केन्द्र के समीप रहते थे। नोगीन बोले और यह स्पष्ट था कि अधिकांश श्रोता उनका समर्थन करते हैं। मज़दूर देर से पहुंचे, क्योंकि मज़दूर बस्तियां शहर के बाहरी हिस्सों में थीं और ट्राम-गाड़ियां चल नहीं रही थीं। लेकिन आधी रात के क़रीब वे दस दस, बीस बीस कर के सीढ़ियों पर जमा होने लगे – मोटे, खुरदरे कपड़े पहने , सीधे-सादे लोग, जो अभी मोर्चे से लौटे थे, जहां पूरे एक सप्ताह तक उन्होंने दानवों की तरह युद्ध किया था और अपने चारों ओर अपने साथियों को धराशायी होते देखा था।

सभा औपचारिक रूप से शुरू हुई ही थी कि गुस्से से चिल्लाते और मज़ाक़ उड़ाते लोग नोगीन के ऊपर बरस पड़े। उन्होंने समझाने की, तर्क करने की कोशिश, लेकिन सब बेकार। वे उनकी बात को सुनने के लिए ही तैयार नहीं थे। इन लोगों ने जन-कमिसार परिषद् का परित्याग किया था। जिस वक़्त लड़ाई की आग ज़ोर से धधक रही थी, वे मोर्चे से भाग खड़े हुए थे। जहां तक पूंजीवादी अख़बारों का सवाल था, यहां कोई पूंजीवादी अख़बार न थे। यहां तक कि नगर दूमा भी भंग कर दी गई थी। रौद्रमूर्ति बुख़ारिन बोलने के लिये खड़े हुए। उनकी बात कील-कांटे

से दुरुस्त थी और आवाज़ ऐसी थी, जैसे पैनी छुरी, जो अंदर घुप आती थी, निकलती थी और फिर घुप जाती थी... वे उनकी बात को सुन रहे थे और उनकी आंखें चमक रही थीं। जन-कमिसार परिषद् की कार्र-वाई का समर्थन करने का प्रस्ताव विशाल बहुमत से पास किया गया। यह थी मास्को की आवाज़...[3,4]

रात बहुत काफ़ी गुज़र चुकी थी, जब हम सूनी सड़कों को पार करते हुए इबेरियाई दरवाज़े से निकल कर क्रेमलिन के सामने विशाल लाल चौक में आये। अंधेरे में वसीली ब्लजेन्नी का गिरजा अद्भुत और विचित्र लग रहा था, उसके रंग-बिरंगे सजावटी लहरियादार गुंबद धुंधले धुंधले चमक रहे थे। कहीं कोई बरबादी के निशान न थे... चौक के एक ओर क्रेमलिन की सियाह बुर्जियां और दीवारें खड़ी थीं। ऊंची दीवारों पर अलावों की लाल रोशनी झिलमिला रही थी, लेकिन अलाव देखे नहीं जा सकते थे। चौक के दूसरी ओर से लोगों के बोलने की और फरसा-कुदाल चलने की आवाज़ें आ रही थीं। चौक पार कर हम उधर गये।

क्रेमलिन की दीवार के साथ मिट्टी और कंकड़-पत्थर के अंबार लगे हुए थे, जिन पर चढ़ कर हमने देखा, नीचे दो बड़े लंबे-चौड़े गड्ढे खोदे जा रहे थे—दस-पन्द्रह फुट गहरे और पचास गज़ लंबे। उनमें सैकड़ों सिपाही और मज़दूर बड़े अलावों की रोशनी में खुदाई कर रहे थे।

एक नौजवान विद्यार्थी ने हमसे जर्मन में बात की। "यह बिरादराना क़ब्र है," उसने हमें समझाया। "कल हम यहां क्रांति के लिए अपनी ज़िंदगी क़ुर्बान करने वाले पांच सौ सर्वहाराओं को दफ़नायेंगे।"

वह हमें नीचे गड्ढे में ले गया। फरसे-कुदाल बड़ी तेज़ी से चल रहे थे और मिट्टी के स्तूप और भी तेज़ी से उठते जा रहे थे। किसी के लबों पर आवाज़ न थी। ऊपर आसमान सितारों से भरा हुआ था और क़दीम शाही क्रेमलिन की दीवार बेअंदाज़ ऊंची नज़र आ रही थी।

"इस पाक जगह में," विद्यार्थी ने कहा, "जो पूरे रूस में सबसे ज़्यादा पाक-माफ़ है, हम अपने पाकीज़ा साथियों को दफ़नायेंगे। यहां जहां पर ज़ारों के मज़ार हैं, हमारा ज़ार – जनता – सोयेगी..." उसका एक हाथ स्लिंग से लटका था। उसे लड़ाई में गोली लगी थी। अपनी चोट की ओर देखते हुए उसने कहा, "आप विदेशी लोग हम रूसियों को

हिकारत की निगाह से देखते हैं, क्योंकि हमने इतने दिनों तक मध्ययुगीन राजतंत्र को बर्दाश्त किया। लेकिन हमने यह देखा कि संसार में ज़ार ही अकेला अत्याचारी नहीं है। पूंजीवाद उससे भी गया-बीता है। और संसार के सभी देशों में पूंजीवाद की तूती बोलती है... रूसी क्रांतिकारी कार्यनीति सबसे अच्छी कार्यनीति है..."

जब हम वहां से चले, मज़दूर, जो थक कर चूर हो गये थे और सर्दी के बावजूद पसीने से नहाये हुए थे, भारी क़दम रखते बाहर निकलने लगे। लाल चौक की दूसरी ओर से कुछ धुंधली सी आकृतियां जल्दी जल्दी उधर बढ़ी आ रही थीं। ये दूसरी पाली के लोग थे, जो झुंड के झुंड गड्ढों में उतर गये और फरसे-कुदाल उठा कर चुपचाप खोदने लगे...

इस प्रकार पूरी रात आम जनता के बीच से आने वाले इन वालंटियरों ने बारी बारी से एक दूसरे का स्थान ग्रहण करते हुए काम किया – खुदाई उसी प्रचंड वेग से चलती रही, अविराम और अनवरत। और जब सुबह की ठंडी रोशनी ने बर्फ़ से ढके सफ़ेद विशाल लाल चौक से कुहासे का झीना पर्दा हटा लिया, लोगों ने देखा, "बिरादराना क़ब्र" के मुंह बाये सियाह गड्ढे पूरी तरह खोदे जा चुके हैं।

हम सूरज निकलने से पहले ही उठे और जल्दी जल्दी पैर बढ़ाते अंधेरी सड़कों से हो कर स्कोबेलेव चौक पहुंचे। इतना बड़ा शहर लेकिन कहीं चिड़िया का पूत भी दिखाई नहीं दे रहा था। बस दूर और नज़दीक, सभी जगह एक हल्का सा मर्मर स्वर था, जैसा उस वक़्त होता है, जब निस्तब्धता को भंग कर हवा चलने ही वाली होती है। भोर के धुंधलके में सोवियत के सदर दफ़्तर के सामने मर्दों और औरतों की एक छोटी सी भीड़ जमा थी, जिनके हाथ में स्वर्णाक्षरों से अंकित लाल पताकायें थीं– ये थे मास्को सोवियत की कार्यकारिणी समिति के सदस्य। रोशनी फैली और धीरे धीरे दूर कहीं वह मर्मर ध्वनि गहरी हुई और तेज़ और फिर वह गंभीर मंद्र स्वर में बदल गई। शहर उठ रहा था। हम त्वेरस्काया मार्ग से चले – झंडे हमारे सिर के ऊपर फहरा रहे थे। रास्ते में जो छोटे छोटे गिरजे थे, वे बंद थे और उनमें रोशनी गुल थी उसी तरह, जैसे माता मरियम का इबेरियाई गिरजा बंद था, वह गिरजा, जहां हर नया ज़ार क्रेमलिन में राज्याभिषेक होने से पहले आकर शीश नवाता था और जो

रात हो या दिन हमेशा खुला रहता था, जहां हमेशा भीड़-भड़क्का और चहल-पहल रहती थी और जो श्रद्धालुओं की मोमबत्तियों के प्रकाश में झिलमिलाती हुई प्रतिमाओं के सोने-चांदी और जवाहिरात की चकाचौंध से जगमग रहता था। कहते हैं कि जब मास्को में नेपोलियन आया था, तब से आज तक के समय में ये मोमबत्तियां पहली बार गुल हुई थीं।

पवित्र प्रावोस्लाव चर्च ने मास्को से, जो क्रेमलिन पर गोलाबारी करने वाले कुटिल, श्रद्धाहीन जनों का अड्डा बना हुआ था, अपना वरद हस्त खींच लिया था। गिरजाघरों में अंधेरा और सन्नाटा था। पादरी ग़ायब हो गये थे। लाल शहीदों की अंत्येष्टि-क्रिया के पादरी मौजूद न थे। काफ़िरों की क़ब्रों पर न दुआयें की गईं, न मर्सिया पढ़ा गया, न और कोई मज़हबी रस्म पूरी की गई। निकट भविष्य में मास्को के धर्माध्यक्ष तीख़ोन सोवियतों का धर्मबहिष्कार करने वाले थे...

गिरजाघरों की तरह दुकानें भी बंद थीं और मिल्की वर्गों के लोग अपने घरों के अंदर ही थे, लेकिन इसकी वजह कुछ और थी। यह जनता का दिवस था, जिसके आगमन की ध्वनि समुद्र के प्रचंड गर्जन की तरह गूंज रही थी...

अभी से इबेरियाई दरवाज़े से एक रेला चला आ रहा था। विशाल लाल चौक में हज़ारों नरमुंड देखे जा सकते थे। मैंने ग़ौर किया कि जब भीड़ इबरियाई गिरजे के सामने से गुज़री, जहां से जाने वाला हर आदमी हमेशा नतमस्तक होकर क्रूस का चिह्न बनाता था, उसने जैसे गिरजे को लक्ष्य ही नहीं किया...

क्रेमलिन की दीवार के पास जो घनी भीड़ जमा थी, हम ठेलते-ठालते उसके बीच से निकल कर मिट्टी के एक स्तूप पर खड़े हो गये। अभी से कई आदमी वहां पहुंच गये थे; उनमें मुरानोव नामक सिपाही भी था, जिसे मास्को का कमांडेंट चुना गया था। एक लंबा-तड़ंगा, सीधा-सादा दढ़ियल आदमी, जिसके चेहरे से कोमलता टपकती थी।

लाल चौक जाने वाली सभी सड़कों से रेले चले आ रहे थे—हज़ारों आदमी, जिनको देखने से मालूम होता था कि वे सब ग़रीब और मेहनतकश लोग हैं। 'इंटरनेशनल' की धुन बजाता हुआ एक फ़ौजी बैंड मार्च करता हुआ आया, और जैसे हवा के असर से समुद्र में लहरें उठती और फैलती

ी. यह धुन – मंद्र और गंभीर – अपने-आप जन-समुद्र के बीच फैल गयी : हर आदमी के लबों पर वही गाना। क्रेमलिन की दीवार से बड़े बड़े झंडे नीचे की ओर लटके हुए थे – लाल झंडे, जिन की सुर्ख़ ज़मीन पर बड़े बड़े सुनहले और सफ़ेद अक्षरों में अंकित था : "विश्व समाजवादी क्रांति की पहली लड़ाई के शहीदों को" और "संसार के मज़दूरों का भाईचारा – ज़िंदाबाद!"

लाल चौक में तेज़ सर्द हवा बह रही थी और उसकी वजह से नीचे झुके हुए झंडे उठ-उठ जाते थे। अब शहर की दूर की बस्तियों से विभिन्न कारखानों के मज़दूर अपने साथियों को लिये हुए पहुंचने लगे थे। हम देख सकते थे, वे इबेरियाई दरवाज़े से चले आ रहे थे – हम उनके सुर्ख़ झंडों को और उनके साथ फ़ीके लाल – ख़ून की तरह लाल – ताबूतों को देख सकते थे। ये ताबूत भोंडे अनगढ़ क़िस्म के संदूक थे, जिनकी लकड़ी पर रंदा भी न किया गया था और जिन पर लाल रंग पोत दिया गया था। उसी तरह अनगढ़ अपरिष्कृत लोग उन्हें अपने कंधों पर उठाये थे – उनकी आंखों से आंसू जारी थे और उनके पीछे औरतें रोती-कलपती या मौन, यंत्रवत चल रही थीं – चेहरे फक और उनपर मुर्दनी छायी हुई। कुछ ताबूत खुले हुए थे और पीछे के लोग उनके ढक्कन लिये चल रहे थे। कुछ सुनहरे या रुपहले गोटों से टंके कपड़ों से ढंके थे या उनके ऊपर सिपाही की टोपी कील से जड़ दी गयी थी। बेढंगे नकली फूलों की कितनी ही मालायें वहां थीं...

मातमी जुलूस भीड़ के बीच से रास्ता बनाता उधर आ रहा था, जिधर हम खड़े थे। इबेरियाई दरवाज़े से एक अनवरत क्रम में झंडे बढ़े आ रहे थे – हल्के से हल्के से लेकर गहरे से गहरे लाल रंग के झंडे – जिन पर सुनहरे और रुपहले अक्षर अंकित थे और जिनसे काले क्रेप के मातमी फ़ीते लटके हुए थे। उनमें कुछ अराजकतावादियों के भी झंडे थे, सफ़ेद अक्षरों से अंकित काले झंडे। फ़ौजी बैंड 'क्रांतिकारी शवयात्रा' की धुन बजा रहा था, और चौक में नंगे सिर खड़ी तमाम भीड़ वही गाना गा रही थी और वही जुलूस के लोग भारी और रुलाई आने से रुंधी हुई आवाज़ में गा रहे थे...

मिल मज़दूरों के बीच में सिपाहियों की कंपनियां अपने ताबूत लिये

चल रही थीं, घुड़सवारों के स्क्वाड्रन सलामी देते हुए, और तोपख़ाने के बैटरी-दस्ते भी चल रहे थे, जिनकी तोपों के मुंह लाल और काले कपड़े से ढंके हुए थे – लगता था अब उनके मुंह कभी न खुलेंगे। उनके फरहरों पर लिखा था: "तीसरा इंटरनेशनल ज़िंदाबाद!" या "हम सच्ची, सामान्य, जनवादी शांति चाहते हैं!"

जुलूस अपने ताबूतों को लिये हुए धीरे धीरे क़ब्र के पास पहुंचा और जो लोग ताबूत लिये चल रहे थे, वे अपना बोझ उठाये मिट्टी के ढूहों पर चढ़ गये और गड्ढों में उतर गये। उनमें बहुत सी स्त्रियां भी थीं – मज़बूत, चौड़ी-चकली मज़दूर स्त्रियां। ताबूतों के पीछे दूसरी स्त्रियां थीं, भग्नहृदय युवतियां या वृद्धायें, जिनके मुंह पर झुर्रियां पड़ी थीं और जो घायल हिरणी की तरह अस्फुट स्वर में कराह रही थीं। ये स्त्रियां अपने पतियों या पुत्रों के पीछे बिरादराना क़ब्र में जाने की कोशिश करतीं और जब दयालु हाथ उन्हें रोक लेते, वे चीख़ पड़तीं। ग़रीब लोग एक-दूसरे से कितना प्यार करते हैं!

जुलूस का सिलसिला सारे दिन जारी रहा – वे इबेरियाई दरवाज़े की ओर से चौक में प्रवेश करते और निकोल्स्काया मार्ग से निकलते – जुलूस क्या था, लाल फरहरों का एक दरिया था, जिन पर आशा के, भाईचारे के, विस्मयकारी भविष्यवाणियों के शब्द अंकित थे। पृष्ठभूमि में पचास हज़ार आदमी चल रहे थे, जिन पर दुनिया के मज़दूरों की निगाहें थीं और जिन पर इन मज़दूरों के वंशजों की निगाहें सदा के लिए लगी रहनी थीं...

एक एक करके पांच सौ ताबूत गड्ढों में उतारे गये। शाम का झुटपुटा होने लगा, लेकिन झंडे अभी भी चले आ रहे थे – झुके हुए और लहराते हुए। फ़ौजी बैंड अभी भी 'शवयात्रा' की धुन बजा रहा था और विशाल भीड़ वही गाना गा रही थी। क़ब्र के ऊपर ठुंठ पेड़ों की शाखों में मालायें लटक रही थीं; लगता था उन पेड़ों में अद्भुत पंचरंगी फूल खिल गये हैं। दो सौ आदमी फरसे लेकर क़ब्र में मिट्टी डालने लगे। ताबूतों पर भुरभुरी मिट्टी के बिखेरे जाने की आवाज़ करुण जन-गायन के बीच भी सुनी जा सकती थी...

बत्तियां जलायी गयीं। धीरे धीरे करके अख़िरी झंडे और फरहरे

गुजर गये और कराहती और आहें भरती हुई आखिरी औरतें तीव्र, भावपूर्ण, विह्वल दृष्टि से पीछे की ओर देखती हुई निकल गयीं। विशाल चौक में सर्वहारा-जनों की जो ज्वार आयी थी, वह धीरे धीरे लौट गयी...

सहसा मुझे अनुभूति हुई कि धर्म-परायण रूसी जनता को अब इस बात की जरूरत न रही कि पादरी और पुरोहित उसके स्वर्गारोहण के लिए प्रार्थना करें। वह अब पृथ्वी पर ही एक स्वर्ग का निर्माण कर रही थी, जो किसी भी स्वर्ग से अधिक उज्ज्वल है और जिसके लिए अपने प्राणों की आहुति देना एक गौरव की बात है...

ग्यारहवां अध्याय

सत्ता पर अधिकार[1]

रूस की जातियों के अधिकारों की घोषणा[2]

... इस साल जून में सोवियतों की पहली कांग्रेस ने रूस की जातियों के आत्मनिर्णय के अधिकार की घोषणा की।

पिछले नवम्बर में सोवियतों की दूसरी कांग्रेस ने रूस की जातियों के इस असंक्राम्य अधिकार की और भी निर्णायक तथा निश्चित रूप से पुष्टि की।

इन कांग्रेसों की इच्छा को कार्यान्वित करती हुई, जन-कमिसार परिषद् ने निर्णय किया है कि वह जातियों के प्रश्न के संबंध में अपने क्रिया-कलाप के आधार रूप में निम्नलिखित सिद्धांतों को स्थापित करे:

(१) रूस की जातियों की समानता तथा प्रभुसत्ता।

(२) रूस की जातियों का, विलग होने तथा स्वतंत्र राज्य स्थापित करने की हद तक भी, स्वतंत्र आत्मनिर्णय का अधिकार।

(३) समस्त राष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय-धार्मिक विशेषाधिकारों और प्रतिबंधों का उन्मूलन।

(४) रूस के राज्यक्षेत्र में निवास करने वाली अल्पसंख्यक जातियों तथा जातीय दलों का उन्मुक्त विकास।

जाति-संबंधी एक आयोग स्थापित करने के फ़ौरन बाद तत्संबंधी आज्ञप्तियां तैयार की जायेंगी।

रूसी जनतंत्र के नाम पर

जातियों के लिए जन-कमिसार
जोज़ेफ द्जुगा श्वीली-स्तालिन
जन-कमिसार परिषद् के अध्यक्ष
व्ला० उल्यानोव (लेनिन)

कीयेव में स्थापित केंद्रीय रादा ने फ़ौरन उक्रइना को स्वाधीन जनतंत्र घोषित कर दिया ; हेल्सिंगफ़ोर्स की सीनेट की मारफ़त फ़िनलैंड की सरकार ने भी ऐसा ही किया। साइबेरिया और काकेशिया में भी स्वतंत्र "सरकारें" बरपा हो गईं। पोलैंड की मुख्य सैनिक समिति ने जल्दी जल्दी रूसी सेना के पोलिश सिपाहियों को इकट्ठा किया, उनकी समितियों को भंग कर दिया और लौह-अनुशासन स्थापित किया ...

इन सभी "सरकारों" और आंदोलनों" में दो विशेषतायें समान थीं : उनकी बागडोर मिल्की वर्गों के हाथ में थी और वे बोल्शेविज़्म से दहशत खाते थे और नफ़रत करते थे ...

विस्मयकारी परिवर्तन से उत्पन्न होनेवाली विशृंखलता के बीच जन-कमिसार परिषद् अनवरत रूप से समाजवादी व्यवस्था का ढांचा तैयार करती जा रही थी। सामाजिक बीमा तथा मज़दूरों के नियन्त्रण के बारे में आज्ञप्तियां, वोलोस्त भूमि समितियों के लिए नियमावली, दर्जों और उपाधियों का उन्मूलन, अदालतों की पुरानी व्यवस्था का उन्मूलन और उसकी जगह अवामी अदालतों की स्थापना ...[3]

एक सेना के बाद दूसरी सेना, एक बेड़े के बाद दूसरे बेड़े ने "जनता की नयी सरकार का सहर्ष अभिनंदन करने के लिए" अपने शिष्टमंडल भेजे।

एक दिन स्मोल्नी भवन के सामने मैंने एक फटेहाल रेजीमेंट को देखा, जो अभी अभी खाइयों से लौटी थी। स्मोल्नी के बड़े बड़े फाटकों के सामने ये सिपाही – दुबले-पतले, चेहरे ज़र्द – क़तार बांधे खड़े थे और स्मोल्नी भवन की ओर इस प्रकार देख रहे थे, जैसे ईश्वर स्वयं उसमें निवास करता हो। कुछ सिपाहियों ने हंसते हुए दरवाज़े के शाही उकाबों की ओर इशारा किया ... लाल गार्ड वहां पहरा देने के लिए आये। सभी सिपाही मुड़कर उनकी ओर कुतूहल के भाव से देखने लगे, गोया उन्होंने उनके बारे में सुन तो रखा है, मगर पहले कभी देखा नहीं। सद्भावनापूर्ण भाव से हंसते हुए वे अपनी लाइनों से निकल आते और कुछ मज़ाक़ में और कुछ तारीफ़ में बातें करते हुए लाल गार्डों की पीठ ठोंकते ...

अस्थायी सरकार का अस्तित्व समाप्त हो चुका था। १५ नवम्बर को राजधानी के सभी गिरजाघरों में पादरियों ने उसके लिए दुआ करना बंद कर दिया था। लेकिन, जैसा ख़ुद लेनिन ने अखिल रूसी केन्द्रीय

कार्यकारिणी समिति की एक बैठक में कहा, यह "सत्ता पर अधिकार करने की शुरूआत भर" थी। हथियारों से वंचित होकर विरोध-पक्ष, जिसका देश के आर्थिक जीवन पर अभी भी शिकंजा था, विसंगठन संगठित करने में और संयोजित रूप से कार्य करने की असाधारण रूसी योग्यता के साथ सोवियतों के रास्ते में रोड़े अटकाने, उन्हें पंगु बनाने और उनकी साख मिटाने में जुट गया।

बैंकों तथा कोठियों के रुपये-पैस से चलने वाली सरकारी कर्मचारियों की हड़ताल भली भांति संगठित की गई थी। सरकारी मशीनरी को अपने हाथ में लेने के बोल्शेविकों के प्रत्येक उपक्रम का प्रतिरोध किया गया।

त्रोत्स्की विदेश मंत्रालय में गये। मंत्रालय के कर्मचारियों ने उन्हें मानने से इनकार किया, अंदर से दरवाज़े बंद कर लिये और जब दरवाज़े ज़बरदस्ती खोले गये, उन्होंने इस्तीफ़े दे दिये। त्रोत्स्की ने मंत्रालय के अभिलेखागार की चाबियां मांगीं; ये चाबियां तभी दी गईं, जब ताले तोड़ने के लिए मिस्त्री बुलाये गये। और तब इस बात का पता चला कि भूतपूर्व सहायक परराष्ट्र-मंत्री नेरातोव गुप्त संधियों को लेकर ग़ायब हो गये थे...

श्ल्याप्निकोव ने श्रम मंत्रालय पर अधिकार स्थापित करने की कोशिश की। कड़ाके का जाड़ा पड़ रहा था, लेकिन भीतर आतिशदानों में आग सुलगाने के लिए कोई आदमी मौजूद न था। वहां सैकड़ों कर्मचारी मौजूद थे, लेकिन उनमें एक भी यह बताने के लिए तैयार न था कि मंत्री का अपना कक्ष कहां है...

अलेक्सान्द्रा कोल्लोन्ताई, जिन्हें १३ नवम्बर को जन-कल्याण –अनुदानों तथा जन-कल्याण संस्थानों के विभाग– की कमिसार नियुक्त किया गया था, जब अपने मंत्रालय में पहुंचीं, तो चालीस को छोड़कर बाक़ी सभी कर्मचारियों ने हड़ताल करके उनका स्वागत किया। बड़े बड़े शहरों के ग़रीब-गुरबा पर, ख़ैरात से चलने वाली संस्थाओं के लोगों पर पहाड़ टूट पड़ा: झुंड के झुंड भूखों मरते लूले-लंगड़े लोगों और यतीमों की, जिनके चेहरों पर हवाइयां उड़ रही थीं, मंत्रालय में भीड़ लग गई। उनकी दुर्गति देखकर कोल्लोन्ताई को रोना आ गया और उन्होंने हड़तालियों को तब तक के लिए गिरफ़्तार कर लिया, जब तक कि वे कार्यालयों और सेफ़ की चाबियां

उनके हवाले न कर दें। लेकिन जब उन्हें चाबियां मिलीं, तब इस बात का पता चला कि भूतपूर्व मंत्री काउन्टेस पानिना सारा रुपया-पैसा लेकर चली गई थी, जिसे उन्होंने संविधान सभा के हुक्म के बग़ैर लौटाने से इनकार किया।[4]

कृषि मंत्रालय, खाद्य मंत्रालय, वित्त मंत्रालय में भी इसी प्रकार की घटनायें हुईं। जब मंत्रालयों के कर्मचारियों को हुक्म दिया गया कि वे या तो काम पर वापिस लौटें, या अपनी नौकरियों और पेंशनों से हाथ धोयें, वे या तो लौटे नहीं या लौटे तो भीतर से तोड़-फोड़ करने के लिए लौटे... सोवियत सरकार नये कर्मचारियों की भर्ती कहां से करती — प्रायः सारे बुद्धिजीवी लोग बोल्शेविकों के विरोधी थे...

निजी बैंक बंद थे और बंद रहने पर तुले हुए थे, लेकिन सट्टेबाज़ों के लिए पीछे का चोर दरवाज़ा खुला हुआ था। जब बोल्शेविक कमिसारों ने बैंकों में प्रवेश किया, क्लर्कों ने बही-खातों को छिपा दिया, ख़ज़ाने का रुपया-पैसा कहीं और हटा दिया और ख़ुद ग़ायब हो गये। तहख़ानों और मिंट में काम करने वाले क्लर्कों को छोड़ कर राजकीय बैंक के सभी कर्मचारियों ने हड़ताल कर दी, लेकिन इन क्लर्कों ने भी स्मोल्नी की सभी मांगों को ठुकरा दिया, मगर गुपचुप उद्धार समिति तथा नगर दूमा को बड़ी बड़ी रक़में अदा कीं।

लाल गार्डों के एक दस्ते को साथ लेकर एक कमिसार सरकारी ख़र्च के लिए बड़ी रक़मों की अदायगी के लिए बाक़ायदा ताक़ीद करने के लिए दो बार राजकीय बैंक आया। जब वह पहली बार आया, नगर दूमा के सदस्य और मेन्शेविक तथा समाजवादी-क्रांतिकारी नेता वहां ख़ासी बड़ी तादाद में मौजूद थे और उन्होंने इस कार्रवाई के भयानक परिणामों के बारे में इतनी गंभीरता से बात की कि बेचारा कमिसार घबरा गया। दूसरी बार वह एक वारंट लेकर आया, जिसे उसने बाक़ायदा पढ़ना शुरू किया, लेकिन तभी किसी ने उसका ध्यान इस बात की ओर दिलाया कि वारंट पर न तो कोई तारीख़ थी और न मोहर, और तहरीरी "दस्तावेज़" के लिए रूसियों के मन में जो रवायाती लिहाज़ होता है, उससे मजबूर होकर वह लौट गया...

उधार-चांसरी के कर्मचारियों ने अपने बही-खातों को ही नष्ट कर दिया और इस प्रकार विदेशों के साथ रूस के वित्तीय संबंधों के सारे रिकार्ड जाते रहे।

खाद्य समितियां और नगरपालिका के हाथ में जो सार्वजनिक सेवायें थीं, उनके प्रशासन या तो बिल्कुल ही ठप थे, या तोड़-फोड़ में लगे हुए थे। और जब शहर की आबादी की इन्तिहा ज़रूरतों को देखते हुए बोल्शेविकों ने मजबूरन सार्वजनिक सेवा में सहायता पहुंचाने अथवा उसे अपने नियंत्रण में लेने का प्रयत्न किया, नगरपालिका के सभी कर्मचारी फ़ौरन हड़ताल पर चले गये और दूमा ने बोल्शेविकों द्वारा "नगरपालिका के स्वायत्त अधिकारों के उल्लंघन" के बारे में रूस में सब ओर तार पर तार भेजने शुरू कर दिये।

सैनिक सदर मुक़ाम में, युद्ध तथा नौसेना मंत्रालयों के कार्यालयों में, जहां पुराने कर्मचारी काम करने के लिए राज़ी हुए थे, सैनिक समितियों तथा हाई कमान ने सोवियतों के रास्ते में सभी तरह से रोड़े डाले थे, यहां तक कि उन्हें मोर्चे के सिपाहियों की ज़रूरतों की उपेक्षा तक करने में संकोच न हुआ। **विक्जेल** बैरी बना हुआ था और सोवियत सेनाओं का परिवहन करने से इनकार कर रहा था। सिपाहियों से भरी जो भी रेल-गाड़ी पेत्रोग्राद से रवाना हुई, वह ज़बरदस्ती भेजी गई थी और हर बार रेल कर्मचारियों को गिरफ़्तार करना पड़ा था। इस पर **विक्जेल** ने धमकी दी कि अगर उन्हें छोड़ा नहीं जाता, तो वे फ़ौरन आम हड़ताल शुरू कर देंगे...

स्मोल्नी ज़ाहिरा लाचारी की हालत में था। अख़बारों का कहना था कि ईंधन के अभाव में पेत्रोग्राद के सभी कारख़ानों को तीन हफ़्तों के अंदर बंद कर देना पड़ेगा। **विक्जेल** ने घोषणा की कि पहली दिसंबर तक रेल-गाड़ियों का चलना बंद हो जायेगा। पेत्रोग्राद में सिर्फ़ तीन दिनों के लिए रसद-पानी था और बाहर से माल आने की कोई सूरत नहीं थी। मोर्चे पर सेना फ़ाक़े कर रही थी ... उद्धार समिति और विभिन्न केंद्रीय समितियों ने आबादी से सरकारी आज्ञप्तियों की उपेक्षा करने की अपील करते हुए देश भर में अपने संदेश भेजे थे। मित्र-राष्ट्रों के दूतावास या तो उदासीन भाव से तटस्थ थे, या खुल्लमखुल्ला विरोधी ...

विरोध-पक्ष के समाचारपत्र, जो एक दिन बंद किये जाते और दूसरे दिन सुबह नये नामों से निकलते, नई हुकूमत का बुरी तरह मज़ाक़ उड़ा रहे थे।[5] 'नोवाया जीज़्न' तक ने कहा कि यह सरकार "वाचालता तथा नपुंसकता का एक संयोजन" है।

दिन-ब-दिन (उसने कहा) जन-कमिसारों की सरकार छोटी छोटी बातों के चक्कर में फंसती जा रही है। सत्ता पर सहज ही अधिकार स्थापित कर... बोल्शेविक उसका उपयोग करने में असमर्थ हैं।

वे सरकार की मौजूदा मशीनरी को चलाने में असमर्थ हैं, इसके साथ ही वे एक ऐसी नई मशीनरी स्थापित करने में असमर्थ हैं, जो समाजवादी प्रयोगकर्ताओं के सिद्धांतों के अनुसार सहज और निर्विघ्न रूप से काम करे।

अभी थोड़े ही दिन पहले बोल्शेविकों के पास इतने आदमी न थे कि वे अपनी बढ़ती हुई पार्टी को चला सकें – जो काम सबसे अधिक भाषणकर्त्ताओं और लेखकों का है ; तब फिर उन्हें प्रशासन के विविध तथा जटिल कामों को सम्पन्न करने के लिए प्रशिक्षित व्यक्ति कहां से मिलेंगे ?

नई सरकार कार्रवाइयां करती है और धमकियां देती है, देश में आज्ञप्तियों की झड़ी लगाती है, जिनमें हर आज्ञप्ति पिछली आज्ञप्ति से अधिक उग्र और "समाजवादी" है। परंतु काग़ज़ी समाजवाद की इस नुमाइश से जो संभवत: हमारे वंशजों को स्तंभित करने के लिए आकल्पित की गयी है – आज की तात्कालिक समस्याओं को हल करने की न तो इच्छा दिखाई देती है और न सामर्थ्य ही !

उधर नई सरकार की स्थापना के लिए **विक्जेल** द्वारा आयोजित सम्मेलन दिन-रात चल रहा था। नई सरकार का आधार क्या होगा, इसके बारे में दोनों पक्ष सिद्धांतत: सहमत हो चुके थे। इस समय जन-परिषद् की सदस्यता पर विचार किया जा रहा था। प्रधान मंत्री के लिए चेर्नोव के साथ मंत्रिमंडल को अस्थायी रूप से चुना जा चुका था। बोल्शेविकों को पक्ष अल्पमत में स्वीकार किया गया था, परंतु लेनिन और त्रोत्स्की स्वीकार्य न थे। मेन्शेविक तथा समाजवादी-क्रांतिकारी पार्टियों की केंद्रीय समितियों और किसानों की सोवियतों की कार्यकारिणी समिति ने फ़ैसला किया था कि यद्यपि वे बोल्शेविकों की "अपराधपूर्ण राजनीति" का अविचल रूप से विरोध करते हैं, वे "इस गरज से कि भाई भाई का खून बहाना बंद करें" जन-परिषद् में उनके शामिल होने का विरोध नहीं करेंगे।

परन्तु [illegible] के पलायन तथा सभी नगर सोवियतों की विस्मयकारी

सफलता से परिस्थिति बदल गयी। १६ तारीख़ को **त्से-ई-काह** की एक मीटिंग में वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारियों ने आग्रहपूर्वक कहा कि बोल्शेविक दूसरी समाजवादी पार्टियों के साथ मिलकर एक संयुक्त सरकार बनायें, नहीं तो वे सैनिक क्रांतिकारी समिति तथा **त्से-ई-काह** दोनों से निकल जायेंगे। माल्किन ने कहा, "मास्को से, जहां हमारे साथी बैरिकेडों के दोनों ओर खेत हो रहे हैं, जो समाचार आया है, उसने हमें एक बार फिर सत्ता के गठन के प्रश्न को उठाने के लिए विवश किया है। यह प्रश्न उठाना हमारा अधिकार ही नहीं, वरन कर्त्तव्य भी है ... हमने यहां स्मोल्नी संस्थान के भवन में बोल्शेविकों के साथ बैठने का और इस मंच से बोलने का अधिकार अर्जित किया है। अगर आप समझौता करने से इनकार करते हैं, तो हमें भीषण आंतरिक पार्टी-संघर्ष के बाद मजबूर होकर बाहर खुल्लमखुल्ला लड़ाई के मैदान में उतरना होगा ... हमें जनवादी अंशकों से एक स्वीकार्य समझौते की शर्तों का प्रस्ताव करना होगा ..."

इस अल्टीमेटम पर विचार करने के लिए बैठक थोड़ी देर के लिए स्थगित कर दी गई, जिसके बाद बोल्शेविक प्रस्ताव लेकर वहां लौटे। कामेनेव ने इस प्रस्ताव को पढ़ा:

त्से-ई-काह की दृष्टि में उन **सभी समाजवादी पार्टियों के प्रतिनिधियों** का मंत्रिमंडल में शामिल होना ज़रूरी है, **जो मज़दूरों, सैनिकों तथा किसानों के प्रतिनिधियों की सोवियतों में शामिल हैं और जो सात नवम्बर की क्रान्ति की उपलब्धियों को अर्थात् सोवियतों की सरकार की स्थापना को, शांति, भूमि तथा उद्योग पर मज़दूरों के नियंत्रण-संबंधी आज्ञप्तियों को और मज़दूर वर्ग को हथियारबंद करने को मानते हैं।** अतएव **त्से-ई-काह** मंत्रिमंडल के गठन के बारे में **सोवियतों** की सभी पार्टियों से वार्ता का प्रस्ताव करने का फ़ैसला करती है और इस वार्ता के आधार के लिए निम्नलिखित शर्तों का आग्रह करती है:

सरकार **त्से-ई-काह** के प्रति उत्तरदायी होगी। **त्से-ई-काह** की सदस्य-संख्या बढ़ाकर १५० कर दी जायेगी। मज़दूरों तथा सैनिकों के प्रतिनिधियों की सोवियतों के इन १५० प्रतिनिधियों के अतिरिक्त उसमें किसानों के प्रतिनिधियों की **प्रांतीय** सोवियतों के ७५ प्रतिनिधि, सेना तथा नौसेना के

मोर्चे के संगठनों के ८० प्रतिनिधि, ट्रेड-यूनियनों के ४० प्रतिनिधि (विभिन्न अखिल रूसी यूनियनों के, उनके महत्त्व के अनुसार, २५ प्रतिनिधि, **विक्जेल** के १० तथा डाक-तार मज़दूरों के ५ प्रतिनिधि) और पेत्रोग्राद नगर दूमा के समाजवादी दलों के ५० प्रतिनिधि लिये जायें। यह आवश्यक है कि मंत्रिमंडल में कम से कम आधे पोर्टफ़ोलियो बोल्शेविकों के लिए आरक्षित रखे जायें। श्रम, गृह तथा विदेश मंत्रालय बोल्शेविकों को दिये जायें। यह भी आवश्यक है कि पेत्रोग्राद तथा मास्को की गैरिसनों की कमान मास्को तथा पेत्रोग्राद की सोवियतों के हाथ में ही रहे।

सरकार समूचे रूस के मज़दूरों को बाक़ायदा हथियारबंद करने का बीड़ा उठाती है।

मंत्रिमंडल के लिए लेनिन और त्रोत्स्की की नामज़दगी के लिए आग्रह करने का फ़ैसला किया जाता है।

प्रस्ताव का स्पष्टीकरण करते हुए कामेनेव ने कहा: "सम्मेलन ने जिस तथाकथित 'जन-परिषद्' का प्रस्ताव किया है, उसमें लगभग ४२० सदस्य होंगे, जिनमें लगभग १५० बोल्शेविक होंगे। इसके अलावा उसमें प्रतिक्रांतिकारी पुरानी **त्से-ई-काह** के प्रतिनिधि होंगे, नगर दूमाओं द्वारा निर्वाचित १०० सदस्य – सब के सब कोर्नीलोवपंथी – होंगे; किसानों की सोवियतों के १०० प्रतिनिधि होंगे, जो अव्क्सेन्त्येव द्वारा नियुक्त होंगे और पुरानी सैनिक समितियों के ८० प्रतिनिधि होंगे, जो अब आम सिपाहियों का प्रतिनिधित्व नहीं करते।

"हम पुरानी **त्से-ई-काह** को और नगर दूमाओं के प्रतिनिधियों को शामिल करने से इनकार करते हैं। किसानों की सोवियतों के प्रतिनिधि किसानों की कांग्रेस द्वारा चुने जायेंगे, जिसे हमने बुलाया है और जो इसके साथ ही एक नयी कार्यकारिणी समिति का चुनाव करेगी। लेनिन और त्रोत्स्की को अलग रखने का प्रस्ताव हमारी पार्टी का शिरश्छेद करने का प्रस्ताव है और हम उसको स्वीकार नहीं करते। और अंत में हम किसी भी परिस्थिति में 'जन-परिषद्' को आवश्यक नहीं समझते। सोवियतों का दरवाज़ा सभी समाजवादी पार्टियों के लिए खुला हुआ है और जन-साधारण के बीच उनका जितना वास्तविक प्रभाव है, उसके अनुसार **त्से-ई-काह** में उन्हें प्रतिनिधित्व प्राप्त है..."

वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारियों की ओर से करेलिन ने घोषणा की कि उनकी पार्टी बोल्शेविकों के प्रस्ताव के पक्ष में वोट देगी, परंतु किसानों के प्रतिनिधित्व जैसी कुछ तफ़सीलों के मामले में उसे उसका संशोधन करने का अधिकार होगा, और उसकी मांग है कि कृषि मंत्रालय वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारियों के लिए आरक्षित रहे। उनकी यह मांग मान ली गयी ...

बाद में पेत्रोग्राद सोवियत की एक मीटिंग में त्रोत्स्की ने नयी सरकार के गठन के बारे में एक सवाल का जवाब देते हुए कहा:

"मैं इसके बारे में कुछ नहीं जानता। मैं वार्ता में भाग नहीं ले रहा हूं ... मगर मैं नहीं समझता कि इस वार्ता का बहुत अधिक महत्त्व है ..."

इस रात सम्मेलन का वातावरण अत्यंत अशांत रहा। नगर दूमा के प्रतिनिधि सम्मेलन से अलग हो गये ...

परंतु स्वयं स्मोल्नी में बोल्शेविक पार्टी की पांतों में लेनिन की नीति के प्रति प्रबल विरोध उत्पन्न हो रहा था। १७ नवंबर की रात को स्मोल्नी भवन का बड़ा हॉल **त्से-ई-काह** की मीटिंग के लिए ठसाठस भरा हुआ था – ऐसा लगता था कि कुछ न कुछ होने वाला है।

बोल्शेविक लारिन ने कहा कि संविधान सभा के चुनावों की घड़ी नज़दीक आ रही है और इसलिए अब वक़्त आ गया है कि "राजनीतिक आतंक" समाप्त किया जाये।

"प्रेस-स्वातंत्र्य के ख़िलाफ़ जो कार्रवाइयां की गयी हैं, उन्हें बदलना चाहिए। संघर्ष के दौरान उनके लिए जो भी कारण रहा हो, अब उनके लिए कोई बहाना नहीं रह गया है। समाचारपत्रों की स्वतंत्रता अक्षुण्ण रहनी चाहिये। हां, अगर वे बलवा या बग़ावत के लिए उकसाते हों, तो दूसरी बात है।"

अपनी ही पार्टी के लोगों की आवाज़ों – हू-हू, लू-लू – की बौछार के बीच लारिन ने निम्नलिखित प्रस्ताव पेश किया:

जन-कमिसार परिषद् की प्रेस-संबंधी आज्ञप्ति रद्द की जाती है।

राजनीतिक दमन की कार्रवाइयां एक विशेष न्यायाधिकरण के निर्णय के अधीन ही की जा सकती हैं [जो **त्से-ई-काह** द्वारा उसमें प्रतिनिधित्व-

प्राप्त विभिन्न पार्टियों की शक्ति के अनुपात में निर्वाचित किया जायेगा |*। इस न्यायाधिकरण को यह भी अधिकार प्राप्त होगा कि जो दमनकारी कार्रवाइयां की जा चुकी हैं वह उन पर पुनर्विचार करे।

इस प्रस्ताव का तालियों की गड़गड़ाहट से स्वागत किया गया, न केवल वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारियों द्वारा बल्कि कुछ बोल्शेविकों द्वारा भी।

लेनिनपंथियों की ओर से अवानेसोव ने जल्दी से प्रस्ताव किया कि प्रेस का सवाल तब तक के लिए मुल्तवी कर दिया जाये, जब तक कि समाजवादी पार्टियों के बीच कोई समझौता न हो जाये। प्रस्ताव विशाल बहुमत से गिर गया।

"इस समय जो क्रांति संपन्न की जा रही है," अवानेसोव ने कहा, "उसने निजी स्वामित्व पर चोट करने में हिचकिचाहट नहीं दिखाई है। और हमें निजी स्वामित्व के रूप में ही प्रेस के प्रश्न की परीक्षा करनी है..."

इसके बाद उन्होंने बोल्शेविक पार्टी का आधिकारिक प्रस्ताव पढ़ा:

पूंजीवादी अख़बारों का दमन विद्रोह के सिलसिले में विशुद्ध सैनिक आवश्यकताओं द्वारा ही आदिष्ट नहीं हुआ था, वह प्रतिक्रांतिकारी कार्रवाइयों को रोकने के लिए ही ज़रूरी नहीं था, बल्कि वह प्रेस के संबंध में एक नई शासन-प्रणाली की स्थापना की ओर संक्रमण के एक क़दम के रूप में भी ज़रूरी था—एक ऐसी शासन-प्रणाली की ओर, जिसके अन्तर्गत छापाख़ानों और काग़ज़ के गोदामों के पूंजीपति मालिक जनमत के सर्वशक्तिमान तथा एकमात्र निर्माता नहीं हो सकते।

हमें और आगे बढ़कर निजी छापाख़ानों और काग़ज़ की सप्लाई पर भी अवश्य ही क़ब्ज़ा कर लेना चाहिये, जिन्हें राजधानी और प्रांतों, दोनों में, सोवियतों की संपत्ति बना देनी चाहिये, ताकि राजनीतिक पार्टियां और दल छापे की सुविधाओं का, जिन विचारों का वे प्रतिनिधित्व करते हैं, उनकी वास्तविक शक्ति के अनुपात में—दूसरे शब्दों में, अपने मतदाताओं की संख्या के अनुपात में—उपयोग कर सकें।

---

* कोष्ठकों के भीतर जो शब्द हैं, वे केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति के कार्य-विवरण में नहीं पाये जाते। – सं०

तथाकथित "प्रेस-स्वातंत्र्य" की पुनःस्थापना, पूंजीपतियों को – लोगों के दिमाग़ में ज़हर भरने वालों को – छापाख़ाने और काग़ज़ सीधे सीधे लौटा देना, यह पूंजी की मर्ज़ी के सामने अस्वीकार्य समर्पण होगा, यह क्रांति की एक अत्यधिक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि को तिलांजलि देना होगा; दूसरे शब्दों में, यह एक ऐसा क़दम होगा, जिसका चरित्र निर्विवाद रूप से प्रतिक्रांतिकारी होगा।

उपरोक्त आधार ग्रहण कर **त्से-ई-काह** उन सभी प्रस्तावों को बिल्कुल ठुकरा देती है, जिनका उद्देश्य है प्रेस के क्षेत्र में पुरानी व्यवस्था की पुनःस्थापना, और वह इस प्रश्न पर टुटपुंजिया पूर्वाग्रहों द्वारा अथवा प्रतिक्रांतिकारी पूंजीपति वर्ग के स्वार्थों के सम्मुख प्रत्यक्ष समर्पण द्वारा आदिष्ट आडंबरपूर्ण दावों और अल्टीमेटमों के ख़िलाफ़ जन-कमिसार परिषद् के दृष्टिकोण का असंदिग्ध रूप से समर्थन करती है।

जब यह प्रस्ताव पढ़ा जा रहा था, बीच बीच में वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारी फ़ब्तियां कस रहे थे और विद्रोही बोल्शेविकों का ग़ुस्सा भड़क रहा था। करेलिन ने उठकर प्रतिवाद प्रगट किया: "तीन सप्ताह पहले बोल्शेविक प्रेस-स्वातंत्र्य के बड़े उत्साही रक्षक बने हुए थे ... यह एक विचित्र बात है कि इस प्रस्ताव में जो तर्क दिये गये हैं, वे ज़ारशाही व्यवस्था के यमदूत सभाइयों और सेंसरों के दृष्टिकोण का आभास देते हैं – क्योंकि वे भी 'लोगों के दिमाग़ में ज़हर भरने वालों' की बात करते थे।"

त्रोत्स्की ने प्रस्ताव के पक्ष में विस्तार से भाषण दिया। उन्होंने कहा कि गृहयुद्ध के दौरान प्रेस एक चीज़ है और विजय के बाद दूसरी। "गृहयुद्ध के दौरान बलप्रयोग का अधिकार केवल उत्पीड़ितों को है ..." (आवाज़ें: "आदमखोर! इस समय कौन उत्पीड़ित है?")

"हम अपने विरोधियों को अभी तक जीत नहीं सके हैं और उनके हाथों में अख़बारों का होना हथियारों का होना है। ऐसी स्थिति में इन अख़बारों को बंद करना अपनी हिफ़ाज़त के लिए एक बिल्कुल जायज़ क़दम उठाना है ..." इसके बाद विजय के पश्चात् प्रेस के प्रश्न को लेते हुए त्रोत्स्की ने कहा:

"प्रेस-स्वातंत्र्य के प्रश्न के प्रति समाजवादियों का रुख़ वही होना

चाहिये, जो व्यापार-स्वातंत्र्य के प्रति ... रूस में जो जनवादी शासन स्थापित किया जा रहा है, उसका तकाज़ा है कि उद्योग पर निजी स्वामित्व के आधिपत्य की ही तरह प्रेस पर भी निजी स्वामित्व के आधिपत्य का उन्मूलन किया जाये ... सोवियतों की सत्ता को चाहिये कि वह सभी छापाख़ानों को ज़ब्त कर ले।" (आवाज़ें: "'प्राव्दा' के छापाख़ाने को ज़ब्त कर लीजिये!")

"प्रेस पर पूंजीपति वर्ग की इजारेदारी ख़त्म होनी चाहिये। नहीं तो हमारे लिए सत्ता हाथ में लेना फ़िज़ूल है! नागरिकों के हर समुदाय के लिए छापाख़ाने और काग़ज़ की सप्लाई सुलभ्य होनी चाहिये ... छापाख़ाने और काग़ज़ सबसे पहले मज़दूरों और किसानों की संपत्ति हैं और उनके बाद ही अल्पसंख्यक पूंजीवादी पार्टियों की ... सोवियतों के हाथ में सत्ता का अन्तरण हो जाने से जीवन-यापन की आधारभूत अवस्थाओं में आमूल रूपांतर घटित होगा और यह रूपांतर अनिवार्यतः प्रेस के क्षेत्र में भी प्रत्यक्ष होगा ... यदि हम बैंकों का राष्ट्रीयकरण करने जा रहे हैं, तो क्या हम बैंकपतियों की पत्रिकाओं को सहन कर सकते हैं? पुरानी व्यवस्था का मिटना ज़रूरी है, यह चीज़ हमेशा के लिए गांठ में बांध लेनी चाहिये ..." तालियां और क्रुद्ध आवाज़ें।

करेलिन ने ज़ोर देकर कहा कि **त्से-ई-काह** को इस महत्वपूर्ण प्रश्न पर निर्णय करने का कोई अधिकार नहीं है, और उसे एक विशेष समिति के सुपुर्द कर देना चाहिये। उन्होंने फिर बड़े आवेश से प्रेस-स्वातंत्र्य की मांग की।

इसके बाद लेनिन उठे – शांत, आवेशहीन, माथे पर बल पड़े हुए, वह एक एक शब्द तौलते हुए धीरे धीरे बोले और उनका हर जुमला घन की चोट था। "गृहयुद्ध अभी समाप्त नहीं हुआ है, शत्रु अभी भी हमारे साथ गुंथा हुआ है। लिहाज़ा प्रेस के ख़िलाफ़ दमनकारी कार्रवाइयों को ख़त्म करना असंभव है।

"हम बोल्शेविकों ने हमेशा कहा है कि सत्तारूढ़ होने पर हम पूंजीवादी अख़बारों को बंद कर देंगे। पूंजीवादी अख़बारों को बर्दाश्त करने का मतलब है समाजवादी न रहना। जब आप क्रांति करते हैं, आप एक जगह खड़े नहीं रह सकते। आप हमेशा लाज़िमी तौर पर आगे बढ़ेंगे,

नहीं तो पीछे हटेंगे। इस समय जो भी प्रेस-स्वातंत्र्य की बात करता है, वह अपने क़दम पीछे हटाता है और समाजवाद की ओर हमारे ज़बर्दस्त बढ़ाव को रोकता है।

"हमने पूंजीवाद का जुआ उतार फेंका है, उसी प्रकार जैसे पहली क्रांति ने ज़ारशाही का जुआ उतार फेंका था। **अगर पहली क्रांति को राजतंत्रवादी अख़बारों को बंद करने का अधिकार था**, तो हमें पूंजीवादी अख़बारों को बंद करने का है। प्रेस-स्वातंत्र्य के प्रश्न को वर्ग-संघर्ष के दूसरे प्रश्नों से अलहदा करना असंभव है। हमने इन अख़बारों को बंद करने का वादा किया है और हम उन्हें बंद करेंगे। जनता का विशाल बहुमत हमारे साथ है!

"अब जब विद्रोह ख़त्म हो चुका है, हमारी बिल्कुल यह ख़्वाहिश नहीं है कि हम दूसरी समाजवादी पार्टियों के अख़बारों को बंद करें, सिवाय उस सूरत में, जब वे सशस्त्र विद्रोह करने के लिए या सोवियत सरकार का हुक्म न मानने के लिए अपील करते हैं। लेकिन हम उन्हें इस बात की इजाज़त नहीं देंगे कि वे समाजवादी प्रेस-स्वातंत्र्य के बहाने से और पूंजीपति वर्ग के गुप्त समर्थन से छापाख़ानों, रोशनाई और काग़ज़ पर एकाधिकार स्थापित करें... ये ज़रूरी चीज़ें अवश्य ही सोवियत सरकार की संपत्ति होनी चाहिये और उन्हें समाजवादी पार्टियों के बीच ठीक उनके मतदाताओं की संख्या के अनुपात में बांट देना चाहिये..."

इसके बाद प्रस्ताव पर मतदान लिया गया। लारिन तथा वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारियों का प्रस्ताव गिर गया। उसके समर्थन में २२ और विरोध में ३१ वोट पड़े।* लेनिन का प्रस्ताव २४ के ख़िलाफ़ ३४ वोटों से स्वीकृत हुआ। अल्पसंख्यकों में बोल्शेविक पार्टी के रियाज़ानोव और लोज़ोव्स्की भी थे, जिन्होंने घोषणा की कि उनके लिए प्रेस-स्वातंत्र्य पर किसी भी प्रकार के प्रतिबंध के पक्ष में वोट देना असंभव है।

इस पर वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारियों ने कहा कि वहां जो कुछ भी किया जा रहा है, वे अब उसके लिए उत्तरदायित्व ग्रहण नहीं कर

* ये संख्यायें सही नहीं हैं। लारिन तथा वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारियों के प्रस्ताव के विपक्ष में २५ और पक्ष में २० वोट दिये गये थे। – सं०

सकते और वे सैनिक क्रांतिकारी समिति से तथा कार्यकारी उत्तरदायित्व के सभी पदों से हट गये।

जन-कमिसार परिषद् के पांच सदस्यों – नोगीन, रीकोव, मिल्यूतिन, तेओदोरोविच और श्ल्याप्निकोव – ने परिषद् से इस्तीफ़ा देते हुए बयान दिया :

हम एक ऐसी समाजवादी सरकार के पक्ष में हैं, जिसमें सोवियतों की सभी पार्टियां शामिल हों। हमारा मत है कि ऐसी सरकार की स्थापना से ही मज़दूर वर्ग तथा क्रांतिकारी सेना के वीरत्वपूर्ण संघर्ष के परिणामों को सुनिश्चित बनाना संभव हो सकता है। इसे छोड़ कर एक ही रास्ता रह जाता है : राजनीतिक आतंक के ज़रिये एक ख़ालिस बोल्शेविक सरकार का गठन। जन-कमिसार परिषद् ने यही रास्ता अख़्तियार किया है। हम इस रास्ते पर नहीं चल सकते, न चलेंगे। हम देखते हैं कि इस रास्ते पर चलने का प्रत्यक्ष परिणाम होगा अनेक सर्वहारा संगठनों का राजनीतिक जीवन से निष्कासन, अनुत्तरदायी शासन-व्यवस्था की स्थापना, क्रांति का और देश का विनाश। हम ऐसी नीति के लिए ज़िम्मेदारी नहीं ले सकते और हम **त्से-ई-काह** के सामने जन-कमिसारों के रूप में अपने पद को तिलांजलि देते हैं।

कुछ और कमिसारों ने पदत्याग किये बिना इस घोषणा पर हस्ताक्षर किये। ये थे रियाज़ानोव, प्रेस-विभाग के देरबिशेव, सरकारी छापाख़ाने के अर्बूज़ोव, लाल गार्ड के युरेन्योव, श्रम-कमिसारियत के फ़्योदोरोव तथा आज्ञप्ति-विस्तरण विभाग के मंत्री लारिन।

इसके साथ ही कामेनेव, रीकोव, मिल्यूतिन, ज़िनोव्येव और नोगीन ने बोल्शेविक पार्टी की केंद्रीय समिति की सदस्यता से इस्तीफ़ा दिया और इसके कारणों पर प्रकाश डालते हुए एक सार्वजनिक वक्तव्य में कहा :

...अगर और ख़ून बहाया जाना रोकना है, आसन्न अकाल और कलेदिनपंथियों द्वारा क्रांति के विनाश को रोकना है, उचित समय पर संविधान सभा को बुलाना सुनिश्चित बनाना है और सोवियतों की कांग्रेस द्वारा स्वीकृत कार्यक्रम को कारगर तरीक़े से लागू करना है, तो ऐसी

सरकार का गठन (जिसमें सोवियतों की सभी पार्टियां शामिल हों) अपरिहार्य है... हम केंद्रीय समिति की उस घातक नीति के लिए ज़िम्मेदारी नहीं ले सकते, जो सर्वहारा वर्ग तथा सैनिकों के विशाल बहुमत की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ चलाई जा रही है। ये सर्वहारा और सैनिक इस बात के लिए उत्सुक हैं कि विभिन्न जनवादी राजनीतिक पार्टियों के बीच ख़ूंरेज़ी जल्द से जल्द बंद हो... हम केंद्रीय समिति के सदस्यों के रूप में अपने पद को तिलांजलि देते हैं, ताकि हम मज़दूर तथा सैनिक जन-समुदायों के सामने अपनी राय को खुल्लमखुल्ला ज़ाहिर कर सकें।

हम जीत की घड़ी में केंद्रीय समिति को छोड़ रहे हैं; ऐसे वक़्त, जब कि केंद्रीय समिति के मुखियों की नीति हमें विजय के परिणामों की हानि तथा सर्वहारा के दमन की ओर ले जा रही है हम चुपचाप हाथ पर हाथ धरे बैठे नहीं रह सकते...

मज़दूर जन-समुदायों में, गैरिसन के सिपाहियों में खलबली मच गई और वे अपने शिष्टमंडलों को स्मोल्नी में और नई सरकार की स्थापना के लिए होनेवाले सम्मेलन में भेजने लगे, जहां बोल्शेविकों की पांतों के टूटने से बेहद ख़ुशी फैल गई।

परंतु लेनिनपंथियों ने क्षण भर भी विलंब किये बिना मुंहतोड़ उत्तर दिया। श्ल्याप्निकोव और तेओदोरोविच पार्टी-अनुशासन के सम्मुख झुकते हुए अपने पदों पर वापिस चले गये। **त्से-ई-काह्** के अध्यक्ष के रूप में कामेनेव के अधिकार छीन लिए गये और उनके स्थान पर स्वेर्दलोव चुने गये। ज़िनोव्येव को पेत्रोग्राद सोवियत के अध्यक्ष पद से हटा दिया गया। सात तारीख़ की सुबह 'प्राव्दा' में रूस की जनता के नाम एक प्रचंड घोषणा छपी, जिसे लेनिन ने स्वयं लिखा था और जिसे लाखों प्रतियों में छाप कर सभी जगह दीवारों पर चिपका दिया गया और देश भर में फैलाया गया।*

* इशारा उस अपील की ओर है, जिसे लेनिन ने १८-१९ नवम्बर १९१७ को लिखा था और 'प्राव्दा' ने २० नवम्बर को प्रकाशित किया था। अपील 'रूसी सामाजिक जनवादी मजदूर पार्टी (बोल्शेविक) की केन्द्रीय समिति की ओर से पार्टी के सभी सदस्यों तथा रूस के सभी मेहनतकश वर्गों के नाम' शीर्षक से प्रकाशित की गई थी। – सं०

सोवियतों की दूसरी अखिल रूसी कांग्रेस में बोल्शेविक पार्टी का बहुमत स्थापित हुआ। इसलिए इस पार्टी द्वारा बनायी गयी सरकार ही सोवियत सरकार हो सकती है। यह सर्वविदित है कि नयी सरकार की स्थापना के तथा सोवियतों की अखिल रूसी कांग्रेस के सम्मुख नयी सरकार की सदस्य-सूची पेश करने से चंद घंटे पहले बोल्शेविक पार्टी की केंद्रीय समिति ने वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारी दल के तीन सर्वप्रमुख सदस्यों, साथी कम्कोव, साथी स्पीरो तथा साथी करेलिन को अपनी बैठक में आमंत्रित किया और **उनसे** नयी सरकार में भाग लेने का **निवेदन किया**। हमें बेहद अफ़सोस है कि आमंत्रित साथियों ने इनकार कर दिया। हम समझते हैं कि क्रांतिकारियों और मज़दूर वर्ग के हिमायतियों के लिए यह इनकार अस्वीकार्य है। हम किसी भी वक़्त वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारियों को मंत्रिमंडल में शामिल करने के लिए तैयार हैं, परंतु हम घोषणा करते हैं कि सोवियतों की दूसरी अखिल रूसी कांग्रेस के बहुमत की पार्टी होने के नाते हम सरकार बनाने के लिए जनता के सामने अधिकारसंपन्न हैं और कर्तव्यबद्ध हैं...

...साथियो! हमारी पार्टी की केंद्रीय समिति के तथा जन-कमिसार परिषद् के कई सदस्यों ने, कामेनेव, ज़िनोव्येव, नोगीन, रीकोव, मिल्यूतिन तथा कतिपय और व्यक्तियों ने कल, १७ नवंबर को, हमारी पार्टी की केंद्रीय समिति का परित्याग किया और अंतिम तीन ने जन-कमिसार परिषद् का परित्याग किया...

हमारा साथ छोड़ने वाले इन साथियों ने भगोड़ों की तरह काम किया है, क्योंकि उन्होंने, जो पद उन्हें सौंपे गये थे, उन्हें ही नहीं छोड़ा है, वरन् उन्होंने हमारी पार्टी की केंद्रीय समिति के इस प्रत्यक्ष निर्देश का भी उल्लंघन किया है कि वे पदत्याग करने से पहले पेत्रोग्राद तथा मास्को के पार्टी-संगठनों के निर्णयों की प्रतीक्षा करें। हम इस भगोड़ेपन की निर्णायक रूप से निंदा करते हैं। हमें इस बात का दृढ़ विश्वास है कि हमारी पार्टी में शामिल या उससे हमदर्दी रखने वाले सभी चेतन मज़दूर, सिपाही और किसान इन भगोड़ों के रवैये की निंदा करेंगे...

याद रखिये, साथियो, कि पेत्रोग्राद में विद्रोह होने से पहले

ही इन भगोड़ों में से दो, कामेनेव और ज़िनोव्येव, २३ अक्तूबर, १९१७ को हुई केंद्रीय समिति की निर्णायक बैठक में विद्रोह के ख़िलाफ़ वोट देकर, भगोड़ों और हड़ताल-तोड़कों के रूप में प्रगट हुए थे, और केन्द्रीय समिति द्वारा प्रस्ताव स्वीकृत किये जाने के बाद भी उन्होंने पार्टी-कार्यकर्ताओं के सामने अपना आंदोलन जारी रखा... परंतु जन-साधारण की प्रचंड गति के सम्मुख तथा मास्को में, पेत्रोग्राद में, मोर्चे पर, खाइयों में, गांवों में लाखों-लाख मज़दूरों, सिपाहियों और किसानों के महान् शौर्य और पराक्रम के सम्मुख ये भगोड़े इस तरह तितर-बितर हो गये, जैसे रेल-गाड़ी के सामने लकड़ी का बुरादा तितर-बितर हो जाता है...

जिन लोगों में निष्ठा नहीं है, जिनमें दुविधा और हिचकिचाहट है, जो अपने को पूंजीपति वर्ग द्वारा भयभीत होने देते हैं, या जो इस वर्ग के खुले या छिपे साथी-संघातियों की चीख़-पुकार के सामने झुक जाते हैं ,उन्हें लानत है! पेत्रोग्राद, मास्को और शेष रूस के **जन-साधारण** में **नाम को भी** हिचकिचाहट नहीं हैं...

...हम बुद्धिजीवियों के उन छोटे छोटे दलों के अल्टीमेटमों के सामने नहीं झुकेंगे, जिनके पीछे जन-साधारण नहीं हैं और जिनका समर्थन **वस्तुत:** कोर्नीलोवपंथी, साविंकोवपंथी, **युंकर** इत्यादि ही करते हैं...

समूचे देश ने इस घोषणा का जो प्रत्युत्तर दिया, वह गर्म हवा के एक तेज़ झोंके की तरह था। विद्रोहियों को "मज़दूर तथा सैनिक जन-समुदायों के सामने खुल्लमखुल्ला अपनी राय ज़ाहिर करने" का मौक़ा कभी भी न मिल सका। "भगोड़ों" के प्रति जनता के प्रचंड क्रोध की उत्ताल तरंग **त्से-ई-काह** के चारों ओर उफन उठी। कई, दिन तक स्मोल्नी में मोर्चे से, वोल्गा प्रदेश से, पेत्रोग्राद के कारख़ानों से आने वाले क्रुद्ध शिष्टमंडलों और प्रतिनिधियों की भीड़ लगी रही। "सरकार छोड़ने की उनकी जुर्रत कैसे हुई? क्या पूंजीपति वर्ग ने क्रांति का नाश करने के लिए उन्हें घूस दी थी? उन्हें वापिस लौटना होगा और केंद्रीय समिति के फ़ैसलों को मानना होगा!"

केवल पेत्रोग्राद की गैरिसन अभी भी दुविधा में पड़ी हुई थी। २४ नवम्बर को सिपाहियों की एक बहुत बड़ी सभा हुई, जिसमें सभी राजनीतिक पार्टियों के प्रतिनिधियों ने भाषण दिये। लेनिन की नीति का विशाल बहुमत से समर्थन किया गया और वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारियों से कहा गया कि उन्हें मंत्रिमंडल में ज़रूर शामिल होना चाहिए...[6]

मेन्शेविकों ने आख़िरी चुनौती देते हुए मांग की कि सभी मंत्रियों और **युंकरों** को रिहा किया जाये, सभी अख़बारों को पूरी आज़ादी दी जाये, लाल गार्डों के हथियार रखवा लिये जायें और गैरिसन की कमान दूमा के सुपुर्द की जाये। स्मोल्नी ने जवाब दिया कि सभी समाजवादी मंत्री और इने-गिने लोगों को छोड़ कर बाक़ी सभी **युंकर** पहले ही छोड़ दिये गये हैं, कि पूंजीवादी अख़बारों को छोड़ कर बाक़ी सभी अख़बारों को आज़ादी हासिल है, कि सेना की कमान सोवियत के हाथ में ही रहेगी... १९ तारीख़ को नई सरकार की स्थापना के लिए होने वाला सम्मेलन छिन्न-भिन्न हो गया और विरोध-पक्ष के नेता एक एक करके मोगिल्योव खिसक गये, जहां जनरल स्टाफ़ की छत्रछाया में वे आख़िरी दम तक एक सरकार के बाद दूसरी सरकार बनाते रहे...

इस बीच बोल्शेविक **विक्जेल** के प्रभाव की जड़ काट रहे थे। पेत्रोग्राद सोवियत ने सभी रेल मज़दूरों से अपील की कि वे **विक्जेल** को अपने अधिकारों का समर्पण करने के लिए मजबूर करें। १५ तारीख़ को **त्से-ई-काह** ने किसानों के मामले में अपनी कार्य-पद्धति को दोहराते हुए पहली दिसंबर के लिए रेल मज़दूरों की एक अखिल रूसी कांग्रेस बुलाई। **विक्जेल** ने तुरंत अपनी अलग कांग्रेस दो हफ़्ते बाद के लिए बुलाई। १६ नवम्बर को **विक्जेल** के सदस्यों ने **त्से-ई-काह** में अपने स्थानों को ग्रहण किया। २ दिसंबर की रात को अखिल रूसी रेल मज़दूर कांग्रेस के उद्घाटन-अधिवेशन में **त्से-ई-काह** ने औपचारिक रूप से रेल-परिवहन मंत्री का पद **विक्जेल** को देने का प्रस्ताव किया, जिसे स्वीकार कर लिया गया...

सत्ता का प्रश्न निपटा लेने के बाद बोल्शेविकों ने व्यावहारिक प्रशासन की समस्याओं पर ध्यान दिया। सबसे पहले नगर का, देश का, सेना का पेट भरना था। मल्लाहों और लाल गार्डों के दस्तों ने गोदामों, रेलवे-स्टेशनों के माल-घरों, यहां तक कि नहरों के बजरों की तलाशियां लीं

चोरबाज़ारियों के हज़ारों पूद * अनाज का पता लगाया और उसे ज़ब्त कर लिया। प्रांतों में दूत भेजे गये, जहां उन्होंने भूमि समितियों की सहायता से बड़े बड़े आढ़तियों के गोदामों पर क़ब्ज़ा कर लिया। हथियारों से अच्छी तरह लैस मल्लाहों के दल, पांच पांच हज़ार की टोलियों में, दक्षिण की ओर और साइबेरिया की ओर भेजे गये और इन घुमन्तू दलों को आदेश दिया गया कि जो शहर अभी भी सफ़ेद गार्डों के हाथ में हैं, वे उन पर क़ब्ज़ा कर लें, वहां सुव्यवस्था स्थापित करें और **खाद्य संग्रह करें।** साइबेरिया-पार रेलवे लाइन पर सवारी गाड़ियां दो हफ़्ते के लिए बंद कर दी गईं और कारख़ाना समितियों द्वारा जुटाई गई कपड़े की गांठों और लोहे की छड़ों से लदी तेरह गाड़ियां, जिनमें हर गाड़ी एक कमिसार के ज़िम्मे की गई, साइबेरियाई किसानों के साथ अनाज और आलू के बदले कपड़े और लोहे का विनिमय करने की गरज़ से पूरब की ओर भेजी गईं...

ईंधन की समस्या विकट हो गई, क्योंकि दोन प्रदेश की कोयला-खानें कलेदिन के हाथ में थीं। स्मोल्नी ने थियेटरों, दुकानों और रेस्तोरानों की बिजली काट दी, ट्राम-गाड़ियों की संख्या घटा दी और टाल वालों की निजी लकड़ी की टालों को ज़ब्त कर लिया... जब कोयले के अभाव में पेत्रोग्राद के कारख़ाने बंद होने वाले थे, बाल्टिक बेड़े के मल्लाहों ने अपने जंगी जहाज़ों की कोयला-कोठरियों से दो लाख **पूद** कोयला निकाल कर मज़दूरों के हवाले कर दिया...

नवंबर के अंत में "शराबियों के दंगे-फ़साद" – शराब के तहख़ानों का लूटा जाना – शुरू हुए। सबसे पहले शिशिर प्रासाद के तहख़ाने लूटे गये। सड़कों पर कई दिन तक शराब में धुत्त सिपाही घूमते रहे... इन दंगों में प्रत्यक्षतः प्रतिक्रांतिकारियों का हाथ था, जिन्होंने रेजीमेंटों में शराब के गोदामों का पता देने वाले नक़्शे बंटवाये थे। स्मोल्नी के कमिसारों ने पहले तो समझाने बुझाने और मनाने की कोशिश की, लेकिन जब इससे बढ़ती हुई अव्यवस्था की रोकथाम न हो सकी, सिपाहियों और लाल गार्डों के बीच जम कर लड़ाइयां हुईं... आख़िरकार सैनिक क्रांतिकारी समिति ने मशीनगनों से लैस मल्लाहों के दस्तों को भेजा, जिन्होंने बिना रू-रियायत

---

* एक पूद ३६ पौंड के बराबर होता है। – सं०

किये दंगाइयों पर गोली चलाई और बहुतों का सफ़ाया कर दिया। कार्यकारी आदेश के अनुसार फरसा-कुदाल लिए दलों ने शराब के तहख़ानों पर धावा बोला और बोतलों को चकनाचूर कर दिया, या उन्हें डाइनामाइट से उड़ा दिया ...

पुरानी मिलिशिया की जगह लाल गार्डों की टुकड़ियां, जिनमें अच्छा अनुशासन था और जिन्हें अच्छी तनख़ाहें दी जाती थीं, वार्ड-सोवियतों के सदर दफ़्तरों के सामने रात-दिन पहरा दे रही थीं। शहर की सभी बस्तियों में छोटे-मोटे अपराधों का मुक़ाबला करने के लिए मज़दूरों और सैनिकों द्वारा निर्वाचित क्रांतिकारी न्यायाधिकरण स्थापित किये गये ...

बड़े बड़े होटल, जहां सट्टेबाज़ों का रोज़गार अभी भी चमका हुआ था, लाल गार्डों द्वारा घेर लिए गये और सट्टेबाज़ों को जेल में डाल दिया गया ...[8]

सजग और संदेहपूर्ण, नगर के मज़दूर वर्ग ने अपने को एक वृहत् गुप्तचर-व्यवस्था के रूप में संगठित किया, जो नौकरों के ज़रिये पूंजीवादी परिवारों का भेद लेती और जो भी ख़बरें मिलतीं, उनकी रिपोर्ट सैनिक क्रांतिकारी समिति को देती। समिति ने ताबड़तोड़ घन की चोट पर चोट की। इसी प्रकार उस राजतंत्रवादी षड्यंत्र का पता लगा, जिसके नेता भूतपूर्व दूमा-सदस्य पुरिश्केविच और नवाबज़ादों और अफ़सरों का एक दल था, जिन्होंने अफ़सरों की बग़ावत की एक योजना बनाई थी और कलेदिन को पेत्रोग्राद आने का न्योता देते हुए एक चिट्ठी लिखी थी ...[9] इसी प्रकार पेत्रोग्राद के कैडेटों के षड्यंत्र का पता लगा, जो कलेदिन को रुपया-पैसा और नये रंगरूट भेज रहे थे।

नेरातोव के भागने से जनता के अंदर जो ग़ुस्सा भड़क उठा था, उससे घबरा कर वह लौट आये और उन्होंने गुप्त संधियों को त्रोत्स्की के हवाले कर दिया। त्रोत्स्की ने उन्हें संसार को स्तंभित करते हुए 'प्राव्दा' में छापना शुरू कर दिया ...

एक आज्ञप्ति द्वारा विज्ञापनों पर आधिकारिक सरकारी समाचारपत्र की इजारेदारी क़ायम करके समाचारपत्रों पर एक नया प्रतिबंध लगा दिया गया।[10] इस पर दूसरे सभी समाचारपत्रों ने प्रतिवाद-स्वरूप प्रकाशन स्थगित कर दिया अथवा उन्होंने क़ानून का उल्लंघन किया और उन्हें बंद कर

दिया गया... तीन सप्ताह बाद ही कहीं जाकर उन्होंने अंततोगत्वा आज्ञप्ति को स्वीकार किया।

मंत्रालयों की हड़ताल अभी भी जारी थी, पुराने अधिकारियों का तोड़-फोड़ अभी भी जारी था, सामान्य आर्थिक जीवन अभी भी ठप था। स्मोल्नी के पीछे विशाल असंगठित जन-समुदायों का ही संकल्प था; जन-कमिसार परिषद् उन्हीं से मतलब रखती थी और अपने शत्रुओं के ख़िलाफ़ जन-संघर्ष का निर्देशन करती थी।[11] सीधे-सादे शब्दों में लिखी गई और समूचे रूस में फैलाई गई, अभिव्यंजनापूर्ण घोषणाओं[12] में, लेनिन ने क्रांति का तात्पर्य समझाया, जनता से आग्रह किया कि वह सत्ता अपने हाथ में ले, मिल्की वर्गों के प्रतिरोध को बलपूर्वक चूर चूर कर दे और सरकारी संस्थानों पर बलपूर्वक अधिकार स्थापित करे। क्रांतिकारी व्यवस्था! क्रांतिकारी अनुशासन! कड़ा हिसाब और कठोर नियंत्रण! हड़तालें ख़त्म हों! मटरगश्ती बंद हो!

२० नवंबर को सैनिक क्रांतिकारी समिति ने चेतावनी दी:

धनी वर्ग सोवियतों की सत्ता का – मज़दूरों, सिपाहियों और किसानों की सरकार का – विरोध करते हैं। उनके हमदर्द सरकार तथा दूमा के कर्मचारियों के काम को ठप करते हैं, बैंकों में हड़ताल भड़काते हैं, रेल-परिवहन तथा डाक-तार संचार में बाधा डालने की कोशिश करते है...

हम उन्हें चेतावनी देते हैं कि वे आग की लपटों के साथ खेल रहे हैं। देश तथा सेना के लिए अकाल का ख़तरा पैदा हो गया है। उसका मुक़ाबला करने के लिए सभी सेवाओं का नियमित रूप से काम करना ज़रूरी है। देश तथा सेना की आवश्यकताओं की पूर्ति को सुनिश्चित बनाने के लिए मज़दूरों और किसानों की सरकार सभी उपाय कर रही है। **इन उपायों का विरोध जनता के प्रति एक अपराध है।** हम धनी वर्गों और उनके हमदर्दों को चेतावनी देते हैं कि वे अगर अपने तोड़-फोड़ को और खाद्य-परिवहन को ठप करने के अपने उकसावे को बंद नहीं करते, तो **सबसे पहले उन्हीं को भुगतना पड़ेगा। उनसे रोटी पाने का हक़ छीन लिया जायेगा। उनके पास जो रिज़र्व सप्लाई है, वह उनसे ले ली जायेगी। प्रमुख अपराधियों की सम्पत्ति ज़ब्त कर ली जायेगी।**

जो लोग आग की लपटों के साथ खेल रहे हैं, उन्हें आगाह करके हमने अपना फ़र्ज़ अदा किया है।

हमें यक़ीन है कि अगर निर्णायक कार्रवाई करना ज़रूरी हुआ, तो हमें सभी मज़दूरों[13], सिपाहियों और किसानों का ठोस समर्थन मिलेगा।

२२ नवंबर को शहर की दीवारों पर सभी जगह एक पर्चा, '**असाधारण सूचना**', चिपकाया गया:

जन-कमिसार परिषद् को उत्तरी मोर्चे के सैनिक स्टाफ़ का एक ज़रूरी तार मिला है...

"अब और देर हरगिज़ नहीं होनी चाहिये; सेना को भूखों मरने मत दीजिये। उत्तरी मोर्चे की सेनाओं को आज कई दिनों से रोटी का एक टुकड़ा भी नहीं मिला है और दो-तीन दिन के अंदर उनके पास सूखी डबलरोटी भी नहीं रह जायेगी, जो उन्हें रिज़र्व सप्लाई से, जिसमें अभी तक हाथ नहीं लगाया गया था, थोड़ा-थोड़ा कर दी जा रही है... मोर्चे के सभी भागों के प्रतिनिधि अभी से कह रहे हैं कि सेना के एक हिस्से को मोर्चे से पीछे ले जाना ज़रूरी हो गया है; वे यह पहले से ही देख रहे हैं कि अगले चंद दिनों में भूखों मरते, खाइयों में तीन साल की लड़ाई से तबाह, फटेहाल, नंगेपैर और बीमार, अमानवीय कष्टों से विभ्रांत सिपाहियों की ज़ोरों की भगदड़ शुरू हो जायेगी।"

सैनिक क्रांतिकारी समिति इस बात की ओर पेत्रोग्राद की गैरिसन और पेत्रोग्राद के मज़दूरों का ध्यान दिलाती है। मोर्चे की परिस्थिति ज़रूरी से ज़रूरी और निर्णायक से निर्णायक कार्रवाइयों की मांग करती है... इधर सरकारी संस्थानों, बैंकों, रेलों, डाक और तार के ऊपर के कर्मचारी हड़ताल पर हैं और मोर्चे पर रसद-पानी पहुंचाने के सरकार के काम में रुकावट डाल रहे हैं... हर घंटे की देर का मतलब हो सकता है हज़ारों सिपाहियों की ज़िंदगियों से हाथ धोना। प्रतिक्रांतिकारी कर्मचारी मोर्चे के अपने भूखों मरते हुए भाइयों के प्रति अपराधी हैं, ऐसे अपराधी, जिनमें बेईमानी कूट कूट कर भरी हुई है।

सैनिक क्रांतिकारी समिति इन अपराधियों को अंतिम चेतावनी देती

है। उनके द्वारा तनिक भी प्रतिरोध अथवा विरोध होने की सूरत में, उनके ख़िलाफ़ जो कार्रवाइयां की जायेंगी, वे उतनी ही कठोर होंगी, जितना कि उनका अपराध गंभीर है...

आम मज़दूरों और सिपाहियों में भयंकर प्रतिक्रिया हुई – उनमें प्रचंड क्रोध की एक लहर उठी, जो बड़ी तेज़ी से समूचे रूस में फैल गई। राजधानी में सरकारी अहलकारों और बैंक-कर्मचारियों ने, प्रतिवाद करते हुए, अपना बचाव करते हुए सैकड़ों घोषणायें और अपीलें[14] निकालीं, जिनमें से एक यहां दी जाती है...

सभी नागरिकों की सूचना के लिए
राजकीय बैंक बंद है! क्यों बंद है?

क्योंकि राजकीय बैंक के ख़िलाफ़ बोल्शेविकों की हिंसा ने हमारे लिए काम करना असंभव बना दिया है। जन-कमिसारों ने पहला काम यह किया कि एक करोड़ रूबल की मांग की और २७ नवंबर को उन्होंने ढाई करोड़ रूबल की मांग की, बिना यह जताये कि इस पैसे को किस तरह ख़र्च किया जायेगा।

...हम कर्मचारी जनता की सम्पत्ति की लूट-खसोट में हिस्सा नहीं ले सकते। हमने काम बंद कर दिया।

नागरिको! राजकीय बैंक का रुपया आपका रुपया है, जनता का रुपया है, वह आपकी मेहनत की, आपके ख़ून-पसीने की कमाई है। नागरिको! जनता की सम्पत्ति को लूट-खसोट से और हमें हिंसा से बचाइये, और हम तुरंत काम पर वापिस चले जायेंगे।

राजकीय बैंक के कर्मचारी

खाद्य मंत्रालय, वित्त मंत्रालय, विशेष संभरण समिति ने इस आशय की घोषणायें निकालीं कि सैनिक क्रांतिकारी समिति ने कर्मचारियों के लिए काम करना असंभव बना दिया है, उन्होंने जनता से अपील की कि स्मोल्नी के ख़िलाफ़ उनकी हिमायत करे... परंतु समाज पर हावी मज़दूर और

सिपाही ने उनकी बात पर विश्वास नहीं किया। जनता के मन में यह बात मज़बूती के साथ बैठ गई थी कि ये कर्मचारी तोड़-फ़ोड़ कर रहे हैं, सेना को भूखों मार रहे हैं, जनता को भूखों मार रहे हैं... रोटी के लिए लंबी लंबी लाइनों में, जो पहले की ही तरह बर्फ़ीली सड़कों पर लगी हुई थीं, **सरकार** को दोषी नहीं ठहराया जा रहा था, जैसा कि केरेन्स्की के ज़माने में हुआ करता था, वरन् **चिनोव्निकों** को, तोड़-फोड़ करने वाले कर्मचारियों को दोषी ठहराया जा रहा था; क्योंकि यह सरकार उनकी **अपनी** सरकार थी, सोवियतें **उनकी अपनी** सोवियतें थीं और मंत्रालयों के कर्मचारी इस सत्ता के ख़िलाफ़ थे...

दूमा और उसका जुझारू अंग, उद्धार समिति, इस सारे विरोध का केंद्र बनी हुई थी; वह जन-कमिसार परिषद् की सभी आज्ञप्तियों के प्रति प्रतिवाद प्रगट कर रही थी, सोवियत सरकार को मान्यता न देने के पक्ष में बारंबार मतदान कर रही थी, और मोगिल्योव में स्थापित नई प्रतिक्रांतिकारी "सरकारों" के साथ खुल्लमखुल्ला सहयोग कर रही थी... उदाहरण के लिए १७ नवंबर को उद्धार समिति ने "सभी नगरपालिका-प्रशासनों, ज़ेम्सत्वोओं और किसानों, मज़दूरों, सिपाहियों तथा दूसरे नागरिकों के सभी जनवादी तथा क्रांतिकारी संगठनों" के नाम निम्न-लिखित शब्दों में अपील जारी की:

बोल्शेविकों की सरकार को न मानिये और उसके ख़िलाफ़ संघर्ष कीजिये।

देश तथा क्रांति की स्थानीय उद्धार समितियां स्थापित कीजिये, जो अखिल रूसी उद्धार समिति को उसके सम्मुख उपस्थित कार्यभारों को पूरा करने में मदद देने के लिए समस्त जनवादी शक्तियों को एकजुट करेंगी...

इस बीच पेत्रोग्राद में संविधान सभा के लिए होने वाले चुनावों[15] में बोल्शेविकों का बहुमत स्थापित हो गया, जिससे मेन्शेविक-अंतर्राष्ट्रीयतावादियों तक को कहना पड़ा कि दूमा का चुनाव फिर से होना चाहिए, क्योंकि अब वह पेत्रोग्राद की आबादी के राजनीतिक स्वरूप को प्रगट नहीं करती... इसके साथ ही मज़दूर-संगठनों, सैनिक टुकड़ियों,

आस-पास के गांवों के किसानों तक ने दूमा के पास प्रस्ताव पर प्रस्ताव भेजने शुरू कर दिये, जिनमें उन्होंने दूमा को "प्रतिक्रांतिकारी, कोर्नीलोवपंथी" आदि कहते हुए मांग की कि वह अपने को भंग करे। दूमा के अंतिम दिन, जब नगरपालिका कर्मचारी पर्याप्त निर्वाह-योग्य तनख़ाहों की मांग कर रहे थे और हड़ताल पर जाने की धमकी दे रहे थे, बड़ी हलचल और उथल-पुथल के दिन थे...

२३ तारीख़ को सैनिक क्रांतिकारी समिति की एक औपचारिक आज्ञप्ति द्वारा उद्धार समिति को भंग कर दिया गया। २९ तारीख़ को जन-कमिसार परिषद् ने पेत्रोग्राद नगर दूमा को भंग करने और उसका फिर से चुनाव करने का आदेश दिया:

इस बात को देखते हुए कि २ सितंबर को निर्वाचित पेत्रोग्राद की केंद्रीय दूमा... पेत्रोग्राद की जनता के मिज़ाज और उसकी आकांक्षाओं के साथ बिल्कुल मेल न रख पा कर, उसका प्रतिनिधित्व करने का अधिकार निश्चित रूप से खो बैठी है... और इस बात को भी देखते हुए कि यद्यपि दूमा में बहुमत रखने वाले अधिकारियों का कोई राजनीतिक समर्थन नहीं रह गया है, वे मज़दूरों, सिपाहियों और किसानों की इच्छा का प्रतिक्रांतिकारी प्रकार से प्रतिरोध करने के लिए और सरकार के सामान्य काम में तोड़-फोड़ करने और अड़चन डालने के लिए अभी भी अपने विशेषाधिकारों का उपयोग कर रहे हैं, जन-कमिसार परिषद् राजधानी की जनता को इसके लिए आमंत्रित करना अपना कर्तव्य समझती है कि वह नगरपालिका के शासन-निकाय की नीति के संबंध में अपना फ़ैसला सुनाये।

इस हेतु जन-कमिसार परिषद् फ़ैसला करती है:

(१) नगर दूमा विसर्जित की जाये। दूमा का विसर्जन ३० नवंबर १९१७ से लागू हो।

(२) वर्तमान दूमा द्वारा निर्वाचित अथवा नियुक्त सभी कर्मचारी, जब तक कि नयी दूमा के प्रतिनिधि उनका स्थान ग्रहण न करें, अपने पदों पर क़ायम रहें और जो ज़िम्मेदारियां उन्हें सौंपी गयी हैं, उन्हें पूरी करते रहें।

(३) नगरपालिका के सभी कर्मचारी अपने कर्तव्यों का पालन करते

रहेंगे। जो कर्मचारी अपनी इच्छा से काम छोड़ेंगे, उन्हें बर्ख़ास्त समझा जायेगा।

(४) पेत्रोग्राद की नगर दूमा के नये चुनावों के लिए ९ दिसंबर, १९१७ की तिथि निश्चित की जाती है...

(५) पेत्रोग्राद की नगर दूमा ११ दिसंबर, १९१७ को दो बजे एकत्रित होगी।

(६) जो लोग इस आज्ञप्ति का उल्लंघन करेंगे या जानबूझ कर नगरपालिका की सम्पत्ति को क्षति पहुंचायेंगे, उन्हें फ़ौरन गिरफ़्तार कर लिया जायेगा और क्रांतिकारी न्यायाधिकरणों के सामने लाया जायेगा...

इस आज्ञप्ति की परवाह न कर दूमा की सभा की गयी और उसमें इस आशय के प्रस्ताव पास किये किये गये कि दूमा "अपने ख़ून के आख़िरी क़तरे से अपनी स्थिति की रक्षा करेगी" और आबादी से लाचारी में अपील की गयी कि वह "अपने निर्वाचित नगर-प्रशासन" को बचाये। लेकिन इस अपील का कोई असर नहीं हुआ, लोग या तो उदासीन थे या विरोधी। ३० तारीख़ को मेयर श्रेइदेर तथा कई दूमा-सदस्य गिरफ़्तार किये गये और पूछ-ताछ करने के बाद छोड़ दिये गये। उस दिन और उसके दूसरे दिन दूमा की बैठक होती रही, हालांकि लाल गार्ड और मल्लाह अक्सर आकर उसमें बाधा डालते और बड़ी नर्मी से सभा को विसर्जित करने का अनुरोध करते। २ दिसंबर की बैठक में जब एक सदस्य बोल रहे थे, कुछ मल्लाहों के साथ एक अफ़सर ने निकोलाई हॉल में प्रवेश किया, सदस्यों को आदेश दिया कि वे चले जायें, नहीं तो उनके साथ ज़बरदस्ती की जायेगी। अंतिम क्षण तक प्रतिवाद करते हुए पर अन्ततः "हिंसा के सामने झुकते हुए" उन्होंने वहां से प्रस्थान किया।

नयी दूमा, जो दस दिन बाद चुनी गयी और जिसके चुनावों में "नरम" समाजवादियों ने वोट देने से इनकार किया, प्रायः पूर्णतः बोल्शेविक थी...[16]

ख़तरनाक विरोध के अभी भी कई केन्द्र बाक़ी थे, जैसे उक्रइना और फ़िनलैंड के "जनतंत्र", जो निश्चित रूप से सोवियत-विरोधी प्रवृत्तियां प्रगट कर रहे थे। हेल्सिंगफ़ोर्स और कीयेव दोनों स्थानों में सरकारें भरोसे

लायक़ सैनिकों को इकट्ठा कर रही थीं, और बोल्शेविज़्म को कुचलने तथा रूसी सैनिकों को निरस्त्र और निष्कासित करने की मुहिम शुरू कर रही थीं। उक्रइनी रादा ने पूरे दक्षिणी रूस की कमान अपने हाथ में ले ली थी और वह कलेदिन को कुमक और रसद-पानी भेज रही थी। फ़िनलैंड और उक्रइना दोनों की सरकारें जर्मनों के साथ गुप्त वार्ता आरंभ कर रही थीं; मित्र-राष्ट्रों की सरकारों ने उन्हें अविलंब मान्यता प्रदान की, और सोवियत रूस पर आक्रमण के लिए प्रतिक्रांतिकारी केन्द्रों की स्थापना करने के निमित्त मिल्की वर्गों के साथ सांठ-गांठ कर वे उन्हें बड़ी बड़ी रक़में उधार दे रही थीं। अन्त में जब बोल्शेविकों ने इन दोनों देशों को जीत लिया, पराजित पूंजीपति वर्ग ने उन्हें पुनः सत्तारूढ़ करने के लिए जर्मनों को बुलाया ...

परंतु सोवियत सरकार के लिए जो सबसे भयानक ख़तरा था, वह अन्दरूनी था और उसकी दो शक्लें थीं – कलेदिन आंदोलन और मोगिल्योव का सैनिक स्टाफ़, जहां जनरल दुख़ोनिन ने कमान अपने हाथ में ले ली थी।

कज़्ज़ाकों के ख़िलाफ़ जंग में "सर्वविद्यमान!" मुराव्योव को सेनापति नियुक्त किया गया। कारख़ानों के मज़दूरों को भर्ती कर लाल सेना का गठन किया गया। सैकड़ों प्रचारकों को दोन प्रदेश में भेजा गया। जन-कमिसार परिषद् ने कज़्ज़ाकों के नाम एक घोषणा[17] जारी की, जिसमें यह समझाया गया था कि सोवियत सत्ता क्या चीज़ है और किस प्रकार मिल्की वर्ग, **चिनोव्निक** ज़मींदार, बैंकर और उनके साथी-संघाती, कज़्ज़ाक नवाबज़ादे, ज़मींदार और जनरल क्रांति को नष्ट करने की और जनता द्वारा अपनी जायदाद की ज़ब्ती को रोकने की कोशिश कर रहे हैं।

२७ नवंबर को कज़्ज़ाकों का एक शिष्टमंडल त्रोत्स्की और लेनिन से मुलाक़ात करने स्मोल्नी आया। उन्होंने पूछा कि क्या यह सच है कि सोवियत सरकार कज़्ज़ाक ज़मीनों को रूस के किसानों के बीच बांटने का इरादा रखती है? "नहीं," त्रोत्स्की ने उत्तर दिया। कज़्ज़ाकों ने थोड़ी देर विचार करने के बाद फिर पूछा, "अच्छी बात है, लेकिन क्या सोवियत सरकार बड़े बड़े कज़्ज़ाक ज़मींदारों की रियासती ज़मीनों को ज़ब्त करने और उन्हें मेहनतकश कज़्ज़ाकों के बीच बांटने का इरादा रखती है?" इस प्रश्न का उत्तर देते हुए लेनिन ने कहा, "यह फ़ैसला **आपको** ही करना

है। मेहनतकश कज़्ज़ाक जो भी क़दम उठाते हैं, हम उसका समर्थन करेंगे ... शुरू में सबसे अच्छी बात होगी कज़्ज़ाक सोवियतों की स्थापना करना। आपको **त्से-ई-काह** में प्रतिनिधित्व दिया जायेगा और फिर यह सरकार **आपकी भी** सरकार बन जायेगी ... "

सोच-विचार में पड़े कज़्ज़ाक वहां से चले गये। दो हफ़्ते बाद जनरल कलेदिन से मिलने के लिए उनके सैनिकों का एक शिष्टमंडल आया। उन्होंने कलेदिन से पूछा, " क्या आप कज़्ज़ाक ज़मींदारों की बड़ी बड़ी रियासतों को मेहनतकश कज़्ज़ाकों के बीच बांटने का वादा करेंगे ? "

" मेरे जीते जी ऐसा नहीं हो सकता ! " कलेदिन ने तड़ाक से उत्तर दिया। एक महीना बाद यह पा कर कि उनकी सेना उनके देखते देखते काफ़ूर हो गई, कलेदिन ने तमंचे की नली माथे से लगा कर घोड़ा दबा दिया। कज़्ज़ाक आन्दोलन समाप्त हो गया ...

उधर मोगिल्योव में पुरानी **त्से-ई-काह** के सदस्यों, अव्क्सेन्त्येव से लेकर चेर्नोव तक " नरम " समाजवादी नेताओं, पुरानी सैनिक समितियों के सक्रिय अध्यक्षों तथा प्रतिक्रियावादी अफ़सरों का भारी जमावड़ा हुआ था। सैनिक स्टाफ़ ने जन-कमिसार परिषद् को मान्यता देने से बराबर इनकार किया। उसने अपने गिर्द शहीदी टुकड़ियों, सेंट जार्ज के शूरवीरों और मोर्चे के कज़्ज़ाकों को एकजुट किया था और वह मित्र-राष्ट्रों के सैनिक अताशों के साथ तथा कलेदिन के आंदोलन के और उक्रइनी रादा के साथ घनिष्ठ तथा गुप्त रूप से संपर्क बनाये हुए था ...

आठवीं नवंबर की शांति-आज्ञप्ति का, जिसमें सोवियतों की कांग्रेस द्वारा सामान्य युद्ध-विराम का प्रस्ताव पेश किया गया था, मित्र-राष्ट्रों की सरकारों ने कोई उत्तर नहीं दिया।

२० नवंबर को त्रोत्स्की ने इन राष्ट्रों के राजदूतों को एक पत्र भेजा: [18]

राजदूत महोदय, मुझे आपको यह सूचना देने का सम्मान प्राप्त है कि ... सोवियतों की अखिल रूसी कांग्रेस ने ८ नवंबर को जन-कमिसार परिषद् के रूप में रूसी जनतंत्र की एक नयी सरकार का गठन किया। इस सरकार के अध्यक्ष व्लादीमिर इल्यीच लेनिन हैं। विदेशी मामलों के

जन-कमिसार के रूप में विदेशी मामलों का निर्देशन मुझे सौंपा गया है...

युद्ध-विराम तथा संयोजनों और हरजानों के बग़ैर तथा जातियों के आत्मनिर्णय के अधिकार पर आधारित एक जनवादी शांति-संधि के लिए अखिल रूसी कांग्रेस द्वारा अनुमोदित प्रस्ताव के मज़मून की ओर आपका ध्यान आकर्षित करते हुए मुझे आप से यह अनुरोध करने का सम्मान प्राप्त है कि आप इस दस्तावेज़ को सभी मोर्चों पर अविलंब युद्ध-विराम तथा अविलंब शांति-वार्ता शुरू करने के एक औपचारिक प्रस्ताव के रूप में ग्रहण करें, जिस प्रस्ताव को रूसी जनतंत्र की अधिकृत सरकार एक साथ सभी युद्धरत जनों और उनकी सरकारों के सामने उपस्थित करती है।

राजदूत महोदय, कृपया अपनी जनता के प्रति सोवियत सरकार के सम्मान के गंभीर आश्वासन को स्वीकार करें। इस बेमिसाल मार-काट से श्रांत-क्लांत अन्य सभी जनों के समान ही आपकी जनता भी शांति की कामना किये बिना नहीं रह सकती...

उसी रात जन-कमिसार परिषद् ने जनरल दुख़ोनिन को तार भेजा:

...जन-कमिसार परिषद् यह ज़रूरी समझती है कि शत्रु तथा मित्र, सभी शक्तियों से अविलंब युद्ध-विराम का औपचारिक रूप से प्रस्ताव किया जाये। विदेशी मामलों के कमिसार ने पेत्रोग्राद में मित्र-शक्तियों के प्रतिनिधियों के पास इस निर्णय के अनुरूप एक घोषणा भेजी है।

नागरिक सेनापति, जन-कमिसार परिषद् आपको आदेश देती है... कि आप शत्रु-पक्ष के सैनिक अधिकारियों से अविलंब युद्ध बंद करने और शांति स्थापित करने के लिए वार्ता आरंभ करने का प्रस्ताव करें। इन प्रारंभिक वार्ताओं को चलाने का ज़िम्मा आपको देते हुए, जन-कमिसार परिषद् आपको आदेश देती है:

(१) शत्रु-सेनाओं के प्रतिनिधियों के साथ प्रारंभिक वार्ता चलाने के लिए जो भी क़दम उठाया जाये, उसकी परिषद् को अविलंब सीधे तार द्वारा सूचना दी जाये।

(२) जन-कमिसार परिषद् के अनुमोदन के बिना युद्ध-विराम समझौते पर दस्तख़त न किये जायें।

मित्र-राष्ट्रों के राजदूतों ने त्रोत्स्की के पत्र का अवज्ञापूर्ण मौन से स्वागत किया, और साथ ही अखबारों में बुग्ज़ और हिक़ारत से भरे गुमनाम इंटरव्यू भी प्रकाशित हुए। दुखोनिन को दिये जानेवाले आदेश को खुल्लमखुल्ला राजद्रोह कहा गया...

जहां तक दुख़ोनिन का संबंध है, ऐसा लगता था कि उनके कानों पर जूं भी नहीं रेंगी है। २२ नवंबर की रात को उनसे टेलीफ़ोन पर बातचीत की गयी और पूछा गया कि क्या वह, उन्हें जो हुक्म दिया गया है, उसकी तामील करने का इरादा रखते हैं। दुख़ोनिन ने कहा कि वह असमर्थ हैं। वह उसी सरकार के हुक्म की तामील कर सकते हैं, जिसे "सेना तथा देश का समर्थन प्राप्त हो।"

इस पर उन्हें तुरंत मुख्य सेनापति के पद से बर्ख़ास्त कर दिया गया और उनकी जगह क्रिलेंको को नियुक्त किया गया। जन-साधारण से अपील करने की अपनी कार्यनीति के अनुसार लेनिन ने सभी रेजीमेंटों, डिवीज़नों और कोरों की समितियों के नाम, सेना तथा नौसेना के सभी सिपाहियों और मल्लाहों के नाम एक रेडियो-संदेश भेजा, जिसके द्वारा उन्होंने उन्हें दुख़ोनिन के इनकार की सूचना दी और आदेश दिया कि "मोर्चे की रेजीमेंटें शत्रु के दस्तों के साथ बातचीत शुरू करने के लिए अपने प्रतिनिधि चुनें..."

२३ तारीख़ को मित्र-राष्ट्रों के सैनिक अताशों ने अपनी अपनी सरकार की हिदायत पर दुख़ोनिन के पास एक पत्र भेजा, जिसमें गंभीर चेतावनी दी गयी थी कि वह "एंटेंट की शक्तियों के बीच संपन्न संधियों की शर्तों का उल्लंघन न करें"। पत्र में आगे कहा गया था कि अगर जर्मनी के साथ एक पृथक युद्ध-विराम समझौता संपन्न किया जाता है, तो उसका रूस के लिए "अत्यंत गंभीर परिणाम होगा"। दुख़ोनिन ने तुरंत इस पत्र को सभी सैनिक समितियों के पास भेज दिया...

दूसरे दिन सुबह त्रोत्स्की ने सैनिकों के नाम एक और अपील जारी की, जिसमें उन्होंने कहा कि मित्र-राष्ट्रों के प्रतिनिधियों का पत्र रूस के अंदरूनी मामलों में घोर हस्तक्षेप है और "रूसी सेना तथा रूसी जनता को ज़ार द्वारा संपन्न संधियों का पालन कर लड़ाई जारी रखने के लिए धमकियों से मजबूर करने" की एक नंगी कोशिश भी है...

स्मोल्नी ने घोषणा पर घोषणा[11] जारी की, जिनमें दुख़ोनिन और

उनके साथ के प्रतिक्रियावादी अफ़सरों की लानत-मलामत की गयी थी, मोगिल्योव में जुटे हुए प्रतिक्रियावादी राजनीतिज्ञों को आड़े हाथों लिया गया था और एक हज़ार मील में फैले हुए मोर्चे के एक सिरे से दूसरे सिरे तक लाखों क्रुद्ध, संदेहपूर्ण सैनिकों को उभाड़ा गया था। इसके साथ ही जोशीले मल्लाहों के तीन दस्तों को साथ लेकर क्रिलेंको प्रतिशोध की प्रचंड धमकियां देते हुए[20] **स्ताव्का** – सदर मुकाम – के लिए रवाना हुए, और सभी जगह सिपाहियों ने बड़े उल्लास से उनका स्वागत किया। क्रिलेंको की यह यात्रा एक विजय-यात्रा बन गयी। केंद्रीय सैनिक समिति ने दुख़ोनिन के समर्थन में एक घोषणा जारी की, और फ़ौरन दस हज़ार सिपाहियों ने मोगिल्योव पर चढ़ाई कर दी...

२ दिसंबर को मोगिल्योव की गैरिसन ने बग़ावत की, शहर पर क़ब्ज़ा कर लिया, दुख़ोनिन और सैनिक समिति के सदस्यों को गिरफ़्तार कर लिया और वह विजयी लाल पताका को फहराती हुई नये मुख्य सेनापति का स्वागत करने को निकल पड़ी। दूसरे दिन सुबह क्रिलेंको ने मोगिल्योव में प्रवेश किया और देखा कि रेल-गाड़ी के जिस डिब्बे में दुख़ोनिन को बंद कर दिया गया था, उसके चारों ओर एक बौख़लायी हुई भीड़ जमा थी। क्रिलेंको ने एक भाषण दिया, जिसमें उन्होंने सिपाहियों से अनुरोध किया कि वे दुख़ोनिन पर हाथ न छोड़ें, क्योंकि उन्हें पेत्रोग्राद ले जाकर क्रांतिकारी न्यायाधिकरण के सामने पेश करना है। क्रिलेंको के भाषण ख़त्म करते ही यकायक दुख़ोनिन ख़ुद खिड़की के सामने आ गये, जैसे वह भीड़ के सामने बोलना चाहते हों। लोग वहशियाना जोश के साथ चिल्लाते हुए उनके डिब्बे की ओर बढ़े, बूढ़े जनरल के ऊपर टूट पड़े, उन्हें गाड़ी से बाहर निकाल लाये और वहीं प्लैटफ़ार्म पर मारते मारते उनका भुरकुस निकाल डाला...

स्ताव्का का विद्रोह इस प्रकार समाप्त हुआ...

रूस में विरोधी सैनिक शक्ति के अंतिम महत्त्वपूर्ण गढ़ के पतन से प्रचुर शक्ति प्राप्त कर, सोवियत सरकार ने विश्वासपूर्ण भाव से राज्य-प्रशासन का संगठन करना आरंभ किया। बहुत से पुराने राज्य-कर्मचारी उसके झंडे के नीचे आ गये और दूसरी पार्टियों के बहुत से सदस्यों ने सरकारी पद ग्रहण किये। परंतु सरकारी कर्मचारियों की तनख़ाहों के बारे में जो

आज्ञप्ति जारी की गयी, जिसके द्वारा जन-कमिसारों की तनख़ाहें–सबसे ऊंची तनख़ाहें–पांच सौ रूबल (क़रीब पचास डालर) माहवार मुक़र्रर की गयीं, वह धन की आकांक्षा रखनेवालों के लिए एक अंकुश थी। यूनियनों की यूनियन के नेतृत्व में सरकारी कर्मचारियों की जो हड़ताल चल रही थी, वह टूट गयी; जो वित्तीय तथा वाणिज्यिक हल्क़े उसका समर्थन कर रहे थे, उन्होंने उससे अपना हाथ खींच लिया। बैंकों के क्लर्क काम पर वापिस चले आये...

बैंकों के राष्ट्रीयकरण की आज्ञप्ति, सर्वोच्च राष्ट्रीय अर्थ-परिषद् की स्थापना, गांवों में भूमि-संबंधी आज्ञप्ति के व्यावहारिक क्रियान्वयन, सेना के जनवादी पुनःसंगठन तथा जीवन तथा प्रशासन के सभी क्षेत्रों में व्यापक परिवर्तनों के साथ – इन सारे क़दमों के साथ, जो मज़दूर, सैनिक और किसान जन-समुदायों के संकल्प की बदौलत ही कारगर तौर पर उठाये जा सके – बहुत सी ग़लतियों और विघ्न-बाधाओं के बीच सर्वहारा रूस को धीरे धीरे आकार दिया जाने लगा।

बोल्शेविकों ने सत्ता पर अधिकार किया–मिल्की वर्गों अथवा अन्य राजनीतिक नेताओं के साथ समझौता करके नहीं, पुरानी सरकारी मशीनरी को मना और राज़ी कर के नहीं, न ही एक छोटे से गुट की संगठित हिंसा द्वारा। अगर समूचे रूस में जन-साधारण विद्रोह के लिए तैयार न होते, तो यह विद्रोह कभी भी सफल नहीं हो सकता था। बोल्शेविकों की सफलता का एकमात्र कारण यह था कि उन्होंने जनता की गहनतम श्रेणियों की सीधी-सादी और अत्यंत व्यापक इच्छाओं को संपन्न किया, पुरातन को छिन्न-भिन्न तथा नष्ट-भ्रष्ट करने के काम के लिए उनका आह्वान किया और बाद में, गिरती दीवारों के धुस्स के बीच नवीन का ढांचा खड़ा करने में उनके साथ सहयोग किया...

बारहवां अध्याय

किसानों की कांग्रेस

१८ नवम्बर को मौसम की पहली बर्फ़ गिरी। सुबह जब हम उठे, हमने देखा खिड़कियों की सिलों पर सफ़ेद ढेर जमा थे और बर्फ़ के फूहे इस बुरी तरह झर रहे थे कि चार गज़ आगे देखना भी असंभव था। पिछले दिनों की कीचड़ ख़त्म ही गई थी, और जैसे पलक भांजते ही धुंधला धुंधला शहर सफ़ेद लक़दक़ चमकने लगा था। अपने रूईदार कपड़े पहने कोचवानों के सहित बग्घी-गाड़ियां स्लेज-गाड़ियों में बदल गईं और ऊंची-नीची सड़कों पर बेतहाशा भागने लगीं – कोचवानों की दाढ़ियों में बर्फ़ जम गई थी और वे कड़ी पड़ गई थीं ... क्रांति के बावजूद, इस बात के बावजूद कि समूचे रूस ने एक अज्ञात तथा भयानक भविष्य में, जिसकी ओर ताकते भी सिर चकराता था, छलांग लगाई थी, शहर में बर्फ़ के गिरने से ख़ुशी की एक लहर दौड़ गई। जिसे देखो, उसके चेहरे पर मुस्कराहट थी। लोग ख़ुशी के मारे सड़कों पर दौड़ पड़े और हंसते-खिलखिलाते हाथ बढ़ा कर गिरती हुई बर्फ़ की नरम पंखुड़ियों को लोकने लगे। सारी धूसरता, मलिनता छिप गयी। केवल सुनहरी और रंग-बिरंगी मीनारें और गुंबद सफ़ेद बर्फ़ के बीच से चमक रहे थे–उनकी अनोखी चमक-दमक और भी बढ़ गई थी।

दोपहर को सूरज भी निकल आया, मलिन और निस्तेज। बरसाती महीनों की सर्दी और गलियां ख़त्म हो गईं, शहर की ज़िंदगी में एक नयी रौनक आ गई और ख़ुद क्रांति की रफ़्तार तेज़ हो गई ...

एक शाम को मैं स्मोल्नी भवन के सामने सड़क के दूसरी ओर एक **त्राक्तीर** यानी एक तरह के ढाबे में बैठा था – नीची छत की एक शोरगुल वाली जगह, जिसे "टाम चाचा की कुटिया" कहते थे और जहां लाल

गार्ड अक्सर आते थे। इस समय भी वे वहां भरे हुए थे और छोटी छोटी मेज़ों के चारों ओर, जिन पर मैले मेज़पोश पड़े थे और बड़ी बड़ी चीनी मिट्टी की चायदानियां रखी हुई थीं, भीड़ लगाये हुए थे। उनकी सिगरेटों का गंदा धुआं वहां बुरी तरह भरा हुआ था। परेशान वेटर "**सिचास! सिचास!** अभी! अभी! मिनट भर में!" कहते हुए इधर-उधर दौड़ रहे थे।

एक कोने में कप्तान की वर्दी में एक आदमी इस मजमे के सामने लेक्चर झाड़ रहा था, लेकिन लोग मिनट मिनट पर उसका मुंह पकड़ रहे थे।

"तुम हत्यारों से कुछ कम थोड़े ही हो!" उसने चिल्ला कर कहा। "सड़कों पर अपने ही रूसी भाइयों पर गोली चलाते हो!"

"हमने कब ऐसा किया?" एक मज़दूर ने पूछा।

"पिछले इतवार को किया, जब **युंकरों** ने ..."

"अच्छा तो क्या उन्होंने हमारे ऊपर गोली नहीं चलाई?" एक आदमी ने स्लिंग में डली हुई अपनी बांह दिखाते हुए कहा। "यह देखिये, वे शैतान अपनी एक यादगार मेरे पास छोड़ गये हैं!"

कप्तान ने गला फाड़ कर चिल्लाते हुए कहा, "आपको तटस्थ रहना चाहिये था! आपको बहर-सूरत तटस्थ रहना चाहिये था! क़ानूनी सरकार को उलटने वाले आप कौन होते हैं? लेनिन कौन है? जर्मनों का एक ..."

"और आप कौन हैं? प्रतिक्रांतिकारी! उकसावेबाज़!" वे उसके ऊपर बरस पड़े।

जब शोरगुल ज़रा कम हुआ और कप्तान की बात फिर सुनी जा सकती थी, उसने उठते हुए कहा, "अच्छी बात है! आप अपने को रूस की जनता कहते हैं, लेकिन आप रूस की जनता **नहीं** हैं। रूस की जनता **किसान** हैं। ज़रा ठहरिये, जब तक कि किसान ..."

"हां, ठीक है," उन्होंने तेज़ लहजे में जवाब दिया। "ठहरिये और देखिये कि किसान क्या कहते हैं। किसान क्या कहेंगे, हम जानते हैं ... क्या वे भी हमारी ही तरह मेहनत-मशक़्क़त करने वाले लोग नहीं हैं?"

अन्ततोगत्वा सब कुछ किसानों पर ही निर्भर था। किसान राजनीतिक दृष्टि से पिछड़े हुए ज़रूर थे, लेकिन उनके अपने ख़ास ख़्यालात थे और वे रूस की जनता के ८० प्रतिशत से अधिक भाग थे। किसानों के

बीच बोल्शेविकों के अनुयायी अपेक्षाकृत कम थे, और रूस में औद्योगिक मज़दूरों का स्थायी अधिनायकत्व असंभव था ... किसानों की परंपरागत पार्टी समाजवादी-क्रांतिकारी पार्टी थी ; इस समय जितनी पार्टियां सोवियत सरकार का समर्थन कर रही थीं, उनमें वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारी ही तर्कसंगत रूप से किसानों के नेतृत्व के उत्तराधिकारी थे, वे इस समय संगठित नगर-सर्वहारा की अनुकंपा पर जी रहे थे और उन्हें किसानों के समर्थन की बेतरह ज़रूरत थी ...

इस बीच स्मोल्नी ने किसानों को भुलाया नहीं था। भूमि-आज्ञप्ति के बाद नयी **त्से-ई-काह** ने जो सबसे पहले क़दम उठाये, उनमें किसानों की सोवियतों की कार्यकारिणी समिति की उपेक्षा कर किसानों की एक कांग्रेस बुलाना भी एक क़दम था। चंद रोज़ बाद **वोलोस्त** (परगना) की भूमि समितियों के लिए विस्तृत नियमावली जारी की गई, जिसके बाद लेनिन के "किसानों के नाम पत्र"[1] प्रकाशित किये गये, जिनमें सीधे-सादे शब्दों में बोल्शेविक क्रांति तथा नई सत्ता की व्याख्या की गई थी ; १६ नवंबर को लेनिन और मिल्यूतिन ने 'प्रांतों में भेजे जाने वाले दूतों को निर्देश' प्रकाशित किया। सोवियत सरकार ने हज़ारों ऐसे दूतों को गांवों में भेजा था।

१. जिस प्रांत के लिए वह अधिकृत है, वहां पहुंचने पर दूत को चाहिये कि वह मज़दूरों, सैनिकों तथा किसानों के प्रतिनिधियों की सोवियतों की कार्यकारिणी समिति की एक बैठक बुलाये, जिसमें वह कृषि-संबंधी क़ानून के संबंध में रिपोर्ट दे और फिर यह प्रस्ताव करे कि सोवियतों का एक पूर्ण सम्मिलित अधि वेशन बुलाया जाये ...

२. उसके लिए आवश्यक है कि वह प्रांत में कृषि-समस्या के सभी पहलुओं का अध्ययन करे।

(क) क्या ज़मींदारों की ज़मीनें ले ली गई हैं और अगर ली गई हैं, तो किन हलकों में ?

(ख) जब्त की हुई ज़मीन का इंतज़ाम कौन कर रहा है, भूतपूर्व मालिक, अथवा भूमि समिति ?

(ग) खेती की मशीनों और मवेशियों के बारे में क्या किया गया है ?

३. क्या किसानों द्वारा जोती जाने वाली भूमि में बढ़ती हुई है?

४. इस समय जितनी भूमि जोती जा रही है, वह सरकार द्वारा निश्चित औसत न्यूनतम भूमि की मात्रा से कितनी कम या ज़्यादा है और किन मानों में भिन्न है?

५. दूत को अवश्य ही इस बात का आग्रह करना चाहिए कि भूमि प्राप्त कर लेने के बाद किसानों के लिए यह आवश्यक है कि वे जल्द से जल्द जोती जाने वाली भूमि में वृद्धि करें और अकाल से बचने के एकमात्र साधन के रूप में शहरों में जल्द अनाज पहुंचायें।

६. ज़मींदारों के हाथ से भूमि समितियों तथा सोवियतों द्वारा नियुक्त इस प्रकार के दूसरे निकायों के हाथों में भूमि के अन्तरण के लिये कौन सी कार्रवाइयां की गयी हैं या करने की योजना बनाई गई है?

७. यह वांछनीय है कि सुनियोजित तथा सुव्यवस्थित ज़मींदारियों का प्रबंध कुशल कृषि-विज्ञानियों की देख-रेख में सोवियतों द्वारा किया जाये, जिनमें उन ज़मींदारियों में नियमित रूप से मज़दूरी करने वाले लोग शामिल हों।

गांवों में सभी जगह ज़िंदगी उबाल खा रही थी, जिसका कारण भूमि-आज्ञप्ति का विद्युत-प्रभाव ही नहीं था, बल्कि यह भी था कि हज़ारों क्रांतिकारी विचारों के किसान सैनिक मोर्चे से लौट रहे थे ... इन आदमियों ने किसानों की कांग्रेस बुलाये जाने का विशेष रूप से स्वागत किया।

जिस प्रकार पुरानी **त्से-ई-काह** ने मज़दूरों तथा सैनिकों की सोवियतों की दूसरी कांग्रेस को रोकने की कोशिश की थी, उसी प्रकार किसानों की सोवियतों की कार्यकारिणी समिति ने स्मोल्नी द्वारा बुलायी जाने वाली किसान कांग्रेस को न होने देने के लिए बहुत हाथ-पैर मारा और पुरानी **त्से-ई-काह** की ही तरह यह देख कर कि उसका विरोध व्यर्थ है, उसने बदहवास होकर तार पर तार भेजना शुरू किया, जिनमें यह आज्ञा की गयी थी कि अनुदार प्रतिनिधि ही चुने जायें। किसानों के बीच यह ख़बर तक फैला दी गई कि कांग्रेस मोगिल्योव में होगी, और कुछ प्रतिनिधि वहां पहुंच भी गये। परंतु २३ नवंबर तक क़रीब ४०० प्रतिनिधि पेत्रोग्राद में जुट गये थे और पार्टी की अन्तरंग सभायें शुरू हो गई थीं ...

कांग्रेस का पहला अधिवेशन दूमा भवन के अलेक्सान्द्र हॉल में हुआ

और पहले मतदान ने यह प्रगट कर दिया कि आधे से अधिक प्रतिनिधि वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारी थे, जबकि मात्र पांचवां भाग बोल्शेविकों के इशारे पर चलता था और चौथाई दक्षिणपंथी समाजवादी-क्रांतिकारियों के। शेष प्रतिनिधि केवल एक सूत्र से बंधे थे – पुरानी कार्यकारिणी समिति का विरोध, जिस पर अव्क्सेन्त्येव, चाइकोव्स्की और पेशेख़ोनोव हावी थे ...

विशाल सभा-भवन लोगों से खचाखच भरा था; लगातार इतना शोर हो रहा था कि मालूम होता था जैसे दीवारें तक हिल जायेंगी। गहरी दिल के भीतर जमी कटुता ने प्रतिनिधियों को क्रुद्ध दलों में बांट दिया था। दक्षिण पक्ष में अफ़सरों के झब्बों वाली छिटपुट वर्दियां थीं और पुराने ज़्यादा मालदार किसानों के बुज़ुर्ग दढ़ियल चेहरे थे; मध्य पक्ष में मुट्ठीभर किसान, छोटे अफ़सर और कुछ सिपाही थे; वाम पक्ष में प्रायः सभी प्रतिनिधि मामूली सिपाहियों की वर्दियों में थे। ये नई पीढ़ी के लोग थे, जो फ़ौज में नौकरी कर रहे थे ... गैलरियों में मज़दूरों की भीड़ थी – रूस में मज़दूर इस बात को भूले नहीं हैं कि वे कभी किसान थे ...

पुरानी **त्से-ई-काह** के विपरीत अधिवेशन का उद्घाटन करती हुई कार्यकारिणी समिति ने कांग्रेस को आधिकारिक कांग्रेस के रूप में स्वीकार नहीं किया। आधिकारिक कांग्रेस १३ दिसंबर के लिए बुलाई गई थी। एक ओर ज़ोर की तालियों और दूसरी ओर क्रुद्ध चीत्कारों के बीच अध्यक्ष ने घोषणा की कि यह सभा कांग्रेस नहीं, मात्र असाधारण सम्मेलन थी ... परंतु शीघ्र ही "असाधारण सम्मेलन" ने वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारियों की नेता मारीया स्पिरिदोनोवा को सभापति चुनकर कार्यकारिणी समिति के प्रति अपना दृष्टिकोण प्रगट कर दिया।

पहले दिन अधिकांश समय इस बात को लेकर उग्र विवाद होता रहा कि क्या **वोलोस्त** सोवियतों के प्रतिनिधि भी शामिल किये जायेंगे, या केवल प्रांतीय निकायों के प्रतिनिधि शामिल किये जायेंगे। मज़दूरों तथा सैनिकों की कांग्रेस की ही तरह यहां भी विशाल बहुमत ने व्यापकतम प्रतिनिधित्व के पक्ष में फ़ैसला किया, जिस पर पुरानी कार्यकारिणी समिति ने सभा का परित्याग कर दिया ...

यह ज़ाहिर होते देर न लगी कि अधिकांश प्रतिनिधि जन-कमिसारों की सरकार के विरोधी थे। बोल्शेविकों की ओर से ज़िनोव्येव ने बोलने

की कोशिश की, मगर उन्हें हू-हू, लू-लू कर चुप कर दिया गया और जब वह मंच से नीचे उतर रहे थे, हंसी के ठहाकों के बीच आवाज़ें सुनी गईं, "जन-कमिसार का मुंह काला!"

प्रांतों के एक प्रतिनिधि नाज़ार्येव ने तेज़ लहजे में कहा, "हम वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारी इस तथाकथित मज़दूरों और किसानों की सरकार को, जब तक कि उसमें किसानों के प्रतिनिधि मौजूद न हों, मानने से इनकार करते हैं। इस समय वह मज़दूरों का अधिनायकत्व छोड़ कुछ नहीं है... हम आग्रहपूर्वक मांग करते हैं कि एक ऐसी नई सरकार बनाई जाये, जो सारे जनवादी अंशकों का प्रतिनिधित्व करती हो!"

प्रतिक्रियावादी प्रतिनिधियों ने बड़ी चतुराई से इस भावना का पोषण किया और बोल्शेविक प्रतिनिधियों के प्रतिवादों के बावजूद कहा कि जन-कमिसार परिषद् या तो कांग्रेस को अपनी मुट्ठी में रखना चाहती है, या उसे शस्त्र-बल से भंग कर देना चाहती है। किसान इस घोषणा को सुन कर बौखला उठे...

तीसरे दिन यकायक लेनिन मंच पर आये। दस मिनट तक ऐसी चीख़-पुकार होती रही कि लगता था लोग पागल हो गये हों। "लेनिन मुर्दाबाद!" लोग चिल्लाये। "हम आपके किसी भी जन-कमिसार को सुनने के लिये तैयार नहीं हैं। हम आपकी सरकार को नहीं मानते!"

लेनिन दोनों हाथों से मेज़ पकड़े शांत, निर्विकार, निश्चल खड़े रहे, उनकी छोटी छोटी आंखें मंच के नीचे जो हंगामा मचा हुआ था, उसका विचारपूर्ण भाव से निरीक्षण कर रही थीं। अन्ततः सभा के दक्षिण पक्ष को छोड़कर, यह प्रदर्शन अपने आप थोड़ा शांत हुआ।

"मैं यहां पर जन-कमिसार परिषद् के सदस्य के नाते नहीं आया हूं," लेनिन ने कहा और फिर क्षण भर कोलाहल शांत होने की प्रतीक्षा की, "बल्कि मैं इस कांग्रेस के लिये बाक़ायदा निर्वाचित बोल्शेविक दल के सदस्य के नाते आया हूं।" और उन्होंने हाथ में अपना परिचय-पत्र लेकर सब को दिखाया।

"फिर भी," उन्होंने शांत, निष्कंप स्वर में आगे कहा, "इस बात मे कोई इनकार नहीं कर सकता कि बोल्शेविक पार्टी ने ही रूस की मौजूदा सरकार बनाई है..." उन्हें क्षण भर फिर रुकना पड़ा, "लिहाज़ा

व्यवहारतः बात एक ही है ...'' इस बात पर दक्षिणपंथियों ने ऐसा शोर मचाया कि कान के पर्दे फट जायें, परंतु मध्य तथा वाम पक्ष के लोग सुनने के लिए उत्सुक थे और उन्होंने लोगों को चुप कराया।

लेनिन का तर्क बहुत ही सीधा-सादा था। ''किसानो, आप लोग, जिनके हाथों में हमने **पोमेश्चिकों** की ज़मीनों को दिया है, मुझे साफ़ साफ़ बतायें, क्या अब आप मज़दूरों को उद्योग पर अपना नियंत्रण स्थापित करने से रोकना चाहते हैं? यह एक वर्ग-युद्ध है। कहने की ज़रूरत नहीं कि **पोमेश्चिक** किसानों का विरोध करते हैं और कारख़ानेदार मज़दूरों का। क्या आप सर्वहारा की पांतों में फूट पड़ने देंगे? आप किसका पक्ष ग्रहण करेंगे?

''हम बोल्शेविक सर्वहारा की पार्टी हैं – किसान सर्वहारा की और औद्योगिक सर्वहारा की भी। हम बोल्शेविक सोवियतों के रक्षक हैं – किसानों की सोवियतों के और मज़दूरों तथा सैनिकों की सोवियतों के भी। मौजूदा सरकार सोवियतों की सरकार है; हमने न केवल किसानों की सोवियतों को उस सरकार में शामिल होने के लिये न्योता दिया है, हमने वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारियों के प्रतिनिधियों को भी जन-कमिसार परिषद् में शामिल होने के लिये न्योता दिया है ...

''सोवियतें जनता का – कारख़ानों और खानों के मज़दूरों का, खेतों के मज़दूरों का – अत्यंत पूर्ण रूप से प्रतिनिधित्व करती हैं। जो भी सोवियतों को मटियामेट करने की कोशिश करता है, वह जनवाद-विरोधी तथा प्रतिक्रांतिकारी क़दम उठाने के लिये क़सूरवार है। **दक्षिणपंथी** समाजवादी-क्रांतिकारी साथियो! – और कैडेट श्रीमानो! मैं आपको चेतावनी देता हूं कि अगर संविधान सभा सोवियतों को मिटाने की कोशिश करती है, तो हम उसे कभी भी ऐसा करने नहीं देंगे!''

२५ नवंबर को तीसरे पहर कार्यकारिणी समिति के बुलावे पर चेर्नोव मोगिल्योव से भागे भागे आये। दो ही महीने पहले समझा जाता था कि वह घोर क्रांतिकारी हैं और वह किसानों के बीच अत्यधिक लोकप्रिय थे, परंतु अब उन्हीं को वाम पक्ष की ओर कांग्रेस के ख़तरनाक रुझान को रोकने के लिये बुलाया गया था। पेत्रोग्राद पहुंचते ही चेर्नोव को गिरफ़्तार

कर लिया गया और स्मोल्नी ले जाया गया, जहां थोड़ी देर की बातचीत के बाद उन्हें छोड़ दिया गया।

आते ही चेर्नोव ने सबसे पहले कार्यकारिणी समिति को कांग्रेस का परित्याग करने के लिये बुरी तरह फटकारा। समिति ने कांग्रेस में वापिस जाना मंज़ूर कर लिया, और चेर्नोव ने अधिकांश प्रतिनिधियों की ज़ोरदार तालियों के और बोल्शेविकों की आवाज़ों और फब्तियों के बीच सभा-भवन में प्रवेश किया।

"साथियो! मैं बाहर था। मैंने पश्चिमी मोर्चे की सेनाओं के किसान प्रतिनिधियों की एक कांग्रेस बुलाने के प्रश्न पर विचार करने के लिये आयोजित बारहवीं सेना के एक सम्मेलन में भाग लिया, और यहां जो विद्रोह घटित हुआ है उसके बारे में मेरी जानकारी बहुत ही कम है ..."

ज़िनोव्येव ने उठकर आवाज़ दी, "जी हां, आप ज़रा यूं ही थोड़ी देर के लिए चले गये थे!" भयानक कोलाहल, आवाज़ें: "बोल्शेविकों का नाश हो!"

चेर्नोव ने आगे कहा, "यह इलज़ाम कि मैंने सेना लेकर पेत्रोग्राद पर चढ़ाई करने में मदद की बेबुनियाद है, सरासर झूठ है। कौन है, जो यह इलज़ाम लगाता है? ज़रा मुझे बताइये तो!"

ज़िनोव्येव: "'इज़्वेस्तिया' और 'देलो नरोदा' – आपके अपने अख़बार – वे ही ऐसा कहते हैं!"

छोटी छोटी आंखों, घुंघराले बालों और भूरी दाढ़ी वाले चेर्नोव का चौड़ा-चकला चेहरा तमतमा आया, लेकिन उन्होंने अपने ऊपर ज़ब्त किया और भाषण जारी रखा, "मैं फिर कहता हूं, यहां जो कुछ हुआ है, उसके बारे में मैं वस्तुतः कुछ नहीं जानता और मैंने किसी सेना की रहनुमाई नहीं की, सिवाय इस सेना के (उन्होंने किसान प्रतिनिधियों की ओर इशारा किया), जिसे यहां पर लाने के लिए अधिकांशतः मैं ही ज़िम्मेदार हूं!" हंसी, और आवाज़ें: "शाबाश!"

"पेत्रोग्राद वापिस आने पर मैं स्मोल्नी गया। वहां मेरे ख़िलाफ़ ऐसा कोई इलज़ाम नहीं लगाया गया ... मैंने वहां थोड़ी देर बातचीत की और चला आया – बस इतनी सी बात है! है कोई माई का लाल यहां पर, जो मेरे ख़िलाफ़ यह इलज़ाम लगाये?"

इस पर ऐसा शोर मचा कि पूछो मत। बोल्शेविक और कुछ वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारी भी एक साथ उठ खड़े हुए और सबके सब घूंसा दिखाते हुए चीख़ने-चिल्लाने लगे। बाक़ी लोगों ने चिल्ला कर उन्हें बैठा देने की कोशिश की।

"यह अधिवेशन नहीं है, अंधेरगर्दी है!" चेर्नोव ने चिल्लाकर कहा, और वह हॉल से बाहर निकल गये। शोर-गुल और हंगामे की वजह से सभा स्थगित कर दी गई...

इस बीच कार्यकारिणी समिति की कांग्रेस में क्या स्थिति है, यह प्रश्न सभी के दिमाग़ को उलझन में डाले हुए था। सभा को "असाधारण सम्मेलन" का नाम देकर यह योजना बनाई गई थी कि कार्यकारिणी समिति के पुनर्निर्वाचन को रोका जाये। लेकिन यह योजना एक दुधारी तलवार बन गई। वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारियों ने फ़ैसला किया कि अगर कांग्रेस का कार्यकारिणी समिति पर कोई ज़ोर नहीं है, तो कार्यकारिणी समिति का भी कांग्रेस पर कोई ज़ोर नहीं हो सकता। २५ नवंबर को सभा ने फ़ैसला किया कि कार्यकारिणी समिति के अधिकार असाधारण सम्मेलन द्वारा ग्रहण किये जायें, जिसमें समिति के वे ही सदस्य वोट दे सकेंगे, जो बाक़ायदा प्रतिनिधि निर्वाचित हुए हैं...

दूसरे दिन, बोल्शेविकों के उग्र विरोध के बावजूद प्रस्ताव में एक संशोधन किया गया, जिसके द्वारा कार्यकारिणी समिति के सभी सदस्यों को, चाहे वे निर्वाचित प्रतिनिधि हों अथवा नहीं, सभा में बोलने और वोट देने का अधिकार दिया गया।

२७ तारीख़ को भूमि की समस्या पर बहस हुई, जिसने बोल्शेविकों और वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारियों के कृषि-कार्यक्रमों के अंतर को स्पष्ट कर दिया।

वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारियों की ओर से बोलते हुए कचीन्स्की ने भूमि-समस्या के क्रांतिकालीन इतिहास की एक रूपरेखा प्रस्तुत की। उन्होंने कहा कि किसानों की सोवियतों की पहली कांग्रेस ने ज़मींदारों की ज़मीनों को अविलंब भूमि समितियों के हवाले करने के पक्ष में एक स्पष्ट प्रस्ताव औपचारिक रूप से स्वीकृत किया था। परंतु क्रांति के निर्देशकों ने

तथा मंत्रिमंडल में मौजूद पूंजीवादियों ने आग्रह किया कि जब तक संविधान सभा बुलाई नहीं जाती, इस प्रश्न का निपटारा नहीं किया जा सकता... क्रांति का दूसरा दौर, "समझौते" का दौर तब शुरू हुआ, जब चेर्नोव ने मंत्रिमंडल में प्रवेश किया। किसानों को यक़ीन हो गया कि अब भूमि-समस्या को अमली तौर पर हल करना शुरू किया जायेगा। परंतु पहली किसान कांग्रेस के आदेशात्मक निर्णय के बावजूद कार्यकारिणी समिति के प्रतिक्रियावादियों और समझौतापरस्तों ने कोई क़दम उठाने नहीं दिया। इस नीति के फलस्वरूप गांवों में जगह जगह उपद्रव हुए, जो वास्तव में किसानों के अधैर्य तथा उनकी क्रियाशीलता के दमन की प्रतिक्रिया की स्वाभाविक अभिव्यक्ति थे। किसानों ने क्रांति के अर्थ को ठीक ठीक समझा – उन्होंने कथनी को करनी में बदल देना चाहा...

"हाल की घटनाओं का अर्थ," भाषणकर्ता ने आगे कहा, "साधारण उपद्रव अथवा 'बोल्शेविक दुःसाहसिकता' नहीं है, इसके विपरीत वास्तविक जन-विद्रोह है, जिसका समूचे देश ने सहानुभूतिपूर्ण रूप से स्वागत किया है...

"बोल्शेविकों ने सामान्यतः भूमि-समस्या के प्रति सही रुख़ अपनाया, परंतु किसानों को यह सलाह देकर कि वे बलात् भूमि पर क़ब्ज़ा करें उन्होंने एक भूल की... शुरू के दिनों से ही बोल्शेविकों ने कहना शुरू किया कि किसानों को "क्रांतिकारी जन-संघर्ष द्वारा" भूमि पर क़ब्ज़ा कर लेना चाहिए। यह अराजकता है, और कुछ नहीं। भूमि संगठित रूप से हाथ में ली जा सकती है... बोल्शेविकों के लिए महत्त्वपूर्ण बात यह थी कि क्रांति की समस्यायें जल्दी से जल्दी हल कर ली जायें, परंतु ये समस्यायें **किस प्रकार** हल की जायें, इसमें उन्हें दिलचस्पी न थी...

"सोवियतों की कांग्रेस की भूमि-संबंधी आज्ञप्ति मूलतः किसानों की पहली कांग्रेस के निर्णयों से भिन्न नहीं है। तब फिर नई सरकार ने उस कांग्रेस द्वारा निरूपित कार्यनीति का अनुसरण क्यों नहीं किया? क्योंकि जन-कमिसार परिषद् भूमि की समस्या को जल्द से जल्द निपटाना चाहती थी, ताकि संविधान सभा के लिए कुछ करने को न रह जाये...

"परंतु सरकार ने यह भी देखा कि अमली क़दम उठाना ज़रूरी है, लिहाज़ा उसने बिना आगा-पीछा देखे भूमि समितियों के लिए नियमावली

स्वीकृत की और इस प्रकार एक विचित्र परिस्थिति उत्पन्न हो गई, क्योंकि जहां जन-कमिसार परिषद् ने भूमि के निजी स्वामित्व का उन्मूलन किया, वहीं भूमि समितयों के लिए सूत्रबद्ध नियमावली निजी स्वामित्व पर आधारित है... बहरहाल इससे कोई नुक़सान नहीं हुआ है, क्योंकि भूमि समितियां सोवियत आज्ञप्तियों की ओर ध्यान नहीं दे रही हैं, बल्कि स्वयं अपने व्यावहारिक निर्णयों को कार्यान्वित कर रही हैं – उन निर्णयों को, जो किसानों के विशाल बहुमत की इच्छा पर आधारित हैं...

"ये भूमि समितियां भूमि-समस्या को वैधानिक रूप से हल करने की कोशिश नहीं कर रही हैं, क्योंकि यह केवल संविधान सभा के अख़्तियार की बात है... परंतु क्या संविधान सभा रूसी किसानों की मर्ज़ी पर चलना चाहेगी? इसके बारे में हमें इत्मीनान नहीं हो सकता... हमें सिर्फ़ इस बात का इत्मीनान हो सकता है कि अब किसानों का क्रांतिकारी संकल्प जाग्रत हो उठा है और संविधान सभा को विवश होकर भूमि की समस्या का निपटारा उसी प्रकार करना **होगा**, जिस प्रकार किसान चाहते हैं... संविधान सभा जनता की मर्ज़ी की अवहेलना करने की जुर्रत नहीं करेगी..."

इसके बाद लेनिन बोले और लोगों ने उन्हें एकाग्र और तल्लीन भाव से सुना। "इस घड़ी हम भूमि की समस्या को ही नहीं, सामाजिक क्रांति की समस्या को भी हल करने की कोशिश कर रहे हैं – न केवल यहां, रूस में, बल्कि सारी दुनिया में। भूमि की समस्या सामाजिक क्रांति की दूसरी समस्याओं से विलग रूप में सुलझाई नहीं जा सकती... उदाहरण के लिए, बड़ी ज़मींदारियों की ज़ब्ती से भड़क कर रूसी ज़मींदार ही नहीं, विदेशी पूंजी भी प्रतिरोध करेगी, जिसके साथ, बैंकों के माध्यम से, बड़ी ज़मींदारियां जुड़ी हुई हैं...

"रूस में भूमि-स्वामित्व उत्पीड़न का आधार बना हुआ है और किसानों द्वारा भूमि की ज़ब्ती हमारी क्रांति का सबसे महत्त्वपूर्ण क़दम है। परंतु इस क़दम को दूसरे क़दमों से अलग नहीं किया जा सकता। जिन दौरों से होकर क्रांति को गुज़रना पड़ा है, उनसे यह बात अच्छी तरह ज़ाहिर हो जाती है... वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारियों की ग़लती यह है कि उन्होंने उस समय समझौते की नीति का विरोध नहीं किया, क्योंकि उन्होंने इस सिद्धांत को ग्रहण किया था कि जन-साधारण की चेतना अभी तक पूर्ण रूप से विकसित नहीं हुई है...

"**यदि समाजवाद तभी संपन्न किया जा सकता है, जब समस्त जनता का बौद्धिक विकास उसकी अनुमति दे, तो हम कम से कम पांच सौ वर्षों तक समाजवाद का दर्शन नहीं कर सकेंगे**... समाजवादी राजनीतिक पार्टी – यह मज़दूर वर्ग का हरावल है; उसे अपने को हरगिज़ इस बात की इजाज़त नहीं देनी चाहिए कि वह साधारण जनों की अशिक्षा के कारण अपने क़दम रोक ले, बल्कि उसे अनिवार्यतः जन-साधारण का नेतृत्व करना चाहिए और इसके लिए सोवियतों का क्रांतिकारी पेशक़दमी करनेवाले निकायों के रूप में इस्तेमाल करना चाहिए... परंतु यदि वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारी साथी ढुलमुलयक़ीनों का नेतृत्व करना चाहते हैं, तो पहले उन्हें ख़ुद ढुलमुलाना बंद करना चाहिए ...

"पिछली जुलाई में आम जनता और 'समझौतापरस्तों' के बीच खुल्लमखुल्ला एक के बाद एक कई संबंध-विच्छेद हुए; लेकिन आज नवंबर में वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारी अभी भी अपने हाथ अव्क्सेन्त्येव की ओर बढ़ा रहे हैं, जो जनता को अपनी कानी उंगली पर नचाने की कोशिश कर रहे हैं... यदि समझौते की नीति चलती रहती है, तो क्रांति का लोप हो जायेगा। पूंजीपति वर्ग के साथ कोई समझौता संभव नहीं है; यह ज़रूरी है कि उसकी शक्ति बिल्कुल चूर चूर कर दी जाये...

"हम बोल्शेविकों ने अपना भूमि-संबंधी कार्यक्रम बदला नहीं है; हमने भूमि के निजी स्वामित्व के उन्मूलन का परित्याग नहीं किया है, न ही ऐसा करने का विचार रखते हैं। हमने भूमि समितियों के लिए नियमावली – यह नियमावली बिल्कुल ही निजी स्वामित्व पर आधारित **नहीं** है – इसलिए स्वीकृत की है कि हम जन-इच्छा को उसी प्रकार संपन्न करना चाहते हैं, जिस प्रकार जनता ने ख़ुद करने का निर्णय किया है, ताकि समाजवादी क्रांति के लिए संघर्ष करने वाले सभी अंशकों का संश्रय और भी अधिक घनिष्ठ हो सके।

"हम वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारियों को उस संश्रय में सम्मिलित होने के लिए आमंत्रित करते हैं, परंतु हम साथ ही यह भी आग्रह करते हैं कि वे पीछे मुड़ मुड़कर देखना बंद करें और अपनी पार्टी के समझौतापरस्तों के साथ अपना नाता तोड़ें...

"जहां तक संविधान सभा का संबंध है, यह सच है कि, जैसा

पिछले वक्ता ने कहा है, संविधान सभा का कार्य जन-साधारण के क्रांतिकारी संकल्प पर निर्भर होगा। मैं कहता हूं, 'उस क्रांतिकारी संकल्प का भरोसा कीजिये, परंतु अपनी बंदूक को मत भूलिये!'"

इसके बाद लेनिन ने बोल्शेविक प्रस्ताव को पढ़ा:

किसानों की कांग्रेस मज़दूरों तथा सैनिकों के प्रतिनिधियों की सोवियतों की दूसरी अखिल रूसी कांग्रेस द्वारा स्वीकृत तथा रूसी जनतन्त्र की मज़दूरों तथा किसानों की अस्थायी सरकार की हैसियत से जन-कमिसार परिषद् द्वारा प्रकाशित ८ नवंबर की भूमि सम्बन्धी आज्ञप्ति का पूर्ण समर्थन करती है। किसानों की कांग्रेस ... सभी किसानों को आमंत्रित करती है कि वे सर्वसम्मति से इस क़ानून का समर्थन करें और उसे ख़ुद ही अविलंब लागू करें; इसके साथ कांग्रेस किसानों को इसके लिए आमंत्रित करती है कि वे ज़िम्मेदारी के पदों और स्थानों पर केवल उन्हीं व्यक्तियों को नियुक्त करें, जिन्होंने, अपनी कथनी द्वारा ही नहीं, अपनी करनी द्वारा भी शोषित किसान-मज़दूरों के हितों के प्रति अपनी पूर्ण निष्ठा को, बड़े बड़े ज़मींदारों, पूंजीपतियों, उनके हिमायतियों और हवालियों-मवालियों के समस्त प्रतिरोध के ख़िलाफ़ इन हितों की रक्षा करने की अपनी इच्छा और सामर्थ्य को प्रमाणित किया हो ...

इसके साथ ही किसानों की कांग्रेस अपना यह विश्वास प्रगट करती है कि जो कार्यभार भूमि-आज्ञप्ति के अंग हैं, उन सबका पूर्ण क्रियान्वयन ७ नवंबर, १९१७ को शुरू हुई मज़दूरों की समाजवादी क्रांति की विजय द्वारा ही सफल हो सकता है; क्योंकि समाजवादी क्रांति ही किसान श्रमिकों के हाथ में बिला मुआवज़ा भूमि का निश्चित अंतरण कर सकती है, समाजवादी क्रांति ही आदर्श फ़ार्मों को ज़ब्त कर उन्हें किसान-कम्यूनों के हवाले कर सकती है, बड़े बड़े ज़मींदारों के हाथों में खेती की जो मशीनें हैं उन्हें ज़ब्त कर सकती है, उजरती गुलामी के संपूर्ण उन्मूलन द्वारा खेतिहर मज़दूरों के हितों का संरक्षण तथा खेती और उद्योग की पैदावार का रूस के सभी भागों में नियमित तथा व्यवस्थित वितरण, बैंकों पर क़ब्ज़ा (जिसके बिना निजी स्वामित्व के उन्मूलन के बाद समस्त जनता द्वारा भूमि पर अधिकार असंभव होगा) और राज्य द्वारा मज़दूरों की

प्रत्येक प्रकार से सहायता निष्पन्न कर सकती है...

इन्हीं कारणों से किसानों की कांग्रेस एक समाजवादी क्रांति के रूप में ७ नवंबर की क्रांति का पूर्ण समर्थन करती है और बिना किसी हिचकिचाहट के, जो भी परिवर्तन आवश्यक हों, उनके साथ रूसी जनतंत्र के समाजवादी रूपांतरण को कार्यान्वित करने का अपना अविचल संकल्प प्रगट करती है।

सभी उन्नत देशों के औद्योगिक मज़दूर वर्ग के साथ, सर्वहारा के साथ किसान श्रमिकों की घनिष्ठ एकता समाजवादी क्रांति की विजय की अनिवार्य शर्त है, जिस क्रांति के द्वारा ही भूमि-संबंधी आज्ञप्ति की स्थायी सफलता तथा उसका पूर्ण क्रियान्वयन सुनिश्चित बनाया जा सकता है। अब से रूसी जनतंत्र में नीचे से ऊपर तक राज्य का समस्त संगठन तथा प्रशासन अवश्य ही इस एकता पर आधारित होना चाहिए। पूंजीपति वर्ग के साथ मेल-मिलाप पूंजीवादी राजनीति के मुखियों के साथ अनुभव की कसौटी पर गर्हित सिद्ध होने वाले मेल-मिलाप – की नीति की ओर लौटने की प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष, प्रगट अथवा प्रच्छन्न सभी कोशिशों को चूर चूर करती हुई यह एकता ही समूचे संसार में समाजवाद की विजय को सुनिश्चित बना सकती है...

कार्यकारिणी समिति के प्रतिक्रियावादियों में अब इतना साहस न रहा कि वे सभा को अपना मुंह दिखाते। लेकिन चेर्नोव ने विनम्र तथा आकर्षक निष्पक्षता के साथ कई मरतबा भाषण किया। उन्हें मंच पर आकर बैठने के लिए आमंत्रित किया गया... कांग्रेस की दूसरी रात को सभापति के हाथ में एक गुमनाम पुर्ज़ा दिया गया, जिसमें अनुरोध किया गया था कि चेर्नोव को आनरेरी अध्यक्ष बनाया जाये। उस्तीनोव ने इस पुर्ज़े को पढ़ कर सुनाया। ज़िनोव्येव ने फ़ौरन उठकर बुलंद आवाज़ में कहा कि यह पुरानी कार्यकारिणी समिति की सम्मेलन पर क़ब्ज़ा करने की एक तिकड़म है। मिनट भर में दोनों ओर के लोग आग-बबूला होकर हाथ हिला हिलाकर चीख़ने-चिल्लाने लगे – सभा-भवन क्या था, क्रुद्ध, फूत्कारता, गरजता जन-सागर था... फिर भी चेर्नोव अभी भी बहुत लोकप्रिय बने हुए थे।

भूमि की समस्या तथा लेनिन के प्रस्ताव पर जो गरमागरम और

धुआंधार बहसें हुईं, उनमें बोल्शेविक दल दो बार सभा त्याग करते करते रुक गया – दोनों बार उनके नेताओं ने उन्हें रोका ... ऐसा लगता था कि कांग्रेस में बुरी तरह ज़िच पैदा हो गयी है।

लेकिन हममें से किसी को नहीं मालूम था कि स्मोल्नी में वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारियों और बोल्शेविकों के बीच गुप्त वार्ता चल रही थी। शुरू शुरू में वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारियों ने मांग की कि सभी समाजवादी पार्टियों को लेकर, चाहे ये पार्टियां सोवियतों में शामिल हों या न हों, एक सरकार बनायी जाये, जो एक जन-परिषद् के प्रति उत्तर-दायी हो; इस परिषद् में मज़दूरों तथा सैनिकों के संगठन तथा किसानों के संगठन के प्रतिनिधियों की संख्या बराबर हो और शेष प्रतिनिधि नगर दूमाओं तथा ज़ेम्सत्वोओं के हों; लेनिन तथा त्रोत्स्की को मंत्रिमंडल से बाहर रखा जाये और सैनिक क्रांतिकारी समिति तथा दूसरे दमनकारी निकायों को भंग कर दिया जाये।

बुधवार, २८ नवंबर की सुबह, रात भर की बेतरह कशमकश और खींचा-तानी के बाद एक समझौता हुआ। १०८ सदस्यों की **त्से-ई-काह** को इस प्रकार बढ़ाया जायेगा : उसमें किसानों की कांग्रेस के सानुपातिक रूप से चुने १०८ प्रतिनिधि शामिल किये जायेंगे, सेना तथा नौसेना से सीधे सीधे चुने गये १०० प्रतिनिधि, ट्रेड-यूनियनों के ५० प्रतिनिधि (सामान्य यूनियनों से ३५, रेल मज़दूरों के १० तथा डाक-तार मज़दूरों के ५) शामिल किये जायेंगे। दूमा तथा ज़ेम्सत्वोओं को बरतरफ़ कर दिया गया। लेनिन तथा त्रोत्स्की मंत्रिमंडल में बने रहेंगे और सैनिक क्रांति-कारी समिति काम करती रहेगी।

अब कांग्रेस के अधिवेशन स्थानांतरित होकर नंबर छः, फ़ोन्तान्का मार्ग पर शाही लॉ कालेज भवन में, जहां किसानों की सोवियत का सदर दफ़्तर था, होने लगे थे। बुधवार को तीसरे पहर वहां बड़े हॉल में प्रतिनिधियों का जमावड़ा हुआ। पुरानी कार्यकारिणी समिति कांग्रेस से अलग हो गयी थी और वह उसी भवन के एक दूसरे कक्ष में भगोड़े प्रतिनिधियों तथा सैनिक समितियों के प्रतिनिधियों को लेकर अपना अलग अवशिष्ट सम्मेलन कर रही थी।

चेर्नोव, कार्यवाहियों पर सतर्क दृष्टि लगाये, कभी एक सभा में जाते,

कभी दूसरी। उन्हें मालूम था कि बोल्शेविकों के साथ समझौता करने पर विचार किया जा रहा है, मगर उन्हें यह नहीं मालूम था कि यह समझौता संपन्न किया जा चुका है।

अवशिष्ट सम्मेलन में बोलते हुए उन्होंने कहा, "इस वक़्त जब सभी इस हक़ में हैं कि एक विशुद्ध समाजवादी सरकार बनायी जाये, बहुत से लोग पहले मंत्रिमंडल को भूल गये हैं, जो संयुक्त मंत्रिमंडल **नहीं** था और जिसमें एक ही समाजवादी था – केरेन्स्की। यह एक ऐसी सरकार थी, जो अपने वक़्त में अत्यधिक लोकप्रिय थी। अब लोग केरेन्स्की को दोषी ठहराते हैं – वे यह भूल जाते हैं कि उन्हें सोवियतों ने ही नहीं, जन-साधारण ने भी सत्तारूढ़ किया था...

"केरेन्स्की के प्रति जनमत क्यों बदला? जंगली जातियों के लोग देवताओं को प्रतिष्ठापित करते हैं और उनसे प्रार्थना करते हैं, परंतु यदि उनकी कोई प्रार्थना सुनी नहीं गयी, तो उन्हें दंड भी देते हैं... यही बात इस घड़ी हो रही है... कल केरेन्स्की, आज लेनिन और त्रोत्स्की; कल कोई और...

"हमने केरेन्स्की और बोल्शेविकों दोनों से प्रस्ताव किया है कि वे सत्ता का परित्याग करें। केरेन्स्की ने इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया है – जिस जगह वह छिपे हुए हैं, वहां से आज ही उन्होंने यह एलान किया है कि उन्होंने प्रधान मंत्री के पद से इस्तीफ़ा दे दिया है। परंतु बोल्शेविक सत्ता अपने हाथ में रखना चाहते हैं और यह नहीं जानते कि उसका इस्तेमाल किस प्रकार किया जाये...

"बोल्शेविक चाहे सफल हों या असफल, इससे रूस का भाग्य बदलने वाला नहीं है। रूस के गांवों के लोग भली भांति समझते हैं कि उन्हें क्या चाहिए और वे अपनी कार्रवाइयां कर रहे हैं... अंत में ये गांव ही हमें बचायेंगे..."

इस बीच बड़े हॉल में उस्तीनोव ने घोषणा की थी कि स्मोल्नी तथा किसानों की कांग्रेस के बीच समझौता हो गया है। प्रतिनिधियों ने इस घोषणा का उन्मत्त उल्लास से स्वागत किया। यकायक चेर्नोव वहां तशरीफ़ ले आये और उन्होंने बोलने की इजाज़त मांगी।

"मेरा ख़्याल है," उन्होंने शुरू किया, "कि किसानों की कांग्रेस

तथा स्मोल्नी के बीच समझौता संपन्न किया जा रहा है। यह देखते हुए कि किसानों की सोवियतों की असली कांग्रेस अगले सप्ताह से पहले नहीं होने वाली है, यह समझौता ग़ैरक़ानूनी होगा...

"इसके अलावा मैं आपको अभी से आगाह करना चाहता हूं कि बोल्शेविक आपकी मांगों को कभी स्वीकार नहीं करेंगे..."

इस पर हंसी के ऐसे ठहाके लगे कि उनके भाषण का क्रम टूट गया। परिस्थिति को समझ कर, वह मंच से उतर आये और हॉल से बाहर निकल गये और अपने साथ अपनी लोकप्रियता भी लेते गये।

बृहस्पतिवार, २९ नवंबर को, जब दिन ढलने को आ रहा था, कांग्रेस का असाधारण अधिवेशन शुरू हुआ। सभा में उछाह-उत्सव का वातावरण था; हर चेहरा खिला हुआ था... सभा के सामने जो बाक़ी काम था, उसे जल्दी जल्दी निबटाया गया, और फिर समाजवादी-क्रांतिकारियों के वाम पक्ष के वयोवृद्ध पुरोहित, नातान्सोन ने अश्रुविगलित, प्रकंपित स्वर में मज़दूरों तथा सैनिकों की सोवियतों के साथ किसानों की सोवियतों के "मिलन" के बारे में अपनी रिपोर्ट पढ़ी। रिपोर्ट के दौरान जब भी "मिलन" शब्द आता, लोग हुलस कर तालियां बजाने लगते... अंत में उस्तीनोव ने घोषणा की कि लाल गार्ड के प्रतिनिधियों के साथ स्मोल्नी का एक शिष्टमंडल वहां आया है। उसका बड़े ज़ोर से तालियां बजाकर स्वागत किया गया। एक के बाद एक, एक मज़दूर, एक सिपाही और एक मल्लाह ने मंच पर आकर उनका अभिनंदन किया।

इसके बाद अमरीकी समाजवादी लेबर पार्टी के प्रतिनिधि बोरीस रेइनश्तेइन बोले। उन्होंने कहा: "किसानों की कांग्रेस तथा मज़दूरों तथा सैनिकों के प्रतिनिधियों की सोवियतों के सम्मिलन का दिन क्रांति का एक महान् पर्व है, जिसका महामंद्र स्वर समूचे संसार में—पेरिस में, लंदन में और समुद्र पार न्यू-यार्क में—ध्वनित-प्रतिध्वनित होगा। यह सम्मिलन सभी मेहनतकशों के दिलों में खुशी भर देगा।

"एक महान् विचार की विजय हुई है। पश्चिम और अमरीका रूस से, रूसी सर्वहारा से, ज़बरदस्त उम्मीदें लगाये हुए हैं... संसार का सर्वहारा रूसी क्रांति की प्रतीक्षा कर रहा है, उसकी महान् सिद्धियों और

उपलब्धियों की प्रतीक्षा कर रहा है, जो प्राप्त की जा रही हैं..."

त्से-ई-काह के अध्यक्ष स्वेर्दलोव ने उनका अभिनंदन किया। "गृहयुद्ध का अंत चिरजीवी हो! जनवादी एकता ज़िंदाबाद!" के नारे लगाते किसानों की भीड़ बाहर निकल गयी।

अंधेरा घिर आया था और जमी हुई बर्फ़ पर चंद्रमा और सितारों की मद्धिम रोशनी चमक रही थी। नदी के किनारे पाव्लोस्की रेजीमेंट के सिपाही मार्च करने के लिए पूर्ण पंक्तिबद्ध खड़े थे: रेजीमेंट के बैंड ने 'मर्सेइयेज़' की धुन बजाना शुरू कर दिया। सिपाहियों के गगनभेदी नारों के बीच किसानों ने अखिल रूसी किसानों की सोवियतों की कार्यकारिणी समिति के महान् लाल झंडे को फहराते हुए पंक्तिबद्ध होना शुरू किया। झंडे पर सुनहरे अक्षरों में ताज़ा कढ़ाई की गयी थी: "क्रांतिकारी तथा मेहनतकश जन-समुदायों की एकता ज़िंदाबाद!" इसके पीछे दूसरे झंडे थे– वार्ड सोवियतों के झंडे और पुतीलोव कारख़ाने का झंडा, जिस पर लिखा था: "हम सभी जनों के बीच भाईचारा क़ायम करने के लिए इस झंडे के सामने शीश नवाते हैं!"

कहीं से जलती हुई मशालें निकल आयीं; रात के अंधेरे में उनकी नारंगी रोशनी बर्फ़ के पहलों पर पड़ती हुई सहस्रगुना होकर प्रतिबिंबित हो रही थी। जब यह गाती-बजाती भीड़ फ़ोन्तान्का के किनारे दोनों ओर की पटरियों पर मौन, स्तंभित खड़े लोगों के बीच से चली, ये धुआं उगलती मशालें ऊपर ऊपर लहरा रही थीं।

"क्रांतिकारी सेना – ज़िंदाबाद! लाल गार्ड – ज़िंदाबाद! किसान – ज़िंदाबाद!"

इस प्रकार इस विशाल जुलूस ने – जिसमें बराबर नये लोग शामिल होते गये और स्वर्णाक्षरों से अंकित नये नये लाल झंडे लहराते गये – शहर का चक्कर लगाया। दो बूढ़े किसान, जिनकी कमर मेहनत-मशक़्क़त करते करते झुक गयी थी, हाथ में हाथ दिये चल रहे थे, उनके चेहरे बच्चों जैसी ख़ुशी से चमक रहे थे।

"अरे, भाई, **अब** देखना है, वे हमारी ज़मीनों को हमारे हाथ से वापस कैसे लेते हैं!" एक ने कहा।

स्मोल्नी भवन के पास सड़क के दोनों ओर लाल गार्ड क़तार बांधे खड़े थे और ख़ुशी से फूले नहीं समा रहे थे।

दूसरे बूढ़े किसान ने अपने साथी से कहा, "भाई, मैं थका नहीं हूं, पूरे रास्ते मुझे ऐसा लगा कि मैं चल नहीं रहा हूं, उड़ान भर रहा हूं!"

स्मोल्नी भवन की सीढ़ियों पर क़रीब सौ मज़दूरों तथा सैनिकों के प्रतिनिधि जमा थे, उनका फरहरा पीछे मेहराबी दरवाज़ों के बीच से आती हुई रोशनी की वजह से छाया-चित्र सा दिखाई दे रहा था। वे बेतहाशा नीचे दौड़े, जैसे एक झोंका आया हो, उन्होंने किसानों को अपनी बांहों में भर लिया और उन्हें गले लगा लिया। जैसे बिजली कड़कती है वैसे ही हुंकारता हुआ जुलूस बड़े फाटक से अंदर घुस कर सीढ़ियों पर उमड़ा।

बड़े काफ़ूरी हॉल में **त्से-ई-काह**, और उसके साथ समूची पेत्रोग्राद सोवियत तथा एक हज़ार दर्शक ऐसे उदात्त गंभीर भाव से प्रतीक्षा कर रहे थे जो इतिहास की महान् जागरण की वेला में ही प्रगट होता है।

ज़िनोव्येव ने घोषणा की कि किसानों की कांग्रेस के साथ समझौता हो गया है। घोषणा का तालियों की गड़गड़ाहट से स्वागत किया गया और जब कारिडोर से बैंड की आवाज़ आई और जुलूस का आगे का हिस्सा अंदर आया, यह गड़गड़ाहट और भी प्रचंड हो उठी। मंच पर सभापतिमंडल के सदस्य उठे और उन्होंने किसानों के सभापतिमंडल के सदस्यों का आलिंगन करते हुए उनके लिए जगह बनाई। उनके पीछे सफ़ेद दीवार पर उस ख़ाली चौखटे के ऊपर, जिसमें जड़ी ज़ार की तसवीर फाड़ डाली गई थी, दोनों झंडे एक दूसरे के साथ आड़े-तिरछे लगा दिये गये...

और तब "विजयपूर्ण अधिवेशन" आरंभ हुआ। स्वागत में स्वेर्दलोव ने दो शब्द कहे और फिर पूरे रूस में सर्वाधिक प्रिय और सर्वाधिक शक्तिशाली महिला, मारीया स्पिरिदोनोवा बोलने के लिए खड़ी हुई—दुबली-पतली, ज़र्द चेहरा, आंखों पर चश्मा, बाल सीधे-सादे ढंग से संवारे हुए, सजा-[illegible] वही, जो न्यू इंगलैंड की अध्यापिका की होती है। उन्होंने [illegible]

" [illegible] के मज़दूरों के सम्मुख अब ऐसे क्षितिज उन्मुक्त हुए हैं, [illegible] इतिहास अभी तक अपरिचित था... अतीत में मज़दूरों के सभी आंदोलनों की पराजय हुई। परंतु वर्त्तमान आंदोलन अंतर्राष्ट्रीय है और इसी लिए वह अपराजेय है। संसार में ऐसी कोई शक्ति नहीं है, जो क्रांति

की ज्योति को बुझा सके। पुराना संसार ढह रहा है और नया संसार बनने लगा है..."

इसके बाद त्रोत्स्की, ओजपूर्ण, आग्नेय : "साथी किसानो, मैं आपका स्वागत करता हूं! आप यहां मेहमानों की तरह नहीं, इस घर के स्वामियों की तरह आते हैं, जो घर रूसी क्रांति का हृत्पिंड है। आज इस भवन में लाखों-लाख श्रमिकों का संकल्प केन्द्रीभूत है... आज रूसी भूमि का एक ही स्वामी है – मज़दूरों, सिपाहियों और किसानों का एका..."

उन्होंने कटु व्यंग्य और विद्रूप के भाव से मित्र-राष्ट्रों के कूटनीतिज्ञों की चर्चा की, जिन्होंने उस समय तक युद्ध-विराम के लिए रूस के निमंत्रण को अवज्ञापूर्वक ठुकरा दिया था, जिसे मध्य यूरोपीय शक्तियों ने स्वीकार कर लिया था।

"यह युद्ध एक नई मानवता को जन्म देगा... इस भवन में हम सभी देशों के मज़दूरों को वचन देते हैं कि हम अपने क्रांतिकारी मोर्चे को कभी नहीं छोड़ेंगे। अगर हम टूटेंगे, तो अपने झंडे की रक्षा करते हुए ही टूटेंगे..."

त्रोत्स्की के बाद क्रिलेंको ने आकर मोर्चे की परिस्थिति के बारे में समझाया, जहां दुख़ोनिन जन-कमिसार परिषद् का मुक़ाबला करने की तैयारी कर रहे थे। "दुख़ोनिन और उसके साथी यह भली भांति समझ लें कि जो लोग शांति के रास्ते में रोड़ा अटकाते हैं, उनके साथ हम नरमी से पेश आने वाले नहीं हैं!"

दिबेंको ने नौसेना की ओर से सभा को अभिवादन जताया और **विक्जेल** के सदस्य क्रुशींस्की ने कहा, "इस घड़ी से, जब सभी सच्चे समाजवादियों की एकता संपन्न हो गई है, रेल मज़दूरों की समूची सेना अपने को पूर्णतः क्रांतिकारी जनवाद के अधीन करती है!" इसके बाद अश्रुविगलित लुनाचार्स्की बोले, वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारियों की ओर से प्रोश्यान बोले और अंत में संयुक्त सामाजिक जनवादी-अंतर्राष्ट्रीयतावादियों, जिनमें मार्तोव और गोर्की के दलों के सदस्य शामिल थे, की ओर से बोलते हुए सहाराश्वीलि ने कहा :

"हम बोल्शेविकों की कट्टर नीति के कारण **त्से-ई-काह** से अलग हुए, ताकि हम उन्हें सारे क्रांतिकारी जनवादी अंशकों की एकता को संपन्न करने के हेतु छूट देने के लिए मजबूर कर सकें। अब क्योंकि यह

एकता स्थापित हो गई है, इसलिए हम **त्से-ई-काह** में फिर अपना स्थान ग्रहण करना अपना पुनीत कर्त्तव्य समझते हैं... हम ज़ोर देकर कहते हैं कि जो लोग **त्से-ई-काह** से निकल आये हैं, उन सबको अब वापिस आ जाना चाहिए।"

किसानों की कांग्रेस के सभापतिमंडल के एक वयोवृद्ध तेजस्वी किसान, स्ताश्कोव ने चारों ओर मुड़ कर शीश नवाया और फिर कहा, "मैं रूस के नव-जीवन तथा नव-स्वतंत्रता की दीक्षा पर आपका अभिनंदन करता हूं।"

पोलिश सामाजिक-जनवाद की ओर से ब्रोन्स्की; कारखाना समितियों की ओर से स्क्रिप्निक; सलोनिकी में रूसी सिपाहियों की ओर से त्रीफ़ोनोव; और दूसरे कितने ही लोग, जिनका सिलसिला ख़त्म होने को नहीं आ रहा था, भरे दिल से बोले और ख़ूब बोले, क्योंकि आज उनका मनोरथ पूर्ण हुआ था और उनकी वाणी को नयी स्फूर्ति मिली थी...

रात बहुत काफ़ी गुज़र चुकी थी, जब निम्नलिखित प्रस्ताव पेश किया गया और सर्वसम्मति से पास किया गया:

"पेत्रोग्राद सोवियत तथा किसानों की कांग्रेस के साथ एक असाधारण अधिवेशन में संयुक्त **त्से-ई-काह**, मज़दूरों तथा सैनिकों के प्रतिनिधियों की सोवियतों की दूसरी कांग्रेस द्वारा स्वीकृत भूमि तथा शांति-संबंधी आज्ञप्तियों की और मज़दूर-नियंत्रण संबंधी आज्ञप्ति की भी पुष्टि करती है और अपना यह दृढ़ विश्वास प्रगट करती है कि मज़दूरों, किसानों तथा सैनिकों की एकता, सभी मज़दूरों तथा सभी शोषितों की यह बिरादराना एकता उनके द्वारा विजित सत्ता को संहत करेगी और यह कि दूसरे देशों में मज़दूर वर्ग के हाथों में सत्ता के अंतरण को शीघ्रतर संपन्न करने के लिए यह एकताबद्ध शक्ति सभी क्रांतिकारी क़दम उठायेगी और यह कि इस प्रकार यह एक न्याय्य शांति तथा समाजवाद की विजय को स्थायी रूप से संपन्न करना सुनिश्चित बनायेगी।"

जॉन रीड की टिप्पणियां

जॉन रीड द्वारा संकलित तथा अनूदित सामग्री उनकी पुस्तक का एक अत्यंत महत्वपूर्ण परिशिष्ट है। इस सामग्री को रूसी मूल पाठ के साथ मिला कर देखा गया है और कहीं कहीं जहां स्पष्टतः अनुवाद की गलतियां हैं, सुधार किया गया है। – **सं०**

पहले अध्याय की टिप्पणियां

१

ओबोरोन्त्सी – "प्रतिरक्षावादी"। सभी "नरम" समाजवादी दलों ने यह नाम अपनाया था, या उन्हें यह नाम दिया गया था, क्योंकि वे इस बिना पर कि यह युद्ध एक राष्ट्रीय रक्षात्मक युद्ध है, मित्र-राष्ट्रों के नेतृत्व में युद्ध को चलाते रहने के लिए सहमत थे। बोल्शेविक, वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारी, मेन्शेविक-अंतर्राष्ट्रीयतावादी (मार्तोव का गुट) और सामाजिक-जनवादी अंतर्राष्ट्रीयतावादी (गोर्की का दल) इस हक़ में थे कि मित्र-राष्ट्रों को जनवादी युद्ध-उद्देश्यों की घोषणा करने के लिए और इन शर्तों पर जर्मनी से शांति-संधि का प्रस्ताव करने के लिए बाध्य किया जाये।

२

क्रांति से पहले तथा क्रांति के दौरान तनख़ाहें तथा निर्वाह-ख़र्च

तनख़ाहों तथा निर्वाह-ख़र्च की निम्नलिखित तालिकायें मास्को के वाणिज्य-मंडल तथा श्रम मंत्रालय के मास्को-विभाग की एक संयुक्त समिति

द्वारा अक्तूबर १९१७ में तैयार की गई थीं, तथा २६ अक्तूबर, १९१७ को 'नोवाया जीज़्न' में प्रकाशित की गई थीं:

रोज़ीना

(रूबलों और कोपेकों में)

वृत्ति	जुलाई १९१४	जुलाई १९१६	अगस्त १९१७
बढ़ई, सुतार	१.६०–२.००	४.००–६.००	८.५०
बेलदार	१.३०–१.५०	३.००–३.५०	–
राज, पलस्तर करनेवाला	१.७०–२.३५	४.००–६.००	८.००
रंगसाज़, सोफ़ासाज़	१.८०–२.२०	३.००–५.५०	८.००
लोहार	१.००–२.२५	४.००–५.००	८.५०
चिमनी साफ़ करनेवाला मजदूर	१.५०–२.००	४.००–५.५०	७.५०
तालासाज़	०.९०–२.००	३.५०–६.००	९.००
मददगार	१.००–१.५०	२.५०–४.५०	८.००

मार्च १९१७ की क्रांति के तुरंत बाद तनख़ाहों की ज़बरदस्त बढ़ती के बारे में अनगिनत कहानियों के बावजूद, श्रम मंत्रालय द्वारा पूरे रूस में जीवन-अवस्थाओं के लिए उपलक्षक आंकड़ों के रूप में प्रकाशित किये गये ये आंकड़े यह प्रगट करते हैं कि तनख़ाहें क्रांति के बाद एकदम नहीं बढ़ीं, वरन् धीरे धीरे करके बढ़ीं। तनख़ाहों में औसतन ५०० प्रतिशत से किंचित अधिक बढ़ती हुई।

परन्तु इसके साथ ही रूबल का मूल्य उसकी पहले की क्रयशक्ति के मुक़ाबले एक-तिहाई से भी कम रह गया और ज़िंदगी की ज़रूरियात का ख़र्च बेतरह बढ़ गया।

खाने-पीने की चीज़ों की क़ीमतें

(रूबलों और कोपेकों में)

		अगस्त १६१४	अगस्त १६१७	प्रतिशत वृद्धि
काली डबल-रोटी	(फ़ी फ़ून्त *)	०.०२१/२	०.१२	३३०
सफ़ेद डबल-रोटी	"	०.०५	०.२०	३००
गाय का गोश्त	"	०.२२	१.१०	४००
बछड़े का गोश्त	"	०.२६	२.१५	७२७
सूअर का गोश्त	"	०.२३	२.०	७७०
हेरिंग मछली	"	०.०६	०.५२	७६७
पनीर	"	०.४०	३.५०	७५४
मक्खन	"	०.४८	३.२०	५५७
अंडे	(फ़ी दर्जन)	०.३०	१.६०	४४३
दूध	(फ़ी क्रूश्का *)	०.०७	०.४०	४७१

नीचे जो तालिका दी जा रही है, वह मास्को की नगर दूमा द्वारा तैयार की गई थी। यह उल्लेखनीय है कि पेत्रोग्राद की अपेक्षा मास्को में खाद्य-वस्तुयें सस्ती थीं और अधिक प्रचुर मात्रा में उपलब्ध थीं।

खाद्य-वस्तुओं का भाव औसतन ५५६ प्रतिशत बढ़ा अर्थात् तनख़ाहों के मुक़ाबले ५१ प्रतिशत अधिक बढ़ा।

जहां तक ज़िंदगी की दूसरी ज़रूरियात का सवाल है, उनकी क़ीमतें बहुत ज़्यादा बढ़ गईं।

नीचे जो तालिका दी जा रही है, वह मज़दूरों के प्रतिनिधियों की मास्को सोवियत के आर्थिक विभाग द्वारा संकलित की गयी थी, और अस्थायी सरकार के खाद्य मंत्रालय द्वारा सही मानी गयी थी।

---

* फ़ून्त ४१० ग्राम के और एक क्रूश्का आधा लिटर के बराबर होता है। – सं०

दूसरी जरूरियात की क़ीमतें

(रूबलों और कोपेकों में)

	अगस्त १९१४	अगस्त १९१७	प्रतिशत वृद्धि
कैलिको (फ़ी **अर्शीन***)	०.११	१.४०	११७३
सूती कपड़ा "	०.१५	२.००	१२३३
तैयार कपड़े "	२.००	४०.००	१९००
कैस्टर* कपड़ा "	६.००	८०.००	१२३३
मर्दाना जूता (एक जोड़ी)	१२.००	१४४.००	१०९७
तल्ले का चमड़ा (फ़ी **अर्शीन**)	२०.००	४००.००	१९००
रबर के जूते (एक जोड़ी)	२.५०	१५.००	५००
मर्दाना सूट	४०.००	४००–	९००–
		४५५	११०९
चाय (फ़ी **फ़ून्त**)	४.५०	१८.००	३००
दियासलाई (एक कार्टन)	०.१०	०.५०	४००
साबुन (फ़ी **पूद**)	४.५०	४०.००	७८०
पेट्रोल (फ़ी **वेद्रो***)	१.७०	११.००	५४७
मोमबत्ती (फ़ी **पूद**)	८.५०	१००.००	१०७६
कैरेमल (फ़ी **फ़ून्त**)	०.३०	४.५०	१४००
जलाने की लकड़ी (एक गट्ठा)	१०.००	१२०.००	११००
लकड़ी का कोयला	०.८०	१३.००	१५२५
फुटकर धातु की वस्तुएं	१.००	२०.००	१९००

ऊपर दी गई जरूरियात की मद्दों की क़ीमतों में औसतन ११०९ प्रतिशत वृद्धि हुई, अर्थात् तनख़ाहों में वृद्धि की दुगुनी से ज़्यादा। कहने की जरूरत नहीं कि क़ीमतों और तनख़ाहों के इस अंतर से सट्टाबाज़ों और व्यापारियों की जेबें भरी।

---

* एक अर्शीन ७१.१२ सेंटीमीटर के और एक वेद्रो दस लिटर के बराबर है; कैस्टर – ऊनी कपड़ा है।–सं०

सितंबर १९१७ में, जब मैं पेत्रोग्राद पहुंचा, एक कुशल औद्योगिक मज़दूर की औसत रोज़ाना तनख़ाह – उदाहरण के लिए पुतीलोव कारख़ाने के एक इस्पात मज़दूर की तनख़ाह – लगभग ८ रूबल थी। इसके साथ ही मुनाफ़े ख़ूब बढ़े हुए थे... पेत्रोग्राद के उपनगर में स्थित एक अंग्रेज़ी कारख़ाने, थार्नटन ऊनी मिल के एक मालिक ने मुझे बताया कि उनके कारख़ाने में जहां तनख़ाहें ३०० प्रतिशत बढ़ी हैं, वहीं मुनाफ़े ९०० **प्रतिशत** तक बढ़ गये हैं।

३

समाजवादी मंत्री

जुलाई की अस्थायी सरकार में समाजवादियों द्वारा पूंजीवादी मंत्रियों के साथ मिल कर अपने कार्यक्रम को पूरा करने की कोशिशों का इतिहास राजनीति में वर्ग-संघर्ष का एक ज्वलंत उदाहरण है। इस विचित्र व्यापार की व्याख्या करते हुए लेनिन कहते हैं:

"पूंजीवादियों ने.. यह देखते हुए कि सरकार की स्थिति ऐसी थी कि वह चल नहीं सकती थी, एक ऐसी प्रणाली का आश्रय लिया, जो सन् १८४८ से दशाब्दियों तक पूंजीपतियों द्वारा मज़दूर वर्ग को चक्कर में डालने, उसमें फूट डालने और अन्ततः उसे बेबस करने के लिये इस्तेमाल की जाती रही है। यह प्रणाली पूंजीवादियों तथा समाजवादी ख़ेमे के भगोड़ों को लेकर बनाया गया तथाकथित संयुक्त मंत्रिमंडल है।

"उन देशों में, जहां मज़दूरों के क्रांतिकारी आंदोलन के साथ ही साथ राजनीतिक स्वतंत्रता तथा जनवाद का अस्तित्व रहा है – उदाहरण के लिये, इंगलैंड और फ़्रांस में – पूंजीपतियों ने इस तिकड़म का इस्तेमाल किया है और बड़ी कामयाबी के साथ किया है। मंत्रिमंडलों में शामिल होने पर 'समाजवादी' नेता निरपवाद रूस से केवल नामधारी नेता, खिलौने, पूंजीपतियों के लिए बस एक आड़, मज़दूरों को चकमा देने के लिए एक साधन भर सिद्ध होते हैं। रूस के 'जनवादी तथा जनतंत्रीय' पूंजीपतियों ने इसी तिकड़म को चालू किया। समाजवादी-क्रांतिकारी तथा मेन्शेविक इस तिकड़म के शिकार हो गये और छः मई को चेर्नोव, त्सेरेतेली, स्कोबेलेव,

अव्क्सेन्त्येव, साविन्कोव, ज़ारूद्नी और निकीतिन* की शिरकत से एक 'संयुक्त' मंत्रिमंडल एक निष्पन्न वास्तविकता बन गया..."

४

मास्को में सितंबर के नगरपालिका-चुनाव

नीचे चुनाव-परिणामों की जो तुलनात्मक तालिका दी जाती है, उसे अक्तूबर १९१७ के पहले सप्ताह में 'नोवाया जीज़्न' ने इस टिप्पणी के साथ प्रकाशित किया था कि इन परिणामों का अर्थ यह है कि मिल्की वर्गों के साथ संश्रय स्थापित करने की नीति एक दिवालिया नीति है। "यदि गृहयुद्ध से अभी भी बचा जा सकता है, तो ऐसा सभी क्रांतिकारी जनवादी अंशकों के एक संयुक्त मोर्चे द्वारा ही किया जा सकता है..."

मास्को की केंद्रीय दूमा तथा वार्ड दूमाओं के चुनाव

	जून १९१७	सितंबर १९१७
समाजवादी-क्रांतिकारी	५८ सदस्य	१४ सदस्य
कैडेट	१७ "	३० "
मेन्शेविक	१२ "	४ "
बोल्शेविक	११ "	४७ "

५

प्रतिक्रियावादियों की बढ़ती हुई उद्धतता और हेकड़ी

१८ सितंबर। कीयेव नगर के एक समाचारपत्र में लिखते हुए कैडेट शुल्गीन ने कहा कि अस्थायी सरकार ने यह घोषणा कर कि रूस एक जनतंत्रीय देश है अपने अधिकारों का घोर दुरुपयोग किया है। "हम न तो

---

* मूल रूसी पाठ में केवल चेर्नोव और त्सेरेतेली के नाम हैं। –सं०

जनतंत्र को स्वीकार कर सकते हैं और न मौजूदा जनतंत्रीय सरकार को ... और हमें इस बात का निश्चय नहीं है कि हम रूस में जनतंत्र चाहते हैं..."

२३ अक्तूबर। रियाज़ान नगर में हुई कैडेट पार्टी की एक सभा में म० दुख़ोनिन ने घोषणा की : "हमें ज़रूर पहली मार्च को वैधानिक राजतंत्र की स्थापना करनी चाहिए। हमें राज्य सिंहासन के न्यायसम्मत उत्तराधिकारी मिख़ाईल अलेक्सान्द्रोविच को हरगिज़ ठुकराना नहीं चाहिए ..."

२७ अक्तूबर। मास्को में व्यापारियों के सम्मेलन में स्वीकृत प्रस्ताव*:

"सम्मेलन ... का आग्रह है कि अस्थायी सरकार सेना में अविलंब निम्नलिखित क़दम उठाये :

"१. समस्त राजनीतिक प्रचार पर रोक लगाई जाये; यह ज़रूरी है कि सेना राजनीति से अलग रहे।

"२. राष्ट्र-विरोधी तथा अंतर्राष्ट्रीय विचारों और सिद्धांतों के प्रचार में सेना की आवश्यकता से इनकार किया जाता है और उससे अनुशासन को क्षति पहुंचती है। इसलिए ऐसे प्रचार की मनाही होनी चाहिये और सभी प्रचारकों को दंड देना चाहिये ...

"३. सैनिक समितियों का काम अनिवार्यतः एकमात्र आर्थिक प्रश्नों तक सीमित रखना चाहिये। उनके निर्णयों की पुष्टि उनके ऊपर के अधिकारियों द्वारा होनी चाहिये, जिन्हें किसी भी समय इन समितियों को भंग करने का अधिकार प्राप्त है ...

"४. सलामी की प्रथा पुनःस्थापित की जाये और उसे अनिवार्य बना दिया जाये। सज़ाओं की नज़रसानी के अधिकार के साथ पूरे अनुशासनिक अधिकार फिर से अफ़सरों को दिये जायें।

"५. अफ़सर कोर से उन सभी लोगों को बर्ख़ास्त किया जाये, जो आम सिपाहियों के आंदोलन में, जिससे उन्हें सरकशी की ही तालीम मिलती है, भाग लेकर कोर को लांछित करते हैं ... इस प्रयोजन के लिए प्रतिष्ठा न्यायालयों को पुनःस्थापित किया जाये ...

---

* नीचे जो सूत्र दिये गये हैं, उन्हें रीड ने अत्यंत संक्षिप्त रूप में तथा अनुवाद की अशुद्धियों के साथ प्रस्तुत किया है। इसके अतिरिक्त, तथ्य यह है कि यह प्रस्ताव व्यापारियों के एक सम्मेलन द्वारा नहीं, सार्वजनिक कार्यकर्ताओं के एक सम्मेलन द्वारा स्वीकृत किया गया था। – सं०

"६. अस्थायी सरकार को सेना में उन जनरलों तथा दूसरे अफ़सरों की बहाली को मुमकिन बनाने के लिए ज़रूरी कार्रवाइयां करनी चाहिए, जिन्हें समितियों तथा दूसरे ग़ैरज़िम्मेदार संगठनों के असर से अन्यायपूर्ण रूप से बर्ख़ास्त कर दिया गया है..."

दूसरे अध्याय की टिप्पणियां

१

कोर्नीलोव के विद्रोह का मेरी अगली पुस्तक 'कोर्नीलोव कांड से ब्रेस्त-लितोव्स्क की संधि तक' में विशद वर्णन किया गया है। कोर्नीलोव की कोशिश जिस परिस्थिति का परिणाम थी, उसके लिए केरेन्स्की की ज़िम्मेदारी अब काफ़ी स्पष्ट रूप से निश्चित हो चुकी है। केरेन्स्की के अनेक पक्षपोषक कहते हैं कि वह कोर्नीलोव की योजनाओं के बारे में जानते थे, और उन्होंने कुछ ऐसी चाल चली कि कोर्नीलोव असमय ही मैदान में उतर आये और पिट गये। श्री ए० जी० सैक तक ने अपनी पुस्तक, 'रूसी जनवाद का जन्म' में कहा है:

"कई बातें... प्रायः निश्चित हैं। पहली बात तो यह है कि केरेन्स्की को मालूम था कि कई दस्ते मोर्चे से पेत्रोग्राद की ओर आ रहे हैं, और यह संभव है कि प्रधान मंत्री तथा युद्ध-मंत्री की हैसियत से उन्होंने बढ़ते हुए बोल्शेविक ख़तरे को समझते हुए इन दस्तों को बुलाया हो..."

इस तर्क में एक ही दोष है, वह यह कि उस समय कोई "बोल्शेविक ख़तरा" नहीं था, क्योंकि सोवियतों के अंदर वे अभी भी निःसहाय अल्पमत की स्थिति में थे और उसके नेता जेलों में थे या फ़रार थे।

२

जनवादी सम्मेलन

जब जनवादी सम्मेलन का प्रस्ताव पहले पहल केरेन्स्की से किया गया, उन्होंने सुझाव दिया कि बैंकरों, कारख़ानेदारों, ज़मींदारों तथा कैडेट पार्टी के प्रतिनिधियों समेत राष्ट्र के सभी अंशकों की – उनके शब्दों में,

"जीवंत शक्तियों" की – सभा बुलायी जाये। सोवियत ने इस सुझाव को अस्वीकार कर दिया और सम्मेलन में प्रतिनिधित्व की निम्नलिखित तालिका तैयार की, जिसे केरेन्स्की ने मान लिया :

१०० प्रतिनिधि–मज़दूरों तथा सैनिकों के प्रतिनिधियों की अखिल रूसी सोवियतें
१००– किसानों के प्रतिनिधियों की अखिल रूसी सोवियतें
५०– मज़दूरों तथा सैनिकों की प्रांतीय सोवियतें
५०– किसानों की भूमि समितियां
१००– ट्रेड-यूनियनें
८४– मोर्चे की सैनिक समितियां
१५०– मज़दूरों तथा किसानों की सहकारी समितियां
२०– रेल मज़दूर यूनियन
१०– डाक-तार मज़दूर यूनियन
२०– वाणिज्य-कार्यालयों के क्लर्क
१५– उदार पेशों के लोग – डाक्टर, वकील, पत्रकार इत्यादि
५०– प्रांतीय ज़ेम्सत्वो
५९– राष्ट्रीय संगठन – पोल, उक्रइनी इत्यादि

यह अनुपात दो-तीन बार बदला गया। अंत में प्रतिनिधियों को निम्नलिखित रूप से बांटा गया :

३०० प्रतिनिधि – मज़दूरों, सैनिकों तथा किसानों के प्रतिनिधियों की अखिल रूसी सोवियतें
३०० – सहकारी समितियां
३०० – नगरपालिकायें
१५०– मोर्चे की सैनिक समितियां
१५०– प्रांतीय ज़ेम्सत्वो
२००– ट्रेड-यूनियनें
१००– राष्ट्रीय संगठन
२००– अनेक छोटे छोटे दल

३

सोवियतों का काम ख़त्म हो गया है

२८ सितंबर १९१७ को, **त्से-ई-काह** के मुखपत्र 'इज़्वेस्तिया' ने एक लेख प्रकाशित किया, जिसमें पिछले अस्थायी मंत्रिमंडल का ज़िक्र करते हुए कहा गया था:

"अन्ततोगत्वा एक सच्ची जनवादी सरकार को, जिसे रूसी जनता के सभी वर्गों के संकल्प ने जन्म दिया है, भावी संसदीय शासन-प्रणाली के पहले ढांचे को क़ायम किया गया है। हमारे आगे संविधान सभा है, जो बुनियादी क़ानूनों से संबंधित सभी प्रश्नों को हल करेगी, जो क़ानून मूलत: जनवादी होंगे। सोवियतों का काम ख़त्म हो गया है, और वह वक़्त नज़दीक आ रहा है, जब शेष क्रांतिकारी मशीनरी के साथ उन्हें एक स्वतंत्र तथा विजयी जनता के रंगमंच से प्रस्थान करना होगा, जिसके अस्त्र अब से राजनीतिक क्रिया के शांतिपूर्ण साधन होंगे।"

२५ अक्तूबर को 'इज़्वेस्तिया' के संपादकीय लेख का शीर्षक था: 'सोवियत संगठनों में संकट'। लेख के आरंभ में कहा गया था कि सफ़र से लौटे लोगों का कहना है कि स्थानीय सोवियतों की सरगर्मियां सर्वत्र कम हो रही हैं। "यह स्वाभाविक ही है," लेखक ने कहा। "कारण, जनता अधिक स्थायी विधानांगों में – नगर दूमाओं तथा **ज़ेम्सत्वोओं** में – दिलचस्पी लेने लगी है...

"पेत्रोग्राद तथा मास्को के महत्वपूर्ण केंद्रों में, जहां सोवियतें सब से अच्छी तरह संगठित हैं, उन्होंने सभी जनवादी अंशकों को अपने अंदर शामिल नहीं किया... अधिकांश बुद्धिजीवियों और अनेक मज़दूरों ने भी उनमें भाग नहीं लिया – कुछ मज़दूरों ने इसलिए भाग नहीं लिया कि वे राजनीतिक दृष्टि से पिछड़े हुए हैं और कुछ ने इसलिए कि उनके लिए उनकी अपनी यूनियनें ही आकर्षण का केंद्र हैं... हम इस बात से इनकार नहीं कर सकते कि ये संगठन जन-साधारण के साथ दृढ़ रूप से एकजुट हैं और उनकी रोज़मर्रा की ज़रूरतों को बेहतर तरीक़े से पूरा करते हैं...

"यह एक अत्यंत महत्वपूर्ण बात है कि स्थानीय जनवादी प्रशासन

प्रबल रूप से संगठित किये जा रहे हैं। नगर दूमायें सार्विक मतदान द्वारा चुनी जाती हैं और विशुद्ध स्थानीय मामलों में उन्हें सोवियतों से अधिक अधिकार प्राप्त है। एक भी जनवादी यह नहीं कहेगा कि इसमें कुछ भी अनुचित है...

"... नगरपालिकाओं के चुनाव सोवियतों के चुनावों से बेहतर और अधिक जनवादी रूप से संपन्न किये जा रहे हैं... नगरपालिकाओं में सभी वर्गों को प्रतिनिधित्व प्राप्त है... और जैसे ही स्थानीय स्वशासन ने नगरपालिकाओं में जीवन का संगठन करना शुरू किया, स्थानीय सोवियतों की भूमिका स्वाभावतः समाप्त हो जायेगी...

"...सोवियतों में दिलचस्पी कम होने के दो कारण हैं। हम कह सकते हैं कि पहला कारण जन-साधारण में राजनीतिक दिलचस्पी का कम होना है; नये रूस के निर्माण का संगठन करने के लिए प्रांतीय तथा स्थानीय प्रशासन निकायों की बढ़ती हुई कोशिशें दूसरा कारण हैं... इस दूसरी दिशा में प्रवृत्ति जितना ही ज़ोर पकड़ती है, उतनी ही जल्दी सोवियतों का महत्व समाप्त हो जाता है...

"ख़ुद हमारे लिए कहा जा रहा है कि हम अपने ही संगठन के 'ताबूतबरदार' हैं। वास्तव में हम ख़ुद नये रूस के निर्माण में सबसे अधिक परिश्रम करनेवाले कार्यकर्ता हैं...

"जब निरंकुश शासन तथा समूचा नौकरशाही निज़ाम ध्वस्त हुआ, हमने अस्थायी बारकों के रूप में सोवियतों की स्थापना की, जहां समस्त जनवाद पनाह ले सकता था। परंतु अब हम बारिकों की जगह एक नयी व्यवस्था के स्थायी भवन का निर्माण कर रहे हैं और जनता स्वाभावतः धीरे धीरे बारिकों को छोड़ कर अधिक सुविधापूर्ण आवास को ग्रहण करती रही है।"

४

रूसी जनतंत्र की परिषद् में त्रोत्स्की का भाषण*

"**त्से-ई-काह** द्वारा बुलाये गये जनवादी सम्मेलन का उद्देश्य अनुत्तरदायी,

---

* यह त्रोत्स्की का भाषण नहीं, बल्कि बोल्शेविक दल की एक घोषणा है, जिसे त्रोत्स्की ने जनतन्त्र की परिषद् में २० अक्तूबर, १९१७ को पढ़ा था। – सं०

वैयक्तिक प्रकार के शासन को, जिसने कोर्नीलोव को जन्म दिया, समाप्त करना और एक उत्तरदायी सरकार की स्थापना करना था, जो युद्ध का अंत करने में समर्थ होगी और नियत समय पर संविधान सभा का बुलाया जाना सुनिश्चित बनायेगी। इस बीच, जनवादी सम्मेलन के पीठ पीछे, धोखा और फ़रेब के ज़रिए, नागरिक केरेन्स्की, कैडेटों तथा मेन्शेविक और समाजवादी-क्रांतिकारी पार्टियों के नेताओं के बीच सौदेबाज़ी के ज़रिए, हमें आधिकारिक रूप से घोषित उद्देश्य से उल्टे ही परिणाम प्राप्त हुए। एक ऐसी सत्ता की स्थापना की गयी, जिसके गिर्द और जिसके अंदर कोर्नीलोव जैसे आदमी प्रत्यक्ष अथवा प्रच्छन्न रूप से नेतृत्वकारी भूमिका अदा कर रहे हैं। अब यह घोषणा की जाती है कि रूसी जनतंत्र की परिषद् **परामर्शदात्री** सभा होगी, तब इसका अर्थ यह है कि सरकार के अनुत्तरदायित्व की आधिकारिक रूप से घोषणा की जाती है। क्रांति के आठवें महीने में यह अनुत्तरदायी सरकार बुलीगिन दूमा के इस नये संस्करण के रूप में अपने लिए एक नयी आड़ तैयार करती है।

"मिल्की वर्गों के लोग इस अस्थायी परिषद् में जिस अनुपात में शामिल हुए हैं, उससे, देशव्यापी चुनावों को देखते हुए, साफ़ पता चलता है कि उनमें बहुतों को यहां होने का बिल्कुल कोई हक़ नहीं है। इसके बावजूद कैडेट पार्टी ने, जो कल तक चाहती थी कि अस्थायी सरकार राजकीय दूमा के प्रति उत्तरदायी हो, इसी कैडेट पार्टी ने सरकार को जनतंत्र की परिषद् से स्वतंत्र बना दिया। इसमें संदेह नहीं कि संविधान सभा में मिल्की वर्गों की स्थिति उतनी सुविधापूर्ण न होगी, जितनी कि इस परिषद् में है, और वे संविधान सभा के प्रति अनुत्तरदायी नहीं रह सकेंगे।

"यदि मिल्की वर्ग आज से छः हफ्ते बाद संयोजित होनेवाली संविधान सभा के लिए सचमुच तैयारी करते होते, तो इस समय सरकार के अनुत्तरदायित्व को स्थापित करने का कोई कारण नहीं था। पूरी सचाई यह है कि अस्थायी सरकार की नीतियों का निर्देश करने वाला पूंजीपति वर्ग संविधान सभा को छिन्न-भिन्न करने का उद्देश्य रखता है। इस समय मिल्की वर्गों का, जो हमारी समूची राष्ट्रीय नीति को, चाहे वह विदेश नीति हो

या गृह नीति, नियंत्रित करते हैं, यही मुख्य उद्देश्य है। उद्योग, कृषि तथा संभरण के क्षेत्र में, सरकार के साथ मिलकर काम करने वाले मिल्की वर्गों की राजनीति युद्धजनित स्वाभाविक विशृंखलता को और भी बढ़ा रही है। मिल्की वर्ग, जो किसान-विद्रोह भड़का रहे हैं, मिल्की वर्ग, जो गृहयुद्ध भड़का रहे हैं, खुल्लमखुल्ला अकाल की विभीषिका के आसरे अपनी नीति चला रहे हैं। वे अकाल और भुखमरी के ज़रिए क्रांति को उलट देने और संविधान सभा की संभावना को समाप्त कर देने का इरादा रखते हैं।

"पूंजीपति वर्ग और उसकी सरकार की अंतर्राष्ट्रीय नीति कम अपराधपूर्ण नहीं है। चालीस महीनों की लड़ाई के बाद राजधानी के लिए सांघातिक ख़तरा उत्पन्न हो गया है। इस ख़तरे का मुक़ाबला करने के लिये सरकार को मास्को में स्थानांतरित करने की योजना बनायी गयी है। राजधानी को छोड़ देने का विचार पूंजीपति वर्ग के अंदर ग़ुस्सा पैदा नहीं करता। उल्टे, उसे प्रतिक्रांतिकारी षड्यंत्र को अग्रसर करने के लिए आकल्पित सामान्य नीति के स्वाभाविक अंग के रूप में ग्रहण किया जाता है... यह मान लेने के बजाय कि देश का निस्तार शांति संपन्न करने में है, कूटनीतिज्ञों तथा साम्राज्यवादियों की उपेक्षा कर सभी थके-मांदे जनों के सामने अविलंब शांति-संधि का विचार खुल्लमखुल्ला रखने तथा इस तरह युद्ध का चलाया जाना असंभव बनाने के बजाय, अस्थायी सरकार, कैडेट प्रतिक्रांतिकारियों और मित्र-राष्ट्रों के साम्राज्यवादियों के हुक्म पर इस हत्यारे युद्ध को निर्बुद्धि, निष्प्रयोजन तथा योजनाहीन रूप से लंबा खींचती जा रही है, और इस प्रकार लाखों सिपाहियों और मल्लाहों को निरर्थक ही मौत के मुंह में डाल रही है तथा पेत्रोग्राद का समर्पण करने और क्रांति का ध्वंस करने की तैयारी कर रही है। एक ऐसे वक़्त, जब दूसरों की ग़लतियों और अपराधों के फलस्वरूप दूसरे सिपाहियों और मल्लाहों के साथ बोल्शेविक सिपाही और मल्लाह भी अपने प्राणों की आहुति दे रहे हैं, तथाकथित मुख्य सेनापति (केरेन्स्की) ने बोल्शेविक अख़बारों का दमन जारी रखा है। परिषद् की प्रमुख पार्टियां स्वेच्छा से इन नीतियों को आड़ दे रही हैं।

"हम सामाजिक-जनवादी पार्टी के बोल्शेविक दल के लोग घोषणा

करते हैं कि जनता के साथ ग़द्दारी करने वाली इस सरकार के साथ* हमारा कहीं भी मेल नहीं है। सरकार की आड़ में जनता के ये हत्यारे जो काम कर रहे हैं, उसके साथ हमारा कहीं भी मेल नहीं है। हम इस काम पर एक दिन के लिए भी प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से पर्दा डालने से इनकार करते हैं। ऐसे वक़्त, जब विल्हेल्म की सेनाओं ने पेत्रोग्राद को ख़तरे में डाल दिया है, केरेन्स्की और कोनोवालोव की सरकार पेत्रोग्राद से भागने और मास्को को प्रतिक्रांति का गढ़ बनाने की तैयारी कर रही है!

"हम मास्को के मज़दूरों और सिपाहियों को चेतावनी देते हैं कि वे चौकन्ने रहें। इस परिषद् का परित्याग करते समय हम पूरे रूस के मज़दूरों, किसानों और सिपाहियों की जवांमर्दी और दानिशमंदी का भरोसा करते हुए उनसे अपील करते हैं। पेत्रोग्राद ख़तरे में है! क्रांति ख़तरे में है! सरकार ने इस ख़तरे को बढ़ा दिया है—शासक वर्गों ने उसे और उग्र बना दिया है। इस समय जनता ही स्वयं अपने को और देश को बचा सकती है।

"हम जनता से अपील करते हैं। तत्काल, सच्ची, जनवादी शांति—ज़िंदाबाद! समस्त सत्ता सोवियतों के हाथ में! समस्त भूमि जनता के हाथ में! संविधान सभा—ज़िंदाबाद!"

५

स्कोबेलेव को दिया गया "नकाज़"

(सारांश)

(**त्से-ई-काह** द्वारा स्वीकृत तथा स्कोबेलेव को पेरिस-सम्मेलन में रूस के क्रांतिकारी जनवाद के प्रतिनिधि के लिए निर्देश के रूप में दिया गया।)

**यह आवश्यक है कि शांति-संधि निम्नलिखित सिद्धांत पर आधारित

---

* यहां जॉन रीड ने ये शब्द छोड़ दिये हैं: "प्रतिक्रांति को शह देने वाली इस परिषद् के साथ"। —सं०

** यहां जॉन रीड ने ये शब्द छोड़ दिये हैं: "यह आवश्यक है कि, जहां तक युद्ध के उद्देश्यों का सम्बन्ध है, नयी संधि को सार्वजनिक रूप से घोषित किया जाये।" —सं०

हो : "संयोजन न किये जायें, हरजाने न लिये जायें, जातियों को आत्म-निर्णय का अधिकार दिया जाये।"

प्रादेशिक समस्यायें

(१) आक्रांत रूस से जर्मन सेनायें हटायी जायें। पोलैंड, लिथुआनिया तथा लाटविया के लिए आत्म-निर्णय का पूर्ण अधिकार।

(२) तुर्की आर्मेनिया के लिए स्वायत्त शासन और बाद में, जैसे ही स्थानीय सरकारें स्थापित होती हैं, पूर्ण आत्म-निर्णय का अधिकार।

(३) एलसस – लारें का प्रश्न सभी विदेशी सेनाओं की वापसी के बाद जनमत-संग्रह द्वारा हल किया जाये।

(४) बेल्जियम की बहाली। एक अंतर्राष्ट्रीय कोष द्वारा क्षतिपूर्ति।

(५) सर्बिया तथा मान्टेनेग्रो की बहाली और उनकी एक अंतर्राष्ट्रीय सहायता कोष द्वारा सहायता। सर्बिया के लिए एड्रियाटिक सागर में निर्गममार्ग। बोसनिया और हर्ज़ेगोविना को स्वायत्त अधिकार।

(६) बाल्कन-प्रदेश के वे प्रांत, जिनके बारे में झगड़ा है, अस्थायी काल के लिए स्वायत्त होंगे और बाद में वहां जनमत-संग्रह किया जायेगा।

(७) रूमानिया की बहाली, लेकिन वह दोब्रुजा को पूर्ण आत्म-निर्णय का अधिकार देने के लिए बाध्य होगा ... रूमानिया को बर्लिन संधि की उन धाराओं का, जिनका संबंध यहूदियों से है, पालन करने के लिए और उन्हें पूर्णाधिकार प्राप्त रूमानियाई नागरिक मानने के लिए बाध्य करना होगा।

(८) आस्ट्रिया के इतालवी क्षेत्रों में अस्थायी काल के लिए स्वायत्त शासन, पश्चात् राज्य की स्थिति को निश्चित करने के लिए जनमत-संग्रह।

(९) जर्मन उपनिवेश लौटाये जायें।

(१०) यूनान तथा फ़ारस की बहाली।

नौचालन-स्वतन्त्रता

जिन जल-संधियों की निकासी अंतर्देशीय समुद्रों में है, उनका तथा स्वेज़ और पनामा नहरों का तटस्थीकरण। वाणिज्य-नौचालन निर्बाध

होगा। निजी युद्धपोतों के उपयोग का अधिकार रद्द किया जायेगा। वाणिज्य पोतों पर तारपीडो चलाने की मनाही की जायेगी।

हरजाने

सभी योधी प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष किसी भी प्रकार के हरजाने की, जैसे उदाहरण के किसी क़ैदियों के निर्वाह के लिए ख़र्च की, मांगों का परित्याग करेंगे। युद्ध-काल में जो हरजाने या जंगी महसूल वसूल किये गये हैं, वे अनिवार्यतः लौटाये जायेंगे।

आर्थिक शर्तें

वाणिज्य-संधियां शांति की शर्तों के अंग नहीं होंगी। यह आवश्यक है कि प्रत्येक देश अपने वाणिज्य-संबंधों के मामलों में स्वतंत्र रहे, और शांति-संधि द्वारा उसे न कोई आर्थिक संधि करने के लिए विवश किया जाये न रोका जाये। इसके बावजूद शांति-संधि के अंतर्गत सभी राष्ट्रों को यह बंधन स्वीकार करना चाहिए कि वे युद्ध के पश्चात् आर्थिक नाकेबंदी नहीं करेंगे, न ही पृथक् टैरिफ़ क़रार करेंगे। यह आवश्यक है कि परममित्र राष्ट्र-अधिकार बिना किसी भेदभाव के सभी देशों को दिया जाये।

शांति की गारंटियां

शांति-सम्मेलन में प्रत्येक देश की राष्ट्रीय प्रतिनिधि-संस्थाओं द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधि शांति-संधि संपन्न करेंगे। शांति-संधि की शर्तें संसदों द्वारा अनुसमर्थित की जायेंगी।

गुप्त कूटनीति का अंत किया जायेगा; सभी पक्ष इसके लिए वचनबद्ध होंगे कि वे कोई भी गुप्त संधि संपन्न नहीं करेंगे। ऐसी संधियां अंतर्राष्ट्रीय कानून के खिलाफ़ और लिहाज़ा बातिल घोषित की जाती हैं। सभी संधियां, जब तक कि विभिन्न राष्ट्रों के संसद उनका अनुसमर्थन न कर लें, बातिल समझी जायेंगी।

भूमि तथा समुद्र दोनों पर क्रमिक निरस्त्रीकरण तथा एक मिलिशिया-व्यवस्था की स्थापना। प्रेज़िडेंट विलसन ने जिस "राष्ट्र-संघ" (लीग आफ़ नेशन्स) का सुझाव दिया है, वह अंतर्राष्ट्रीय क़ानून का एक महत्त्वपूर्ण साधन हो सकता है, बशर्ते कि (क) उसमें सभी राष्ट्रों का समान अधिकारों के साथ भाग लेना अनिवार्य हो, और (ख) अंतर्राष्ट्रीय राजनीति को जनवादी रूप दिया जाये।

शांति के मार्ग

मित्र-राष्ट्र अविलंब घोषणा करें कि वे, जैसे ही शत्रु-शक्तियां समस्त बलात् संयोजनों का परित्याग करने के लिए अपनी सहमति प्रगट करें, शांति-वार्ता आरंभ करने के लिए प्रस्तुत हैं।

यह आवश्यक है कि मित्र-राष्ट्र यह इक़रार करें कि वे एक आम शांति-सम्मेलन, जिसमें सभी तटस्थ देशों के प्रतिनिधि शामिल होंगे, से बाहर न कोई शांति-वार्ता करेंगे, न शांति-संधि संपन्न करेंगे।

स्टाकहोम समाजवादी सम्मेलन के रास्ते से सभी अड़चनें दूर कर दी जायेंगी, और जो पार्टियां या संगठन उसमें भाग लेना चाहते हैं, उनके सभी प्रतिनिधियों को अविलंब पासपोर्ट दिये जायेंगे।

(किसानों की सोवियतों की कार्यकारिणी समिति ने भी एक **नकाज़** जारी किया, जो उपरोक्त **नकाज़** से विशेष भिन्न नहीं है।)

६

रूस को बलि चढ़ा कर शांति

आस्ट्रिया द्वारा फ़्रांस से शांति का प्रस्ताव किये जाने के बारे में रिबो* का भंडाफोड़; १९१७ की गर्मियों में बर्न, स्विट्ज़रलैंड में हुआ तथाकथित "शांति-सम्मेलन", जिसमें सभी युद्धरत देशों के प्रतिनिधियों

* **अलेक्सान्द्र फ़ेलिक्स जोज़ेफ़ रिबो** फ़्रांस के एक राजनीतिक नेता थे, जो १९१७ में फ़्रांस के प्रधान मंत्री बने। – सं०

ने, जो इन सभी देशों के वृहत् वित्तीय स्वार्थों का प्रतिनिधित्व करते थे, भाग लिया था; और एक अंग्रेज़ प्रणिधि द्वारा बुल्गारियाई चर्च के एक उच्च पदाधिकारी के साथ वार्ता का प्रयत्न – ये सब बातें इस तथ्य की ओर निर्देश करती थीं कि दोनों ओर रूस को बलि चढ़ा कर शांति संपन्न करने के पक्ष में प्रबल प्रवृत्ति थी। मैं अपनी अगली पुस्तक 'कोर्नीलोव कांड से ब्रेस्त-लितोव्स्क की संधि तक' में इस मामले की तफ़सील से चर्चा करने और पेत्रोग्राद में विदेश मंत्रालय में पायी जानेवाली कई गुप्त दस्तावेज़ों को प्रकाशित करने का इरादा रखता हूं।

७

फ़्रांस में रूसी सिपाही

अस्थायी सरकार की आधिकारिक रिपोर्ट *

"जिस समय रूसी क्रांति की ख़बर पेरिस पहुंची, उसी समय से अत्यंत उग्र प्रवृत्ति रखने वाले रूसी अख़बार वहां से निकलने लगे, और आम सिपाहियों के बीच में ये अख़बार बेरोकटोक बंटने लगे और कितने ही आदमी उनके बीच आज़ादी से घूमने-फिरने लगे, बोल्शेविक प्रचार करने लगे और अक्सर फ़्रांसीसी पत्रिकाओं में छपनेवाली झूठी ख़बरें फैलाने लगे। आधिकारिक समाचारों के और यथातथ्य विवरण के अभाव में इस प्रचार-आंदोलन ने सिपाहियों के बीच असंतोष भड़का दिया। फलतः वे रूस लौटने की इच्छा करने लगे और अपने अफ़सरों को घृणा की दृष्टि से देखने लगे।

"अन्ततः इस असंतोष ने विद्रोह का रूप ले लिया। अपनी एक मीटिंग में सिपाहियों ने कवायद करने से इनकार कर देने के लिए अपील जारी की, क्योंकि उन्होंने यह फ़ैसला कर लिया था कि अब वे लड़ेंगे

---

* जॉन रीड ने अपने अनुवाद में मूल रिपोर्ट को किंचित् संक्षिप्त तथा परिवर्तित रूप में प्रस्तुत किया है। – सं०

नहीं। सरकश सिपाहियों को दूसरे सिपाहियों से अलहदा करने का फ़ैसला किया गया और जनरल ज़ान्केविच ने अस्थायी सरकार के प्रति वफ़ादार सभी सिपाहियों को हुक्म दिया कि वे कुर्तीन के शिविर को छोड़ दें और अपने साथ सारा गोला-बारूद लेते जायें। २५ जून को इस हुक्म की तामील की गयी। शिविर में वे ही सिपाही रह गये, जिन्होंने कहा कि वे "कुछ शर्तों पर" ही अस्थायी सरकार की अधीनता स्वीकार कर सकते हैं। शिविर के सिपाहियों से मिलने के लिए कई बार विदेशों में रूसी सेनाओं के मुख्य सेनापति, युद्ध-मंत्रालय के कमिसार राप, और उन पर अपना प्रभाव डालने के लिए इच्छुक अनेक जाने-माने भूतपूर्व उत्प्रवासी वहां आये, लेकिन ये कोशिशें बेकार गयीं, और अंत में कमिसार राप ने आग्रह किया कि विद्रोही सैनिक अपने हथियार रख दें और अपनी अधीनता प्रगट करने के लिए क्लोरावो नामक स्थान में सुव्यवस्थित रूप में मार्च करें। इस आज्ञा का केवल आंशिक रूप से पालन किया गया; सबसे पहले ५०० सिपाही निकले, जिनमें २२ को गिरफ़्तार कर लिया गया। चौबीस घंटे बाद क़रीब ६००० सिपाहियों ने उनका अनुगमन किया... क़रीब २००० रह गये...

"शिकंजा और कसने का फ़ैसला किया गया; विद्रोहियों के राशन घटा दिये गये, उनकी तनख़ाहें रोक ली गयीं और अक्कुर्तीन शहर जानेवाली सड़कों पर फ़्रांसीसी सिपाहियों का पहरा बैठा दिया गया। जनरल ज़ान्केविच को जब यह मालूम हुआ कि एक रूसी तोपख़ाना ब्रिगेड फ़्रांस से गुज़र रहा है, उन्होंने फ़ैसला किया कि विद्रोहियों को क़ाबू में लाने के लिए पैदल सैनिकों तथा तोपख़ाने की एक मिली-जुली टुकड़ी क़ायम की जाये। विद्रोहियों के पास एक शिष्टमंडल भेजा गया, जो चंद घंटे बाद यह विश्वास लेकर लौट आया कि उनसे बातचीत करना फ़ज़ूल है। १ सितंबर को जनरल ज़ान्केविच ने विद्रोहियों को अल्टीमेटम देते हुए मांग की कि वे अपने हथियार डाल दें, और उन्हें धमकी दी कि अगर उन्होंने ३ सितंबर को दस बजे तक इस हुक्म की तामील नहीं की, तो उन पर तोपख़ाने द्वारा गोलाबारी शुरू कर दी जायेगी।

"इस हुक्म की तामील नहीं हुई, लिहाज़ा नियत समय पर उस स्थान पर हल्की गोलाबारी शुरू की गयी। अठारह गोले दाग़े गये और

विद्रोहियों को चेतावनी दी गयी कि गोलाबारी तेज़तर कर दी जायेगी। ३ सितंबर की रात को १६० सिपाहियों ने हथियार डाल दिये। ४ सितंबर को गोलाबारी फिर शुरू की गयी और ३६ गोले दाग़े जाने के बाद ११ बजे विद्रोहियों ने दो सफ़ेद झंडियां दिखायीं और निहत्थे शिविर से बाहर निकलने लगे। शाम होते होते ८३०० सिपाहियों ने समर्पण कर दिया। उस रात १५० सिपाहियों ने, जो शिविर में रह गये थे, मशीनगनों से गोलियां चलानी शुरू कीं। ५ सितंबर को मामले को ख़त्म करने की गरज़ से शिविर पर भारी गोलाबारी की गयी और हमारे सिपाहियों ने इंच-इंच करके उस पर क़ब्ज़ा कर लिया। विद्रोही सैनिक अपनी मशीनगनों से धुआंधार गोलियां चलाते रहे। ६ सितंबर को ६ बजे शिविर पर पूरी तरह क़ब्ज़ा कर लिया गया... विद्रोहियों को निहत्था करने के बाद ८१ गिरफ़्तारियां की गयीं..."

यह तो थी रिपोर्ट। परंतु विदेश मंत्रालय में मिली गुप्त दस्तावेज़ों से हम जानते हैं कि यह वर्णन सर्वथा सही नहीं है। सबसे पहले गड़बड़ी तब शुरू हुई, जब सिपाहियों ने अपनी समितियां बनाने की कोशिश की– जैसा कि रूस में उनके साथी कर रहे थे। उन्होंने मांग की उन्हें वापिस रूस भेजा जाये। इस मांग को ठुकरा दिया गया। और फिर फ़्रांस में उनके असर को ख़तरनाक समझ कर उन्हें सलोनिकी जाने का हुक्म दिया गया। उन्होंने वहां जाने से इनकार किया और लड़ाई शुरू हो गयी... पता यह चला कि बग़ावत पर उतारू होने से पहले उन्हें एक शिविर में बग़ैर अफ़सरों के दो महीने तक छोड़ दिया गया था और उनके साथ बुरा सलूक किया गया था। जिस "रूसी तोपख़ाना ब्रिगेड" ने उसके ऊपर गोलाबारी की थी, उसके नाम का पता चलाने की सारी कोशिशें बेकार हुईं; मंत्रालय में जो तार मिले, उनमे यह नतीजा निकाला जा सकता है कि फ़्रांसीसी तोपख़ाने का इस्तेमाल किया गया था...

[illegible] [illegible] के बाद दो सौ से ज्यादा बाग़ियों को बड़ी बेदर्दी से बंदूकों का निशाना बनाया गया।

तेरेश्चेन्को का भाषण

(सारांश)

"...विदेश नीति के प्रश्न राष्ट्रीय रक्षा के प्रश्नों के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं... और इसलिए यदि आप समझते हैं कि राष्ट्रीय रक्षा के प्रश्नों के बारे में गुप्त अधिवेशन करना आवश्यक है, तो अपनी विदेश नीति के मामले में भी हमें कभी कभी वैसी ही गोपनीयता बरतनी पड़ती है...

"जर्मन कूटनीति जनमत को प्रभावित करने का प्रयास करती है... इसलिए विशाल जनवादी संगठनों के जो नेता एक क्रांतिकारी कांग्रेस के बारे में और अपर शीत-अभियान की असाध्यता के बारे में उच्च स्वर में बात करते हैं, उनके बयान ख़तरनाक हैं... ये सारे बयान बड़े महंगे पड़ते हैं – उनका मोल कितनी ही ज़िंदगियों से चुकाना पड़ता है...

"मैं राज्य के सम्मान और प्रतिष्ठा के प्रश्नों को उठाये बिना केवल शासकीय तर्क की बात करना चाहता हूं। तर्क की दृष्टि से रूस की विदेश नीति रूस के **हितों** की सच्ची समझ पर आधारित होनी चाहिए... इन हितों का अर्थ यह है कि यह असंभव है कि हमारा देश अकेला रहे और यह कि इस समय हमारे साथ शक्तियों का (मित्र-राष्ट्रों का) जो संयोजन है, वह संतोषजनक है ... समस्त मानवजाति शांति की कामना करती है, परंतु रूस में कोई भी ऐसी अपमानपूर्ण शांति-संधि की इजाज़त नहीं दे सकता, जो हमारी पितृभूमि के राजकीय हितों का उल्लंघन करती हो!"

भाषणकर्ता ने कहा कि ऐसी शांति-संधि सदियों नहीं तो लंबे वर्षों तक ज़रूर ही संसार में जनवादी सिद्धांतों की विजय में बाधक होगी और अनिवार्यतः नये युद्धों को जन्म देगी।

"मई के दिनों की बात किसी को भूली न होगी, जब हमारे मोर्चे पर ऐसा भाईचारा पैदा हुआ कि उससे सैनिक गतिविधि के ठप हो जाने और इस सहज रूप से लड़ाई के बंद हो जाने और एक शर्मनाक पृथक् शांतिसंधि की दिशा में देश के जाने का ख़तरा पैदा हो गया...

मोर्चे पर आम सिपाहियों को यह समझाने के लिए कि रूसी राज्य इस तरीक़े से हरगिज़ युद्ध को समाप्त और अपने हितों को सुनिश्चित नहीं कर सकता, कितनी कोशिशें करनी पड़ीं..."

उन्होंने आगे कहा कि जुलाई के हमले का कैसा जादुई असर हुआ था, उसने विदेशों में रूसी राजदूतों के शब्दों में कितनी शक्ति भर दी थी और रूस की जीतों से जर्मनी में कितनी निराशा फैल गयी थी, और फिर रूस की पराजय से मित्र-राष्ट्रों का भ्रम किस प्रकार टूट गया था...

"जहां तक रूसी सरकार का सवाल है, उसने मई के सूत्र, 'न संयोजन किये जायें, न ताज़ीरी हरजाने लिये जायें' का अविचल भाव से समर्थन किया। हम जातियों के आत्म-निर्णय के अधिकार की ही नहीं, बल्कि साम्राज्यवादी लक्ष्यों के परित्याग की भी घोषणा करना आवश्यक समझते हैं..."

जर्मनी शांति स्थापित करने की लगातार कोशिश कर रहा है। वहां बस एक ही चीज़ की चर्चा है – शांति की। जर्मनी को मालूम है कि वह जीत नहीं सकता।

"मैं उन आलोचनाओं को मानने से इनकार करता हूं, जो सरकार को लक्ष्य करके की जाती हैं और जिनमें कहा जाता है कि रूस की विदेश नीति युद्ध के लक्ष्यों को यथेष्ट रूप से प्रगट नहीं करती...

"अगर यह सवाल उठाया जाता है कि मित्र-राष्ट्र किन लक्ष्यों का अनुसरण कर रहे हैं, तो सबसे पहले यह पूछना ज़रूरी है कि मध्य यूरोपीय शक्तियां किन उद्देश्यों के बारे में एकमत हुई हैं...

"बहुधा यह इच्छा प्रगट की जाती है कि हम उन संधियों के विवरण प्रकाशित करें, जो मित्र-राष्ट्रों को एक सूत्र में बांधती हैं, परंतु लोग इस बात को भूल जाते हैं कि हम अभी तक यह नहीं जानते कि मध्य यूरोपीय शक्तियां किन संधियों से बंधी हुई हैं..."

उन्होंने कहा कि जर्मनी प्रत्यक्षतः यह चाहता है कि बीच में अनेक दुर्बल राज्यों को स्थापित करके रूस को पश्चिम से अलहदा कर दे।

"रूस के प्राणमूलक हितों पर प्रहार करने की इस प्रवृत्ति को रोकना होगा..."

"क्या रूसी जनवादी अंशक, जिन्होंने अपने फरहरे पर राष्ट्रों के अपना फ़ैसला अपने-आप करने के अधिकारों को अंकित किया है, चुपचाप बैठे आस्ट्रिया-हंगरी द्वारा सर्वाधिक सभ्य जनों का उत्पीड़न होते रहने देंगे?

"जिन लोगों को यह भय है कि मित्र-राष्ट्र हमारी कठिन परिस्थिति से फ़ायदा उठा कर हमारे ऊपर लड़ाई का हमारे हिस्से से ज़्यादा बोझ डाल देने की कोशिश करेंगे और हमारी क़ीमत पर शांति-संधि के प्रश्नों को हल करेंगे, वे भयंकर भूल कर रहे हैं... हमारे दुश्मन की निगाह में रूस उसके माल के लिए एक बाज़ार है। लड़ाई ख़त्म होने पर हम बहुत कमज़ोर हालत में होंगे और जर्मनी का माल हमारी खुली सरहदों से पहुंच कर हमारे बाज़ारों को इस बुरी तरह पाट देगा कि बरसों के लिए हमारा औद्योगिक विकास सहज ही रुक सकता है। इस संभावना से बचाव के लिए कार्रवाइयां करनी होंगी।

"मैं साफ़ साफ़ बिना छिपाव-दुराव के कहता हूं: शक्तियों का जो संयोजन हमें मित्र-राष्ट्रों के साथ एकजुट करता है, वह **रूस के हितों के अनुकूल है**... इसलिए यह महत्त्वपूर्ण है कि युद्ध तथा शांति के प्रश्नों के बारे में हमारे विचार मित्र-राष्ट्रों के विचारों के साथ यथासंभव स्पष्ट तथा पूर्ण रूप से मेल खायें... किसी भी तरह की ग़लतफ़हमी न होने पाये, इस ख़याल से मुझे साफ़ साफ़ कहना होगा कि पेरिस-सम्मेलन में रूस को **एक ही दृष्टिकोण** उपस्थित करना होगा..."

वह स्कोबेलेव को दिये गये **नकाज़** के विषय में टीका करना नहीं चाहते थे, परन्तु उन्होंने स्टाकहोम में सद्यः प्रकाशित डच-स्कैंडिनेवियाई समिति के घोषणापत्र का ज़िक्र किया, जिसमें लिथुआनिया तथा लाटविया की स्वायत्तता का पक्ष-ग्रहण किया गया था। "परंतु, यह स्पष्टतः असंभव है," तेरेश्चेन्को ने कहा, "क्योंकि यह आवश्यक है कि रूस के पास बाल्टिक सागर तट पर पूरे साल चालू रहने वाले उन्मुक्त पत्तन हों...

"इस प्रश्न के संबंध में विदेश नीति की समस्यायें आंतरिक राजनीति से घनिष्ठ रूप से सम्बद्ध हैं, क्योंकि यदि समस्त वृहत् रूस की एकता की शक्तिशाली भावना का अभाव न होता, तो आप सर्वत्र विभिन्न जनों की केंद्रीय सरकार से पृथक् होने की इच्छा का बारम्बार प्रदर्शन न

देखते ... इस प्रकार का बिलगाव रूस के हितों के प्रतिकूल है और रूसी प्रतिनिधि इसका समर्थन नहीं कर सकते ..."

९

ब्रिटिश बेड़ा (वग़ैरह)

रीगा की खाड़ी में समुद्री लड़ाई के वक़्त बोल्शेविकों का ही नहीं, अस्थायी सरकार के मंत्रियों का भी ख़्याल था कि ब्रिटिश बेड़े ने जान-बूझ कर बाल्टिक सागर को छोड़ दिया है और इस प्रकार उस दृष्टिकोण को प्रगट किया है, जो अक्सर सार्वजनिक रूप से ब्रिटिश अख़बारों द्वारा तथा अर्ध-सार्वजनिक रूप से रूस में ब्रिटिश प्रतिनिधियों द्वारा इन शब्दों में व्यक्त किया जाता है, "रूस ख़त्म हो चुका है! रूस के बारे में फ़िक्र करने से कोई फ़ायदा नहीं!"

देखिये केरेन्स्की के साथ मुलाक़ात (टिप्पणी १३)।

जनरल गुर्को ज़ार के तहत रूसी सेनाओं के स्टाफ़-अध्यक्ष थे। वह भ्रष्ट शाही दरबार की एक बड़ी हस्ती थे। क्रांति के पश्चात् वह उन इने-गिने आदमियों में थे, जिन्हें उनकी राजनीतिक तथा वैयक्तिक करतूतों के लिए देशनिकाला दिया गया था। जिस समय रीगा की खाड़ी में रूसी बेड़े की पराजय हुई, उसी समय लंदन में सम्राट जार्ज ने जनरल गुर्को का सार्वजनिक रूप से स्वागत किया, उस आदमी का स्वागत किया जिसे रूस की अस्थायी सरकार जर्मनों का ख़तरनाक हितैषी तथा साथ ही प्रतिक्रियावादी भी समझती थी!

१०

विद्रोह के ख़िलाफ़ अपीलें

मज़दूरों और सिपाहियों के नाम

"साथियो! यमदूती शक्तियां पेत्रोग्राद तथा दूसरे नगरों में **दंगा और फ़साद** कराने की अधिकाधिक कोशिश कर रही हैं। यमदूती

शक्तियों के लिये फ़साद ज़रूरी है, क्योंकि उससे इन्हें क्रांतिकारी आंदोलन को खून में डुबो देने का मौक़ा मिलेगा। शांति और सुव्यवस्था स्थापित करने तथा नगरवासियों की रक्षा करने के बहाने वे कोर्नीलोव का आधिपत्य जमाने की आशा करते हैं, जिसे दबाने में थोड़े ही दिन पहले क्रांतिकारी जनता सफल हुई थी। अगर ये उम्मीदें पूरी होती हैं, तो फिर जनता का बेड़ा ग़र्क़ समझिये! विजयी प्रतिक्रांति सोवियतों तथा सैनिक समितियों को मटियामेट करके छोड़ेगी, संविधान सभा को छिन्न-भिन्न कर देगी, भूमि समितियों के हाथों में भूमि के अंतरण को रोक देगी, शीघ्र शांति स्थापित होने के बारे में जनता की आशाओं पर पानी फेर देगी और सभी जेलों को क्रांतिकारी सिपाहियों और मज़दूरों से भर देगी।

"खाद्य-संभरण के विसंगठन, युद्ध के जारी रहने तथा जीवन की सामान्य कठिनाइयों के कारण जनता के अप्रबुद्ध भाग में जो गंभीर असंतोष फैला हुआ है, प्रतिक्रांतिकारी तथा यमदूत-सभाई अपने हिसाब में उसका भरोसा करते हैं। वे सिपाहियों और मज़दूरों के प्रत्येक प्रदर्शन को दंगे की शक्ल देने की उम्मीद करते हैं, जिससे शांतिपूर्ण जनता घबरा जाये और शांति तथा सुव्यवस्था के पुनःस्थापकों के चंगुल में फंस जाये।

"ऐसी स्थिति में इन दिनों में प्रदर्शन संगठित करने का प्रत्येक प्रयास, चाहे वह प्रशंसनीय से प्रशंसनीय उद्देश्य के लिये क्यों न हो, एक अपराध होगा। सरकार की नीति से असंतुष्ट चेतन मज़दूर और सिपाही यदि प्रदर्शनों में भाग लेते हैं, तो वे सब अपने आपको और क्रांति को क्षति ही पहुंचायेंगे।

"इसलिए त्से-ई-काह सभी मज़दूरों का आह्वान करती है कि वे प्रदर्शन करने की अपीलों को अनसुनी कर दें।

"मज़दूरो और सिपाहियो! भड़कावे में न आइये! अपने देश के प्रति तथा क्रांति के प्रति अपने कर्तव्य का स्मरण कीजिए! प्रदर्शनों द्वारा, जिनका असफल होना अनिवार्य है, क्रांतिकारी मोर्चे की एकता को छिन्न-भिन्न न कीजिये!"

मज़दूरों तथा सैनिकों के प्रतिनिधियों की सोवियतों की
केंद्रीय कार्यकारिणी समिति (**त्से-ई-काह**)

रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर पार्टी।
ख़तरा सन्निकट है!

सभी मज़दूरों और सिपाहियों के नाम
(पढ़िये और दूसरों को पढ़ने के लिये दीजिये)

"साथी मज़दूरो और सिपाहियो! हमारा देश ख़तरे में है। इस ख़तरे की वजह से हमारी स्वतंत्रता और हमारी क्रांति एक मुश्किल वक़्त से गुज़र रही हैं। दुश्मन पेत्रोग्राद के दरवाज़े पर खड़ा है। अव्यवस्था घड़ी घड़ी बढ़ती जाती है। पेत्रोग्राद के लिए अनाज मुहैय्या करना अधिकाधिक कठिन होता जा रहा है। छोटे से छोटे से लेकर बड़े से बड़े तक हर आदमी के लिये ज़रूरी है कि वह अपनी कोशिशों को दुगुनी-चौगुनी बढ़ाये और उचित प्रबंध तथा व्यवस्था करने का प्रयत्न करे... हमें अपने देश को बचाना होगा, अपनी आज़ादी को बचाना होगा... सेना के लिए और भी ज़्यादा हथियार और रसद-पानी! बड़े बड़े शहरों के लिये अनाज! देश में सुव्यवस्था तथा संगठन...

"और इन भयानक नाज़ुक घड़ियों में चुपके-चुपके अफ़वाहें फैल रही हैं कि कहीं पर प्रदर्शन की तैयारी की जा रही है, कि कोई सिपाहियों और मज़दूरों का आह्वान कर रहा है कि वे क्रांतिकारी शांति और सुव्यवस्था को मटियामेट कर दें... बोल्शेविकों का अख़बार 'राबोची पूत' जलती आग में तेल डाल रहा है। वह अनभिज्ञ, चेतनाहीन लोगों की चापलूसी कर उन्हें खुश करने की कोशिश कर रहा है, मज़दूरों और सिपाहियों को ललचा रहा है और उन्हें ढेरों नेमतें देने का वादा कर सरकार के खिलाफ़ भड़का रहा है... अनजान, सहज ही विश्वास कर लेने वाले लोग तर्क न करके उनकी बातों पर यक़ीन कर लेते हैं... और दूसरी ओर से भी अफ़वाहें आ रही हैं—ये अफ़वाहें कि यमदूती शक्तियां, ज़ार के साथी संघाती, जर्मन जासूस खुशी से बाग बाग हो रहे हैं। वे बोल्शेविकों का साथ देने के लिये और उनके साथ मिलकर इन उपद्रवों को और भी भड़का कर उन्हें गृहयुद्ध में बदल देने के लिए तैयार हैं।

"बोल्शेविक लोग और उनकी झांसा-पट्टी में पड़े हुए अनभिज्ञ

सिपाही और मज़दूर ऊलजलूल नारे लगाते हैं: 'सरकार का नाश हो! समस्त सत्ता सोवियतों के हाथ में!' और ज़ार के यमदूती चाकर तथा विल्हेल्म के जासूस उन्हें शह देंगे और उभाड़ेंगे, 'यहूदियों को मारो! दुकानदारों को पीटो! बाज़ारों को लूटो! दुकानों को उजाड़ो! शराब के गोदामों पर डाका डालो! मारो-काटो, लूटो, जलाओ!'

"और तब एक भयानक उलझाव पैदा होगा, जनता के एक भाग की दूसरे भाग के साथ लड़ाई शुरू होगी। हर चीज़ और भी गड़बड़ में पड़ जायेगी और शायद राजधानी की सड़कों पर एक बार फिर खून बहेगा। और तब – तब फिर क्या होगा!

"तब पेत्रोग्राद का रास्ता विल्हेल्म के लिये खुल जायेगा। तब अनाज का एक दाना पेत्रोग्राद नहीं पहुंचेगा और बच्चे भूखों मरेंगे। तब मोर्चे पर हमारी सेना बेआसरा हो जायेगी, खाइयों में पड़े हुए हमारे भाई दुश्मन की तोपों के मुंह में डाल दिये जायेंगे। तब दूसरे देशों में रूस की प्रतिष्ठा धूल में मिल जायेगी, हमारी मुद्रा का मूल्य जाता रहेगा, हर चीज़ इतनी महंगी हो जायेगी कि ज़िंदगी दुश्वार हो उठेगी। तब जिस संविधान सभा की हम इतने दिनों से आशा लगाये हैं, वह टाल दी जायेगी, उसे समय पर बुलाना असंभव हो जायेगा और तब – क्रांति का नाश, हमारी स्वतंत्रता का नाश...

"मज़दूरों और सिपाहियो, क्या आप यही चाहते हैं? नहीं! अगर आप यह नहीं चाहते, तो जाइये, ग़द्दारों द्वारा ठगे गए अनभिज्ञ लोगों के पास जाइये और उन्हें पूरी सचाई, जो हमने आपको बताई है, बताइये!

"सभी जान लें कि **इन भयानक दिनों में जो भी आदमी आपको सरकार के ख़िलाफ़ सड़कों पर प्रदर्शन करने के लिए पुकारता है, वह या तो ज़ार का ख़ुफ़िया गुर्गा है, उकसावेबाज़ है या जनता के शत्रुओं का नासमझ सहायक है, या फिर विल्हेल्म का ज़रख़रीद जासूस है!**

"यह आवश्यक है कि हर चेतन मज़दूर क्रांतिकारी, हर चेतन किसान, हर क्रांतिकारी सिपाही, वे सभी लोग, जो यह समझते हैं कि सरकार के ख़िलाफ़ प्रदर्शन अथवा विद्रोह से जनता को कितनी बड़ी क्षति पहुंच सकती है, एकजुट हों और जनता के शत्रुओं को हमारी स्वतंत्रता मटियामेट करने से रोकें।

मेन्शेविक-ओबोरोन्तसों की पेत्रोग्राद निर्वाचन-समिति

११

लेनिन के 'साथियों के नाम पत्र'

यह एक लेखमाला है, जो अक्तूबर १९१७ के उत्तरार्द्ध में 'राबोची पूत' में क्रमशः प्रकाशित हुई थी। यहां दो लेखों में से कुछ उद्धरण दिये जा रहे हैं।

"जनता के बीच हमारा बहुमत नहीं है ; जब तक यह शर्त पूरी न हो, विद्रोह की सफलता की आशा नहीं की जा सकती..."

जो लोग ऐसा कह सकते हैं, वे या तो सत्य को विकृत करते हैं या वे पांडित्य बघारने वाले लोग हैं, जो पहले से यह गारंटी चाहते हैं कि एक छोर से दूसरे छोर तक समूचे देश में बोल्शेविक पार्टी को बिल्कुल ठीक ठीक आधे वोटों से एक वोट ज़्यादा मिले...

आख़िरी बात यह है, पर यह कम महत्त्व की बात नहीं है, कि **किसानों का विद्रोह** वर्तमान काल में रूसी जीवन का प्रमुख सत्य है... तम्बोव गुबेर्नियां का किसान-आंदोलन भौतिक तथा राजनीतिक, दोनों ही अर्थों में विद्रोह था, एक ऐसा विद्रोह, जिससे शानदार राजनीतिक नतीजे हासिल हुए हैं, जैसे सबसे पहले यह नतीजा कि किसानों के हाथों में भूमि के अंतरण को मान लिया गया है। यह बात कुछ मतलब रखती है कि 'देलो नरोदा' समेत समाजवादी-क्रांतिकारियों की भीड़, जो विद्रोह से घबराये हुए हैं, अब **चीख रहे हैं** कि भूमि को किसानों के हाथों में अंतरित कर देने की ज़रूरत है... किसान-विद्रोह का एक दूसरा शानदार राजनीतिक तथा क्रांतिकारी नतीजा यह है कि तम्बोव गुबेर्नियां के रेलवे स्टेशनों में अनाज की बारबरदारी की जा रही है...

पूंजीवादी अखबारों को भी, यहां तक कि 'रूस्काया वोल्या' को, इस आशय की सूचना प्रकाशित करें कि तम्बोव गुबेर्नियां के रेलवे स्टेशन गल्ले से पट गये हैं, अन्न की समस्या के **ऐसे** समाधान (एकमात्र यथार्थ समाधान) के अद्भुत परिणामों को स्वीकार कर लेना पड़ा है... और यह तब हुआ जब... **किसानों ने विद्रोह किया !!**

"हम इतने शक्तिशाली नहीं हैं कि सत्ता पर अधिकार स्थापित कर

सकें, न ही पूंजीपति वर्ग इतना शक्तिशाली है कि वह संविधान सभा के संयोजन को रोक सके।"

इस तर्क का पहला भाग पहले वाले तर्क की ही एक अन्विति है। जब इस तर्क के प्रतिपादकों की भ्रांति तथा पूंजीपति वर्ग से उनकी दहशत मज़दूरों के संबंध में निराशावाद और पूंजीपति वर्ग के संबंध में आशावाद के रूप में व्यक्त होती हैं, तब न तो वह तर्क अधिक प्रबल होता है न अधिक विश्वासप्रद। यदि **युंकर** और कज़्ज़ाक कहते हैं कि वे, जब तक उनके अंदर खून का एक क़तरा भी बाक़ी है, बोल्शेविकों से लड़ेंगे, तब यह बात इस योग्य है कि उस पर पूरा विश्वास किया जाये; परंतु यदि मज़दूर और सिपाही सैकड़ों सभाओं में बोल्शेविकों के प्रति अपना पूर्ण विश्वास प्रगट करते हैं और यह ज़ोर देकर कहते हैं कि वे सोवियतों के हाथों में सत्ता के अंतरण का समर्थन करने के लिए तैयार हैं, तो यह याद दिलाना "समयोचित" समझा जाता है कि वोट देना एक बात है और लड़ना दूसरी!

बेशक अगर आप इस प्रकार तर्क करें, तो आप विद्रोह की संभावना का "खंडन" कर सकते हैं। परंतु, हम पूछ सकते हैं कि यह "निराशावाद", जिसकी एक विशिष्ट दिशा है और विशिष्ट प्रेरणा, पूंजीपति वर्ग के पक्ष में राजनीतिक मत-परिवर्तन से किस प्रकार भिन्न है?

और कोर्नीलोव कांड ने क्या प्रमाणित किया है? उसने यह प्रमाणित कर दिया है कि सोवियतें एक यथार्थ शक्ति हैं...

यह किस प्रकार प्रमाणित किया जा सकता है कि पूंजीपति वर्ग इतना शक्तिशाली नहीं है कि वह संविधान सभा संयोजन को रोक सके?

यदि सोवियतों में **इतनी शक्ति नहीं है** कि वे पूंजीपति वर्ग का तख़्ता उलट सकें, तो **इसका अर्थ यह है** कि पूंजीपति वर्ग में इतनी शक्ति है कि वह संविधान सभा के संयोजन को रोक सके, क्योंकि उसे रोकने वाला और है ही कौन! केरेन्स्की और उनकी मंडली के वादों पर विश्वास कर लेना, दुम हिलाने वाली पूर्व-संसद के प्रस्तावों पर विश्वास कर लेना—क्या यह सर्वहारा पार्टी के किसी भी सदस्य तथा क्रांतिकारी के लिए शोभनीय है?

यदि मौजूदा सरकार का तख़्ता उलट नहीं दिया जाता, तो इतनी ही बात नहीं है कि पूंजीपति वर्ग संविधान सभा के संयोजन को रोकने के लिए **पर्याप्त शक्तिशाली** है, बल्कि वह इसी लक्ष्य को **परोक्ष** रूप से—

पेत्रोग्राद को जर्मनों के हवाले कर, मोर्चे को अरक्षित छोड़कर, तालाबंदी बढ़ाकर तथा खाद्य-संभरण को अंतर्ध्वस्त कर – सिद्ध कर सकता है...

"यह ज़रूरी है कि सोवियतें एक ऐसा तमंचा हों, जिसे इस मांग के साथ सरकार की ओर सीधा तान दिया गया हो कि संविधान सभा बुलाई जाये और सभी कोर्नीलोवपंथी कुचक्र बंद किये जायें।"

विद्रोह को तिलांजलि देना और "समस्त सत्ता सोवियतों के हाथ में हो!", इस नारे को तिलांजलि देना, दोनों **एक ही बात** हैं...

सितंबर से ही विद्रोह का प्रश्न पार्टी के अंदर विचाराधीन रहा है...

विद्रोह का परित्याग सोवियतों के हाथ में सत्ता के अंतरण का परित्याग है, उसका अर्थ है रुख़ बदल कर सभी आशाओं और उम्मीदों को उस मेहरबान पूंजीपति वर्ग पर "लगा देना", जिसने संविधान सभा बुलाने का "वचन" दिया है...

एक बार **सत्ता** सोवियतों के हाथ में आई नहीं कि संविधान सभा तथा उसकी सफलता **सुनिश्चित** हो जाती है...

विद्रोह के परित्याग का अर्थ है सीधे-सीधे लीबेर और दान जैसे लोगों की ओर चले जाना...

या तो लीबेर और दान जैसे लोगों की ओर चले जाइये और **खुल्लमखुल्ला** "समस्त सत्ता सोवियतों के हाथ में" के नारे का परित्याग कीजिये, या विद्रोह शुरू कीजिये।

इनके बीच कोई तीसरा रास्ता नहीं है।

"पूंजीपति वर्ग पेत्रोग्राद को जर्मनों के हवाले नहीं कर सकता, हालांकि रोद्ज़्यान्को ऐसा करना चाहते हैं, क्योंकि लड़ाई पूंजीपति वर्ग नहीं लड़ता, हमारे बहादुर मल्लाह लड़ते हैं..."

यह एक निर्विवाद सत्य है कि मोर्चे के सैनिक सदर मुक़ाम में सुधार नहीं किया गया है, और जिन अफ़सरों के हाथ में कमान है, वे कोर्नीलोवपंथी हैं।

यदि कोर्नीलोवपंथी (केरेन्स्की के नेतृत्व में, क्योंकि वह भी कोर्नीलोवपंथी हैं) पेत्रोग्राद को जर्मनों के हवाले करना **चाहते** हैं, तो वे ऐसा दो या तीन तरीक़ों से कर सकते हैं।

पहले तो यह कि वे कोर्नीलोवपंथी अफ़सरों की ग़द्दारी के ज़रिए उत्तरी स्थल मोर्चा अरक्षित छोड़ सकते हैं।

दूसरे, वे जर्मन नौसेना, जो हमसे **अधिक शक्तिशाली** है, की गतिविधि की स्वतंत्रता के लिए "सहमत" हो सकते हैं; वे जर्मन साम्राज्यवादियों और ब्रिटिश साम्राज्यवादियों, दोनों के साथ सहमत हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त यह भी हो सकता है कि "जो ऐडमिरल रफ़ूचक्कर हो गये हैं" उन्होंने हमारी **योजनायें** जर्मनों के हवाले कर दी हों।

तीसरे, वे तालाबंदी के ज़रिए और खाद्य-संभरण को अंतर्ध्वस्त कर, हमारी सेना को घोर निराशाजनक तथा **असहाय** स्थिति में डाल सकते हैं।

इन तीनों तरीक़ों में से एक की भी असलियत से इनकार नहीं किया जा सकता। तथ्यों द्वारा यह प्रमाणित हो चुका है कि रूस की पूंजीवादी-कज़्ज़ाक पार्टी ने इन तीनों दरवाज़ों को खटखटाया है, और हर दरवाज़े को धक्का देकर खोल देना चाहा है।

हमें इस बात का कोई अधिकार नहीं है कि हम **इंतज़ार करते रह जायें** और पूंजी पति वर्ग क्रांति का गला घोंट दे...

रोद्ज़्यान्को कारोबारी आदमी हैं...

दशाब्दियों से रोद्ज़्यान्को ने पूंजी की नीतियों को यथार्थ रूप से तथा बड़ी वफ़ादारी के साथ चलाया है।

इससे क्या निष्कर्ष निकलता है? निष्कर्ष यह निकलता है कि क्रांति की रक्षा के एकमात्र साधन के रूप में विद्रोह के प्रश्न पर दुविधाग्रस्त होने का अर्थ कायरतावश पूंजीपति वर्ग पर विश्वास कर बैठना है। यह विश्वास आधा तो लीबेर-दानी, समाजवादी-क्रांतिकारी-मेन्शेविक प्रकार का है और आधा "किसानों की तरह" का मूक अवितर्की विश्वास है, जिसके ख़िलाफ़ बोल्शेविक सबसे ज़्यादा लड़ते रहे हैं।

"हम दिन-ब-दिन अधिक शक्तिशाली होते जा रहे हैं। हम संविधान सभा में प्रबल विरोध-पक्ष के रूप में प्रवेश कर सकते हैं; हम सब कुछ दांव पर क्यों लगा दें?.."

यह उस कूपमंडूक का तर्क है, जिसने "पढ़" रखा है कि संविधान सभा बुलाई जा रही है और जो भरोसा करके सबसे अधिक क़ानूनी, सबसे

अधिक बावफ़ा, सबसे अधिक संविधानी रास्ते पर चलना चुपचाप स्वीकार कर लेता है।

मगर, अफ़सोस, संविधान सभा के लिए **इंतज़ार** करते रहने से न तो अकाल का प्रश्न सुलझता है, न पेत्रोग्राद के समर्पण का प्रश्न। भोले-भाले या उलझन में पड़े लोग या वे लोग, जो अपने को भयभीत हो जाने देते हैं, इस "छोटी सी" बात को भूल जाते हैं।

अकाल इंतज़ार करने वाला नहीं है। किसानों की बग़ावत ने इंतज़ार नहीं किया। लड़ाई इंतज़ार नहीं करेगी। रफ़ूचक्कर हो जाने वाले ऐडमिरलों ने इंतज़ार नहीं किया...

और ऐसे अंधे लोग हैं, जो अभी भी इस बात पर अचरज कर रहे हैं कि क्यों भूखे लोग और सिपाही, जिनके साथ जनरलों और ऐडमिरलों ने ग़द्दारी की है, चुनावों के प्रति उदासीन हैं! वाह रे, पंडिताई छांटने वाले!

"अगर कोर्नीलोवपंथियों ने फिर विद्रोह शुरू किया, तो हम उन्हें मज़ा चखायेंगे! लेकिन हम भला ख़तरा क्यों मोल लें और नाहक क्यों कूद पड़ें?.."

इतिहास की पुनरावृत्ति नहीं होती, परंतु यदि हम इतिहास की ओर से **मुंह मोड़ लें**, प्रथम कोर्नीलोव कांड का ध्यान करते हुए यह मंत्र जपते जायें: "कोर्नीलोवपंथी ज़रा शुरू तो करें," अगर हम ऐसा करें तो यह क्या ख़ूब क्रांतिकारी रणनीति होगी!..

सर्वहारा नीति के लिए यह कैसा आधार है?

और मान लीजिये कि कोर्नीलोवपंथी जिस चीज़ का इंतज़ार कर रहे हैं वह घटित हो यानी इसके पहले कि वे **विद्रोह शुरू करें**, रोटी-दंगे हों, मोर्चा टूटे और पेत्रोग्राद का समर्पण किया जाये? तब फिर? तब क्या होगा?

प्रस्ताव यह किया जाता है कि हम सर्वहारा पार्टी की कार्यनीति का, कोर्नीलोवपंथियों द्वारा उनकी एक पुरानी ग़लती के दुहराये जाने की संभावना के आधार पर, निर्माण करें!

जो सत्य बोल्शेविकों ने सैकड़ों बार **प्रदर्शित किया है** और जो वे

बराबर प्रदर्शित करते रहे हैं, हमारी क्रांति के छः महीनों के इतिहास ने जिस सत्य को प्रमाणित किया है, उसे हम भूल जायें अर्थात् इस बात को भूल जायें कि कोर्नीलोवपंथियों के अधिनायकत्व या सर्वहारा के अधिनायकत्व को छोड़ कर कोई रास्ता, यथार्थतः कोई भी रास्ता **न है** और न हो सकता है। हम यह भूल जायें, हम इससे दस्तबरदार हो जायें और इंतज़ार करें! किस चीज़ के लिए इंतज़ार करें? किसी चमत्कार के लिए...

१२

मिल्युकोव की तक़रीर

(सारांश)

"ऐसा लगता है कि हर आदमी यह स्वीकार करता है कि देश की रक्षा हमारा प्रधान कर्तव्य है और यह कि उसे सुनिश्चित बनाने के लिए सेना में अनुशासन और मोर्चे के पीछे सुव्यवस्था होना ज़रूरी है। इसे उपलब्ध करने के लिए एक ऐसी सत्ता आवश्यक है, जो समझाने-बुझाने ही नहीं, बल-प्रयोग का भी साहस करने में समर्थ हो... हमारी सभी बुराइयों की जड़ विदेश-नीति-संबंधी वह मौलिक यथार्थतः रूसी दृष्टिकोण है, जिसे अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण समझ लिया जाता है।

"महामना लेनिन महामना केरेन्स्की का अनुकरण ही करते हैं, जब वह यह कहते हैं कि रूस उस नये संसार को जन्म देगा, जो बूढ़े पश्चिम को पुनरुज्जीवन प्रदान करेगा और जो जड़सूत्रवादी समाजवाद की पुरानी-धुरानी पताका को फेंक कर उसके स्थान पर भूखे जन-साधारण द्वारा प्रत्यक्ष कार्रवाई की नीति को ग्रहण करेगा—और यह मानवता को आगे की ओर धकेलेगा और उसे बलपूर्वक समाजवादी स्वर्ग के द्वार को उन्मुक्त करने के लिए बाध्य करेगा...

"ये लोग ईमानदारी के साथ यह विश्वास करते थे कि रूस के विघटन से पूरी पूंजीवादी शासन-व्यवस्था विघटित हो जायेगी। इस दृष्टिकोण का आधार ग्रहण कर वे युद्ध-काल में सिपाहियों से बड़े मज़े से

यह कह कर कि वे खाइयां छोड़ कर निकल आयें, और बाहरी दुश्मन से लड़ने के बजाय आंतरिक गृहयुद्ध उत्पन्न करके और मालिकों तथा पूंजीतियों पर हमला करके अनजाने ही ग़द्दारी कर सकें..."

मिल्युकोव की बात काट कर वामपंथियों ने बड़े ग़ुस्से से उनसे पूछा कि किस समाजवादी ने कभी भी इस तरह की कार्रवाई की सलाह दी है...

"मार्तोव का कहना है कि सर्वहारा का क्रांतिकारी दबाव ही साम्राज्यवादी गुटों की दुष्ट इच्छा को लताड़ और जीत सकता है और उन गुटों के अधिनायकत्व को चूर चूर कर सकता है... सरकारों के बीच शस्त्रीकरण की सीमा बांध देने के समझौते द्वारा नहीं, वरन् इन सरकारों को निरस्त्र करने और सैनिक व्यवस्था के आमूल जनवादीकरण द्वारा..."

उन्होंने मार्तोव को बुरी तरह लताड़ा और फिर मेन्शेविकों तथा समाजवादी-क्रांतिकारियों पर बरस पड़े, जिनके ख़िलाफ़ उन्होंने वर्ग-संघर्ष चलाने के प्रगट उद्देश्य से मंत्रियों के रूप में सरकार में शामिल होने का इलज़ाम लगाया।

"जर्मनी तथा मित्र-राष्ट्रों के समाजवादी इन साहबान को खुल्लम-खुल्ला हिक़ारत की नज़र से देखते थे, लेकिन उन्होंने फ़ैसला किया कि यह मामला उनका नहीं, रूस का है और उन्होंने हमारे यहां 'सारी दुनिया में आग लगाओ' के कुछ प्रचारक भेज दिये...

"हमारे जनवादियों का फार्मूला बड़ा सीधा-सादा है: विदेश नीति की ज़रूरत नहीं है, न ही कूटनीतिक कला की है, अविलंब जनवादी संधि चाहिए और मित्र-राष्ट्रों के सम्मुख यह घोषणा चाहिये, 'हम कुछ नहीं चाहते, हमें किसी चीज़ के लिए नहीं लड़ना है!' और फिर हमारे विपक्षी भी ऐसी ही घोषणा करेंगे और इस प्रकार विभिन्न जनों का भाईचारा संपन्न हो जायेगा।"

मिल्युकोव ने जिम्मरवाल्ड घोषणापत्र पर भी चोट की और कहा कि केरेन्स्की तक "उस कमबख़्त दस्तावेज़ के, जिसके लिए आप सदैव अपराधी रहेंगे, असर से बच नहीं सके।" फिर स्कोबेलेव को अपना निशाना बनाते हुए उन्होंने कहा कि अंतर्राष्ट्रीय सभाओं में, जहां वह

अपनी ही सरकार की विदेश नीति से सहमत न होते हुए भी एक रूसी प्रतिनिधि की हैसियत से जायेंगे, उनकी स्थिति इतनी विचित्र होगी कि लोग पूछेंगे, "यह सज्जन अपने साथ क्या लाये हैं और हम उनसे किस चीज़ के बारे में बात करेंगे?" जहां तक **नकाज़** का प्रश्न है, मिल्युकोव ने कहा कि वह स्वयं शांतिवादी हैं, कि वह एक अंतर्राष्ट्रीय विवाचन-मंडल की स्थापना में, शस्त्रीकरण को सीमित करने की आवश्यकता में और गुप्त कूटनीति के संसदीय नियंत्रण में विश्वास करते हैं, परंतु इस नियंत्रण का यह अर्थ नहीं है कि गुप्त कूटनीति ही समाप्त कर दी जाये।

नकाज़ में निहित समाजवादी विचारों के बारे में, जिनको उन्होंने "स्टाकहोमी विचारों" का नाम दिया, अर्थात् विजय-पराजय के बिना शांति, जातियों का आत्मनिर्णय का अधिकार तथा आर्थिक युद्ध का परित्याग, उन्होंने कहा:

"जर्मनों ने प्रत्यक्षत: उसी अनुपात में सफलतायें प्राप्त की हैं, जिस अनुपात में अपने को क्रांतिकारी-जनवादी कहने वाले लोगों ने की हैं। मैं यह नहीं कहना चाहता कि जिस अनुपात में क्रांति ने सफलतायें प्राप्त की हैं, क्योंकि, मेरा विश्वास है कि क्रांतिकारी जनवाद की पराजय क्रांति की विजय है...

"विदेशों में सोवियत नेताओं का प्रभाव महत्त्वहीन वस्तु नहीं है। विदेश-मंत्री के भाषण को सुनने से ही आपको यह विश्वास हो जायेगा कि इस भवन में विदेश नीति पर क्रांतिकारी जनवाद का प्रभाव इतना प्रबल है कि उसके सम्मुख मंत्री महोदय रूस के सम्मान और प्रतिष्ठा की बात करने का साहस नहीं करते!

"सोवियतों के **नकाज़** से हम देख सकते हैं कि स्टाकहोम-घोषणापत्र के विचारों का दो दिशाओं में विकास किया गया है – एक तो कल्पनावाद की दिशा में और दूसरे जर्मन हितों की दिशा में..."

उनके भाषण के बीच में वामपंथियों ने गुस्से में आकर आवाज़ें दीं और अध्यक्ष महोदय ने भी उन्हें डांटा, लेकिन मिल्युकोव इस बात पर अड़े ही रहे कि यह प्रस्ताव कि कूटनीतिज्ञ नहीं, जन-सभायें शांति-संधि संपन्न करें और यह प्रस्ताव कि जैसे ही शत्रु संयोजनों को तिलांजलि दे दे, उसके साथ शांति-वार्ता आरंभ की जाये, जर्मनों के पक्ष में है। हाल में

कूलमन ने कहा था कि अगर कोई व्यक्तिगत प्रकार की घोषणा करता है, तो उससे एकमात्र वही बंधता है, दूसरा नहीं... "बहरहाल इसके पहले कि हम मजदूरों तथा सैनिकों के प्रतिनिधियों की सोवियत की नक़ल करें हम जर्मनों की नक़ल करेंगे..."

मिल्युकोव ने कहा, "लिथुआनिया और लाटविया की स्वाधीनता से संबंधित धाराएं रूस के विभिन्न भागों में राष्ट्रवादी आंदोलन के लक्षण हैं, जिसकी जर्मन लोग रुपये-पैसे से मदद कर रहे हैं..."

वामपंथियों के हो-हल्ले के बीच उन्होंने **नकाज़** की एल्सस-लोरें, रूमानिया और सर्बिया से संबंधित धाराओं का जर्मनी तथा आस्ट्रिया की जातियों से संबंधित धाराओं के साथ मुक़ाबला किया और कहा कि **नकाज़** में जर्मन और आस्ट्रियाई दृष्टिकोण को ग्रहण किया गया है।

तेरेश्चेंको के भाषण को लेते हुए उन्होंने बड़ी हिकारत से उनके ख़िलाफ़ यह इलज़ाम लगामा कि वह अपने मन का भाव प्रगट करने से घबराते हैं और रूस की महानता के दृष्टिकोण से विचार तक करने से कतराते हैं। दर्रे दानियाल रूस के ही हाथ में होना चाहिए...

"आप बार बार यह कहते हैं कि सिपाही को यह नहीं मालूम कि वह लड़ क्यों रहा है और यह कि जब उसे मालूम होगा, वह लड़ेगा... यह सच है कि सिपाही को यह नहीं मालूम कि वह क्यों लड़ रहा है, लेकिन अब आपने उससे यह कहा है कि उसके लिए लड़ने की कोई वजह नहीं है, कि हमारे कोई राष्ट्रीय हित नहीं हैं और यह कि हम परराष्ट्रों के उद्देश्यों की ख़ातिर लड़ रहे हैं..."

उन्होंने मित्र-राष्ट्रों की सराहना की और कहा कि अमरीका की मदद से वे "अभी भी मानव-जाति के ध्येय की रक्षा करेंगे।" उनके अंतिम शब्द थे:

"मानव-जाति के प्रकाश-स्तंभ, पश्चिम के उन्नत जनवादी देश, जो एक लंबे अरसे से उस रास्ते चलते आये हैं, जिस पर हमने अब कहीं जाकर पांव रखा है, और वह भी हिचकिचाते, झिझकते क़दमों से, जीते रहें। हमारे साहसी मित्र-राष्ट्र जीते रहें!"

१३

केरेन्स्की के साथ मुलाक़ात

'एसोसियेटेड प्रेस' के संवाददाता ने रद्दा जमाया: "केरेन्स्की महोदय," उसने शुरू किया, "इंगलैंड और फ़्रांस में लोग क्रांति से निराश हो रहे हैं..."

केरेन्स्की ने उसकी बात काट कर मज़ाक़िया लहजे में कहा, "जी हां, मैं जानता हूं, विदेशों में क्रांति अब फ़ैशनेबुल नहीं रही।"

"आपके ख़्याल में इसकी क्या वजह है कि रूसियों ने लड़ना बंद कर दिया है?"

"यह एक बेवक़ूफ़ी का सवाल है," केरेन्स्की ने चिढ़ कर कहा। "मित्र-राष्ट्रों में रूस ही सबसे पहले लड़ाई के मैदान में उतरा और बहुत दिनों तक उसने अकेले ही लड़ाई का पूरा बोझ ढोया। उसे जो नुक़सान पहुंचा है, वह दूसरे सभी राष्ट्रों के नुक़सान से बेअंदाज़ ज़्यादा है। आज रूस को मित्र-राष्ट्रों से यह मांग करने का अधिकार है कि वे इस युद्ध में अधिक शस्त्र-बल लगायें।" क्षण भर रुककर उन्होंने प्रश्नकर्त्ता की ओर घूरकर देखा और फिर कहा, "आप यह पूछते हैं कि रूसियों ने लड़ना बंद क्यों कर दिया है, और रूसी पूछते हैं कि जब जर्मन जंगी जहाज़ रीगा की खाड़ी में मौजूद हैं, ब्रिटिश बेड़ा कहां है?" फिर यकायक रुककर वह उसी तरह यकायक उबल पड़े, "रूसी क्रांति विफल नहीं हुई है, न ही क्रांतिकारी सेना विफल हुई है। सेना में विशृंखलता क्रांति ने उत्पन्न नहीं की है—यह विशृंखलता सालों पहले पुरानी व्यवस्था ने उत्पन्न की थी। रूसी क्यों नहीं लड़ रहे हैं? मैं बताता हूं। क्योंकि जन-साधारण का आर्थिक बल छीज गया है और क्योंकि मित्र-राष्ट्रों के बारे में उनके भ्रम टूट गये हैं!"

यह इन्टरव्यू, जिसका मैंने यहां एक उद्धरण दिया है, तार के ज़रिये संयुक्त राज्य अमरीका भेजा गया और चंद रोज़ बाद ही अमरीकी राज्य विभाग ने यह मांग करते हुए उसे लौटा दिया कि उसे "बदला" जाये। केरेन्स्की ने ऐसा करने से इनकार किया, लेकिन उनके सचिव ड० डेविड सोस्किस ने उसमें काट-छांट की और इस प्रकार उसमें से मित्र-राष्ट्रों के बारे में अप्रिय संकेतों को छांट कर उसे दुनिया के अख़बारों को दिया गया...

तीसरे अध्याय की टिप्पणियां

१

कारख़ाना समितियों का प्रस्ताव

१. राजनीतिक क्षेत्र में निरंकुश ज़ारशाही शासन का तख़्ता उलटने के बाद, मज़दूर वर्ग उत्पादन के क्षेत्र में भी जनवादी व्यवस्था की विजय को अग्रसर करने की चेष्टा कर रहा है। मज़दूर नियन्त्रण का विचार इसी चेष्टा की अभिव्यक्ति है। यह विचार स्वभावतः उस आर्थिक विसंगठन की भूमि से उत्पन्न हुआ, जो शासक वर्गों की अपराधपूर्ण नीति का परिणाम था।

२. मज़दूरों के नियंत्रण का संगठन औद्योगिक उत्पादन के क्षेत्र में मजदूरों की क्रिया की वैसी ही स्वस्थ अभिव्यक्ति है, जैसी कि राजनीति के क्षेत्र में पार्टी-संगठन, नौकरी-धंधे के क्षेत्र में ट्रेड-यूनियन, उपभोग के क्षेत्र में सहकारी समितियां तथा संस्कृति के क्षेत्र में साहित्यिक गोष्ठियां हैं।

३. कारख़ानों के उचित तथा निर्विघ्न परिचालन में मज़दूर वर्ग को पूंजीपति वर्ग की अपेक्षा कहीं अधिक दिलचस्पी है। इस संबंध में मज़दूरों का नियंत्रण आधुनिक समाज के, समस्त जनता के हितों की उन मालिकों की मनमानी इच्छा से कहीं बेहतर गारंटी है, जो भौतिक लाभ अथवा राजनीतिक विशेषाधिकारों के लिए अपनी स्वार्थपूर्ण इच्छाओं द्वारा ही निर्देशित हैं। इसलिए सर्वहारा अपने हित में ही नहीं, बल्कि पूरे देश के हित में मज़दूरों के नियंत्रण की मांग करता है और क्रांतिकारी किसानों को तथा क्रांतिकारी सेना को चाहिए कि वे इस मांग का समर्थन करें।

४. हमारा अनुभव बताता है कि क्रांति के प्रति पूंजीपति वर्ग के अधिकांश भाग के शत्रुतापूर्ण रुख को देखते हुए मज़दूरों के नियंत्रण के बिना कच्चे माल और ईंधन का उचित वितरण तथा कारख़ानों का कुशलतम प्रबंध असंभव है।

५. पूंजीपतियों के उद्यमों पर मज़दूरों का नियंत्रण ही, जिससे काम के प्रति मज़दूरों का चेतन दृष्टिकोण पोषित होता है और उसका सामाजिक अर्थ स्पष्ट होता है, ऐसी अवस्थायें उत्पन्न कर सकता है, जो

मज़दूरों में दृढ़ आत्म-अनुशासन के विकास के लिए तथा यथासंभव श्रम की उत्पादनक्षमता के विकास के लिए अनुकूल हैं।

६. उद्योग का युद्ध से शांति में आसन्न आधार-परिवर्तन तथा पूरे देश में और विभिन्न कारख़ानों के बीच भी श्रम का पुनर्वितरण स्वयं मज़दूरों के जनवादी स्वशासन द्वारा ही बिना विशेष उथल-पुथल के संपन्न किया जा सकता है... फलतः मज़दूरों के नियंत्रण का संपादन उद्योग के विसैन्यीकरण की एक अनिवार्य पूर्वावस्था है।

७. रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर पार्टी (बोल्शेविक) द्वारा घोषित नारे के मुताबिक़ राष्ट्रीय पैमाने पर मज़दूरों का नियंत्रण फलप्रद होने के लिए यह आवश्यक है कि उसे आनुषंगिक तथा अव्यवस्थित रूप से संगठित न किया जाये, न ही देश के समग्र औद्योगिक जीवन से विच्छिन्न किया जाये, बल्कि उसे सुआयोजित रूप से पूंजीपतियों के सभी उद्यमों में स्थापित किया जाये।

८. देश का आर्थिक जीवन – कृषि, उद्योग, वाणिज्य तथा परिवहन – अवश्य ही एक ऐसी एकीभूत योजना के अधीन होना चाहिए, जो व्यापक जन-साधारण की व्यक्तिगत तथा सामाजिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए तैयार की गई हो, जो उनके निर्वाचित प्रतिनिधियों द्वारा अनुमोदित की गई हो और जो राष्ट्रीय तथा स्थानीय संगठनों के माध्यम से इन प्रतिनिधियों के निर्देश में कार्यान्वित की गई हो।

९. यह आवश्यक है कि योजना का वह भाग, जो कृषि-श्रम से संबंध रखता है, किसानों तथा खेतिहर मज़दूरों के संगठनों के निरीक्षण में कार्यान्वित किया जाये; और वह भाग, जो उजरती मज़दूरों द्वारा परिचालित उद्योग, व्यापार तथा परिवहन से संबंध रखता है, मज़दूरों के नियंत्रण में कार्यान्वित किया जाये। औद्योगिक कारख़ानों में कारख़ाना समितियां और दूसरी ऐसी समितियां और श्रम-बाज़ार में ट्रेड-यूनियनें मज़दूर नियंत्रण के स्वाभाविक निकाय होंगी।

१०. श्रम की किसी भी शाखा में अधिकांश मज़दूरों के लिए ट्रेड-यूनियनें तनख़ाहों के बारे में जो सामूहिक समझौते सम्पन्न करती हैं, वे प्रदेश विशेष में उसी प्रकार के श्रम का नियोजन करने वाले कारख़ानों के सभी मालिकों पर अवश्य ही लागू होंगे।

११. यह आवश्यक है कि रोज़गार-ब्यूरो, समग्र औद्योगिक योजना की सीमाओं में तथा उसके अनुरूप कार्य करने वाले वर्ग-संगठनों के रूप में, ट्रेड-यूनियनों के नियंत्रण तथा प्रबंध में रखे जायें।

१२. ट्रेड-यूनियनों को अवश्य ही यह अधिकार होना चाहिए कि वे खुद पेशक़दमी कर श्रम-समझौते अथवा श्रम-क़ानून भंग करने वाले सभी मालिकों के खिलाफ़ और श्रम की किसी भी शाखा में किसी भी मज़दूर की ओर से क़ानूनी कार्रवाई शुरू कर सकें।

१३. उत्पादन, वितरण तथा श्रम-नियोजन पर मज़दूरों के नियंत्रण से संबंधित सभी प्रश्नों के बारे में यह आवश्यक है कि ट्रेड-यूनियनें प्रतिष्ठान विशेष के मज़दूरों के साथ उनकी कारख़ाना समितियों के माध्यम से परामर्श करें।

१४. नियुक्ति तथा बरख़ास्तगी, छुट्टियां, पारिश्रमिक-क्रम काम की मनाही, उत्पादन-क्षमता तथा कौशल की मात्रा, समझौतों को रद्द करने के कारण, कारख़ाना-प्रशासन के साथ झगड़े और कारख़ाने के आंतरिक जीवन की दूसरी इसी प्रकार की समस्यायें – ये सारे मामले एकमात्र कारख़ाना समिति के जांच-परिणामों के मुताबिक़ निपटाये जाने चाहिये। समिति को अधिकार होगा कि वह कारख़ाना-प्रशासन के किन्हीं भी सदस्यों को बहस में भाग लेने से वंचित रखे।

१५. कारख़ानों को कच्चा माल, ईंधन, आर्डर, श्रम-शक्ति तथा तकनीकी कर्मचारी (मय साज़ व सामान के) की सप्लाई तथा दूसरी मद्दों की सप्लाई तथा प्रबंध का नियंत्रण करने के लिए तथा कारख़ाने द्वारा सामान्य औद्योगिक योजना के पालन को सुनिश्चित बनाने के लिए कारख़ाना समिति एक आयोग की स्थापना करती है। कारख़ाना-प्रशासन इसके लिए बाध्य है कि वह मज़दूर नियंत्रण-निकायों की सहायता तथा सूचना के लिए व्यवसाय-संबंधी समस्त तथ्य-सामग्री को उनके हवाले करे और उनके लिए इन तथ्यों की जांच करना संभव बनाये और कारख़ाना समिति की मांग पर उद्यम की हिसाब-बहियों को पेश करे।

१६. यदि कारख़ाना समितियों को प्रशासन की किन्हीं ग़ैरक़ानूनी कार्रवाइयों का पता चलता है, या ऐसी कार्रवाइयों के बारे में शुबहा

पैदा होता है, जिनकी अकेले मज़दूरों द्वारा जांच-पड़ताल नहीं की जा सकती, सुधार नहीं किया जा सकता, तो ये मामले श्रम की जिस विशेष शाखा से उनका संबंध है उसके लिए ज़िम्मेदार कारख़ाना समितियों के केन्द्रीय मंडल-संगठन के सुपुर्द कर दिये जायेंगे, जो सामान्य औद्योगिक योजना के क्रियान्वयन के लिए ज़िम्मेदार संस्थानों के साथ मामले पर विचार करेंगे और कारख़ाने को ज़ब्त करने की हद तक मामले को निबटाने का उपाय करेंगे।

१७. यह आवश्यक है कि विभिन्न उद्यमों की कारख़ाना समितियों को विभिन्न रोज़गार-धंधों के आधार पर संघबद्ध किया जाये, ताकि उद्योग की समस्त शाखा पर नियंत्रण स्थापित करने में सुविधा हो सके और उसे सामान्य औद्योगिक योजना के अंतर्गत किया जा सके; ताकि विभिन्न कारख़ानों के बीच आर्डरों, कच्चे माल, ईंधन, तकनीकी तथा श्रम-शक्ति के वितरण की एक कारगर योजना बनाई जा सके; ताकि विभिन्न वृत्तियों द्वारा संगठित ट्रेड-यूनियनों के साथ सहयोग स्थापित करने में सुविधा हो सके।

१८. ट्रेड-यूनियनों तथा कारख़ाना समितियों की केंद्रीय नगर परिषदें सामान्य औद्योगिक योजना को तैयार करने तथा उसे क्रियान्वित करने के लिए और नगरों तथा गांवों (मज़दूरों तथा किसानों) के बीच आर्थिक संबंध संगठित करने के लिए स्थापित तदनुरूप प्रांतीय तथा स्थानीय संस्थानों में सर्वहारा का प्रतिनिधित्व करती हैं। जहां तक उनके हलक़े में मज़दूरों के नियंत्रण का प्रश्न है, उन्हें कारख़ाना समितियों तथा ट्रेड-यूनियनों के प्रबंध का चरम अधिकार प्राप्त है और वे उत्पादन-चक्र में मज़दूरों के अनुशासन से संबंधित अनिवार्य नियमों को जारी करती हैं, परन्तु यह ज़रूरी है कि स्वयं मज़दूर मतदान देकर इन नियमों का अनुमोदन करें।*

---

* जॉन रीड ने १६वें अनुच्छेद को छोड़ दिया है, जिसमें कहा गया है: "देशव्यापी पैमाने पर मज़दूरों के नियन्त्रण की मांग करते हुए, सम्मेलन साथियों को आमन्त्रित करता है कि वे अभी से ही उस हद तक उसे क्रियान्वित करें, जिस हद तक कि प्रत्येक स्थान में शक्तियों का सन्तुलन इस बात की इजाज़त देता है। सम्मेलन यह भी घोषणा करता है कि मज़दूरों का इस अर्थ में अमल पर कब्ज़ा करना कि वे उनका अपने ही फ़ायदे के लिए इस्तेमाल कर सकें, मज़दूर नियन्त्रण के उद्देश्यों के साथ मेल नहीं खाता।"—सं०

२

बोल्शेविकों के बारे में पूंजीवादी अख़बारों की टिप्पणियां

'**रूस्स्काया वोल्या**', २८ अक्तूबर: "निर्णायक घड़ी आ रही है... यह घड़ी बोल्शेविकों के लिए निर्णायक है। या तो वे हमारे सम्मुख... १६–१८ जुलाई की घटनाओं का एक दूसरा संस्करण उपस्थित करेंगे, या फिर उन्हें मानना पड़ेगा कि वे अपनी योजनायें और इरादे लिये, सचेत राष्ट्रीय अंशकों से अपने को अलग रखने की धृष्ठ नीति लिये, चारों खाने चित हुए हैं...

"बोल्शेविकों की सफलता की क्या संभावनायें हैं?

"इस प्रश्न का उत्तर देना कठिन है, क्योंकि उनका मुख्य आधार... आम जनता का अज्ञान है। वे उसी पर दांव लगाते हैं और उसे ऐसी लफ़्फ़ाज़ी द्वारा उभाड़ते हैं, जिसे कोई चीज़ रोक नहीं सकती...

"इस मामले में सरकार को अपनी भूमिका अदा करनी होगी। नैतिक रूप से जनतंत्र परिषद् का आधार ग्रहण कर, सरकार को बोल्शेविकों के प्रति एक स्पष्ट और निश्चित रुख़ अपनाना होगा...

"और यदि बोल्शेविक क़ानूनी सत्ता के ख़िलाफ़ विद्रोह भड़काते हैं और इस प्रकार जर्मन आक्रमण को सहज बनाते हैं, तो उनके साथ वही सलूक करना होगा, जो बाग़ियों और ग़द्दारों के साथ किया जाता है..."

'**बिर्जेवीये वेदोमोस्ती**', २८ अक्तूबर: "अब जब कि बोल्शेविकों ने शेष जनवादी अंशकों से अपने को अलहदा कर लिया है, उनके ख़िलाफ़ संघर्ष एक कहीं ज़्यादा सीधी बात हो गया है, और बोल्शेविज़्म से लड़ने के लिए यह तर्कसंगत न होगा कि जब तक वे प्रदर्शन न करें, तब तक प्रतीक्षा की जाये। सरकार को प्रदर्शन की इजाज़त तक नहीं देनी चाहिए...

"विद्रोह तथा अराजकता फैलाने के लिए बोल्शेविकों की अपीलें ऐसी हरकतें हैं, जो फ़ौजदारी अदालतों द्वारा दंडनीय हैं और स्वतंत्र से स्वतंत्र देश में ऐसी हरकत करने वाले लोगों को सख़्त सज़ायें दी जायेंगी। क्योंकि, जो काम बोल्शेविक कर रहे हैं, वह सरकार के ख़िलाफ़ या

सत्ता तक लिए भी राजनीतिक प्रकार का संघर्ष नहीं है, वह अराजकता, मार-काट और गृहयुद्ध के लिए प्रचार है। इस प्रचार का मूलोच्छेद करना आवश्यक है। यह अजीब बात होगी कि दंगा-फ़साद के आंदोलन के ख़िलाफ़ कार्रवाई शुरू करने के लिए तब तक इंतज़ार किया जाये, जब तक कि ये फ़साद बरपा न हो जायें ..."

'नोवोये व्रेम्या', १ नवंबर: "...सरकार दूसरी नवंबर (जिस तारीख़ को सोवियतों की कांग्रेस बुलाई गई थी) के ही बारे में उत्तेजित क्यों है, वह १२वीं सितंबर या तीसरी अक्तूबर के बारे में उत्तेजित क्यों नहीं है?

"यह पहला मर्तबा नहीं है, जब रूस भस्म हो रहा है और ढहकर खंडहरों का एक ढेर बन रहा है, जब इस भयानक अग्निकांड के धुयें से हमारे मित्र-राष्ट्रों की आखों में जलन पैदा हो रही है ...

"सत्तारूढ़ होने के दिन से लेकर आज तक सरकार ने अराजकता को रोकने के उद्देश्य से एक भी हुक्म जारी नहीं किया है; जिन लपटों में रूस भस्म हो रहा है, क्या किसी ने उन्हें बुझाने की कोशिश की है?

"और भी काम करने को पड़े थे ..."

"सरकार ने एक अधिक तात्कालिक समस्या की ओर ध्यान दिया। उसने एक ऐसे विद्रोह (कोर्नीलोव-कांड) का दमन किया, जिसके बारे में आज हर आदमी पूछ रहा है, 'क्या यह विद्रोह कभी हुआ भी था?'"

३

बोल्शेविकों के बारे में नरम समाजवादी अख़बारों की टिप्पणियां

'देलो नरोदा' (समाजवादी-क्रांतिकारी), २८ अक्तूबर: "क्रांति के ख़िलाफ़ बोल्शेविकों का सबसे भयानक अपराध यह है कि जिन क्रूर विपदाओं को जन-साधारण झेल रहे हैं, वे उनका एकमात्र कारण क्रांतिकारी सरकार की बदनीयती को ठहराते हैं, जब कि वास्तव में ये विपदायें वस्तुगत कारणों से उत्पन्न होती हैं।

"वे जन-साधारण से पहले से यह जानते हुए सुनहरे वादे करते हैं कि वे अपना एक भी वादा पूरा नहीं कर सकते ; वे जन-साधारण को गुमराह करते हैं और उनकी मुसीबतों की जड़ क्या है, इसके बारे में सच्ची बात न बताकर उन्हें धोखा देते हैं...

"बोल्शेविक क्रांति के सबसे ख़तरनाक दुश्मन हैं..."

'देन' (मेन्शेविक), ३० अक्तूबर: "क्या वास्तव में यही 'प्रेस-स्वातंत्र्य' है? 'नोवाया रूस' और 'राबोची पूत' रोज़ाना खुल्लम-खुल्ला विद्रोह के लिए भड़कावा देते हैं। दरअसल ये दोनों अख़बार रोज़ाना अपने कालमों के ज़रिए जुर्म करते हैं। रोज़ाना वे लोगों को दंगा-फ़साद के लिए उभाड़ते हैं... क्या यही 'प्रेस-स्वातंत्र्य' है?

"सरकार को चाहिए कि वह अपने को बचाये और हमें भी। हमें यह आग्रह करने का अधिकार है कि जब नागरिकों का जीवन ख़ूनरेज़ बलवों के ख़तरे के कारण संकटापन्न हो सरकार की मशीनरी निष्क्रिय न रहे..."

४

'येदीन्स्त्वो'

प्लेख़ानोव के अख़बार 'येदीन्स्त्वो' ने बोल्शेविकों के सत्तारूढ़ होने के चंद हफ़्ते बाद प्रकाशन बंद कर दिया। आम ख़बर यह थी कि सोवियत सरकार ने उसे बंद कर दिया था, लेकिन यह ख़बर सही नहीं थी ; उसके अंतिम अंक में एक विज्ञप्ति निकली थी, जिसमें यह स्वीकार किया गया था कि ग्राहक संख्या अत्यंत न्यून होने के कारण उसका प्रकाशन जारी नहीं रखा जा सकता...

५

क्या बोल्शेविक षड्यंत्रकारी थे?

पेत्रोग्राद से निकलनेवाले फ़ांसीसी समाचारपत्र «Entente» ने १५ नवंबर को एक लेख प्रकाशित किया, जिसका एक उद्धरण नीचे दिया जाता है:

“केरेन्स्की सरकार बहस करती है और हिचकिचाती है। लेनिन और त्रोत्स्की की सरकार चोट करती है और अमल करती है।

“यह सरकार षड्यंत्रकारियों की सरकार कही जाती है, मगर ऐसा कहना सही नहीं है। निस्संदेह यह बलाद्ग्राहियों की सरकार है, उन सभी क्रांतिकारी सरकारों की तरह, जो अपने विपक्षियों पर विजय प्राप्त करती हैं। परंतु षड्यंत्रकारियों की सरकार? निश्चय ही नहीं!

“नहीं, उन्होंने षड्यंत्र नहीं किया। उल्टे उन्होंने खुलेआम, हिम्मत के साथ, बिना अपने इरादों को छिपाये और बिना लाग-लपेट के अपने आंदोलन को बढ़ाया और कारखानों में, बारिकों में, मोर्चे पर, देश में सर्वत्र अपने प्रचार को तेज़ किया, यहां तक कि उन्होंने पहले से ही शस्त्र ग्रहण करने की तिथि, सत्ता पर क़ब्ज़ा करने की तिथि निश्चित की...

“**वे** – षड्यंत्रकारी? कदापि नहीं...”

६

विद्रोह के ख़िलाफ़ अपील

केंद्रीय सैनिक समिति की ओर से

“...हम सबसे ज़्यादा इस बात पर ज़ोर देते हैं कि जनतंत्र परिषद् के तथा त्से-ई-काह् के साथ एकमत, जनसत्ता-निकाय के रूप में अस्थायी सरकार द्वारा व्यक्त जनता के बहुमत की संगठित इच्छा को अविचल रूप से संपादित किया जाये...

“एक ऐसे समय, जब मंत्रिमंडल में संकट उत्पन्न होने का अनिवार्य परिणाम विसंगठन, देश का विनाश तथा गृहयुद्ध होगा, इस सत्ता को बलप्रयोग द्वारा उलटने के लिए जो भी प्रदर्शन होगा, वह सेना द्वारा प्रतिक्रांतिकारी कार्य समझा जायेगा और शस्त्र-बल द्वारा दबा दिया जायेगा...

“निजी दलों और वर्गों के हितों को एक ही हित के – औद्योगिक उत्पादन बढ़ाने और ज़िंदगी की ज़रूरियात के समुचित वितरण के हित के – अधीन करना चाहिए...

“जो लोग भी तोड़-फोड़, विसंगठन अथवा उपद्रव कर सकते हैं,

उन सब को तथा सभी भगोड़ों, सभी कामचोरों और सभी लुटेरों को सेना के पृष्ठ भाग में सहायक सेवा करने के लिए बाध्य करना चाहिए ...

"हम अस्थायी सरकार को आमंत्रित करते हैं कि वह जनता की इच्छा का उल्लंघन करने वाले, क्रांति से शत्रुता करने वाले इन लोगों को लेकर मोर्चे के पीछे, मोर्चे पर और उन खाइयों में, जिनपर दुश्मन की गोलाबारी हो रही है, काम करने के लिए मज़दूर-टोलियां बनाये ..."

७

६ नवंबर की रात की घटनायें

शाम होते होते लाल गार्डों के दस्ते पूंजीवादी अख़बारों के छापाख़ानों पर क़ब्ज़ा करने लगे, जहां उन्होंने 'राबोची पूत', 'सोल्दात' और विभिन्न घोषणाओं को लाखों प्रतियों में छापा। नगर मिलिशिया को हुक्म दिया गया कि वह इन स्थानों को ख़ाली कराये, लेकिन उसने देखा कि कार्यालयों के बचाव के लिए मोर्चाबंदी की गयी है और हथियारबंद लोग उनकी हिफ़ाज़त कर रहे हैं। सिपाहियों को छापाख़ानों पर हमला करने का हुक्म दिया गया, मगर उन्होंने इनकार कर दिया।

आधी रात के क़रीब **युंकरों** की एक कंपनी के साथ एक कर्नल 'राबोची पूत' के संपादक को गिरफ़्तार करने का वारंट लेकर "आज़ाद ख़्याल" नामक क्लब में पहुंचा। फ़ौरन बाहर सड़क पर एक बहुत बड़ी भीड़ इकट्ठी हो गई और उसने **युंकरों** को वहीं भुर्ता बना देना चाहा। इस पर कर्नल ने चिरौरी-विनती की कि उन्हें और **युंकरों** को गिरफ़्तार कर लिया जाये और हिफ़ाज़त के ख़्याल से पीटर-पाल में पहुंचा दिया जाये। यह अनुरोध मान लिया गया।

एक बजे रात को [illegible] के सिपाहियों और मल्लाहों के एक दस्ते ने तारघर पर कब्ज़ा कर लिया*। पैंतीस मिनट बाद डाकख़ाने पर कब्ज़ा कर लिया गया। सवेरा होते होते सैनिक होटल हाथ में आ

---

*तारघर पर दो बजे रात कब्ज़ा किया गया। —सं०

गया और पांच बजे टेलीफ़ोन-एक्सचेंज * । सवेरे राजकीय बैंक पर घेरा डाल दिया गया और दस बजे शिशिर प्रासाद पर भी सैनिकों का घेरा डाल दिया गया।

चौथे अध्याय की टिप्पणियां

१

७ नवम्बर की घटनायें

सवेरे के चार बजे से लेकर पौ फटने तक केरेन्स्की पेत्रोग्राद सैनिक स्टाफ़ के सदर मुक़ाम में मौजूद थे और कज़्ज़ाकों को तथा शहर के अंदर और शहर के आस-पास के अफ़सर स्कूलों के **युंकरों** को हुक्म पर हुक्म भेज रहे थे, लेकिन उन सबने एक ही जवाब दिया, वे अपनी जगह से हिलने में असमर्थ हैं।

नगर कमांडेंट कर्नल पोल्कोवनिकोव स्पष्टतः बिना किसी योजना के कभी स्टाफ़-दफ़्तर जाते, तो कभी शिशिर प्रासाद। केरेन्स्की ने हुक्म दिया कि पुलों को उठा दिया जाये; तीन घंटे बीत गये, मगर कोई कार्रवाई नहीं की गई। इसके बाद ख़ुद पेशक़दमी कर पांच सिपाहियों के साथ एक अफ़सर ने निकोलाई पुल पर जाकर पहरे पर तैनात लाल गार्डों के एक दल को भगा दिया और पुल को उठा दिया। मगर उनके वहां से रवाना होते ही कुछ मल्लाहों ने आकर पुल को फिर गिरा दिया।

केरेन्स्की ने हुक्म दिया कि 'राबोची पूत' के छापाख़ाने पर क़ब्ज़ा कर लिया जाये। इस काम के लिए नियुक्त अफ़सर को सिपाहियों का एक दस्ता देने का वादा किया गया। दो घंटे बाद वादा किया गया कि उसे कुछ **युंकर** दिये जायेंगे, और फिर केरेन्स्की के इस हुक्म को भुला दिया गया।

डाकघर तथा तारघर को बोल्शेविकों से छीन लेने की कोशिश की गई। कुछ गोलियां भी चलाई गईं, मगर फिर सरकारी सैनिकों ने एलान किया कि अब वे सोवियतों की मुख़ालफ़त नहीं करेंगे।

---

* टेलीफ़ोन-एक्सचेंज पर सात बजे सवेरे क़ब्ज़ा किया गया। —सं०

युंकरों के एक शिष्टमंडल से केरेन्स्की ने कहा, "अस्थायी सरकार के सभापति के तथा मुख्य सेनापति के रूप में मैं कुछ नहीं जानता और मैं आपको कुछ सलाह नहीं दे सकता। परंतु एक पुराना क्रांतिकारी होने के नाते मैं आपसे, आप तरुण क्रांतिकारियों से अपील करता हूं कि आप अपनी अपनी जगहों पर डटे रहें और क्रांति की उपलब्धियों की रक्षा करें।"

किशकिन के आदेश, ७ नवंबर:

"अस्थायी सरकार की एक आज्ञप्ति द्वारा पेत्रोग्राद में शांति और सुव्यवस्था पुनःस्थापित करने के लिए... मुझे असाधारण अधिकार दिये गये हैं, और सभी नागरिक तथा सैनिक अधिकारियों की पूरी कमान मेरे हाथ में है..."

* * *

"अस्थायी सरकार ने मुझे जो अधिकार दिये हैं, उनके अनुसार मैं पेत्रोग्राद सैनिक हलक़े के कमांडेंट कर्नल पोल्कोवनिकोव को कार्यमुक्त करता हूं..."

उप-प्रधान मंत्री कोनोवालोव द्वारा हस्ताक्षरित आबादी के नाम अपील, ७ नवंबर:

"नागरिको! पितृभूमि की, जनतंत्र की और अपनी स्वतंत्रता की रक्षा कीजिये। कुछ पागलों ने जनता द्वारा निर्वाचित एकमात्र राजकीय सत्ता, अस्थायी सरकार के ख़िलाफ़ विद्रोह भड़काया है...

"अस्थायी सरकार के सदस्य अपना कर्तव्य-पालन कर रहे हैं, अपने पदों पर डटे हुए हैं और पितृभूमि के कल्याण, शांति तथा सुव्यवस्था की पुनःस्थापना तथा उस संविधान सभा को बुलाने के लिए काम करते जा रहे हैं, जो रूस की, सभी रूसी जातियों की भावी प्रभुसत्ता होगी..."

"नागरिको, आपको अवश्य ही अस्थायी सरकार का समर्थन करना चाहिए। आपको उसके अधिकार को प्रबल करना चाहिए। आपको अवश्य ही उन सिरफिरे लोगों का विरोध करना चाहिए, जिनके साथ स्वतंत्रता तथा सुव्यवस्था के सभी शत्रु और ज़ारशाही व्यवस्था के सभी अनुयायी संविधान सभा को छिन्न-भिन्न करने, क्रांति की उपलब्धियों तथा हमारी

प्रिय पितृभूमि के भविष्य को नष्ट करने के लिए मिल गये हैं...

"नागरिको! शांति और सुव्यवस्था तथा सभी जनों की ख़ुशहाली के नाम पर अस्थायी सरकार के अस्थायी अधिकार की रक्षा के लिए उसके गिर्द संगठित होइये..."

अस्थायी सरकार की घोषणा :

"...पेत्रोग्राद सोवियत ने घोषणा की है कि अस्थायी सरकार उलट दी गई है और उसने पीटर-पाल क़िले की और नेवा नदी में लंगर डाले हुए 'अव्रोरा' क्रूज़र की तोपों से शिशिर प्रासाद पर गोलबारी करने की धमकी देते हुए मांग की है कि राजकीय सत्ता उसके हवाले की जाये।

"सरकार अपनी सत्ता केवल संविधान सभा के हवाले कर सकती है; लिहाज़ा उसने समर्पण न करने और आबादी से तथा सेना से मदद मांगने का फ़ैसला किया है। एक तार **स्ताव्का** को भेजा गया है; और जो जवाब मिला है, उसमें कहा गया है कि सिपाहियों का एक बड़ा दस्ता भेजा जा रहा है...

"सेना और जनता मोर्चे के पीछे बग़ावत पैदा करने की बोल्शेविकों की ग़ैरज़िम्मेदार कोशिशों को ठुकरा दें..."

क़रीब नौ बजे सुबह केरेन्स्की मोर्चे के लिए रवाना हो गये...*

शाम होते होते साइकिलों पर सवार दो सिपाही पीटर-पाल क़िले की गैरिसन के प्रतिनिधियों की हैसियत से सैनिक स्टाफ़ के सदर मुक़ाम में पहुंचे। जिस सभा-कक्ष में किशकिन, रुतेनबेर्ग, पालचीन्स्की, जनरल बग्रातुनी, कर्नल पारादेलोव और काउंट तोल्स्तोई इकट्ठे थे, उसमें घुस कर उन्होंने मांग की कि सैनिक स्टाफ़ फ़ौरन समर्पण करें। उन्होंने धमकी दी कि इनकार की सूरत में सदर मुक़ाम पर गोलाबारी की जायेगी... दहशतज़दा सैनिक स्टाफ़-अधिकारियों ने दो मीटिंगें कीं और पसपा होकर

---

* जिन सैनिक दस्तों को केरेन्स्की ने बुलाया था, उनसे "मिलने" के लिए वह ११.३० बजे दिन में पेत्रोग्राद से रवाना हुए थे।—सं०

शिशिर प्रासाद चले गये ; लाल गार्डों ने सदर मुक़ाम पर क़ब्ज़ा कर लिया ...

दिन ढलते ढलते कई बोल्शेविक बख़्तरबंद गाड़ियां प्रासाद-चौक में चक्कर लगाने लगीं और सोवियत सिपाहियों ने **युंकरों** के साथ बातचीत करने की कोशिश की, मगर उन्हें कामयाबी न मिली ...

" शाम को क़रीब सात बजे शिशिर प्रासाद पर गोली-बर्षा आरंभ हुई ..

रात दस बजे तोपों ने तीन ओर से गोले दाग़ने शुरू किये, लेकिन ज़्यादातर गोले ख़ाली थे और केवल तीन श्रैप्नेल गोलियां प्रासाद के सामने के हिस्से पर लगीं ...

२

केरेन्स्की का पलायन

७ नवंबर की सुबह पेत्रोग्राद से रवाना होकर केरेन्स्की मोटर से गातचिना पहुंचे, जहां उन्होंने अपने लिए स्पेशल ट्रेन मांगी। शाम होते होते वह प्स्कोव प्रांत में ओस्त्रोव नामक स्थान में पहुंचे। दूसरे दिन सुबह मज़दूरों तथा सैनिकों के प्रतिनिधियों की स्थानीय सोवियत का असाधारण अधिवेशन हुआ, जिसमें कज़्ज़ाक प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया — ओस्त्रोव में छः हज़ार कज़्ज़ाक मौजूद थे।

केरेन्स्की ने बोल्शेविकों के ख़िलाफ़ सहायता की अपील करते हुए और प्रायः कज़्ज़ाकों को ही संबोधित करते हुए सभा में भाषण दिया। सैनिकों के प्रतिनिधियों ने प्रतिवाद प्रगट किया।

" आप यहां क्यों आये ?" लोग चिल्लाये। केरेन्स्की ने जवाब दिया, " बोल्शेविक विद्रोह को कुचलने के लिए कज़्ज़ाकों की सहायता मांगने के लिए ! " इस पर उग्र प्रतिवाद प्रगट किया गया, जो तब और भी उग्र हो गया, जब केरेन्स्की ने अपना भाषण जारी रखते हुए कहा, " मैंने कोर्नीलोव-विद्रोह को कुचल दिया, और मैं बोल्शेविकों को भी कुचल दूंगा ! " शोर-गुल यहां तक बढ़ा कि उन्हें मंच से उतर आना पड़ा।

सैनिक प्रतिनिधियों तथा उसूरी प्रदेश के कज़्ज़ाकों ने केरेन्स्की को गिरफ़्तार कर लेने का फ़ैसला किया, लेकिन दोन-प्रदेश के कज़्ज़ाकों ने

उन्हें ऐसा नहीं करने दिया और उन्हें रेल-गाड़ी में चढ़ा कर वहां से निकाल ले गये ... उसी दिन सैनिक क्रांतिकारी समिति स्थापित की गयी थी और उसने प्स्कोव की गैरिसन को सूचना देने की कोशिश की, परंतु टेलीफ़ोन तथा टेलीग्राफ़ के तार काट डाले गये थे ...

केरेन्स्की प्स्कोव नहीं पहुंच सके। क्रांतिकारी सिपाहियों ने रेल की लाइन काट दी थी, ताकि राजधानी के ख़िलाफ़ सेनायें न भेजी जा सकें। ८ नवंबर की रात को वह मोटर से लूगा पहुंचे, जहां, वहां पर तैनात शहीदी टुकड़ियों ने उनका अच्छा स्वागत किया।

दूसरे दिन वह रेल-गाड़ी से दक्षिण-पश्चिमी मोर्चे के लिए रवाना हो गये और सदर मुक़ाम में सैनिक समिति से मिले। लेकिन बोल्शेविकों की सफलता का समाचार पाकर पांचवीं सेना की ख़ुशी का ठिकाना न रहा था, और सैनिक समिति केरेन्स्की को किसी प्रकार की सहायता का वचन देने में असमर्थ थी।

वहां से वह मोगिल्योव **स्ताव्का** (सेना का सदर मुक़ाम) में पहुंचे, और हुक्म दिया कि मोर्चे के विभिन्न भागों से दस रेजीमेंटें पेत्रोग्राद के ख़िलाफ़ बढ़ें। सिपाहियों ने प्रायः सर्वसम्मति से इनकार कर दिया। जो रेजीमेंटें रवाना भी हुईं, वे रास्ते में रुक गयीं। अन्ततः क़रीब पांच हज़ार कज़्ज़ाकों ने ही उनका साथ दिया ...

३

शिशिर प्रासाद में लूटपाट

यह कहना मेरा इष्ट नहीं है कि शिशिर प्रासाद में कोई लूटपाट नहीं हुई। शिशिर प्रासाद के पतन के बाद और **पहले** भी काफ़ी चोरी हुई। परंतु समाजवादी-क्रांतिकारी समाचारपत्र 'नरोद' और नगर दूमा के सदस्यों का यह बयान कि बहुत सी क़ीमती चीज़ें उठा ली गयीं, जिनका कुल मूल्य ५० करोड़ रूबल से कम न होगा, अत्यधिक अतिरंजित है।

प्रासाद की सबसे अधिक महत्वपूर्ण कला-निधियां – चित्र, मूर्तियां, टैपेस्ट्रियां, दुर्लभ चीनी मिट्टी के बरतन तथा ज़िरह-बख़्तर – सितंबर के

महीने में मास्को भेज दिये गये थे। और बोल्शेविक सैनिकों द्वारा क्रेमलिन पर क़ब्ज़ा होने के दस दिन बाद भी वे शाही महल के तहख़ाने में अच्छी और महफ़ूज़ हालत में थे। मैं खुद इस बात की तसदीक़ कर सकता हूं...

फिर भी कुछ व्यक्तियों ने और विशेषतः आम पब्लिक ने, जिसे शिशिर प्रासाद पर क़ब्ज़ा होने के बादे कई दिनों तक बेरोक-टोक आने-जाने दिया गया, चांदी के बरतनों को, घड़ियों, क़ीमती चीनी मिट्टी और क़ीमती पत्थर के कुछ अनूठे फूलदानों और ओढ़नों-बिछौनों को उड़ा लिया, जिनकी कुल क़ीमत ५० हज़ार होगी।

सोवियत सरकार ने अविलंब उड़ायी गयी चीज़ों को प्राप्त करने के लिए कलाकारों और पुरातत्वविदों को लेकर एक विशेष आयोग गठित किया। १४ नवंबर को दो घोषणायें जारी की गयीं:

"पेत्रोग्राद के नागरिको!

"हम सभी नागरिकों से प्रबल आग्रह करते हैं कि ७–८ नवंबर की रात को शिशिर प्रासाद से जो चीज़ें चुरायी गयीं, उनमें से जो भी पायी जा सकती हैं, वे उन्हें ढूंढ़ने की अपनी भरसक पूरी कोशिश करें और उन्हें शिशिर प्रासाद के कमांडेंट के पास भेज दें।

"इन चुरायी हुई चीज़ों को हस्तगत करनेवाले, पुराविद और दूसरे लोग, जिनके बारे में यह साबित हो जाता है कि वे इन चीज़ों को छिपाये हुए हैं, इसके लिए क़ानूनन ज़िम्मेदार ठहराये जायेंगे और उन्हें सख़्त सज़ायें दी जायेंगी।

"अजायबघरों और कला-संग्रहालयों के कमिसार

ग० यातमानोव, ब० मान्देलबाउम"

* * *

"रेजीमेंटी तथा नौसैनिक समितियों के नाम

"७–८ नवंबर की रात को शिशिर प्रासाद में, जो रूसी जनता

की असंक्राम्य सम्पत्ति है, कुछ बहुमूल्य कला-वस्तुयें चुरा ली गयीं।

"हम हर आदमी से आग्रहपूर्वक अपील करते हैं कि वह अपनी भरसक इस बात की पूरी कोशिश करे कि चुरायी हुई चीज़ें शिशिर प्रासाद में वापिस पहुंचाई जायें।

"कमिसार ...

ग० यातमानोव, ब० मान्देलबाउम"

लूट का क़रीब आधा माल बरामद किया गया, जिसमें कुछ तो उन विदेशियों के सामान में पाया गया, जो रूस छोड़ कर जा रहे थे।

स्मोल्नी के सुझाव पर कलाकारों तथा पुरातत्वविदों का एक सम्मेलन हुआ, जिसमें शिशिर प्रासाद की निधियों की सूची बनाने के लिए एक आयोग की नियुक्ति की गई और उसे प्रासाद तथा पेत्रोग्राद में सभी कला-संग्रहालयों तथा राजकीय अजायबघरों का पूरा ज़िम्मा दिया गया। १६ नवंबर को, जब यह सूची बन रही थी, शिशिर प्रासाद पब्लिक के लिए बंद कर दिया गया था...

नवंबर के अंतिम सप्ताह में जन-कमिसार परिषद् ने एक आज्ञप्ति जारी की, जिसके द्वारा शिशिर प्रासाद का नाम बदल कर "जन-संग्रहालय" कर दिया गया, उसकी पूरी ज़िम्मेदारी कलाकार--पुरातत्व-विद् आयोग को सौंप दी गई और अब से प्रासाद के भीतर समस्त शासकीय क्रिया-कलाप की मनाही की घोषणा की गयी...

४

महिला-बटालियन की महिलाओं के साथ बलात्कार

शिशिर प्रासाद पर क़ब्ज़ा किये जाने के तुरंत बाद बोल्शेविक-विरोधी अख़बारों में प्रासाद की रक्षा के लिये नियुक्त महिला-बटालियन के बारे में तरह तरह की सनसनीखेज कहानियां छापी गईं और ये कहानियां नगर दूमा में भी सुनाई गईं। कहा गया कि बटालियन की कुछ

लड़कियों को खिड़कियों में से नीचे सड़क पर उछाल दिया गया, बाक़ी लड़कियों में अधिकांश के साथ बलात्कार किया गया और जिन विभीषिकाओं से उन्हें गुज़रना पड़ा, उनके फलस्वरूप कितनी ही लड़कियों ने आत्महत्या कर ली।

नगर दूमा ने इस मामले की तहक़ीक़ात के लिये एक आयोग नियुक्त किया। १६ नवंबर को आयोग महिला-बटालियन के सदर मुक़ाम, लेवाशोवो से लौटा। श्रीमती तिर्कोवा ने बताया कि लड़कियों को पहले पाव्लोव्स्की रेजीमेंट की बारिकों में ले जाया गया, जहां कुछ के साथ बुरा सलूक किया गया। लेकिन इस वक़्त अधिकांश लड़कियां लेवाशोवो में थीं और बाक़ी छिटफुट निजी घरों में थीं। आयोग के एक दूसरे सदस्य डा० मान्देल-बाउम ने दोटूक कहा कि **एक भी** औरत को शिशिर प्रासाद की खिड़की से नीचे **नहीं** फेंका गया, कि **एक भी** ज़ख़्मी **नहीं** हुई, कि तीन के साथ बलात्कार किया गया और एक ने आत्महत्या की और पुर्ज़ा छोड़ गई, जिसमें लिखा हुआ था कि वह "अपने आदर्शों से निराश हुई थी"।

२१ नवंबर को सैनिक क्रांतिकारी समिति ने स्वयं लड़कियों के अनुरोध पर महिला-बटालियन को आधिकारिक रूप से भंग कर दिया, और इन लड़कियों ने फ़ौजी वर्दी उतार कर फिर से नागरिक वेष-भूषा धारण की।

लुईसे ब्रयांत की पुस्तक, «Six Red Months in Russia» (रूस में छः लाल महीने) में महिला-सिपाहियों के इन्हीं दिनों के हाल बारे में बड़ा रोचक वर्णन है।

पांचवें अध्याय की टिप्पणियां

१

अपीलें और घोषणायें

सैनिक क्रांतिकारी समिति की ओर से, ८ नवंबर

"सभी सैनिक समितियों तथा सैनिकों के प्रतिनिधियों की सभी पंचायतों के नाम।

"पेत्रोग्राद की गैरिसन ने केरेन्स्की की सरकार का तख़्ता उलट दिया है, जिस सरकार ने क्रांति तथा जनता पर अपना हाथ उठाया था... मोर्चे तथा देश को यह समाचार देते हुए सैनिक क्रांतिकारी समिति सभी सिपाहियों से अनुरोध करती है कि वे अपने अफ़सरों के आचरण पर सतर्क दृष्टि रखें। जो अफ़सर प्रगट तथा स्पष्ट रूप से क्रांति का पक्ष नहीं लेते, उन्हें फ़ौरन शत्रु समझ कर गिरफ़्तार कर लेना चाहिये।

"पेत्रोग्राद सोवियत नई सरकार के कार्यक्रम की निम्नलिखित रूप से व्याख्या करती है: तत्काल सामान्य जनवादी शांति-संधि का प्रस्ताव, ज़मींदारों की ज़मीनों का फ़ौरन किसानों के हाथों में अंतरण, समस्त सत्ता का सोवियतों के हाथों में अंतरण और संविधान सभा का ईमानदारी से बुलाया जाना। जन-क्रांतिकारी सेना को उन टुकड़ियों को क़तई पेत्रोग्राद भेजे जाने देना नहीं चाहिए, जिनके पक्का होने के बारे में शक हो। तर्क से, नैतिक आग्रह से काम लीजिये, परंतु यदि इससे काम न चले ता कठोर बल-प्रयोग द्वारा इन सैनिकों की गतिविधि को रोक दीजिये।

"यह आवश्यक है कि मौजूदा आदेश सेना की प्रत्येक शाखा के प्रत्येक सैनिक दस्ते में तत्काल पढ़ कर सुनाया जाये। जो भी व्यक्ति इस आदेश को आम सिपाहियों से छिपाता है... वह क्रांति के ख़िलाफ़ भयंकर अपराध करता है और उसे क्रांतिकारी क़ानून की पूरी सख़्ती के साथ सज़ा दी जायेगी।

"सिपाहियो! शांति, रोटी, ज़मीन और जनता की सरकार के लिये उठिये!"

"सभी मोर्चे और पिछाये की सेनाओं, कोरों, डिवीज़नों, रेजीमेंटों और कंपनियों की समितियों के और मज़दूरों, सैनिकों तथा किसानों के प्रतिनिधियों की सभी सोवियतों के नाम।

"सिपाहियो और क्रांतिकारी अफ़सरो!

"मज़दूरों, सैनिकों तथा किसानों के बहुमत की राय से सैनिक क्रांतिकारी समिति ने आज्ञप्ति जारी की है कि जनरल कोर्नीलोव और उनके षड्यंत्र में शामिल सभी साथी-संघाती पीटर-पाल क़िले में कैद

किये जाने और उन पर सैनिक क्रांतिकारी न्यायालय में मुक़दमा चलाने के लिए फ़ौरन पेत्रोग्राद लाये जायें...

"समिति यह घोषणा करती है कि जो भी इस आज्ञप्ति के पालन का प्रतिरोध करेगा, वह क्रांति के प्रति विश्वासघाती है, और उसके आदेशों को शून्य और व्यर्थ घोषित किया जाता है।

मज़दूरों तथा सैनिकों के प्रतिनिधियों की
पेत्रोग्राद सोवियत के अधीन
सैनिक क्रांतिकारी समिति"

"मज़दूरों, सैनिकों तथा किसानों के प्रतिनिधियों की सभी प्रांतीय तथा मंडल सोवियतों के नाम।

"सोवियतों की अखिल रूसी कांग्रेस के प्रस्ताव द्वारा भूमि समितियों के सभी गिरफ़्तार सदस्यों को फ़ौरन रिहा किया जाता है। जिन कमिसारों ने इन्हें गिरफ़्तार किया था, वे हिरासत में ले लिये जाने वाले हैं।

"इस घड़ी से समस्त सत्ता सोवियतों के हाथ में है। अस्थायी सरकार के कमिसार हटाये जाते हैं। विभिन्न स्थानीय सोवियतों के अध्यक्षों को आमंत्रित किया जाता है कि वे सीधे क्रांतिकारी सरकार के साथ संबंध स्थापित करें।

सैनिक क्रांतिकारी समिति"

२

नगर दूमा का प्रतिवाद

"सर्वाधिक जनवादी सिद्धान्तों के आधार पर निर्वाचित केंद्रीय नगर दूमा ने भारी विशृंखलता की घड़ी में नगरपालिका के कामकाज का तथा खाद्य-सामग्री के प्रबंध का भार ग्रहण किया है। संविधान सभा के चुनावों से तीन सप्ताह पहले और बाहरी दुश्मन के ख़तरे के बावजूद बोल्शेविक पार्टी शस्त्र-बल से एकमात्र वैध क्रांतिकारी सत्ता को हटाकर, उस समय नगरपालिका स्वायत्त शासन के अधिकारों तथा स्वतंत्रता का

अतिक्रमण करने का प्रयास कर रही है और अपने कमिसारों तथा अपनी अवैध सत्ता की अधीनता स्वीकार करने की मांग कर रही है।

"इस भयानक और दुःखद घड़ी में पेत्रोग्राद नगर दूमा अपने निर्वाचकों के सम्मुख तथा समस्त रूस के सम्मुख प्रबल रूप से घोषणा करती है कि वह अपने अधिकारों तथा अपनी स्वतंत्रता का किसी प्रकार का अतिक्रमण सहन नहीं करेगी और राजधानी की जनता के संकल्प द्वारा आहूत हो कर उसने जो उत्तरदायित्व ग्रहण किया है, उसका परित्याग नहीं करेगी।

"पेत्रोग्राद की केंद्रीय नगर दूमा रूसी जनतंत्र की सभी दूमाओं तथा ज़ेम्सत्वोओं से अपील करती है कि वे रूसी क्रांति की एक महत्तम उपलब्धि – जन-स्वशासन की स्वाधीनता तथा अनुल्लंघनीयता की रक्षा के लिये एकजुट हों।"

३

भूमि आज्ञप्ति – किसानों का "नकाज़"

"भूमि का प्रश्न अपने समग्र व्यापक रूप में केवल जन-संविधान सभा द्वारा ही हल किया जा सकता है।

"भूमि के प्रश्न का सबसे न्यायपूर्ण हल निम्नलिखित ढंग से होना चाहिए :

"१) **भूमि पर निजी स्वामित्व हमेशा के लिए ख़त्म किया जाता है ;** भूमि न बेची-ख़रीदी जा सकती है, न लगान या रेहन पर दी जा सकती है और न किसी भी अन्य प्रकार से हस्तान्तरित की जा सकती है।

"सारी भूमि : **राज्य की, राज-परिवार के सदस्यों की, मठों की, गिरजाघरों की, फ़ैक्टरियों की, पुश्तैनी ज्येष्ठाधिकार की, निजी, सार्वजनिक, किसानों आदि की, बिना मुआवज़ा दिये ज़ब्त कर ली जायेगी,** सार्वजनिक सम्पत्ति में बदल दी जायेगी और ज़मीन जोतने वालों द्वारा उपयोज्य होगी।

"सम्पत्ति के इस उलट-फेर की लपेट में आनेवालों को केवल उतने ही समय के लिए सार्वजनिक सहायता का अधिकारी समझा जायेगा, जितना अपने को जीवन की नयी परिस्थितियों के अनुकूल ढालने के लिए उन्हें आवश्यक होगा।

"२) समस्त खनिज सम्पदा : खनिज धातु, तेल, कोयला, नमक आदि और त्यों ही राज्य के लिए महत्व रखनेवाले वन तथा जल-क्षेत्र एकमात्र राज्य द्वारा उपयोज्य होंगे। सारी छोटी छोटी नदियां, झीलें, वन आदि स्थानीय स्वशासन संस्थाओं के बन्दोबस्त के तहत सामुदायिक उपयोग के लिए उपलब्ध होंगे।

" ३) **ऊंचे स्तर की वैज्ञानिक** खेतीबारी वाली ज़मीनें, जैसे बाग़, बागान, बीजों की क्यारियां, नर्सरियां, पौध-घर आदि, **बंटवारे के तहत नहीं आयेंगी, बल्कि आदर्श फ़ार्म बना दी जाएंगी** और अपने आकार तथा महत्व के अनुसार एकमात्र **राज्य अथवा समुदायों** के उपयोग के लिए दे दी जाएंगी।

"शहरों तथा गांवों में घरों के साथ लगी ज़मीनें, खाना-बाग़ों समेत, अपने वर्तमान मालिकों के उपयोग में रह जायेंगी और ज़मीन के उन टुकड़ों का आकार तथा उनके उपयोग के लिए लगाये जानेवाले कर का स्तर क़ानून द्वारा निर्धारित होगा।

"४) घोड़ा-फ़ार्म, अच्छी नस्ल के पशु-पालन तथा मुर्ग़ी-पालन आदि के सरकारी तथा निजी फ़ार्म ज़ब्त कर लिए जाएंगे, सारी जनता की सम्पत्ति बन जायेंगे और अपने आकार तथा महत्त्व के अनुसार एकमात्र राज्य या समुदायों के उपयोग में आयेंगे।

"मुआवज़े के प्रश्न पर संविधान सभा विचार करेगी।

" ५) ज़ब्त की गयी ज़मीनों के सभी हल-बैल ज़मीनों के आकार तथा महत्व के अनुसार बिना मुआवज़ा के एकमात्र राज्य या समुदाय के उपयोग में आयेंगे।

"जिन किसानों के पास बहुत थोड़ी ज़मीन है, उनके कृषि-संबंधी साज़-सामान ज़ब्त नहीं किये जायेंगे।

"६) भूमि के उपयोग का अधिकार रूसी राज्य के हर उस नागरिक को (स्त्री-पुरुष का भेदभाव किये बिना) दिया जायेगा, जो स्वयं अपने श्रम से, अपने परिवारवालों की सहायता से या साझे में उसपर खेती करना चाहेगा, परंतु केवल उसी समय तक के लिए जब तक वह उसपर खेती कर सकेगा। उजरती मज़दूर लगाने की इजाज़त नहीं है।

"ग्राम-समुदाय के किसी सदस्य की लगातार दो वर्ष तक की

इत्तफ़ाक़ी शारीरिक अक्षमता की स्थिति में, जब तक वह फिर काम करने योग्य न हो जाये, तब तक उसकी भूमि पर सामूहिक रूप से खेती करके उसकी सहायता करने के लिए ग्राम-समुदाय बाध्य है।

"जो किसान वृद्धावस्था या अस्वस्थता के कारण स्थायी रूप से अक्षम हो गये हैं और अपनी भूमि पर स्वयं खेती करने में असमर्थ हैं, उनको उस भूमि के उपयोग का अधिकार नहीं रह जायेगा, परंतु उसके बदले में उन्हें राज्य की ओर से पेंशन मिलेगी।

"७) भूमि का उपयोग समानता के आधार पर किया जायेगा, अर्थात् स्थानीय परिस्थितियों को देखते हुए श्रम-प्रतिमान अथवा उपभोग-प्रतिमान के अनुसार मेहनतकशों के बीच भूमि का बंटवारा किया जायेगा।

"भूमि के उपयोग के रूपों पर बिल्कुल पाबन्दी नहीं होगी। इस का फ़ैसला हर गांव और बस्ती में अलग अलग होगा कि ज़मीन पारिवारिक हो, गंवबहरी फ़ार्मों की हो, सामुदायिक हो, अथवा सहकारी हो।

"८) ज़ब्त होने के बाद सारी भूमि सार्वजनिक भू-निधि में शामिल हो जायेगी। मेहनतकशों के बीच उसके बंटवारे का काम जनवादी ढंग से संगठित वर्गेतर ग्रामीण तथा नागरिक समुदायों से लेकर केंद्रीय प्रादेशिक संस्थाओं तक, समस्त स्थानीय तथा केन्द्रीय स्वशासन-संस्थाओं के हाथ में रहेगा।

"जनसंख्या में वृद्धि और कृषि की उत्पादनशीलता तथा उसके वैज्ञानिक स्तर में उन्नति के अनुसार भू-निधि का समय-समय पर पुनर्वितरण किया जायेगा।

"खेतों की सीमाओं की तबदीली की हालत में खेत के मूल केन्द्रीय भाग को ज्यों का त्यों रहने दिया जायेगा।

"अपने समुदाय को छोड़कर चले जानेवाले सदस्यों की भूमि भू-निधि में वापस चली जायेगी, जिस पर सब से पहला अधिकार उन लोगों को दिया जायेगा, जो छोड़कर जानेवाले सदस्यों के निकट संबंधी होंगे या उनके द्वारा नामज़द किए गए होंगे।

"यदि भू-निधि में वापसी के समय किसी ज़मीन में लगी खाद या किये गये सुधारों का कोई अंश ऐसा हो, जिसका पूरी तरह लाभ न उठाया गया हो, तो उतने अंश की लागत का मुआवज़ा दिया जायेगा।

"यदि किसी इलाके में उपलब्ध भू-निधि स्थानीय निवासियों की

आवश्यकता के लिए अपर्याप्त हो, तो अतिरिक्त आबादी को कहीं और बसाया जायेगा।

"पुनर्वासन के संगठन की ज़िम्मेदारी राज्य अपने ऊपर लेगा और उसका तथा औज़ार आदि बहम पहुंचाने का ख़र्च भी देगा।

"पुनर्वासन निम्न क्रम में किया जायेगा: पहले वे भूमिहीन किसान जो नयी जगह में जाकर बसना चाहते हैं, फिर समुदाय के ऐसे सदस्य जिनकी आदतें ख़राब हैं, या जो भगोड़े हैं आदि, और अंत में चिट्ठी डालकर या आपस के समझौते द्वारा।

"इस आदेश के समूचे अन्तर्य को, सारे रूस के वर्ग-चेतन किसानों के विशाल बहुमत की परम इच्छा की अभिव्यक्ति मानकर, अस्थायी क़ानून घोषित किया जाता है, जिसे संविधान सभा बुलाये जाने तक के लिए यथासंभव फ़ौरन लागू किया जायेगा और जहां तक इसके कुछ उपबंधों का सम्बन्ध है, उन्हें किसान-प्रतिनिधियों की उयेज़्द-सोवियतों के निर्णयानुसार यथाक्रम धीरे-धीरे लागू किया जायेगा।"

४

भूमि और भगोड़े सैनिक

भूमि पर भगोड़े सैनिकों के अधिकारों के बारे में कोई फ़ैसला करने के लिये सरकार को बाध्य नहीं होना पड़ा। युद्ध का अंत तथा सेना का वियोजन होने से भगोड़े सैनिकों की समस्या अपने आप हल हो गई...

५

जन-कमिसार परिषद्

[illegible] जन-कमिसार परिषद् के सभी सदस्य बोल्शेविक थे। इसका सारा दोष बोल्शेविकों का न था। ८ नवंबर को उन्होंने वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारी पार्टी के सदस्यों को कई पोर्टफ़ोलियो देने का प्रस्ताव किया, परंतु उन्होंने इनकार कर दिया।

छठे अध्याय की टिप्पणी

१

अपीलें और दोषारोपी घोषणायें

सभी नागरिकों तथा समाजवादी-क्रांतिकारी पार्टी के सैनिक संगठनों मे अपील।

"बोल्शेविकों की अहमक़ाना कोशिश बिल्कुल ही नाकामयाब होने वाली है। गैरिसन में असंतोष फैला हुआ है... मंत्रालय ठप हैं, रोटी नदारद है। मुट्ठी भर बोल्शेविकों को छोड़ कर सभी दलों ने सोवियतों की कांग्रेस को छोड़ दिया है। बोल्शेविक अकेले पड़ गये हैं! हर तरह के दुरुपयोग, संस्कृति-विनाश तथा लूटपाट के काम, शिशिर प्रासाद पर गोलाबारी , मनमानी गिरफ़्तारियां – बोल्शेविकों द्वारा किये गये इन सभी अपराधों ने उनके ख़िलाफ़ अधिकांश मल्लाहों और सिपाहियों के गुस्से को उभाड़ा है। **त्सेन्त्रोफ़्लोत** बोल्शेविकों के हुक्म की तामील करने से इनकार करता है...

"हम सभी समझदार अंशकों का आह्वान करते हैं कि वे देश तथा क्रांति की उद्धार समिति के गिर्द एकजुट हों; पार्टी की केंद्रीय समिति की पुकार होते ही उन प्रतिक्रांतिकारियों के ख़िलाफ़ कार्रवाई करने को कटिबद्ध रहने के लिये गंभीर क़दम उठायें, जो निस्सन्देह बोल्शेविक दुस्साहसिकता द्वारा भड़काये जाने वाले इन फ़सादों से फ़ायदा उठाने की कोशिश करेंगे, और वे बाहरी दुश्मन पर भी कड़ी नज़र रखें, जो इस मौक़े का, जब मोर्चाबंदी कमज़ोर कर दी गई है, फ़ायदा उठाना चाहेगा..."

समाजवादी-क्रांतिकारी पार्टी की
केंद्रीय समिति की सैनिक शाखा

* * *

'प्राव्दा' से एक उद्धरण:

"केरेन्स्की कौन है?

"एक बलाद्ग्राही, जिसकी जगह कोर्नीलोव और किशकिन के साथ पीटर-पाल जेल में है।

"एक मुजरिम और मज़दूरों, सिपाहियों और किसानों को, जिन्होंने उसमें विश्वास किया, दग़ा देने वाला ग़द्दार।

"केरेन्स्की? सिपाहियों का हत्यारा!"

"केरेन्स्की? दिन-दहाड़े किसानों को सूली पर चढ़ाने वाला जल्लाद!

"केरेन्स्की? मज़दूरों का गला घोंटने वाला!

"ऐसा है यह कोर्नीलोव का ही अवतार, जो इस समय स्वतंत्रता की हत्या करना चाहता है!"

सातवें अध्याय की टिप्पणियां

१

दो आज्ञप्तियां

प्रेस के बारे में

क्रांति तथा उसके तुरंत बाद के दिनों की गंभीर निर्णायक घड़ी में अस्थायी क्रांतिकारी समिति को मजबूर होकर सभी रंगों के प्रतिक्रांति-कारी अख़बारों के ख़िलाफ़ कार्रवाइयों का एक पूरा सिलसिला शुरू करना पड़ रहा है।

ऐसा करते ही चारों ओर से आवाज़ें आने लगती हैं कि प्रेस-स्वातंत्र्य का अतिक्रमण कर नई समाजवादी सत्ता अपने ही कार्यक्रम के मूलभूत सिद्धांतों का उल्लंघन कर रही है।

मज़दूरों तथा किसानों की सरकार जनता का ध्यान इस बात की ओर दिलाती है कि हमारे देश में उदारतावाद की इस आड़ में मिल्की वर्गों को गुप्त रूप से यह अवसर प्राप्त होता है कि वे प्रेस की समस्त सुविधाओं का अधिकांश भाग स्वयं हड़प लें और इस प्रकार जन-मानस को विषाक्त करें तथा जन-साधारण की चेतना को विभ्रान्त करें।

सभी जानते हैं कि पूंजीवादी अख़बार पूंजीपति वर्ग के सबस शक्तिशाली साधनों में हैं। विशेषतः इस नाज़ुक घड़ी में, जब मज़दूरों और किसानों की नई सत्ता संहत हो रही है और जब ये अख़बार बमों और मशीनगनों से कुछ कम ख़तरनाक नहीं हैं, उन्हें शत्रु के हाथ में छोड़ना असंभव है। यही कारण है कि भ्रष्ट, ज़रख़रीद अख़बार जो कूड़ा-करकट और कुत्सा-निंदा छाप रहे हैं, जिससे वे जनता की नई विजय को अभिभूत कर प्रसन्न होंगे, उसे रोकने की गरज़ से अस्थायी रूप से असाधारण कार्रवाइयां की गई हैं।

नई व्यवस्था संहत हुई नहीं कि अख़बारों के ख़िलाफ़ सभी प्रशासकीय कार्रवाइयां रोक दी जायेंगी और उन्हें, क़ानून के सामने-ज़िम्मेदारी की हद के अंदर, उदार से उदार तथा प्रगतिशील से प्रगतिशील नियमों के अनुसार पूर्ण स्वतंत्रता दी जायेगी ...

फिर भी इस बात को ध्यान में रखते हुए कि नाज़ुक घड़ियों में भी प्रेस-स्वातंत्र्य पर कोई भी प्रतिबंध वहीं तक स्वीकार्य है, जहां तक कि वह अनिवार्य है, जन-कमिसार परिषद् निम्नलिखित आदेश देती है:

१. निम्नलिखित श्रेणियों के समाचारपत्र बंद किये जा सकते हैं:

(क) वे समाचारपत्र, जो मज़दूरों तथा किसानों की सरकार का खुल कर मुक़ाबला करने और उससे नाफ़रमां होने के लिए भड़काते हैं;

(ख) जो ज़ाहिरा और जानबूझकर ख़बरों को तोड़-मरोड़ कर उलझाव पैदा कर रहे हैं;

(ग) जो क़ानून द्वारा दंडनीय अपराधपूर्ण प्रकार की हरकतों के लिए उकसावा दे रहे हैं।

२. जन-कमिसार परिषद् के निर्णय द्वारा ही किसी भी समाचारपत्र को अस्थायी अथवा स्थायी रूप से बंद किया जा सकता है।

३. मौजूदा आज्ञप्ति अस्थायी प्रकार की है और जब सार्वजनिक जीवन की सामान्य अवस्थायें पुनःस्थापित हो जायेंगी, उसे एक विशेष **उकाज़** (आदेश) द्वारा रद्द कर दिया जायेगा।

जन-कमिसार परिषद् के अध्यक्ष
व्लादीमिर उल्यानोव (लेनिन)

मज़दूर-मिलिशिया के बारे में

१. मज़दूरों तथा सैनिकों के प्रतिनिधियों की सभी सोवियतें मज़दूर-मिलिशिया क़ायम करेंगी।

२. यह मज़दूर-मिलिशिया पूर्णतः मज़दूरों तथा सैनिकों के प्रतिनिधियों की सोवियतों के अधीन होगी।

३. यह आवश्यक है कि सैनिक तथा नागरिक अधिकारी मज़दूर-मिलिशिया को हथियारों से लैस करने और उसे तकनीकी साज़-सामान की सप्लाई करने में, सरकार के युद्ध-विभाग के हथियारों को अधिकार में ले लेने की हद तक भी, हर प्रकार की सहायता दें।

४. यह आज्ञप्ति तार द्वारा जारी की जायेगी।

आंतरिक मामलों के जन-कमिसार

अ० इ० रीकोव

इस आज्ञप्ति ने पूरे रूस में लाल गार्डों के दस्तों की स्थापना को बढ़ावा दिया, जो आगामी गृहयुद्ध में सोवियत सरकार के सबसे महत्वपूर्ण साधन सिद्ध हुए।

२

हड़ताल-कोष

हड़ताली सरकारी कर्मचारियों तथा बैंक-क्लर्कों के लिये स्थापित कोष में पेत्रोग्राद तथा दूसरे नगरों के बैंकों और कोठियों तथा रूस में व्यापार करने वाली विदेशी कंपनियों ने भी अनुदान दिये थे। बोल्शेविकों के खिलाफ़ हड़ताल करने के लिए सहमत सभी लोगों को पूरी तनख़ाहें दी गईं और कुछ की तनख़ाहें तो बढ़ाई भी गईं। हड़ताल-कोष के लिए चंदा देने वाले लोगों ने जब यह समझ लिया कि बोल्शेविक दृढ़ रूप से सत्तारूढ़ हो गये हैं और फलतः जब उन्होंने हड़ताल के लिए पैसा देने से इनकार कर दिया, हड़ताल टूट गई।

आठवें अध्याय की टिप्पणियां

१

केरेन्स्की का बढ़ाव

नौ नवंबर को केरेन्स्की और उनके कज़्ज़ाक गातचिना में पहुंचे, जहां की गैरिसन ने, जिसमें बुरी तरह फूट पड़ गई थी और जो दो गुटों में बंट गई थी, फ़ौरन हथियार डाल दिये। गातचिना सोवियत के सदस्य गिरफ़्तार कर लिये गये। पहले तो उन्हें गोली मार देने की धमकी दी गई, लेकिन बाद में नेकचलनी का मुचलका देने पर उन्हें रिहा कर दिया गया।

कज़्ज़ाकों के अगले दस्तों ने बिना किसी ख़ास विरोध के पाव्लोव्स्क, अलेक्सान्द्रोव्स्क और दूसरे स्टेशनों पर क़ब्ज़ा कर लिया और दूसरे दिन, अर्थात् १० नवंबर की सुबह वे त्सारस्कोये सेलो के पास पहुंच गये। देखते देखते वहां की गैरिसन तीन गुटों में बंट गई – अफ़सर, जो केरेन्स्की के प्रति वफ़ादार थे; कुछ बेसनद अफ़सर और सिपाही, जिन्होंने अपने को "तटस्थ" घोषित किया; और अधिकांश आम सिपाही, जिन्होंने बोल्शेविकों का पक्ष ग्रहण किया। नेतृत्व तथा संगठन के अभाव में बोल्शेविक सिपाही पीछे राजधानी की ओर हटे। स्थानीय सोवियत भी पीछे हटकर पूल्कोवो के गांव में चली आयी।

पूल्कोवो से त्सारस्कोये सेलो सोवियत के छः सदस्य एक मोटर में घोषणायें भर कर कज़्ज़ाकों के बीच प्रचार करने के लिये गातचिना गये। उन्होंने प्रायः दिन भर गातचिना का चक्कर लगाया और एक कज़्ज़ाक बारिक से दूसरी बारिक समझाते-बुझाते, बहस करते और अपील करते घूमते फिरे। शाम होते होते कुछ अफ़सरों को उनकी मौजूदगी का पता लगा और उन्हें गिरफ़्तार कर जनरल क्रास्नोव के सामने लाया गया, जिन्होंने कहा, "आप लोगों ने कोर्नीलोव के ख़िलाफ़ हथियार उठाया और अब आप केरेन्स्की की मुख़ालफ़त कर रहे हैं। मैं आप सब को गोली से उड़वा दूंगा!"

जिस आज्ञा द्वारा उन्हें पेत्रोग्राद हलक़े का मुख्य सेनापति नियुक्त किया गया था, उसे उनके सामने पढ़ते हुए क्रास्नोव ने पूछा कि क्या वे

बोल्शेविक हैं? उन्होंने जवाब दिया कि हां हैं, जिस पर क्रास्नोव वहां से चले गये। थोड़ी देर बाद एक अफ़सर ने वहां आकर यह कहते हुए उन्हें रिहा कर दिया कि वह जनरल क्रास्नोव की आज्ञा से ऐसा कर रहा है...

इस बीच पेत्रोग्राद से शिष्टमंडल पर शिष्टमंडल चला आ रहा था— दूमा का, उद्धार समिति का और अंत में **विक्जेल** का शिष्टमंडल। रेल मज़दूर यूनियन ने आग्रह प्रगट किया कि गृहयुद्ध रोकने के लिये कोई समझौता किया जाये और मांग की कि केरेन्स्की बोल्शेविकों के साथ बातचीत करें और पेत्रोग्राद पर अपना बढ़ाव रोक दें। इनकार की सूरत में **विक्जेल** ने ११ नवंबर की आधी रात से आम हड़ताल शुरू करने की धमकी दी।

केरेन्स्की ने कहा कि उन्हें इस मामले में समाजवादी मंत्रियों तथा उद्धार समिति के साथ बातचीत करने का मौक़ा दिया जाये। ज़ाहिर था कि वह दुविधा में पड़े हुए थे।

११ तारीख़ को कज़्ज़ाकों के अगले दस्ते क्रास्नोये सेलो पहुंच गये, जहां से स्थानीय सोवियत तथा सैनिक क्रांतिकारी समिति की पंचमेल सेना हड़बड़ी में भाग खड़ी हुई। उनमें से कुछ ने तो अपने हथियार भी डाल दिये... उसी रात वे पूल्कोवो की सरहद पर भी पहुंचे, जहां पहली बार उनका असल तौर पर मुक़ाबला किया गया...

केरेन्स्की की सेना को छोड़ कर चले आने वाले कज़्ज़ाक सिपाही छिटपुट पेत्रोग्राद पहुंचने लगे। उन्होंने कहा कि केरेन्स्की ने उन्हें ठगा था और मोर्चों पर ऐसी घोषणायें प्रसारित की थीं, जिनमें कहा गया था कि पेत्रोग्राद धू-धू कर जल रहा है, कि बोल्शेविकों ने जर्मनों को घुस आने का न्योता दिया है और वे औरतों और बच्चों को क़त्ल कर रहे हैं और मनमानी लूट मचाये हुए हैं...

सैनिक क्रांतिकारी समिति ने फ़ौरन हज़ारों की संख्या में अपीलें छपवा कर दर्जनों "प्रचारकर्ताओं" को कज़्ज़ाकों को वास्तविक परिस्थिति से परिचित कराने के लिये भेजा...

२

सैनिक क्रांतिकारी समिति की घोषणायें

"मज़दूरों, सैनिकों तथा किसानों के प्रतिनिधियों की सभी सोवियतों के नाम।

मज़दूरों, सैनिकों तथा किसानों के प्रतिनिधियों की सोवियतों की अखिल रूसी कांग्रेस स्थानीय सोवियतों पर यह ज़िम्मेदारी डालती है कि वे अविलंब सभी प्रतिक्रांतिकारी तथा यहूदी-विरोधी उपद्रवों और सभी दंगों-फ़सादों का, चाहे वे जिस प्रकार के भी क्यों न हों, मुक़ाबला करने के लिये ज़ोरदार से ज़ोरदार क़दम उठायें। मज़दूरों, किसानों तथा सैनिकों की क्रांति की प्रतिष्ठा किसी भी प्रकार के उपद्रव को सहन नहीं कर सकती...

"पेत्रोग्राद के लाल गार्डों, क्रांतिकारी गैरिसन तथा मल्लाहों ने राजधानी में पूर्ण शांति तथा सुव्यवस्था क़ायम रखी है।

"मज़दूरो, सिपाहियो तथा किसानो, आपको सर्वत्र पेत्रोग्राद के मज़दूरों और सिपाहियों की मिसाल पर चलना चाहिए।

"साथी सिपाहियो और कज़्ज़ाको, सच्ची क्रांतिकारी सुव्यवस्था क़ायम रखने की ज़िम्मेदारी आपके कंधों पर आ पड़ी है...

"समूचे क्रांतिकारी रूस तथा पूरी दुनिया की निगाहें आपके ऊपर लगी हुई हैं...

"सोवियतों की अखिल रूसी कांग्रेस आदेश करती है:

"मोर्चे पर केरेन्स्की द्वारा दोबारा लागू किये गये मृत्यु-दंड का अंत किया जायेगा।

"देश में पूर्ण प्रचार-स्वातंत्र्य पुन:स्थापित किया जायेगा। सभी सिपाही तथा क्रांतिकारी अफ़सर, जो इस समय तथाकथित राजनीतिक 'अपराधों' के लिए जेल में बंद हैं, फ़ौरन रिहा कर दिये जायेंगे।

"भूतपूर्व प्रधान मंत्री केरेन्स्की, जनता ने जिनका तख़्ता उलट दिया है, सोवियतों की कांग्रेस की अधीनता स्वीकार करने से इनकार करते हैं और

अखिल रूसी कांग्रेस द्वारा निर्वाचित क़ानूनी सरकार—जन-कमिसार परिषद्—के ख़िलाफ़ संघर्ष करने की कोशिश करते हैं। मोर्चे ने केरेन्स्की की मदद करने से इनकार कर दिया है। मास्को ने नयी सरकार का समर्थन किया है। अनेक नगरों (मीन्स्क, मोगिल्योव , ख़ार्कोव) में सत्ता सोवियतों के हाथ में है। कोई भी पैदल टुकड़ी मज़दूरों और किसानों की सरकार के ख़िलाफ़ अभियान करने के लिये तैयार नहीं है, उस सरकार के ख़िलाफ़, जिसने सेना तथा जनता के दृढ़ संकल्प के अनुसार शांति-वार्ता शुरू की है और किसानों को भूमि दी है...

"हम सार्वजनिक रूप से चेतावनी देते हैं कि अगर कज़्ज़ाक केरेन्स्की को रोकते नहीं हैं, जिन्होंने कज़्ज़ाकों को धोखा दिया है और जो पेत्रोग्राद पर चढ़ाई करने में उनका नेतृत्व कर रहे हैं, तो क्रांतिकारी शक्तियां क्रांति की बहुमूल्य उपलब्धियों – शांति तथा भूमि – की रक्षा के लिए पूरे ज़ोर-शोर से उठ खड़ी होंगी।

"पेत्रोग्राद के नागरिको! केरेन्स्की राजधानी को जर्मनों के हवाले कर देने की इच्छा करनेवाले किशकिन, नगरपालिका खाद्य-संभरण का अंतर्ध्वंस करने वाले यमदूत-सभाई रुतेनबेर्ग और तमाम जनवादियों द्वारा घृणा की दृष्टि से देखे जाने वाले पालचीन्स्की के हाथों में अपने अधिकार सुपुर्द कर शहर से भाग खड़े हुए हैं। आपको जर्मनों के, अकाल और खूंरेज़ क़त्ले-आम के सामने निराश्रित छोड़कर केरेन्स्की भाग खड़े हुए हैं। विद्रोही जनता ने केरेन्स्की के मंत्रियों को गिरफ़्तार कर लिया है और आपने देखा है कि किस प्रकार पेत्रोग्राद की सुव्यवस्था तथा संभरण-प्रबंध में तत्काल सुधार आया है। अभिजात मालिकों, पूंजीपतियों, सट्टेबाज़ों के हुक्म पर केरेन्स्की ने आपके ख़िलाफ़ इस गरज़ से मुहिम शुरू की है कि भूमि ज़मींदारों को वापिस दी जा सके और इस घृण्य तथा विध्वंसपूर्ण युद्ध को लगातार चलाया जा सके।

"पेत्रोग्राद के नागरिको! हम जानते हैं कि आपका प्रबल बहुमत जनता की क्रांतिकारी सत्ता के पक्ष में तथा केरेन्स्की के नेतृत्व में चलने वाले कोर्नीलोवपंथियों के ख़िलाफ़ है। आप नपुंसक पूंजीवादी षड्यंत्र-कारियों की झूठी घोषणाओं के बहकावे में न आइये। उन्हें बिना किसी रू-रिआयत के कुचल दिया जायेगा।

"मज़दूरो, किसानो, सिपाहियो! हम आपका क्रांतिकारी निष्ठा

तथा अनुशासन के लिए आह्वान करते हैं।

"करोड़ों किसान और सिपाही हमारे साथ हैं।

"जन-क्रांति की विजय सुनिश्चित है!"

पेत्रोग्राद, २८ अक्तूबर, १९१७

मज़दूरों तथा सैनिकों के प्रतिनिधियों की
पेत्रोग्राद सोवियत की
सैनिक क्रांतिकारी समिति

३
जन-कमिसार परिषद् की आज्ञप्तियां

इस पुस्तक में मैं उन्हीं आज्ञप्तियों को दे रहा हूं, जो मेरी राय में बोल्शेविकों द्वारा सत्ता पर अधिकार किये जाने से संबंध रखती हैं। शेष आज्ञप्तियां सोवियत राज्य के ढांचे के विशद वर्णन की कोटि में आती हैं और प्रस्तुत पुस्तक में उनके लिए स्थान नहीं है। इनकी दूसरी पुस्तक, 'कोर्नीलोव कांड से ब्रेस्त-लितोव्स्क की संधि तक' में, जो इस समय तैयार हो रही है, विशद चर्चा की जायेगी।

आवासों के संबंध में

१. स्वाधीन स्वशासी नगरपालिकाओं को अधिकार है कि वे सभी ख़ाली आवासों को अपने अधिकार में ले लें।

२. नगरपालिकायें, उनके द्वारा स्थापित नियमों तथा प्रबंध-व्यवस्था के अनुसार, सभी सुलभ आवासों में ऐसे नागरिकों को आश्रय दे सकती हैं, जिनके पास रहने का स्थान नहीं है, या जो अत्यंत जन-संकुल स्थानों में रहते हैं।

३. नगरपालिकायें आवासों की एक निरीक्षण-सेवा स्थापित तथा संगठित कर सकती हैं और उसके अधिकारों को सुनिश्चित कर सकती हैं।

४. नगरपालिकायें आवास-समितियों की स्थापना के बारे में आदेश जारी कर सकती हैं, उनके संगठन की रूपरेखा तथा उनके अधि-

कारों को निश्चित कर सकती हैं और उन्हें क़ानूनी अधिकार दे सकती हैं।

५. नगरपालिकायें आवास-न्यायाधिकरणों की स्थापना कर सकती हैं तथा उनके अधिकारों और उनकी प्रभुता को निश्चित कर सकती हैं।

६. यह आज्ञप्ति तार द्वारा जारी की जाती है।

आंतरिक मामलों के जन-कमिसार

अ० इ० रीकोव

सामाजिक बीमा के बारे में

रूसी सर्वहारा ने अपने फरहरे पर उजरती मज़दूरों और साथ ही शहर और गांव के ग़रीबों के लिए मुकम्मल सामाजिक बीमा का वचन अंकित किया है। ज़ार की, ज़मींदारों और पूंजीपतियों की सरकार और समझौतापरस्त संयुक्त सरकार भी सामाजिक बीमा के बारे में मज़दूरों की इच्छाओं को पूरा करने में असमर्थ रही।

मज़दूरों, सैनिकों तथा किसानों के प्रतिनिधियों की सोवियतों के समर्थन का भरोसा रखती हुई मज़दूरों तथा किसानों की सरकार रूस के मज़दूर वर्ग तथा शहर और गांव के ग़रीबों के सामने घोषणा करती है कि वह अविलंब मज़दूर-संगठनों द्वारा प्रस्तावित सूत्रों के आधार पर सामाजिक बीमा क़ानूनों को तैयार करेगी :

१. निरपवाद रूप से सभी उजरती मज़दूरों तथा साथ ही शहर और गांव के सभी ग़रीबों के लिए सामाजिक बीमा।

२. ऐसी बीमा-व्यवस्था, जिसमें कार्य-क्षमता के ह्रास की सभी श्रेणियां आ जायें जैसे रोग, निर्बलता, वृद्धावस्था, प्रसव, विधवावस्था, अनाथावस्था तथा बेकारी।

३. बीमे का सारा खर्च मालिकों के ज़िम्मे हो।

४. कार्य-क्षमता के सभी प्रकार के ह्रास तथा बेकारी की अवस्था में बतौर मुआवज़े के पूरी तनख़ाह दी जाये।

५. सभी बीमा-संस्थाओं का मज़दूर खुद पूरी तरह प्रबंध करें।

रूसी जनतन्त्र की सरकार के नाम पर श्रम जन-कमिसार

अलेक्सान्द्र श्ल्याप्निकोव

जन-शिक्षा के बारे में

रूस के नागरिको!

७ नवंबर के विद्रोह के फलस्वरूप मेहनतकश जन-साधारण ने पहली बार वास्तविक सत्ता पर अधिकार किया है।

सोवियतों की अखिल रूसी कांग्रेस ने इस सत्ता को अस्थायी रूप से सोवियतों की कार्यकारिणी समिति तथा जन-कमिसार परिषद् दोनों के हाथों में अंतरित कर दिया है।

क्रांतिकारी जनता की इच्छानुसार मुझे शिक्षा जन-कमिसार नियुक्त किया गया है।

जहां तक जन-शिक्षा केंद्रीय सरकार के हाथ में है, वहां तक इसका सामान्य निर्देश करने का कार्य, संविधान सभा बुलाये जाने तक, एक जन-शिक्षा आयोग के सुपुर्द किया जाता है, जिसके अध्यक्ष तथा कार्यकारी अधिकारी जन-कमिसार हैं।

यह राजकीय आयोग किन बुनियादी प्रस्थापनाओं का आधार ग्रहण करेगा? उसका अधिकार-क्षेत्र किस प्रकार निश्चित किया जायेगा?

शिक्षा-संबंधी क्रिया-कलाप का सामान्य मार्ग: एक ऐसे देश में, जहां निरक्षरता तथा अज्ञान का बोलबाला है, प्रत्येक सच्ची जनवादी सत्ता को शिक्षा के क्षेत्र में इस जहालत से संघर्ष करना अपना प्रथम उद्देश्य बनाना होगा। उसे आधुनिक शिक्षा-विज्ञान की आवश्यकताओं के अनुरूप स्कूलों का एक जाल बिछा कर कम से कम समय में **सार्विक साक्षरता** को उपलब्ध करना होगा। उसे सब के लिए सार्विक, अनिवार्य, निःशुल्क शिक्षा आरंभ करनी होगी, और साथ ही ऐसे शिक्षक-संस्थानों और ट्रेनिंग स्कूलों का एक जाल बिछा देना होगा, जो कम से कम समय में जन-शिक्षकों की एक शक्तिशाली सेना तैयार कर देंगे, जो हमारे निस्सीम रूस की जनता की सार्विक शिक्षा के लिए इतनी जरूरी है।

विकेंद्रीकरण: राजकीय जन-शिक्षा आयोग ऐसी केंद्रीय संस्था कदापि नहीं है, जिसे शिक्षण तथा अनुदेश संस्थानों पर हुकूमत चलाने का अधिकार है। इसके विपरीत स्कूलों का सारा काम स्थानीय स्वशासी निकायों के हाथों में अंतरित कर देना चाहिए। राज्य केंद्र तथा नगरपालिका केंद्रों

दोनों को चाहिए कि वे मज़दूरों, सिपाहियों और किसानों के, ख़ुद पेशक़दमी करके, सांस्कृतिक तथा शिक्षा संस्थानों को स्थापित करने के स्वतंत्र कार्य को पूर्ण स्वायत्तता प्रदान करें।

राजकीय आयोग का काम है कि वह नगरपालिका संस्थाओं तथा निजी संस्थाओं को, विशेषतः मज़दूरों द्वारा स्थापित विशेष वर्ग-चरित्र रखनेवाली संस्थाओं को एक सूत्र में बांधे और उनके भौतिक तथा नैतिक समर्थन के लिए सुविधायें जुटाने में उनकी सहायता करे।

राजकीय जन-शिक्षा समिति : राजकीय जन-शिक्षा समिति ने, जो अपनी सदस्यता की दृष्टि से एक पर्याप्त जनवादी निकाय है और जिसे अनेक विशेषज्ञों की सेवा प्राप्त है, क्रांति के आरंभ से ही अनेक क्रमबद्ध महत्त्वपूर्ण क़ानूनी योजनाओं को तैयार किया है। राजकीय आयोग सचमुच इस समिति का सहयोग चाहता है।

उसने समिति के ब्यूरो को यह अनुरोध करते हुए लिखा है कि वह निम्नलिखित कार्यक्रम को पूरा करने के लिए समिति का एक असाधारण अधिवेशन बुलाये :

१. समिति में प्रतिनिधित्व के नियमों में अधिक जनवादीकरण की दिशा में संशोधन।

२. समिति के अधिकारों में, उन्हें और व्यापक रूप देते हुए, इस प्रकार का परिवर्तन कि समिति को, रूस में सार्वजनिक अनुदेश तथा शिक्षा का जनवादी सिद्धांतों के आधार पर पुनःसंगठन करने के लिए उपयुक्त क़ानूनी योजनाओं को तैयार करने के निमित्त, एक बुनियादी राजकीय संस्थान में रूपांतरित किया जा सके।

३. नये राजकीय आयोग के साथ सम्मिलित रूप से उन क़ानूनों का संशोधन, जिन्हें समिति ने पहले से ही तैयार कर लिया है और जिनके संशोधन की आवश्यकता इसलिए उत्पन्न हुई है कि उनके इस संकुचित [illegible] उन्हें संपादित करने में समिति को उसके रास्ते में रोड़ा अटकाने वाले पहले के मंत्रिमंडलों की पूंजीवादी भावना का ध्यान रखना पड़ा था।

इस संशोधन के पश्चात् ये क़ानून बिना किसी प्रकार की नौकरशाही लाल फीतेशाही के, क्रांतिकारी पद्धति से लागू किये जायेंगे।

अध्यापक तथा समाजशास्त्री : राजकीय आयोग जनता को—देश के

स्वामियों को – शिक्षित करने के उज्ज्वल तथा सम्मानपूर्ण कार्य में अध्यापकों का स्वागत करता है।

जन-शिक्षा के क्षेत्र में कोई भी सत्ता अध्यापकों के प्रतिनिधियों की ध्यानपूर्ण मंत्रणा के बिना कोई क़दम नहीं उठा सकती।

दूसरी ओर, एकमात्र विशेषज्ञों के सहयोग द्वारा ही कोई फ़ैसला किसी भी सूरत में नहीं किया जा सकता। यही बात सामान्य शिक्षा-संस्थानों के सुधारों के ऊपर भी लागू होती है।

सामाजिक शक्तियों के साथ अध्यापकों का सहयोग – आयोग स्वयं अपने संघटन में, राजकीय समिति में तथा अपने समस्त क्रिया-कलाप में इसी रूप में व्यवहार करेगा।

आयोग की दृष्टि में उसका पहला काम यह है कि वह अध्यापकों का, और सर्वप्रथम, उन बेहद ग़रीब परंतु सांस्कृतिक कार्य के प्रायः सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण योगदाताओं – प्राथमिक स्कूलों के अध्यापकों – का दर्जा उठाये। उनकी जायज़ मांगें फ़ौरन और किसी भी क़ीमत पर पूरी होनी चाहिये। स्कूलों के सर्वहारा मांग करते रहे हैं कि उनकी तनख़ाहें बढ़ा कर एक सौ रूबल माहवार कर दी जायें, लेकिन इसका कोई असर नहीं हुआ। रूसी जनता के विशाल बहुसंख्यक भाग को शिक्षा देने वाले अध्यापकों को अब और मोहताजी की हालत में रखना कलंक की बात होगा।

संविधान सभा निस्संदेह शीघ्र ही अपना काम शुरू करेगी। वही हमारे देश में राष्ट्रीय तथा सामाजिक जीवन की व्यवस्था को और साथ ही जन-शिक्षा के संगठन के सामान्य चरित्र को स्थायी रूप से निर्धारित कर सकती है।

सोवियतों के हाथ में सत्ता के अंतरण के साथ अब संविधान सभा का वास्तविक जनवादी चरित्र सुनिश्चित बन गया है। राजकीय समिति पर भरोसा करते हुए राजकीय आयोग जिस नीति का अनुसरण करेगा, उसमें संविधान सभा के प्रभाव से शायद ही कोई परिवर्तन करना पड़े। उसका पूर्व-निर्धारण किये बिना, नई जनता की सरकार यह समझती है कि इस क्षेत्र में ऐसी अनेक कार्रवाइयों के लिए क़ानून बना कर वह अपनी अधिकार-सीमा का उल्लंघन नहीं कर रही है, जिनका उद्देश्य है देश के मानसिक जीवन को यथाशीघ्र समृद्ध प्रबुद्ध बनाना।

मंत्रालय : इस मध्य में मौजूदा काम को जन-शिक्षा मंत्रालय द्वारा ही चलाना होगा। उसके रूप तथा गठन में जो परिवर्तन आवश्यक हैं, उन्हें संपन्न करने के लिए सोवियतों की कार्यकारिणी समिति द्वारा निर्वाचित राजकीय आयोग तथा राजकीय समिति ज़िम्मेदार होगी। कहने की जरूरत नहीं कि जन-शिक्षा के क्षेत्र में राजकीय नेतृत्व की क्रम-व्यवस्था संविधान सभा द्वारा स्थापित की जायेगी। तब तक राजकीय जन-शिक्षा समिति तथा राजकीय जन-शिक्षा आयोग दोनों के लिये ही मंत्रालय एक कार्यकारी उपकरण की भूमिका अदा करेगा।

देश के निस्तार की गारंटी इस बात में है कि उसकी सभी प्राणवान् तथा वास्तव में जनवादी शक्तियां सहयोग करें।

हमारा विश्वास है कि श्रमिक जनता तथा ईमानदार प्रबुद्ध बुद्धिजीवियों के प्रबल प्रयास के फलस्वरूप देश इस कष्टप्रद संकट से निकलेगा और पूर्ण जनवाद स्थापित कर समाजवाद तथा राष्ट्रों के भाईचारे के युग में प्रवेश करेगा।

जन-शिक्षा के जन-कमिसार
अ० व० लुनाचार्स्की

क़ानूनों के अनुसमर्थन तथा प्रकाशन-क्रम के विषय में

१. जब तक संविधान सभा बुलाई नहीं जाती, क़ानूनों का अधिनियमन तथा प्रकाशन मज़दूरों, किसानों तथा सैनिकों के प्रतिनिधियों की अखिल रूसी कांग्रेस द्वारा निर्वाचित मौजूदा मज़दूरों तथा किसानों की अस्थायी सरकार द्वारा आदेशित क्रमानुसार संपन्न किया जायेगा।

२. प्रत्येक विधेयक संबंधित मंत्रालय द्वारा, नियमानुसार अधिकृत जन-कमिसार द्वारा हस्ताक्षरित होकर सरकार के विचारार्थ प्रस्तुत किया जायेगा; अथवा वह सरकार से संलग्न विधायी विभाग द्वारा विभाग-अध्यक्ष के हस्ताक्षर के साथ पेश किया जायेगा।

३. सरकार द्वारा अनुसमर्थित होने पर यह आज्ञप्ति अपने अंतिम

रूप में रूसी जनतंत्र के नाम पर जन-कमिसार परिषद् के अध्यक्ष द्वारा अथवा उनके स्थान पर उन जन-कमिसार द्वारा हस्ताक्षरित की जायेगी, जिन्होंने उसे सरकार के विचारार्थ प्रस्तुत किया था और फिर इस आज्ञप्ति को प्रकाशित किया जायेगा।

४. जिस तारीख़ को यह आज्ञप्ति आधिकारिक 'मज़दूरों तथा किसानों की अस्थायी सरकार के गज़ेट' में प्रकाशित की जायेगी, उसी तारीख़ से वह क़ानून का दर्जा हासिल करेगी।

५. आज्ञप्ति में प्रकाशन-तिथि से भिन्न एक तिथि का निर्देश हो सकता है, जब यह आज्ञप्ति क़ानून का रूप लेगी, अथवा उसे तार के ज़रिये प्रवर्तित किया जा सकता है; इस सूरत में प्रत्येक स्थान में तार का प्रकाशन होने पर उसे क़ानून माना जायेगा।

६. राज्य सीनेट द्वारा सरकार के विधायी अधिनियमों का प्रख्यापन समाप्त किया जाता है। जन-कमिसार परिषद् से संलग्न विधायी विभाग समय समय पर सरकार के उन विनियमों तथा आदेशों के संग्रहों को प्रकाशित करता है, जिन्हें क़ानून का दर्जा हासिल है।

७. मज़दूरों, किसानों तथा सैनिकों के प्रतिनिधियों की सोवियतों की केंद्रीय कार्यकारिणी समिति (**त्से-ई-काह**) को सदा सरकार की किसी भी आज्ञप्ति को रद्द या मुलतवी करने या बदलने का अधिकार होगा। रूसी जनतंत्र के नाम पर

जन-कमिसार परिषद् के अध्यक्ष

व्ला० उल्यानोव-लेनिन

४

शराब की समस्या

सैनिक क्रांतिकारी समिति द्वारा जारी किया गया आदेश:

१. जब तक दूसरा आदेश न दिया जाये, एलकोहल तथा एलकोहलीय पेयों के उत्पादन की मनाही की जाती है।

२. एलकोहल तथा एलकोहलीय पेयों के सभी उत्पादनकर्त्ताओं को आदेश दिया जाता है कि वे २७ तारीख़ से पहले इस बात की सूचना दें कि उनके गोदाम ठीक ठीक कहां पर हैं।

३. इस आदेश का उल्लंघन करने वाले सभी अपराधियों पर सैनिक क्रांतिकारी अदालत में मुक़द्दमा चलाया जायेगा।

सैनिक क्रांतिकारी समिति

* * *

आदेश नं० २

फ़िनलैंडी गार्ड रिज़र्व रेजीमेंट की समिति द्वारा सभी आवास-समितियों तथा वासील्येव्स्की ओस्त्रोव इलाक़े के नागरिकों के नाम

पूंजीवादियों ने सर्वहारा के ख़िलाफ़ लड़ाई का एक बहुत नापाक तरीक़ा चुना है; उन्होंने शहर के मुख़्तलिफ़ हिस्सों में शराब के बड़े बड़े गोदाम क़ायम किये हैं और वे सिपाहियों के बीच शराब बंटवा रहे हैं और इस प्रकार क्रांतिकारी सेना की पांतों में असंतोष उत्पन्न करने की कोशिश कर रहे हैं।

सभी आवास-समितियों को आदेश दिया जाता है कि इस आदेश के चिपकाये जाने के तीन घंटे के अंदर वे स्वयं गुप्त रूप से फ़िनलैंडी गार्ड रेजीमेंट की समिति के अध्यक्ष को यह सूचित करें कि उनके मकानों में कितनी शराब मौजूद है।

जो लोग इस आदेश का उल्लंघन करेंगे, उन्हें **गिरफ़्तार कर लिया जायेगा और उन पर एक ऐसी अदालत में मुक़द्दमा चलाया जायेगा, जो उनके साथ कर-रिआयत नहीं करेगी। उनकी जायदाद ज़ब्त कर ली जायेगी** और उनके पास शराब का जो स्टाक पाया जायेगा, उसे चेतावनी के दो घंटे बाद **डाइनामाइट से उड़ा दिया जायेगा**, क्योंकि जैसा कि अनुभव से मालूम हुआ है ज़्यादा नरम कार्रवाइयों से चाहा हुआ नतीजा नहीं निकलता।

याद रखिये, डाइनामाइट लगाने से पहले दूसरी कोई चेतावनी नहीं दी जायेगी।

फ़िनलैंडी गार्ड रेजीमेंट की रेजीमेंट समिति

नौवें अध्याय की टिप्पणियां

१

सैनिक क्रान्तिकारी समिति, बुलेटिन नं० २

१२ नवंबर की शाम को केरेन्स्की ने क्रांतिकारी सेनाओं के पास प्रस्ताव भेजा कि वे "अपने हथियार डाल दें"। केरेन्स्की के सिपाहियों ने गोलाबारी शुरू की। हमारे तोपख़ाने ने इसका जवाब दिया और दुश्मन की तोपों को ख़ामोश कर दिया। कज़्ज़ाकों ने हमला शुरू किया। मल्लाहों, लाल गार्डों और सिपाहियों की भयानक गोलाबारी ने क़ज़्ज़ाकों को पीछे हटने पर मजबूर किया। हमारी बख़्तरबंद गाड़ियां दुश्मन की पांतों में पिल पड़ीं। दुश्मन भाग रहा है। हमारे सिपाही पीछा कर रहे हैं। केरेन्स्की को गिरफ़्तार कर लेने का हुक्म दिया गया है। क्रांतिकारी सैनिकों ने त्सारस्कोये सेलो पर क़ब्ज़ा कर लिया है।

लाटवियाई बंदूक़ची: सैनिक क्रांतिकारी समिति को पक्की सूचना मिली है कि बहादुर लाटवियाई बंदूकचियों की टुकड़ी मोर्चे से आ पहुंची है और उसने केरेन्स्की के गिरोहों के पिछाये में मोर्चा क़ायम किया है।

सैनिक क्रांतिकारी समिति के स्टाफ़ की ओर से

केरेन्स्की के दस्तों ने गातचिना तथा त्सारस्कोये सेलो पर इसलिये क़ब्ज़ा कर लिया था कि इन जगहों में तोपें और मशीनगनें बिल्कुल ही न थीं, जब कि केरेन्स्की के घुड़सवारों को शुरू से ही तोपख़ाने की मदद

हासिल थी। पिछले दो दिनों में हमारे स्टाफ़ को क्रांतिकारी सैनिकों के लिए आवश्यक संख्या में तोपें, मशीनगनें, मैदानी टेलीफ़ोन वग़ैरह जुटाने के लिए ज़ोरदार काम करना पड़ा। जब यह काम — स्थानीय सोवियतों और कारख़ानों (पुतीलोव कारख़ाने, ओबूख़ोव और दूसरे कारख़ानों) की प्रबल सहायता से पूरा कर लिया गया, तब प्रत्याशित मुठभेड़ का परिणाम संदेह में न रहा। क्रांतिकारी सैनिकों के पास न केवल अतिरिक्त मात्रा में साज़-सामान था और पेत्रोग्राद जैसा एक शक्तिशाली भौतिक आधार था, उन्हें अत्यधिक नैतिक श्रेष्ठता भी प्राप्त थी। पेत्रोग्राद की सभी रेजीमेंटें बड़े जोश-ख़रोश से मोर्चों की ओर बढ़ीं। गैरिसन-सम्मेलन ने पांच सिपाहियों का एक नियंत्रण-आयोग चुना और इस प्रकार मुख्य सेनापति तथा गैरिसन के बीच पूर्ण एकता को सुनिश्चित बना दिया। गैरिसन-सम्मेलन में सर्वसम्मति से निर्णायक कार्रवाई शुरू करने का फ़ैसला किया गया।

१२ नवंबर को जो गोलाबारी शुरू हुई, उसमें दिन के तीन बजे तक असाधारण तेज़ी आ गई। कज़्ज़ाकों की हिम्मत बिल्कुल ही टूट गई। उनके यहां से एक दूत क्रास्नोये सेलो के दस्ते के स्टाफ़ के पास आया और उसने गोलाबारी बंद करने का प्रस्ताव किया और यह धमकी दी कि अगर ऐसा नहीं किया गया तो उसकी ओर से "निर्णायक" कार्रवाई की जायेगी। उसे जवाब दिया गया कि गोलाबारी तभी बंद की जायेगी, जब केरेन्स्की अपने हथियार डाल दें।

बराबर ज़ोर पकड़ती हुई इस लड़ाई में सेना के सभी हिस्सों — मल्लाहों, सिपाहियों और लाल गार्डों — ने असीम साहस प्रदर्शित किया। मल्लाह तब तक आगे बढ़ते गये, जब तक कि उन्होंने अपने सारे कारतूस खाली न कर दिये। हताहतों की संख्या अभी तक निश्चित नहीं की गई है, परंतु प्रतिक्रांतिकारी सैनिकों में, जिन्हें हमारी एक बख्तरबंद गाड़ी के कारण भारी क्षति उठानी पड़ी, अधिक लोग हताहत हुए हैं।

केरेन्स्की के स्टाफ़ ने, इस भय से कि कहीं वे घिर न जायें, पीछे हटने का हुक्म दिया। उनकी यह पसपाई देखते दखते भगदड़ बन गयी। रात के ११–१२ बजे तक रेडियो-स्टेशन समेत त्सारस्कोये सेलो पूरी

तरह सोवियत सैनिकों के हाथ में आ गया। कज़्ज़ाक गातचिना और कोलपिनो की तरफ़ भागे।

सैनिकों के मनोबल की जितनी प्रशंसा की जाये थोड़ी है। भागते हुए कज़्ज़ाकों का पीछा करने का हुक्म दिया गया है। त्सारस्कोये सेलो स्टेशन से तुरंत ही एक रेडियो-तार मोर्चे तथा पूरे रूस में सभी स्थानीय सोवियतों के पास भेजा गया। आगे की घटनायें फ़ौरन सूचित की जायेंगी।

२

पेत्रोग्राद में १३ तारीख़ की घटनायें

पेत्रोग्राद सोवियत की बैठक में ज़िनोव्येव ने कहा, "शत्रु को बल-प्रयोग द्वारा ही चूर किया जा सकता है। फिर भी कज़्ज़ाकों को हर शांति-पूर्ण उपाय से अपनी ओर लाने की कोशिश न करना एक अपराध होगा... हमें जिस चीज़ की ज़रूरत है, वह है सैनिक विजय... युद्ध-विराम की ख़बर ग़लत है... जब दुश्मन कोई नुक़सान करने क़ाबिल नहीं रहेगा, हमारा सैनिक स्टाफ़ युद्ध-विराम संपन्न करने के लिए तैयार होगा...

"इस समय हमारी विजय के प्रभाव से एक नई राजनीतिक परि-स्थिति उत्पन्न हो रही है... आज समाजवादी-क्रांतिकारी नई सरकार में बोल्शेविकों को शामिल करने की प्रवृत्ति रखते हैं... एक निर्णायक विजय ज़रूरी है, ताकि जो लोग दुविधा में पड़े हुए हैं उनकी हिचकिचाहट दूर हो जाये..."

नगर दूमा में पूरा ध्यान नई सरकार के गठन पर केंद्रित था।

कैडेट शिंगारेव ने ज़ोर देकर कहा कि नगरपालिका को बोल्शेविकों के साथ किसी भी समझौते में हिस्सा नहीं लेना चाहिये... "जब तक कि ये सिरफिरे अपने हथियार नहीं रख देते और ख़ुदमुख़्तार अदालतों के अख़्तियार को नहीं मानते, उनके साथ कोई भी समझौता नामुमकिन है..."

येदीन्स्त्वो दल की ओर से यार्त्सेव ने कहा कि बोल्शेविकों के साथ किसी भी प्रकार का समझौता करने का मतलब होगा बोल्शेविकों की जीत ...

समाजवादी-क्रांतिकारियों की ओर से मेयर श्रेइदेर ने बयान दिया कि वह बोल्शेविकों के साथ किसी भी तरह के समझौते के ख़िलाफ़ हैं ... "जहां तक सरकार का प्रश्न है, सरकार जनता की इच्छा से उत्पन्न होनी चाहिये और चूंकि जनता की इच्छा नगरपालिका-चुनावों में अभिव्यक्त हुई है, इसलिये जनता की जो इच्छा सरकार को उत्पन्न कर सकती है, वह वास्तव में दूमा में ही केंद्रित है ..."

दूसरे भाषणकर्ताओं के बोलने के बाद, जिनमें एकमात्र मेन्शेविक-अंतर्राष्ट्रीयतावादियों का प्रतिनिधि ही बोल्शेविकों को नई सरकार में लेने के बारे में विचार करने के पक्ष में था, दूमा ने वोट देकर फ़ैसला किया कि उसके प्रतिनिधि **विक्जेल** के सम्मेलन में भाग लेते रहें, परंतु सबसे पहले अस्थायी सरकार की पुनःस्थापना के लिए आग्रह किया जाये और बोल्शेविकों को नई सरकार से बाहर ही रखा जाये।

३

युद्ध-विराम। उद्धार समिति को क्रास्नोव का उत्तर

"अविलंब युद्ध-विराम प्रस्तावित करते हुए आपने जो तार भेजा है, उसके जवाब में मुख्य सेनापति, इस बात की इच्छा करते हुए कि व्यर्थ में और अधिक रक्तपात न हो, वार्ता शुरू करने और सरकार तथा विद्रोहियों की सेनाओं के बीच संबंध स्थापित करने के लिए सहमति प्रगट करते हैं। वह विद्रोहियों के जनरल स्टाफ़ से प्रस्ताव करते हैं कि वह अपनी रेजीमेंटों को पेत्रोग्राद वापिस बुलाये, लीगोवो – पूल्कोवो – कोलपिनो लाइन को तटस्थ घोषित करे और सरकार की घुड़सवार-सेना के अगले दस्तों को सुव्यवस्था स्थापित करने के उद्देश्य से त्सारस्कोये सेलो में प्रवेश करने दे। इस प्रस्ताव का उत्तर कल सवेरे ८ बजे से पहले हमारे दूतों के हाथ में होना चाहिए।

क्रास्नोव"

४

त्सारस्कोये सेलो की घटनायें

जिस शाम को केरेन्स्की के सैनिक त्सारस्कोये सेलो से पीछे हटे, उसी शाम कुछ पादरियों ने शहर की सड़कों पर एक धार्मिक जुलूस निकाला और नागरिकों के सामने भाषण दिये, जिनमें उन्होंने जनता से अपील की कि वह वैध सत्ता का, अर्थात् अस्थायी सरकार का समर्थन करे। प्रत्यक्षदर्शियों के बयान के मुताबिक़ कज़्ज़ाकों के भागने के बाद जब लाल गार्डों की पहली टुकड़ियां शहर में दाख़िल हुईं, पादरियों ने सोवियतों के ख़िलाफ़ जनता को भड़काया और रस्पूतिन की क़ब्र पर, जो शाही महल के पीछे थी, दुआयें मांगीं। आग-बबूला हो कर लाल गार्डों ने एक पादरी, धर्मपिता इवान कुचूरोव को गिरफ़्तार कर लिया और उन्हें गोली मार दी ...

जिस वक़्त लाल गार्ड शहर में दाख़िल हुए, ठीक उसी वक़्त बिजली की बत्तियां गुल कर दी गईं और सड़कों पर घुप अंधेरा छा गया। सोवियत सैनिकों ने बिजलीघर के डाइरेक्टर लुबोविच को गिरफ़्तार कर लिया और उनसे पूछा कि उन्होंने बत्तियां क्यों बुझवाई थीं। कुछ देर बाद जिस कमरे में उन्हें बंद कर दिया गया था, वहां वह मरे पाये गये; उन्होंने अपने माथे में गोली मार ली थी।

दूसरे दिन पेत्रोग्राद के बोल्शेविक-विरोधी अख़बारों ने बड़ी बड़ी सुर्ख़ियों में छापा, "प्लेख़ानोव को ३९ डिग्री (सें०) का बुख़ार!" प्लेख़ानोव त्सारस्कोये सेलो में रहते थे और बीमार पड़े थे। लाल गार्डों ने उस मकान में आकर हथियारों के लिए तलाशी ली और बूढ़े आदमी से सवाल किये।

"आप समाज के किस वर्ग से आते हैं?" उन्होंने पूछा।

प्लेख़ानोव ने उत्तर दिया, "मैं एक क्रांतिकारी हूं, जिसने चालीस वर्षों से अपना जीवन स्वतंत्रता के संघर्ष के लिए अर्पित कर रखा है!"

"बहरहाल," एक मज़दूर ने कहा, "अब आपने अपने को पूंजीपति वर्ग के हाथों बेच दिया है।"

मज़दूर रूसी सामाजिक-जनवाद के मार्गदर्शक और प्रवर्त्तक प्लेख़ानोव को भूल गये थे!

५

सोवियत सरकार की अपील

"गातचिना के दस्तों ने, जिन्हें केरेन्स्की ने धोखा दिया था, अपने हथियार डाल दिये हैं और केरेन्स्की को गिरफ़्तार करने का फ़ैसला किया है। प्रतिक्रांतिकारी मुहिम का वह सरग़ना भाग खड़ा हुआ है। सेना ने विशाल बहुमत से सोवियतों की दूसरी अखिल रूसी कांग्रेस और उसके द्वारा स्थापित सरकार के समर्थन की घोषणा की है। मोर्चे से बीसों प्रतिनिधि सोवियत सरकार को सेना की वफ़ादारी का विश्वास दिलाने के लिए भागे-भागे पेत्रोग्राद पहुंचे हैं। सचाई को कितना तोड़ा-मरोड़ा गया, क्रांतिकारी मज़दूरों, सिपाहियों और किसानों को बदनाम किया गया, लेकिन उससे जनता को पस्त न किया जा सका। मज़दूरों और सिपाहियों की क्रांति विजयी हुई है...

"**त्से-ई-काह** प्रतिक्रांति के झंडे के नीचे मार्च करने वाले सैनिकों से अपील करती है और उनका आह्वान करती है कि वे अविलंब अपने हथियार रख दें, मुट्ठी भर ज़मींदारों तथा पूंजीपतियों के हित में अपने भाइयों का ख़ून अब और न बहायें। मज़दूरों, सिपाहियों और किसानों का रूस उन लोगों को लानत भेजता है, जो क्षणभर के लिए भी जनता के शत्रुओं के झंडे के नीचे रहते हैं..

"कज़्ज़ाको! विजयी जनता की पांतों में चले आइये! रेल मज़दूर, डाक और तार कर्मचारी, आप सब, आप सभी जनता की नई सरकार का समर्थन कीजिये!"

दसवें अध्याय की टिप्पणियां

१

क्रेमलिन को क्षति

क्रेमलिन को जो क्षति पहुंची थी, उसकी मैंने ख़ुद जांच की है। मैं वहां गोलाबारी के फ़ौरन बाद पहुंचा था। लघु निकोलाई प्रासाद को

युंकरों की बारिकों की तरह इस्तेमाल किया गया था। इस प्रासाद का कोई विशेष महत्व न था और उसमें बस कभी कभी ज़ार-परिवार की एक रानी के स्वागत-समारोह हुआ करते थे। उसपर गोले ही नहीं बरसाये गये, उसे ख़ासी अच्छी तरह लूटा भी गया। सौभाग्यवश उसमें ऐतिहासिक महत्व की कोई वस्तु न थी।

उस्पेन्स्की के बड़े गिरजे के एक गुंबद पर गोला लगने का निशान था, परंतु उसकी छत के मोज़ेक के थोड़े से हिस्से को छोड़ कर उसे कोई नुक़सान न पहुंचा था। ब्लागोवेश्चेंस्की के बड़े गिरजे के द्वार-मंडप के भित्तिचित्रों को एक गोला लगने से बेहद नुक़सान पहुंचा था। एक दूसरा गोला इवान वेलीकी नामक घंटाघर के एक कोने पर गिरा था। चुडोव मठ पर क़रीब तीस गोल गिरे थे, लेकिन सिर्फ़ एक गोला ही खिड़की के रास्ते भीतर पहुंचा, बाक़ी ईंट की दीवारों और छतों की कार्निसों को नुक़सान पहुंचा कर रह गये।

स्पास्स्काया द्वार के ऊपर का घंटा चकनाचूर हो गया। त्रोइत्स्की द्वार भी टूट-फूट गया था, लेकिन उसकी आसानी से मरम्मत की जा सकती थी। एक निचली मीनार का कलश, जो ईंटों से बना था, टूट गया था।

सेंट बेसिल (वसीली ब्लजेन्नी) का गिरजाघर अछूता रहा और उसी प्रकार विशाल शाही महल भी, जिसके तहख़ानों में मास्को और पेत्रोग्राद की सारी निधियां पड़ी थीं और जिसके ख़ज़ाने में शाही जवाह-रात थे। इन जगहों में किसी ने प्रवेश भी नहीं किया।

२

लुनाचार्स्की की घोषणा

"साथियो! आप देश के तरुण स्वामी हैं और यद्यपि इस समय आपके लिये करने और सोचने को बहुत कुछ पड़ा हुआ है, आपको यह ज़रूर जानना चाहिये कि आप अपनी कलात्मक तथा वैज्ञानिक निधियों की रक्षा किस प्रकार कर सकते हैं।

"साथियो! मास्को में जो हो रहा है, वह एक भयानक अमार्जनीय दुर्भाग्य है। सत्ता के लिये अपने संघर्ष के सिलसिले में जनता ने हमारी गौरवपूर्ण राजधानी को क्षत-विक्षत कर दिया है।

"हिंसापूर्ण संघर्ष, विध्वंसक युद्ध के इन दिनों में जन-शिक्षा का कमिसार होना एक विशेष भयानक बात है। समाजवाद की, जो एक नई तथा श्रेष्ठतर संस्कृति का उत्स है, विजय की आशा ही मुझे सांत्वना देती है। मेरे ऊपर जनता की कला-संपदा की हिफ़ाज़त करने की ज़िम्मेदारी है... अपने पद पर, जहां मेरा कोई प्रभाव न था, क़ायम रहने में असमर्थ हो कर मैंने इस्तीफ़ा दिया*।

"परंतु, साथियो, मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि आप मुझे सहारा दें... अपने लिये और अपने वंशजों के लिये हमारे देश के सौंदर्य को सुरक्षित रखिये; जनता की संपदा के संरक्षक बनिये।

"जल्द, बहुत जल्द जाहिल से जाहिल लोग भी, जिन्हें इतने दिनों से जहालत में रखा गया है, जागेंगे और समझेंगे कि कला आनंद, शक्ति तथा बुद्धिमत्ता का कितना बड़ा उत्स हैं..."

३ नवंबर, १९१७

जन-शिक्षा के जन-कमिसार
अ० लुनाचार्स्की

३

पूंजीपति वर्ग के लिए प्रश्नावली

वार्ड.	पारिवारिक नाम.	आवास-समिति.
नं०		
पता.	नाम	नं०

* अ० व० लुनाचार्स्की ने शिक्षा के जन-कमिसार के अपने पद को छोड़ा नहीं। – सं०

पुरुष अथवा स्त्री	अवस्था	मौजूद सामान			
		कपड़ा	अर्शीन में	बने-बनाये कपड़े वग़ैरह	अदद
मासिक औसत		जाड़े, गर्मियों और शरद्काल के			
आय	व्यय	अंडरवियर के लिये .		ओवरकोट .	. .
		सूटों के लिये . .		पोशाकें और सूट .	. .
किराया फ़ी माह		ओवरकोटों के लिये .		अंडरवियर	. .
		दूसरे पहनावों के लिए		जूते . .	. .
फ़्लैट	कमरा			रबर के जूते	

४

क्रांतिकारी वित्तीय कार्रवाई

आदेश

मजदूरों तथा सैनिकों के प्रतिनिधियों की मास्को सोवियत के अधीन सैनिक क्रांतिकारी समिति द्वारा जो अधिकार मुझे सौंपे गये हैं, उनके बल पर मैं आदेश देता हूं:

१. जब तक दूसरी आज्ञा न दी जाये अपनी शाखाओं समेत सभी बैंक, शाखाओं समेत केंद्रीय राजकीय बचत बैंक और डाक-तार घरों के बचत बैंक २२ नवंबर को सवेरे ११ बजे से लेकर १ बजे तक खुले रहेंगे।

२. उपरोक्त संस्थान चालू लेखे पर तथा बचत बैंक के लेखे पर अगले हफ़्ते के दौरान प्रत्येक जमाकर्ता को १५० रूबल से अधिक अदायगी नहीं करेंगे।

३. चालू लेखों तथा बचत बैंक के लेखों पर फ़ी हफ़्ता १५० रूबल से ज़्यादा रक़मों की अदायगी तथा दूसरे सभी तरह के लेखों पर अदायगी अगले तीन दिनों – २२, २३ और २४ नवंबर – में केवल निम्नलिखित मामलों में करने की इजाज़त दी जायेगी:

(क) सैनिक टुकड़ियों के लेखों पर, उनकी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए;

(ख) उन तालिकाओं तथा सूचियों के अनुसार कर्मचारियों की तनख़ाहें तथा मज़दूरों की मज़दूरी की अदायगी के लिए, जो कारख़ाना समितियों अथवा कर्मचारियों की सोवियतों द्वारा प्रमाणित हों और कमिसारों के अथवा सैनिक क्रांतिकारी समिति के और हल्कों के सैनिक क्रांतिकारी समितियों के प्रतिनिधियों के दस्तख़तों से तसदीक की गई हों।

४. हुंडियों पर १५० रूबल से ज़्यादा अदायगी नहीं की जायेगी; बाक़ी रक़म चालू लेखे में दाख़िल की जायेगी और उसकी अदायगी वर्तमान आज्ञप्ति द्वारा निश्चित क्रम से की जायेगी।

५. इन तीन दिनों में बैंकों को और कोई भी लेन-देन का काम करने की मनाही की जाती है।

६. सभी लेखों में किसी भी मात्रा में रुपया जमा किया जा सकता है।

७. तीसरी धारा में सूचित प्राधिकरणों के प्रमाणीकरण के लिए वित्त-परिषद् के प्रतिनिधि इल्यींका मार्ग पर स्टाक-एक्सचेंज भवन में दिन के दस बजे से दो बजे तक काम करेंगे।

८. बैंक तथा बचत बैंक रोज़ाना नक़दी लेन-देन का कुल हिसाब वित्त-परिषद् के सुपुर्द करने के लिए उसे पांच बजे शाम तक स्कोबेलेव चौक पर सोवियत के भवन में सैनिक क्रांतिकारी समिति को भेजेंगे।

९. सभी तरह की उधार-संस्थाओं के सभी कर्मचारी और प्रबंधकर्ता, जो इस आज्ञप्ति का पालन करने से इनकार करते हैं, क्रांति तथा जनसाधारण के शत्रुओं के रूप में क्रांतिकारी न्यायाधिकरणों के सम्मुख ज़िम्मेदार ठहराये जायेंगे। उनके नाम सामान्य सूचना के लिए प्रकाशित किये जायेंगे।

१०. इस आज्ञप्ति के अंतर्गत बचत बैंकों तथा बैंकों की शाखाओं के लेन-देन के काम के नियंत्रण के लिए हल्के की सैनिक क्रांतिकारी समितियां तीन-तीन प्रतिनिधियों को चुनेंगी और उनके काम की जगह निश्चित करेंगी।

सैनिक क्रांतिकारी समिति के पूर्ण अधिकृत कमिसार

स० शेवेरदीन-माक्सीमेन्को

ग्यारहवें अध्याय की टिप्पणियां

१

इस अध्याय की सीमाएं

इस अध्याय में दो महीने से कुछ कम या ज़्यादा वक़्त में हुई घटनाओं का वर्णन है। उसमें मित्र-राष्ट्रों के साथ वार्ता, जर्मनों के साथ वार्ता तथा युद्ध-विराम, और ब्रेस्त-लितोव्स्क में शांति-वार्ता के आरंभ के काल का और साथ ही उस काल का वर्णन है, जिसमें सोवियत राज्य की बुनियादें रखी गई थीं।

परन्तु इस पुस्तक में मेरा यह बिल्कुल उद्देश्य नहीं है कि इन अत्यंत महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन और उनकी व्याख्या करूं, जिसके लिए अधिक स्थान की आवश्यकता है। इसलिए मैंने उन्हें एक दूसरी पुस्तक 'कोर्नीलोव कांड से ब्रेस्त-लितोव्स्क की संधि तक' के लिए छोड़ दिया है।

इस प्रकार मैंने इस अध्याय में अपने को सोवियत सरकार की देश में अपनी राजनीतिक सत्ता संहत करने की कोशिशों तक ही सीमित रखा है और देश के अंदर विरोधी अंशकों पर एक के बाद एक उनकी जीतों की रूपरेखा प्रस्तुत की है – जिन जीतों की प्रक्रिया ब्रेस्त-लितोवस्क की दुर्भाग्यपूर्ण संधि द्वारा अस्थायी काल के लिए रुक गई थी।

२

प्रस्तावना – रूस की जातियों के अधिकारों की घोषणा

मजदूरों और किसानों की अक्तूबर (नवम्बर) क्रांति सर्वव्यापक मुक्ति-पताका के नीचे शुरू हुई।

किसानों को ज़मींदारों की सत्ता से मुक्त किया जा रहा है, क्योंकि अब ज़मींदार को भूमि पर स्वामित्व का कोई अधिकार न रहा – उसका उन्मूलन कर दिया गया है। सिपाही और मल्लाह निरंकुश जनरलों की

प्रभुता से मुक्त किये जा रहे हैं, क्योंकि अब से जनरल चुने जायेंगे और वे वापिस बुलाये जा सकेंगे। मज़दूर पूंजीपतियों की मौज और मनमानी से मुक्त किये जा रहे हैं, क्योंकि अब से मिलों और कारख़ानों पर मज़दूरों का नियंत्रण स्थापित होगा। जो भी जीवित है अथवा जीने की क्षमता रखता है, उसे घृण्य बंधनों से मुक्त किया जा रहा है।

अब केवल रूस की जातियां ही बाक़ी रह गयी हैं, जिन्होंने उत्पीड़न और निरंकुशता को झेला है और झेल रही हैं, और जिनकी मुक्ति को अविलंब शुरू करना होगा, जिन्हें दृढ़ तथा निश्चित रूप से स्वतंत्र करना होगा।

ज़ारशाही ज़माने में रूस की जातियां बाक़ायदा एक दूसरे के ख़िलाफ़ भड़काई जाती थीं। इस नीति का परिणाम क्या हुआ, यह मालूम है: एक ओर क़त्ले-आम और दंगा-फ़साद, दूसरी ओर जातियों की ग़ुलामी।

इस शर्मनाक नीति की ओर न लौटा जा सकता है, न लौटना चाहिए। उसके स्थान पर अब से रूस की जातियों की स्वैच्छिक तथा सच्ची एकता की नीति को स्थापित करना होगा।

साम्राज्यवाद के काल में, जब फ़रवरी (मार्च) क्रांति के बाद सत्ता कैडेट पूंजीपति वर्ग के हाथों में अंतरित की गई थी, उकसावे की नग्न नीति की जगह रूस की जातियों के प्रति भयपूर्ण अविश्वास की नीति, छिद्रान्वेषण की, जातियों की अर्थहीन "स्वतंत्रता" तथा "समता" की नीति चालू की गई। इस नीति के परिणाम भी मालूम हैं: राष्ट्रीय बैर-विरोध में वृद्धि तथा पारस्परिक विश्वास की हानि।

झूठ तथा अविश्वास, छिद्रान्वेषण तथा उकसावे की यह निकम्मी नीति ज़रूर ही ख़त्म होनी चाहिए। अब से ज़रूर ही उसकी जगह एक ऐसी साफ़, खुली और ईमानदार नीति अपनानी चाहिए, जिसके फलस्वरूप रूस की जातियों के बीच पूर्ण पारस्परिक विश्वास स्थापित हो सकें। इस विश्वास के फलस्वरूप ही रूस की जातियों की सच्ची तथा स्थायी एकता स्थापित हो सकती है। और इस एकता के फलस्वरूप ही रूस की जातियों के किसान और मज़दूर संहत होकर एक ऐसी क्रांतिकारी शक्ति बन सकते हैं, जो साम्राज्यवादी-संयोजनकारी पूंजीपति वर्ग की सभी कोशिशों का मुक़ाबला करने में समर्थ होगी।

३

आज्ञप्तियां

बैंकों के राष्ट्रीयकरण के बारे में

राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के व्यवस्थित संगठन के, बैंकों की सट्टेबाज़ी के संपूर्ण उन्मूलन के और मज़दूरों, किसानों तथा पूरी मेहनतकश आबादी की बैंक-पूंजी द्वारा शोषण से पूर्ण मुक्ति के हित में और रूसी जनतंत्र के एक ही राष्ट्रीय बैंक की स्थापना की दृष्टि से, जो जनता तथा ग़रीब वर्गों का वास्तविक हित-साधन करेगा, केंद्रीय कार्यकारिणी समिति (**त्से-ई-काह**) फ़ैसला करती है:

१. बैंक-व्यवसाय राजकीय इजारेदारी घोषित किया जाता है।

२. सभी मौजूदा निजी मिश्रित-पूंजी बैंक और बैंक-कार्यालय राजकीय बैंक में मिला दिये जाते हैं।

३. बंद किये जाने वाले प्रतिष्ठानों के समस्त देयादेय राजकीय बैंक द्वारा ग्रहण किये जाते हैं।

४. राजकीय बैंक में निजी बैंकों के विलयन का क्रम एक विशेष आज्ञप्ति द्वारा निश्चित किया जायेगा।

५. निजी बैंकों के मामलों का अस्थायी प्रबंध राजकीय बैंक के बोर्ड के सुपुर्द किया जाता है।

६. छोटे छोटे जमाकर्ताओं के हित सुरक्षित रहेंगे।

सभी फ़ौजी आदमियों के दर्जे की बराबरी के बारे में

सेना में पहले की असमानता के सभी अवशेषों को अविलंब तथा निर्णायक रूप से समाप्त करने के बारे में क्रांतिकारी जनता की इच्छा को संपन्न करती हुई जन-कमिसार परिषद् आदेश देती है:

१. कारपोरल के पद से लेकर जनरल के पद तक, सेना के सभी पद तथा श्रेणियां समाप्त की जाती हैं। अब से रूसी जनता की सेना में

क्रांतिकारी सेना के सैनिक की सम्मानपूर्ण उपाधि रखनेवाले स्वतंत्र तथा समान नागरिक होंगे।

२. पहले के पदों तथा श्रेणियों से संबंधित सभी विशेषाधिकार तथा वैशिष्ट्य के सभी बाह्य चिह्न समाप्त किये जाते हैं।

३. पद से पुकारने की प्रथा समाप्त की जाती है।

४. सभी विभूषक, पदक तथा वैशिष्ट्य के दूसरे चिह्न समाप्त किये जाते हैं।

५. अफ़सर के पद की समाप्ति के साथ अफ़सरों के सभी अलहदा संगठन समाप्त किये जाते हैं।

६. सेना में अर्दलियों की मौजूदा प्रथा समाप्त की जाती है।

टिप्पणी – अर्दली केवल सदर मुकाम, चांसरियों, समितियों तथा दूसरे सैनिक संगठनों के लिए छोड़े जायेंगे।

जन-कमिसार परिषद् के अध्यक्ष **व्ला० उल्यानोव (लेनिन)**

सैनिक तथा नौसैनिक मामलों के लिए जन-कमिसार **न० क्रिलेन्को**

सैनिक मामलों के जन-कमिसार **न० पोद्वोइस्की**

परिषद्-सचिव **न० गोर्बुनोव**

सेना में निर्वाचन-सिद्धांत तथा अधिकार के संगठन के बारे में

१. मेहनतकश जनता की इच्छा का पालन करती हुई सेना जनता की सर्वोच्च प्रतिनिधि – जन-कमिसार परिषद् के अधीन है।

२. सैनिक यूनिटों तथा संयोजनों की सीमा के अन्दर पूर्ण अधिकार संबंधित सैनिक समितियों तथा सोवियतों में निहित है।

३. सैनिकों के जीवन तथा क्रिया-कलाप की जो शाखाएं अभी से समितियों के अधिकार क्षेत्र में हैं, उन पर अब औपचारिक रूप से उनका प्रत्यक्ष नियंत्रण स्थापित किया जाता है। उनके क्रिया-कलाप की जिन शाखाओं को समिति अपने अधिकार में नहीं ले सकती, उन पर सैनिकों की समितियों या सोवियतों का नियंत्रण स्थापित किया जाता है।

४. कमांडिंग स्टाफ़ के निर्वाचन की प्रथा चलाई जाती है। रेजीमेंट

कमांडरों समेत सभी कमांडर स्क्वाडों, प्लाटूनों, कंपनियों, स्क्वाड्रनों, बैटरियों, डिवीज़नों (तोपखाना–१–३ बैटरियां) और रेजीमेंटों के सामान्य मतदान द्वारा चुने जायेंगे। मुख्य सेनापति समेत, रेजीमेंट-कमांडर के ऊपर सभी कमांडर समितियों की कांग्रेसों अथवा सम्मेलनों द्वारा निर्वाचित किये जायेंगे।

टिप्पणी – "सम्मेलन" शब्द का अर्थ है समिति-विशेष की एक दर्जा नीचे की समितियों के प्रतिनिधियों के साथ सभा। (जैसे कंपनी-समितियों के प्रतिनिधियों के साथ रेजीमेंट-समितियों का सम्मेलन। – **लेखक**)

५. यह ज़रूरी है कि रेजीमेंट कमांडर के पद के ऊपर के निर्वाचित कमांडरों को निकटतम सर्वोच्च समिति मंज़ूर करे।

टिप्पणी – यदि कोई सर्वोच्च समिति, नामंज़ूरी की वजह के बारे में बयान देती हुई, किसी निर्वाचित कमांडर को मंज़ूर करने से इनकार करती है और नीचे की समिति उसे दोबारा निर्वाचित करती है, तो उसे मंज़ूर करना ही होगा।

६. सेनाओं के कमांडर सेनाओं की कांग्रेसों द्वारा निर्वाचित होंगे। मोर्चों के कमांडर संबंधित मोर्चों की कांग्रेसों द्वारा निर्वाचित होंगे।

७. तकनीकी प्रकार के पदों के लिए, जहां विशेष ज्ञान तथा दूसरी अमली तैयारियों की ज़रूरत है, जैसे: डाक्टर, इंजीनियर, तकनीकज्ञ, तार और रेडियो आपरेटर, हवाबाज़, मोटर-ड्राइवर वग़ैरह, सेवा-विशेष की यूनिटों की समितियों द्वारा ऐसे ही लोग चुने जायेंगे, जो अपेक्षित विशेष ज्ञान से संपन्न हों।

८. स्टाफ़-अध्यक्ष अवश्य ही उन्हीं लोगों के बीच से चुने जायेंगे, जिन्हें इस पद के लिए विशेष सैनिक प्रशिक्षण मिला है।

९. स्टाफ़ के सभी दूसरे सदस्य स्टाफ़-अध्यक्षों द्वारा नियुक्त होंगे और संबंधित कांग्रेसों द्वारा इन नियुक्तियों की पुष्टि की जायेगी।

टिप्पणी – यह आवश्यक है कि विशेष प्रशिक्षण प्राप्त सभी व्यक्तियों के नामों को एक विशेष सूची में दर्ज किया जाये।

१०. सामरिक सेवा में नियुक्त सभी कमांडरों को, जो सैनिकों द्वारा किसी भी पद के लिए चुने नहीं जाते और फलतः जो सामान्य सैनिक का दर्जा रखते हैं, सेवा से निवृत्त करने का अधिकार आरक्षित रखा जाता है।

११. आर्थिक विभागों के पदों को छोड़ कर, और कमान से संबंध रखने वाले पदों के अतिरिक्त, दूसरे सभी पद संबंधित निर्वाचित कमांडरों की नियुक्ति द्वारा भरे जायेंगे।

१२. कमांडिंग स्टाफ़ के चुनाव के बारे में विस्तृ निर्देश अलग से प्रकाशित किये जायेंगे।

जन-कमिसार परिषद् के अध्यक्ष
व्ला० उल्यानोव (लेनिन)
सैनिक तथा नौसैनिक मामलों के लिए जन-कमिसार
न० क्रिलेन्को
सैनिक मामलों के जन-कमिसार
न० पोद्वोइस्की
परिषद्-सचिव **न० गोर्बुनोव**

सभी वर्गों तथा उपाधियों की समाप्ति के बारे में

१. सभी वर्ग तथा वर्ग-विभेद, सभी वर्ग-विशेषाधिकार तथा प्रतिबंध, सभी वर्ग-संगठन तथा संस्थान और सभी नागरिक पद समाप्त किये जाते हैं।

२. समाज के सभी वर्ग (अभिजात वर्ग, व्यापारी, निम्न-पूंजीवादी वर्ग इत्यादि) तथा सभी उपाधियां (प्रिंस, काउण्ट इत्यादि) तथा नागरिक पदों की सभी उपाधियां (राजकीय प्रीवी कौंसिलर इत्यादि) समाप्त की जाती हैं और रूसी जनतंत्र के नागरिक की सामान्य उपाधि स्थापित की जाती है।

३. अभिजात वर्गीय संस्थाओं की संपत्ति तत्स्थानीय स्वशासी ज़ेम्सत्वोओं के हाथों में अंतरित की जाती है।

४. व्यापारी तथा निम्न-पूंजीवादी संगठनों की संपत्ति अविलंब स्वशासी नगरपालिका के हाथ में अंतरित की जाती है।

५. अपनी संपत्ति तथा अभिलेखागारों सहित प्रत्येक प्रकार के वर्ग-संस्थान नगरपालिका तथा ज़ेम्सत्वो प्रशासन के हाथों में अंतरित किये जाते हैं।

६. भूतपूर्व क़ानूनों की सभी धारायें, जो अभी तक इन मामलों में लागू रही हैं, इसके साथ ही रद्द की जाती हैं।

७. मौजूदा आज्ञप्ति प्रकाशन-तिथि से जारी समझी जायेगी और उसे मज़दूरों, सैनिकों तथा किसानों के प्रतिनिधियों की सोवियतें लागू करेंगी।

मौजूदा आज्ञप्ति **त्से-ई-काह** द्वारा २३ नवंबर, १९१७ की बैठक में अनुसमर्थित तथा निम्नलिखित व्यक्तियों द्वारा हस्ताक्षरित की गई है:

त्से-ई-काह के अध्यक्ष **स्वेर्दलोव**

जन-कमिसार परिषद् के अध्यक्ष **व्ला० उल्यानोव (लेनिन)**
जन-कमिसार परिषद् के कार्यकारी अधिकारी **व० बोंच-ब्रुयेविच**
परिषद्-सचिव **न० गोर्बुनोव**

३ दिसम्बर को जन-कमिसार परिषद् ने "निरपवाद रूप से सभी सरकारी संस्थानों तथा प्रतिष्ठानों के, चाहे वे सामान्य हों अथवा विशेष, अहलकारों और कर्मचारियों की तनख़ाहें घटाने" का फ़ैसला किया।

सर्वप्रथम परिषद् ने जन-कमिसार की तनख़ाह ५०० रूबल माहवार मुक़र्रर की और यह तय किया कि कार्य करने में असमर्थ परिवार के प्रत्येक वयस्क सदस्य पीछे उसे १०० रूबल माहवार अतिरिक्त दिया जायेगा...

किसी भी सरकारी अधिकारी को दी जाने वाली यह सबसे ऊंची तनख़ाह थी...

४

काउन्टेस पानिना को गिरफ़्तार किया गया और उन पर सर्वोच्च क्रांतिकारी न्यायाधिकरण में मुक़द्दमा चलाया गया। मेरी आगामी पुस्तक, 'कोर्नीलोव कांड से ब्रेस्त-लितोव्स्क की संधि तक' के 'क्रांतिकारी न्याय' नामक अध्याय में इस मुक़द्दमे का वर्णन किया गया है। क़ैदी के लिए फ़ैसला किया गया कि वह "रुपया लौटा दें और फिर सार्वज-

निक घृणा के सम्मुख खुली छोड़ दी जायें।" दूसरे शब्दों में, उन्हें रिहा कर दिया गया।

५

नई व्यवस्था का मज़ाक़ उड़ाना

१८ नवंबर के 'द्रूग नरोदा' (मेन्शेविक) से:

"बोल्शेविकों की 'तत्काल शांति-संधि' की कहानी हमें एक मज़ेदार फ़िल्म की याद दिलाती है... नेरातोव दौड़ते हैं, त्रोत्स्की पीछा करते हैं; नेरातोव एक दीवार पर चढ़ जाते हैं और उनके पीछे त्रोत्स्की भी; नेरातोव पानी में गोता लगाते हैं, त्रोत्स्की भी पीछे पीछे पानी में कूद पड़ते हैं; नेरातोव छत पर चढ़ जाते हैं, त्रोत्स्की उनके ठीक पीछे हैं; नेरातोव बिस्तर में छिप जाते हैं और त्रोत्स्की उनको पकड़ लेते हैं! जी हां, उनको पकड़ लेते हैं! और स्वभावतः शांति-संधि पर अविलंब दस्तख़त हो जाते हैं...

"विदेश मंत्रालय ख़ाली है और वहां सन्नाटा छाया हुआ है। संदेशवाहक बाअदब पेश आते हैं, मगर उनके चेहरों पर एक तीखा भाव है...

"अगर किसी राजदूत को गिरफ़्तार कर लिया जाये और उसके साथ युद्ध-विराम और शांति-संधि पर दस्तख़त किये जायें तो कैसा रहे? लेकिन ये राजदूत भी कुछ अजीब ही लोग हैं। वे ऐसा मौन साधे हुए हैं, जैसे उन्होंने कुछ सुना ही न हो। ओ इंग्लैंड! ओ फ़्रांस! ओ जर्मनी! हमने आपके साथ युद्ध-विराम-संधि संपन्न की है! क्या यह संभव है कि आप इसके बारे में कुछ नहीं जानते? लेकिन उसे सभी जगह छापा गया है और सभी जगह दीवारों पर चिपका दिया गया है। एक बोल्शेविक की प्रतिष्ठा की शपथ है, शांति-संधि संपन्न की गयी है! हम आपसे ज्यादा कुछ नहीं कहते, आपको सिर्फ़ दो शब्द लिख देने हैं...

"राजदूत मौन के मौन रहते हैं। राष्ट्र मौन रहते हैं। विदेश मंत्रालय खाली है और वहां सन्नाटा छाया हुआ है।

"रोबेस्पियेर के अवतार त्रोत्स्की ने अपने सहायक मरात के आधुनिक संस्करण उरीत्स्की से कहा, 'ज़रा ब्रिटिश राजदूत के यहां दौड़ जाओ और उनसे कहो कि हम शांति का प्रस्ताव कर रहे हैं!'

“ ‘आप ख़ुद जाइये,’ मरात-उरीत्स्की ने कहा, ‘वह किसी से मिलते नहीं हैं।

“ ‘तब फिर उन्हें फ़ोन करो।’

“ ‘मैंने फ़ोन करने की कोशिश की, मगर बेसूद। टेलीफ़ोन रिसीवर अलग धर दिया गया है।’

“ ‘उन्हें तार भेज दो।’

“ ‘मैंने पहले ही भेज दिया।’

“ ‘तो फिर, कुछ नतीजा निकला?’

“मरात-उरीत्स्की ठंडी सांस भरकर चुप रह जाते हैं। रोबेसपियेर-त्रोत्स्की गुस्से से एक कोने में थूकते हैं।

“ ‘मरात सुनो,’ त्रोत्स्की क्षण भर बाद फिर कहते हैं। ‘हमें यह बिल्कुल ही दिखा देना है कि हम एक सक्रिय विदेश नीति चला रहे हैं। हम यह कैसे कर सकते हैं?’

“ ‘नेरातोव को गिरफ़्तार करने के बारे में एक और आज्ञप्ति जारी कीजिये,’ उरीत्स्की ने बड़े गंभीर भाव से कहा।

“ ‘मरात, तुम्हारी अक्ल घास चरने गई है!’ त्रोत्स्की ने चिल्लाकर कहा। यकायक वह उठते हैं, रौद्र-मूर्ति और तेजस्वी, उस घड़ी ऐसा लगता था कि सचमुच रोबेसपियेर ही हों।

“‘उरीत्स्की, लिखो,’ उन्होंने सख़्त लहजे में कहा, ‘ब्रिटिश राजदूत को, रसीद की मांग करते हुए, एक रजिस्ट्री चिट्ठी लिखो। लिखो, मैं भी लिखूंगा! संसार के जन अविलंब शांति की प्रतीक्षा कर रहे हैं!’

“विशाल, रिक्त विदेश मंत्रालय में बस दो टाइपराइटरों की खटखट सुनाई दे रही है। त्रोत्स्की स्वयं अपने हाथों से एक सक्रिय विदेश नीति चला रहे हैं...”

६
समझौते के सवाल के बारे में

सभी मज़दूरों और सिपाहियों की जानकारी के लिए।

११ नवंबर को प्रेओब्राजेन्स्की रेजीमेंट के क्लब में पेत्रोग्राद गैरिसन की सभी यूनिटों के प्रतिनिधियों की एक असाधारण सभा हुई।

यह सभा प्रेओब्राजेन्स्की तथा सेम्योनोव्स्की रेजीमेंटों की पेशक़दमी पर इस सवाल का फ़ैसला करने के लिए बुलाई गई थी कि कौन सी समाजवादी पार्टियां सोवियतों की सत्ता की ओर हैं और कौन ख़िलाफ़ हैं, कौन जनता की ओर हैं और कौन ख़िलाफ़ हैं और यह कि क्या उनके बीच समझौता संभव है या नहीं।

त्से-ई-काह, नगर दूमा, अव्क्सेन्त्येव-पंथी किसानों की सोवियतों के और बोल्शेविकों से लेकर जन-समाजवादियों तक सभी राजनीतिक पार्टियों के प्रतिनिधि सभा में बुलाये गये थे।

देर तक विचार करने और सभी पार्टियों तथा संगठनों की घोषणाओं को सुनने के बाद, सभा विशाल बहुमत से इस निश्चय पर पहुंची कि केवल बोल्शेविक और वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारी जनता की ओर हैं और बाक़ी सभी पार्टियां समझौते की कोशिश करने की आड़ में जनता को नवंबर की महान् मज़दूरों तथा किसानों की क्रांति के दिनों में प्राप्त उपलब्धियों से वंचित करने के लिए सचेष्ट हैं।

पेत्रोग्राद गैरिसन की इस सभा में जो प्रस्ताव ११ वोटों के ख़िलाफ़ ६१ वोटों से, और १२ के तटस्थ रहते हुए, पास किया गया, उसका मज़मून नीचे दिया जाता है:

"सेम्योनोव्स्की तथा प्रेओब्राजेन्स्की रेजीमेंटों की पेशक़दमी पर बुलाया गया गैरिसन सम्मेलन, विभिन्न राजनीतिक पार्टियों के बीच समझौते के सवाल पर सभी समाजवादी पार्टियों तथा जन-संगठनों के प्रतिनिधियों को सुनने के बाद इस निष्कर्ष पर पहुंचता है कि:

"१. **त्से-ई-काह** के प्रतिनिधियों, बोल्शेविक पार्टी तथा वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारियों के प्रतिनिधियों ने निश्चित रूप से घोषणा की कि वे सोवियतों की सरकार का, भूमि, शांति तथा उद्योग पर मज़दूरों के नियंत्रण संबंधी आज्ञप्तियों का समर्थन करते हैं और यह कि वे इस कार्यक्रम के आधार पर सभी समाजवादी पार्टियों से समझौता करने के लिए तैयार हैं।

"२. इसके साथ ही दूसरी पार्टियों (मेन्शेविकों, समाजवादी-क्रांतिकारियों) के प्रतिनिधियों ने या तो कोई जवाब नहीं दिया, या बस

इतना ही कहा कि वे सोवियतों की सत्ता के तथा भूमि, शांति और मज़दूरों के नियंत्रण संबंधी आज्ञप्तियों के ख़िलाफ़ हैं।

"इस बात को देखते हुए सभा फ़ैसला करती है:

"१. वह उन सभी पार्टियों की कठोर निंदा करती है, जो समझौते की आड़ में वस्तुतः नवंबर की क्रांति की लोकप्रिय उपलब्धियों को नष्ट कर देने की इच्छा रखती हैं।

"२. वह **त्से-ई-काह** तथा जन-कमिसार परिषद् में पूर्ण विश्वास प्रगट करती है और उन्हें पूर्ण समर्थन का आश्वासन देती है।

"इसके साथ ही सभा यह आवश्यक मानती है कि वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारी साथी जनता की सरकार में प्रवेश करें।"

७

शराबियों के दंगे-फ़साद

बाद में इस बात का पता चला कि सिपाहियों के बीच दंगा-फ़साद भड़काने के लिए कैडेटों की देखरेख में बाक़ायदा एक संगठन काम कर रहा था। टेलीफ़ोन से विभिन्न बारिक़ों को ख़बर दी जाती कि फलां या फलां पते पर शराब बांटी जा रही है और जब सिपाही उस मुक़ाम पर पहुंचते, वहां एक शख़्स उन्हें बताता कि शराब का तहख़ाना किस जगह है ...

जन-कमिसार परिषद् ने शराबख़ोरी-विरोधी संघर्ष के लिए एक कमिसार नियुक्त किया, जिसने शराबियों के दंगों को सख़्ती से कुचलने के अलावा शराब की लाखों बोतलों को तुड़वा डाला। शिशिर प्रासाद के तहख़ानों में, जहां ५० लाख डालर से ज़्यादा की क़ीमत की दुर्लभ अंगूरी शराब की बोतलें मौजूद थीं, पहले पानी भर दिया गया और फिर यह शराब वहां से हटाकर क्रोंश्तादत ले जाई गई और नष्ट कर दी गई।

इस काम में त्रोत्स्की के शब्दों में, "क्रांतिकारी सेना के बेहतरीन सपूत, जिन पर हमें नाज़ है", क्रोंश्तादत के मल्लाहों ने अपना कर्त्तव्य लौह-अनुशासन के साथ निभाया।

८

सट्टेबाज़

उनके बारे में दो आदेश :

जन-कमिसार परिषद् द्वारा सैनिक क्रांतिकारी समिति को

युद्ध के कारण तथा व्यवस्था के अभाव के कारण उत्पन्न खाद्य-संभरण का विसंगठन सट्टेबाज़ों, लुटेरों और रेलों, जहाज़ी दफ़्तरों और चालान दफ़्तरों वग़ैरह में उनके अनुयायियों की बदौलत नितांत उत्कट हो रहा है

राष्ट्र की घोर विपदाओं का फ़ायदा उठाकर ये अपराधी लुटेरे अपने मुनाफ़े के लिए करोड़ों सिपाहियों तथा मज़दूरों के स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं।

यह परिस्थिति अब एक दिन के लिए भी बर्दाश्त नहीं की जा सकती।

जन-कमिसार परिषद् सैनिक क्रांतिकारी समिति से प्रस्ताव करती है कि वह सट्टेबाज़ी, तोड़-फोड़, चोरगोदामों में माल रखने तथा धोखा-धड़ी से माल को रोकने वग़ैरह को उन्मूलित करने की दिशा में निर्णायक से निर्णायक क़दम उठाये।

जो लोग भी ऐसे काम करने के अपराधी होंगे, उन्हें सैनिक क्रांतिकारी समिति की विशेष आज्ञा द्वारा फ़ौरन गिरफ़्तार किया जा सकता है और जब तक उन्हें क्रांतिकारी न्यायाधिकरण के सामने आरोप के लिए न लाया जाये, उन्हें क्रोंश्तादत की जेलों में बंद रखा जा सकता है।

सभी जन-संगठनों को आमंत्रित किया जाता है कि वे खाद्य-संभरण को नष्ट-भ्रष्ट करने वाले लोगों के ख़िलाफ़ इस संघर्ष में सहयोग करें

जन-कमिसार परिषद् के अध्यक्ष
व्ला० उल्यानोव (लेनिन)

सभी ईमानदार नागरिकों के नाम

सैनिक क्रांतिकारी समिति आदेश करती है:

लुटेरे, डाकू, सट्टेबाज़ जनता के शत्रु घोषित किये जाते हैं...

सैनिक क्रांतिकारी समिति सभी सार्वजनिक संगठनों, सभी ईमानदार नागरिकों से प्रस्ताव करती है: उन्हें लूट, डाकेज़नी, सट्टेबाज़ी के जिन मामलों की ख़बर लगती है, उन सब की सूचना तुरंत सैनिक क्रांतिकारी समिति को पहुंचायें।

इस बुराई के साथ लड़ना सभी ईमानदार लोगों का काम है। सैनिक क्रांतिकारी समिति उन सभी लोगों के समर्थन की आशा करती है, जिन्हें जनता के हित प्रिय हैं।

सट्टेबाज़ों और डाकुओं का पीछा करने में सैनिक क्रांतिकारी समिति कोई रू-रिआयत नहीं करेगी।

सैनिक क्रांतिकारी समिति

पेत्रोग्राद, २ दिसंबर, १९१७

९

कलेदिन के नाम पुरिश्केविच का पत्र

"पेत्रोग्राद की परिस्थिति घोर निराशाजनक है। शहर बाहरी दुनिया से कट गया है और पूरी तरह बोल्शेविकों के चंगुल में है... लोग राह-चलते गिरफ़्तार कर लिये जाते हैं, नेवा नदी में उछाल कर डुबो दिये जाते हैं और बिना किसी अभियोग के जेलों में बंद कर दिये जाते हैं। बूर्त्सेव तक को पीटर-पाल क़िले में कड़े पहरे में बंद कर दिया गया है।

"जिस संगठन का मैं अध्यक्ष हूं, वह सभी अफ़सरों को और अवशिष्ट **युंकर** स्कूलों को एकताबद्ध करने तथा उन्हें हथियारों से लैस करने के लिए अनथक काम कर रहा है। अफ़सरों तथा **युंकरों** की रेजीमेंटों को स्थापित किये बिना परिस्थिति बचाई नहीं जा सकती। इन रेजीमेंटों को लेकर हल्ला बोलकर और पहली सफलता प्राप्त कर बाद में हम

गैरिसन के सिपाहियों की मदद हासिल कर सकते हैं। परंतु इस पहली सफलता के बिना एक भी सिपाही का भरोसा करना असंभव है, क्योंकि हज़ारों सिपाही बंटे हुए हैं और हर रेजीमेंट में मौजूद नीचों से आतंकित हैं। जनरल दूतोव, जिन्होंने उस मौक़े को हाथ से जाने दिया, जब निर्णायक क़दम उठाकर कुछ हासिल किया जा सकता था, की विचित्र नीति की बदौलत अधिकांश कज़्ज़ाकों पर बोल्शेविक प्रचार का रंग चढ़ गया है। समझाने-बुझाने और क़ायल करने की नीति रंग लाई है: सभी भद्रजनों पर ज़ुल्म ढाया गया है और तेली-तंबोली और अपराधी हावी हो गये हैं... उन्हें गोली मारे और फांसी पर चढ़ाये बिना कुछ भी नहीं किया जा सकता।

"जनरल, हम यहां पर आपका इंतज़ार कर रहे हैं, और हम आपके आगमन की घड़ी में सभी उपलब्ध सैनिकों को लेकर आगे बढ़ेंगे। परंतु इसके लिए आवश्यक है कि हम आपके साथ किसी न किसी तरह का संपर्क स्थापित करें और सबसे पहले निम्नलिखित बातों का स्पष्टीकरण करें:

"(१) क्या आप जानते हैं कि आपके नाम पर उन सभी अफ़सरो को, जो लड़ाई में हिस्सा ले सकते हैं, आपकी सेना में शामिल होने के बहाने से पेत्रोग्राद छोड़ने का बुलावा दिया जा रहा है?

"(२) हम तकरीबन किस वक़्त आपके पेत्रोग्राद पहुंचने का भरोसा कर सकते हैं? हम यह जानना चाहेंगे, ताकि हम अपनी गतिविधियों को मिला सकें।

"यहां के चेतन लोगों की अपराधपूर्ण निष्क्रियता के बावजूद, जिन्होंने बोल्शेविज़्म का जुआ हमारी गर्दन में पड़ने दिया, अधिकांश अफ़सरों के, जिन्हें संगठित करना इतना कठिन है, असाधारण गावदीपन के बावजूद, हमारा विश्वास है कि सचाई हमारी ओर है और हम देशप्रेम के उद्देश्य से और देश को बचाने के लिए अनिष्टमूलक तथा अपराधपूर्ण शक्तियों पर विजय प्राप्त करेंगे।"

पुरिश्केविच पर क्रांतिकारी न्यायाधिकरण में मुक़द्दमा चलाया गया और उन्हें थोड़े दिनों की क़ैद की सज़ा दी गई...

विज्ञापनों की इजारेदारी के बारे में आज्ञप्ति

१. समाचारपत्रों, पुस्तकों, नोटिसबोर्डों, स्टालों, दफ़्तरों और दूसरे प्रतिष्ठानों में विज्ञापनों का प्रकाशन राजकीय इजारेदारी घोषित किया जाता है।

२. विज्ञापन केवल पेत्रोग्राद में मज़दूरों तथा किसानों की अस्थायी सरकार के मुखपत्रों में और स्थानीय सोवियतों के मुखपत्रों में प्रकाशित किये जा सकते हैं।

३. समाचारपत्रों तथा विज्ञापन कार्यालयों के मालिकों को और साथ ही ऐसे प्रतिष्ठानों के सभी कर्मचारियों को, विज्ञापन-व्यवसाय के सरकार के हाथों में अंतरित होने तक... इस बात की निगरानी रखते हुए कि उनके कार्यालय बराबर चलते रहें और समस्त निजी विज्ञापनों तथा उनके लिए पाई गई रक़मों और साथ ही हिसाब-बहियों, लेखाओं तथा कापी को सोवियतों के सुपुर्द करते हुए, अपने अपने पदों पर क़ायम रहना चाहिए।

४. सशुल्क विज्ञापन का कारोबार करने वाले सभी प्रकाशनों तथा प्रतिष्ठानों के सभी प्रबंधकर्ता तथा उनके कर्मचारी और मज़दूर, सोवियत प्रकाशनों में विज्ञापन-व्यवसाय को अधिक पूर्ण तथा उचित रूप में संगठित करने तथा विज्ञापन के सार्वजनिक लाभ के निमित्त बेहतर नियम तैयार करने के लिए, नगर-कांग्रेस आयोजित करने और पहले तो, नगर की ट्रेड-यूनियनों के रूप में एकजुट होने और फिर एक अखिल रूसी यूनियन में एकजुट होने के लिए बाध्य हैं।

५. जो लोग भी दस्तावेज़ें अथवा रुपया-पैसा छिपाने या अनुच्छेद ३ और ४ सूचित विनियमों को विफल करने के दोषी पाये जायेंगे, उन्हें तीन साल तक क़ैद की सज़ा दी जायेगी और उनकी समस्त संपत्ति ज़ब्त कर ली जायेगी।

६. निजी प्रकाशनों में पैसा लेकर विज्ञापन निकालने अथवा उन्हें प्रच्छन्न रूप में निकालने के लिए भी कठोर दंड दिया जायेगा।

७. सरकार विज्ञापन-कार्यालयों को ज़ब्त करती है ; आवश्यक होने पर उनके मालिकों को मुआवज़ा पाने का हक़ होगा। ज़ब्त किये हुए प्रतिष्ठानों के छोटे छोटे मालिकों, जमाकर्ताओं और भागीदारों का इस व्यवसाय में जो भी रुपया लगा हुआ है, वह उन्हें लौटा दिया जायेगा।

८. सभी प्रकाशनों और कार्यालयों और सामान्यतः विज्ञापन का व्यवसाय करने वाले सभी प्रतिष्ठानों को चाहिए कि वे मज़दूरों तथा सैनिकों के प्रतिनिधियों की सोवियतों को अपने पते की सूचना दें और अपने व्यवसाय का अन्तरण आरंभ करें, नहीं तो वे अनुच्छेद ५ में सूचित दंड के भागी होंगे।

जन-कमिसार परिषद् के अध्यक्ष **व्ला० उल्यानोव (लेनिन)**
जन-शिक्षा के जन-कमिसार **अ० व० लुनाचार्स्की**
परिषद्-सचिव **न० गोर्बुनोव**

११

अनिवार्य अध्यादेश

१. पेत्रोग्राद नगर मुहासिराबंद किया जाता है।

२. सड़कों और चौकों पर सभी सभाओं, मीटिंगों और जमावड़ों की मनाही की जाती है।

३. शराब के तहखानों, गोदामों, कारखानों, स्टोरों, कोठियों तथा निजी घरों वग़ैरह, वग़ैरह को लूटने की कोशिशें **बिना चेतावनी के मशीनगन चलाकर बंद की जायेंगी।**

४. आवास-समितियों, दरबानों, चौकीदारों और मिलिशिया को सभी घरों, अहातों और सड़कों में कड़ाई से सुव्यवस्था रखने का ज़िम्मा दिया जाता है। घरों के दरवाज़ों और सहन के फाटकों में शाम के नौ बजे तक अवश्य ही ताला लग जाना चाहिए और उन्हें सवेरे सात बजे खोलना चाहिए। शाम को नौ बजे के बाद केवल किरायेदार ही आवास-समितियों की कड़ी निगरानी में घर से निकल सकते हैं।

५. जो लोग किसी भी प्रकार के एलकोहलीय पेय के वितरण, ख़रीद या बिक्री के अपराधी होंगे और वे भी जो धारा २ तथा धारा ४ का उल्लंघन करने के अपराधी होंगे, उन्हें फ़ौरन गिरफ़्तार कर लिया जायेगा और उन्हें कड़ी से कड़ी सज़ा दी जायेगी।

मज़दूरों तथा सैनिकों के प्रतिनिधियों की
सोवियत की कार्यकारिणी
समिति के अधीन
दंगा-विरोधी संघर्ष समिति

पेत्रोग्राद, ६ दिसंबर, रात, तीन बजे

१२

आबादी के नाम

साथी मज़दूरो, सिपाहियो, किसानो – सभी मेहनतकशो!

मज़दूरों तथा किसानों की क्रांति पेत्रोग्राद और मास्को में विजयी हुई है... हर रोज़ हर घड़ी मोर्चे से और गांवों से नई सरकार को अभिनंदन-संदेश आ रहे हैं... यह देखते हुए कि जनता का बहुमत क्रांति का समर्थन करता है... उसकी विजय सुनिश्चित है।

यह बिल्कुल ही समझ में आने लायक़ बात है कि मालिक और पूंजीपति, पूंजीपति वर्ग के साथ घनिष्ठ रूप में सम्बद्ध कर्मचारी और अमले – एक शब्द में सभी धनी-मानी लोग और उनके साथ सांठ-गांठ करने वाले लोग – नई क्रांति को शत्रुता की दृष्टि से देखते हैं, उसकी सफलता का विरोध करते हैं, बैंकों के कारोबार को ठप करने की धमकी देते हैं और अन्य प्रतिष्ठानों के काम को भीतर से तोड़ते-फोड़ते या उसमें अड़चन डालते हैं... हर चेतन मज़दूर इस बात को बख़ूबी समझता है कि यह शत्रुता अनिवार्य है... परंतु मेहनतकश वर्ग इस प्रतिरोध से क्षण भर के लिए भी घबराते नहीं हैं। जनता का बहुमत हमारी ओर है। समूची दुनिया के मज़दूरों और मज़लूमों का बहुमत हमारी ओर है। न्याय हमारी ओर है। हमारी अंतिम विजय निश्चित है।

पूंजीपतियों और बड़े बड़े अफ़सरों का प्रतिरोध चूर चूर कर दिया जायेगा। बैंकों तथा वित्तीय सिंडीकेटों के राष्ट्रीयकरण के बारे में एक विशेष क़ानून के बिना कोई भी अपनी संपत्ति से वंचित नहीं किया जायेगा। यह क़ानून तैयार किया जा रहा है। किसी भी मज़दूर को एक भी कोपेक का नुक़सान नहीं होगा ; इसके विपरीत, उसकी मदद की जायेगी। इस घड़ी नये टैक्स लगाये बिना, नई सरकार यह अपना एक प्राथमिक कर्तव्य समझती है कि वह पिछली हुकूमत द्वारा लागू किये गये टैक्सों की वसूली का कड़ाई से हिसाब करे और उस पर नियंत्रण स्थापित करे ...

साथी मज़दूरो ! याद रखिये कि सरकार की बागडोर ख़ुद आपके हाथों में है। जब तक आप ख़ुद अपने को संगठित नहीं करते और राजकाज को ख़ुद अपने हाथों में नहीं ले लेते, कोई आपकी मदद करने वाला नहीं है। आपकी सोवियतें अब राजकीय सत्ता के निकाय बन गई हैं ... उन्हें मज़बूत बनाइये, कठोर क्रांतिकारी नियंत्रण स्थापित कीजिये। शराबियों, लुटेरों, प्रतिक्रांतिकारी **युंकरों** और कोर्नीलोवपंथियों की अराजकता की कोशिशों को बेरहमी के साथ कुचल डालिये।

उत्पादन के ऊपर तथा उपज के हिसाब के ऊपर कड़ा नियंत्रण स्थापित कीजिये। जो भी उत्पादन में तोड़-फोड़ कर, अनाज के रिज़र्व स्टाक को, दूसरे माल के रिज़र्व स्टाक को छिपा कर, अनाज के चालानों में अड़चन डाल कर, रेल-व्यवस्था, डाक और तार-व्यवस्था में गड़बड़ी पैदा कर या सामान्यतः शांति स्थापित करने तथा किसानों के हाथों में भूमि अंतरित करने के महान् कार्य का विरोध कर जनता की संपत्ति को नुक़सान पहुंचाता है, उसे गिरफ़्तार कर लीजिए और जनता के क्रांतिकारी न्यायाधिकरण के हवाले कर दीजिये ...

"साथी मज़दूरो, सिपाहियो, किसानो – सभी मेहनतकशो !

"समस्त सत्ता अपनी सोवियतों के हाथों में सौंप दीजिये ... हम किसानों के बहुमत की सहमति और अनुमोदन से धीरे धीरे, पग पग कर दृढ़ तथा निष्कंप भाव से समाजवाद की विजय की ओर बढ़ेंगे, जिस पर सर्वाधिक सभ्य देशों के मज़दूर वर्ग के हरावल मुहर लगा देंगे

और जो लोगों को स्थायी शांति प्रदान करेगी और उन्हें हर तरह की गुलामी तथा हर तरह के शोषण से मुक्त करेगी।"

जन-कमिसार परिषद् के अध्यक्ष
व्ला० उल्यानोव (लेनिन)

पेत्रोग्राद, १८ नवंबर १९१७

१३

"पेत्रोग्राद के सभी मज़दूरों के नाम!

"साथियो, क्रांति विजयी हो रही है – क्रांति विजयी हुई है। समस्त सत्ता हमारी सोवियतों के हाथ में आ गई है। पहले हफ़्ते सबसे ज़्यादा मुश्किल हफ़्ते होंगे। प्रतिक्रिया को, जिसकी कमर टूट गई है, अंतिम रूप से कुचल देना होगा, हमें अपने प्रयासों में पूर्ण विजय प्राप्त करनी होगी। इन दिनों में मज़दूर वर्ग को, नई, सोवियतों की जन-सरकार के सभी उद्देश्यों की पूर्ति में सुविधा पहुंचाने की गरज़ से, **सबसे अधिक दृढ़ता और सहनशीलता** प्रदर्शित करनी चाहिए। अगले चंद दिनों के अंदर मज़दूरों के सवाल के बारे में आज्ञप्तियां जारी की जायेंगी, और पहली ही आज्ञप्तियों में उद्योग के उत्पादन तथा नियमन पर मज़दूरों के नियंत्रण संबंधी आज्ञप्ति होगी।

"**इस समय पेत्रोग्राद में मज़दूर-समुदायों द्वारा हड़ताल और प्रदर्शन से हानि ही हो सकती है।**

"हम आपका आवाहन करते हैं कि आप सभी आर्थिक और राजनीतिक हड़तालों को अविलंब बंद कर दें, अपना काम हाथ में लें और उसे पूर्ण व्यवस्थित रूप से करें। कारख़ानों और सभी उद्योगों का काम सोवियतों की नयी सरकार के लिए ज़रूरी है, क्योंकि इस काम में कोई रुकावट पड़ने से हमारे लिए नयी मुश्किलें पैदा होंगी, जबकि यूं भी मुश्किलें कुछ कम नहीं हैं। आप सभी अपना अपना स्थान ग्रहण करें।

"इन दिनों में नयी सोवियतों की सरकार का समर्थन करने का सबसे अच्छा तरीक़ा है – अपना काम करना।

सर्वहारा की फ़ौलादी मज़बूती ज़िंदाबाद! क्रांति ज़िंदाबाद!"

मज़दूरों तथा सैनिकों के प्रतिनिधियों की पेत्रोग्राद सोवियत
ट्रेड-यूनियनों की पेत्रोग्राद परिषद्
कारख़ाना समितियों की पेत्रोग्राद परिषद

१४

अपीलें और जवाब में दूसरी अपीलें

राजकीय तथा निजी बैंकों के कर्मचारियों की ओर से पेत्रोग्राद की आबादी के नाम

"साथी मज़दूरो, सिपाहियो और नागरिको!

"सैनिक क्रांतिकारी समिति ने एक 'असाधारण सूचना' में राजकीय तथा निजी बैंकों तथा दूसरे संस्थानों के कर्मचारियों के ख़िलाफ़ 'मोर्चे के लिए संभरण सुनिश्चित करने की ओर निर्देशित सरकार के काम में बाधा डालने' का इलज़ाम लगाया है।

"साथियो और नागरिको, हमारे ख़िलाफ़, उन लोगों के ख़िलाफ़, जो श्रम सामान्य सेना के अंग हैं, इस कुत्सा पर विश्वास मत कीजिये।

"हमारे परिश्रमपूर्ण जीवन में हिंसात्मक कार्यों द्वारा हस्तक्षेप का जो बराबर डर लगा हुआ है, उसके साथ काम करना हमारे लिए कितना भी कठिन क्यों न हो, यह जानना कि हमारा देश तथा क्रांति विनाश के कगार पर हैं कितना भी निराशाजनक क्यों न हो, नीचे से लेकर ऊपर तक हम सभी कर्मचारी, **आर्तेलश्चिक**, हिसाब-किताब रखने वाले लोग, मज़दूर, संदेशवाहक वग़ैरह मोर्चे तथा देश के लिए रसद-पानी व गोलाबारूद सुनिश्चित बनाने के काम से संबद्ध अपने कर्तव्यों को पूरा करते जा रहे हैं।

"साथी मज़दूरो और सिपाहियो, वित्त तथा बैंकिंग के सवालों के बारे में आपके अज्ञान का भरोसा कर आपको उन लोगों के ख़िलाफ़ भड़काया जा रहा है, जो आप ही की तरह मज़दूर हैं, क्योंकि मोर्चे पर हमारे सिपाही-भाइयों के फ़ाक़े करने और मरने की ज़िम्मेदारी को

अपराधी व्यक्तियों के ऊपर न डाल कर उन निर्दोष मज़दूरों के सिर मढ़ना ज़रूरी है, जो सामान्य ग़रीबी और विसंगठन के बोझ के नीचे अपने कर्त्तव्य का पालन कर रहे हैं।

"मज़दूरो और सिपाहियो! याद रखिये, बैंक-कर्मचारी स्वयं श्रमिक जनता के अंग हैं और उन्होंने सदा उसके हितों का समर्थन किया है और सदा करेंगे। कर्मचारियों ने मोर्चे के लिए और मज़दूरों के लिए ज़रूरी एक भी कोपेक को न कभी रोका है और न रोकेंगे।

"छः नवंबर से २३ नवंबर तक, अर्थात् १७ दिनों के बीच, मोर्चे को ५० करोड़ रूबल और मास्को को १२ करोड़ रूबल भेजे गये हैं – दूसरे शहरों को भेजी गयी रक़में अलग हैं।

"जनता की संपदा की चौकसी करते हुए, जिस संपदा की स्वामी पूरे राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करने वाली संविधान सभा ही हो सकती है, कर्मचारी उन उद्देश्यों के लिए पैसा देने से इनकार करते हैं, जिनके बारे में वे कुछ नहीं जानते।

"जो मिथ्या आरोपकर्ता क़ानून अपने हाथों में लेने के लिए आपका आह्वान कर रहे हैं, उन पर विश्वास मत कीजिये!"

राजकीय बैंक-कर्मचारियों की अखिल रूसी यूनियन का केंद्रीय बोर्ड। उधार-संस्थाओं के कर्मचारियों की अखिल रूसी ट्रेड-यूनियन का केंद्रीय बोर्ड

पेत्रोग्राद की आबादी के नाम

"**नागरिको!** इन अंधकारमय दिनों में रूस के उद्धार के लिए परिश्रम करने वाले, खाद्य मंत्रालय के कर्मचारियों तथा दूसरे खाद्य-संभरण संगठनों के कार्यकर्ताओं के ख़िलाफ़ भयानक अभियोगों का प्रचार करके गैरज़िम्मेदार लोग आपके सामने जिस झूठ को व्यंजित कर रहे हैं उस पर विश्वास न कीजिये। नागरिको! दीवारों पर चिपकाये गये पोस्टरों में आप से कहा गया है कि आप हमें ज़िंदा न छोड़ें, उनमें हमारे ऊपर तोड़-फोड़ व हड़ताल करने की झूठी तोहमत लगायी गयी है, और हमारी जनता जो तकलीफ़ और मुसीबत झेल रही है, उन सब के लिए हमें दोषी ठहराया गया है, हालांकि हम सारी जनता को भुखमरी की विभीषिका से

बचाने का सतत् और अनथक प्रयत्न करते रहे हैं और अभी भी कर रहे हैं। दु:खी रूस के नागरिक होने के नाते हम जो कुछ भी सहन कर रहे हैं, उसके बावजूद हमने सेना तथा आबादी को रसद का संभरण करने के भारी और ज़िम्मेदारी के काम का घड़ी भर के लिए भी परित्याग नहीं किया है।

"भूखी तथा ठंड से ठिठरती, अपना खून बहाकर और दारुण यातना सहन कर हमारे अस्तित्व की ही रक्षा करने वाली सेना की तसवीर हमारे मन से क्षण भर के लिए भी नहीं उतरती।

"नागरिको! यदि हम अपनी जनता के जीवन तथा इतिहास के अंधकारमय से अंधकारमय दिनों में बचे रह सके हैं, यदि हम पेत्रोग्राद को अकाल के मुंह से बचा सके हैं, यदि हम मुसीबतज़दा सेना के लिए प्रबल, प्राय: अतिमानवीय प्रयत्नों द्वारा अनाज और चारे का बंदोबस्त कर सके हैं, तो इसीलिए कि हम ईमानदारी के साथ अपना काम करते रहे हैं और अभी भी करते जा रहे हैं...

"सत्ता हड़पनेवालों की 'आख़िरी चेतावनी' का हम यह जवाब देते हैं: आपका, जो देश को तबाही की ओर लिये जा रहे हैं, मुंह ऐसा नहीं है कि आप हमें, उन लोगों को, जो देश को बर्बादी से बचाने के लिए अपनी भरसक सब कुछ कर रहे हैं, धमकियां दें। हम धमकियों से नहीं डरते; हमारे सामने यातनाग्रस्त रूस की पवित्र मूर्ति है। हम आख़िरी दम तक, जब तक आप हमें अपने देश के प्रति अपने कर्तव्य को पूरा करने से रोकते नहीं, सेना तथा जनता को अनाज की सप्लाई करने का काम करते रहेंगे। इसकी विपरीत दशा में सेना तथा जनता के सामने अकाल की विभीषिका मंडरायेगी, परन्तु इसकी ज़िम्मेदारी हिंसा का कुकर्म करने वालों पर होगी।"

खाद्य मंत्रालय के कर्मचारियों की कार्यकारिणी समिति चिनोव्निकों (सरकारी कर्मचारियों) के नाम

"इसके द्वारा यह सूचित किया जाता है कि सभी अधिकारी और व्यक्ति, जिन्होंने सरकारी तथा सार्वजनिक संस्थानों की नौकरी छोड़ दी है, या जिन्हें तोड़-फोड़ के लिए या मुकर्रर दिन पर काम के लिए हाज़िर न होने के कारण बर्खास्त कर दिया गया है और जिन्होंने इसके

बावजूद अपनी तनख़ाहें पेशगी उस वक़्त के लिए ली हैं, जिसमें उन्होंने काम नहीं किया है, ये तनख़ाहें २७ नवंबर, १९१७ से पहले उन संस्थानों को लौटाने के लिए बाध्य हैं, जहां वे काम करते थे।

"ऐसा न किये जाने की सूरत में ये व्यक्ति ख़ज़ाने का माल चुराने के लिए ज़िम्मेदार ठहराये जायेंगे और उनपर सैनिक क्रांतिकारी अदालत में मुक़द्दमा चलाया जायेगा।"

सैनिक क्रांतिकारी समिति

२४ नवंबर, १९१७

विशेष खाद्य-संभरण-बोर्ड की ओर से

"नागरिको!

"पेत्रोग्राद को खाद्य-संभरण करने के हमारे काम की अवस्थायें दिन-दिन अधिकाधिक कठिन होती जा रही हैं।

"हमारे काम में सैनिक क्रांतिकारी समिति के कमिसारों का हस्तक्षेप–जो हमारे कारोबार के लिए इतना विनाशकारी है–अभी भी जारी है।

"**उनकी मनमानी के**, उनके द्वारा हमारे आदेशों के रद्द किये जाने के फलस्वरूप **अनर्थ हो सकता है**।

"एक ठंडे गोदाम को, जहां आबादी के लिए उद्दिष्ट गोश्त और मक्खन रखा जाता है मुहरबंद कर दिया गया है और हम, **यह सामान ख़राब न जाने पाये**, इस गरज़ से गोदाम के तापमान का नियमन करने में **असमर्थ** हैं।

"एक गाड़ी आलू और एक गाड़ी बंदगोभी को क़ब्ज़े में लेकर उन्हें न जाने कहां भेज दिया गया है।

"ऐसा माल भी, जो अधिग्रहण से बरी है (हलुवा), कमिसारों द्वारा अधिग्रहीत किया जाता है, और, एक दिन का वाक़या है, कमिसार ने हलुवे के पांच डिब्बे अपने ज़ाती इस्तेमाल के लिए ज़ब्त कर लिये।

"**हम अपने माल के गोदामों का बंदोबस्त करने की स्थिति में नहीं हैं**, जहां स्वयं-नियुक्त कमिसार माल को बाहर निकालने नहीं देते और हमारे कर्मचारियों को गिरफ़्तार करने की धमकी देते हुए उन्हें आतंकित करते हैं।

"पेत्रोग्राद में जो कुछ हो रहा है, उसके बारे में प्रांतों में जानकारी है, और दोन में, साइबेरिया में, वोरोनेज और दूसरी जगहों में लोग आटा और अनाज भेजने से इनकार कर रहे हैं।

"यह चीज़ बहुत दिन नहीं चल सकती।

"काम हमारे हाथ से बाहर हुआ जा रहा है।

"**हमारा कर्तव्य है** कि हम आबादी को इसके बारे में आगाह करें।

"तनिक भी संभावना रहते, हम आबादी के हितों की चौकसी नहीं छोड़ेंगे।

"हम आसन्न अकाल को रोकने की अपनी भरसक पूरी कोशिश करेंगे। परंतु यदि इन कठिन परिस्थितियों में हमारा काम लाचारी दर्जे ठप हो जाता है, तो जनता जान ले कि यह हमारा क़सूर न होगा..."

१५

पेत्रोग्राद में संविधान सभा के चुनाव

पेत्रोग्राद में उन्नीस दलों की टिकटों पर चुनाव लड़े गये। ३० नवंबर को प्रकाशित चुनाव के नतीजे नीचे दिये जाते हैं:

पार्टी	**वोट**
जन-समाजवादी	१९,१०९
कैडेट	२४५,००६
किसान-जनवादी	३,७०७
बोल्शेविक	४२४,०२७
समाजवादी-विश्ववादी	१५८
उक्राइनी और यहूदी मजदूर सामाजिक-जनवादी तथा समाजवादी-क्रांतिकारी	४,२१९
महिला समानाधिकार संघ	५,३१०
समाजवादी-क्रांतिकारी (**ओबोरोन्त्सी**)	४,६९६
वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारी	१५२,२३०
जन-विकास संघ	३८५

उग्र जनवादी	४१३
प्रावोस्लाव पैरिश	२४,१३९
महिला देशोद्धार संघ	३१८
मज़दूरों, सैनिकों और किसानों का स्वतंत्र संघ	४,९४२
ईसाई जनवादी (कैथोलिक)	१४,३८२
संयुक्त सामाजिक-जनवादी	११,७४०
मेन्शेविक	१७,४२७
येदीन्स्त्वो दल	१,८२३
कज़्ज़ाक सैनिक संघ	६,७१२

१६

केन्द्रीय नगर दूमा के अधीन जन-शिक्षा आयोग की ओर से

"साथी मज़दूर स्त्रियो और पुरुषो!

"छुट्टियों के कुछ दिन पहले सार्वजनिक स्कूल के अध्यापकों ने हड़ताल की घोषणा की। अध्यापक मज़दूरों और किसानों की सरकार के ख़िलाफ़ पूंजीपति वर्ग का साथ दे रहे हैं।

"साथियो, माता-पिताओं की समितियां संगठित कीजिये और अध्यापकों की हड़ताल के ख़िलाफ़ प्रस्ताव पास कीजिये। मज़दूरों तथा सैनिकों के प्रतिनिधियों की वार्ड सोवियतों, ट्रेड-यूनियनों, कारख़ाना समितियों तथा पार्टी समितियों से प्रतिवाद-सभायें संगठित करने का प्रस्ताव कीजिये। बच्चों के लिए अपने साधनों से क्रिसमस-वृक्ष तथा आमोद-प्रमोद का प्रबंध कीजिये और मांग कीजिये कि छुट्टियों के बाद जो तिथि दूमा निर्धारित करेगी, उस तिथि को स्कूल खोले जायें।

"साथियो, सार्वजनिक शिक्षा के मामलों में अपनी स्थिति सुदृढ़ बनाइये और स्कूलों पर सर्वहारा संगठनों के नियंत्रण के लिए आग्रह कीजिये।"

केन्द्रीय नगर दूमा के अधीन
जन-शिक्षा आयोग

१७

जन-कमिसार परिषद् की ओर से मेहनतकश कज़्ज़ाकों के नाम

"कज़्ज़ाक भाइयो!

"आपको धोखा दिया जा रहा है। आपको जनता के ख़िलाफ़ भड़काया जा रहा है। आपसे कहा जा रहा है कि मज़दूरों, सैनिकों तथा किसानों के प्रतिनिधियों की सोवियतें आपके दुश्मन हैं, कि वे आपकी कज़्ज़ाक ज़मीनों को, आपकी कज़्ज़ाक 'आज़ादी' को छीन लेना चाहती हैं। कज़्ज़ाको! इस बात पर विश्वास मत कीजिये... ख़ुद आपके जनरल और ज़मींदार आपको अंधेरे और ग़ुलामी में रखने के लिए आपको धोखा दे रहे हैं। हम जन-कमिसार परिषद् के सदस्य आप कज़्ज़ाकों का इन शब्दों के साथ संबोधन करते हैं। उन्हें ध्यान से पढ़िये और फ़ैसला कीजिये कि सत्य क्या है और क्रूर प्रवंचना क्या है।

"एक कज़्ज़ाक के जीवन तथा उसकी नौकरी का अर्थ सदा से दासता और कठोर श्रम-कारावास रहा है। अधिकारियों की पुकार होते ही कज़्ज़ाक सिपाही को हमेशा अपने घोड़े पर ज़ीन कस कर किसी मुहिम पर निकल जाना पड़ता था। कज़्ज़ाक सिपाही को अपना सारा हरबा-हथियार अपनी ही गाढ़ी कमाई से जुटाना पड़ता था। कज़्ज़ाक तो लाम पर है और उधर उसकी सारी खेती-बारी चौपट हो रही है। क्या ऐसी स्थिति उचित है? नहीं। उसे हमेशा के लिए बदल देना होगा। **कज़्ज़ाकों को दासता से मुक्त करना होगा।** नई, जनता की सोवियत सत्ता मेहनतकश कज़्ज़ाकों की मदद के लिए आने को तैयार है। ज़रूरत सिर्फ़ इस बात की है कि कज़्ज़ाक ख़ुद पुरानी व्यवस्था को समाप्त करने का फ़ैसला करें, कि वे ग़ुलामों को हांकने वाले अपने अफ़सरों, ज़मींदारों और अमीरों की अधीनता स्वीकार न करें, कि वे अपनी गर्दन से यह घिनौना जुआ उतार फेंकें। कज़्ज़ाको! उठिये, एक होइये! जन-कमिसार परिषद् आपका एक नये, अधिक सुखद जीवन में प्रवेश करने के लिए आह्वान करती है।

"नवंबर और दिसंबर में पेत्रोग्राद में सैनिकों, मज़दूरों तथा किसानों के प्रतिनिधियों की सोवियतों की अखिल रूसी कांग्रेसें हुईं। इन कांग्रेसों ने विभिन्न स्थानों में समस्त सत्ता को सोवियतों के हाथ में, अर्थात् जनता द्वारा चुने गये लोगों के हाथ में अंतरित कर दिया। अब से रूस में हरगिज़ ऐसे कोई शासक या अहलकार नहीं होने चाहिए, जो जनता पर ऊपर से हुकूमत करें और उन्हें हांकें। जनता स्वयं सत्ता उत्पन्न करती है। एक जनरल को उतने ही अधिकार प्राप्त हैं, जितने कि एक सिपाही को। सभी बराबर हैं। सोचिये कज़्ज़ाको, यह ग़लत है या सही? कज़्ज़ाको, हम आपका आह्वान करते हैं कि आप इस नई व्यवस्था में शामिल हों और स्वयं अपनी **कज़्ज़ाक प्रतिनिधियों की सोवियतें** स्थापित करें। विभिन्न स्थानों में समस्त सत्ता अनिवार्यतः इन्हीं सोवियतों के हाथ में होनी चाहिए – जनरल का ओहदा रखने वाले **हेतमानों** के हाथ में नहीं, बल्कि मेहनतकश कज़्ज़ाकों के निर्वाचित प्रतिनिधियों के, आपके अपने विश्वसनीय, भरोसे लायक़ आदमियों के हाथ में होनी चाहिए।

"सैनिकों, मज़दूरों तथा किसानों के प्रतिनिधियों की सोवियतों की अखिल रूसी कांग्रेसों ने ज़मींदारों की सारी ज़मीनों को मेहनत-मशक्क़त करने वाले लोगों के हाथों में अंतरित करने के लिए एक प्रस्ताव पास किया है। कज़्ज़ाको, क्या यह मुनासिब नहीं है? कोर्नीलोव, कलेदिन, दूतोव, कराऊलोव, बारदिजी जैसे लोग धनिकों के स्वार्थों की प्राणपण से रक्षा करते हैं और वे ज़मीनों को ज़मींदारों के हाथों में रखने के लिए रूस को ख़ून से नहला देने के लिए तैयार हैं। परन्तु मेहनतकश कज़्ज़ाको, क्या आप ख़ुद ग़रीबी, ज़ुल्म और ज़मीन की तंगी से परेशान नहीं हैं? कितने ऐसे कज़्ज़ाक हैं, जिनके पास फ़ी परिवार ४–५ **देस्यातीना** से ज़्यादा ज़मीन है? परन्तु कज़्ज़ाक-ज़मींदार, जिनके पास हज़ारों **देस्यातीना** अपनी ज़मीनें हैं, इन ज़मीनों के अलावा कज़्ज़ाक-सिपाहियों की ज़मीनों को हथिया लेना चाहते हैं। नये सोवियत क़ानूनों के अनुसार कज़्ज़ाक-ज़मींदारों की ज़मीनें बिला मुआवज़ा कज़्ज़ाक मेहनतकशों, ग़रीब कज़्ज़ाकों के हाथों में अनिवार्यतः अंतरित की जायेंगी। आपसे कहा जा रहा है कि सोवियतें आपसे आपकी ज़मीनें छीन लेना चाहती हैं। आपको कौन डरा

रहा है? धनी कज़्ज़ाक, जो यह जानते हैं कि **सोवियत सत्ता ज़मींदारों की ज़मीनों को आपके हाथों में देना चाहती है।** तब फिर कज़्ज़ाको, आप ही फ़ैसला कीजिये, आप किसका समर्थन करेंगे: कोर्नीलोव और कलेदिन जैसे लोगों का, जनरलों और अमीरों का या किसानों, सैनिकों, मज़दूरों तथा कज़्ज़ाकों के प्रतिनिधियों की सोवियतों का।

"अखिल रूसी कांग्रेस द्वारा निर्वाचित **जन-कमिसार परिषद् ने सभी राष्ट्रों से, किसी भी राष्ट्र को क्षति या हानि पहुंचाये बिना, अविलंब युद्ध-विराम तथा सम्मानपूर्ण जनवादी शांति-संधि संपन्न करने का प्रस्ताव किया है।** सभी पूंजीपति, ज़मींदार, कोर्नीलोवपंथी जनरल सोवियतों की शांतिपूर्ण नीति के ख़िलाफ़ उठ खड़े हुए हैं। लड़ाई उनकी तिजोरियों को भर रही थी, उनकी ताक़त को बढ़ा रही थी और उनका मरतबा ऊंचा कर रही थी। और आप, आम कज़्ज़ाक-सिपाहियों के लिए लड़ाई ने क्या किया? आप अपने भाइयों, सिपाहियों और मल्लाहों की ही तरह बेवजह, बेमतलब अपनी जान गंवा रहे थे। शीघ्र ही इस निकम्मी लड़ाई को चलते हुए साढ़े तीन साल हो जायेंगे, उस लड़ाई को, जिसे सभी देशों के पूंजीपतियों और ज़मींदारों ने अपने मुनाफ़ों के लिए, विश्व के पैमाने पर अपनी डाकेज़नी के लिए आयोजित किया है। मेहनतकश कज़्ज़ाकों के लिए लड़ाई तबाही और मौत ही लाई है। लड़ाई ने कज़्ज़ाक फ़ार्म-जीवन को साधनहीन कर दिया है। हमारे पूरे देश और विशेषत: कज़्ज़ाकों के लिए निस्तार इसी में है कि अविलंब सच्ची शांति स्थापित हो। जन-कमिसार परिषद् ने सभी सरकारों और जनों के सम्मुख घोषणा की है: हम अन्य जनों की संपत्ति नहीं चाहते और हम अपनी संपत्ति देना भी नहीं चाहते। बिना संयोजनों के और बिना हरजानों के शांति! प्रत्येक राष्ट्र अपने भाग्य का निपटारा स्वयं करे। एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र द्वारा हरगिज़ उत्पीड़ित न किया जाये। यह है वह सच्ची, जनवादी जन-शांति, जिसे जन-कमिसार परिषद् मित्र और शत्रु, सभी सरकारों और सभी जनों से प्रस्तावित कर रही है। और उसके परिणाम प्रत्यक्ष हैं: **रूसी मोर्चे पर युद्ध-विराम संपन्न किया गया है।** सिपाहियों का और कज़्ज़ाकों का ख़ून अब वहां और नहीं बह रहा है। कज़्ज़ाको, अब आप ही फ़ैसला कीजिये: क्या आप इस तबाह-

कुन, अहमकाना और मुजरिमाना मारकाट को जारी रखना चाहते हैं? अगर चाहते हैं तो कैडेटों का, जनता के शत्रुओं का समर्थन करें, चेर्नोव, त्सेरेतेली, स्कोबेलेव का समर्थन करें, जिन्होंने आपको पहली जुलाई के हमले में झोंक दिया; कोर्नीलोव का समर्थन करें, जिन्होंने मोर्चे पर सिपाहियों और कज़्ज़ाकों के लिए मृत्यु-दंड का विधान किया। **परंतु यदि आप अविलंब और सच्ची शांति चाहते हैं, तो सोवियतों की पांतों में प्रवेश कीजिये और जन-कमिसार परिषद का समर्थन कीजिये।**

"कज़्ज़ाको, आपका भाग्य आपके अपने ही हाथों में है। हमारे सामान्य शत्रु, ज़मींदार, पूंजीपति, कोर्नीलोवपंथी अफ़सर, पूंजीवादी अख़बार आपको धोखा दे रहे हैं और आपको तबाही के रास्ते हांके लिये जा रहे हैं। ओरेनबुर्ग में दूतोव ने सोवियत को गिरफ़्तार कर लिया है और गैरिसन को निरस्त्र कर दिया है। दोन प्रदेश में कलेदिन सोवियतों को धमका रहे हैं। उन्होंने घोषणा की है कि दोन प्रदेश युद्ध की स्थिति में है और वह अपने सैनिकों को एकत्र कर रहे हैं। काकेशिया में कराऊलोव स्थानीय कबायलियों को गोलियों से भून रहे हैं। कैडेट पूंजीपति वर्ग ने उनके लिए अपनी तिजोरियां खोल दी हैं। उनका सामान्य उद्देश्य है जनता की सोवियतों को कुचलना, मज़दूरों और किसानों को दबाना, सेना में फिर से कोड़े का अनुशासन क़ायम करना, और मेहनतकश कज़्ज़ाकों की दासता को चिरस्थायी बनाना।

"हमारी क्रांतिकारी सेनायें जनता के ख़िलाफ़ इस अपराधपूर्ण विद्रोह को समाप्त करने की गरज़ से दोन और उराल की ओर बढ़ रही हैं। क्रांतिकारी सेनाओं के कमांडरों को हुक्म दिया गया है कि वे विद्रोही जनरलों के साथ किसी प्रकार की बातचीत न करें और बिना किसी रू-रिआयत के निर्णायक कार्रवाई करें।

'कज़्ज़ाको, अब यह आपके ही ऊपर निर्भर है कि आपके भाई का ख़ून अभी और बहेगा या नहीं। हम आपकी ओर अपना हाथ बढ़ा रहे हैं। समस्त जनता के साथ, उसके शत्रुओं के ख़िलाफ़, एक होइये। कलेदिन, कोर्नीलोव, दूतोव, कराऊलोव और उन्हें मदद करने वाले

और शह देने वाले सभी लोगों को जनता के शत्रु, ग़द्दार और दग़ाबाज़ घोषित कीजिये। उन्हें ख़ुद अपने सैनिकों को लेकर गिरफ़्तार कर लीजिये और उन्हें सोवियत सत्ता के सुपुर्द कर दीजिये, जो खुले और सार्वजनिक रूप से क्रांतिकारी न्यायाधिकरण में उनका निर्णय करेगी।

"कज़्ज़ाको, कज़्ज़ाकों के प्रतिनिधियों की सोवियतें स्थापित कीजिये! कज़्ज़ाकों के सभी मामलों के इंतज़ाम को अपने उन हाथों में ले लीजिये, जिनमें मशक़्क़त करते करते घट्टे पड़ गये हैं। अपने धनी ज़मींदारों की ज़मीनों को ले लीजिये। लड़ाई से तबाह मेहनतकश कज़्ज़ाकों की ज़मीनों को जोतने-बोने के लिए इन ज़मींदारों के अनाज को, उनके औज़ारों तथा पशुधन को ले लीजिये।

"कज़्ज़ाको, जनता के सामान्य ध्येय के लिए संघर्ष में आगे बढ़िये!

"मेहनतकश कज़्ज़ाक – ज़िंदाबाद!

"कज़्ज़ाकों, सिपाहियों, किसानों और मज़दूरों की एकता – ज़िंदाबाद!

"कज़्ज़ाकों, सैनिकों, मज़दूरों तथा किसानों के प्रतिनिधियों की सोवियतों की सत्ता – ज़िंदाबाद!

"लड़ाई – मुर्दाबाद!

"ज़मींदार और कोर्नीलोवपंथी जनरल – मुर्दाबाद!

"शांति और जातियों का भाईचारा – ज़िंदाबाद!"

जन-कमिसार परिषद्

१८

सोवियत सरकार की कूटनीतिक चिट्ठी-पत्री

त्रोत्स्की द्वारा मित्र-राष्ट्रों तथा तटस्थ शक्तियों के पास भेजे गये पत्र और साथ ही जनरल दुख़ोनिन के नाम मित्र-राष्ट्रों के सैनिक अताशों के पत्र इतने लंबे-चौड़े हैं कि वे यहां पर नहीं दिये जा सकते। इसके

अलावा उनका संबंध सोवियत जनतंत्र के इतिहास के एक दूसरे पहलू से है, जिसके साथ इस किताब का कोई ताल्लुक़ नहीं है, अर्थात् सोवियत सरकार के परराष्ट्र संबंधों से। मैं अपनी अगली पुस्तक, 'कोर्नीलोव कांड से ब्रेस्त-लितोव्स्क की संधि तक' में इस विषय की विशद चर्चा कर रहा हूं।

१६

दुख़ोनिन के ख़िलाफ़ मोर्चे से अपील

"...शांति के संघर्ष को पूंजीपतियों तथा प्रतिक्रांतिकारी जनरलों के प्रतिरोध का सामना करना पड़ रहा है... अख़बारों की रिपोर्टों से मालूम होता है कि पूंजीपति वर्ग के गुमाश्ते और साथी-संघाती, वेर्ख़ोव्स्की, अव्क्सेन्त्येव, चेर्नोव, गोत्स, त्सेरेतेली वग़ैरह भूतपूर्व मुख्य सेनापति दुख़ोनिन की स्ताव्का (सदर मुकाम) में इकट्ठे हो रहे हैं। यह भी मालूम होता है कि वे सोवियतों के ख़िलाफ़ एक नई सत्ता स्थापित करना चाहते हैं।

"साथी सिपाहियो! जिन व्यक्तियों का उल्लेख हमने किया है, वे सभी मंत्री रह चुके हैं। उन्होंने केरेन्स्की और पूंजीपति वर्ग के साथ मेल रखते हुए काम किया है। वे पहली जुलाई के हमले के लिए और लड़ाई को लंबा खींचने के लिए ज़िम्मेदार हैं। उन्होंने किसानों को भूमि देने का वादा किया और फिर भूमि समितियों के सदस्यों को गिरफ़्तार किया। उन्होंने सिपाहियों के लिए मृत्यु-दंड को पुनःस्थापित किया। उन्होंने फ़्रांसीसी, अंग्रेज़ और अमरीकी थैलीशाहों के हुक्मों की तामील की।

"जनरल दुख़ोनिन को जन-कमिसार परिषद् की आज्ञा को मानने से इनकार करने के लिए मुख्य सेनापति के पद से बर्ख़ास्त कर दिया गया है... उत्तर में वह साम्राज्यवादी मित्र-शक्तियों के सैनिक अताशों

द्वारा भेजे गये पत्र को सेना में वितरित कर रहे हैं और प्रतिक्रांति भड़काने की कोशिश कर रहे हैं ...

"दुख़ोनिन के हुक्म की तामील न कीजिये! उनके भड़कावे में न आइये! उन पर और प्रतिक्रांतिकारी जनरलों के उनके दल पर कड़ी नज़र रखिये! .."

२०

क्रिलेन्को की ओर से

आदेश नं० २

"... भूतपूर्व मुख्य सेनापति जनरल दुख़ोनिन को, आदेशों के परिपालन में रुकावट डालने के लिए, नया गृहयुद्ध भड़का सकने वाली अपराधपूर्ण कार्रवाइयों के लिए जनता का शत्रु घोषित किया जाता है। जो लोग भी दुख़ोनिन का समर्थन करते हैं, उन्हें, उनकी सामाजिक अथवा राजनीतिक स्थिति का या उनके अतीत का लिहाज़ किये बिना, गिरफ़्तार कर लिया जायेगा। विशेष अधिकारसम्पन्न व्यक्ति इन गिरफ़्तारियों की कार्रवाई करेंगे। मैं उपरोक्त अध्यादेश के पालन की ज़िम्मेदारी जनरल मानिकोव्स्की को सौंपता हूं ..."

बारहवें अध्याय की टिप्पणी

१

किसानों के प्रश्नों का उत्तर

किसानों ने कितनी ही बातों के बारे में जो पूछ-ताछ की है, उसके जवाब में यह स्पष्टीकरण किया जाता है कि देश में समस्त सत्ता

अब से मज़दूरों, सैनिकों तथा किसानों के प्रतिनिधियों की सोवियतों के हाथों में है। मज़दूरों की क्रांति, पेत्रोग्राद तथा मास्को में विजय प्राप्त कर, अब रूस के दूसरे सभी केंद्रों को सर करती जा रही है। मज़दूरों तथा किसानों की सरकार, जमींदारों के ख़िलाफ़ और पूंजीपतियों के ख़िलाफ़, मज़दूरों के साथ आम किसानों, ग़रीब किसानों, अधिकांश किसानों के संश्रय को सुनिश्चित बनाती है।

अतएव किसानों के प्रतिनिधियों की सोवियतें, सर्वप्रथम हल्कों की सोवियतें और तत्पश्चात् प्रांतों की सोवियतें अब से लेकर संविधान सभा के अधिवेशन तक अपने अपने स्थानों में राज्य सत्ता के पूर्ण अधिकार-संपन्न निकाय हैं। सोवियतों की दूसरी अखिल रूसी कांग्रेस द्वारा भूमि पर ज़मींदारों के सभी हक़ रद्द कर दिये गये हैं। मौजूदा मज़दूरों और किसानों की अस्थायी सरकार ने अभी से भूमि के संबंध में एक आज्ञप्ति जारी की है। उपरोक्त आज्ञप्ति के आधार पर समस्त भूमि, जो अभी तक ज़मींदारों की संपत्ति थी, अब पूरी तरह बिना मीन-मेख के, किसानों के प्रतिनिधियों की सोवियतों के हाथ में अंतरित की जाती है। **वोलोस्त** (कई गांवों का एक समूह) भूमि समितियां अविलंब ज़मींदारों की समस्त भूमि अपने हाथ में ले लेंगी और उसका कड़ाई से हिसाब रखेंगी। यह देखते हुए कि अब से सभी निजी ज़मींदारियां सार्वजनिक संपत्ति हो गई हैं और इसलिये स्वयं जनता द्वारा अवश्य ही रक्षणीय हैं, वे इस बात का ध्यान रखेंगी कि सुव्यवस्था क़ायम रहे और पूरी ज़मींदारी की अच्छी तरह हिफ़ाज़त की जाये।

क्रांतिकारी सत्ता द्वारा जारी की गई आज्ञप्तियों के पालन में, किसानों के प्रतिनिधियों की मंडल-सोवियतों की राय से **वोलोस्त** भूमि समितियों द्वारा दिये गये सभी आदेश सर्वथा क़ानूनी हैं और उनको तत्काल अनुल्लंघनीय रूप में कार्यान्वित किया जायेगा।

सोवियतों की दूसरी अखिल रूसी कांग्रेस द्वारा नियुक्त मज़दूरों तथा किसानों की सरकार को जन-कमिसार परिषद् का नाम दिया गया है।

जन-कमिसार परिषद् किसानों का आह्वान करती है कि वे प्रत्येक स्थान में समस्त सत्ता अपने हाथों में ले लें।

मज़दूर हर तरीक़े से, पूर्ण तथा निरपेक्ष रूप से किसानों का समर्थन करेंगे, मशीनों और औज़ारों के सिलसिले में उनकी जो भी ज़रूरतें होंगी, उनका इंतज़ाम करेंगे और बदले में वे किसानों से अनुरोध करते हैं कि वे अनाज की बारबरदारी कर मज़दूरों की मदद करें।

जन-कमिसार परिषद् के अध्यक्ष

व्ला० उल्यानोव (लेनिन)

प्रकाशक की ओर से

अमरीकी कम्युनिस्ट लेखक जॉन रीड की पुस्तक 'दस दिन जब दुनिया हिल उठी' १९१९ में संयुक्त राज्य अमरीका में प्रकाशित हुई थी और सोवियत संघ में रूसी भाषा में वह सबसे पहले १९२३ में निकली थी, जिसके बाद उसका पुनः प्रकाशन किया गया है।

अमरीकी संस्करण की अपनी प्रस्तावना में लेनिन ने इस पुस्तक की भूरि भूरि प्रशंसा की। उसमें अक्तूबर (नवम्बर) समाजवादी क्रांति का, जिसे जन-साधारण की सच्ची जन-क्रांति के रूप में प्रस्तुत किया गया है, यथार्थ वर्णन किया गया है। उसमें जनता की युगविधायक सृजनात्मक क्षमता का तथा मज़दूर वर्ग, किसानों और आम सिपाहियों के संकल्प के वाहक बोल्शेविकों की उस क्रांति में प्रमुख भूमिका का ज्वलन्त चित्रण किया गया है।

महान् अक्तूबर क्रांति मानव इतिहास में अपने ढंग की पहली क्रांति थी, जिसको, व्लादीमिर इल्यीच लेनिन के नेतृत्व में, बोल्शेविक पार्टी तथा उसकी केंद्रीय समिति ने प्रेरित, अनुप्राणित तथा संगठित किया था।

बोल्शेविक पार्टी तथा उसके नेता, लेनिन ने क्रांति के प्रक्रम का,

उसके सभी संभाव्य पेंच और ख़म का, क्रांतिकारी जन-साधारण के तथा विरोधी वर्गों और पार्टियों के आचरण का अचूक पूर्वानुमान किया था। विद्रोह का पथ-प्रदर्शन करने वाले विभिन्न निकायों – बोल्शेविक पार्टी का राजनीतिक ब्यूरो तथा पार्टी केंद्र, पेत्रोग्राद सोवियत तथा उसका सामरिक केंद्र, सैनिक क्रांतिकारी समिति, जिसके हाथ में विद्रोह की बागडोर थी – के क्रिया-कलाप लेनिन के विचारों द्वारा दीप्त तथा अनुप्राणित थे।

लेनिन के विचार उन अवसरवादियों के साथ भीषण मुठभेड़ों के दौरान कार्यान्वित किये गये थे, जिनका सर्वहारा क्रांति की क्षमता में तथा रूस में उसकी विजय की संभावना में विश्वास न था। ये लोग पराजयवादी थे और उन्होंने या तो लेनिन की सशस्त्र जन-विद्रोह की योजना का प्रत्यक्ष विरोध किया, या विद्रोह के विचार को स्वीकार करने का दम भरते हुए, एक ऐसी कार्यनीतिक योजना का सुझाव दिया, जो क्रांति को निश्चित रूप से सर्वनाश के मुंह में डाल देती।

विद्रोह के पूर्व (सितम्बर और अक्तूबर में) लेनिन ने जो लेख और पत्र लिखे, उनमें जनता की विजय में गहनतम विश्वास व्याप्त है, जिस विश्वास का आधार क्रांति के, तथा क्रांति के शत्रुओं के शिविर में मौजूद परिस्थिति का उनका धीरे-गंभीर मूल्यांकन था। उनमें क्रांति की संगीन घड़ी में दुश्मन के सामने हथियार डाल देने की प्रवृत्ति रखने वाले कायरों और ग़द्दारों की कलई खोली गई थी और उनकी लानत-मलामत की गई थी।

२६ सितम्बर (१२ अक्तूबर)* को 'संकट परिपक्व हो चुका है' शीर्षक लेख में लेनिन ने बोल्शेविक पार्टी की केंद्रीय समिति के सदस्य, ज़िनोव्येव, कामेनेव और त्रोत्स्की के तथा पार्टी की ऊपरी परतों में उनके मुट्ठीभर अनुयायियों के रुख़ की आलोचना की थी। लेनिन ने ज़िनोव्येव तथा कामेनेव को आड़े हाथों लिया, जिन्होंने इस बात के लिए आग्रह किया था कि बोल्शेविकों को पूर्व-संसद में भाग लेना चाहिए। इसका अर्थ यह होता कि क्रांतिकारी शक्तियां सैद्धांतिक दृष्टि से निहत्थी हो जातीं और

---

* यहां तिथियां पुराने रूसी पंचांग के अनुसार दी गई हैं। कोष्ठकों में नये पंचांग की तिथियां हैं, जिनका जॉन रीड ने अपनी पुस्तक में इस्तेमाल किया। – सं०

विद्रोह के लिए तैयारी करने के काम से उनका ध्यान हट जाता। लेनिन ने त्रोत्स्की जैसे नेताओं का भी पर्दाफ़ाश किया, जो "सोवियतों की कांग्रेस के लिए **इंतज़ार करने** की हिमायत करते हैं और अविलंब सत्ता हाथ में लेने का **विरोध** करते हैं, तत्काल विद्रोह करने का **विरोध** करते हैं," जो कि सभी व्यावहारिक कार्यभारों में सबसे ज़्यादा ज़रूरी है।

लेनिन ने ग़ुस्से से लिखा, "इस प्रवृत्ति अथवा मत पर **क़ाबू पाना** होगा, नहीं तो बोल्शेविक लोग अपने को सदा के लिए **कलंकित** कर लेंगे और एक पार्टी के रूप में अपना **सर्वनाश** कर लेंगे। क्योंकि ऐसी घड़ी को हाथ से जाने देना और सोवियतों की कांग्रेस के लिए 'इंतज़ार करना' **घोर मूर्खता** या **सरासर ग़द्दारी** होगी... सोवियतों की कांग्रेस के लिए 'इंतज़ार करने'... का अर्थ होगा एक ऐसे वक़्त **कई हफ़्ते** गंवा देना, जब एक एक हफ़्ता, यहां तक कि एक एक दिन **हर चीज़** के लिए निर्णायक है... इसी घड़ी सत्ता हाथ में लेने से परहेज़ करना, 'इंतज़ार करना', केंद्रीय कार्यकारिणी समिति में बातें बघारना, (सोवियत के) 'मुखपत्र के लिए संघर्ष करने' तक, 'कांग्रेस के लिए संघर्ष करने' तक अपने को महदूद रखना, **क्रांति को विनाश के हवाले कर देना** है" ('संकट परिपक्व हो चुका है')।

केंद्रीय समिति के अंदर पराजयवादियों के ख़िलाफ़ लेनिन के अविरत संघर्ष की परिणति विजय में हुई। १० (२३) अक्तूबर को केंद्रीय समिति ने मौजूदा परिस्थिति के बारे में लेनिन की रिपोर्ट को सुना और लेनिन द्वारा सूत्रबद्ध प्रस्ताव को स्वीकृत किया, जिसमें यह माना गया था कि विद्रोह अनिवार्य तथा आसन्न है और यह सुझाव दिया गया था कि पार्टी के सभी संगठन अपने व्यावहारिक क्रिया-कलाप में इसी विचार पर अमल करें। ज़िनोव्येव और कामेनेव ने प्रस्ताव के ख़िलाफ़ वोट दिया। त्रोत्स्की भी अपने मोर्चे पर डटे रहे और उन्होंने सुझाव दिया कि दूसरी कांग्रेस के उद्घाटन से पहले विद्रोह शुरू नहीं करना चाहिए, जिसका अर्थ वास्तव में सरासर टालमटोल होता और विद्रोह के मुहूर्त को दुश्मन पर ज़ाहिर कर देना होता।

त्रोत्स्की ने २३ अक्तूबर (५ नवम्बर) को हुए पेत्रोग्राद सोवियत के

पूर्ण अधिवेशन में तथा अन्यत्र अपने इस दृष्टिकोण को प्रस्तुत किया था। अपनी पुस्तक में जॉन रीड त्रोत्स्की के वक्तव्य को निम्नलिखित रूप से प्रस्तुत करते हैं। यह पूछे जाने पर कि बोल्शेविक कब क़दम उठाने का इरादा रखते हैं, त्रोत्स्की ने उत्तर दिया: "सत्ता का यह अंतरण अखिल रूसी कांग्रेस द्वारा संपन्न किया जायेगा... हम आशा करते हैं कि अखिल रूसी कांग्रेस अपने हाथों में वह सत्ता और अधिकार ग्रहण करेगी, जिसका आधार है जनता की संगठित स्वतंत्रता" (इस पुस्तक का पृ० ११४)।

लेनिन ने इस घातक कार्यनीति का विरोध किया और २४ अक्तूबर (६ नवम्बर) को केंद्रीय समिति के सदस्यों के नाम एक पत्र में अपील की कि सरकार के मंत्रियों को उसी शाम को, बहरसूरत उसी रात को गिरफ़्तार कर लिया जाये और सत्ता पर अविलंब अधिकार स्थापित किया जाये। "हमें हर्गिज़ इंतज़ार नहीं करना चाहिए! हम सब कुछ गंवा सकते हैं!.. इतिहास उन क्रांतिकारियों को इसके लिए क्षमा नहीं करेगा, जो ऐसे वक़्त, जब वे आज विजयी हो सकते हैं (और वे आज निश्चय ही विजयी होंगे), जब वे कल पर टाल कर बहुत कुछ गंवा बैठने का ख़तरा मोल लेंगे, वास्तव में सब कुछ गंवा बैठने का ख़तरा मोल लेंगे, टालमटोल करते हैं और देर लगाते हैं... यदि हम आज सत्ता पर अधिकार करते हैं, तो हम ऐसा सोवियतों की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ नहीं, उनके नाम पर करेंगे... २५ अक्तूबर (७ नवम्बर) के दोलायमान मतदान की प्रतीक्षा करना अनर्थ होगा, अथवा कोरी औपचारिकता होगा। जनता का यह अधिकार है और वह इसके लिए कर्त्तव्यबद्ध है कि वह ऐसे प्रश्नों का निर्णय मतदान द्वारा नहीं, बल्कि बल-प्रयोग द्वारा करे, क्रांति की नाज़ुक घड़ियों में उसका यह अधिकार है और वह इसके लिए कर्त्तव्यबद्ध है कि वह अपने प्रतिनिधियों को निर्देश दे... और उनका मुंह न जोहे" ('बोल्शेविक पार्टी के सदस्यों के नाम पत्र')।

२४–२५ अक्तूबर (६–७ नवम्बर) की रात को स्मोल्नी पहुंचने पर लेनिन ने विद्रोह का पूर्ण नेतृत्व ग्रहण किया। २५ अक्तूबर (७ नवम्बर) की रात को दर्जनों मज़दूरों और सिपाहियों ने, लाल गार्डी दस्तों के मुखियों और संदेशवाहकों ने, जो वार्डों, कारख़ानों और सैनिक

टुकड़ियों का प्रतिनिधित्व करते थे, स्मोल्नी आकर लेनिन से मुलाक़ात की। सैनिक क्रांतिकारी समिति ने ज़बरदस्त पैमाने पर काम करना शुरू किया, और लेनिन द्वारा व्यापक भाव से प्रेरित मज़दूरों और सिपाहियों के क्रांतिकारी उपक्रम ने उसे भरोसे लायक़ ताक़त पहुचाई।

लेनिन की अद्भुत कार्यनीति विजयी हुई।

लेनिन की दृढ़, निष्कंप शक्ति इस बात में निहित थी कि वह संगठन की प्रतिभा के साथ, प्रचुर बौद्धिक तथा सैद्धांतिक साधनों से संपन्न थे। सितंबर और अक्तूबर में कार्यनीति-संबंधी अपने पत्रों में लेनिन ने जो योजना प्रस्तुत की थी, पार्टी केंद्र तथा सैनिक क्रांतिकारी समिति ने उसका अक्षरशः पालन किया।

जॉन रीड ने लेनिन का एक असाधारण नेता के रूप में चित्रण किया है। और सचमुच ही वह एक असाधारण नेता थे! वह पश्चिम यूरोपीय प्रकार के सामाजिक-जनवादी नेता के आडंबरपूर्ण ढोंग से घृणा करते थे और वह अपने आचरण तथा विचारों में असाधारण सादगी के साथ असाधारण बुद्धिमत्ता रखते थे। जॉन रीड के शब्दों में उनमें "गहन विचारों को सीधे-सादे शब्दों में समझाने की और किसी भी ठोस परिस्थिति को विश्लेषित करने की अपूर्व क्षमता थी। और उनमें सूक्ष्मदर्शिता के साथ साथ बौद्धिक साहसिकता कूट कूट कर भरी थी।" इन सब गुणों का स्रोत जनता के साथ महान् लेनिन का घनिष्ठ सम्बन्ध था। जनता को ही वह इतिहास का निर्माता मानते थे और उसकी सृजनात्मक, रचनात्मक क्षमता में उन्हें अगाध विश्वास था।

विजयी जन-विद्रोह के बाद अपने पहले ही भाषण में, जो २५ अक्तूबर (७ नवम्बर) को तीसरे पहर पेत्रोग्राद सोवियत के पूर्ण अधिवेशन में दिया गया था, लेनिन ने अपना यह निश्चित विश्वास प्रगट किया कि जनता अंतिम रूप से विजयी हुई है। नये सोवियत रूस के भविष्य की ओर दृष्टिपात करते हुए, उन्होंने बोल्शेविकों, मजदूर वर्ग और शेष जन-साधारण के सम्मुख उपस्थित ऐतिहासिक कार्यभार की सीधे-सादे और स्पष्ट शब्दों में परिभाषा की। लेनिन ने कहा कि

अब यह उन्हीं लोगों का काम है कि वे समाजवादी सर्वहारा राज्य का निर्माण करें और रूस में समाजवाद की विजय को सुनिश्चित बनायें।

बोल्शेविकों की धीर-गंभीर आशावादिता सोवियतों की दूसरी कांग्रेस में त्रोत्स्की द्वारा दिये गये पराजयवादी वक्तव्य का प्रबल रूप से खण्डन करती है। जॉन रीड ने कांग्रेस में त्रोत्स्की के भाषण के इस प्रसंग से संबंधित अंश को निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत किया है: "... अगर यूरोप पर साम्राज्यवादी पूंजीपति वर्ग का शासन बना रहा, तो किसी भी सूरत में क्रांतिकारी रूस का विनाश निश्चित है... हमारे सामने दो ही विकल्प हैं: या तो रूसी क्रांति यूरोप में भी क्रांतिकारी आंदोलन को जन्म देगी, या यूरोपीय शक्तियां रूसी क्रांति का काम तमाम कर देंगी!" (इस पुस्तक का पृ० २१३)।

त्रोत्स्की ऐसा इसलिए सोचते थे कि उन्हें यह विश्वास नहीं था कि मेहनतकश किसान विजयी रूसी सर्वहारा को कभी भी अपना क्रांतिकारी समर्थन देंगे। उन्हें यह विश्वास नहीं था कि सर्वहारा आम किसानों को अपनी ओर लाने की क्षमता रखता है। उनका यह अविश्वास "स्थायी क्रांति" के उनके मेन्शेविक सिद्धांत में अंतर्निहित था, जिसे उन्होंने १६०५ में प्रतिपादित किया था। इस सिद्धांत के अनुसार जब तक सर्वहारा प्रमुख यूरोपीय देशों में सत्तारूढ़ न हो जाये, किसी एक देश में समाजवादी क्रांति विजयी नहीं हो सकती। अक्तूबर (नवम्बर) क्रांति से कुछ ही दिन पहले त्रोत्स्की ने अपने पैंफ़्लेट 'शांति का कार्यक्रम' में लिखा था: "जर्मनी में क्रांति के बिना रूस में अथवा इंगलैंड में क्रांति की विजय अकल्पनीय है और इसी तरह रूस और इंगलैंड में क्रांति के बिना जर्मनी में क्रांति की विजय अकल्पनीय है।" यह धारणा कि समाजवादी क्रांति तभी विजयी हो सकती है, जब वह प्रमुख यूरोपीय देशों में सर्वहारा की एकसाथ विजय के रूप में संपन्न हो, त्रोत्स्की के उस इंटरव्यू में भी व्यक्त है, जो उन्होंने १७ (३०) अक्तूबर को जॉन रीड को दिया था। भावी सरकार की विदेश नीति की चर्चा करते हुए त्रोत्स्की ने कहा: "मेरी दृष्टि में इस युद्ध के पश्चात् यूरोप का पुनर्जन्म होगा – कूटनीतिज्ञों के हाथों नहीं, सर्वहाराओं के हाथों। यूरोप का

संघात्मक जनतन्त्र – यूरोप का संयुक्त राज्य ..." (इस पुस्तक का पृ० १०३)। इस प्रकार त्रोत्स्की ने सर्वहारा क्रांति के लेनिनवादी सिद्धांत, जिसमें एक देश में समाजवाद की विजय का विचार निहित था, के विरोध में अपना, यूरोप के संयुक्त राज्य का विचार प्रस्तुत किया, जो "स्थायी क्रांति" के उनके पराजयवादी सिद्धांत से उत्पन्न होता था।

रूस में युगविधायक घटनाओं का कठोर, निर्मम तर्क ऐसा था कि पराजयवादी नीति के प्रतिपादक कभी कभी अपने ही विश्वासों के विरुद्ध बोलते तथा आचरण करते थे। विद्रोह के समय त्रोत्स्की के साथ भी यही बात हुई। क्रांति की वास्तविक गतिविधि ने पेत्रोग्राद सोवियत के अध्यक्ष के नाते उन्हें लेनिन की कार्यनीति का अनुसरण करने पर विवश कर दिया। २५ अक्तूबर (७ नवम्बर) को पेत्रोग्राद सोवियत की बैठक में, जब किसी ने अपनी जगह पर बैठे बैठे चिल्लाकर कहा कि क्रांति की विजय की घोषणा ग़ैरक़ानूनी है, क्योंकि अभी तक कांग्रेस ने अपनी मर्ज़ी को जाहिर नहीं किया है, त्रोत्स्की ने लेनिन की कार्यनीति के अनुरूप उत्तर दिया, क्योंकि वह इस हक़ीक़त से मुंह नहीं मोड़ सकते थे कि जनता ने बग़ावत की थी और जीती थी। उन्होंने कहा, "पेत्रोग्राद के मज़दूरों और सिपाहियों के विद्रोह ने सोवियतों की अखिल रूसी कांग्रेस की इच्छा का पूर्वानुमान किया है!" (इस पुस्तक का पृ० १४६)। जैसा हम देखते हैं, उन्हें दो ही दिन पहले २३ अक्तूबर (५ नवम्बर) को पेत्रोग्राद सोवियत के पूर्ण अधिवेशन में दिये गये अपने वक्तव्य से बिल्कुल उल्टी ही बात कहनी पड़ी।

परंतु इन युगांतरकारी घटनाओं के तर्क ने त्रोत्स्की, उनके पक्के अनुयायियों और अन्य पराजयवादियों के दृष्टिकोण के सार-तत्त्व को नहीं बदला, न ही वह उसे बदल सकता था। इन लोगों ने रूस में समाजवादी क्रांति की तथा समाजवाद की विजय की संभावना से इनकार किया, और वस्तुतः ऐतिहासिक दृष्टि से यह अनिवार्य माना कि इस देश में पूंजीवादी जनतंत्र की संसदीय व्यवस्था स्थापित होगी। पार्टी तथा देश के मामलों में उनकी बाद की गतिविधि यह प्रगट करती है कि उन्होंने सोवियत राज्य को संहत करने तथा सोवियत संघ में समाजवादी समाज का निर्माण करने की लेनिनवादी सामान्य नीति के ख़िलाफ़ एक के बाद

एक कितनी ही विश्वासघातपूर्ण कार्रवाइयां कीं। ब्रेस्त की शांति-वार्ता के समय उन्होंने जो स्थिति ग्रहण की, वह राजद्रोह थी – उससे घट कर कुछ नहीं। उन्होंने नयी आर्थिक नीति के माध्यम से समाजवादी निर्माण करने की लेनिन की कार्यनीति पर शब्दाडंबरपूर्ण प्रहार किये। उन्होंने पार्टी की केंद्रीय समिति की कुत्सा की, जो समाजवादी औद्योगीकरण तथा कृषि के सामूहीकरण की लेनिनवादी नीति को अग्रसर कर रही थी। लेनिन-वादी सामान्य नीति के ख़िलाफ़ पराजयवादी दलों तथा गुटों के इस अनवरत संघर्ष का यह स्वाभाविक तथा अनिवार्य परिणाम था कि उन्होंने पार्टी से अपना नाता बिल्कुल ही तोड़ लिया और सोवियत-विरोधी रुख़ अपनाया।

जिस यथार्थ परिस्थिति में जॉन रीड को अपनी पुस्तक के लिए तथ्यों को एकत्रित तथा हृदयंगम करना पड़ा, उसके कारण वह विद्रोह के पहले और उसके दौरान बोल्शेविक पार्टी के केंद्रीय निकायों के कार्य का उतने ठोस और प्रामाणिक रूप से अध्ययन न कर सके, जितना कि वांछनीय था, क्योंकि उस समय विद्रोह की विजय से पहले, बोल्शेविक पार्टी तथा लेनिन ने जो कुछ किया, वह अनिवार्यतः गुप्त रूप से किया। यही कारण है कि लेनिन और उनके घनिष्ठतम सहयोगियों ने पराजयवादियों और त्रोत्स्की की कार्यनीति के ख़िलाफ़ जो दृढ़, अविरत संघर्ष किया, उसे इस पुस्तक में पर्याप्त रूप से प्रत्यक्ष नहीं किया गया है। यही कारण है कि रीड अक्तूबर (नवम्बर) क्रांति के प्रारंभिक दिनों में त्रोत्स्की के वक्तव्यों के अंतर्विरोधपूर्ण स्वरूप को देख न पाये।

जॉन रीड ने जब यह कहा कि "लेनिन, त्रोत्स्की, पेत्रोग्राद के मज़दूरों और सीधे-सादे सिपाहियों को छोड़ कर, यह बात शायद किसी के दिमाग़ में नहीं आई होगी कि बोल्शेविक तीन दिन से अधिक सत्तारूढ़ रह सकते हैं," तब उन्होंने अपने को धोखा ही दिया। लेनिन, केंद्रीय समिति, बोल्शेविक पार्टी के अधिकांश स्थानीय संगठनों को यक़ीन था कि यह विजय पक्की और पायेदार होगी। दिवालिया मेन्शेविक तथा समाजवादी-क्रांतिकारी पार्टियों, सत्ताच्युत शोषक वर्गों के सदस्यों और उनके पिट्ठुओं, तथा बोल्शेविक पार्टी के अंदर मुट्ठीभर पराजयवादियों को छोड़ कर किसी ने भी यह "भविष्यवाणी" नहीं की थी कि विजयी क्रांति का अनि-वार्यतः पतन हो जायेगा। सोवियतों की अखिल रूसी कांग्रेस में रूसी क्रांति

के भविष्य के बारे में त्रोत्स्की का घोर निराशापूर्ण वक्तव्य इसी काल में दिया गया था। जिन परिस्थितियों में केंद्रीय समिति ने सशस्त्र विद्रोह का निर्णय किया था, उनके बारे में रीड का वर्णन (देखिये, पृष्ठ ८४ तथा फुटनोट) ऐतिहासिक तथ्यों के साथ मेल नहीं खाता।

फिर भी पुस्तक की ये सारी कमियां तथा विभिन्न अशुद्धियां इस आधारभूत तथ्य के महत्त्व को कम नहीं कर सकतीं कि जॉन रीड की पुस्तक महान् अक्तूबर (नवम्बर) समाजवादी क्रांति का एक बड़ा जंचता हुआ तथा सच्चा वर्णन है।

इस पुस्तक का लेखक लेनिन के, बोल्शेविक पार्टी के विचारों से उद्दीप्त था, जो विद्रोह के क़ानूनी सामरिक केंद्रों की गतिविधि के, उठ खड़ी हुई जनता के साहस, पराक्रम तथा क्रांतिकारी सृजनात्मकता के रूप में फलीभूत हुए थे। इसी चीज़ ने जोशीले क्रांतिकारी तथा प्रतिभाशाली लेखक की तीक्ष्ण दृष्टि को ऐसी क्षमता प्रदान की कि वह अपने सामने उद्घाटित घटनाक्रम में निहित सार-तत्त्व का बोध कर सके तथा उसके गहन ऐतिहासिक अर्थ को ग्रहण कर सके। यही इस पुस्तक की ख़ास ख़ूबी है। लेनिन के शब्दों में, "सर्वहारा क्रांति तथा सर्वहारा अधिनायकत्व वास्तव में क्या हैं, इसको समझने के लिए जो घटनायें इतनी महत्त्वपूर्ण हैं, उनका इस पुस्तक में सच्चा और जीता-जागता चित्र दिया गया है।

रूस में अक्तूबर (नवम्बर) क्रांति का महान् सत्य, जिसके लिए रीड ने अपनी पुस्तक अर्पित की, अमरीकी और दूसरे साम्राज्यवादियों की मूल प्रकृति के ही प्रतिकूल था। उन्होंने अपने अखबारों में बोल्शेविकों के ख़िलाफ़ इस गरज़ से गंदा, कुत्सित प्रचार किया कि उनके द्वारा शोषित जन-साधारण का ध्यान रूसी मज़दूरों, किसानों तथा सैनिकों द्वारा प्रस्तुत क्रांतिकारी निर्भयता तथा साहस के संक्रामक आदर्श से विचलित हो जाये। उन्होंने जॉन रीड द्वारा संग्रहीत सामग्री को ज़ब्त कर लेने की कोशिश की। एक के बाद एक छः बार भाड़े के घुसपैठियों ने उनकी पुस्तक की पांडुलिपि को चुरा लेने और नष्ट कर देने के उद्देश्य से रीड के प्रकाशक के कार्यालय पर छापा मारा।

परंतु सारी विघ्न-बाधाओं तथा कठिनाइयों के बावजूद जॉन रीड की पुस्तक 'दस दिन जब दुनिया हिल उठी' १९१९ में संयुक्त राज्य अमरीका में प्रकाशित हुई। यह विदेश में प्रकाशित पहली पुस्तक थी, जिसने संसार को बताया कि मानव-इतिहास में एक नये युग, सर्वहारा क्रांतियों के युग का सूत्रपात करनेवाली रूस की विजयी समाजवादी क्रांति के बारे में यथार्थ सत्य क्या है।

एल्बर्ट विलियम्स

जॉन रीड की जीवनी

पहला अमरीकी नगर, जहां मज़दूरों ने सबसे पहले कोल्चाक की सेना के लिए फ़ौजी साज़-सामान लादने से इनकार किया, प्रशान्त महासागर के तट पर स्थित पोर्टलैंड नगर था। इसी नगर में २२ अक्तूबर, १८८७ को जॉन रीड का जन्म हुआ था।

उनके पिता उन पोढ़े शरीर और उदार मन वाले पुरोगामियों में थे, जिनका वर्णन जैक लंडन ने पश्चिम अमरीका के बारे में अपनी कहानियों में किया है। वह प्रखर मस्तिष्क के व्यक्ति थे, जिन्हें पाखंड तथा छल-प्रपंच से चिढ़ थी। प्रभावशाली तथा सम्पत्तिशाली व्यक्तियों का पक्ष लेने के बजाय उन्होंने उनका विरोध किया, और जब बड़ी बड़ी कम्पनियों ने पसर कर राज्य के जंगलात तथा अन्य प्राकृतिक संपदाओं को अपने चंगुल में ले लेना चाहा, उन्होंने उनसे ज़बर्दस्त मोर्चा लिया। उन पर हज़ार जुल्म ढाये गये, उन्हें मारा-पीटा गया और बार बार काम से निकाल दिया गया, लेकिन उन्होंने दुश्मन के सामने कभी घुटने नहीं टेके।

इस प्रकार अपने पिता से जॉन रीड को एक ख़ासी अच्छी बपौती मिली – एक योद्धा का रक्त, जो उनकी शिराओं में प्रवाहित था, आला दर्जे का दिमाग़ और दृढ़, साहसपूर्ण भावना। जॉन रीड की प्रतिभा का विकास शीघ्र ही हुआ। हाई स्कूल पास कर वह आगे पढ़ने के लिए हारवर्ड गए। हारवर्ड विश्वविद्यालय तैलाधीशों, कोयला-शाहों तथा इस्पात-सम्राटों के बेटों का विश्वविद्यालय है। वे जानते थे कि जब चार साल के खेल-कूद, आमोद-प्रमोद तथा "भावशून्य विज्ञान के भावशून्य अध्ययन" के बाद उनके बेटे घर लौटेंगे, वे उग्र विचारों के कलुष से सर्वथा मुक्त होंगे। और सचमुच

अमरीका के हज़ारहा नौजवान कालेजों और यूनिवर्सिटियों में इसी प्रकार मौजूदा व्यवस्था के हिमायतियों – प्रतिक्रिया के सफ़ेद गार्डों – के रूप में शिक्षित-दीक्षित होते हैं।

जॉन रीड ने हार्वर्ड में चार साल बिताये, जहां उनकी व्यक्तिगत प्रतिभा तथा आकर्षक स्वभाव के कारण सभी उनसे स्नेह करते थे। विशेषाधिकार-संपन्न वर्गों की संतान के साथ उनका रोज़ का रब्त-ज़ब्त था। उन्होंने समाजशास्त्र के शिक्षकों के शब्दाडंबरपूर्ण भाषण सुने। उन्होंने पूंजीवाद के राजपुरोहितों, अर्थशास्त्र के प्राध्यापकों के उपदेशपूर्ण व्याख्यान सुने। और सब कुछ के बाद उन्होंने धनिकतंत्र के उस गढ़ में, उसके ऐन केंद्र में, एक समाजवादी क्लब का संगठन किया। कूढ़मग्ज़ों के मुंह पर यह एक करारा तमाचा था। बड़े-बूढ़ों ने यह सोचकर संतोष कर लिया कि यह बस एक लड़कपन वाली धुन है, और कुछ नहीं। उन्होंने कहा, "उसने कालेज छोड़कर संसार में प्रवेश किया नहीं कि उसके ये गरम विचार ठंडे पड़ जायेंगे।"

जॉन रीड ने अपनी पढ़ाई ख़त्म की, अपनी डिग्री हासिल की, व्यापक संसार में प्रवेश किया और देखते देखते उसे जीत लिया। उन्होंने उसे अपनी ज़िंदादिली और जोश से, अपनी क़लम के ज़ोर से जीत लिया। अभी जब वह विद्यार्थी ही थे, उन्होंने हास्य रस की एक छोटी सी पत्रिका «Lampoon» (व्यंग्यलेख) के संपादक के रूप में यह प्रमाणित कर दिया कि वह हास्यपूर्ण, ललित शैली में पूरे पारंगत हैं। उनकी लेखनी से कविताओं, कहानियों, नाटकों की एक अजस्र धारा प्रवाहित हुई। प्रकाशकों के प्रस्तावों की एक बाढ़ सी आ गई; सचित्र पत्रिकाओं ने उनकी रचनाओं के लिए मुंहमांगे पारिश्रमिक दिये और बड़े बड़े अख़बारों ने उनसे अंतर्राष्ट्रीय गतिविधि का पर्यवेक्षण करने का आग्रह प्रगट किया।

इस प्रकार वह संसार के राजमार्गों के पथिक बन गये। जो लोग भी संसार की समकालीन गतिविधि से परिचित रहना चाहते थे, उनके लिए जॉन रीड के लेखों पर नज़र रखना ही पर्याप्त था, क्योंकि प्रभंजन पक्षी की तरह वह सदा वहीं दौड़कर पहुंचते, जहां तूफ़ानी घटनायें हो रही होतीं।

पीटरसन में सूती मिल मज़दूरों की हड़ताल ने बढ़कर एक क्रांति-

कारी तूफ़ान का रूप धारण कर लिया। जॉन रीड उस तूफ़ान में पिल पड़े।

कोलोराडो के खनन-क्षेत्र में राकफ़ेलर के ग़ुलाम अपनी "बिलों" से निकल आये और हथियारबंद रक्षकों की लाठी-गोली के बावजूद उन्होंने उनमें वापस जाने से इनकार किया। विद्रोहियों की हिमायत में जॉन रीड वहां भी पहुंचे।

मेक्सिको में किसानों ने बग़ावत की और पान्चो विल्ला के नेतृत्व में राजधानी की ओर बढ़े। घोड़े पर सवार जॉन रीड उनके साथ थे।

इस कारनामे का विवरण«Metropolitan»(महानगर) में और बाद में 'क्रांतिकारी मेक्सिको' नामक पुस्तक में प्रकाशित हुआ। रीड ने लाल, गेरू के रंग की पहाड़ियों और "चारों ओर से विशाल नागफ-नियों से रक्षित" रेगिस्तानी मैदानों का वर्णन किया। दूर दूर तक फैले हुए मैदानों ने, और उनसे भी अधिक वहां की, ज़मींदारों और कैथोलिक चर्च द्वारा निर्मम रूप से शोषित, आबादी ने उन्हें मुग्ध कर लिया। उन्होंने लिखा कि पहाड़ी चरागाहों में अपने ढोरों को चराने वाले और रात होने पर अलावों के चारों ओर बैठकर गीत गाने वाले ये लोग आज़ादी की फ़ौज में शामिल होने के लिए बेताब थे, और नंगे पैर, फटे-चीथड़े पहने वे भूख और ठंड की परवाह न कर, आज़ादी के लिए, ज़मीन के लिए बड़ी बहादुरी से लड़े।

साम्राज्यवादी युद्ध शुरू हुआ, और जहां तोप के धमाके हो रहे थे, वहीं जॉन रीड भी मौजूद थे। वह फ़्रांस, जर्मनी, इटली, तुर्की, बाल्कन प्रदेश, यहां तक कि रूस में भी पहुंचे। ज़ार के अफ़सरों की ग़द्दारी का पर्दाफ़ाश करने और ऐसे तथ्य संग्रह करने के लिए उनको और प्रसिद्ध कलाकार बोर्डमैन को पुलिस द्वारा हिरासत में ले लिया गया, जिनसे यह साबित हो जाता था कि यहूदियों की संगठित हत्या के कांडों में इन अफ़सरों का भी हाथ था। लेकिन हमेशा की ही तरह अपनी सूझ-बूझ, तदबीर, तिकड़म या संयोगवश ही उन्होंने जेल से छुटकारा पाया, और फिर हंसते हंसते अपने दूसरे साहसिक अभियान में उतर पड़े।

कोई भी ख़तरा इतना बड़ा न था कि वह उन्हें रोक सकता। ख़तरे की परिस्थिति उनके लिए स्वाभाविक थी। वह सदा किसी न किसी प्रकार निषिद्ध क्षेत्रों में अथवा मोर्चे की खाइयों में पहुंच जाते।

सितंबर १९१७ में जॉन रीड तथा बोरीस रेइनश्तेइन के साथ रीगा के मोर्चे की अपनी यात्रा मुझे याद है। हमारी मोटर-गाड़ी दक्षिण में वेन्देन की ओर जा रही थी, जब जर्मन तोपख़ाने ने एक छोटे से गांव पर गोले दाग़ने शुरू कर दिये। यकायक वह गांव जॉन रीड की दृष्टि में संसार का सबसे आकर्षक स्थान बन गया! उन्होंने आग्रह किया कि हम वहां जायें। सावधानी बरतते हुए हम धीरे धीरे चींटी की चाल से आगे बढ़े। इतने में यकायक हमारे पीछे एक भारी गोला फट पड़ा और सड़क का जो हिस्सा हमने अभी अभी पार किया था, उसके परख़चे उड़ गये और काले धुएं और गर्द-ग़ुबार का जैसे एक फ़ौवारा छूट पड़ा।

हम मारे डर के एक दूसरे को थामे रह गये, लेकिन क्षण भर बाद ही जॉन रीड का चेहरा ख़ुशी से खिल उठा, जैसे अभी अभी उनकी कोई आंतरिक इच्छा पूरी हुई हो।

इसी प्रकार उन्होंने संसार का ओर-छोर नाप डाला, उन्होंने ग़ैरमामूली जोखिम के एक काम के बाद दूसरे काम में हाथ डालते हुए सभी देशों की यात्रा की, सभी मोर्चों का चक्कर लगाया। परंतु वह जान जोखिम में डालने वाले कोई मामूली आदमी नहीं थे, न ही पर्यटक पत्रकार अथवा दर्शक मात्र थे, जो जनता की मुसीबतों को भावशून्य दृष्टि से देखता है। न्याय तथा औचित्य की उनकी भावना इस सारी गड़बड़ी, ग़ंदगी तथा ख़ूंरेज़ी से आहत होती थी। वह धैर्यपूर्वक इन बुराइयों की जड़ तक पहुंचने की कोशिश करते थे, ताकि उन्हें समूल नष्ट किया जा सके।

जब वह अपनी यात्राओं से न्यू-यार्क लौटते तो आराम करने के लिए नहीं, नया काम और आंदोलन शुरू करने के लिए।

मेक्सिको से लौटने पर उन्होंने घोषणा की: "हां, मेक्सिको में बग़ावत और गड़बड़ी है, लेकिन उसके लिए ज़िम्मेदारी किसानों की नहीं, उन लोगों की है, जो रुपये की थैलियां और गोला-बारूद भेजकर झगड़े को बढ़ाते हैं, मतलब यह कि ज़िम्मेदारी प्रतिद्वंद्वी अमरीकी तथा ब्रिटिश तेलकंपनियों की है।"

पीटरसन से लौटकर उन्होंने मैडिसन स्क्वायर उद्यान के हाल में "पूंजी के ख़िलाफ़ पीटरसन के सर्वहारा का युद्ध" नाम से एक ज़बरदस्त नाट्यप्रदर्शन संगठित किया।

कोलोराडो से लौटकर उन्होंने लुडलो के हत्याकांड का वर्णन किया, जिसकी विभीषिका ने साइबेरिया में लेना-खान की गोलीबारी को भी मात कर दिया। उन्होंने बताया कि किस प्रकार खान-मज़दूरों को गर्दनियां देकर उनके घरों से बाहर निकाल दिया गया, किस प्रकार उन्हें तंबुओं में रहना पड़ा, किस प्रकार इन तंबुओं पर पेट्रोल छिड़ककर उनमें आग लगा दी गई, किस प्रकार सिपाहियों ने भागते हुए मज़दूरों को अपनी बंदूक़ों का निशाना बनाया और किस प्रकार दर्जनों स्त्रियां और बालक लपटों में स्वाहा हो गये। करोड़पतियों के मुखिया राकफ़ेलर का संबोधन करते हुए उन्होंने कहा: "वे खानें आपकी ही खानें हैं और वे हत्यारे आपके ही भाड़े के टट्टू हैं। आप हत्यारे हैं!"

लड़ाई के मोर्चों से भी जब वह लौटे, उन्होंने इस या उस युद्धरत देश की नृशंसताओं के बारे में कोरी बकवास नहीं की, वरन् उन्होंने घोर पाशविकता के रूप में, विरोधी साम्राज्यवादियों द्वारा संगठित नरमेध के रूप में उस युद्ध को ही धिक्कारा। उग्र क्रांतिकारी पत्रिका, «Liberator» (मुक्तिदाता) में, जिसको उन्होंने अपनी बेहतरीन रचनाएं बिना एक पैसा लिये दीं, उन्होंने 'अपने सिपाही बेटे के हाथ बांध दो', यह नारा देते हुए एक प्रचंड साम्राज्यवाद-विरोधी लेख प्रकाशित किया। उन पर और दूसरे संपादकों पर न्यू-यार्क की एक अदालत में राजद्रोह का अभियोग लगाया गया। सरकारी वकील इस बात पर तुला था कि देशभक्तिपूर्ण विचारों की जूरी उन्हें अपराधी क़रार दे। उसने यहां तक किया कि मुक़द्दमे की सुनवाई के दौरान राष्ट्र-गीत की धुन बजाते रहने के लिए अदालत की इमारत के पास एक बैंड पार्टी को तैनात कर दिया! इसके बावजूद रीड और उनके साथियों ने अपने विश्वासों का पूरी दृढ़ता से समर्थन किया। जब रीड ने साहसपूर्वक कहा कि मैं क्रांतिकारी झंडे के नीचे सामाजिक क्रांति के लिए काम करना अपना कर्त्तव्य समझता हूं, सरकारी वकील ने जिरह की:

"आप क्या इस युद्ध में अमरीकी झंडे के नीचे लड़ेंगे?"

रीड ने दृढ़ उत्तर दिया:

"नहीं, मैं नहीं लड़ूंगा!"

"क्यों नहीं?"

इस प्रश्न का उत्तर देते हुए रीड ने एक ओजस्वी भाषण दिया, जिसमें उन्होंने उन विभीषिकाओं का वर्णन किया, जो उन्हें मोर्चों पर देखने को मिली थीं। यह वर्णन इतना यथार्थ, सजीव तथा मर्मस्पर्शी था कि पूर्वाग्रहों से आविष्ट मध्यवर्गीय जूरी के कुछ सदस्य भी विह्वल होकर रो पड़े और संपादकों को छोड़ दिया गया।

ऐसा हुआ कि जिस समय अमरीका ने युद्ध में प्रवेश किया, उसी समय रीड को आपरेशन कराना पड़ा, जिसके कारण उन्हें अपने एक गुर्दे से हाथ धोना पड़ा। डाक्टरों ने राय दी कि वह सैनिक सेवा के योग्य नहीं हैं।

इस पर जॉन रीड ने कहा कि "एक गुर्दे के जाते रहने से मुझे राष्ट्रों के बीच युद्ध में भाग लेने से चाहे छुट्टी मिल जाये, लेकिन उससे वर्ग-युद्ध में भाग लेने से छुट्टी नहीं मिल जाती।"

१९१७ की गर्मियों में रीड भागे-भागे रूस गये, जहां उन्होंने यह भांप लिया कि शुरूआती क्रांतिकारी मुठभेड़ों का रंग-ढंग ऐसा है कि वे एक विराट् वर्ग-युद्ध का आकार ग्रहण कर सकती हैं।

उन्होंने परिस्थिति का मूल्यांकन करने में देर नहीं लगाई और यह समझा कि सर्वहारा द्वारा सत्ता पर अधिकार युक्तिसंगत तथा अनिवार्य था। परंतु क्रांति का मुहूर्त्त बार बार टल जाने और देर लगने के कारण वह व्यग्र थे। रोज़ सुबह वह उठते और यह देखकर कि अभी क्रांति शुरू नहीं हुई है, उन्हें खीझ और झुंझलाहट होती। आख़िरकार स्मोल्नी ने संकेत दिया और जन-साधारण क्रांतिकारी संघर्ष के लिए आगे बढ़े। यह एक स्वाभाविक बात थी कि जॉन रीड उनके साथ साथ क़दम बढ़ाते। वह "सर्वविद्यमान" थे: पूर्व-संसद भंग की जा रही थी, बैरीकेड बनाये जा रहे थे, फ़रार हालत से निकलने पर लेनिन और ज़िनोव्येव का स्वागत किया जा रहा था या जब शिशिर प्रासाद का पतन हो रहा था – सभी जगह रीड मौजूद थे

लेकिन इन सब घटनाओं का उन्होंने अपनी पुस्तक में वर्णन किया है।

एक जगह से दूसरी जगह घूमते हुए, उन्होंने अपनी सामग्री जहां से भी वह प्राप्य थी, संग्रह की। उन्होंने 'प्राव्दा' तथा 'इज़्वेस्तिया' की पूरी फाइलों, सभी घोषणाओं, पैम्फ़लेटों, पोस्टरों, विज्ञप्तियों को इकट्ठा

किया। पोस्टरों के पीछे तो वह पागल थे। जब भी कोई नया पोस्टर निकलता और उसे पाने का कोई और तरीक़ा न होता, तो वह उसे बेहिचक दीवार से फाड़ लेते।

उन दिनों पोस्टर इतनी तेज़ी से और इतनी बड़ी संख्या में छापे जा रहे थे कि उनके लिए दीवारों पर जगह न रह गयी थी। कैडेटों, समाजवादी-क्रांतिकारियों, मेन्शेविकों, वामपंथी समाजवादी-क्रांतिकारियों और बोल्शेविकों के पोस्टर एक के ऊपर एक इस इस तरह चिपका दिये जाते कि उनकी ख़ासी मोटी परतें बन जाती। एक दिन रीड ने एक के ऊपर एक तह-ब-तह लगाये गये १६ पोस्टरों का एक ढेर दीवार से फाड़कर अलग कर लिया और भागे भागे मेरे कमरे में आकर काग़ज़ों का यह भारी पुलिंदा उछालते हुए बोल पड़े: "यह देखो! मैंने एक ही झपाटे में पूरी क्रांति और प्रतिक्रांति को समेट लिया है!"

इस प्रकार भिन्न भिन्न तरीक़ों से उन्होंने एक बड़ा अच्छा संग्रह जुटाया, जो इतना अच्छा था कि जब १९१८ के बाद वह न्यू-यार्क बन्दरगाह में उतरे, संयुक्त राज्य अमरीका के अटार्नी जनरल के एजेंटों ने उसे ज़ब्त कर लिया। लेकिन किसी प्रकार उसे फिर अपने क़ब्ज़े में ले लिया और उसे न्यू-यार्क के अपने कमरे में छिपा दिया, जहां उन्होंने भूगर्भी रास्ते की घड़-घड़, खड़-खड़ और अपने सिर के ऊपर और पैरों के नीचे गाड़ियों के दौड़ने की लगातार शोर-गुल के बीच अपनी पुस्तक 'दस दिन जब दुनिया हिल उठी' की रचना की।

यह समझ में आने वाली बात है कि अमरीकी फ़ासिस्ट यह नहीं चाहते थे कि यह किताब सर्वसाधारण के हाथ में पहुंचे। छः छः बार वे पांडुलिपि को चुराने की ग़रज़ से पुस्तक के प्रकाशक के कार्यालय में ताला तोड़कर घुस गये थे। अपने प्रकाशक को अपना फ़ोटो-चित्र देते हुए जॉन रीड ने उस पर निम्नलिखित शब्द लिखे थे: "अपने प्रकाशक होरेस लाइवराइट को, जो इस पुस्तक का प्रकाशन करते हुए बर्बादी से बाल बाल बचे हैं।"

यह पुस्तक रूस के बारे में सचाई का प्रचार करने के उनके साहित्यिक प्रयासों का एकमात्र परिणाम न थी। पूंजीपति वर्ग को यह सचाई फूटी आंखों भी नहीं सुहाती थी। वह रूसी क्रांति से नफ़रत करता था और

उससे दहशत खाता था, और उसने धुआंधार झूठा प्रचार कर उस पर पर्दा डाल देने की कोशिश की। राजनीतिक मंचों, सिनेमा के पर्दों, पत्र-पत्रिकाओं के कालमों मे घृणित कुत्सा की मटमैली धारा अजस्र प्रवाहित होने लगी। वे ही पत्रिकायें, जिन्होंने कभी रीड के लेखों के लिए याचना की थी, अब उनकी रचनाओं को छापने से बाज आते। लेकिन इस तरह उनका मुंह बंद नहीं किया जा सका। उन्होंने असंख्य जन-सभाओं में भाषण दिये।

उन्होंने स्वयं अपनी पत्रिका की स्थापना की। वह वामपंथी समाजवादी पत्रिका 'क्रांतिकारी युग' के और बाद में 'कम्युनिस्ट' के संपादक बन गये। उन्होंने«Liberator»पत्रिका के लिए लेख पर लेख लिखे, वह सम्मेलनों में भाग लेते हुए, अपने इर्द-गिर्द के लोगों को राशि राशि तथ्य देते हुए, उन्हें अपने स्फूर्ति क्रांतिकारी उत्साह से अनुप्राणित करते हुए अमरीका के एक छोर से दूसरे छोर तक घूमे, और अंत में उन्होंने जो बहुत बड़ी बात की, वह यह कि अमरीकी पूंजीवाद के गढ़ में कम्युनिस्ट लेबर पार्टी का संगठन किया, उसी प्रकार जैसे उन्होंने हारवर्ड विश्वविद्यालय के केंद्र में समाजवादी क्लब की स्थापना की थी।

जैसा बहुधा होता है, "पंडितों" ने ग़लत सोचा था। जॉन रीड का उग्रवाद एक ऐसी धुन नहीं था, जो वक़्त के साथ गुज़र जाये। उनकी भविष्यवाणियों के बावजूद बाह्य संसार से संपर्क ने रीड का किसी भी प्रकार "उद्धार" नहीं किया था। उसने उनके उग्र विचारों को और भी उग्र कर दिया। ये विचार कितने गहरे और प्रबल थे, यह जॉन रीड द्वारा संपादित नये कम्युनिस्ट मुखपत्र 'मज़दूरों की आवाज़' से प्रत्यक्ष था। अमरीकी पूंजीवादियों का माथा ठनका – उनकी अब समझ में आया कि देश में आख़िरकार एक सच्चा क्रांतिकारी पैदा हुआ है। अब वे इस "क्रांतिकारी" शब्द से भीत और त्रस्त थे! यह सच है कि सुदूर अतीत में अमरीका के अपने क्रांतिकारी हुए थे और अब भी वहां "अमरीकी क्रांति की वीरबालायें" तथा "अमरीकी क्रांति के सपूत" जैसी जानी-मानी सामाजिक संस्थायें हैं, जिनके द्वारा प्रतिक्रियावादी पूंजीपति वर्ग १७७६ की क्रांति को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है। परंतु वे क्रांतिकारी कब के मर चुके, जबकि जॉन रीड हाड़-मांस के क्रांतिकारी हैं, जीते-जागते क्रांतिकारी हैं, वह पूंजीपति वर्ग के लिए मूर्त्तिमान् चुनौती हैं, साक्षात यमराज हैं।

उनके लिए सिवाय इसके कोई उपाय न था कि वे रीड को जेल की कोठरी में डाल दें। उन्हें गिरफ़्तार किया गया – एक बार नहीं, दो बार नहीं, बीस बार। फ़िलडेलफ़िया में पुलिस ने सभा-भवन में ही ताला लगा दिया और उन्हें वहां बोलने नहीं दिया। लिहाज़ा वह बाहर पड़ी एक साबुन की पेटी पर चढ़ गये और सड़क पर जो भीड़ उमड़-घुमड़ रही थी, उसके सामने उन्होंने एक व्याख्यान दे डाला। यह सभा इतनी सफल रही और उसमें रीड के इतने अधिक समर्थक निकले कि जब रीड पर "शांति भंग" करने का अभियोग लगाया गया, जूरी ने उन्हें अपराधी घोषित करने से इनकार किया। अमरीका का कोई ऐसा नगर नहीं था, जिसे जॉन रीड को कम से कम एक बार गिरफ़्तार किये बिना संतोष हुआ हो। लेकिन वह हमेशा किसी न किसी प्रकार ज़मानत देकर या मुक़द्दमे को मुल्तवी करा कर जेल से निकल आते और फ़ौरन कहीं और धावा बोलने के लिए निकल पड़ते।

पश्चिमी देशों के पूंजीपति वर्ग को अपनी तमाम परेशानियों और नाकामियों को रूसी क्रांति के सिर मढ़ने की आदत हो गई है। उस क्रांति का एक सबसे नागवार जुर्म यह था कि उसने एक प्रतिभाशाली अमरीकी को कट्टर और जोशीले क्रांतिकारी में बदल दिया था। पूंजीवादी ऐसा ही सोचते थे। वास्तव में यह बात पूरी तरह सच न थी।

जॉन रीड को रूस ने क्रांतिकारी नहीं बनाया था। जन्म की घड़ी से ही अमरीकी क्रांतिकारी रक्त उनकी धमनियों में प्रवाहित था। जी हां, यद्यपि अमरीकियों को सदा एक अफरे और अघाये हुए और प्रतिक्रियावादी राष्ट्र के रूप में चित्रित किया जाता है, तथापि क्रोध और विद्रोह की भावना उनकी नस नस में व्याप्त है। ज़रा अतीत काल के महान् विद्रोहियों की याद कीजिये – टामस पेन की, वाल्ट विटमैन की, जॉन ब्राउन और पार्सन्स की याद कीजिये। बिल हेवुड, राबर्ट माइनर, रूटेनबर्ग और फास्टर जैसे जॉन रीड के आजकल के साथियों और सहयोगियों की बात भी सोचिये। होमस्टेड, पालमैन और लारेंस में हुए ख़ूनी औद्योगिक संघर्षों की, और "विश्व के औद्योगिक मज़दूरों" के संघर्षों की याद कीजिये। ये सब के सब – नेतागण और जन-साधारण – जन्म से शुद्धतः अमरीकी थे। आज यह बात चाहे प्रत्यक्ष दिखाई न पड़े, पर यह सच है कि अमरीकियों के ख़ून में विद्रोह का गाढ़ा घोल है।

लिहाज़ा यह नहीं कहा जा सकता कि रूस ने जॉन रीड को क्रांतिकारी बनाया। लेकिन उसने उन्हें **वैज्ञानिक रूप से सोचने वाला सुसंगत क्रांतिकारी** ज़रूर बनाया। और यह एक बहुत बड़ी सेवा है। रूस ने उन्हें इसके लिए प्रवृत्त किया कि वह अपनी मेज़ को मार्क्स, एंगेल्स और लेनिन की किताबों से लाद दें। उसने उन्हें इतिहास तथा घटनाक्रम की एक समझ दी। उसी की बदौलत उन्होंने अपने किंचित अस्पष्ट मानवतावादी विचारों के स्थान पर अर्थशास्त्र के निर्मम, कठोर सत्य को ग्रहण किया। और उसी ने उनको यह प्रेरणा दी कि वह अमरीकी मज़दूर आंदोलन के शिक्षक बनें और उसके लिए वही वैज्ञानिक आधार प्रस्तुत करने का प्रयास करें, जो उन्होंने अपने विश्वासों के लिए प्रस्तुत किया था।

उनके दोस्त उनसे कहा करते, "जॉन, तुम राजनीति के लिए नहीं बने हो! तुम कलाकार हो, न कि प्रचारक। तुम्हें चाहिए कि तुम अपनी प्रतिभा को साहित्यिक सृजन में लगाओ।" वह इस बात की सचाई को अक्सर महसूस करते, क्योंकि उनके दिमाग़ में नई कवितायें, नये उपन्यास तथा नाटक के विचार भरे होते और वे अभिव्यक्ति पाने के लिए ज़ोर मारते, निश्चित आकार ग्रहण करने के लिए हठ करते। जब उनके दोस्त आग्रह करते कि वह अपने क्रांतिकारी प्रचार-कार्य को छोड़कर अपनी मेज़ पर जम जायें, तब वह मुस्कराते हुए जवाब देते, "अच्छी बात है, मैं ऐसा ही करूंगा।"

परंतु उन्होंने अपना क्रांतिकारी कार्य कभी बंद नहीं किया; वह ऐसा कर ही नहीं सकते थे! रूसी क्रांति ने उनके मन-प्राण को जीत लिया था। उसने उनको पक्का कर दिया था और उनकी ढुलमुल, अराजक भावना पर कम्युनिज़्म के अनुशासन का कठोर अंकुश लगा दिया था। उसने उन्हें इस बात के लिए प्रवृत्त किया कि वह क्रांति के एक अग्रदूत के रूप में अपना ज्वलंत संदेश लेकर अमरीका के नगरों में विचरण करें। १९१९ में क्रांति के आह्वान पर वह संयुक्त राज्य अमरीका की दोनों कम्युनिस्ट पार्टियों को एक में मिलाने के सिलसिले में कम्युनिस्ट इंटरनेशनल के साथ काम करने के लिए मास्को पहुंचे।

कम्युनिस्ट सिद्धांत के नये तथ्यों से लैस होकर वह फिर गुप्त रूप से न्यू-यार्क के लिए रवाना हुए। एक मल्लाह ने दग़ा की और उनका भेद

खोल दिया ; उन्हें जहाज़ से उतार लिया गया और फ़िनलैंड की एक जेल में एकांत कारावास में रखा गया। वहां से वह फिर रूस लौट आये, 'कम्युनिस्ट इंटरनेशनल' में लिखा, एक नई पुस्तक के लिए सामग्री जुटाई और बाकू में हुई पूर्वी जनों की कांग्रेस में एक प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया। उन्हें टाइफ़स ज्वर की छूत लग गयी (संभवत: काकेशिया में) ; अत्यधिक परिश्रम से उनका शरीर पहले ही छीज चुका था, फलत: वह इस रोग के ग्रास बने और रविवार, १७ अक्तूबर, १९२० को उनकी मृत्यु हो गई।

जॉन रीड की तरह दूसरे लोग भी थे, जिन्होंने अमरीका में और यूरोप में प्रतिक्रांतिकारी मोर्चे का वैसी ही बहादुरी के साथ मुक़ाबला किया, जैसी कि सोवियत संघ में लाल सेना ने प्रतिक्रांति से अपने संघर्ष में दिखाई। इनमें कुछ संगठित हत्याकांडों में मारे गये, और कुछ के मुंह पर जेलों में हमेशा के लिए ताला लगा दिया गया। एक को वापस फ़्रांस लौटते हुए श्वेत सागर में तूफ़ान के दौरान जान गंवानी पड़ी। एक और क्रांतिकारी सान-फ़्रांसिस्को में शहीद हुआ ; जिस हवाई जहाज़ से वह हस्तक्षेप के प्रति प्रतिवाद करने वाली घोषणाओं को नीचे गिरा रहा था, उससे वह ख़ुद लुढ़क पड़ा। साम्राज्यवाद ने क्रांति पर प्रचंड आक्रमण किया अवश्य, परंतु यदि ये योद्धा न होते, तो वह आक्रमण और भी प्रचंड हो सकता था। प्रतिक्रांति का दबाव शिथिल करने में उन्होंने भी अपना योगदान दिया। रूसी क्रांति को रूसियों, तातारों और काकेशियाइयों ने ही मदद नहीं पहुंचाई ; चाहे कम ही सही, लेकिन फ़्रांसीसियों, जर्मनों, अंग्रेज़ों और अमरीकियों ने भी उसे सहारा दिया। इन "ग़ैर-रूसी विभूतियों" में जॉन रीड का नाम सदा उजागर रहेगा, क्योंकि वह एक असाधारण मेधावी व्यक्ति थे, जो भरी जवानी में मृत्यु के ग्रास हुए।

जब हेल्सिंगफ़ोर्स और रेवेल से उनकी मृत्यु का समाचार हमारे पास पहुंचा, हमने यही समझा कि यह उन्हीं झूठों में एक झूठ है, जिन्हें प्रतिक्रांतिकारियों के झूठ के कारख़ाने रोज़ाना गढ़ा करते थे। परंतु जब लुईसे ब्रयांत ने इस स्तम्भित कर देने वाले समाचार की पुष्टि की, तब हमें इस समाचार के खंडन की आशा का परित्याग करना पड़ा, यद्यपि यह हमारे लिए अत्यंत कष्टप्रद था।

जब जॉन रीड की मृत्यु हुई, वह निर्वासित थे और पांच साल क़ैद की सज़ा उनके सिर पर मंडरा रही थी, लेकिन फिर भी पूंजीवादी अख़बारों तक ने कलाकार तथा मानव के रूप में उन्हें श्रद्धांजलियां अर्पित कीं। पूंजीवादियों ने चैन की सांस ली: जॉन रीड, जो उनकी झुठाई का पर्दाफ़ाश करना ख़ूब जानते थे और जिन्होंने अपनी लेखनी से उनकी इतनी निर्मम आलोचना की थी, अब जीवित न थे।

अमरीका के क्रांतिकारी जगत को अमार्जनीय क्षति पहुंची। उनकी मृत्यु के कारण हमारी अभाव की भावना का अमरीका से बाहर रहने वाले साथी मुश्किल से ही अंदाज़ा लगा सकते हैं। यह मृत्यु रूसियों की दृष्टि से स्वाभाविक बलिदान है, क्योंकि उनके लिए यह एक मानी हुई बात है कि एक व्यक्ति अपने विश्वासों के लिए अपने प्राणों की आहुति देता है। यहां भावना के लिए कोई स्थान नहीं है। सोवियत रूस में हज़ारों आदमियों ने समाजवाद के हेतु मृत्यु का वरण किया। परंतु अमरीका में अपेक्षाकृत कम बलिदान हुए हैं। आप चाहे तो कह लें कि जॉन रीड कम्युनिस्ट शहीद थे, आने वाले हज़ारों शहीदों के पूर्वगामी। सुदूर मुहासिराबंद रूस में उनके उल्का सदृश जीवन का सहसा अंत अमरीकी कम्युनिस्टों के लिए कठोर आघात था।

पुराने मित्रों और साथियों के लिए सांत्वना की बस एक बात है, वह यह कि जॉन रीड को उसी स्थान में समाधिस्थ किया गया, जो उन्हें संसार में सबसे ज़्यादा प्यारा था – क्रेमलिन की दीवार के ज़ेर साये लाल चौक में। उनकी क़ब्र पर एक स्मारक खड़ा किया गया – उनके चरित्र के ही अनुरूप ग्रेनाइट का एक बेकाटा-तराशा शिलाखंड, जिस पर लिखा है:

"जॉन रीड, तीसरे इंटरनेशनल के प्रतिनिधि, १९२०।"